अंतर्राष्ट्रीय बेस्टसेलर

आज़ादी के लिए लंबी यात्रा

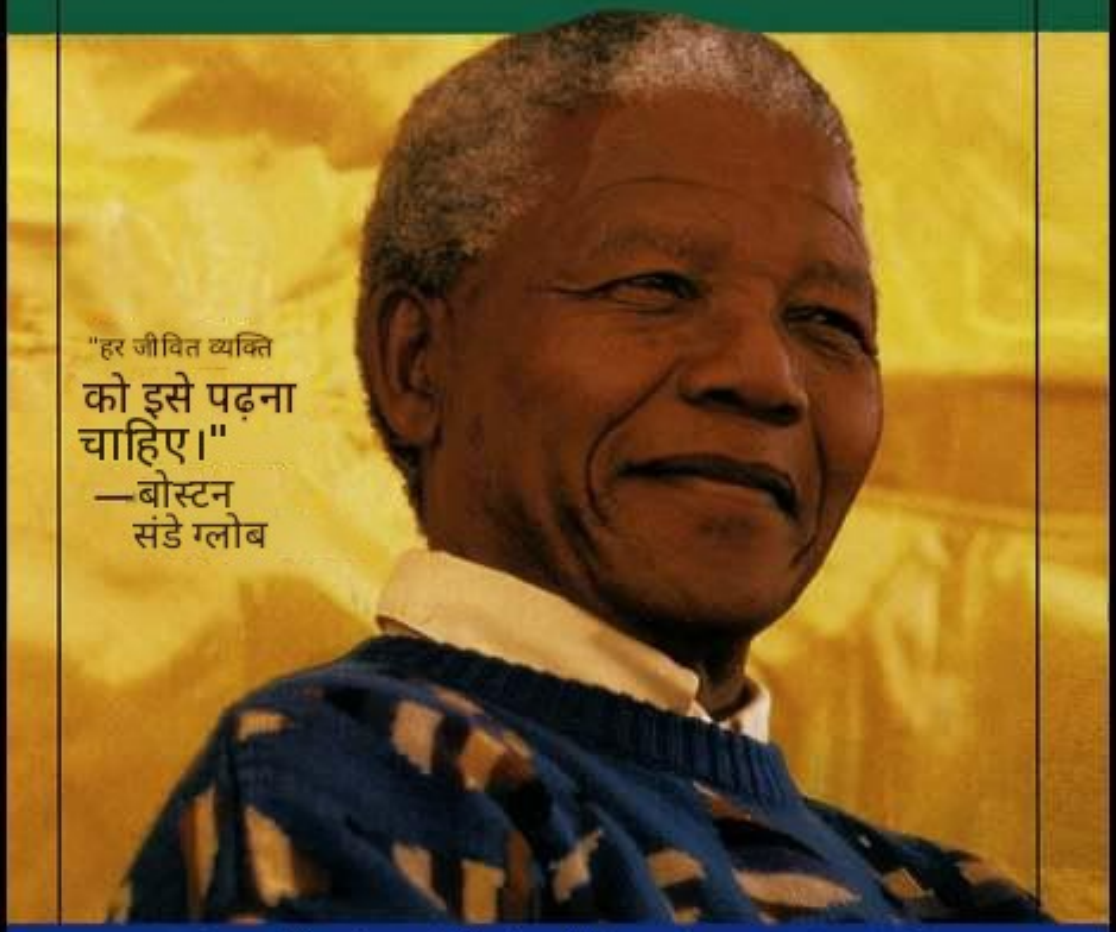

"हर जीवित व्यक्ति को इसे पढ़ना चाहिए।"
—बोस्टन संडे ग्लोब

नेल्सन मंडेला की आत्मकथा

नेल्सन मंडेला

Table of Contents

□□□□□□□□□□□
□□□□□□□□□□□□
□□□ □□
1
2
3
4
5
6
7
8
□□□ □□
9
10
□□□ □□□
11
12
13
14
□□□ □□□
15
16
17
18
19
20
21

22

भाग पाँच

23
24
25
26
27
28
29
30
31
32
33
34
35
36
37
38
39

भाग छह

40
41
42
43
44
45
46
47
48

भाग सात

49

50
51
52
53
54
55
56
57
58

भाग आठ

59
60
61
62
63
64
65
66
67
68
69
70

भाग नौ

71
72
73
74
75
76
77
78

79
80
81
82
83
84
85
86

भाग दस

87
88
89
90
91
92
93
94
95
96
97
98
99

भाग ग्यारह

100
101
102
103
104
105
106
107

108

109

110

111

112

113

114

115

अनुक्रमणिका

The International Bestseller

LONG WALK TO FREEDOM

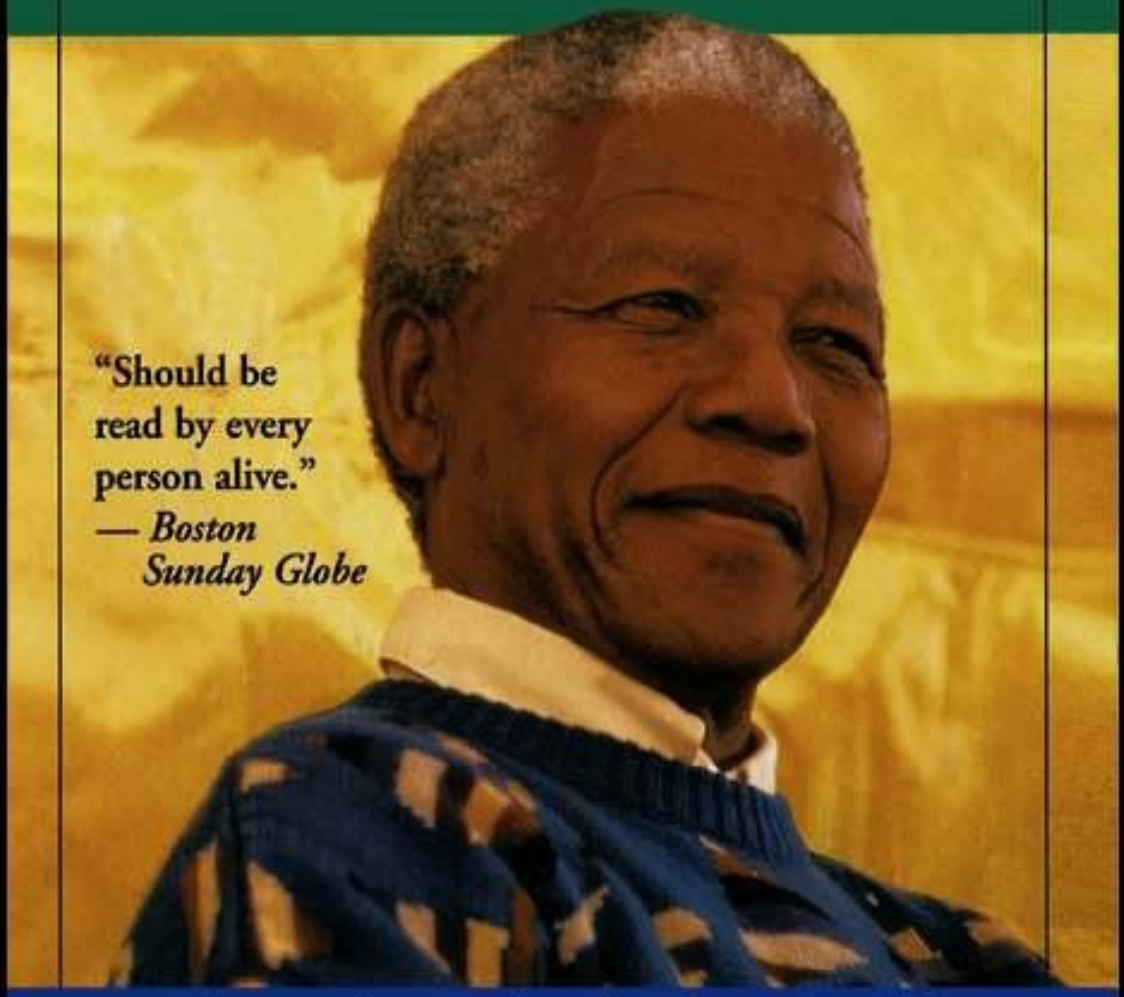

"Should be read by every person alive."
— *Boston Sunday Globe*

The Autobiography of Nelson Mandela

NELSON MANDELA

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]

[redacted]
[redacted]

कॉपीराइट © 1994, 1995 नेल्सन रोलीहलाहला मंडेला द्वारा

सर्वाधिकार सुरक्षित। इस पुस्तक का कोई भी भाग किसी भी रूप में या किसी भी माध्यम से पुनरुत्पादित नहीं किया जा सकता है।
सूचना भंडारण और पुनर्प्राप्ति सहित इलेक्ट्रॉनिक या यांत्रिक साधन प्रकाशक से लिखित अनुमति के बिना, समीक्षक को छोड़कर, किसी भी प्रणाली का उपयोग नहीं किया जा सकता है।
जो समीक्षा में संक्षिप्त अंश उद्धृत कर सकते हैं।

ईआईएसबीएन 0-7595-8142-8

यह पुस्तक ISBN 0-316-54585-6 के रूप में मुद्रित रूप में भी उपलब्ध है।

□□□□□□□□□□

□□□ □□

□□ □□□□□□ □□□□

□□□ □□

□□□□□□□□□□

□□□ □□□

□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□ □□ □□□□

□□□ □□□

□□□□□□ □□ □□□□ □□□□ □□

□□□ □□□□

□□□-□□□□□

□□□ □□

□ □□□□□ □□□□□□□□□

□□□ □□□

□□□□□□□□

□□□ □□

□□□□□□□ □□□□□: □□□□□□□□ □□□□

□□□ □□

□□□□□ □□□□□: □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□

□□□ □□

□□□□□□ □□ □□□ □□□□

□□□ □□□□□□

[redacted]

[redacted]

अंतर्राष्ट्रीय ख्याति के लिए

स्वतंत्रता की लंबी यात्रा

“एक बेहद दिलचस्प किताब… एक शानदार वर्णन भी है… एक शैतानी व्यवस्था और आत्मा की शक्ति का प्रमाण।
इसे पार करो…। सबसे उल्लेखनीय जीवनियों में से एक।
बीसवीं सदी।"
— वाशिंगटन पोस्ट बुक वर्ल्ड

“‘अति आकर्षक’ शब्द ‘लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम’ का वर्णन करता है, जिसे अवश्य ही लिखा जाना चाहिए।”
यह उन कुछ राजनीतिक आत्मकथाओं में से एक है जो एक पृष्ठ भी है।
टर्नर।"
— लॉस एंजिल्स टाइम्स बुक रिव्यू

“एक सचमुच अद्भुत आत्मकथा, तीक्ष्ण, सुशिक्षित।”
सरल, और... यह जितना भावनात्मक रूप से जुड़ाव पैदा करता है जानकारीपूर्ण।"
— शिकागो ट्रिब्यून

“लॉन्ग वॉक से उभरने वाले नेल्सन मंडेला स्वतंत्रता... किसी प्रतीक की तुलना में कहीं अधिक मानवीय है।
दंतकथा।"
— न्यूयॉर्क टाइम्स बुक रिव्यू
‘उदारता’, ‘दृढ़ता’ और ‘धैर्य’ जैसे शब्द गूंजते हैं

मंडेला के जीवन और संघर्ष के इस मार्मिक वृत्तांत के माध्यम से…। उस व्यक्ति को सलाम जिसने इतनी देर तक प्रतीक्षा की और जो जानता था जिसका इंतजार करना सार्थक होगा। मंडेला जिंदाबाद!
— ग्लोब एंड मेल

"दक्षिण अफ्रीका के हालिया इतिहास का एक आकर्षक ताना-बाना जो
पहले पन्नों से ही पाठक को बांधे रखता है…। बेहद दिलचस्प और
कभी-कभी बेहद ईमानदारी से।" — सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल

“20 वीं सदी की सबसे असाधारण राजनीतिक कहानियों में से एक”
यह सदी भर चलने वाली और वास्तव में किसी भी व्यक्ति के लिए निवेश के लायक है।
महानता की उत्पत्ति में रुचि रखने वाले लोग।"
— फाइनेंशियल टाइम्स (लंदन)

“एक असाधारण जीवन की अत्यंत मार्मिक गाथा”

बीसवीं सदी।"
— क्रिश्चियन साइंस मॉनिटर

“एक ऐसे व्यक्ति का काम जिसने अपने कार्यों और उदाहरण से नेतृत्व किया है — एक
वह व्यक्ति हमारे कुछ सच्चे नायकों में से एक है।"
— किर्कस

"मंडेला दुर्लभ और मार्मिक स्पष्टता के साथ लिखते हैं।"

— द इकोनॉमिस्ट

“[यह] नेल्सन के असाधारण जीवन को मार्मिक ढंग से दर्ज करता है रोलिहलाहला मंडेला… ये पन्ने नाटकीय रूप से जीवंत हो उठते हैं।
— लंदन संडे टाइम्स

“एक सच्चा रत्न। एक अद्भुत यात्रा जो अवश्य करनी चाहिए।”
— पोर्टलैंड ओरेगोनियन

“यह किताब आपकी ‘जरूर पढ़ने वाली’ किताबों की सूची में होनी चाहिए… आज की दुनिया में
नायकों और आदर्शों की तलाश में, यहाँ एक मिल ही जाएगा। यहाँ।"

— एडमोंटन जर्नल

नेल्सन मंडेला की रोमांचक यात्रा के बारे में पढ़ना... एक अद्भुत अनुभव है। अदम्य मानवीय भावना की याद दिलाता है। फिर भी यह याद दिलाता है कि
इसे इतनी शालीनता और सूक्ष्मता से प्रस्तुत किया गया है कि यह इसके प्रभाव को और भी तीव्र कर देता है। अर्थ।"
— सैन डिएगो यूनियन-ट्रिब्यून

“लॉन्ग वॉक टू फ्रीडम” उन दुर्लभ पुस्तकों में से एक है जो
यह न केवल एक कसौटी है बल्कि हमारी मानवता की एक शर्त भी है।"
— न्यूयॉर्क संडे न्यूजडे

“मानव जाति के लिए एक मार्गदर्शिका…। इसे हर किसी को पढ़ना चाहिए।” व्यक्ति जीवित है।"
— बोस्टन ग्लोब

“यह प्रवाहमय संस्मरण मंडेला की गरिमामय शालीनता को बुद्धिमत्ता के साथ बखूबी दर्शाता है।”
उनके जीवन और उस स्वतंत्रता संग्राम पर एक चिंतन जिसने उनके जीवन को परिभाषित किया।
— पब्लिशर्स वीकली

“एक जीवन और एक उद्देश्य का गंभीर विवरण… अद्भुत अंतर्दृष्टि”
उस व्यक्ति में जो अपने देश का संयुक्त वाशिंगटन है,
लिंकन और गांधी।"
— मॉन्ट्रियल गजेट

“एक बेहद दिलचस्प अंदरूनी नज़रिया…। बेहद रोचक और कभी-कभी
बेहद ईमानदारी से।
— सैन फ्रांसिस्को क्रॉनिकल

यह संस्मरण समृद्ध, आकर्षक, विचारशील और सूचनात्मक, जैसा कि किसी व्यक्ति द्वारा लिखित या लिखित होने की संभावना वाली कोई भी सामग्री होती है।
विश्व मंच पर समकालीन राजनीतिज्ञ।
— पुस्तक पृष्ठ

“एक महाकाव्य गाथा… उतनी ही रोमांचक जितनी 1990 का वह गौरवशाली दिन जब मंडेला शांतिपूर्वक जेल से बाहर निकलकर स्वतंत्रता और नेतृत्व की ओर बढ़े।”
— क्लीवलैंड प्लेन डीलर

मैं यह पुस्तक अपने छह बच्चों, मदीबा और मकाज़िवे (मेरी पहली बेटी), जो अब इस दुनिया में नहीं हैं, और मकागाथो, मकाज़िवे, ज़ेनानी और ज़िंदज़ी को समर्पित करता हूँ, जिनके समर्थन और प्यार को मैं अनमोल मानता हूँ; अपने इक्कीस पोते-पोतियों और तीन परपोते-परपोतियों को, जिनसे मुझे बहुत खुशी मिलती है; और अपने सभी साथियों, दोस्तों और साथी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों को, जिनकी मैंने सेवा की है और जिनका साहस, दृढ़ संकल्प और देशभक्ति मेरी प्रेरणा का स्रोत बनी हुई है।

स्वीकृतियाँ

जैसा कि पाठकों को पता चलेगा, इस पुस्तक का एक लंबा इतिहास है। मैंने इसे 1974 में रॉबेन द्वीप पर अपनी कैद के दौरान गुप्त रूप से लिखना शुरू किया था। मेरे पुराने साथियों वाल्टर सिसुलु और अहमद कथराडा के अथक परिश्रम के बिना, जिन्होंने मेरी यादों को ताजा किया, यह कहना मुश्किल है कि पांडुलिपि पूरी हो पाती। पांडुलिपि की जो प्रति मैंने अपने पास रखी थी, वह अधिकारियों द्वारा खोज ली गई और जब्त कर ली गई। हालांकि, अपने अद्वितीय सुलेख कौशल के अलावा, मेरे सह-कैदी मैक महाराज और इसु चिबा ने यह सुनिश्चित किया कि मूल पांडुलिपि सुरक्षित रूप से अपने गंतव्य तक पहुंच जाए। 1990 में जेल से रिहा होने के बाद मैंने इस पर काम फिर से शुरू किया।
रिहाई के बाद से मेरा समय कई कर्तव्यों और जिम्मेदारियों से भरा रहा है, जिसके कारण मुझे लेखन के लिए बहुत कम समय मिला है। सौभाग्य से, मुझे समर्पित सहकर्मियों, मित्रों और पेशेवरों का सहयोग मिला है, जिनकी मदद से मैंने अंततः अपना काम पूरा किया है, और मैं उन सभी के प्रति अपनी कृतज्ञता व्यक्त करना चाहता हूँ।
मैं रिचर्ड स्टेंगल का तहे दिल से आभारी हूँ जिन्होंने इस पुस्तक के निर्माण में मेरे साथ सहयोग किया, पहले भागों के संपादन और संशोधन में तथा बाद के भागों के लेखन में अमूल्य सहायता प्रदान की। मुझे ट्रांसकेई में हमारी सुबह की सैर और जोहान्सबर्ग के शेल हाउस और हॉटन स्थित मेरे घर में हुए साक्षात्कारों के कई घंटे बहुत अच्छे से याद हैं। मैरी फाफ का विशेष आभार जिन्होंने रिचर्ड के काम में सहायता की। मुझे फातिमा मीर, पीटर मागुबेन, नादिन गोर्डिमर और इजेकील म्फाहलेल के परामर्श और समर्थन से भी लाभ हुआ है।
मैं विशेष रूप से अपने साथी अहमद कथरादा को कहानी को संशोधित करने, उसमें सुधार करने और उसे सटीक बनाने में बिताए गए अथक परिश्रम के लिए धन्यवाद देना चाहता हूँ। मेरे एएनसी कार्यालय के कर्मचारियों का भी बहुत-बहुत धन्यवाद, जिन्होंने धैर्यपूर्वक इस पुस्तक के निर्माण से संबंधित सभी व्यवस्थाओं को संभाला, और विशेष रूप से बारबरा मासेकेला का उनके कुशल समन्वय के लिए। इसी प्रकार, इकबाल मीर ने पुस्तक के व्यावसायिक पहलुओं की

देखरेख में कई घंटे समर्पित किए हैं। मैं अपने संपादक, लिटिल, ब्राउन के विलियम फिलिप्स का आभारी हूँ, जिन्होंने 1990 की शुरुआत से ही इस परियोजना का मार्गदर्शन किया और पाठ का संपादन किया, और उनके सहयोगियों जॉर्डन पावलिन, स्टीव श्नाइडर, माइक मैटिल और डोना पीटरसन का भी धन्यवाद। मैं पांडुलिपि की तथ्यात्मक समीक्षा के लिए प्रोफेसर गेल गेरहार्ट को भी धन्यवाद देना चाहता हूँ।

Walvis Bay
(SOUTH AFRICA)
JOHANNESBURG
NAMIBIA
(SOUTH WEST AFRICA)
Kimberley
Upington
S O
A F R
CAPE PROVINCE
De Aar
Victoria West
Vanrhynsdorp
Calvinia
ATLANTIC
OCEAN
ZIMBABWE
Messina
BOTSWANA
(BECHUANALAND)
MOZAMBIQUE
Pietersburg
Nylstroom
TRANSVAAL
Rustenburg
Pretoria
Nelspruit
Johannesburg
Witbank
Mbabane
SWAZILAND
Vryburg
Klerksdorp
Standerton
Kroonstad
Vryheid
ORANGE
FREE
STATE
Bethlehem
Kimberley
Ladysmith
NATAL
Bloemfontein
Maseru
LESOTHO
(BASUTOLAND)
Durban
Port Shepstone
Middelburg
Umtata
Queenstown
East London
Port Elizabeth
INDIAN OCEAN
N

BOTSWANA
(BECHUANALAND)
ZIMBABWE
MOZAMBIQUE
Messina
Pietersburg
Nylstroom
TRANSVAAL
Rustenburg
Pretoria
Nelspruit
Johannesburg
Witbank
Mbabane
SWAZILAND
Vryburg
Klerksdorp
Standerton
Kroonstad
Vryheid
ORANGE FREE STATE
Bethlehem
Kimberley
Ladysmith
NATAL
Bloemfontein
Maseru
LESOTHO
(BASUTOLAND)
Pietermaritzburg
Durban
Port Shepstone
Middleburg
Umtata
Queenstown
East London
Port Elizabeth
INDIAN OCEAN
N

भाग एक

एक देहाती बचपन

1

जीवन, मजबूत स्वास्थ्य और थेम्बू शाही परिवार से अटूट संबंध के अलावा, मेरे पिता ने जन्म के समय मुझे केवल एक नाम दिया था, रोलिहलाहला। ज़ोसा भाषा में, रोलिहलाहला का शाब्दिक अर्थ है "पेड़ की शाखा खींचना", लेकिन बोलचाल की भाषा में इसका अर्थ अधिक सटीक रूप से "मुसीबत खड़ी करने वाला" होगा। मैं नामों को भाग्य का कारण नहीं मानती या यह नहीं मानती कि मेरे पिता ने किसी तरह मेरा भविष्य जान लिया था, लेकिन बाद के वर्षों में, मेरे दोस्तों और रिश्तेदारों ने मेरे जन्म के नाम को उन तमाम तूफानों से जोड़ दिया जो मैंने पैदा किए और झेले भी। मेरा अधिक परिचित अंग्रेजी या ईसाई नाम मुझे स्कूल के पहले दिन तक नहीं दिया गया था। खैर, मैं विषय से भटक रही हूँ।
मेरा जन्म 18 जुलाई, 1918 को ट्रांसकेई की राजधानी उमटाटा जिले में मबाशे नदी के किनारे बसे एक छोटे से गाँव म्वेज़ो में हुआ था। मेरे जन्म का वर्ष प्रथम विश्व युद्ध की समाप्ति का वर्ष था; उस वर्ष इन्फ्लूएंजा महामारी फैली जिसने दुनिया भर में लाखों लोगों की जान ले ली; और अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के एक प्रतिनिधिमंडल ने दक्षिण अफ्रीका के लोगों की शिकायतों को वर्साय शांति सम्मेलन में उठाया। हालाँकि, म्वेज़ो एक अलग-थलग जगह थी, बड़ी घटनाओं की दुनिया से दूर एक छोटा सा इलाका, जहाँ जीवन सैकड़ों वर्षों से चली आ रही परंपरा के अनुसार ही चलता था।
ट्रांस्केई, केप टाउन से आठ सौ मील पूर्व और जोहान्सबर्ग से पांच सौ पचास मील दक्षिण में स्थित है। यह केई नदी और नेटाल सीमा के बीच, उत्तर में ऊबड़-खाबड़ ड्रेकेन्सबर्ग पर्वतमाला और पूर्व में हिंद महासागर के नीले पानी के बीच बसा है। यह लहरदार पहाड़ियों, उपजाऊ घाटियों और हजारों नदियों और झरनों से भरा एक सुंदर क्षेत्र है, जो सर्दियों में भी यहां की हरियाली बनाए रखता है। ट्रांस्केई कभी दक्षिण अफ्रीका के सबसे बड़े क्षेत्रीय विभाजनों में से एक था, जिसका क्षेत्रफल स्विट्जरलैंड के आकार का था, और यहां लगभग साढ़े तीन मिलियन खोसा लोग और बासोथो और श्वेत लोगों की एक छोटी अल्पसंख्यक आबादी रहती थी। यह थेम्बू लोगों का घर है, जो खोसा राष्ट्र का हिस्सा हैं, और मैं भी उसी राष्ट्र का सदस्य हूं।

मेरे पिता, गडला हेनरी म्फाकन्यिस्वा, वंश और परंपरा दोनों से मुखिया थे। उन्हें थेम्बू जनजाति के राजा द्वारा म्वेज़ो के मुखिया के रूप में नियुक्त किया गया था, लेकिन ब्रिटिश शासन के तहत, उनके चयन को सरकार द्वारा अनुमोदित किया जाना आवश्यक था, जो म्वेज़ो में स्थानीय मजिस्ट्रेट के रूप में कार्य करती थी। सरकार द्वारा नियुक्त मुखिया होने के नाते, वे वजीफे के साथ-साथ पशुधन के टीकाकरण और सामुदायिक चरागाह भूमि के लिए सरकार द्वारा समुदाय से लिए जाने वाले शुल्क के एक हिस्से के भी हकदार थे। यद्यपि मुखिया का पद आदरणीय और प्रतिष्ठित था, फिर भी पचहत्तर वर्ष पहले तक, एक निर्दयी श्वेत सरकार के नियंत्रण के कारण यह पदवी क्षीण हो चुकी थी। थेम्बू जनजाति का इतिहास बीस पीढ़ियों पहले राजा ज़्विडे तक जाता है। परंपरा के अनुसार, थेम्बू लोग ड्रेकेन्सबर्ग पर्वतमाला की तलहटी में रहते थे और सोलहवीं शताब्दी में तट की ओर पलायन कर गए, जहाँ वे खोसा राष्ट्र में समाहित हो गए। खोसा लोग न्गुनी लोगों का हिस्सा हैं, जो कम से कम ग्यारहवीं शताब्दी से दक्षिण अफ्रीका के समृद्ध और समशीतोष्ण दक्षिणपूर्वी क्षेत्र में, उत्तर में विशाल आंतरिक पठार और दक्षिण में हिंद महासागर के बीच, रहते, शिकार करते और मछली पकड़ते आ रहे हैं। न्गुनी लोगों को एक उत्तरी समूह - ज़ुलू और स्वाज़ी लोग - और एक दक्षिणी समूह में विभाजित किया जा सकता है, जो अमाबाका, अमाबोम्याना, अमागकालेका, अमाम्फेंगु, अमाम्पोडोमिस, अमाम्पोंडो, अबेसोथो और अबेथेम्बू से मिलकर बना है, और ये सभी मिलकर खोसा राष्ट्र का निर्माण करते हैं।
खोसा लोग एक स्वाभिमानी और पितृसत्तात्मक समुदाय हैं जिनकी भाषा भावपूर्ण और मधुर है तथा वे कानूनों, शिक्षा और शिष्टाचार के महत्व में दृढ़ विश्वास रखते हैं। खोसा समाज एक संतुलित और सामंजस्यपूर्ण सामाजिक व्यवस्था थी जिसमें प्रत्येक व्यक्ति अपना स्थान जानता था। प्रत्येक खोसा व्यक्ति एक गोत्र से संबंधित होता है जिसका वंश एक विशिष्ट पूर्वज से जुड़ा होता है। मैं मदीबा गोत्र का सदस्य हूँ, जिसका नाम अठारहवीं शताब्दी में ट्रांसकेई में शासन करने वाले थेम्बू सरदार के नाम पर रखा गया है। मुझे अक्सर मेरे गोत्र के नाम मदीबा से संबोधित किया जाता है, जो सम्मान का प्रतीक है।
थेम्बू जनजाति को एकजुट करने वाले महानतम सम्राटों में से एक, न्गुबेंगचुका का 1832 में निधन हो गया। प्रथा के अनुसार, उनकी पत्नियाँ

प्रमुख शाही घरानों से थीं: महान घराना, जिससे उत्तराधिकारी का चयन होता है, दायाँ हाथ घराना, और इक्सीबा, एक छोटा घराना जिसे कुछ लोग बायाँ हाथ घराना कहते हैं। शाही विवादों को निपटाना इक्सीबा या बाएँ हाथ घराने के पुत्रों का कार्य था। महान घराने के सबसे बड़े पुत्र मथिक्राकरा ने न्गुबेंगचुका का उत्तराधिकार संभाला और उनके पुत्रों में न्गांगेलिज़्वे और मातांज़िमा शामिल थे। सबाता, जिन्होंने 1954 से थेम्बू पर शासन किया, न्गांगेलिज़्वे के पोते और कालज़र दलिवोंगा से बड़े थे, जिन्हें के. डी. मातांज़िमा के नाम से जाना जाता है, जो ट्रांसकेई के पूर्व मुख्यमंत्री थे - मेरे भतीजे, विधि और रीति के अनुसार - जो मातांज़िमा के वंशज थे। इक्सीबा घराने के सबसे बड़े पुत्र सिमाकाडे थे, जिनके छोटे भाई मंडेला थे, जो मेरे दादा थे।
हालांकि दशकों से ऐसी कई कहानियां प्रचलित हैं कि मैं थेम्बू सिंहासन का उत्तराधिकारी था, लेकिन मैंने अभी जो सरल वंशावली प्रस्तुत की है, वह इन कहानियों को मिथक साबित करती है। हालांकि मैं शाही परिवार का सदस्य था, लेकिन मैं उन कुछ विशेषाधिकार प्राप्त लोगों में से नहीं था जिन्हें शासन के लिए प्रशिक्षित किया गया था। इसके बजाय, इक्सीबा वंश के वंशज के रूप में, मुझे अपने पिता की तरह ही जनजाति के शासकों को सलाह देने के लिए तैयार किया गया था।
मेरे पिता लंबे, सांवले रंग के, सीधे और गरिमामय कद-काठी वाले व्यक्ति थे, जो मुझे लगता है कि मुझे उनसे विरासत में मिले हैं। उनके माथे के ठीक ऊपर सफेद बालों का एक गुच्छा था, और बचपन में मैं उनकी नकल करते हुए सफेद राख लेकर अपने बालों में मल लेता था। मेरे पिता का स्वभाव सख्त था और बच्चों को अनुशासन सिखाने में वे कोई कसर नहीं छोड़ते थे। वे बेहद जिद्दी भी हो सकते थे, यह एक और गुण है जो शायद दुर्भाग्यवश पिता से पुत्र में आया है।
मेरे पिता को कभी-कभी 1900 के दशक के आरंभ में शासन करने वाले सबाता के पिता डालिंड्येबो और उनके उत्तराधिकारी जोंगिनताबा के शासनकाल के दौरान थेम्बुलैंड के प्रधानमंत्री के रूप में संदर्भित किया जाता है। यह एक गलत धारणा है क्योंकि ऐसा कोई पद मौजूद नहीं था, लेकिन उनकी भूमिका इस पदनाम से बहुत अलग नहीं थी। दोनों राजाओं के एक सम्मानित और विश्वसनीय सलाहकार के रूप में, वे उनकी यात्राओं में उनके साथ जाते थे और सरकारी अधिकारियों के साथ महत्वपूर्ण बैठकों के दौरान अक्सर उनके साथ पाए जाते थे। वे खोसा

इतिहास के एक मान्यता प्राप्त संरक्षक थे, और आंशिक रूप से इसी कारण से उन्हें एक सलाहकार के रूप में महत्व दिया जाता था। इतिहास में मेरी रुचि बचपन से ही थी और मेरे पिता ने इसे प्रोत्साहित किया। हालांकि मेरे पिता न तो पढ़ सकते थे और न ही लिख सकते थे, वे एक उत्कृष्ट वक्ता के रूप में जाने जाते थे जो अपने श्रोताओं का मनोरंजन करने के साथ-साथ उन्हें ज्ञान भी देते थे।
बाद के वर्षों में, मुझे पता चला कि मेरे पिता न केवल राजाओं के सलाहकार थे, बल्कि राजा बनाने वाले भी थे। 1920 के दशक में जोंगिलिज़्वे की असामयिक मृत्यु के बाद, उनकी महान पत्नी के शिशु पुत्र सबाता सिंहासन पर बैठने के लिए बहुत छोटे थे। इस बात पर विवाद खड़ा हो गया कि डालिंड्येबो के अन्य माताओं से जन्मे तीन सबसे बड़े पुत्रों - जोंगिनताबा, डाबुलमान्ज़ी और मेलिथाफा - में से किसे उनका उत्तराधिकारी चुना जाए। मेरे पिता से परामर्श लिया गया और उन्होंने जोंगिनताबा की सिफारिश की, क्योंकि वह सबसे अधिक शिक्षित थे। उन्होंने तर्क दिया कि जोंगिनताबा न केवल ताज के एक अच्छे संरक्षक होंगे, बल्कि युवा राजकुमार के लिए एक उत्कृष्ट मार्गदर्शक भी होंगे। मेरे पिता और कुछ अन्य प्रभावशाली सरदारों में शिक्षा के प्रति वह गहरा सम्मान था जो अक्सर अशिक्षित लोगों में पाया जाता है। यह सिफारिश विवादास्पद थी, क्योंकि जोंगिनताबा की माता एक छोटे परिवार से थीं, लेकिन अंततः मेरे पिता की पसंद को थेम्बू और ब्रिटिश सरकार दोनों ने स्वीकार कर लिया। समय आने पर, जोंगिनटाबा एक ऐसे तरीके से एहसान चुकाएगा जिसकी मेरे पिता तब कल्पना भी नहीं कर सकते थे।
कुल मिलाकर, मेरे पिता की चार पत्नियाँ थीं, जिनमें से तीसरी, मेरी माँ, नोसेकेनी फैनी, जो खोसा जनजाति के अमाम्पेमवु कबीले के नकेदामा की पुत्री थीं, राइट हैंड हाउस से थीं। इन सभी पत्नियों - मुख्य पत्नी, राइट हैंड पत्नी (मेरी माँ), लेफ्ट हैंड पत्नी और इक़ादी या सहायक परिवार की पत्नी - का अपना-अपना घर था। घर एक ऐसा निवास स्थान होता था जिसमें आमतौर पर जानवरों के लिए एक साधारण बाड़ा, फसल उगाने के लिए खेत और एक या एक से अधिक फूस की झोपड़ियाँ होती थीं। मेरे पिता की पत्नियों के घर कई मील दूर थे और वे उनके बीच आना-जाना करते थे। इन यात्राओं के दौरान, मेरे पिता के कुल तेरह बच्चे हुए, चार लड़के और नौ लड़कियाँ। मैं राइट हैंड हाउस का सबसे बड़ा बच्चा और अपने पिता के चार बेटों में सबसे छोटा हूँ। मेरी तीन बहनें

हैं, बालीवे, जो सबसे बड़ी लड़की थी, नोटांकू और मखुत्स्वाना। हालांकि मेरे पिता के पुत्रों में सबसे बड़े मलाहलवा थे, लेकिन उनके उत्तराधिकारी मुखिया डलिगकिली थे, जो महान घराने के पुत्र थे और जिनकी मृत्यु 1930 के दशक की शुरुआत में हो गई थी। मेरे अलावा उनके सभी पुत्र अब इस दुनिया में नहीं हैं, और वे सभी मुझसे न केवल उम्र में बल्कि पद में भी बड़े थे।

जब मैं नवजात शिशु ही था, तब मेरे पिता एक विवाद में उलझ गए, जिसके कारण उन्हें म्वेज़ो में अपना सरदार पद गंवाना पड़ा और उनके चरित्र का एक ऐसा पहलू सामने आया जो मुझे लगता है कि उन्होंने अपने बेटे को भी दिया। मेरा मानना है कि स्वभाव से ज़्यादा परवरिश व्यक्तित्व को आकार देती है, लेकिन मेरे पिता में एक गर्वित विद्रोही भाव और न्याय की दृढ़ भावना थी, जिसे मैं अपने आप में भी पहचानता हूँ। एक सरदार के रूप में—या मुखिया, जैसा कि गोरों के बीच अक्सर कहा जाता था—मेरे पिता को न केवल थेम्बू राजा को, बल्कि स्थानीय मजिस्ट्रेट को भी अपने दायित्वों का हिसाब देना पड़ता था। एक दिन मेरे पिता की एक प्रजा ने उनके खिलाफ एक बैल के बारे में शिकायत दर्ज कराई जो अपने मालिक से बिछड़ गया था। मजिस्ट्रेट ने मेरे पिता को अपने सामने पेश होने का आदेश देते हुए एक संदेश भेजा। जब मेरे पिता को यह समन मिला, तो उन्होंने यह जवाब भेजा: “एंडिज़ी, नदिसाकुला” (मैं नहीं आऊँगा, मैं अभी भी युद्ध की तैयारी कर रहा हूँ)। उन दिनों मजिस्ट्रेटों की अवज्ञा करना आम बात थी। इस तरह के व्यवहार को घोर गुस्ताखी माना जाएगा - और इस मामले में ऐसा ही हुआ।
मेरे पिता की प्रतिक्रिया से यह स्पष्ट था कि उनका मानना था कि मजिस्ट्रेट को उन पर कोई वैध अधिकार नहीं है। जनजातीय मामलों में, वे इंग्लैंड के राजा के कानूनों से नहीं, बल्कि थेम्बू रीति-रिवाजों से निर्देशित होते थे। यह अवज्ञा क्रोधवश नहीं, बल्कि सिद्धांतों का मामला था। वे एक मुखिया के रूप में अपने पारंपरिक विशेषाधिकार का दावा कर रहे थे और मजिस्ट्रेट के अधिकार को चुनौती दे रहे थे।
जब मजिस्ट्रेट को मेरे पिता का जवाब मिला, तो उन्होंने तुरंत उन पर अवज्ञा का आरोप लगा दिया। कोई पूछताछ या जांच नहीं हुई; यह काम तो श्वेत सरकारी

कर्मचारियों के लिए ही होता था। मजिस्ट्रेट ने सीधे मेरे पिता को पद से हटा दिया, और इस तरह मंडेला परिवार के मुखियापन का अंत हो गया।
उस समय मुझे इन घटनाओं की जानकारी नहीं थी, लेकिन मैं इनसे अछूता नहीं रहा। मेरे पिता, जो अपने समय के हिसाब से एक धनी रईस थे, अपनी सारी संपत्ति और उपाधि खो बैठे। उन्हें अपने अधिकांश पशुधन और ज़मीन के साथ-साथ उनसे मिलने वाली आय से भी वंचित कर दिया गया। हमारी तंगहाली के कारण, मेरी माँ म्वेज़ो के उत्तर में स्थित एक थोड़े बड़े गाँव कुनु में चली गईं, जहाँ उन्हें मित्रों और रिश्तेदारों का सहारा मिल सके। कुनु में हमारा जीवन सादा था, लेकिन उमटाटा के पास स्थित उस गाँव में ही मैंने अपने बचपन के सबसे सुखद वर्ष बिताए और यहीं से मेरी सबसे शुरुआती यादें जुड़ी हैं।

2

कुनु गाँव एक संकरी, घास से भरी घाटी में बसा था, जहाँ से स्वच्छ धाराएँ बहती थीं और चारों ओर हरी पहाड़ियाँ थीं। गाँव में कुछ सौ से ज़्यादा लोग नहीं रहते थे, जो मिट्टी की दीवारों से बनी मधुमक्खी के छत्ते जैसी झोपड़ियों में रहते थे। इन झोपड़ियों के बीच में एक लकड़ी का खंभा लगा होता था, जिस पर घास की नुकीली छत टिकी होती थी। फर्श चींटियों के टीले (चींटियों के झुंड के ऊपर खोदी गई मिट्टी का कठोर गुंबद) से बना होता था, जिसे नियमित रूप से ताज़ा गोबर से लेपकर चिकना रखा जाता था। चूल्हे का धुआँ छत से बाहर निकलता था, और अंदर जाने के लिए एक छोटा सा दरवाज़ा था, जिसमें से निकलने के लिए झुकना पड़ता था। झोपड़ियाँ आमतौर पर एक आवासीय क्षेत्र में समूह में बनी होती थीं, जो मक्के के खेतों से कुछ दूरी पर था। वहाँ कोई सड़कें नहीं थीं, केवल घास के बीच से होकर गुजरने वाले रास्ते थे, जिन पर नंगे पैर चलने वाले लड़के और लड़कियाँ चलते-चलते घिस गए थे। गाँव की औरतें और बच्चे गेरू रंग के कंबल ओढ़ते थे; गाँव में केवल कुछ ही ईसाई पश्चिमी शैली के कपड़े पहनते थे। मवेशी, भेड़ें, बकरियाँ और घोड़े एक साथ चरागाहों में चरते थे। कुनु के आसपास की ज़मीन लगभग पूरी तरह से वृक्षहीन थी, सिवाय गाँव के ऊपर स्थित एक पहाड़ी पर चिनार के पेड़ों के एक समूह के। ज़मीन स्वयं राज्य के स्वामित्व में थी। कुछ अपवादों को छोड़कर, उस समय दक्षिण अफ्रीका में अफ़्रीकी लोगों के पास ज़मीन का निजी स्वामित्व नहीं था, बल्कि वे किरायेदार थे जो सरकार को वार्षिक किराया देते थे। इस क्षेत्र में दो छोटे प्राथमिक विद्यालय, एक सामान्य दुकान और मवेशियों को कीड़ों और बीमारियों से मुक्त करने के लिए एक डुबकी लगाने का टैंक था। मक्का (जिसे हम मीलीज़ कहते थे और पश्चिमी लोग कॉर्न कहते हैं), ज्वार, फलियाँ और कद्दू हमारे भोजन का सबसे बड़ा हिस्सा थे। ऐसा इसलिए नहीं था कि हमें ये खाद्य पदार्थ विशेष रूप से पसंद थे, बल्कि इसलिए कि लोग इससे बेहतर कुछ भी खरीदने का सामर्थ्य नहीं रखते थे। हमारे गाँव के धनी परिवार अपने भोजन में चाय, कॉफ़ी और चीनी का सेवन करते थे, लेकिन कुनु गाँव के अधिकांश लोगों के लिए ये विलासिता की वस्तुएँ थीं, जो उनकी पहुँच से बहुत दूर थीं। खेती, खाना पकाने और कपड़े धोने के लिए पानी बाल्टियों में भरकर नदियों और

झरनों से लाया जाता था। यह काम महिलाओं का था, और वास्तव में, कुनु गाँव महिलाओं और बच्चों का गाँव था: अधिकांश पुरुष वर्ष का अधिकांश समय दूरदराज के खेतों में या रीफ़ के किनारे स्थित खानों में काम करते हुए बिताते थे। रीफ़ सोने से भरी चट्टानों और शेल की एक विशाल पर्वत श्रृंखला है जो जोहान्सबर्ग की दक्षिणी सीमा बनाती है। वे शायद साल में दो बार लौटते थे, मुख्य रूप से अपने खेतों की जुताई करने के लिए। निराई-गुड़ाई, खरपतवार निकालना और फसल काटना महिलाओं और बच्चों का काम था। गांव के बहुत कम लोग ही पढ़ना-लिखना जानते थे, और शिक्षा की अवधारणा अभी भी कई लोगों के लिए एक अपरिचित विषय थी।
मेरी माँ कुनु में तीन झोपड़ियों की देखरेख करती थीं, जो मुझे याद है, हमेशा मेरे रिश्तेदारों के बच्चों से भरी रहती थीं। सच कहूँ तो, मुझे शायद ही कोई ऐसा मौका याद हो जब मैं बचपन में अकेला रहा होऊँ। अफ़्रीकी संस्कृति में, बुआ या मामा के बेटे-बेटियों को भाई-बहन माना जाता है, चचेरे भाई-बहन नहीं। हम रिश्तेदारों के बीच वैसा भेदभाव नहीं करते जैसा गोरे लोग करते हैं। हमारे यहाँ सौतेले भाई-बहन नहीं होते। मेरी माँ की बहन मेरी माँ है; मेरे मामा का बेटा मेरा भाई है; मेरे भाई का बच्चा मेरा बेटा-बेटी है। मेरी माँ की तीन झोपड़ियों में से एक खाना पकाने के लिए, एक सोने के लिए और एक सामान रखने के लिए इस्तेमाल होती थी। जिस झोपड़ी में हम सोते थे, उसमें पश्चिमी देशों के फर्नीचर नहीं थे। हम चटाई पर सोते थे और ज़मीन पर बैठते थे। मुझे तकियों का पता तब तक नहीं चला जब तक मैं म्क़्हेकेज़वेनी नहीं गया। मेरी माँ झोपड़ी के बीच में या बाहर खुली आग पर तीन टांगों वाले लोहे के बर्तन में खाना पकाती थीं। हम जो कुछ भी खाते थे, वह हम खुद उगाते और बनाते थे। मेरी माँ मक्का खुद बोती और काटती थीं। मक्का खेत से तब तोड़ा जाता था जब वह सख्त और सूखा होता था। उसे बोरियों में या ज़मीन में खोदे गए गड्ढों में रखा जाता था। मक्का तैयार करते समय औरतें अलग-अलग तरीके अपनाती थीं। वे दो पत्थरों के बीच मक्के के दानों को पीसकर रोटी बनाती थीं, या पहले मक्के को उबालकर उमफोथुलो (खट्टे दूध के साथ खाया जाने वाला मक्के का आटा) या उमंगकुशो (सैंप, कभी-कभी सादा या फलियों के साथ मिलाकर) बनाती थीं। मक्के के विपरीत, जिसकी कभी-कभी कमी हो जाती थी, हमारी गायों और बकरियों का दूध हमेशा भरपूर मात्रा में उपलब्ध रहता था।

बचपन से ही मैं अपना ज़्यादातर खाली समय गाँव के दूसरे लड़कों के साथ मैदान में खेलने-कूदने और लड़ने में बिताता था। जो लड़का घर पर माँ की गोद में बैठा रहता था, उसे कमज़ोर समझा जाता था। रात को मैं इन्हीं लड़कों के साथ खाना और कंबल बाँटता था। पाँच साल का होने से पहले ही मैं चरवाहा बन गया और खेतों में भेड़-बकरियों और बछड़ों की देखभाल करने लगा। मैंने ज़ोसा लोगों का मवेशियों के प्रति एक रहस्यमय लगाव देखा, न केवल भोजन और धन के स्रोत के रूप में, बल्कि ईश्वर के आशीर्वाद और खुशी के स्रोत के रूप में भी। खेतों में ही मैंने गुलेल से पक्षियों को गिराना, जंगली शहद, फल और खाने योग्य जड़ें इकट्ठा करना, गाय के थन से सीधा गर्म, मीठा दूध पीना, साफ़, ठंडे झरनों में तैरना और धागे व नुकीले तारों से मछली पकड़ना सीखा। मैंने लाठी चलाना सीखा—जो किसी भी ग्रामीण अफ्रीकी लड़के के लिए आवश्यक ज्ञान है—और इसकी विभिन्न तकनीकों में निपुण हो गया, जैसे वार रोकना, एक दिशा में चकमा देकर दूसरी दिशा में प्रहार करना, और फुर्तीले कदमों से प्रतिद्वंद्वी से बच निकलना। इन्हीं दिनों से मुझे खुले मैदानों, प्रकृति की सरल सुंदरता और क्षितिज की निर्मल रेखा से प्रेम हो गया।
बचपन में हमें ज्यादातर अपनी मर्जी से खेलने की छूट थी। हम खुद बनाए खिलौनों से खेलते थे। हम मिट्टी से जानवरों और पक्षियों की मूर्तियां बनाते थे। हम पेड़ों की डालियों से बैलगाड़ी बनाते थे। प्रकृति ही हमारा खेल का मैदान थी। कुनु के ऊपर की पहाड़ियां बड़े-बड़े चिकने पत्थरों से भरी थीं, जिन्हें हम अपना रोलर कोस्टर बना लेते थे। हम सपाट पत्थरों पर बैठकर उन बड़े पत्थरों पर फिसलते थे। हम तब तक ऐसा करते रहे जब तक हमारी कमर इतनी दुखने लगी कि हम मुश्किल से बैठ पाते थे। मैंने बछड़ों की पीठ पर बैठकर सवारी करना सीखा - कई बार जमीन पर गिरने के बाद, मुझे इसका तरीका समझ आ गया।
एक दिन एक उद्दंड गधे से मुझे सबक मिला। हम बारी-बारी से उसकी पीठ पर चढ़- उतर रहे थे और जब मेरी बारी आई तो मैं उस पर कूद गया और गधा पास की एक कंटीली झाड़ी में घुस गया। उसने अपना सिर झुकाकर मुझे नीचे गिराने की कोशिश की, और वह गिर भी गया, लेकिन इससे पहले कि कंटीलों ने मेरे चेहरे पर खरोंचें मार दीं और मुझे अपने दोस्तों के सामने शर्मिंदा कर दिया। पूर्वी अफ्रीका के लोगों की तरह, अफ्रीकियों में भी आत्मसम्मान की भावना बहुत प्रबल होती है, जिसे चीनी भाषा में "इज्जत" कहते हैं। मेरे दोस्तों के बीच

एक बूढ़ी औरत आई जिसकी आँखों में भयानक मोतियाबिंद था। औरत ने यात्री से मदद माँगी, लेकिन उसने अपनी नज़रें फेर लीं। फिर एक और आदमी आया और बूढ़ी औरत उसके पास गई। उसने उससे अपनी आँखें साफ करने को कहा, और यद्यपि उसे यह काम अप्रिय लगा, फिर भी उसने वैसा ही किया। फिर चमत्कारिक रूप से बूढ़ी औरत की आँखों से मोतियाबिंद हट गया और वह जवान और सुंदर हो गई। उस आदमी ने उससे शादी कर ली और धनवान और समृद्ध हो गया। यह एक सरल कहानी है, लेकिन इसका संदेश चिरस्थायी है: सद्गुण और उदारता का फल ऐसे तरीकों से मिलता है जिनकी कल्पना भी नहीं की जा सकती।
सभी ज़ोसा बच्चों की तरह, मैंने भी मुख्य रूप से अवलोकन के माध्यम से ज्ञान प्राप्त किया। हमें नकल और अनुकरण के माध्यम से सीखना सिखाया गया था, न कि प्रश्नों के माध्यम से। जब मैंने पहली बार गोरों के घरों का दौरा किया, तो मैं अक्सर बच्चों द्वारा अपने माता-पिता से पूछे जाने वाले प्रश्नों की संख्या और उनके उत्तर देने की उनकी अटूट तत्परता को देखकर अचंभित रह जाता था। मेरे घर में, प्रश्नों को एक झंझट माना जाता था; वयस्क अपनी आवश्यकतानुसार ही जानकारी देते थे।
मेरा जीवन, और उस समय के अधिकांश खोसा लोगों का जीवन, रीति-रिवाजों, परंपराओं और वर्जनाओं से निर्धारित था। यही हमारे अस्तित्व का मूल आधार था, और इस पर कोई सवाल नहीं उठाया जाता था। पुरुष अपने पिता द्वारा निर्धारित मार्ग का अनुसरण करते थे; महिलाएं अपनी माताओं के समान जीवन जीती थीं। बिना बताए ही, मैंने पुरुषों और महिलाओं के बीच संबंधों को नियंत्रित करने वाले जटिल नियमों को शीघ्र ही आत्मसात कर लिया। मैंने जाना कि कोई पुरुष उस घर में प्रवेश नहीं कर सकता जहाँ किसी महिला ने हाल ही में बच्चे को जन्म दिया हो, और नवविवाहित महिला बिना किसी औपचारिक समारोह के अपने नए घर के प्रांगण में प्रवेश नहीं कर सकती। मैंने यह भी सीखा कि पूर्वजों की उपेक्षा करने से दुर्भाग्य और जीवन में असफलता आती है। यदि आपने किसी भी प्रकार से अपने पूर्वजों का अपमान किया है, तो उस गलती का प्रायश्चित करने का एकमात्र तरीका किसी पारंपरिक वैद्य या कबीले के बुजुर्ग से परामर्श करना था, जो पूर्वजों से संवाद करते थे और उनसे गहरी क्षमा मांगते थे। ये सभी मान्यताएँ मुझे पूर्णतः स्वाभाविक लगती थीं। कुनु में एक लड़के के रूप में मेरी नज़र कुछ ही गोरों से पड़ी। ज़ाहिर है, स्थानीय मजिस्ट्रेट और पास का दुकानदार गोरा था। कभी-कभार गोरे यात्री या

पुलिसकर्मी हमारे इलाके से गुज़रते थे। ये गोरे मुझे देवताओं के समान महान लगते थे, और मैं जानता था कि उनके प्रति भय और सम्मान का मिलाजुला भाव रखना चाहिए। लेकिन मेरे जीवन में उनकी भूमिका बहुत दूर की थी, और मैंने आम तौर पर गोरे लोगों के बारे में या अपने लोगों और इन विचित्र और दूर के लोगों के बीच संबंधों के बारे में बहुत कम या बिल्कुल भी नहीं सोचा। कुनु में हमारे छोटे से संसार में विभिन्न कबीलों या जनजातियों के बीच एकमात्र प्रतिद्वंद्विता खोसा और अमाम्फेंगु के बीच थी, जिनमें से कुछ लोग हमारे गाँव में रहते थे। अमाम्फेंगु लोग शाका ज़ुलू की सेनाओं से भागकर पूर्वी केप पहुँचे थे। यह घटना 1820 से 1840 के बीच हुए युद्धों और पलायनों की एक बड़ी लहर थी, जो शाका और ज़ुलू राज्य के उदय के साथ शुरू हुई थी। इस दौरान ज़ुलू योद्धा ने सभी जनजातियों को जीत कर सैन्य शासन के तहत एकजुट करने का प्रयास किया। अमाम्फेंगु, जो मूल रूप से खोसा भाषा नहीं बोलते थे, इम्फेंगु से भागे हुए शरणार्थी थे और उन्हें ऐसे काम करने के लिए मजबूर किया गया था जो कोई अन्य अफ्रीकी नहीं करता था। उन्होंने श्वेत लोगों के खेतों और व्यवसायों में काम किया, जिसे अधिक स्थापित खोसा जनजातियों द्वारा नीचा देखा जाता था। लेकिन अमाम्फेंगु मेहनती लोग थे, और यूरोपीय लोगों के संपर्क में रहने के कारण, वे अक्सर अन्य अफ्रीकियों की तुलना में अधिक शिक्षित और "पश्चिमी" थे।
जब मैं छोटा था, तब अमाम्फेंगु समुदाय का सबसे उन्नत वर्ग था और उन्हीं से हमें पादरी, पुलिसकर्मी, शिक्षक, क्लर्क और दुभाषिए मिलते थे। वे ईसाई धर्म अपनाने वाले, बेहतर घर बनाने वाले और कृषि के वैज्ञानिक तरीकों का इस्तेमाल करने वाले पहले लोगों में से थे, और अपने खोसा साथियों से अधिक धनी थे। उन्होंने मिशनरियों के इस सिद्धांत को पुष्ट किया कि ईसाई होना ही सभ्य होना है और सभ्य होना ही ईसाई होना है। अमाम्फेंगु के प्रति कुछ शत्रुता अभी भी मौजूद थी, लेकिन अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे लगता है कि यह जनजातीय द्वेष से अधिक ईर्ष्या का परिणाम था। जनजातीयवाद का यह स्थानीय रूप जिसे मैंने बचपन में देखा, अपेक्षाकृत हानिरहित था। उस समय मैंने उन हिंसक जनजातीय प्रतिद्वंद्विताओं को न तो देखा था और न ही उनका कोई आभास था, जिन्हें बाद में दक्षिण अफ्रीका के श्वेत शासकों द्वारा बढ़ावा दिया गया।

मेरे पिता अमाम्फेंगु के प्रति स्थानीय पूर्वाग्रहों से सहमत नहीं थे और उन्होंने जॉर्ज और बेन म्बेकेला नामक दो अमाम्फेंगु भाइयों से मित्रता की। ये दोनों भाई कुनु में अपवाद थे: वे शिक्षित और ईसाई थे। दोनों भाइयों में बड़े जॉर्ज एक सेवानिवृत्त शिक्षक थे और बेन एक पुलिस सार्जेंट थे। म्बेकेला भाइयों के धर्म प्रचार के बावजूद, मेरे पिता ईसाई धर्म से दूर रहे और इसके बजाय उन्होंने अपना विश्वास खोसा लोगों के महान देवता, क़माता, अपने पूर्वजों के ईश्वर में रखा। मेरे पिता एक अनौपचारिक पुजारी थे और बकरियों और बछड़ों के अनुष्ठानिक वध का संचालन करते थे तथा स्थानीय पारंपरिक अनुष्ठानों में भाग लेते थे जो बुवाई, कटाई, जन्म, विवाह, दीक्षा समारोह और अंत्येष्टि से संबंधित थे। उन्हें दीक्षा लेने की आवश्यकता नहीं थी, क्योंकि खोसा लोगों के पारंपरिक धर्म की विशेषता एक ब्रह्मांडीय समग्रता है, इसलिए पवित्र और सांसारिक, प्राकृतिक और अलौकिक के बीच बहुत कम अंतर है।
हालांकि म्बेकेला बंधुओं के विश्वास का मेरे पिता पर कोई प्रभाव नहीं पड़ा, लेकिन इसने मेरी माँ को प्रेरित किया और वे ईसाई बन गईं। वास्तव में, फैनी उनका ईसाई नाम था, क्योंकि चर्च में ही उन्हें यह नाम दिया गया था। म्बेकेला बंधुओं के प्रभाव के कारण ही मेरा बपतिस्मा मेथोडिस्ट चर्च (जिसे उस समय वेस्लेयन चर्च के नाम से जाना जाता था) में हुआ और मुझे स्कूल भेजा गया। बंधुआ अक्सर मुझे खेलते या भेड़ चराते हुए देखते और मुझसे बात करने आते। एक दिन, जॉर्ज म्बेकेला मेरी माँ से मिलने आए। उन्होंने कहा, “आपका बेटा बहुत होशियार है। उसे स्कूल जाना चाहिए।” मेरी माँ चुप रहीं। मेरे परिवार में किसी ने भी कभी स्कूल नहीं किया था और म्बेकेला के सुझाव के लिए मेरी माँ तैयार नहीं थीं। लेकिन उन्होंने यह बात मेरे पिता को बताई, जिन्होंने अपनी अशिक्षा के बावजूद - या शायद इसी वजह से - तुरंत फैसला किया कि उनके सबसे छोटे बेटे को स्कूल भेजा जाना चाहिए।
कुनु से पहाड़ी के दूसरी ओर, स्कूल की इमारत एक ही कमरे की थी, जिसकी छत पश्चिमी शैली की थी। मैं सात साल का था, और स्कूल शुरू होने से एक दिन पहले, मेरे पिता ने मुझे एक तरफ ले जाकर कहा कि मुझे स्कूल के लिए ठीक से कपड़े पहनने होंगे। उस समय तक, मैं, कुनु के बाकी सभी लड़कों की तरह, केवल एक कंबल ओढ़ता था, जिसे एक कंधे पर लपेटकर कमर पर पिन से बांधा जाता था। मेरे पिता ने अपनी एक पतलून ली और उसे घुटने से काट दिया। उन्होंने मुझे उसे पहनने को

कहा, जो मैंने पहना, और वह लगभग सही लंबाई की थी, हालांकि कमर बहुत ढीली थी। फिर मेरे पिता ने एक डोरी ली और पतलून को कमर से कस दिया। मैं शायद एक हास्यास्पद दृश्य रहा होऊंगा, लेकिन मेरे पास आज तक कोई ऐसा सूट नहीं रहा जिसे पहनकर मुझे अपने पिता की कटी हुई पतलून से ज्यादा गर्व हुआ हो। स्कूल के पहले दिन, मेरी शिक्षिका, मिस मडिंगेन ने हममें से प्रत्येक को एक अंग्रेज़ी नाम दिया और कहा कि अब से स्कूल में हमें इसी नाम से पुकारा जाएगा। उन दिनों अफ़्रीकी लोगों में यही रिवाज़ था और निस्संदेह यह हमारी शिक्षा में ब्रिटिश पूर्वाग्रह के कारण था। मुझे जो शिक्षा मिली वह ब्रिटिश शिक्षा थी, जिसमें ब्रिटिश विचारों, ब्रिटिश संस्कृति और ब्रिटिश संस्थानों को स्वतः ही श्रेष्ठ मान लिया जाता था। अफ़्रीकी संस्कृति जैसी कोई चीज़ थी ही नहीं।
मेरी पीढ़ी के अफ़्रीकी लोग—और आज भी—आम तौर पर अंग्रेज़ी और अफ़्रीकी दोनों नाम रखते हैं। गोरे लोग अफ़्रीकी नाम का उच्चारण करने में असमर्थ या अनिच्छुक थे, और इसे असभ्य मानते थे। उस दिन, मिस मडिंगेन ने मुझे बताया कि मेरा नया नाम नेल्सन है। उन्होंने मुझे यह नाम क्यों दिया, यह मुझे नहीं पता। शायद इसका संबंध महान ब्रिटिश समुद्री कप्तान लॉर्ड नेल्सन से हो, लेकिन यह केवल एक अनुमान है।

3

एक रात, जब मैं नौ साल का था, मुझे घर में हलचल सुनाई दी। मेरे पिता, जो बारी-बारी से अपनी पत्नियों से मिलने आते थे और आमतौर पर महीने में लगभग एक सप्ताह के लिए हमारे पास आते थे, आ गए थे। लेकिन वे अपने तय समय पर नहीं आए थे, क्योंकि उन्हें अभी कुछ और दिन हमारे साथ रहना था। मैंने उन्हें अपनी माँ की झोपड़ी में ज़मीन पर पीठ के बल लेटे हुए पाया, और ऐसा लग रहा था जैसे उन्हें लगातार खांसी आ रही हो। मेरी छोटी आँखों से भी यह स्पष्ट था कि मेरे पिता अब ज़्यादा दिन जीवित नहीं रहेंगे। उन्हें फेफड़ों की कोई बीमारी थी, लेकिन उसका निदान नहीं हो पाया था, क्योंकि मेरे पिता ने कभी डॉक्टर को नहीं दिखाया था। वे कई दिनों तक झोपड़ी में बिना हिले-डुले और बिना कुछ बोले रहे, और फिर एक रात उनकी हालत अचानक बिगड़ गई। मेरी माँ और मेरे पिता की सबसे छोटी पत्नी, नोदायिमानी, जो हमारे साथ रहने आई थीं, उनकी देखभाल कर रही थीं, और उस रात देर से उन्होंने नोदायिमानी को बुलाया। उन्होंने उससे कहा, "मेरा तंबाकू ले आओ।" मेरी माँ और नोदायिमानी ने आपस में सलाह-मशविरा किया और फैसला किया कि उनकी इस हालत में उन्हें तंबाकू देना ठीक नहीं होगा। लेकिन मेरे पिता लगातार तंबाकू मांगते रहे, और आखिरकार नोदायिमानी ने उनकी पाइप में तंबाकू भरी, उसे जलाया और फिर उन्हें दे दी। मेरे पिता ने तंबाकू पी और शांत हो गए। उन्होंने शायद एक घंटे तक तंबाकू पी और फिर, जलती हुई पाइप के साथ ही, उनका निधन हो गया।
मुझे इतना गहरा दुख तो याद नहीं, लेकिन ऐसा लगा जैसे मैं बिल्कुल अलग-थलग पड़ गई हूँ। हालाँकि मेरी माँ मेरे जीवन का केंद्र थीं, फिर भी मैं अपने पिता के माध्यम से ही अपनी पहचान बनाती थी। मेरे पिता के देहांत ने मेरे पूरे जीवन को इस तरह बदल दिया जिसका मुझे उस समय अंदाजा भी नहीं था। थोड़े समय के शोक के बाद, मेरी माँ ने मुझे बताया कि मुझे कुनु छोड़ना होगा। मैंने उनसे यह नहीं पूछा कि क्यों, या मैं कहाँ जा रही हूँ।
मैंने अपना थोड़ा-बहुत सामान समेटा और एक सुबह हम पश्चिम की ओर अपने नए घर के लिए निकल पड़े। मुझे अपने पिता की याद से ज़्यादा उस दुनिया की याद आ रही थी जिसे मैं पीछे छोड़ रहा था। कुनु ही मेरी दुनिया थी, और मैं उससे वैसे ही बेहिसाब प्यार करता था जैसे कोई बच्चा अपने पहले घर से करता है।

स्थान, म्कहेकेज़वेनी था, थेम्बुलैंड की अस्थायी राजधानी, थेम्बु लोगों के कार्यवाहक शासक, मुखिया जोंगिनताबा डालिंड्येबो का शाही निवास।
जब मैं इस सारी भव्यता पर विचार कर रहा था, तभी एक विशाल मोटरगाड़ी पश्चिमी द्वार से गड़गड़ाती हुई गुजरी और छाया में बैठे लोग तुरंत उठ खड़े हुए। उन्होंने अपनी टोपियाँ उतारीं और फिर "बायेते आ-आ-आ, जोंगिनताबा!" (जय हो, जोंगिनताबा!) चिल्लाते हुए खड़े हो गए, जो खोसा लोगों द्वारा अपने मुखिया को दिया जाने वाला पारंपरिक अभिवादन था। मोटरगाड़ी से (मुझे बाद में पता चला कि यह शानदार वाहन एक फोर्ड वी8 था) एक छोटा, गठीला आदमी बाहर निकला, जिसने एक शानदार सूट पहना हुआ था। मैं देख सकता था कि उसमें एक ऐसे व्यक्ति का आत्मविश्वास और आचरण था जो अधिकार का प्रयोग करने का आदी था। उसका नाम उस पर बिल्कुल फिट बैठता था, क्योंकि जोंगिनताबा का शाब्दिक अर्थ है "वह जो पर्वत को देखता है", और वह एक मजबूत व्यक्तित्व वाला व्यक्ति था जिस पर सभी की निगाहें टिकी रहती थीं। उसका रंग सांवला था और चेहरा बुद्धिमान था, और उसने पेड़ के नीचे बैठे प्रत्येक व्यक्ति से सहजता से हाथ मिलाया, वे लोग जो बाद में मुझे पता चला कि थेम्बू न्याय न्यायालय के सर्वोच्च सदस्य थे। यही वह रीजेंट था जो अगले दस वर्षों तक मेरा संरक्षक और हितैषी बनने वाला था।
जोंगिनताबा और उनके दरबार को निहारते हुए उस क्षण मुझे ऐसा लगा जैसे कोई छोटा पौधा जड़ समेत ज़मीन से उखाड़कर एक तेज़ धारा के बीचोंबीच फेंक दिया गया हो, जिसका मैं विरोध नहीं कर सकता। मेरे मन में विस्मय और हैरानी का मिला-जुला भाव था। तब तक मेरे मन में अपने सुखों के सिवा कुछ नहीं था, अच्छी तरह खाने और एक कुशल लाठी-लड़ाकू बनने के अलावा कोई और महत्वाकांक्षा नहीं थी। मैंने धन, वर्ग, प्रसिद्धि या शक्ति के बारे में नहीं सोचा था। अचानक मेरे सामने एक नई दुनिया खुल गई। गरीब घरों के बच्चे अक्सर अपार धन-दौलत देखकर कई नए प्रलोभनों में फंस जाते हैं। मैं भी अपवाद नहीं था। मैंने महसूस किया कि मेरी कई स्थापित मान्यताएं और निष्ठाएं धीरे-धीरे कमजोर पड़ने लगीं। मेरे माता-पिता द्वारा बनाई गई पतली नींव हिलने लगी। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि जीवन में मेरे लिए एक कुशल लाठी- लड़ाकू बनने से कहीं अधिक संभावनाएं हैं।

* * *

मुझे बाद में पता चला कि मेरे पिता की मृत्यु के बाद, जोंगिनताबा ने मेरा संरक्षक बनने का प्रस्ताव रखा था। वह मेरे साथ वैसा ही व्यवहार करेंगे जैसा वे अपने अन्य बच्चों के साथ करते थे, और मुझे भी वही सुख-सुविधाएँ मिलेंगी जो उन्हें मिलती थीं। मेरी माँ के पास कोई विकल्प नहीं था; कोई भी शासक के ऐसे प्रस्ताव को ठुकरा नहीं सकता था। उन्हें इस बात का संतोष था कि यद्यपि वे मुझे याद करेंगी, लेकिन शासक की देखरेख में मेरा पालन-पोषण उनकी अपनी देखरेख की तुलना में कहीं अधिक लाभप्रद होगा। शासक यह नहीं भूले थे कि मेरे पिता के हस्तक्षेप के कारण ही वे कार्यवाहक सर्वोच्च प्रमुख बने थे।
मेरी माँ कुनु लौटने से पहले एक-दो दिन म्क़्हेकेज़वेनी में रहीं। हमारा विदा बिना किसी तामझाम के हुआ। उन्होंने न कोई उपदेश दिया, न ज्ञान की बातें कहीं, न ही चुंबन दिए। मुझे लगता है कि वह नहीं चाहती थीं कि उनके जाने से मुझे अकेलापन महसूस हो, इसलिए उन्होंने सादगी से बात की। मैं जानता था कि मेरे पिता चाहते थे कि मैं शिक्षित हो जाऊँ और दुनिया के लिए तैयार हो जाऊँ, और मैं कुनु में ऐसा नहीं कर सकता था। उनकी कोमल नज़र ही मेरे लिए पर्याप्त स्नेह और सहारा थी, और जाते समय उन्होंने मेरी ओर मुड़कर कहा, “उक़िनिसुफ़ोकोथो, क्वेदिनी!” (हिम्मत रखो, मेरे बेटे!) बच्चे अक्सर सबसे कम भावुक प्राणी होते हैं, खासकर जब वे किसी नए सुख में मग्न हों। मेरी प्यारी माँ और पहली दोस्त के जाते समय भी, मेरा मन अपने नए घर की खुशियों से भरा हुआ था। भला मैं कैसे हिम्मत न रखता? मैंने तो पहले से ही वह सुंदर नया पहनावा पहन रखा था जो मेरे अभिभावक ने मेरे लिए खरीदा था। मैं जल्दी ही म्क्वेकेज़वेनी के दैनिक जीवन में रम गया। एक बच्चा या तो बहुत जल्दी ढल जाता है, या बिल्कुल नहीं ढल पाता — और मैं उस महान स्थान से ऐसे घुलमिल गया था मानो वहीं पला-बढ़ा हो। मेरे लिए, वह एक जादुई राज्य था; सब कुछ आनंददायक था; कुनु में जो काम उबाऊ लगते थे, वे म्क्वेकेज़वेनी में रोमांचकारी बन गए। जब मैं स्कूल में नहीं होता था, तो मैं हल चलाने वाला, गाड़ी का मार्गदर्शक, और चरवाहा होता था। मैं घोड़ों की सवारी करता था, गुलेल से पक्षियों का शिकार करता था, और लड़कों के साथ तलवारबाजी करता था, और कुछ रातें मैं थेम्बू युवतियों के सुंदर गायन और तालियों की थाप पर

नाचते हुए बिताता था। हालाँकि मुझे कुनु और अपनी माँ की याद आती थी, मैं अपनी नई दुनिया में पूरी तरह से खो गया था।
मैं महल के बगल में स्थित एक कमरे वाले स्कूल में पढ़ता था और अंग्रेजी, खोसा, इतिहास और भूगोल की पढ़ाई करता था। हम चैम्बर्स इंग्लिश रीडर पढ़ते थे और काली स्लेट पर अपना पाठ करते थे। हमारे शिक्षक, श्री फदाना और बाद में श्री गिक्वा, मुझमें विशेष रुचि रखते थे। मैंने स्कूल में अपनी प्रतिभा के बल पर नहीं, बल्कि लगन के बल पर अच्छा प्रदर्शन किया। मेरी आत्म-अनुशासन को मेरी चाची फाथिवे ने और मजबूत किया, जो महल में रहती थीं और हर रात मेरे गृहकार्य की बारीकी से जाँच करती थीं।
मक़हेकेज़वेनी मेथोडिस्ट चर्च का एक मिशन केंद्र था और कुनु की तुलना में कहीं अधिक आधुनिक और पश्चिमीकृत था। लोग आधुनिक कपड़े पहनते थे। पुरुष सूट पहनते थे और महिलाएं मिशनरियों की तरह सख्त प्रोटेस्टेंट शैली अपनाती थीं: मोटी लंबी स्कर्ट और ऊँची गर्दन वाली ब्लाउज, कंधे पर कंबल और सिर पर करीने से लिपटा हुआ स्कार्फ।

अगर मक़हेकेज़वेनी की दुनिया शासक के इर्द-गिर्द घूमती थी, तो मेरी छोटी सी दुनिया उनके दो बच्चों के इर्द-गिर्द घूमती थी। न्याय, बड़ा भाई, उनका इकलौता बेटा और राजगद्दी का वारिस था, और नोमाफ़ू शासक की बेटी थी। मैं उनके साथ रहता था और मेरे साथ भी ठीक वैसा ही व्यवहार किया जाता था जैसा उनके साथ। हम एक ही खाना खाते थे, एक ही कपड़े पहनते थे, एक ही काम करते थे। बाद में हमारे साथ न्क्सेको भी शामिल हो गया, जो सिंहासन के वारिस सबाता का बड़ा भाई था। हम चारों ने मिलकर एक शाही चौकड़ी बनाई। शासक और उनकी पत्नी नो-इंग्लैंड ने मुझे अपने बच्चे की तरह पाला। वे मेरी चिंता करते थे, मेरा मार्गदर्शन करते थे और मुझे सज़ा भी देते थे, सब कुछ प्रेम और निष्पक्षता की भावना से। जोंगिनताबा सख्त थे, लेकिन मुझे उनके प्यार पर कभी शक नहीं हुआ। वे मुझे प्यार से तातोमखुलु कहते थे, जिसका अर्थ है "दादाजी", क्योंकि उनका कहना था कि जब मैं बहुत गंभीर होता था, तो मैं एक बूढ़े आदमी जैसा दिखता था।

जस्टिस मुझसे चार साल बड़े थे और मेरे पिता के बाद मेरे पहले हीरो बने। मैं हर तरह से उन्हें अपना आदर्श मानता था। वे पहले से ही क्लार्कबरी में पढ़ रहे थे, जो लगभग साठ मील दूर एक बोर्डिंग स्कूल था। लंबे, आकर्षक और मजबूत शरीर वाले जस्टिस एक बेहतरीन खिलाड़ी थे, जो ट्रैक एंड फील्ड, क्रिकेट, रग्बी और फुटबॉल में उत्कृष्ट प्रदर्शन करते थे। हंसमुख और मिलनसार स्वभाव के जस्टिस एक स्वाभाविक कलाकार थे, जो अपने गायन से दर्शकों को मंत्रमुग्ध कर देते थे और अपने बॉलरूम डांस से उन्हें मोहित कर लेते थे। उनकी कई महिला प्रशंसक थीं - लेकिन आलोचकों का एक समूह भी था, जो उन्हें दिखावटी और रंगीन मिजाज का व्यक्ति मानते थे। जस्टिस और मैं सबसे अच्छे दोस्त बन गए, हालांकि हम कई मायनों में एक-दूसरे से बिल्कुल अलग थे: वे बहिर्मुखी थे, मैं अंतर्मुखी; वे हंसमुख थे, मैं गंभीर। चीजें उनके लिए आसान थीं; मुझे खुद को प्रशिक्षित करना पड़ता था। मेरे लिए, वे हर वो गुण थे जो एक युवा को होना चाहिए और वो सब कुछ जो मैं बनना चाहता था। हालांकि हमारे साथ एक जैसा व्यवहार किया गया, लेकिन हमारी नियति अलग-अलग थी: जस्टिस को थेम्बू जनजाति के सबसे शक्तिशाली सरदारों में से एक का उत्तराधिकार प्राप्त होगा, जबकि मुझे वह सब कुछ प्राप्त होगा जो रीजेंट अपनी उदारता से मुझे देने का निर्णय करेगा।
मैं हर दिन रीजेंट के घर में छोटे-मोटे काम करने के लिए आता-जाता रहता था। रीजेंट के लिए किए जाने वाले कामों में से मुझे सबसे ज़्यादा आनंद उनके सूटों की इस्त्री करने में आता था, जिस काम में मुझे बहुत गर्व महसूस होता था। उनके पास आधा दर्जन पश्चिमी सूट थे, और मैं घंटों उनके पतलून की क्रीज़ बनाने में बिताता था। उनका महल, मानो टिन की छतों वाले दो बड़े पश्चिमी शैली के मकानों से बना था। उन दिनों, बहुत कम अफ्रीकियों के पास पश्चिमी शैली के मकान होते थे और उन्हें अपार धन का प्रतीक माना जाता था। मुख्य मकान के चारों ओर अर्धवृत्ताकार रूप में छह गोल झोपड़ियाँ बनी हुई थीं। उनमें लकड़ी के फर्श थे, जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। रीजेंट और रानी दाहिनी ओर वाली झोपड़ी में सोते थे, रानी की बहन बीच वाली में, और बाईं ओर वाली झोपड़ी भंडारगृह के रूप में काम करती थी। रानी की बहन की झोपड़ी के फर्श के नीचे एक मधुमक्खी का छत्ता था, और हम कभी-कभी एक-दो फर्श की तख्तियाँ उखाड़कर उसका शहद खाते थे। मेरे मक़हेकेज़वेनी में बसने के कुछ ही समय बाद, शासक और उनकी पत्नी उक्संडे (मध्यम घर) में रहने चले गए, जो

स्वतः ही महान घर बन गया। इसके पास तीन छोटे गोल-गोल घर थे: एक शासक की माँ के लिए, एक आगंतुकों के लिए, और एक जिसमें मैं और न्यायधीश रहते थे।

मक़हेकेज़वेनी में मेरे जीवन को निर्देशित करने वाले दो सिद्धांत थे सरदारी और चर्च। ये दोनों सिद्धांत एक जटिल सामंजस्य में विद्यमान थे, हालाँकि उस समय मैं इन्हें परस्पर विरोधी नहीं मानता था। मेरे लिए, ईसाई धर्म केवल विश्वासों की एक प्रणाली नहीं थी, बल्कि एक व्यक्ति का शक्तिशाली पंथ था: रेवरेंड मैट्योलो। मेरे लिए, उनकी प्रभावशाली उपस्थिति ईसाई धर्म के सभी आकर्षक पहलुओं का प्रतीक थी। वे रीजेंट के समान ही लोकप्रिय और प्रिय थे, और आध्यात्मिक मामलों में रीजेंट से श्रेष्ठ होने का तथ्य मुझ पर गहरा प्रभाव डालता था। लेकिन चर्च इस दुनिया के साथ-साथ परलोक के लिए भी उतना ही चिंतित था: मैंने देखा कि अफ़्रीकी लोगों की लगभग सभी उपलब्धियाँ चर्च के मिशनरी कार्यों के माध्यम से ही संभव हुई थीं। मिशन स्कूलों ने क्लर्कों, दुभाषियों और पुलिसकर्मियों को प्रशिक्षित किया, जो उस समय अफ़्रीकी आकांक्षाओं के शिखर का प्रतिनिधित्व करते थे। रेवरेंड मैट्योलो लगभग पचास वर्ष के हट्टे-कट्टे व्यक्ति थे, जिनकी आवाज़ गहरी और प्रभावशाली थी, जो उपदेश और गायन दोनों के लिए उपयुक्त थी। जब वे म्कहेकेज़वेनी के पश्चिमी छोर पर स्थित साधारण से गिरजाघर में उपदेश देते थे, तो हॉल हमेशा लोगों से खचाखच भरा रहता था। हॉल श्रद्धालुओं के जयगान से गूंज उठता था, जबकि महिलाएं उनके चरणों में घुटने टेककर मुक्ति की प्रार्थना करती थीं। जब मैं उस पवित्र स्थान पर पहुँचा, तो उनके बारे में मैंने जो पहली कहानी सुनी, वह यह थी कि रेवरेंड ने केवल एक बाइबल और एक लालटेन के बल पर एक खतरनाक भूत को भगा दिया था। मुझे इस कहानी में न तो कोई अविश्वासनीयता नज़र आई और न ही कोई विरोधाभास। रेवरेंड मैट्योलो द्वारा प्रचारित मेथोडिज़्म उग्र और कठोर था, जिसमें अफ्रीकी जीववाद का भी कुछ अंश समाहित था। प्रभु बुद्धिमान और सर्वशक्तिमान थे, लेकिन वे प्रतिशोधी ईश्वर भी थे जो किसी भी बुरे कर्म को बिना दंड के नहीं छोड़ते थे।
कुनु में, मैं केवल एक बार ही चर्च गया था, वह भी उस दिन जब मेरा बपतिस्मा हुआ था। धर्म मेरे लिए एक रस्म थी जिसे मैं अपनी माँ के लिए निभाता था और

जिसका मेरे लिए कोई खास महत्व नहीं था। लेकिन म्कहेकेज़वेनी में, धर्म मेरे जीवन का अभिन्न अंग था और मैं हर रविवार को रीजेंट और उनकी पत्नी के साथ चर्च जाता था। रीजेंट धर्म को बहुत गंभीरता से लेते थे। दरअसल, उन्होंने मुझे केवल एक बार तब पीटा था जब मैं रविवार की प्रार्थना में नहीं गया और दूसरे गाँव के लड़कों से लड़ाई करने चला गया था, यह गलती मैंने फिर कभी नहीं दोहराई।
पादरी के विरुद्ध किए गए मेरे अपराधों के लिए मुझे केवल यही एक फटकार नहीं मिली थी। एक दोपहर, मैं चुपके से पादरी माट्योलो के बगीचे में घुस गया और कुछ मक्का चुरा लिया, जिसे मैंने वहीं भूनकर खा लिया। एक छोटी लड़की ने मुझे बगीचे में मक्का खाते हुए देख लिया और तुरंत पादरी को मेरी सूचना दे दी। खबर जल्दी ही फैल गई और रीजेंट की पत्नी तक पहुँच गई। उस शाम, वह प्रार्थना के समय तक इंतज़ार करती रही - जो उस घर में एक दैनिक अनुष्ठान था
- और मेरे इस अपराध के लिए मुझे फटकार लगाई, मुझे ईश्वर के एक गरीब सेवक से रोटी छीनने और परिवार को कलंकित करने के लिए दोषी ठहराया। उसने कहा कि शैतान निश्चित रूप से मुझे मेरे पाप का दंड देगा। मुझे भय और शर्म का एक अप्रिय मिश्रण महसूस हुआ - भय कि मुझे किसी दैवीय दंड का सामना करना पड़ेगा और शर्म कि मैंने अपने गोद लिए परिवार के विश्वास का दुरुपयोग किया है।

शासक को अश्वेत और श्वेत दोनों पक्षों से प्राप्त सर्वत्र सम्मान और उनकी असीम शक्ति के कारण, मैंने सरदारी को जीवन का केंद्र बिंदु माना। म्कहेकेज़वेनी में सरदारी की शक्ति और प्रभाव हमारे जीवन के हर पहलू में व्याप्त था और यही वह प्रमुख साधन था जिसके माध्यम से कोई व्यक्ति प्रभाव और प्रतिष्ठा प्राप्त कर सकता था।
बाद में नेतृत्व के बारे में मेरी धारणाएँ शासक और उनके दरबार को देखकर बहुत प्रभावित हुईं। मैंने ग्रेट प्लेस में नियमित रूप से होने वाली जनजातीय बैठकों को देखा और उनसे बहुत कुछ सीखा। ये बैठकें पहले से तय नहीं होती थीं, बल्कि आवश्यकतानुसार बुलाई जाती थीं और इनमें राष्ट्रीय मामलों पर चर्चा होती थी, जैसे सूखा, मवेशियों की छंटाई, मजिस्ट्रेट द्वारा आदेशित नीतियाँ या सरकार द्वारा बनाए गए नए कानून। सभी थेम्बस जनजाति के

लोग इनमें शामिल हो सकते थे और बहुत से लोग घोड़े पर सवार होकर या पैदल चलकर आते थे।
इन अवसरों पर, शासक अपने अमाफकथी (उच्च पदस्थ सलाहकारों का एक समूह) से घिरा रहता था, जो शासक की संसद और न्यायपालिका के रूप में कार्य करते थे। वे बुद्धिमान व्यक्ति थे जिन्हें जनजातीय इतिहास और रीति-रिवाजों का गहन ज्ञान था और जिनकी राय का बहुत महत्व था।
शासक की ओर से इन सरदारों और मुखियाओं को बैठक की सूचना देने वाले पत्र भेजे गए, और जल्द ही थेम्बुलैंड के सभी हिस्सों से आए महत्वपूर्ण आगंतुकों और यात्रियों से वह भव्य स्थान गुलजार हो गया। अतिथि शासक के घर के सामने वाले प्रांगण में एकत्रित होते और शासक सभी को आने के लिए धन्यवाद देते हुए और उन्हें बुलाने का कारण बताते हुए बैठक की शुरुआत करते। इसके बाद, बैठक के लगभग समाप्त होने तक वे एक शब्द भी नहीं बोलते थे।
बोलने की इच्छा रखने वाले सभी लोगों ने अपनी बात रखी। यह लोकतंत्र का सबसे शुद्ध रूप था। वक्ताओं के बीच महत्व का क्रम अवश्य रहा होगा, लेकिन सबकी बात सुनी गई, चाहे मुखिया हो या प्रजा, योद्धा हो या वैद्य, दुकानदार हो या किसान, जमींदार हो या मजदूर। लोग बिना किसी रुकावट के बोलते रहे और बैठकें कई घंटों तक चलती रहीं। स्वशासन का आधार यह था कि सभी पुरुषों को अपनी राय व्यक्त करने की स्वतंत्रता थी और नागरिक के रूप में उनका मूल्य समान था। (मुझे खेद है कि महिलाओं को द्वितीय श्रेणी का नागरिक माना जाता था।)
दिन भर एक भव्य भोज का आयोजन हुआ, और वक्ताओं के भाषण सुनते-सुनते मैंने ज़रूरत से ज़्यादा खा लिया, जिससे मुझे अक्सर पेट दर्द होने लगा। मैंने देखा कि कुछ वक्ता इधर-उधर की बातें करते थे और कभी भी मुख्य मुद्दे पर नहीं आते थे। मैंने यह भी समझा कि कुछ वक्ता सीधे मुद्दे पर आते थे और कुछ संक्षिप्त एवं प्रभावी ढंग से अपने तर्क प्रस्तुत करते थे। मैंने यह भी देखा कि कुछ वक्ता भावनाओं और नाटकीय भाषा का प्रयोग करते हुए श्रोताओं को प्रभावित करने का प्रयास करते थे, जबकि अन्य वक्ता गंभीर और संतुलित थे और भावनाओं से दूर रहते थे।
पहले तो मैं इस बात से चकित रह गया कि लोग रीजेंट की कितनी ज़ोरदार और स्पष्ट आलोचना करते थे। वे आलोचना से परे नहीं थे—वास्तव में, वे अक्सर आलोचना के मुख्य निशाने पर होते थे। लेकिन आरोप चाहे कितना भी गंभीर क्यों

न हो, रीजेंट बस सुनते रहते थे, अपना बचाव नहीं करते थे, और ज़रा भी भावना नहीं दिखाते थे।
जब तक किसी आम सहमति पर नहीं पहुंचा जाता, तब तक बैठकें चलती रहती थीं। या तो सर्वसम्मति होती थी या फिर कोई सहमति नहीं बनती थी। हालांकि, सर्वसम्मति का मतलब असहमति जताना भी हो सकता था, यानी समाधान प्रस्तावित करने के लिए अधिक अनुकूल समय की प्रतीक्षा करना। लोकतंत्र का अर्थ था कि सभी लोगों की बात सुनी जाए और निर्णय एक राष्ट्र के रूप में मिलकर लिया जाए। बहुमत का शासन एक अपरिचित अवधारणा थी। अल्पमत को बहुमत द्वारा कुचला नहीं जाना चाहिए था।
बैठक के अंत में, जब सूरज डूब रहा होता था, तभी रीजेंट बोलते थे। उनका उद्देश्य कही गई बातों का सारांश प्रस्तुत करना और विभिन्न मतों के बीच आम सहमति बनाना था। लेकिन असहमति रखने वालों पर कोई निष्कर्ष थोपा नहीं जाता था। यदि कोई समझौता नहीं हो पाता, तो एक और बैठक बुलाई जाती थी। परिषद के बिल्कुल अंत में, एक स्तुतिगान करने वाला या कवि प्राचीन राजाओं की प्रशंसा में गीत गाता था, और वर्तमान सरदारों की प्रशंसा और उन पर व्यंग्य का मिश्रण प्रस्तुत करता था, और रीजेंट के नेतृत्व में उपस्थित श्रोता जोर से हंसते थे।
एक नेता के रूप में, मैंने हमेशा उन सिद्धांतों का पालन किया है जिन्हें मैंने सबसे पहले महान स्थान पर शासक द्वारा प्रदर्शित होते देखा था। मैंने हमेशा किसी भी चर्चा में शामिल प्रत्येक व्यक्ति की बात को ध्यान से सुनने का प्रयास किया है, इससे पहले कि मैं अपनी राय व्यक्त करूँ। अक्सर, मेरी अपनी राय केवल उस चर्चा में सुनी गई बातों की आम सहमति को ही दर्शाती है। मुझे शासक का यह सिद्धांत हमेशा याद रहता है: उन्होंने कहा था कि एक नेता चरवाहे की तरह होता है। वह झुंड के पीछे रहता है, सबसे फुर्तीले लोगों को आगे जाने देता है, जिसके बाद बाकी लोग उसका अनुसरण करते हैं, यह जाने बिना कि उन्हें पीछे से निर्देशित किया जा रहा है।

मक़हेकेज़वेनी में ही मेरी अफ़्रीकी इतिहास में रुचि जागी। तब तक मैंने केवल खोसा नायकों के बारे में ही सुना था, लेकिन उस महान स्थान पर मुझे

बापेदी के राजा सेखुखुने, बासोथो राजा मोशोशो, ज़ुलू के राजा डिंगाने और बंबाथा, हिंट्सा, मकाना, मोंटशिवा और कगामा जैसे अन्य अफ़्रीकी नायकों के बारे में पता चला। मैंने इन नायकों के बारे में उन सरदारों और मुखियाओं से जाना जो विवादों को सुलझाने और मुकदमों की सुनवाई करने के लिए उस महान स्थान पर आते थे। हालाँकि वे वकील नहीं थे, फिर भी वे मामले पेश करते और फिर उन पर फैसला सुनाते थे। कभी-कभी वे जल्दी काम खत्म करके बैठ जाते और कहानियाँ सुनाते। मैं चुपचाप बैठकर सुनता रहता। वे एक ऐसी भाषा में बोलते थे जो मैंने पहले कभी नहीं सुनी थी। उनकी वाणी औपचारिक और गरिमामय थी, उनका व्यवहार धीमा और सहज था, और हमारी भाषा की पारंपरिक ध्वनियाँ लंबी और नाटकीय थीं।
पहले तो उन्होंने मुझे भगा दिया और कहा कि मैं सुनने के लिए बहुत छोटी हूँ। बाद में वे मुझे आग या पानी लाने के लिए बुलाते, या महिलाओं को चाय के बारे में बताने के लिए कहते। उन शुरुआती महीनों में मैं अपने कामों में इतनी व्यस्त रहती थी कि उनकी बातों पर ध्यान ही नहीं देती थी। लेकिन आखिरकार उन्होंने मुझे वहाँ रहने की अनुमति दे दी, और तब मुझे उन महान अफ्रीकी देशभक्तों के बारे में पता चला जिन्होंने पश्चिमी प्रभुत्व के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। इन अफ्रीकी योद्धाओं की महिमा ने मेरी कल्पना को उड़ान दी। इकट्ठे हुए बुजुर्गों को प्राचीन कथाएँ सुनाकर उनका मनोरंजन करने वाले सरदारों में सबसे प्राचीन ज़्वेलिभांगिले जॉयी थे, जो राजा न्गुबेंगचुका के महान वंश के पुत्र थे। सरदार जॉयी इतने बूढ़े थे कि उनकी झुर्रीदार त्वचा उन पर ढीले-ढाले कोट की तरह लटकती थी। उनकी कहानियाँ धीरे-धीरे आगे बढ़ती थीं और अक्सर उन्हें खाँसी आती थी, जिससे उन्हें कई मिनट तक रुकना पड़ता था। थेम्बू जनजाति के इतिहास के बारे में सरदार जॉयी को व्यापक ज्ञान था, क्योंकि उन्होंने इस इतिहास का बहुत कुछ हिस्सा स्वयं जिया था। हालांकि चीफ जॉयी अक्सर उम्रदराज दिखते थे, लेकिन जब वे राजा न्गांगेलिज़्वे की सेना में अंग्रेजों से लड़ रहे युवा योद्धाओं के बारे में बात करते थे, तो उनकी उम्र का कोई असर नहीं दिखता था। चीफ जॉयी हाव-भाव में अपना भाला उछालते और मैदान में रेंगते हुए जीत और हार का वर्णन करते थे। वे न्गांगेलिज़्वे की वीरता, उदारता और विनम्रता की प्रशंसा करते थे। चीफ जॉयी की सभी कहानियाँ थेम्बस जनजाति के इर्द-गिर्द नहीं घूमती थीं। जब उन्होंने पहली बार गैर-खोसा योद्धाओं के बारे में बात की, तो मुझे आश्चर्य

हुआ कि ऐसा क्यों है। मैं उस लड़के की तरह था जो अपने स्थानीय फुटबॉल हीरो की पूजा करता है और किसी राष्ट्रीय फुटबॉल स्टार में दिलचस्पी नहीं रखता जिससे उसका कोई संबंध नहीं है। बाद में ही मैं अफ्रीकी इतिहास की व्यापकता और सभी अफ्रीकी नायकों के कारनामों से प्रभावित हुआ, चाहे वे किसी भी जनजाति के हों।
चीफ जॉयी ने श्वेत लोगों के विरुद्ध जमकर विरोध जताया, जिनका मानना था कि उन्होंने जानबूझकर खोसा जनजाति को विभाजित किया था, भाई को भाई से अलग कर दिया था। श्वेत लोगों ने थेम्बस लोगों से कहा था कि उनकी असली मुखिया समुद्र पार की महान श्वेत रानी है और वे उसकी प्रजा हैं। लेकिन श्वेत रानी ने अश्वेत लोगों के लिए दुख और विश्वासघात के सिवा कुछ नहीं लाया, और अगर वह मुखिया थी भी तो एक दुष्ट मुखिया थी। चीफ जॉयी के युद्ध वृत्तांत और अंग्रेजों के प्रति उनके अभियोग ने मुझे क्रोधित और ठगा हुआ महसूस कराया, मानो मुझसे मेरा जन्मसिद्ध अधिकार ही छीन लिया गया हो।
चीफ जोयी ने कहा कि अफ्रीकी लोग अपेक्षाकृत शांति से रहते थे, जब तक कि समुद्र पार से आग उगलने वाले हथियारों के साथ आए श्वेत लोग (अबेलुंगु) नहीं आ गए। उन्होंने कहा कि एक समय था जब थेम्बू, मपोंडो, खोसा और ज़ुलू सभी एक ही पिता की संतान थे और भाईचारे से रहते थे। श्वेत लोगों ने विभिन्न जनजातियों के भाईचारे को चकनाचूर कर दिया। श्वेत लोग भूमि के लिए भूखे और लालची थे, और अश्वेत लोग उनके साथ भूमि को उसी तरह साझा करते थे जैसे वे हवा और पानी को साझा करते थे; भूमि मनुष्य के स्वामित्व के लिए नहीं थी। लेकिन श्वेत लोगों ने भूमि को उसी तरह छीन लिया जैसे कोई दूसरे आदमी का घोड़ा छीन लेता है।
मुझे तब तक यह पता नहीं था कि हमारे देश का वास्तविक इतिहास मानक ब्रिटिश पाठ्यपुस्तकों में नहीं मिलेगा, जिनमें दावा किया गया था कि दक्षिण अफ्रीका की शुरुआत 1652 में जान वैन रीबीक के केप ऑफ गुड होप पर उतरने से हुई थी। चीफ जॉयी से ही मुझे यह पता चलने लगा कि बंटू भाषी लोगों का इतिहास सुदूर उत्तर में, झीलों, हरे-भरे मैदानों और घाटियों वाले देश में शुरू हुआ था, और धीरे-धीरे सदियों से हम इस विशाल महाद्वीप के बिल्कुल दक्षिणी छोर तक पहुँच गए। हालाँकि, बाद में मुझे पता चला कि चीफ जॉयी द्वारा वर्णित अफ्रीकी इतिहास, विशेष रूप से 1652 के बाद का, हमेशा इतना सटीक नहीं था।

संघर्ष करती रही और पसीने से भीग गई, लेकिन मैं हार मानकर उस भारी चिकन को अपने हाथों से उठाना नहीं चाहती थी। उस दिन दोपहर के भोजन में मैंने ज्यादा चिकन नहीं खाया।
बाद में बड़ी बहन ने छोटी बहन से कहा, “अगर तुम ऐसे पिछड़े लड़के से प्यार करोगी तो तुम्हारी पूरी जिंदगी बर्बाद हो जाएगी,” लेकिन मुझे यह कहते हुए खुशी हो रही है कि उस युवती ने उनकी बात नहीं मानी – उसने मुझसे प्यार किया, चाहे मैं कितना भी पिछड़ा हुआ क्यों न था। आखिरकार, हम अलग-अलग रास्तों पर चल पड़े और एक-दूसरे से दूर हो गए। उसने दूसरे स्कूल में दाखिला लिया और शिक्षिका बन गई। हमने कुछ वर्षों तक पत्र व्यवहार किया और फिर मेरा उससे संपर्क टूट गया, लेकिन तब तक मैंने खाने-पीने के तौर-तरीकों में काफी सुधार कर लिया था।

4

जब मैं सोलह वर्ष का था, तब शासक ने निर्णय लिया कि अब मेरे पुरुष बनने का समय आ गया है। खोसा परंपरा में, यह केवल एक ही तरीके से होता है: खतना। हमारी परंपरा में, बिना खतना वाला पुरुष अपने पिता की संपत्ति का उत्तराधिकारी नहीं हो सकता, विवाह नहीं कर सकता और न ही जनजातीय अनुष्ठानों में भाग ले सकता है। बिना खतना वाला खोसा पुरुष विरोधाभासी है, क्योंकि उसे पुरुष नहीं, बल्कि एक लड़का माना जाता है। खोसा लोगों के लिए, खतना पुरुषों को समाज में औपचारिक रूप से शामिल करने का प्रतीक है। यह केवल एक शल्य चिकित्सा प्रक्रिया नहीं है, बल्कि पुरुषत्व की तैयारी के लिए एक लंबा और विस्तृत अनुष्ठान है। एक खोसा होने के नाते, मैं अपने पुरुष होने की गणना अपने खतना की तारीख से करता हूँ।
खतना समारोह का पारंपरिक आयोजन मुख्य रूप से जस्टिस के लिए किया गया था— हम बाकी छब्बीस लोग मुख्य रूप से उसका साथ देने के लिए वहाँ मौजूद थे। नए साल की शुरुआत में, हम म्बाशे नदी के किनारे एक एकांत घाटी में स्थित घास की दो झोपड़ियों में गए, जिसे त्याहलारहा के नाम से जाना जाता है, जो थेम्बू राजाओं के खतना का पारंपरिक स्थान है। ये झोपड़ियाँ एकांतवास स्थल थीं, जहाँ हमें समाज से अलग रहना था। यह एक पवित्र समय था; मुझे अपने लोगों के रीति-रिवाजों में भाग लेकर खुशी और संतुष्टि का अनुभव हुआ और मैं लड़कपन से पुरुषत्व में कदम रखने के लिए तैयार था।
खतना समारोह से कुछ दिन पहले हम नदी के किनारे स्थित त्याहलारहा में रहने लगे थे। बचपन के ये आखिरी दिन मैंने दूसरे दीक्षार्थियों के साथ बिताए और मुझे उनके साथ का मेलजोल बहुत अच्छा लगा। हमारा आश्रम बानाबाखे ब्लाई के घर के पास था, जो खतना स्कूल का सबसे धनी और लोकप्रिय लड़का था। वह एक आकर्षक व्यक्ति था, लाठी-लड़ाई में माहिर और ग्लैमरस था, जिसकी कई प्रेमिकाएँ हम सभी को स्वादिष्ट व्यंजन परोसती रहती थीं। हालाँकि वह न तो पढ़ सकता था और न ही लिख सकता था, फिर भी वह हम सब में सबसे बुद्धिमान था। वह हमें जोहान्सबर्ग की अपनी यात्राओं की कहानियाँ सुनाता था, एक ऐसी जगह जहाँ हममें से कोई भी पहले कभी नहीं गया था। उसने खानों के बारे में हमें इतना रोमांचित किया कि उसने मुझे लगभग यह विश्वास दिला दिया कि एक खनिक

होना राजा होने से कहीं अधिक आकर्षक है। खनिकों का अपना एक अलग ही आकर्षण था; एक खनिक होने का मतलब था मजबूत और साहसी होना, मर्दानगी का आदर्श। बहुत बाद में मुझे एहसास हुआ कि बानाबाखे जैसे लड़कों की बढ़ा-चढ़ाकर बताई गई कहानियों के कारण ही इतने सारे युवक भागकर जोहान्सबर्ग की खानों में काम करने चले गए, जहाँ अक्सर वे अपना स्वास्थ्य और अपनी जान गंवा बैठे। उन दिनों खानों में काम करना लगभग उतना ही महत्वपूर्ण था जितना कि खतना स्कूल जाना, एक ऐसा मिथक जिसने मेरे लोगों की तुलना में खान मालिकों को कहीं अधिक लाभ पहुँचाया।
खतना संस्कार से पहले एक साहसिक कारनामा करना एक रिवाज है। पुराने ज़माने में, इसमें मवेशी चुराना या यहाँ तक कि लड़ाई भी शामिल हो सकती थी, लेकिन हमारे समय में कारनामे युद्ध से ज़्यादा शरारती होते थे। त्याहलारहा जाने से दो रात पहले, हमने एक सुअर चुराने का फैसला किया। म्कहेकेज़वेनी में एक कबीले का आदमी एक गुस्सैल बूढ़े सुअर को पालता था। शोर मचाए बिना और उसे डराए बिना, हमने सुअर से अपना काम करवाने का इंतज़ाम किया। हमने घर में बनी अफ़्रीकी बीयर से मुट्ठी भर तलछट ली, जिसकी तेज़ गंध सुअरों को बहुत पसंद आती है, और उसे सुअर के हवा की दिशा में रख दिया। गंध से सुअर इतना उत्तेजित हो गया कि वह बाड़े से बाहर आ गया, हमारे द्वारा बिछाए गए रास्ते का पीछा करते हुए, धीरे-धीरे हमारे पास पहुँचा, खाँसता, फुफकारता और तलछट खाता रहा। जब वह हमारे पास पहुँचा, तो हमने बेचारे सुअर को पकड़ लिया, उसे काट डाला, और फिर आग जलाकर तारों के नीचे भुना हुआ सुअर का मांस खाया। सुअर का मांस का कोई भी टुकड़ा उससे पहले या उसके बाद कभी इतना स्वादिष्ट नहीं लगा।
खतना से एक रात पहले, हमारी झोपड़ियों के पास एक समारोह हुआ जिसमें गीत-नाचना भी शामिल था। आस-पास के गाँवों से स्त्रियाँ आईं और हम उनके गीत और तालियों की थाप पर नाचने लगे। जैसे-जैसे संगीत तेज़ और बुलंद होता गया, हमारा नृत्य और भी जोशीला होता गया और हम एक पल के लिए यह भूल गए कि आगे क्या होने वाला है।
भोर होते ही, जब आकाश में तारे अभी भी चमक रहे थे, हमने अपनी तैयारियाँ शुरू कर दीं। हमें नदी के ठंडे पानी में स्नान करने के लिए नदी तक ले जाया गया, यह एक ऐसा अनुष्ठान था जो समारोह से पहले हमारे शुद्धिकरण का प्रतीक था। समारोह दोपहर में था, और हमें नदी से कुछ दूरी पर एक खुले मैदान में

कतार में खड़े होने का आदेश दिया गया, जहाँ माता-पिता और रिश्तेदारों की भीड़, जिसमें रीजेंट भी शामिल थे, साथ ही कुछ प्रमुख और सलाहकार भी एकत्रित थे। हम केवल अपने कंबलों में लिपटे हुए थे, और जैसे ही ढोल बजने के साथ समारोह शुरू हुआ, हमें जमीन पर बिछे कंबल पर पैर फैलाकर बैठने का आदेश दिया गया। मैं तनावग्रस्त और चिंतित था, यह अनिश्चित था कि महत्वपूर्ण क्षण आने पर मैं कैसी प्रतिक्रिया दूंगा। डरना या चिल्लाना कमजोरी की निशानी थी और मर्दानगी पर कलंक था। मैंने ठान लिया था कि मैं खुद को, समूह को या अपने संरक्षक को शर्मिंदा नहीं होने दूंगा। खतना साहस और धैर्य की परीक्षा है; इसमें किसी भी प्रकार की बेहोशी की दवा का प्रयोग नहीं किया जाता; पुरुष को चुपचाप पीड़ा सहनी पड़ती है।
दाईं ओर, मेरी नज़र के कोने से, मैंने एक दुबले-पतले, बूढ़े आदमी को तंबू से निकलते और पहले लड़के के सामने घुटने टेकते देखा। भीड़ में उत्साह था, और यह जानकर मुझे हल्की सी सिहरन हुई कि रस्म शुरू होने वाली है। वह बूढ़ा आदमी ग्कालेकालैंड का एक प्रसिद्ध इंगसिबी, यानी खतना विशेषज्ञ था, जो अपने भाले से हमें एक ही वार में लड़कों से मर्द बना देगा।
अचानक, मैंने पहले लड़के को चिल्लाते हुए सुना, “नदियिंदोडा!” (मैं मर्द हूँ!), जो हमें खतना के समय बोलना सिखाया गया था। कुछ ही सेकंड बाद, मैंने जस्टिस की दबी हुई आवाज़ में वही वाक्य सुना। अब दो लड़के मेरे पास पहुँच चुके थे, और मेरा दिमाग सुन्न हो गया होगा क्योंकि इससे पहले कि मैं कुछ समझ पाता, बूढ़ा आदमी मेरे सामने घुटनों के बल बैठा था। मैंने सीधे उसकी आँखों में देखा। वह पीला पड़ गया था, और हालाँकि दिन ठंडा था, उसका चेहरा पसीने से चमक रहा था। उसके हाथ इतनी तेज़ी से चल रहे थे मानो किसी अलौकिक शक्ति द्वारा नियंत्रित हों। बिना कुछ कहे, उसने मेरी चमड़ी पकड़ी, उसे आगे खींचा, और फिर एक ही झटके में अपना भाला नीचे मारा। मुझे ऐसा लगा जैसे मेरी नसों में आग दौड़ रही हो; दर्द इतना तेज़ था कि मैंने अपनी ठुड्डी अपनी छाती में दबा ली। कई सेकंड बीत गए, फिर मुझे अपनी चीख याद आई, और फिर मैं संभला और चिल्लाया, “नदियिंदोडा!”
मैंने नीचे देखा तो मुझे एक बिल्कुल साफ, गोल और अंगूठी जैसा घाव दिखाई दिया। लेकिन मुझे शर्म महसूस हुई क्योंकि बाकी लड़के मुझसे कहीं ज्यादा मजबूत और बहादुर लग रहे थे; उन्होंने मुझसे पहले ही मदद के लिए पुकार लगाई थी। मुझे इस बात का बहुत दुख था कि दर्द ने मुझे कुछ देर के लिए ही सही,

लाचार कर दिया था, और मैंने अपनी पीड़ा छिपाने की पूरी कोशिश की। एक लड़का रो सकता है; लेकिन एक आदमी अपना दर्द छुपाता है।
मैंने अब हर खोसा पुरुष के जीवन का एक महत्वपूर्ण कदम उठा लिया था। अब मैं शादी कर सकता था, अपना घर बसा सकता था और अपने खेत जोत सकता था। अब मुझे समुदाय की सभाओं में शामिल किया जा सकता था; मेरी बातों को गंभीरता से लिया जाएगा। समारोह में मुझे मेरा खतना नाम, दलिबुंगा दिया गया, जिसका अर्थ है "बुंगा का संस्थापक", जो ट्रांसकेई का पारंपरिक शासी निकाय है। खोसा परंपरावादियों के लिए, यह नाम मेरे पिछले दो नामों, रोलिहलाहला या नेल्सन, से कहीं अधिक स्वीकार्य है, और मुझे अपना नया नाम दलिबुंगा सुनकर गर्व हुआ।
जैसे ही चोट लगी, खतना करने वाले गुरु के पीछे चलने वाला एक सहायक ज़मीन पर पड़ी चमड़ी को उठाकर कंबल के एक कोने से बांध देता है। फिर हमारे घावों पर एक औषधीय पौधे की पट्टियाँ लगाई जाती हैं, जिसकी पत्तियाँ बाहर से कांटेदार और अंदर से चिकनी होती हैं, जो खून और अन्य स्रावों को सोख लेती हैं।
समारोह के समापन पर, हम अपनी झोपड़ियों में लौट आए, जहाँ गीली लकड़ियों से आग जल रही थी जिससे धुएँ के बादल उठ रहे थे, जिसके बारे में माना जाता था कि यह स्वास्थ्य लाभ पहुँचाता है। हमें धुएँ से भरी झोपड़ियों में पीठ के बल लेटने का आदेश दिया गया, एक पैर सीधा और दूसरा पैर मुड़ा हुआ। अब हम अबख्वेथा बन चुके थे, पुरुषत्व के संसार में प्रवेश कर चुके थे। हमारी देखभाल एक अमाखनकथा, या संरक्षक द्वारा की जाती थी, जिसने हमें वे नियम समझाए जिनका पालन हमें पुरुषत्व में सही ढंग से प्रवेश करने के लिए करना था। अमाखनकथा का पहला काम हमारे नग्न और मुंडे हुए शरीर को सिर से पैर तक सफेद गेरू से रंगना था, जिससे हम भूतों जैसे दिखने लगे। सफेद चाक हमारी पवित्रता का प्रतीक था, और मुझे आज भी याद है कि सूखी मिट्टी मेरे शरीर पर कितनी सख्त महसूस होती थी।
उस पहली रात, आधी रात को, एक सेवक, या इखानकथा, झोपड़ी के चारों ओर चुपके से आया और हममें से हर एक को धीरे से जगाया। फिर हमें झोपड़ी छोड़कर रात में पैदल चलकर अपनी खतना की हुई चमड़ी को दफनाने का निर्देश दिया गया। इस प्रथा का पारंपरिक कारण यह था कि हमारी खतना की हुई चमड़ी को जादूगरों द्वारा बुरे उद्देश्यों के लिए इस्तेमाल किए जाने से पहले छिपा दिया जाए,

लेकिन प्रतीकात्मक रूप से, हम अपनी जवानी को भी दफना रहे थे। मैं गर्म झोपड़ी छोड़कर अंधेरे में झाड़ियों में भटकना नहीं चाहता था, लेकिन मैं पेड़ों के बीच गया और कुछ मिनटों के बाद, अपनी खतना की हुई चमड़ी को खोलकर उसे मिट्टी में दफना दिया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपने बचपन के आखिरी निशान को भी त्याग दिया हो।
जब तक हमारे घाव भर नहीं गए, हम अपनी दो झोपड़ियों में रहे—प्रत्येक में तेरह लोग। झोपड़ियों से बाहर निकलते समय हम कंबल ओढ़े रहते थे, क्योंकि महिलाओं को हमें देखना मना था। यह शांति का समय था, एक तरह से आगे आने वाली पुरुषत्व की चुनौतियों के लिए आध्यात्मिक तैयारी। जिस दिन हमारा पुनर्जन्म हुआ, हम सुबह-सुबह नदी में गए और म्बाशे नदी के पानी में सफेद गेरू धो डाला। साफ और सूख जाने के बाद, हमें लाल गेरू से लेप किया गया। परंपरा यह थी कि पुरुष को किसी महिला के साथ सोना चाहिए, जो बाद में उसकी पत्नी बन सकती है, और वह अपने शरीर से गेरू को रगड़कर हटा देती है। हालांकि, मेरे मामले में, गेरू को चर्बी और लार्ड के मिश्रण से हटाया गया।

हमारे एकांतवास के अंत में, झोपड़ियों और उनमें रखी सभी वस्तुओं को जला दिया गया, जिससे बचपन से जुड़े हमारे अंतिम संबंध भी मिट गए, और समाज में पुरुषों के रूप में हमारा स्वागत करने के लिए एक भव्य समारोह आयोजित किया गया। हमारे परिवार, मित्र और स्थानीय मुखिया भाषणों, गीतों और उपहारों के आदान-प्रदान के लिए एकत्रित हुए। मुझे दो बछिया और चार भेड़ें दी गईं, और मैंने पहले से कहीं अधिक धनवान महसूस किया। मैं, जिसके पास कभी कुछ नहीं था, अचानक संपत्ति का मालिक बन गया। यह एक मदहोश कर देने वाला अनुभव था, भले ही मेरे उपहार न्याय के उपहारों के सामने तुच्छ थे, जिसे भेड़ों का पूरा झुंड विरासत में मिला था। मुझे न्याय के उपहारों से ईर्ष्या नहीं थी। वह एक राजा का पुत्र था; मैं तो केवल एक राजा का सलाहकार बनने के लिए ही नियत था। उस दिन मैंने खुद को मजबूत और गौरवान्वित महसूस किया। मुझे याद है कि उस दिन मैं अलग तरह से चल रहा था, सीधा, लंबा और दृढ़। मैं आशावान था, और सोच रहा था कि शायद एक दिन मेरे पास भी धन, संपत्ति और प्रतिष्ठा होगी।

उस दिन के मुख्य वक्ता दलिंद्येबो के पुत्र, मुखिया मेलिगकिली थे, और उन्हें सुनने के बाद मेरे रंगीन सपने अचानक काले पड़ गए। उन्होंने पारंपरिक ढंग से शुरुआत की, यह कहते हुए कि यह कितनी अच्छी बात है कि हम एक ऐसी परंपरा को आगे बढ़ा रहे हैं जो सदियों से चली आ रही है। फिर वे हमारी ओर मुड़े और उनका लहजा अचानक बदल गया। “ये रहे हमारे बेटे,” उन्होंने कहा, “युवा, स्वस्थ और सुंदर, खोसा जनजाति के फूल, हमारे राष्ट्र का गौरव। हमने अभी-अभी उनका खतना किया है, एक ऐसा अनुष्ठान जो उन्हें पुरुषत्व का वादा करता है, लेकिन मैं आपको यह बताने आया हूँ कि यह एक खोखला, भ्रामक वादा है, एक ऐसा वादा जो कभी पूरा नहीं हो सकता। क्योंकि हम खोसा और सभी काले दक्षिण अफ़्रीकी, एक पराजित लोग हैं। हम अपने ही देश में गुलाम हैं। हम अपनी ही ज़मीन पर किरायेदार हैं। हमारे पास कोई शक्ति नहीं है, कोई सामर्थ्य नहीं है, अपनी जन्मभूमि में अपने भाग्य पर हमारा कोई नियंत्रण नहीं है। वे शहरों में जाएँगे जहाँ वे झोपड़ियों में रहेंगे और सस्ती शराब पिएँगे, क्योंकि हमारे पास उन्हें देने के लिए कोई ज़मीन नहीं है जहाँ वे फल-फूल सकें और वंश बढ़ा सकें। वे श्वेत व्यक्ति की खानों में खाँसते-खाँसते अपने फेफड़े खराब कर लेंगे, अपना स्वास्थ्य नष्ट कर लेंगे, कभी सूरज नहीं देखेंगे, ताकि श्वेत व्यक्ति बेजोड़ समृद्धि का जीवन जी सके। इन नौजवानों में ऐसे सरदार भी हैं जो कभी शासन नहीं करेंगे क्योंकि हमारे पास खुद पर शासन करने की शक्ति नहीं है; ऐसे सैनिक भी हैं जो कभी नहीं लड़ेंगे क्योंकि हमारे पास हथियार नहीं हैं। लड़ने के लिए; ऐसे विद्वान जो कभी पढ़ा नहीं पाएंगे क्योंकि हमारे पास उनके अध्ययन के लिए कोई जगह नहीं है। इन नौजवानों की क्षमता, बुद्धि और भविष्य श्वेत व्यक्ति के लिए सबसे सरल, सबसे निरर्थक काम करके जीविका कमाने के प्रयास में बर्बाद हो जाएंगे। आज ये उपहार व्यर्थ हैं, क्योंकि हम उन्हें सबसे बड़ा उपहार, यानी स्वतंत्रता और आत्मनिर्भरता नहीं दे सकते। मैं भली-भांति जानता हूँ कि क़माता सर्वज्ञ है और कभी सोता नहीं, लेकिन मुझे संदेह है कि क़माता शायद ऊंघ रहा हो। यदि ऐसा है, तो जितनी जल्दी मैं मर जाऊँ उतना अच्छा है क्योंकि तब मैं उससे मिल सकता हूँ और उसे जगाकर बता सकता हूँ कि न्गुबेंगचुका के बच्चे, जो खोसा राष्ट्र के फूल हैं, मर रहे हैं।
जैसे-जैसे मुखिया मेलिगकिली बोलते गए, श्रोतागण शांत होते गए और मुझे लगता है कि उनका गुस्सा भी बढ़ता गया। उस दिन कोई भी उनके शब्द सुनना नहीं चाहता

था। मैं जानता हूँ कि मैं स्वयं भी उन्हें सुनना नहीं चाहता था। मुखिया की बातों से मैं उत्तेजित होने के बजाय क्रोधित हो गया था, और मैंने उनके शब्दों को एक अज्ञानी व्यक्ति की अपमानजनक टिप्पणी मानकर खारिज कर दिया, जो हमारे देश में श्वेत लोगों द्वारा लाई गई शिक्षा और लाभों के महत्व को नहीं समझ पा रहा था। उस समय, मैं श्वेत लोगों को उत्पीड़क नहीं बल्कि उपकारक मानता था, और मुझे लगा कि मुखिया बहुत ही कृतघ्न है। यह उद्दंड मुखिया अपने गलत विचारों से मेरा दिन खराब कर रहा था, मेरे गौरव को ठेस पहुँचा रहा था।
लेकिन बिना ठीक से समझे ही, उनके शब्दों का मुझ पर असर होने लगा। उन्होंने एक बीज बो दिया था, और यद्यपि मैंने उस बीज को लंबे समय तक निष्क्रिय रहने दिया, फिर भी वह अंततः बढ़ने लगा। बाद में, मुझे एहसास हुआ कि उस दिन अज्ञानी व्यक्ति मुखिया नहीं बल्कि मैं स्वयं था।
समारोह के बाद, मैं नदी की ओर वापस चला गया और उसे टेढ़े-मेढ़े रास्तों से बहते हुए देखता रहा, जहाँ कई मील दूर जाकर वह हिंद महासागर में मिल जाती थी। मैंने उस नदी को कभी पार नहीं किया था, और उसके पार की दुनिया के बारे में मुझे कुछ भी पता नहीं था, एक ऐसी दुनिया जो उस दिन मुझे अपनी ओर खींच रही थी। लगभग सूर्यास्त हो रहा था और मैं जल्दी से उस जगह की ओर चल पड़ा जहाँ हमारे एकांतवास के लिए झोपड़ियाँ थीं। हालाँकि झोपड़ियों के जलते समय पीछे मुड़कर देखना मना था, फिर भी मैं खुद को रोक नहीं पाया। जब मैं उस जगह पहुँचा, तो वहाँ एक बड़े मिमोसा पेड़ के पास राख के दो ढेर ही बचे थे। राख के इन ढेरों में एक खोई हुई और मनमोहक दुनिया दफ़न थी, मेरे बचपन की दुनिया, कुनु और मक़्हेकेज़वेनी में बिताए मीठे और बेफिक्र दिनों की दुनिया। अब मैं एक आदमी बन चुका था, और मैं फिर कभी थिन्टी नहीं खेलूँगा, न ही मक्का चुराऊँगा, न ही गाय के थन से दूध पीऊँगा। मैं पहले से ही अपनी जवानी के लिए शोक मना रहा था। पीछे मुड़कर देखता हूँ तो जानता हूँ कि उस दिन मैं एक आदमी नहीं था और कई सालों तक सही मायने में एक आदमी नहीं बन पाऊँगा।

5

मेरे साथ खतना स्कूल में पढ़ने वाले अधिकांश अन्य लोगों के विपरीत, मेरा भाग्य रीफ की सोने की खानों में काम करना नहीं था। शासक अक्सर मुझसे कहते थे, "तुम्हारा जीवन गोरे आदमी का सोना खोदने में बिताना और अपना नाम लिखना भी न जानना उचित नहीं है।" मेरा भाग्य सबाता का सलाहकार बनना था, और इसके लिए मुझे शिक्षित होना आवश्यक था। समारोह के बाद मैं म्क्वेकेज़वेनी लौट आया, लेकिन बहुत कम समय के लिए, क्योंकि मैं एंगकोबो जिले में क्लार्कबरी बोर्डिंग इंस्टीट्यूट जाते समय पहली बार म्बाशे नदी पार करने वाला था। मैं एक बार फिर घर छोड़ रहा था, लेकिन मैं यह देखने के लिए उत्सुक था कि बाहरी दुनिया में मेरा क्या हाल होगा। स्वयं रीजेंट मुझे अपनी शानदार फोर्ड वी8 कार में एंगकोबो तक ले गए। जाने से पहले, उन्होंने मेरे पांचवीं कक्षा उत्तीर्ण करने और क्लार्कबरी में प्रवेश पाने की खुशी में एक समारोह आयोजित किया था। एक भेड़ की बलि दी गई और नाच-गाना हुआ - यह मेरे सम्मान में मनाया गया पहला समारोह था, और मैंने इसका भरपूर आनंद लिया। रीजेंट ने मुझे मेरे पहले जूते दिए, जो मर्दानगी का प्रतीक थे, और उस रात मैंने उन्हें फिर से चमकाया, हालांकि वे पहले से ही चमकदार थे।

* * *

1825 में स्थापित क्लार्कबरी इंस्टीट्यूट, ट्रांसकेई में सबसे पुराने वेस्लेयन मिशनों में से एक के स्थल पर स्थित था। उस समय, क्लार्कबरी थेम्बुलैंड में अफ्रीकियों के लिए सर्वोच्च शिक्षा संस्थान था। स्वयं रीजेंट ने क्लार्कबरी में शिक्षा प्राप्त की थी, और न्यायविद ने भी उनका अनुसरण किया था। यह एक माध्यमिक विद्यालय और शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय दोनों था, लेकिन इसमें बढ़ईगीरी, सिलाई और टिन शिल्प जैसे अधिक व्यावहारिक विषयों में भी पाठ्यक्रम उपलब्ध थे।
यात्रा के दौरान, रीजेंट ने मुझे मेरे व्यवहार और भविष्य के बारे में सलाह दी। उन्होंने मुझे ऐसा व्यवहार करने के लिए प्रेरित किया जिससे सबाता और स्वयं उन्हें ही सम्मान मिले, और मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि मैं ऐसा ही

करूँगा। फिर उन्होंने मुझे विद्यालय के गवर्नर रेवरेंड सी. हैरिस के बारे में बताया। उन्होंने समझाया कि रेवरेंड हैरिस अद्वितीय थे: वे एक श्वेत थेम्बू थे, एक श्वेत व्यक्ति जो अपने हृदय में थेम्बू लोगों से प्रेम करते थे और उन्हें समझते थे। रीजेंट ने कहा कि जब सबाता बड़े हो जाएँगे, तो वे भावी राजा को रेवरेंड हैरिस के हवाले कर देंगे, जो उन्हें एक ईसाई और एक पारंपरिक शासक के रूप में प्रशिक्षित करेंगे। उन्होंने कहा कि मुझे रेवरेंड हैरिस से सीखना चाहिए क्योंकि मैं उस नेता का मार्गदर्शन करने के लिए नियत था जिसे रेवरेंड हैरिस आकार देने वाले थे।
मक़हेकेज़वेनी में मेरी मुलाकात कई श्वेत व्यापारियों और सरकारी अधिकारियों से हुई, जिनमें मजिस्ट्रेट और पुलिस अधिकारी भी शामिल थे। ये सभी उच्च पदस्थ लोग थे और रीजेंट ने उनका विनम्रतापूर्वक स्वागत किया, लेकिन चापलूसी नहीं की; उन्होंने उनके साथ समान व्यवहार किया, जैसा कि उन्होंने उनके साथ किया। कभी-कभी मैंने उन्हें फटकार लगाते हुए भी देखा, हालांकि ऐसा बहुत कम होता था। श्वेत लोगों से सीधे बातचीत करने का मुझे बहुत कम अनुभव था। रीजेंट ने मुझे कभी यह नहीं बताया कि मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए, और मैंने उन्हें देखकर उनके उदाहरण का अनुसरण किया। लेकिन रेवरेंड हैरिस के बारे में बात करते हुए, रीजेंट ने पहली बार मुझे यह उपदेश दिया कि मुझे कैसा व्यवहार करना चाहिए। उन्होंने कहा कि मुझे रेवरेंड को वही सम्मान और आज्ञाकारिता देनी चाहिए जो मैं उन्हें देता हूँ। क्लार्कबरी, मक़हेकेज़वेनी से भी कहीं अधिक भव्य था। स्कूल में लगभग दो दर्जन सुंदर, औपनिवेशिक शैली की इमारतें थीं, जिनमें व्यक्तिगत आवास, छात्रावास, पुस्तकालय और विभिन्न शिक्षण कक्ष शामिल थे। यह पहली जगह थी जहाँ मैं रहा था जो अफ्रीकी नहीं बल्कि पश्चिमी थी, और मुझे ऐसा लगा जैसे मैं एक नई दुनिया में प्रवेश कर रहा हूँ जिसके नियम अभी तक मेरे लिए स्पष्ट नहीं थे।
हमें रेवरेंड हैरिस के अध्ययन कक्ष में ले जाया गया, जहाँ रीजेंट ने मेरा परिचय कराया और मैं उनसे हाथ मिलाने के लिए खड़ा हुआ। यह पहली बार था जब मैंने किसी श्वेत व्यक्ति से हाथ मिलाया था। रेवरेंड हैरिस बहुत ही मिलनसार और मित्रवत थे, और उन्होंने रीजेंट का बहुत सम्मानपूर्वक अभिनंदन किया। रीजेंट ने बताया कि मुझे राजा के सलाहकार के रूप में प्रशिक्षित किया जा रहा है और उन्हें आशा है कि रेवरेंड मुझमें विशेष रुचि लेंगे।

रेवरेंड ने सिर हिलाया और कहा कि क्लार्कबरी के छात्रों को स्कूल के बाद शारीरिक श्रम करना अनिवार्य है, और वे मेरे लिए अपने बगीचे में काम करने की व्यवस्था करेंगे।
साक्षात्कार के अंत में, रीजेंट ने मुझे विदाई दी और जेब खर्च के लिए मुझे एक पाउंड का नोट दिया, जो मेरे पास अब तक की सबसे बड़ी रकम थी। मैंने उन्हें अलविदा कहा और वादा किया कि मैं उन्हें निराश नहीं करूंगा।

क्लार्कबरी एक थेम्बू कॉलेज था, जिसकी स्थापना महान थेम्बू राजा न्गुबेंगचुका द्वारा दान की गई भूमि पर हुई थी। न्गुबेंगचुका के वंशज होने के नाते, मुझे उम्मीद थी कि क्लार्कबरी में भी मुझे वही सम्मान मिलेगा जो मुझे म्कहेकेज़वेनी में मिलता था। लेकिन मैं बुरी तरह गलत था, क्योंकि मेरे साथ बाकी सभी से अलग व्यवहार नहीं किया गया। किसी को पता भी नहीं था और न ही किसी को परवाह थी कि मैं प्रतिष्ठित न्गुबेंगचुका का वंशज हूँ। बोर्डिंग मास्टर ने बिना किसी धूमधाम के मेरा स्वागत किया और मेरे सहपाठियों ने मेरे सामने सिर झुकाकर सम्मान नहीं जताया। क्लार्कबरी में, कई लड़कों का वंश प्रतिष्ठित था, और मैं अब अद्वितीय नहीं था। यह एक महत्वपूर्ण सबक था, क्योंकि मुझे लगता है कि उन दिनों मैं थोड़ा घमंडी था। मुझे जल्दी ही एहसास हो गया कि मुझे अपनी प्रतिभा के बल पर आगे बढ़ना होगा, न कि अपने वंश के बल पर। मेरे अधिकांश सहपाठी खेल के मैदान में मुझसे आगे निकल सकते थे और कक्षा में मुझसे कहीं अधिक बुद्धिमान थे, और मुझे उनसे बहुत कुछ सीखना बाकी था।
अगली सुबह कक्षाएं शुरू हुईं और मैं अपने सहपाठियों के साथ पहली मंजिल की सीढ़ियाँ चढ़ गया जहाँ कक्षाएँ थीं। कमरे में सुंदर पॉलिश किया हुआ लकड़ी का फर्श था। कक्षाओं के पहले दिन मैंने अपने नए जूते पहने थे। मैंने इससे पहले कभी किसी भी तरह के जूते नहीं पहने थे, और उस पहले दिन मैं ऐसे चल रहा था जैसे किसी नए घोड़े को नाल पहनाई गई हो। सीढ़ियाँ चढ़ते समय मैंने बहुत शोर मचाया और कई बार लगभग फिसल गया। जैसे ही मैं धड़ाम से कक्षा में पहुँचा, मेरे जूते उस चमकदार लकड़ी के फर्श पर ज़ोर से बज रहे थे, मैंने देखा कि पहली पंक्ति में बैठी दो छात्राएँ बड़े मज़े से मेरा लंगड़ा

प्रदर्शन देख रही थीं। उनमें से जो ज़्यादा सुंदर थी, उसने अपनी सहेली की ओर झुककर इतनी ज़ोर से कहा कि सब सुन सकें: "देहाती लड़के को जूते पहनने की आदत नहीं है," जिस पर उसकी सहेली हँस पड़ी। मैं गुस्से और शर्म से अंधा हो गया था।
उसका नाम मथोना था और वह थोड़ी शरारती थी। उस दिन मैंने कसम खाई कि मैं उससे कभी बात नहीं करूँगी। लेकिन जैसे-जैसे मेरी शर्मिंदगी कम होती गई (और मैं बूट पहनकर चलने में ज़्यादा माहिर हो गई), मैं उसे जानने लगी और वह क्लार्कबरी में मेरी सबसे अच्छी दोस्त बन गई। वह मेरी पहली सच्ची महिला मित्र थी, एक ऐसी महिला जिससे मैं बराबरी के स्तर पर मिली और जिसके साथ मैं अपने दिल की बात कह सकती थी और राज़ बाँट सकती थी। कई मायनों में, वह महिलाओं के साथ मेरी बाद की सभी दोस्ती के लिए एक आदर्श थी, क्योंकि महिलाओं के साथ मुझे पता चला कि मैं खुलकर अपनी कमजोरियों और डर को बता सकती हूँ, जिन्हें मैं किसी दूसरे पुरुष को कभी नहीं बताती।

मैंने क्लार्कबरी के जीवन में जल्दी ही खुद को ढाल लिया। मैं जितना हो सके खेलों में भाग लेता था, लेकिन मेरा प्रदर्शन औसत दर्जे का ही था। मैं खेल के प्रति प्रेम के कारण खेलता था, प्रसिद्धि के लिए नहीं, क्योंकि मुझे कोई प्रसिद्धि नहीं मिली। हम घर में बने लकड़ी के रैकेट से लॉन टेनिस खेलते थे और धूल भरे मैदान पर नंगे पैर फुटबॉल खेलते थे।
पहली बार मुझे ऐसे शिक्षकों से पढ़ने का अवसर मिला जो स्वयं अच्छी तरह से शिक्षित थे। उनमें से कई के पास विश्वविद्यालय की डिग्रियाँ थीं, जो कि बहुत ही दुर्लभ बात थी। एक दिन मैं मथोना के साथ पढ़ रही थी और मैंने उनसे अपने इस डर के बारे में बताया कि शायद मैं साल के अंत में अंग्रेजी और इतिहास की परीक्षा पास न कर पाऊँ। उन्होंने मुझे चिंता न करने को कहा क्योंकि हमारी शिक्षिका, गर्ट्रूड नटलाबथी, बी.ए. की डिग्री प्राप्त करने वाली पहली अफ्रीकी महिला थीं। मथोना ने कहा, "वह इतनी बुद्धिमान हैं कि हमें असफल नहीं होने देंगी।" मुझे अभी तक यह दिखावा करना नहीं आता था कि मुझे ज्ञान नहीं है, और चूंकि मुझे बी.ए. के बारे में बहुत कम जानकारी थी,

इसलिए मैंने मथोना से सवाल किया। उन्होंने उत्तर दिया, "हाँ, बिल्कुल। बी.ए. एक बहुत लंबी और कठिन किताब है।" मुझे उनकी बात पर कोई संदेह नहीं था। एक अन्य अफ्रीकी शिक्षक, बेन महलासेला, के पास कला स्नातक की डिग्री थी। हम उनकी प्रशंसा न केवल उनकी अकादमिक उपलब्धि के कारण करते थे, बल्कि इसलिए भी कि वे रेवरेंड हैरिस से भयभीत नहीं होते थे। यहाँ तक कि श्वेत शिक्षक भी रेवरेंड हैरिस के प्रति विनम्र भाव रखते थे, लेकिन श्री महलासेला निडर होकर रेवरेंड के कार्यालय में जाते थे, और कभी-कभी तो अपनी टोपी भी नहीं उतारते थे! वे रेवरेंड से बराबरी के भाव से मिलते थे, जहाँ अन्य लोग उनसे सहमत होते थे, वहाँ वे अपनी असहमति व्यक्त करते थे। यद्यपि मैं रेवरेंड हैरिस का सम्मान करता था, फिर भी मुझे श्री महलासेला की यह बात बहुत पसंद थी कि वे उनसे डरते नहीं थे। उन दिनों, कला स्नातक की डिग्री वाले एक अश्वेत व्यक्ति से प्राथमिक विद्यालय तक पढ़े एक श्वेत व्यक्ति के सामने झुकने की अपेक्षा की जाती थी। एक अश्वेत व्यक्ति चाहे कितनी भी तरक्की कर ले, उसे सबसे निचले स्तर के श्वेत व्यक्ति से हीन समझा जाता था।

* * *

रेवरेंड हैरिस ने क्लार्कबरी को कड़ाई से और निष्पक्षता की अटूट भावना के साथ चलाया। क्लार्कबरी एक शिक्षक प्रशिक्षण महाविद्यालय की बजाय एक सैन्य विद्यालय की तरह कार्य करता था। छोटी से छोटी गलती पर भी तुरंत दंड दिया जाता था। सभाओं में, रेवरेंड हैरिस का चेहरा हमेशा गंभीर और दृढ़ रहता था और वे किसी भी प्रकार के हल्के-फुल्केपन में लिप्त नहीं होते थे। जब वे किसी कमरे में प्रवेश करते थे, तो प्रशिक्षण और माध्यमिक विद्यालयों के श्वेत प्रधानाचार्यों सहित सभी कर्मचारी, औद्योगिक विद्यालय के अश्वेत प्रधानाचार्य सहित, खड़े हो जाते थे।
छात्रों के बीच, उनसे प्रेम से अधिक भय का भाव था। लेकिन बगीचे में, मैंने रेवरेंड हैरिस का एक अलग ही रूप देखा। रेवरेंड हैरिस के बगीचे में काम करने से मुझे दोहरा लाभ हुआ: इसने मेरे भीतर बागवानी और सब्ज़ियाँ उगाने का आजीवन प्रेम जगाया, और इसने मुझे रेवरेंड और उनके परिवार को जानने का अवसर दिया - पहला श्वेत परिवार जिसके साथ मेरा घनिष्ठ संबंध बना। इस तरह,

मैंने देखा कि रेवरेंड हैरिस का सार्वजनिक व्यक्तित्व और निजी व्यवहार एक दूसरे से बिलकुल भिन्न थे।
पादरी के कठोर मुखौटे के पीछे एक सौम्य, उदार व्यक्तित्व छिपा था, जो युवा अफ्रीकी पुरुषों की शिक्षा के महत्व में दृढ़ विश्वास रखता था। अक्सर, मैं उन्हें अपने बगीचे में विचारों में डूबे हुए पाता था। मैं उन्हें परेशान नहीं करता था और उनसे शायद ही कभी बात करता था, लेकिन एक नेक कार्य के प्रति निस्वार्थ समर्पण के उदाहरण के रूप में, रेवरेंड हैरिस मेरे लिए एक महत्वपूर्ण आदर्श थे।
उनकी पत्नी उतनी ही बातूनी थीं जितने वे कम बोलने वाले थे। वह एक प्यारी महिला थीं और अक्सर मुझसे बातचीत करने के लिए बगीचे में आती थीं। मुझे बिल्कुल याद नहीं कि हमने क्या बातें कीं, लेकिन दोपहर में वे मेरे लिए जो स्वादिष्ट गरमागरम स्कोन लाती थीं, उनका स्वाद मुझे आज भी याद है।

मेरी धीमी और साधारण शुरुआत के बाद, मैंने धीरे-धीरे सब कुछ सीख लिया और अपने कार्यक्रम को गति देते हुए जूनियर सर्टिफिकेट को सामान्य तीन साल के बजाय दो साल में ही पूरा कर लिया। मेरी याददाश्त अच्छी होने की ख्याति बन गई थी, लेकिन वास्तव में मैं बस एक मेहनती छात्र था। क्लार्कबरी छोड़ने के बाद, मेरा मथोना से संपर्क टूट गया। वह एक डे स्कॉलर थी और उसके माता-पिता के पास उसे आगे की शिक्षा के लिए भेजने के साधन नहीं थे। वह असाधारण रूप से बुद्धिमान और प्रतिभाशाली थी, जिसकी क्षमता उसके परिवार के सीमित संसाधनों के कारण सीमित हो गई थी। यह एक आम दक्षिण अफ्रीकी कहानी थी। मेरे लोगों की प्रगति में बाधा उनकी क्षमता की कमी नहीं, बल्कि अवसरों की कमी थी।
क्लार्कबरी में बिताए समय ने मेरे दृष्टिकोण को व्यापक बनाया, फिर भी मैं यह नहीं कहूँगा कि जब मैंने वहाँ से प्रस्थान किया तो मैं पूरी तरह से खुले विचारों वाला और पूर्वाग्रह रहित युवक था। मैं ट्रांसकेई के विभिन्न हिस्सों के छात्रों से मिला था, साथ ही जोहान्सबर्ग और बासुटोलैंड (उस समय लेसोथो को इसी नाम से जाना जाता था) के कुछ छात्रों से भी मिला था, जिनमें से कुछ इतने परिष्कृत और विश्व नागरिक थे कि मुझे उनके सामने देहाती जैसा

महसूस होता था। हालाँकि मैंने उनका अनुकरण किया, लेकिन मैंने कभी नहीं सोचा था कि ग्रामीण इलाके का एक लड़का उनकी दुनियादारी में उनका मुकाबला कर सकता है। फिर भी मुझे उनसे ईर्ष्या नहीं थी। क्लार्कबरी छोड़ते समय भी, मैं दिल से एक थेम्बू ही था, और मुझे एक थेम्बू की तरह सोचने और व्यवहार करने पर गर्व था। मेरी जड़ें ही मेरा भाग्य थीं, और मुझे विश्वास था कि मैं अपने संरक्षक की इच्छा के अनुसार थेम्बू राजा का सलाहकार बनूँगा। मेरा दृष्टिकोण थेम्बूलैंड से आगे नहीं बढ़ता था और मेरा मानना था कि एक थेम्बू होना दुनिया की सबसे प्रशंसनीय बात है।

6

1937 में, जब मैं उन्नीस वर्ष का था, मैंने उमटाटा से लगभग एक सौ पचहत्तर मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित फोर्ट ब्यूफोर्ट के वेस्लेयन कॉलेज, हील्डटाउन में न्याय विभाग में दाखिला लिया। उन्नीसवीं शताब्दी में, फोर्ट ब्यूफोर्ट तथाकथित सीमांत युद्धों के दौरान कई ब्रिटिश चौकियों में से एक था, जिसमें श्वेत बसने वालों के निरंतर अतिक्रमण ने विभिन्न खोसा जनजातियों को उनकी भूमि से व्यवस्थित रूप से बेदखल कर दिया था। एक सदी से अधिक के संघर्ष में, कई खोसा योद्धाओं ने अपनी बहादुरी के लिए प्रसिद्धि प्राप्त की, जैसे मखांडा, सैंडिले और माकोमा, जिनमें से अंतिम दो को ब्रिटिश अधिकारियों द्वारा रॉबेन द्वीप पर कैद कर लिया गया था, जहाँ उनकी मृत्यु हो गई। हील्डटाउन पहुँचने तक, पिछली शताब्दी के युद्धों के कुछ ही निशान बचे थे, सिवाय एक मुख्य निशान के: फोर्ट ब्यूफोर्ट एक श्वेत नगर था जहाँ कभी केवल खोसा लोग रहते और खेती करते थे।
हरी-भरी घाटी के नज़ारे वाली घुमावदार सड़क के अंत में स्थित, हील्डटाउन क्लार्कबरी से कहीं अधिक सुंदर और प्रभावशाली था। उस समय, यह भूमध्य रेखा के नीचे स्थित सबसे बड़ा अफ्रीकी विद्यालय था, जिसमें एक हजार से अधिक छात्र-छात्राएँ पढ़ते थे। इसकी लताओं से ढकी भव्य औपनिवेशिक इमारतें और पेड़ों की छायादार आंगन इसे एक विशिष्ट शैक्षणिक केंद्र का आभास देते थे, और वास्तव में यह वैसा ही था। क्लार्कबरी की तरह, हील्डटाउन भी मेथोडिस्ट चर्च का एक मिशनरी विद्यालय था, और अंग्रेजी मॉडल पर आधारित ईसाई और उदार कला शिक्षा प्रदान करता था।
हील्डटाउन के प्रधानाचार्य डॉ. आर्थर वेलिंगटन थे, जो एक हट्टे-कट्टे और रूढ़िवादी अंग्रेज थे और ड्यूक ऑफ वेलिंगटन से अपने संबंध पर गर्व करते थे। सभाओं की शुरुआत में, डॉ. वेलिंगटन मंच पर आते और अपनी गहरी, भारी आवाज़ में कहते, "मैं महान ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का वंशज हूँ, जो एक कुलीन, राजनेता और सेनापति थे, जिन्होंने वाटरलू में फ्रांसीसी नेपोलियन को हराया और इस प्रकार यूरोप और आप, यहाँ के मूल निवासियों के लिए सभ्यता को बचाया।" इस पर हम सभी उत्साहपूर्वक तालियाँ बजाते, हममें से प्रत्येक इस बात के लिए अत्यंत आभारी होता कि महान ड्यूक ऑफ वेलिंगटन का वंशज हम जैसे

मूल निवासियों को शिक्षित करने का कष्ट उठा रहा है। शिक्षित अंग्रेज हमारे आदर्श थे; हम "काले अंग्रेज" बनना चाहते थे, जैसा कि हमें कभी-कभी उपहासपूर्वक कहा जाता था। हमें सिखाया गया था - और हम मानते थे - कि सर्वोत्तम विचार अंग्रेजी विचार हैं, सर्वोत्तम सरकार अंग्रेजी सरकार है और सर्वोत्तम व्यक्ति अंग्रेज हैं।
हील्डटाउन का जीवन कठिन था। पहली घंटी सुबह 6 बजे बजती थी। हम सुबह 6:40 बजे तक भोजन कक्ष में पहुँच जाते थे, जहाँ हमें सूखी रोटी और गर्म चीनी का पानी मिलता था। वहाँ इंग्लैंड के राजा जॉर्ज VI का एक गंभीर चित्र लगा रहता था। जो लोग अपनी रोटी पर मक्खन लगा सकते थे, वे उसे खरीदकर रसोई में रख देते थे। मैं सूखा टोस्ट खाती थी। सुबह 8 बजे हम अपने छात्रावास के बाहर आँगन में "अवलोकन" के लिए इकट्ठा होते थे, और जब लड़कियाँ अलग-अलग छात्रावासों से आती थीं, तो हम सावधान मुद्रा में खड़े हो जाते थे। हम 12:45 बजे तक कक्षा में रहते थे, और फिर दोपहर के भोजन में सैम्प, खट्टा दूध और बीन्स खाते थे, जिसमें कभी-कभार ही मांस होता था। इसके बाद हम शाम 5 बजे तक पढ़ाई करते थे, फिर व्यायाम और रात के खाने के लिए एक घंटे का अवकाश होता था, और फिर 7 से 9 बजे तक अध्ययन कक्ष में रहते थे। रात 9:30 बजे बत्तियाँ बुझ जाती थीं।
हील्डटाउन में देशभर से, साथ ही बासुटोलैंड, स्वाज़ीलैंड और बेचुआनालैंड के संरक्षित क्षेत्रों से भी छात्र आते थे। हालाँकि यह मुख्य रूप से खोसा भाषा बोलने वालों का संस्थान था, फिर भी यहाँ विभिन्न जनजातियों के छात्र भी पढ़ते थे। स्कूल के बाद और सप्ताहांत में, एक ही जनजाति के छात्र एक साथ समय बिताते थे। यहाँ तक कि विभिन्न खोसा जनजातियों के सदस्य भी आपस में घुलमिल जाते थे, जैसे अमाम्पोंडो जनजाति के लोग अमाम्पोंडो जनजाति के लोगों के साथ, और इसी तरह। मैंने भी इसी परंपरा का पालन किया, लेकिन हील्डटाउन में ही मेरी पहली सोथो भाषा बोलने वाली दोस्त ज़ाचारिया मोलेट बनी। मुझे याद है कि एक ऐसे दोस्त का होना जो खोसा नहीं था, मुझे कितना गर्व महसूस कराता था।
हमारे प्राणीशास्त्र के शिक्षक, फ्रैंक लेबेंटले, सोथो भाषा भी बोलते थे और छात्रों के बीच बहुत लोकप्रिय थे। मिलनसार और सहज स्वभाव के फ्रैंक हमसे उम्र में ज़्यादा बड़े नहीं थे और छात्रों के साथ खुलकर घुलते-मिलते थे। उन्होंने कॉलेज की पहली फुटबॉल टीम में भी खेला था, जहाँ वे एक स्टार

एहसास हुआ कि डॉ. वेलिंगटन भगवान से कम और रेवरेंड मोकितिमी एक चापलूस से ज्यादा थे, और यह कि किसी अश्वेत व्यक्ति को किसी श्वेत व्यक्ति के सामने, चाहे वह कितना भी वरिष्ठ क्यों न हो, स्वतः ही झुकने की आवश्यकता नहीं होती।
रेवरेंड मोकितिमी महाविद्यालय में सुधार लाना चाहते थे। हम सभी ने छात्रों के खान-पान और व्यवहार में सुधार लाने के उनके प्रयासों का समर्थन किया, जिसमें छात्रों को स्वयं अनुशासन की जिम्मेदारी लेने का उनका सुझाव भी शामिल था। लेकिन एक बदलाव ने हमें, विशेषकर ग्रामीण क्षेत्रों से आए छात्रों को, चिंतित कर दिया। यह रेवरेंड मोकितिमी का एक नया प्रयोग था, जिसके तहत रविवार के दोपहर के भोजन के समय लड़के और लड़कियां एक साथ हॉल में भोजन करते थे। मैं इसके घोर विरोधी था, क्योंकि मुझे अभी भी चाकू-कांटे का उपयोग करना नहीं आता था, और मैं इन तेज नजर वाली लड़कियों के सामने शर्मिंदा नहीं होना चाहता था। लेकिन रेवरेंड मोकितिमी ने भोजन की व्यवस्था कर दी और हर रविवार मैं भूखा और उदास होकर हॉल से निकलता था। हालांकि, मुझे खेल के मैदानों में खूब मजा आया। हील्डटाउन में खेलों का स्तर क्लार्कबरी से कहीं बेहतर था। पहले साल में, मैं इतना कुशल नहीं था कि किसी भी टीम में शामिल हो सकूं। लेकिन दूसरे साल में, मेरे दोस्त लॉक नदज़ामेला, जो हील्डटाउन के चैंपियन हर्डलर थे, ने मुझे एक नया खेल अपनाने के लिए प्रोत्साहित किया: लंबी दूरी की दौड़। मैं लंबा और दुबला-पतला था, जिसे लॉक ने लंबी दूरी के धावक के लिए आदर्श शरीर बताया। उनके कुछ सुझावों के बाद, मैंने प्रशिक्षण शुरू किया। मुझे लंबी दूरी की दौड़ का अनुशासन और एकांत पसंद आया, जिसने मुझे स्कूल की भागदौड़ भरी जिंदगी से दूर रहने का मौका दिया। उसी समय, मैंने एक ऐसा खेल भी अपनाया जिसके लिए मैं शायद उतना उपयुक्त नहीं था, और वह था मुक्केबाजी। मैंने अनियमित रूप से प्रशिक्षण लिया, और कई साल बाद, जब मेरा वजन थोड़ा बढ़ गया, तब मैंने गंभीरता से मुक्केबाजी शुरू की।

हील्डटाउन में अपने दूसरे वर्ष के दौरान, रेवरेंड मोकितिमी और डॉ. वेलिंगटन ने मुझे प्रीफेक्ट नियुक्त किया। प्रीफेक्ट की जिम्मेदारियाँ

अलग-अलग होती हैं, और नए प्रीफेक्ट को सबसे कम पसंद आने वाले काम मिलते हैं। शुरुआत में, मैं छात्रों के एक समूह की देखरेख करता था जो दोपहर में हमारे शारीरिक श्रम के समय खिड़कियाँ साफ करने का काम करते थे, और मैं उन्हें हर दिन अलग-अलग इमारतों में ले जाता था।
जल्द ही मुझे अगली ज़िम्मेदारी मिल गई, जो रात्रि की ड्यूटी थी। मुझे रात भर जागने में कभी कोई दिक्कत नहीं हुई, लेकिन एक रात मैं एक ऐसी नैतिक दुविधा में पड़ गया जो मुझे आज भी याद है। छात्रावास में शौचालय नहीं थे, लेकिन निवास स्थान से लगभग सौ फीट पीछे एक शौचालय था। बरसात की शामों में, जब कोई छात्र आधी रात को जाग जाता था, तो कोई भी घास और कीचड़ से होते हुए शौचालय तक जाना नहीं चाहता था। इसके बजाय, छात्र बरामदे में खड़े होकर झाड़ियों में पेशाब कर देते थे। हालाँकि, यह प्रथा नियमों के सख्त खिलाफ थी और प्रहरी का एक काम ऐसे छात्रों के नाम लिखना था जो ऐसा करते थे।
एक रात, जब ज़ोरदार बारिश हो रही थी, मैं ड्यूटी पर था और मैंने कई छात्रों को—लगभग पंद्रह के करीब—बरामदे में पेशाब करते हुए पकड़ा। भोर होते- होते, मैंने एक लड़के को बाहर आते देखा, उसने इधर-उधर देखा और बरामदे के एक कोने में पेशाब करने के लिए खड़ा हो गया। मैं उसके पास गया और घोषणा की कि वह पकड़ा गया है, जिस पर वह मुड़ा और मुझे एहसास हुआ कि वह एक प्रीफेक्ट था। मैं दुविधा में पड़ गया। कानून और दर्शन में, अक्सर पूछा जाता है, “क्विज़ कस्टोडिएट इप्सोस कस्टोड्स?” (रक्षकों की रक्षा कौन करेगा?) यदि प्रीफेक्ट नियमों का पालन नहीं करता, तो छात्रों से पालन करने की अपेक्षा कैसे की जा सकती है? असल में, प्रीफेक्ट कानून से ऊपर था क्योंकि वह खुद कानून था, और एक प्रीफेक्ट को दूसरे प्रीफेक्ट की शिकायत नहीं करनी चाहिए थी। लेकिन मुझे प्रीफेक्ट की शिकायत न करना और बाकी पंद्रह लोगों के नाम दर्ज करना उचित नहीं लगा, इसलिए मैंने अपनी सूची फाड़ दी और किसी पर भी आरोप नहीं लगाया।

हील्डटाउन में अपने अंतिम वर्ष में एक ऐसी घटना घटी जो मेरे लिए रात के आकाश में एक धूमकेतु के गुजरने जैसी थी। वर्ष के अंत में, हमें सूचित किया गया कि महान ज़ोसा कवि क्रुने म्क्हायी विद्यालय का दौरा करने वाले हैं।

म्क्हायी वास्तव में एक इम्बोन्गी थे, एक स्तुति गायक, एक प्रकार के मौखिक इतिहासकार जो समकालीन घटनाओं और इतिहास को अपनी विशेष रूप से महत्वपूर्ण कविता के माध्यम से व्यक्त करते थे।
उनके आगमन के दिन विद्यालय अधिकारियों द्वारा अवकाश घोषित कर दिया गया था। निर्धारित सुबह, विद्यालय के सभी छात्र, जिनमें श्वेत और अश्वेत दोनों ही कर्मचारी शामिल थे, भोजन कक्ष में एकत्रित हुए, जहाँ हमारी सभाएँ आयोजित की जाती थीं। कक्ष के एक छोर पर एक मंच था और उस पर एक दरवाजा था जो डॉ. वेलिंगटन के घर की ओर जाता था। दरवाजा वैसे तो कोई खास नहीं था, लेकिन हम उसे डॉ. वेलिंगटन का दरवाजा मानते थे, क्योंकि डॉ. वेलिंगटन के अलावा कोई भी उससे होकर नहीं गुजरता था।
अचानक दरवाजा खुला और अंदर से डॉ. वेलिंगटन नहीं, बल्कि एक अश्वेत व्यक्ति निकला, जिसने तेंदुए की खाल से बनी टोपी और उसी रंग की टोपी पहन रखी थी और दोनों हाथों में भाले लिए हुए था। डॉ. वेलिंगटन भी कुछ देर बाद अंदर आए, लेकिन आदिवासी पोशाक में एक अश्वेत व्यक्ति को दरवाजे से आते देखना एक रोमांचकारी दृश्य था। हम पर इसका जो प्रभाव पड़ा, उसे शब्दों में बयान करना कठिन है। ऐसा लगा जैसे ब्रह्मांड ही उलट गया हो। जब म्क्हायी डॉ. वेलिंगटन के बगल में मंच पर बैठीं, तो हम अपनी उत्तेजना को मुश्किल से ही रोक पा रहे थे।
लेकिन जब म्क्हायी बोलने के लिए खड़े हुए, तो मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे निराशा हुई। मैंने अपने मन में उनकी एक छवि बना रखी थी, और अपनी युवावस्था की कल्पना में, मुझे उम्मीद थी कि म्क्हायी जैसा खोसा नायक लंबा, उग्र और बुद्धिमान दिखेगा। लेकिन वह कुछ खास विशिष्ट नहीं थे और अपने कपड़ों को छोड़कर, बिल्कुल साधारण लग रहे थे। जब वह खोसा भाषा में बोलते थे, तो वह धीरे-धीरे और रुक-रुक कर बोलते थे, सही शब्द खोजने के लिए बार-बार रुकते थे और फिर सही शब्द मिलने पर अटक जाते थे।
एक क्षण उन्होंने ज़ोर देने के लिए अपनी भाला हवा में उठाई और गलती से ऊपर लगे पर्दे के तार से टकरा गई, जिससे एक तेज़ आवाज़ हुई और पर्दा हिल गया। कवि ने अपने भाले की नोक और फिर पर्दे के तार को देखा और गहरी सोच में डूबे हुए मंच पर इधर-उधर चलने लगे। एक मिनट बाद, वे चलना बंद करके हमारी ओर मुड़े और नई ऊर्जा से भर कर बोले कि यह घटना—भाले का तार से टकराना— अफ्रीका और यूरोप की संस्कृति के बीच टकराव का प्रतीक है। उनकी आवाज़

बुलंद हुई और उन्होंने कहा, “भाला अफ्रीकी इतिहास में गौरवशाली और सत्य का प्रतीक है; यह योद्धा और कलाकार के रूप में अफ्रीकी का प्रतीक है। यह धातु का तार,” उन्होंने ऊपर की ओर इशारा करते हुए कहा, “पश्चिमी निर्माण का एक उदाहरण है, जो कुशल तो है लेकिन निर्मम, चालाक तो है लेकिन आत्माहीन।” उन्होंने आगे कहा, “मैं जिस बारे में बात कर रहा हूँ, वह किसी हड्डी का धातु से स्पर्श या एक संस्कृति का दूसरी संस्कृति से मेल नहीं है; मैं आपसे स्वदेशी और अच्छी चीज़ों तथा विदेशी और बुरी चीज़ों के बीच के क्रूर संघर्ष के बारे में बात कर रहा हूँ। हम इन विदेशियों को, जिन्हें हमारी संस्कृति की परवाह नहीं है, अपने राष्ट्र पर कब्ज़ा करने की अनुमति नहीं दे सकते। मेरा मानना है कि एक दिन अफ्रीकी समाज की शक्तियाँ घुसपैठियों पर एक ऐतिहासिक विजय प्राप्त करेंगी। बहुत लंबे समय से हम श्वेत पुरुषों के झूठे देवताओं के आगे झुके हुए हैं। लेकिन हम उभरेंगे और इन विदेशी धारणाओं को त्याग देंगे।”
मुझे अपने कानों पर विश्वास ही नहीं हो रहा था। डॉ. वेलिंगटन और अन्य श्वेत लोगों की उपस्थिति में इतने संवेदनशील मामलों पर उनकी बेबाकी हम सभी के लिए अत्यंत आश्चर्यजनक थी। फिर भी, साथ ही साथ इसने हमें प्रेरित और उत्साहित किया, और डॉ. वेलिंगटन जैसे लोगों के प्रति मेरी धारणा को बदलना शुरू कर दिया, जिन्हें मैं अनायास ही अपना संरक्षक मानता था।
इसके बाद म्कहायी ने अपनी प्रसिद्ध कविता सुनाना शुरू किया, जिसमें उन्होंने आकाश के तारों को दुनिया के विभिन्न देशों में बाँटा था। मैंने इसे पहले कभी नहीं सुना था। मंच पर घूमते हुए और अपने भाले से आकाश की ओर इशारा करते हुए उन्होंने यूरोप के लोगों - फ्रांसीसियों, जर्मनों और अंग्रेजों - से कहा, "मैं तुम्हें आकाशगंगा, सबसे बड़ा तारामंडल देता हूँ, क्योंकि तुम एक विचित्र लोग हो, लालच और ईर्ष्या से भरे हुए, जो प्रचुरता के लिए झगड़ते हो।" उन्होंने कुछ तारे एशियाई देशों और उत्तरी और दक्षिणी अमेरिका को दिए। फिर उन्होंने अफ्रीका की चर्चा की और महाद्वीप को विभिन्न देशों में विभाजित किया, और अलग-अलग जनजातियों को विशिष्ट तारामंडल दिए। वे मंच पर नाच रहे थे, अपना भाला लहरा रहे थे, अपनी आवाज़ में उतार-चढ़ाव ला रहे थे, और अब अचानक वे शांत हो गए और अपनी आवाज़ धीमी कर ली।

“अब आओ, हे खोसा वंश,” उन्होंने कहा और धीरे-धीरे एक घुटने पर बैठ गए। “मैं तुम्हें सबसे महत्वपूर्ण और दिव्य तारा, भोर का तारा अर्पित करता हूँ, क्योंकि तुम एक गौरवशाली और शक्तिशाली लोग हो। यह वर्षों की गणना का तारा है – पुरुषत्व के वर्षों का।” यह अंतिम शब्द कहते ही उन्होंने अपना सिर अपनी छाती पर रख लिया। हम सब खड़े हो गए और तालियाँ बजाते हुए जयकारे लगाने लगे। मैं तालियाँ बजाना बंद ही नहीं करना चाहता था। उस क्षण मुझे इतना गर्व महसूस हुआ, एक अफ़्रीकी होने के नाते नहीं, बल्कि एक खोसा होने के नाते; मुझे ऐसा लगा जैसे मैं चुने हुए लोगों में से एक हूँ।
म्क्हायी के भाषण से मैं प्रेरित तो हुआ, लेकिन साथ ही उलझन में भी पड़ गया। उन्होंने अफ्रीकी एकता के व्यापक और राष्ट्रवादी विषय से हटकर एक संकीर्ण विषय पर ध्यान केंद्रित किया, जो केवल खोसा लोगों को संबोधित था, जिनमें से वे स्वयं भी एक थे। जैसे-जैसे हील्डटाउन में मेरा समय समाप्त हो रहा था, मेरे मन में कई नए और कभी-कभी विरोधाभासी विचार उमड़ रहे थे। मैं यह समझने लगा था कि सभी जनजातियों के अफ्रीकियों में बहुत कुछ समान है, फिर भी महान म्क्हायी खोसा लोगों की सबसे अधिक प्रशंसा कर रहे थे; मैंने देखा कि एक अफ्रीकी किसी श्वेत व्यक्ति के सामने डटकर खड़ा हो सकता है, फिर भी मैं श्वेत लोगों से लाभ प्राप्त करने के लिए उत्सुक था, जिसके लिए अक्सर अधीनता आवश्यक होती थी। एक तरह से, म्क्हायी के ध्यान का यह परिवर्तन मेरे अपने मन का प्रतिबिंब था क्योंकि मैं एक खोसा होने पर गर्व और अन्य अफ्रीकियों के साथ आत्मीयता की भावना के बीच उलझा हुआ था। लेकिन जब मैंने वर्ष के अंत में हील्डटाउन छोड़ा, तो मैंने खुद को पहले एक खोसा और फिर एक अफ्रीकी के रूप में देखा।

7

1960 तक, हील्डटाउन से लगभग बीस मील पूर्व में स्थित एलिस नगर पालिका में फोर्ट हरे विश्वविद्यालय महाविद्यालय, दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों के लिए उच्च शिक्षा का एकमात्र आवासीय केंद्र था। फोर्ट हरे इससे कहीं अधिक था: यह दक्षिणी मध्य और पूर्वी अफ्रीका के सभी क्षेत्रों से आए अफ्रीकी विद्वानों के लिए एक प्रेरणास्रोत था। मेरे जैसे युवा अश्वेत दक्षिण अफ्रीकियों के लिए, यह ऑक्सफोर्ड और कैम्ब्रिज, हार्वर्ड और येल, तीनों का मिलाजुला रूप था।
मेरे अभिभावक चाहते थे कि मैं फोर्ट हरे विश्वविद्यालय में पढ़ूँ और मुझे वहाँ दाखिला मिलने पर बहुत खुशी हुई। विश्वविद्यालय जाने से पहले, अभिभावकों ने मुझे मेरा पहला सूट खरीदकर दिया। डबल-ब्रेस्टेड और ग्रे रंग का वह सूट मुझे परिपक्व और परिष्कृत महसूस कराता था; मैं इक्कीस साल का था और फोर्ट हरे में मुझसे ज़्यादा बुद्धिमान किसी की कल्पना भी नहीं कर सकता था।
मुझे ऐसा महसूस हुआ कि मुझे दुनिया में सफलता के लिए तैयार किया जा रहा है। मुझे खुशी थी कि अब शासक के परिवार में एक सदस्य विश्वविद्यालय की डिग्री प्राप्त करेगा। जस्टिस जूनियर सर्टिफिकेट की पढ़ाई के लिए हील्डटाउन में ही रुका रहा। उसे पढ़ाई से ज्यादा खेलना पसंद था और वह पढ़ाई में बिल्कुल लापरवाह था।
फोर्ट हरे की स्थापना 1916 में स्कॉटिश मिशनरियों द्वारा पूर्वी केप में उन्नीसवीं सदी के सबसे बड़े सीमावर्ती किले के स्थान पर की गई थी। एक चट्टानी चबूतरे पर निर्मित और घुमावदार ट्यूम नदी से घिरे फोर्ट हरे की स्थिति ऐसी थी कि ब्रिटिश सेना वीर खोसा योद्धा सैंडिले, अंतिम रहरहाबे राजा, से लड़ सके, जिसे 1800 के दशक में अंतिम सीमावर्ती लड़ाइयों में से एक में ब्रिटिशों ने पराजित किया था।

फोर्ट हेयर में केवल डेढ़ सौ छात्र थे, और मैं क्लार्कबरी और हील्डटाउन से उनमें से लगभग एक दर्जन को पहले से जानता था। उनमें से एक, जिससे मैं पहली बार मिल रहा था, के. डी. मतानज़िमा थे। हालाँकि कबीले के क्रम के अनुसार के. डी. मेरे भतीजे थे, मैं उनसे छोटा और पद में कहीं कमतर था। लंबा, दुबला-पतला और बेहद आत्मविश्वासी के. डी. तीसरे वर्ष के छात्र थे और उन्होंने मुझे अपना संरक्षण दे दिया। मैं उन्हें उसी तरह सम्मान देता था जैसे न्याय को देता था।
हम दोनों मेथोडिस्ट थे, और मुझे उनके छात्रावास में रहने की जगह मिली, जिसे वेस्ली हाउस के नाम से जाना जाता था, जो कैंपस के किनारे पर स्थित एक सुंदर दो मंजिला इमारत थी। उनके मार्गदर्शन में, मैं उनके साथ पास के लवडे चर्च में प्रार्थना सभाओं में जाता था, फुटबॉल खेलना शुरू किया (जिसमें वे माहिर थे), और आम तौर पर उनकी सलाह मानता था। रीजेंट अपने बच्चों को स्कूल में पैसे भेजने में विश्वास नहीं करते थे और अगर के.डी. ने अपना भत्ता मेरे साथ साझा न किया होता तो मेरी जेब खाली हो जाती। रीजेंट की तरह, वे भी मुझे सबाता के काउंसलर के रूप में देखते थे, और उन्होंने मुझे कानून की पढ़ाई करने के लिए प्रोत्साहित किया।

* * *

क्लार्कबरी और हील्डटाउन की तरह फोर्ट हरे भी एक मिशनरी कॉलेज था। हमें ईश्वर की आज्ञा मानने, राजनीतिक अधिकारियों का सम्मान करने और चर्च और सरकार द्वारा प्रदान किए गए शैक्षिक अवसरों के लिए आभारी रहने की शिक्षा दी जाती थी। इन स्कूलों की अक्सर औपनिवेशिक दृष्टिकोण और प्रथाओं के लिए आलोचना की जाती रही है। फिर भी, ऐसे दृष्टिकोणों के बावजूद, मेरा मानना है कि इनके लाभ इनके नुकसानों से कहीं अधिक थे। मिशनरियों ने उन स्कूलों का निर्माण और संचालन किया जब सरकार ऐसा करने के लिए अनिच्छुक या असमर्थ थी। मिशनरी स्कूलों का शिक्षण वातावरण, हालांकि अक्सर नैतिक रूप से कठोर होता था, सरकारी स्कूलों में अंतर्निहित नस्लवादी सिद्धांतों की तुलना में कहीं अधिक खुला था।
फोर्ट हरे महाद्वीप के कुछ महानतम अफ्रीकी विद्वानों का घर और उद्गम स्थल दोनों था। प्रोफेसर जेड. के. मैथ्यूज अफ्रीकी बुद्धिजीवियों का आदर्श

उदाहरण थे। एक खनिक के पुत्र, जेड. के. मैथ्यूज बुकर वाशिंगटन की आत्मकथा, 'अप फ्रॉम स्लेवरी' से प्रभावित थे, जिसमें कड़ी मेहनत और संयम के माध्यम से सफलता का उपदेश दिया गया था। उन्होंने सामाजिक मानवविज्ञान और कानून पढ़ाया और सरकार की सामाजिक नीतियों के खिलाफ खुलकर आवाज उठाई।
फोर्ट हरे और प्रोफेसर डी. डी. टी. जाबावु का नाम लगभग एक दूसरे के पर्याय बन चुका है। 1916 में जब विश्वविद्यालय खुला, तब वे वहाँ के पहले कर्मचारी थे। प्रोफेसर जाबावु ने लंदन विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, जो उस समय एक अविश्वसनीय उपलब्धि मानी जाती थी। प्रोफेसर जाबावु लैटिन, इतिहास और मानव विज्ञान के साथ-साथ ज़ोसा भाषा भी पढ़ाते थे। ज़ोसा वंशावली के मामले में वे ज्ञानकोश थे और उन्होंने मुझे मेरे पिता के बारे में ऐसी बातें बताईं जो मुझे पहले कभी पता नहीं थीं। वे अफ्रीकी अधिकारों के लिए एक सशक्त प्रवक्ता भी थे और 1936 में अखिल अफ्रीकी सम्मेलन के संस्थापक अध्यक्ष बने, जिसने संसद में केप में आम मतदाता सूची को समाप्त करने के उद्देश्य से लाए गए कानून का विरोध किया था।
मुझे याद है एक बार मैं फोर्ट हरे से उमटाटा तक ट्रेन से यात्रा कर रहा था, अफ्रीकी डिब्बे में बैठा था, जो अश्वेतों के लिए उपलब्ध एकमात्र सीटें थीं। सफेद रंग का ट्रेन कंडक्टर हमारे टिकट चेक करने आया। जब उसने देखा कि मैं एलिस स्टेशन से चढ़ा था, तो उसने पूछा, "क्या आप जाबावु के स्कूल से हैं?" मैंने हाँ में सिर हिलाया, जिस पर कंडक्टर ने खुशी-खुशी मेरे टिकट पर मुहर लगा दी और जाबावु के बारे में कुछ बुदबुदाया कि वह एक नेक इंसान थे।

अपने पहले वर्ष में, मैंने अंग्रेज़ी, मानवशास्त्र, राजनीति, मूलनिवासी प्रशासन और रोमन डच कानून का अध्ययन किया। मूलनिवासी प्रशासन अफ़्रीकियों से संबंधित कानूनों से संबंधित था और मूलनिवासी मामलों के विभाग में काम करने के इच्छुक किसी भी व्यक्ति के लिए यह विषय उपयुक्त था। हालाँकि के.डी. मुझे कानून की पढ़ाई करने की सलाह दे रहे थे, लेकिन मेरा मन मूलनिवासी मामलों के विभाग में दुभाषिया या क्लर्क बनने का था। उस समय, एक सरकारी कर्मचारी के रूप में करियर एक अफ़्रीकी के लिए एक शानदार उपलब्धि

थी, एक अश्वेत व्यक्ति के लिए इससे अधिक ऊँचा मुकाम हासिल करना संभव नहीं था। ग्रामीण क्षेत्रों में, मजिस्ट्रेट के कार्यालय में दुभाषिया को मजिस्ट्रेट के बाद दूसरे स्थान पर माना जाता था। जब मेरे दूसरे वर्ष में, फोर्ट हरे ने एक प्रतिष्ठित सेवानिवृत्त अदालती दुभाषिया, त्यामज़ाशे द्वारा पढ़ाया जाने वाला दुभाषिया पाठ्यक्रम शुरू किया, तो मैं दाखिला लेने वाले पहले छात्रों में से एक था।
फोर्ट हरे एक काफी अभिजात्य वर्ग का इलाका हो सकता था और यहाँ भी उच्च शिक्षा संस्थानों में होने वाली रैगिंग की प्रथा आम थी। वरिष्ठ छात्र कनिष्ठों के साथ घमंड और तिरस्कार का व्यवहार करते थे। जब मैं पहली बार कैंपस पहुँचा, तो केंद्रीय आंगन के पार मेरी नज़र गमालियल वबाज़ा पर पड़ी। वह मुझसे कई साल बड़े थे और मैं क्लार्कबरी में उनके साथ पढ़ चुका था। मैंने उनका गर्मजोशी से अभिवादन किया, लेकिन उनकी प्रतिक्रिया बेहद ठंडी और अहंकारी थी, और उन्होंने इस बात पर अपमानजनक टिप्पणी की कि मैं प्रथम वर्ष के छात्रों के छात्रावास में रहूँगा। वबाज़ा ने मुझे बताया कि वह मेरे छात्रावास की हाउस कमेटी के सदस्य हैं, जबकि वरिष्ठ होने के नाते अब वह मेरे साथ छात्रावास में नहीं रहते थे। मुझे यह बात अजीब और अलोकतांत्रिक लगी, लेकिन यह वहाँ का प्रचलित रिवाज था।
इसके कुछ समय बाद, एक रात हममें से कुछ लोगों ने इस बात पर चर्चा की कि सदन समिति में न तो निवासी और न ही नवसिखिए का कोई प्रतिनिधित्व था। हमने तय किया कि हमें परंपरा से हटकर इन दोनों समूहों से मिलकर एक सदन समिति का चुनाव करना चाहिए। हमने आपस में विचार-विमर्श किया और सदन के सभी निवासियों से संपर्क किया, और कुछ ही हफ्तों में वरिष्ठ छात्रों को हराकर अपनी सदन समिति का चुनाव कर लिया। मैं स्वयं इस नवगठित समिति के आयोजकों में से एक था और मुझे इस समिति में चुना गया।
लेकिन वरिष्ठ छात्र इतनी आसानी से दबने वाले नहीं थे। उन्होंने एक बैठक बुलाई जिसमें उनके एक साथी, रेक्स ताताने, जो धाराप्रवाह अंग्रेजी बोलते थे, ने कहा, “नए छात्रों का यह व्यवहार अस्वीकार्य है। हम वरिष्ठों को मंडेला जैसे देहाती पिछड़े व्यक्ति से कैसे हराया जा सकता है, जो ठीक से अंग्रेजी भी नहीं बोल सकता!” फिर उन्होंने मेरी बोलने की नकल करते हुए मुझे ग्कालेका लहजे में बोलने की कोशिश की, जिस पर उनके साथियों ने खूब हँसा। ताताने के व्यंग्यपूर्ण भाषण ने हम सभी को और भी दृढ़ बना दिया। हम

नए छात्रों ने अब आधिकारिक हाउस कमेटी का गठन किया और हमने वरिष्ठों को सबसे अप्रिय काम सौंप दिए, जो उनके लिए अपमान की बात थी।
कॉलेज के वार्डन, रेवरेंड ए. जे. कुक को इस विवाद की जानकारी मिली और उन्होंने हमें अपने कार्यालय में बुलाया। हमें पूरा यकीन था कि हम सही हैं और झुकने को तैयार नहीं थे। ताताने ने वार्डन से हमारी अपील को खारिज करने की गुहार लगाई और बोलते-बोलते ही फूट-फूटकर रोने लगे। वार्डन ने हमसे अपना रुख बदलने को कहा, लेकिन हम नहीं झुके। अधिकांश दबंगों की तरह, ताताने का बाहरी रूप कठोर लेकिन नाजुक था। हमने वार्डन को बताया कि अगर उन्होंने हमारी अपील खारिज की तो हम सभी सदन समिति से इस्तीफा दे देंगे, जिससे समिति की गरिमा और अधिकार दोनों ही खत्म हो जाएंगे। अंत में, वार्डन ने हस्तक्षेप न करने का फैसला किया। हम दृढ़ रहे और जीत गए। यह सत्ता के साथ मेरी पहली लड़ाइयों में से एक थी, और मैंने न्याय और सही होने से मिलने वाली शक्ति का अनुभव किया। कॉलेज के अधिकारियों के खिलाफ भविष्य की लड़ाई में मैं इतना भाग्यशाली नहीं रहा।

फोर्ट हरे में मेरी शिक्षा कक्षा के अंदर जितनी ही महत्वपूर्ण थी, उतनी ही बाहर भी। हील्डटाउन की तुलना में मैं एक अधिक सक्रिय खिलाड़ी था। इसके दो कारण थे: मेरी लंबाई और ताकत बढ़ गई थी, लेकिन उससे भी महत्वपूर्ण बात यह थी कि फोर्ट हरे हील्डटाउन से काफी छोटा था, इसलिए मुझे कम प्रतिस्पर्धा का सामना करना पड़ा। मैं फुटबॉल और क्रॉस-कंट्री दौड़ दोनों में भाग ले सकता था। दौड़ ने मुझे कई महत्वपूर्ण सबक सिखाए। क्रॉस-कंट्री प्रतियोगिता में, जन्मजात क्षमता से कहीं अधिक प्रशिक्षण मायने रखता था, और मैं अपनी स्वाभाविक प्रतिभा की कमी को लगन और अनुशासन से पूरा कर सकता था। मैंने इसे अपने हर काम में लागू किया। एक छात्र के रूप में भी, मैंने कई ऐसे युवाओं को देखा जिनमें असाधारण जन्मजात प्रतिभा थी, लेकिन उनमें अपनी प्रतिभा को निखारने के लिए आत्म-अनुशासन और धैर्य की कमी थी।
मैं भी ड्रामा सोसाइटी में शामिल हो गया और अब्राहम लिंकन पर आधारित एक नाटक में अभिनय किया, जिसे मेरे सहपाठी लिंकन म्केंटेन ने रूपांतरित किया था। म्केंटेन एक प्रतिष्ठित ट्रांसकीयन परिवार से थे और मेरे लिए एक

आदर्श व्यक्ति थे। यह बात सचमुच सच थी, क्योंकि फोर्ट हरे में मुझसे लंबा वही एकमात्र छात्र था। म्केंटेन ने अपने हमनाम का किरदार निभाया, जबकि मैंने लिंकन के हत्यारे जॉन विल्क्स बूथ की भूमिका निभाई। म्केंटेन द्वारा लिंकन का चित्रण गरिमामय और औपचारिक था, और उनके द्वारा दिए गए महानतम भाषणों में से एक, गेटिसबर्ग भाषण को दर्शकों ने खड़े होकर सराहा। मेरी भूमिका छोटी थी, फिर भी मैं नाटक के नैतिक संदेश का केंद्र था, जो यह था कि जो लोग बड़े जोखिम उठाते हैं, उन्हें अक्सर बड़े परिणाम भुगतने पड़ते हैं।
मैं स्टूडेंट्स क्रिश्चियन एसोसिएशन का सदस्य बन गया और आस-पास के गांवों में रविवार को बाइबल की कक्षाएं पढ़ाने लगा। इन अभियानों में मेरे साथियों में से एक गंभीर युवा विज्ञान विद्वान था, जिससे मेरी मुलाकात फुटबॉल के मैदान पर हुई थी। वह ट्रांसकेई के पोंडोलैंड से आया था और उसका नाम ओलिवर टैम्बो था। शुरू से ही मैंने देखा कि ओलिवर की बुद्धि हीरे की धार जैसी थी; वह वाद-विवाद में माहिर था और उन घिसी-पिटी बातों को नहीं मानता था जिन्हें हममें से बहुत से लोग बिना सोचे-समझे मान लेते थे। ओलिवर बेडा हॉल, एंग्लिकन छात्रावास में रहता था, और हालांकि फोर्ट हरे में उससे मेरा ज्यादा संपर्क नहीं था, फिर भी यह आसानी से देखा जा सकता था कि वह महान कार्य करने के लिए ही पैदा हुआ था।
रविवार को हममें से कुछ लोग कभी-कभी ऐलिस में जाकर शहर के किसी रेस्तरां में खाना खाते थे। रेस्तरां का संचालन गोरे लोग करते थे, और उन दिनों किसी अश्वेत व्यक्ति के लिए अंदर जाना तो दूर, भोजन कक्ष में खाना खाना भी नामुमकिन था। इसलिए, हम सब मिलकर पैसे इकट्ठा करते, रसोई में जाते और अपनी पसंद का खाना मंगवाते थे।
मैंने फोर्ट हरे में न केवल भौतिकी का अध्ययन किया, बल्कि एक और सटीक भौतिक विज्ञान, बॉलरूम डांसिंग का भी ज्ञान प्राप्त किया। भोजन कक्ष में रखे एक पुराने खस्ताहाल फोनोग्राफ पर हम घंटों फॉक्स-ट्रॉट और वाल्ट्ज़ का अभ्यास करते थे, बारी-बारी से हम दोनों ही नृत्य का नेतृत्व और अनुसरण करते थे। हमारे आदर्श विक्टर सिल्वेस्टर थे, जो बॉलरूम डांसिंग के विश्व चैंपियन थे, और हमारे शिक्षक हमारे सहपाठी स्मॉली सिवुंडला थे, जो मानो गुरु का युवा रूप थे।

पास के एक गाँव में, नत्सेलामान्ज़ी नाम का एक अफ़्रीकी नृत्य-शाला थी, जो स्थानीय अश्वेत समाज के संभ्रांत लोगों के लिए थी और स्नातक छात्रों के लिए वर्जित थी। लेकिन एक रात, महिलाओं के साथ नृत्य का अभ्यास करने की तीव्र इच्छा से प्रेरित होकर, हमने अपने सूट पहने, छात्रावास से चुपके से निकले और नृत्य-शाला पहुँच गए। वह एक भव्य स्थान था, और हम बहुत साहसी महसूस कर रहे थे। मैंने नृत्य-शाला के दूसरी ओर एक सुंदर युवती को देखा और विनम्रतापूर्वक उसे नृत्य के लिए आमंत्रित किया। एक क्षण बाद, वह मेरी बाहों में थी। हम दोनों ने एक साथ मधुर नृत्य किया और मैंने कल्पना की कि नृत्य-शाला में मैं कितना आकर्षक लग रहा था। कुछ मिनट बाद, मैंने उससे उसका नाम पूछा। "श्रीमती बोकवे," उसने धीरे से कहा। मैं लगभग उसे वहीं छोड़कर भाग गया। मैंने दूसरी ओर देखा और डॉ. रोज़बेरी बोकवे को देखा, जो उस समय के सबसे सम्मानित अफ़्रीकी नेताओं और विद्वानों में से एक थे, अपने बहनोई और मेरे प्रोफेसर, ज़ेड. के. मैथ्यूज के साथ बातचीत कर रहे थे। मैंने श्रीमती बोकवे से माफी मांगी और फिर शर्मिंदा होकर उन्हें डॉ. बोकवे और प्रोफेसर मैथ्यूज की उत्सुक निगाहों के सामने एक तरफ ले गई। मैं फर्श के नीचे धंस जाना चाहती थी। मैंने विश्वविद्यालय के कई नियमों का उल्लंघन किया था। लेकिन फोर्ट हरे में अनुशासन के प्रभारी प्रोफेसर मैथ्यूज ने मुझसे एक शब्द भी नहीं कहा। वे मेरे उत्साह को तब तक सहन करने को तैयार थे जब तक कि वह मेहनत से संतुलित हो। मुझे नहीं लगता कि मैंने नत्सेलामान्ज़ी में उस शाम के बाद के हफ्तों में जितनी लगन से पढ़ाई की, उतनी लगन से कभी की। फोर्ट हेयर में बौद्धिक और सामाजिक स्तर पर जो परिष्कार था, वह मेरे लिए बिल्कुल नया और अनोखा था। पश्चिमी मानकों के अनुसार, फोर्ट हेयर की दुनियादारी शायद उतनी बड़ी बात न लगे, लेकिन मेरे जैसे देहाती लड़के के लिए यह एक अद्भुत अनुभव था। मैंने पहली बार पजामा पहना, जो शुरू में थोड़ा असहज लगा, लेकिन धीरे-धीरे मुझे उसकी आदत हो गई। मैंने पहले कभी टूथब्रश और टूथपेस्ट का इस्तेमाल नहीं किया था; घर पर हम दांत सफेद करने के लिए राख का इस्तेमाल करते थे और उन्हें साफ करने के लिए टूथपिक का। पानी से फ्लश होने वाले शौचालय और गर्म पानी के शॉवर भी मेरे लिए बिल्कुल नए थे। मैंने पहली बार टॉयलेट साबुन का इस्तेमाल किया, न कि उस नीले डिटर्जेंट का जिससे मैं घर पर इतने सालों से नहाता आ रहा था।

शायद इस अपरिचित माहौल के चलते, मुझे बचपन के उन सरल सुखों की याद सताने लगी। मैं अकेला नहीं था और मैं कुछ युवकों के समूह में शामिल हो गया जो चुपके से शाम को विश्वविद्यालय के खेतों में जाया करते थे, जहाँ हम आग जलाकर भुट्टे भूनते थे। फिर हम सब बैठकर भुट्टे खाते और किस्से सुनाते थे। हम ऐसा भूख से नहीं करते थे, बल्कि घर जैसा माहौल फिर से पाने की चाहत से करते थे। हम अपनी उपलब्धियों, खेल-कूद में अपनी कुशलता और स्नातक होने के बाद कितना पैसा कमाएँगे, इन सब बातों का बखान करते थे। हालाँकि मैं खुद को एक सभ्य युवक समझता था, फिर भी मैं एक देहाती लड़का था जिसे गाँव के सुखों की कमी खलती थी।

फोर्ट हरे भले ही दुनिया से अलग-थलग एक शांत जगह थी, फिर भी द्वितीय विश्व युद्ध की प्रगति में हमारी गहरी दिलचस्पी थी। अपने सहपाठियों की तरह, मैं भी ग्रेट ब्रिटेन का प्रबल समर्थक था, और यह जानकर मैं बेहद उत्साहित था कि मेरे पहले वर्ष के अंत में विश्वविद्यालय के दीक्षांत समारोह में मुख्य वक्ता दक्षिण अफ्रीका में इंग्लैंड के महान समर्थक, पूर्व प्रधानमंत्री जान स्मट्स होंगे। विश्व प्रसिद्ध राजनेता के रूप में ख्याति प्राप्त व्यक्ति की मेजबानी करना फोर्ट हरे के लिए एक बड़ा सम्मान था। स्मट्स, जो उस समय उप प्रधानमंत्री थे, दक्षिण अफ्रीका से जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा करने के लिए पूरे देश में अभियान चला रहे थे, जबकि प्रधानमंत्री जे. बी. हर्ट्ज़ोग तटस्थता की वकालत कर रहे थे। स्मट्स जैसे विश्व नेता को करीब से देखने की मेरी बहुत उत्सुकता थी।
हालांकि हर्ट्ज़ोग ने तीन साल पहले केप द्वीप समूह में आम मतदाता सूची से अंतिम अफ्रीकी मतदाताओं को हटाने के अभियान का नेतृत्व किया था, लेकिन मुझे स्मट्स एक सहानुभूतिपूर्ण व्यक्ति लगे। मुझे इस बात की अधिक परवाह थी कि उन्होंने राष्ट्र संघ की स्थापना में मदद की थी और दुनिया भर में स्वतंत्रता को बढ़ावा दिया था, बजाय इसके कि उन्होंने अपने देश में स्वतंत्रता का दमन किया था।
स्मट्स ने जर्मनी के विरुद्ध ग्रेट ब्रिटेन का समर्थन करने के महत्व और इस विचार के बारे में बात की कि इंग्लैंड उन्हीं पश्चिमी मूल्यों का

प्रतिनिधित्व करता है जिनका हम दक्षिण अफ़्रीकी लोग करते हैं। मुझे याद है कि मुझे लगा था कि अंग्रेज़ी में उनका उच्चारण लगभग मेरे जितना ही खराब था! अपने सहपाठियों के साथ, मैंने भी दिल खोलकर उनकी सराहना की, यूरोप की स्वतंत्रता के लिए संघर्ष करने के स्मट्स के आह्वान का उत्साहवर्धन किया, यह भूलकर कि हमें अपने ही देश में वह स्वतंत्रता प्राप्त नहीं थी। स्मट्स फोर्ट हरे में अपने समर्थकों को उपदेश दे रहे थे। हर शाम, वेस्ली हाउस के वार्डन यूरोप की सैन्य स्थिति की समीक्षा करते थे, और देर रात हम एक पुराने रेडियो के आसपास इकट्ठा होकर बीबीसी पर विंस्टन चर्चिल के जोशीले भाषण सुनते थे। हालांकि हम स्मट्स के विचारों का समर्थन करते थे, फिर भी उनकी यात्रा ने काफी चर्चा को जन्म दिया। एक सत्र के दौरान, मेरे समकालीन न्याथी खोंगिसा, जो बेहद बुद्धिमान माने जाते थे, ने स्मट्स को नस्लवादी करार दिया। उन्होंने कहा कि हम खुद को भले ही "काले अंग्रेज" मानते हों, लेकिन अंग्रेजों ने हमें सताया भी और "सभ्य" बनाने की कोशिश भी की। उन्होंने कहा कि बोअर और अंग्रेजों के बीच चाहे जो भी आपसी दुश्मनी हो, दोनों श्वेत समूह काले खतरे का सामना करने के लिए एकजुट होंगे। खोंगिसा के विचारों ने हमें स्तब्ध कर दिया और वे खतरनाक रूप से कट्टरपंथी प्रतीत हुए। एक सहपाठी ने मुझे फुसफुसाकर बताया कि न्याथी अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के सदस्य थे, एक ऐसा संगठन जिसके बारे में मैंने थोड़ा-बहुत सुना था, लेकिन जिसके बारे में मुझे बहुत कम जानकारी थी। दक्षिण अफ्रीका द्वारा जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा के बाद, हर्ट्ज़ोग ने इस्तीफा दे दिया और स्मट्स प्रधानमंत्री बने।

फोर्ट हरे में अपने दूसरे वर्ष के दौरान, मैंने अपने मित्र पॉल महाबेन को ट्रांसकेई में मेरे साथ शीतकालीन अवकाश बिताने के लिए आमंत्रित किया। पॉल ब्लोमफोंटेन से थे और परिसर में काफी प्रसिद्ध थे क्योंकि उनके पिता, रेवरेंड ज़ैकियस महाबेन, दो बार अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष रह चुके थे। इस संगठन से उनका जुड़ाव, जिसके बारे में मुझे अभी भी बहुत कम जानकारी थी, ने उन्हें एक विद्रोही के रूप में ख्याति दिला दी थी।
एक दिन, छुट्टियों के दौरान, मैं और पॉल ट्रांसकेई की राजधानी उमटाटा गए, जहाँ उस समय कुछ पक्की सड़कें और कुछ सरकारी इमारतें थीं। हम डाकघर के

बाहर खड़े थे, तभी स्थानीय मजिस्ट्रेट, जो साठ वर्ष के आसपास के एक श्वेत व्यक्ति थे, पॉल के पास आए और उन्हें अंदर जाकर कुछ डाक टिकट खरीदने के लिए कहा। किसी भी श्वेत व्यक्ति का किसी भी अश्वेत व्यक्ति से कोई काम करवाने के लिए कहना आम बात थी। मजिस्ट्रेट ने पॉल को कुछ खुले पैसे देने की कोशिश की, लेकिन पॉल ने उन्हें नहीं लिया। मजिस्ट्रेट नाराज हो गए। उन्होंने गुस्से से लाल होते हुए कहा, "क्या तुम जानते हो कि मैं कौन हूँ?" महाबाने ने कहा, "यह जानना ज़रूरी नहीं है कि तुम कौन हो। मैं जानता हूँ कि तुम क्या हो।" मजिस्ट्रेट ने उनसे पूछा कि उनका मतलब क्या है। पॉल ने गुस्से से कहा, "मेरा मतलब है कि तुम एक बदमाश हो!" मजिस्ट्रेट भड़क उठे और बोले, "तुम्हें इसकी भारी कीमत चुकानी पड़ेगी!" और फिर चले गए।
मुझे पॉल का व्यवहार बेहद असहज लगा। हालांकि मैं उसकी हिम्मत की सराहना करता था, लेकिन साथ ही यह मुझे परेशान भी करता था। मजिस्ट्रेट मुझे अच्छी तरह जानता था और मुझे पता है कि अगर उसने पॉल की जगह मुझसे यह काम करने को कहा होता, तो मैं बस अपना काम पूरा करके भूल जाता। लेकिन पॉल ने जो किया, उसके लिए मैं उसकी प्रशंसा करता था, हालांकि मैं खुद ऐसा करने के लिए अभी तैयार नहीं था। मुझे धीरे-धीरे यह एहसास होने लगा था कि एक अश्वेत व्यक्ति को हर दिन अपने ऊपर होने वाले दर्जनों छोटे-मोटे अपमानों को सहने की ज़रूरत नहीं है।
छुट्टियों के बाद, नए साल की शुरुआत में मैं पूरी तरह तरोताज़ा होकर स्कूल लौटी। मैंने अपनी पढ़ाई पर पूरा ध्यान दिया और अक्टूबर में होने वाली परीक्षाओं पर नज़र रखी। एक साल में, मैंने कल्पना की कि मेरे पास भी प्रतिभाशाली गर्ट्रूड नटलाबथी की तरह बी.ए. की डिग्री होगी। मेरा मानना था कि विश्वविद्यालय की डिग्री न केवल सामुदायिक नेतृत्व का, बल्कि आर्थिक सफलता का भी द्वार है। प्रधानाचार्य डॉ. अलेक्जेंडर केर और प्रोफेसर जाबावु और मैथ्यूज ने हमें बार-बार बताया था कि फोर्ट हरे के स्नातक होने के नाते हम अफ्रीकी अभिजात वर्ग हैं। मुझे विश्वास था कि दुनिया मेरे कदमों में होगी।
स्नातक की उपाधि प्राप्त करके, मैं अंततः अपनी माँ को वह धन-दौलत और प्रतिष्ठा लौटा पाऊँगी जो मेरे पिता की मृत्यु के बाद उनसे छिन गई थी। मैं कुनु में उनके लिए एक आलीशान घर बनवाऊँगी, जिसमें बगीचा, आधुनिक साज-सज्जा और साज-सज्जा होगी। मैं उनका और अपनी बहनों का भरण-पोषण करूँगी ताकि वे उन

चीज़ों को खरीद सकें जिनसे वे इतने लंबे समय से वंचित थीं। यह मेरा सपना था और अब यह साकार होता हुआ प्रतीत हो रहा था।
उस वर्ष, मुझे फोर्ट हरे के सर्वोच्च छात्र संगठन, छात्र प्रतिनिधि परिषद (SRC) के लिए नामांकित किया गया था। उस समय मुझे यह नहीं पता था कि छात्र चुनाव से जुड़ी घटनाएँ ऐसी कठिनाइयाँ पैदा करेंगी जो मेरे जीवन की दिशा बदल देंगी। SRC चुनाव वर्ष के अंतिम सत्र में हुए, जब हम परीक्षा की तैयारियों में व्यस्त थे। फोर्ट हरे के संविधान के अनुसार, सभी छात्रों ने SRC के छह सदस्यों का चुनाव किया। चुनाव से कुछ समय पहले, सभी छात्रों की एक बैठक हुई जिसमें समस्याओं पर चर्चा की गई और अपनी शिकायतें व्यक्त की गईं। छात्रों ने सर्वसम्मति से महसूस किया कि फोर्ट हरे में प्रशासन का कामकाज संतोषजनक नहीं था और SRC की शक्तियों को बढ़ाने की आवश्यकता थी ताकि यह प्रशासन के लिए केवल एक कठपुतली बनकर न रह जाए। मैं दोनों प्रस्तावों से सहमत था, और जब अधिकांश छात्रों ने अधिकारियों द्वारा हमारी मांगों को स्वीकार न किए जाने तक चुनाव का बहिष्कार करने के लिए मतदान किया, तो मैंने भी उनका साथ दिया।
इस बैठक के तुरंत बाद, निर्धारित मतदान हुआ। अधिकांश छात्रों ने चुनाव का बहिष्कार किया, लेकिन पच्चीस छात्र, यानी कुल छात्र संख्या का लगभग छठा हिस्सा, उपस्थित हुए और उन्होंने छह प्रतिनिधियों को चुना, जिनमें से एक मैं भी था। उसी दिन, अनुपस्थिति में चुने गए छह प्रतिनिधियों ने इन घटनाओं पर चर्चा करने के लिए बैठक की। हमने सर्वसम्मति से यह निर्णय लिया कि हम बहिष्कार का समर्थन करते हैं और हमें अधिकांश छात्रों का समर्थन प्राप्त नहीं है, इसलिए हम अपना इस्तीफा दे रहे हैं। इसके बाद हमने एक पत्र तैयार किया, जिसे हमने डॉ. केर को सौंप दिया।
लेकिन डॉ. केर चतुर थे। उन्होंने हमारे इस्तीफे स्वीकार कर लिए और फिर घोषणा की कि अगले दिन भोजनालय में रात के खाने के समय नए चुनाव होंगे। इससे यह सुनिश्चित हो जाएगा कि सभी छात्र उपस्थित हों और यह बहाना न रहे कि एसआरसी को पूरे छात्र समुदाय का समर्थन प्राप्त नहीं है। उसी शाम प्रधानाचार्य के आदेशानुसार चुनाव हुए, लेकिन केवल उन्हीं पच्चीस लोगों ने मतदान किया और वही छह एसआरसी सदस्य फिर से चुने गए। ऐसा लग रहा था कि हम फिर से वहीं पहुँच गए हैं जहाँ से शुरू किया था।

लेकिन इस बार जब हम छह लोग अपनी स्थिति पर विचार करने के लिए मिले, तो मतदान का तरीका बिलकुल अलग था। मेरे पाँच साथियों का मानना था कि हमारा चुनाव एक ऐसी बैठक में हुआ था जिसमें सभी छात्र उपस्थित थे, इसलिए अब हम यह तर्क नहीं दे सकते कि हम छात्र समुदाय का प्रतिनिधित्व नहीं करते। उन पाँचों का मानना था कि हमें अब पद स्वीकार कर लेना चाहिए। मैंने इसका विरोध करते हुए कहा कि वास्तव में कुछ भी नहीं बदला था; हालाँकि सभी छात्र वहाँ मौजूद थे, उनमें से अधिकांश ने मतदान नहीं किया था, और यह कहना नैतिक रूप से गलत होगा कि हमें उनका विश्वास प्राप्त था। चूंकि हमारा प्रारंभिक लक्ष्य चुनाव का बहिष्कार करना था, जिस पर छात्र समुदाय का पूरा भरोसा था, इसलिए हमारा कर्तव्य था कि हम उस संकल्प का पालन करें और प्रधानाचार्य की किसी भी चाल से विचलित न हों। अपने साथियों को समझाने में असमर्थ होने पर, मैंने दूसरी बार इस्तीफा दे दिया, ऐसा करने वाला मैं उन छह लोगों में से अकेला था।
अगले दिन मुझे प्रधानाचार्य से मिलने के लिए बुलाया गया। डॉ. केर, एडिनबर्ग विश्वविद्यालय के स्नातक थे और फोर्ट हरे के लगभग संस्थापक थे। वे एक अत्यंत सम्मानित व्यक्ति थे। उन्होंने शांतिपूर्वक पिछले कुछ दिनों की घटनाओं की समीक्षा की और फिर मुझसे अपने इस्तीफे के निर्णय पर पुनर्विचार करने को कहा। मैंने उनसे कहा कि मैं ऐसा नहीं कर सकता। उन्होंने मुझे इस बारे में सोचने के लिए कहा और अगले दिन अपना अंतिम निर्णय देने को कहा। हालांकि, उन्होंने मुझे चेतावनी दी कि वे अपने छात्रों को गैरजिम्मेदाराना व्यवहार करने की अनुमति नहीं दे सकते और उन्होंने कहा कि यदि मैं इस्तीफा देने पर अड़ा रहा, तो उन्हें मुझे फोर्ट हरे से निष्कासित करना पड़ेगा।
उनकी बातों से मैं बुरी तरह हिल गया और पूरी रात बेचैन रहा। मुझे इससे पहले कभी इतना महत्वपूर्ण निर्णय नहीं लेना पड़ा था। उस शाम मैंने अपने मित्र और मार्गदर्शक के.डी. से सलाह ली, जिनका मानना था कि सैद्धांतिक रूप से मेरा इस्तीफा देना सही था और मुझे हार नहीं माननी चाहिए। मुझे लगता है कि उस समय मैं डॉ. केर से भी ज़्यादा के.डी. से डरता था। मैंने के.डी. को धन्यवाद दिया और अपने कमरे में लौट आया।
हालांकि मुझे लगता था कि मैं जो कर रहा था वह नैतिक रूप से सही था, फिर भी मुझे इस बात का संदेह था कि क्या यह सही रास्ता था। क्या मैं एक ऐसे अमूर्त

नैतिक सिद्धांत के लिए अपने अकादमिक करियर को बर्बाद कर रहा था जिसका कोई खास महत्व नहीं था? मुझे यह बात पचाना मुश्किल लग रहा था कि मैं अपने स्वार्थ के लिए छात्रों के प्रति अपने कर्तव्य का त्याग कर दूँ। मैंने एक रुख अपनाया था, और मैं अपने साथी छात्रों की नज़र में धोखेबाज नहीं दिखना चाहता था। साथ ही, मैं फोर्ट हरे में अपना करियर भी बर्बाद नहीं करना चाहता था।
अगली सुबह जब मैं डॉ. केर के कार्यालय पहुँचा तो मैं दुविधा में था। जब उन्होंने मुझसे पूछा कि क्या मैंने कोई निर्णय ले लिया है, तभी मैंने अपना मन पक्का किया। मैंने उन्हें बताया कि मैंने निर्णय ले लिया है और मैं अपनी अंतरात्मा की आवाज़ के अनुसार एसआरसी में सेवा नहीं दे सकता। डॉ. केर मेरे जवाब से थोड़ा हैरान दिखे। उन्होंने कुछ पल सोचने के बाद कहा, "ठीक है। यह आपका निर्णय है, बेशक। लेकिन मैंने भी इस मामले पर विचार किया है, और मैं आपको निम्नलिखित प्रस्ताव देता हूँ: आप अगले साल फोर्ट हरे लौट सकते हैं, बशर्ते आप एसआरसी में शामिल हो जाएँ। श्री मंडेला, आपके पास इस पर विचार करने के लिए पूरी गर्मी का समय है।"
एक तरह से, मैं अपने जवाब से उतना ही हैरान था जितना डॉ. केर। मुझे पता था कि फोर्ट हेयर छोड़ना मेरे लिए मूर्खतापूर्ण था, लेकिन उस समय जब मुझे समझौता करना ही था, मैं ऐसा नहीं कर सका। मेरे अंदर कुछ ऐसा था जो मुझे ऐसा करने नहीं दे रहा था। हालांकि मैं डॉ. केर के दृष्टिकोण और मुझे एक और मौका देने की उनकी इच्छा की सराहना करता था, लेकिन मेरे भाग्य पर उनके पूर्ण नियंत्रण से मुझे चिढ़ थी। अगर मैं चाहता तो मुझे एसआरसी से इस्तीफा देने का पूरा अधिकार था। यह अन्याय मुझे बहुत खटक रहा था, और उस क्षण मैंने डॉ. केर को एक परोपकारी से ज़्यादा एक क्रूर तानाशाह के रूप में देखा। जब मैंने साल के अंत में फोर्ट हेयर छोड़ा, तो मैं एक अप्रिय अनिश्चितता की स्थिति में था।

8

आम तौर पर, जब मैं म्क़्हेकेज़वेनी लौटता था, तो मुझे सुकून और संतुष्टि का एहसास होता था। लेकिन इस बार ऐसा नहीं था। परीक्षा पास करके घर लौटने पर मैंने रीजेंट को सारी बात बताई। वह बहुत क्रोधित हुए और मेरे कार्यों के पीछे का कारण उन्हें समझ नहीं आया। उन्हें यह बिल्कुल बेतुका लगा। मेरी पूरी बात सुने बिना ही उन्होंने मुझे साफ-साफ कह दिया कि मैं प्रधानाचार्य के निर्देशों का पालन करूं और पतझड़ में फोर्ट हरे लौट जाऊं। उनके लहजे में बहस करने की कोई गुंजाइश नहीं थी। अपने संरक्षक से बहस करना व्यर्थ और अपमानजनक होता। मैंने इस मामले को कुछ समय के लिए शांत रखने का फैसला किया।
जस्टिस भी म्क्वेकेज़वेनी लौट आया था और हम एक-दूसरे को देखकर बेहद खुश हुए। जस्टिस और मैं चाहे कितने भी समय तक अलग रहे हों, हमारे बीच का भाईचारा तुरंत फिर से जीवंत हो उठता था। जस्टिस ने एक साल पहले ही स्कूल छोड़ दिया था और केप टाउन में रह रहा था।
कुछ ही दिनों में, मैं घर पर अपनी पुरानी दिनचर्या में लौट आया। मैं शासक के मामलों की देखरेख करता था, जिसमें उनके पशुधन और अन्य सरदारों के साथ उनके संबंध शामिल थे। मैंने फोर्ट हरे की स्थिति पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, लेकिन जीवन में ऐसे लोग होते हैं जो दुविधा में रहते हैं और उन्हें निर्णय लेने के लिए मजबूर होना पड़ता है। यह एक बिल्कुल अलग मामला था जिसका मेरी पढ़ाई से कोई लेना-देना नहीं था, जिसने मुझे यह कदम उठाने पर मजबूर किया।
घर लौटने के कुछ सप्ताह बाद, रीजेंट ने मुझे और जस्टिस को एक बैठक में बुलाया। उन्होंने अत्यंत गंभीर स्वर में कहा, “मेरे बच्चों, मुझे डर है कि मैं इस दुनिया में ज्यादा दिन नहीं रहूँगा, और पूर्वजों की भूमि पर जाने से पहले, यह मेरा कर्तव्य है कि मैं अपने दोनों बेटों का विधिवत विवाह करवाऊँ। इसलिए मैंने तुम दोनों के लिए विवाह निर्धारित कर दिए हैं।”
इस घोषणा से हम दोनों चौंक गए, और जस्टिस और मैंने सदमे और बेबसी के मिले- जुले भाव से एक-दूसरे को देखा। रीजेंट ने बताया कि दोनों लड़कियाँ बहुत अच्छे परिवारों से थीं। जस्टिस का विवाह एक प्रतिष्ठित थेम्बू रईस खलीपा

की बेटी से होना था, और रोलिहलाहला, जैसा कि रीजेंट मुझे हमेशा बुलाते थे, का विवाह स्थानीय थेम्बू पुजारी की बेटी से होना था। उन्होंने कहा कि विवाह तुरंत संपन्न होने थे। लोबोला, यानी दहेज, आमतौर पर दूल्हे के पिता द्वारा पशुओं के रूप में दिया जाता है, और जस्टिस के मामले में यह समुदाय द्वारा और मेरे मामले में स्वयं रीजेंट द्वारा दिया जाएगा।
मैंने और जस्टिस ने ज्यादा कुछ नहीं कहा। रीजेंट से सवाल करना हमारा काम नहीं था, और जहाँ तक उनका सवाल था, मामला सुलझ चुका था। रीजेंट ने किसी भी बहस को बर्दाश्त नहीं किया: दुल्हन का चयन हो चुका था और लोबोला (शादी का दहेज) भी अदा हो चुका था। बात पक्की थी।
मैं और जस्टिस इंटरव्यू से सिर झुकाए, स्तब्ध और निराश होकर बाहर निकले। रीजेंट थेम्बू कानून और रीति-रिवाजों के अनुसार कार्य कर रहे थे, और उनके इरादों पर कोई संदेह नहीं किया जा सकता था: वे चाहते थे कि उनके जीवनकाल में ही हमारा जीवन व्यवस्थित हो जाए। हम हमेशा से जानते थे कि रीजेंट को हमारे लिए विवाह निर्धारित करने का अधिकार है, लेकिन अब यह केवल एक काल्पनिक संभावना नहीं रह गई थी। दुल्हनें कोई कल्पना नहीं थीं, बल्कि वास्तविक महिलाएं थीं जिन्हें हम जानते थे।
उस युवती के परिवार के प्रति पूरा सम्मान रखते हुए, अगर मैं कहूँ कि शासक ने मेरे लिए जिस लड़की को चुना था, वह मेरी सपनों की दुल्हन थी, तो यह बेईमानी होगी। उसका परिवार प्रतिष्ठित और सम्मानित था और वह एक गरिमापूर्ण ढंग से आकर्षक थी, लेकिन मुझे खेद है कि यह युवती लंबे समय से न्याय के पुत्र से प्रेम करती थी। शासक को इस बात का पता नहीं होगा, क्योंकि माता-पिता शायद ही कभी अपने बच्चों के प्रेम संबंधों के बारे में जानते हैं। मेरी होने वाली जीवनसाथी निस्संदेह मुझसे उतनी ही बेताब थी जितनी मैं उससे।
उस समय मैं सामाजिक रूप से राजनीतिक रूप से कहीं अधिक उन्नत था। हालाँकि मैं श्वेत लोगों की राजनीतिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने के बारे में सोचता भी नहीं था, लेकिन अपने ही लोगों की सामाजिक व्यवस्था के विरुद्ध विद्रोह करने के लिए पूरी तरह तैयार था। विडंबना यह है कि इसके लिए परोक्ष रूप से स्वयं शासक ही जिम्मेदार था, क्योंकि उन्हीं की शिक्षा के कारण मैंने ऐसी पारंपरिक रीति-रिवाजों को अस्वीकार कर दिया था। मैंने वर्षों तक महिलाओं के साथ कॉलेज और विश्वविद्यालय में पढ़ाई की थी और मेरे

कुछ प्रेम संबंध भी रहे थे। मैं एक रोमांटिक व्यक्ति था और मैं किसी को भी, यहाँ तक कि शासक को भी, मेरे लिए दुल्हन चुनने देने के लिए तैयार नहीं था। मैंने रानी, जो रीजेंट की पत्नी थीं, से मिलने का समय लिया और अपनी बात उनके सामने रखी। मैं उन्हें यह नहीं बता सका कि मैं किसी भी हालत में रीजेंट द्वारा मेरे लिए दुल्हन का इंतज़ाम नहीं चाहता, क्योंकि वे स्वाभाविक रूप से सहानुभूति नहीं दिखातीं। इसके बजाय, मैंने एक वैकल्पिक योजना बनाई और उनसे कहा कि मैं रानी की रिश्तेदार लड़की से शादी करना पसंद करूंगा, जो मुझे भावी जीवनसाथी के रूप में अच्छी लगती थी। यह युवती वास्तव में बहुत आकर्षक थी, लेकिन मुझे नहीं पता था कि वह मेरे बारे में क्या सोचती है। मैंने कहा कि मैं अपनी पढ़ाई पूरी करते ही उससे शादी कर लूंगा। यह आधा बहाना था, लेकिन रीजेंट की योजना से बेहतर विकल्प था। रानी ने इस मामले में मेरा साथ दिया, लेकिन रीजेंट को मनाना संभव नहीं था। उन्होंने अपना फैसला कर लिया था और वे इसे बदलने वाले नहीं थे।
मुझे ऐसा लगा जैसे उसने मेरे सामने कोई विकल्प ही नहीं छोड़ा हो। मैं इस शादी को नहीं निभा सकती थी, जिसे मैं अनुचित और नासमझी भरा मानती थी। साथ ही, मुझे यह भी विश्वास था कि अगर मैंने उसकी योजना को अस्वीकार कर दिया तो मैं अब रीजेंट के मार्गदर्शन में नहीं रह पाऊंगी। न्याय ने भी यही माना, और हम दोनों ने फैसला किया कि अब एकमात्र विकल्प भाग जाना ही बचा है, और भागने के लिए एकमात्र जगह जोहान्सबर्ग ही थी।
अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास होता है कि हमने अपने पास मौजूद सभी विकल्पों का इस्तेमाल नहीं किया। मैं मध्यस्थों के माध्यम से रीजेंट से इस मामले पर चर्चा करने की कोशिश कर सकता था और शायद अपने कबीले और परिवार के दायरे में रहकर कोई समझौता कर सकता था। मैं रीजेंट के चचेरे भाई, चीफ ज़िलिंडलोवु से भी अपील कर सकता था, जो म्कहेकेज़वेनी के दरबार के सबसे प्रबुद्ध और प्रभावशाली सरदारों में से एक थे। लेकिन मैं युवा और अधीर था, और इंतज़ार करने में मुझे कोई फायदा नहीं दिखता था। भाग जाना ही एकमात्र रास्ता लग रहा था।
हमने अपनी योजना को गुप्त रखा, जब तक कि हम उसके विवरण पर काम नहीं कर रहे थे। सबसे पहले, हमें एक अवसर की आवश्यकता थी। शासक का मानना था कि जस्टिस और मैं एक-दूसरे के सबसे बुरे स्वभाव को उजागर करते हैं, या कम से कम जस्टिस के रोमांच और शरारतों के शौक का मेरे अधिक रूढ़िवादी स्वभाव पर

प्रभाव पड़ता है। परिणामस्वरूप, उन्होंने हमें यथासंभव अलग रखने का भरसक प्रयास किया। जब शासक यात्रा पर होते थे, तो वे आम तौर पर हममें से किसी एक को अपने साथ चलने के लिए कहते थे ताकि उनकी अनुपस्थिति में हम अकेले न रहें। अक्सर वे जस्टिस को अपने साथ ले जाते थे, क्योंकि वे चाहते थे कि मैं उनके मामलों की देखभाल के लिए म्क़्हेकेज़वेनी में रहूँ। लेकिन हमें पता चला कि शासक हम दोनों के बिना ट्रांसकेई की विधान सभा, बुंगा के एक सत्र में भाग लेने के लिए पूरे एक सप्ताह के लिए जा रहे हैं, और हमने सोचा कि यह चुपके से निकल जाने का आदर्श समय है। हमने तय किया कि शासक के बुंगा के लिए रवाना होने के तुरंत बाद हम जोहान्सबर्ग के लिए निकल जाएँगे।
मेरे पास थोड़े कपड़े थे और हमने जैसे-तैसे उन्हें एक सूटकेस में समेट लिया। सोमवार को सुबह-सुबह रीजेंट निकल गए और देर सुबह तक हम जाने के लिए तैयार हो गए। लेकिन जैसे ही हम निकलने की तैयारी कर रहे थे, रीजेंट अचानक लौट आए। हमने उनकी कार को आते देखा और हम दौड़कर बगीचे में गए और मक्के के पौधों के बीच छिप गए। रीजेंट घर में आए और उनका पहला सवाल था, "ये लड़के कहाँ हैं?" किसी ने जवाब दिया, "ओह, वे यहीं कहीं हैं।" लेकिन रीजेंट को शक हुआ और वे इस स्पष्टीकरण से संतुष्ट नहीं हुए। उन्होंने कहा कि वे इसलिए लौटे हैं क्योंकि वे एप्सम सॉल्ट लेना भूल गए थे। उन्होंने थोड़ा इधर-उधर देखा और फिर संतुष्ट हो गए। मुझे एहसास हुआ कि उन्हें शायद किसी तरह का पूर्वाभास हो गया था क्योंकि वे शहर से आसानी से एप्सम सॉल्ट खरीद सकते थे। जब उनकी कार पहाड़ियों के पीछे ओझल हो गई, तो हम अपने रास्ते पर निकल पड़े।
हमारे पास लगभग न के बराबर पैसे थे, लेकिन उस सुबह हम एक स्थानीय व्यापारी से मिलने गए और उससे राजमहल के दो पुरस्कार विजेता बैल बेचने का सौदा किया। व्यापारी ने सोचा कि हम राजमहल के कहने पर जानवर बेच रहे हैं, और हमने उसे कुछ नहीं कहा। उसने हमें बहुत अच्छी कीमत दी, और उस पैसे से हमने एक कार किराए पर ली जो हमें स्थानीय रेलवे स्टेशन तक ले गई जहाँ से हम जोहान्सबर्ग जाने वाली ट्रेन पकड़ेंगे।
सब कुछ ठीक-ठाक चल रहा था, लेकिन हमें पता नहीं था कि रीजेंट स्थानीय रेलवे स्टेशन गए थे और मैनेजर को निर्देश दिया था कि अगर हमारे हुलिए से मिलते- जुलते दो लड़के जोहान्सबर्ग के लिए टिकट खरीदने आएं, तो मैनेजर उन्हें टिकट न बेचे क्योंकि हमें ट्रांसकेई छोड़ना नहीं था। स्टेशन पहुंचते ही

हमने पाया कि मैनेजर हमें टिकट नहीं बेच रहा था। हमने उससे पूछा क्यों, तो उसने कहा, "तुम्हारे पिता यहां आए थे और उन्होंने बताया कि तुम भागने की कोशिश कर रहे हो।" यह सुनकर हम दंग रह गए और तुरंत अपनी किराए की कार में वापस भागे और मैनेजर को अगले स्टेशन जाने के लिए कहा। वह स्टेशन लगभग पचास मील दूर था और हमें वहां पहुंचने में एक घंटे से ज़्यादा का समय लग गया। हम किसी तरह ट्रेन पकड़ने में कामयाब हो गए, लेकिन वह केवल क्वीन्सटाउन तक ही जाती थी। 1940 के दशक में, अफ़्रीकी लोगों के लिए यात्रा करना एक जटिल प्रक्रिया थी। सोलह वर्ष से अधिक आयु के सभी अफ़्रीकी लोगों को मूलनिवासी मामलों के विभाग द्वारा जारी किया गया "नेटिव पास" रखना अनिवार्य था और उन्हें किसी भी श्वेत पुलिसकर्मी, सरकारी कर्मचारी या नियोक्ता को वह पास दिखाना पड़ता था। ऐसा न करने पर गिरफ़्तारी, मुक़दमा, कारावास या जुर्माना हो सकता था। पास में धारक का पता, उसका मुखिया कौन था, और क्या उसने वार्षिक मतदान कर (जो केवल अफ़्रीकी लोगों पर लगाया जाता था) का भुगतान किया था, यह जानकारी दी जाती थी। बाद में, पास एक पुस्तिका या "संदर्भ पुस्तिका" के रूप में जारी किया जाने लगा, जिसमें विस्तृत जानकारी होती थी और जिस पर नियोक्ता को हर महीने हस्ताक्षर करने होते थे।
मेरे और जस्टिस के पास सभी आवश्यक पास थे, लेकिन किसी अफ्रीकी नागरिक को अपने अधिकार क्षेत्र से बाहर निकलकर किसी अन्य अधिकार क्षेत्र में काम करने या रहने के लिए यात्रा दस्तावेज़, परमिट और नियोक्ता या हमारे मामले में, अभिभावक का पत्र चाहिए होता था - इनमें से कोई भी हमारे पास नहीं था। यहां तक कि सबसे अच्छे समय में भी, जब आपके पास ये सभी दस्तावेज़ होते थे, तब भी एक पुलिस अधिकारी आपको परेशान कर सकता था क्योंकि किसी दस्तावेज़ में हस्ताक्षर गायब थे या तारीख गलत थी। इनमें से किसी का भी न होना बेहद जोखिम भरा था। हमारी योजना क्वीन्सटाउन में उतरने, एक रिश्तेदार के घर जाने और फिर आवश्यक दस्तावेज़ों की व्यवस्था करने की थी। यह भी एक नासमझी भरी योजना थी, लेकिन हमारी किस्मत अच्छी थी क्योंकि क्वीन्सटाउन के उस घर में हमारी मुलाकात संयोगवश चीफ मपोंडोम्बिनी से हुई, जो रीजेंट के भाई थे और जस्टिस और मुझे पसंद करते थे।
चीफ मपोंडोम्बिनी ने हमारा गर्मजोशी से स्वागत किया और हमने उन्हें बताया कि हमें स्थानीय मजिस्ट्रेट से आवश्यक यात्रा दस्तावेज़ चाहिए। हमने झूठ बोला कि हमें उनकी ज़रूरत क्यों है, और कहा कि हम रीजेंट के लिए एक काम से

आए हैं। चीफ मपोंडोम्बिनी मूलनिवासी मामलों के विभाग से सेवानिवृत्त दुभाषिया थे और मुख्य मजिस्ट्रेट को अच्छी तरह जानते थे। उन्हें हमारी बात पर शक करने का कोई कारण नहीं था और उन्होंने न केवल हमें मजिस्ट्रेट के पास पहुँचाया, बल्कि हमारे लिए गवाही भी दी और हमारी परेशानी समझाई। चीफ की बात सुनने के बाद, मजिस्ट्रेट ने तुरंत आवश्यक यात्रा दस्तावेज़ तैयार किए और उन पर आधिकारिक मुहर लगा दी। जस्टिस और मैंने एक-दूसरे को देखा और मिलीभगत से मुस्कुराए। लेकिन जैसे ही मजिस्ट्रेट हमें दस्तावेज़ सौंप रहे थे, उन्हें कुछ याद आया और उन्होंने कहा कि शिष्टाचार के तौर पर उन्हें उमटाटा के मुख्य मजिस्ट्रेट को सूचित करना चाहिए, जिनके अधिकार क्षेत्र में हम आते थे। इससे हम असहज हो गए, लेकिन हम उनके कार्यालय में बैठे रहे। मजिस्ट्रेट ने फोन उठाया और उमटाटा में अपने सहयोगी से संपर्क किया। संयोगवश, उस समय रीजेंट उमटाटा के मुख्य मजिस्ट्रेट से मिलने आए हुए थे और उन्हीं के कार्यालय में मौजूद थे।
जब हमारे मजिस्ट्रेट उमटाटा के मुख्य मजिस्ट्रेट को हमारी स्थिति समझा रहे थे, तो उन्होंने कुछ इस तरह कहा, “अरे, उनके पिता तो यहीं हैं,” और फिर उन्होंने रीजेंट को फोन पर बात करा दी। जब मजिस्ट्रेट ने रीजेंट को हमारी बात बताई, तो रीजेंट भड़क उठे। “उन लड़कों को गिरफ्तार करो!” वे इतनी जोर से चिल्लाए कि रिसीवर से उनकी आवाज सुनाई दी। “उन्हें गिरफ्तार करो और तुरंत यहाँ वापस लाओ!” मुख्य मजिस्ट्रेट ने फोन रख दिया। उन्होंने हमें गुस्से से देखा। “तुम लड़के चोर और झूठे हो,” उन्होंने हमसे कहा। “तुमने मेरी मदद का फायदा उठाया और फिर मुझे धोखा दिया। अब मैं तुम्हें गिरफ्तार करवाऊंगा।”
मैंने तुरंत अपना बचाव किया। फोर्ट हरे में अपनी पढ़ाई के दौरान मुझे कानून की थोड़ी बहुत जानकारी थी और मैंने उसका इस्तेमाल किया। मैंने कहा कि हमने उससे झूठ बोला था, यह सच था। लेकिन हमने कोई अपराध नहीं किया था और न ही किसी कानून का उल्लंघन किया था, और हमें सिर्फ एक मुखिया की सिफारिश पर गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था, भले ही वह हमारा पिता ही क्यों न हो। मजिस्ट्रेट पीछे हट गया और उसने हमें गिरफ्तार नहीं किया, बल्कि हमें अपने कार्यालय से चले जाने और फिर कभी उसके दरवाजे पर कदम न रखने के लिए कहा। चीफ मपोंडोम्बिनी भी नाराज़ थे और हमें हमारे हाल पर छोड़कर चले गए।
जस्टिस को याद आया कि क्वीन्सटाउन में उनका एक दोस्त था जिसका नाम सिडनी

न्क्सू था और वह एक श्वेत वकील के दफ्तर में काम करता था। हम उससे मिलने गए, अपनी स्थिति बताई और उसने कहा कि जिस वकील के लिए वह काम करता है उसकी माँ जोहान्सबर्ग जा रही है और वह देखेगा कि क्या वह हमें लिफ्ट दे सकती है। उसने कहा कि अगर हम पंद्रह पाउंड स्टर्लिंग का शुल्क दें तो उसकी माँ हमें लिफ्ट दे देगी। यह बहुत बड़ी रकम थी, ट्रेन टिकट की कीमत से कहीं ज़्यादा। इस शुल्क से हमारी लगभग सारी बचत खत्म हो गई, लेकिन हमारे पास कोई चारा नहीं था। हमने जोहान्सबर्ग पहुँचने के बाद अपने पास पर मुहर लगवाने और सही यात्रा दस्तावेज़ बनवाने का जोखिम उठाने का फैसला किया।
हम अगली सुबह जल्दी निकल गए। उन दिनों, अगर कोई श्वेत व्यक्ति गाड़ी चला रहा होता था, तो अश्वेतों का पीछे की सीट पर बैठना आम बात थी। हम दोनों भी उसी तरह बैठे, जस्टिस उस महिला के ठीक पीछे बैठा था। जस्टिस एक मिलनसार और उत्साही व्यक्ति था और उसने तुरंत मुझसे बातचीत शुरू कर दी। इससे वह बूढ़ी औरत बेहद असहज हो गई। जाहिर है, उसने कभी किसी ऐसे अश्वेत को नहीं देखा था जो श्वेतों के सामने बेझिझक रहता हो। कुछ ही मील चलने के बाद, उसने जस्टिस से कहा कि वह मुझसे सीट बदल ले, ताकि वह उस पर नज़र रख सके, और बाकी के सफर में वह उस पर पैनी नजर रखती रही। लेकिन कुछ देर बाद, जस्टिस के आकर्षण का उस पर असर हुआ और वह कभी-कभी उसकी बातों पर हंसने लगी।

उस शाम करीब दस बजे, दूर से हमें जगमगाती रोशनी का एक जाल दिखाई दिया, जो चारों दिशाओं में फैला हुआ प्रतीत हो रहा था। मेरे लिए बिजली हमेशा से एक नई चीज़ और विलासिता रही थी, और यहाँ बिजली का एक विशाल परिदृश्य था, रोशनी का शहर। मैं उस शहर को देखने के लिए बेहद उत्साहित था जिसके बारे में मैंने बचपन से सुना था। जोहान्सबर्ग को हमेशा सपनों के शहर के रूप में चित्रित किया गया था, एक ऐसी जगह जहाँ कोई गरीब किसान से अमीर और संभ्रांत बन सकता है, खतरों और अवसरों का शहर। मुझे बानाबाखे की वे कहानियाँ याद आईं जो उन्होंने हमें खतना स्कूल में सुनाई थीं, इतनी ऊँची इमारतों की कहानियाँ जिनकी चोटियाँ दिखाई नहीं देती थीं, ऐसी भाषाओं में बात करने वाले लोगों की भीड़ की कहानियाँ जिन्हें आपने कभी नहीं सुना था, चमकीली मोटरगाड़ियों,

खूबसूरत महिलाओं और दिलेर गैंगस्टरों की कहानियाँ। यह ईगोली था, सोने का शहर, जहाँ मैं जल्द ही अपना घर बनाने वाला था।
शहर के बाहरी इलाके में यातायात और भी घना हो गया। मैंने एक साथ सड़क पर इतनी गाड़ियाँ पहले कभी नहीं देखी थीं - उमटाटा में भी कभी-कभार ही गाड़ियाँ दिखती थीं, और यहाँ हज़ारों गाड़ियाँ थीं। हम शहर के बीच से नहीं, बल्कि उसके चारों ओर से घूम रहे थे, लेकिन मुझे ऊँची-ऊँची, चौकोर इमारतों की आकृतियाँ दिखाई दे रही थीं, जो रात के अँधेरे आसमान के सामने और भी गहरी लग रही थीं। मैंने सड़क के किनारे लगे बड़े-बड़े बिलबोर्ड देखे, जिन पर सिगरेट, मिठाई और बीयर के विज्ञापन थे। सब कुछ बेहद आकर्षक लग रहा था। जल्द ही हम आलीशान मकानों वाले एक इलाके में पहुँच गए, जिनमें से सबसे छोटा भी शासक के महल से बड़ा था, भव्य अग्रभाग और ऊँचे लोहे के द्वारों के साथ। यह वही उपनगर था जहाँ उस बुढ़िया की बेटी रहती थी, और हम इनमें से एक खूबसूरत घर के लंबे प्रवेश द्वार में पहुँचे। जस्टिस और मुझे नौकरों के कमरे में भेजा गया, जहाँ हमें रात बितानी थी। हमने बुढ़िया को धन्यवाद दिया और फिर ज़मीन पर लेटकर सो गए। लेकिन जोहान्सबर्ग की संभावनाएँ मेरे लिए इतनी रोमांचक थीं कि मुझे ऐसा लगा जैसे मैं उस रात किसी सुंदर पंखों वाले बिस्तर पर सोया हूँ। संभावनाएं अनंत लग रही थीं। मैं एक लंबी यात्रा के अंत तक पहुँच गया था, जो वास्तव में एक बहुत लंबी और कठिन यात्रा की शुरुआत थी, जो मुझे उन तरीकों से परखेगी जिनकी मैंने उस समय कल्पना भी नहीं की थी।

भाग दो

जोहानसबर्ग

9

भोर हो चुकी थी जब हम क्राउन माइंस के दफ्तरों में पहुँचे, जो एक विशाल पहाड़ी के पठार पर स्थित थे और जहाँ से अभी भी अँधेरे में डूबा महानगर दिखाई देता था। जोहान्सबर्ग शहर 1886 में विटवाटरसैंड में सोने की खोज के बाद बसा था, और क्राउन माइंस इस स्वर्ण नगर की सबसे बड़ी सोने की खान थी। मुझे उमटाटा के सरकारी दफ्तरों जैसी भव्य इमारत देखने की उम्मीद थी, लेकिन क्राउन माइंस के दफ्तर खदान के मुहाने पर जंग लगी टिन की झोपड़ियाँ थीं। सोने की खान में कोई जादू नहीं होता। बंजर और गड्ढों से भरी, चारों ओर धूल ही धूल, पेड़-पौधे नहीं, चारों तरफ से बाड़ लगी हुई, सोने की खान किसी युद्धग्रस्त मैदान जैसी दिखती है। शोर हर तरफ फैला हुआ था: शाफ्ट-लिफ्टों की कर्कश आवाज, पावर ड्रिलों की खड़खड़ाहट, दूर से आती डायनामाइट की गड़गड़ाहट और चिल्लाते हुए आदेश। जिधर भी नजर डाली, धूल से सने ओवरऑल पहने काले आदमी थके-हारे और झुके हुए दिखाई दिए। वे उस जगह पर बनी उजाड़, एकलिंगी बैरकों में रहते थे, जिनमें सैकड़ों कंक्रीट के पलंग एक-दूसरे से कुछ इंच की दूरी पर अलग-अलग रखे थे।
विटवाटरसैंड में सोने की खुदाई महंगी थी क्योंकि अयस्क निम्न गुणवत्ता का था और धरती के काफी नीचे दबा हुआ था। हजारों अफ्रीकी मजदूरों की सस्ती मजदूरी, जो कम वेतन पर बिना किसी अधिकार के लंबे समय तक काम करते थे, ने ही सोने की खुदाई को खनन कंपनियों के लिए लाभदायक बनाया था। ये कंपनियां श्वेत स्वामित्व वाली थीं और अफ्रीकी लोगों के शोषण से इतनी समृद्ध हो गईं कि उनकी दौलत बेतहाशा बढ़ गई। मैंने पहले कभी ऐसा उद्यम, ऐसी विशाल मशीनें, ऐसा सुव्यवस्थित संगठन और इतनी कठिन मेहनत नहीं देखी थी। दक्षिण अफ्रीकी पूंजीवाद को काम करते हुए देखना मेरा पहला अनुभव था और मैं समझ गया था कि मुझे एक नई तरह की शिक्षा मिलने वाली है।
हम सीधे मुखिया (इंदुना) के पास गए। उनका नाम पिलिसो था, एक सख्त मिजाज बूढ़ा आदमी जिसने जीवन के सबसे क्रूर दौर देखे थे। पिलिसो जस्टिस के बारे में जानते थे, क्योंकि रीजेंट ने महीनों पहले एक पत्र भेजकर उनके लिए एक क्लर्क की नौकरी की व्यवस्था की थी, जो खदान परिसर में सबसे प्रतिष्ठित और

सम्माननीय नौकरी थी। हालांकि, मैं उनके लिए अनजान था। जस्टिस ने बताया कि मैं उनका भाई हूँ।
“मुझे तो सिर्फ जस्टिस की ही उम्मीद थी,” पिलिसो ने जवाब दिया। “तुम्हारे पिता के पत्र में भाई का कोई ज़िक्र नहीं है।” उसने मुझे संदेह भरी नज़रों से देखा। लेकिन जस्टिस ने उससे विनती करते हुए कहा कि यह महज़ एक भूल थी, और रीजेंट ने मेरे बारे में पहले ही एक पत्र भेज दिया था। पिलिसो के सख्त बाहरी रूप के पीछे सहानुभूति छिपी थी, और उसने मुझे खान पुलिसकर्मी के तौर पर रख लिया, यह कहते हुए कि अगर मैं अच्छा काम करूँ, तो वह मुझे तीन महीने में क्लर्क का पद दे देगा।
क्राउन माइंस में रीजेंट की बात का बहुत महत्व था। दक्षिण अफ्रीका के सभी सरदारों के मामले में यही सच था। खनन अधिकारी ग्रामीण इलाकों से मज़दूरों की भर्ती के लिए उत्सुक थे, और सरदारों के पास उन लोगों पर अधिकार था जिनकी उन्हें ज़रूरत थी। वे चाहते थे कि सरदार अपनी प्रजा को रीफ आने के लिए प्रोत्साहित करें। सरदारों का बहुत सम्मान किया जाता था; जब भी वे आते थे, खनन कंपनियां उनके लिए विशेष आवास की व्यवस्था करती थीं। रीजेंट का एक पत्र ही किसी व्यक्ति को अच्छी नौकरी दिलाने के लिए काफी था, और जस्टिस और मुझे हमारे संबंध के कारण विशेष ध्यान दिया गया। हमें मुफ्त राशन, सोने की जगह और एक छोटा वेतन दिया जाना था। उस पहली रात हम बैरक में नहीं रुके। शुरुआती कुछ दिनों के लिए, पिलिसो ने रीजेंट के प्रति शिष्टाचारवश जस्टिस और मुझे अपने साथ रहने के लिए आमंत्रित किया।
कई खनिक, विशेषकर थेम्बुलैंड के लोग, जस्टिस को मुखिया मानते थे और खान में मुखिया के आने पर नकद उपहार देकर उनका स्वागत करते थे। इनमें से अधिकांश लोग एक ही छात्रावास में रहते थे; खनिकों को आमतौर पर जनजाति के अनुसार ठहराया जाता था। खनन कंपनियाँ इस तरह के अलगाव को प्राथमिकता देती थीं क्योंकि इससे विभिन्न जातीय समूहों को किसी साझा शिकायत पर एकजुट होने से रोका जा सकता था और मुखियाओं की शक्ति को मजबूती मिलती थी। इस अलगाव के कारण अक्सर विभिन्न जातीय समूहों और कबीलों के बीच गुटबाजी की लड़ाई होती थी, जिसे रोकने के लिए कंपनियाँ कोई ठोस कदम नहीं उठाती थीं।
जस्टिस ने अपनी लूट का कुछ हिस्सा मेरे साथ बाँटा और मुझे बोनस के तौर पर कुछ अतिरिक्त पैसे भी दिए। शुरुआती कुछ दिनों तक, जब मेरी जेबें नई दौलत से खनक रही थीं, मुझे लगा जैसे मैं करोड़पति बन गया हूँ। मुझे लगने लगा था कि

मैं भाग्य का धनी हूँ, मुझ पर किस्मत मेहरबान है, और अगर मैंने कॉलेज में पढ़ाई करके अपना कीमती समय बर्बाद न किया होता, तो अब तक मैं एक अमीर आदमी बन चुका होता। एक बार फिर, मैं यह नहीं समझ पाया कि भाग्य मेरे चारों ओर जाल बिछाने में व्यस्त था।
मैंने तुरंत रात्रि चौकीदार के रूप में काम शुरू कर दिया। मुझे एक वर्दी, नए जूते, हेलमेट, टॉर्च, सीटी और एक डंडा दिया गया, जो एक लंबी लकड़ी की छड़ी होती है जिसके एक सिरे पर लकड़ी का भारी गोला लगा होता है। काम सीधा- सादा था: मैं परिसर के प्रवेश द्वार पर उस बोर्ड के पास खड़ा रहता था जिस पर लिखा था, "सावधान: यहाँ से आदिवासी गुजर रहे हैं," और अंदर आने-जाने वाले सभी लोगों के पहचान पत्र की जाँच करता था। शुरुआती कुछ रातों में, मैंने परिसर के मैदान में बिना किसी घटना के गश्त लगाई। एक शाम मैंने एक नशे में धुत खनिक को रोका, लेकिन उसने विनम्रता से अपना पास दिखाया और अपने छात्रावास में लौट गया।
अपनी सफलता से उत्साहित होकर, जस्टिस और मैंने अपने एक परिचित दोस्त को, जो खानों में काम करता था, अपनी चतुराई के बारे में बताया। हमने उसे समझाया कि कैसे हम भाग निकले और इस चक्कर में रीजेंट को भी चकमा दे दिया। हालाँकि हमने उस दोस्त से गोपनीयता की शपथ ली थी, फिर भी वह सीधे इंदुना के पास गया और हमारा राज़ खोल दिया। एक दिन बाद, पिलिसो ने हमें बुलाया और जस्टिस से पहला सवाल पूछा: तुम्हारे भाई के लिए रीजेंट की अनुमति कहाँ है? जस्टिस ने कहा कि उसने पहले ही बता दिया है कि रीजेंट ने उसे डाक से भेज दिया है। पिलिसो इससे संतुष्ट नहीं हुआ और हमें लगा कि कुछ गड़बड़ है। फिर उसने अपनी मेज में हाथ डाला और एक टेलीग्राम निकाला। उसने गंभीर स्वर में कहा, "मुझे रीजेंट का संदेश मिला है," और उसे हमें थमा दिया। उसमें केवल एक वाक्य लिखा था: "लड़कों को तुरंत घर भेजो।"
इसके बाद पिलिसो ने हम पर अपना गुस्सा निकालते हुए हम पर झूठ बोलने का आरोप लगाया। उसने कहा कि हमने उसकी मेहमाननवाज़ी और शासक की प्रतिष्ठा का दुरुपयोग किया है। उसने बताया कि वह हमें ट्रांसकेई वापस भेजने के लिए खनिकों से चंदा इकट्ठा कर रहा है। जस्टिस ने घर जाने का विरोध करते हुए कहा कि हम सिर्फ खदान में काम करना चाहते हैं और अपने फैसले खुद ले सकते हैं। लेकिन पिलिसो ने हमारी बात अनसुनी कर दी। हमें शर्मिंदगी और अपमान महसूस

हुआ, लेकिन हमने उसके कार्यालय से यह ठानकर प्रस्थान किया कि हम ट्रांसकेई वापस नहीं लौटेंगे।
हमने तुरंत एक और योजना बनाई। हम डॉ. ए. बी. ज़ुमा से मिलने गए, जो रीजेंट के पुराने मित्र थे और अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस के अध्यक्ष थे। डॉ. ज़ुमा ट्रांसकेई के रहने वाले थे और एक अत्यंत सम्मानित चिकित्सक थे।

डॉ. ज़ुमा हमें देखकर प्रसन्न हुए और उन्होंने विनम्रतापूर्वक मक़्हेकेज़वेनी में हमारे पारिवारिक मामलों के बारे में पूछा। हमने उन्हें जोहान्सबर्ग में अपने आने के कारण के बारे में कुछ अधूरी सच्चाई बताई और कहा कि हमें खानों में नौकरी की बहुत इच्छा है। डॉ. ज़ुमा ने कहा कि उन्हें हमारी सहायता करने में खुशी होगी और उन्होंने तुरंत खान चैंबर के श्री वेलबेलव्ड को फोन किया, जो खनन कंपनियों का प्रतिनिधित्व करने वाला एक शक्तिशाली संगठन है और खान श्रमिकों की भर्ती पर एकाधिकार रखता है। डॉ. ज़ुमा ने श्री वेलबेलव्ड को बताया कि हम कितने प्रतिभाशाली लोग हैं और उन्हें हमारे लिए नौकरी ढूंढनी चाहिए। हमने डॉ. ज़ुमा को धन्यवाद दिया और श्री वेलबेलव्ड से मिलने चले गए।

श्री वेलबेलव्ड एक श्वेत व्यक्ति थे जिनका कार्यालय मेरे देखे किसी भी कार्यालय से कहीं अधिक भव्य था; उनकी मेज फुटबॉल मैदान जितनी चौड़ी प्रतीत होती थी। हम उनसे फेस्टाइल नामक एक खदान मालिक के साथ मिले और हमने उन्हें वही मनगढ़ंत बातें बताईं जो हमने डॉ. ज़ुमा को बताई थीं। श्री वेलबेलव्ड मेरी उस बात से प्रभावित हुए जो पूरी तरह सच नहीं थी कि मैं विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय में अपनी पढ़ाई जारी रखने के लिए जोहान्सबर्ग आया था। उन्होंने कहा, "ठीक है, लड़कों, मैं तुम्हें क्राउन माइंस के प्रबंधक, श्री पिलिसो से मिलवा दूंगा और उनसे कहूंगा कि वे तुम्हें क्लर्क की नौकरी दिलवा दें।" उन्होंने कहा कि उन्होंने श्री पिलिसो के साथ तीस साल काम किया है और इस पूरे समय में पिलिसो ने उनसे कभी झूठ नहीं बोला। जस्टिस और मैं यह सुनकर असहज हो गए लेकिन कुछ नहीं बोले। कुछ आशंकाओं के बावजूद, हमें भोलेपन से लगा कि अब श्री पिलिसो के साथ उनका बॉस, श्री वेलबेलव्ड, हमारे पक्ष में है, इसलिए हम उन पर हावी हो सकते हैं।

हम क्राउन माइन के दफ्तर लौट आए, जहाँ श्वेत परिसर प्रबंधक ने श्री वेलबेलव्ड के पत्र के कारण हमारे प्रति सहानुभूति दिखाई। तभी श्री पिलिसो दफ्तर से गुज़र रहे थे, उन्होंने हमें देखा और गुस्से में अंदर आ गए। “तुम लड़के! वापस आ गए!” उन्होंने चिढ़कर कहा। “यहाँ क्या कर रहे हो?”
न्याय शांत था। “हमें श्री वेलबेलव्ड ने भेजा है,” उसने चुनौती भरे लहजे में जवाब दिया। श्री पिलिसो ने एक पल के लिए इस पर विचार किया। “क्या तुमने उसे बताया कि तुम अपने पिता से भाग गए थे?” पिलिसो ने पलटवार किया। न्याय चुप रहा।
“तुम्हें मेरी चलाई किसी भी खदान में कभी नौकरी नहीं मिलेगी!” वह चिल्लाया। “अब, मेरी नज़रों से दूर हो जाओ!” जस्टिस ने वेलबिलव्ड का पत्र लहराया। “मुझे पत्र की कोई परवाह नहीं!” पिलिसो ने कहा। मैंने श्वेत प्रबंधक की ओर देखा, उम्मीद थी कि वह पिलिसो की बात को पलट देगा, लेकिन वह मूर्ति की तरह स्थिर खड़ा था और हमारी तरह ही डरा हुआ लग रहा था। हमारे पास पिलिसो के लिए कोई जवाब नहीं था, और हम शर्मिंदा होकर कार्यालय से बाहर निकल गए, पहले से भी ज़्यादा अपमानित महसूस कर रहे थे।
अब हमारी किस्मत पलट गई थी। हमारे पास न तो नौकरी थी, न ही भविष्य की कोई उम्मीद, और न ही रहने की जगह। जस्टिस जोहान्सबर्ग में कई लोगों को जानता था, इसलिए वह हमारे रहने के लिए जगह ढूंढने शहर गया। इस बीच, मुझे पिलिसो के यहाँ से अपना सूटकेस लाना था, और फिर उसी दिन बाद में जोहान्सबर्ग के दक्षिणी हिस्से में स्थित एक छोटे से कस्बे जॉर्ज गोच में जस्टिस से मिलना था।
मैंने बिकित्शा नाम के एक व्यक्ति को, जिसे मैं घर से जानता था, मना लिया कि वह सूटकेस को मुख्य द्वार तक ले जाने में मेरी मदद करे। द्वार पर तैनात चौकीदार ने हम दोनों को रोककर कहा कि उसे बैग की तलाशी लेनी है। बिकित्शा ने विरोध करते हुए कहा कि सूटकेस में कोई प्रतिबंधित वस्तु नहीं है। चौकीदार ने जवाब दिया कि तलाशी तो नियमित प्रक्रिया है, और उसने कपड़ों को बिना छुए ही सरसरी तौर पर बैग की तलाशी ली। जब चौकीदार बैग बंद कर रहा था, तो बिकित्शा, जो थोड़ा अकड़ू था, बोला, "क्यों परेशानी खड़ी कर रहे हो? मैंने तुम्हें बताया था कि इसमें कुछ नहीं है।" ये शब्द चौकीदार को चिढ़ा गए, और उसने सूटकेस की बारीकी से तलाशी लेने का फैसला किया। जैसे-जैसे उसने हर डिब्बा खोला और हर जेब की जाँच की, मेरी घबराहट बढ़ती गई। फिर वह सूटकेस

स्ट्रीट पर एक एस्टेट एजेंट के कार्यालय गए, जो एक घनी आबादी वाली और चहल-पहल भरी सड़क थी, जहाँ ट्राम यात्रियों से भरी रहती थीं, हर गली में फुटपाथ पर विक्रेता मौजूद थे, और ऐसा लगता था मानो धन-दौलत बस अगले मोड़ पर ही है। उन दिनों जोहान्सबर्ग एक सीमावर्ती कस्बे और आधुनिक शहर का मिलाजुला रूप था। कार्यालय भवनों के बगल वाली सड़क पर कसाई मांस काटते थे। चहल-पहल वाली दुकानों के पास तंबू लगे होते थे और महिलाएं ऊंची इमारतों के बगल में कपड़े सुखाती थीं। युद्ध के प्रयासों के कारण उद्योग में तेजी आई थी। 1939 में, ब्रिटिश राष्ट्रमंडल के सदस्य दक्षिण अफ्रीका ने नाज़ी जर्मनी के खिलाफ युद्ध की घोषणा कर दी थी। देश युद्ध प्रयासों के लिए सैनिक और सामान भेज रहा था। श्रम की मांग बहुत अधिक थी, और जोहान्सबर्ग ग्रामीण इलाकों से काम की तलाश में आए अफ्रीकियों के लिए आकर्षण का केंद्र बन गया। 1941 में, जब मैं आया, और 1946 के बीच, शहर में अफ्रीकियों की संख्या दोगुनी हो गई। हर सुबह, बस्ती पिछले दिन की तुलना में बड़ी लगती थी। पुरुषों को कारखानों में नौकरियां और न्यूक्लेयर, मार्टिनडेल, जॉर्ज गोच, एलेक्जेंड्रा, सोफियाटाउन और वेस्टर्न नेटिव टाउनशिप जैसे "गैर-यूरोपीय कस्बों" में आवास मिल गए, जो वृक्षविहीन भूमि पर बने कुछ हजार छोटे-छोटे घरों का एक जेल जैसा परिसर था।
मैं और गार्लिक एस्टेट एजेंट के वेटिंग रूम में बैठे थे, तभी एक खूबसूरत अफ्रीकी रिसेप्शनिस्ट ने अंदर के दफ्तर में अपने बॉस को हमारी मौजूदगी की सूचना दी। सूचना देने के बाद, उसकी फुर्तीली उंगलियां कीबोर्ड पर तेज़ी से चलने लगीं और उसने एक पत्र टाइप किया। मैंने अपनी पूरी ज़िंदगी में कभी किसी अफ्रीकी टाइपिस्ट को नहीं देखा था, और खासकर किसी महिला को तो बिल्कुल नहीं। उमटाटा और फोर्ट हरे में मैंने जितने भी सरकारी और व्यावसायिक दफ्तर देखे थे, वहां के टाइपिस्ट हमेशा गोरे और पुरुष ही होते थे। मैं इस युवती से बहुत प्रभावित हुआ क्योंकि वे गोरे पुरुष टाइपिस्ट अपने पत्रों को टाइप करने के लिए सिर्फ दो धीमी उंगलियों का इस्तेमाल करते थे।
वह जल्द ही हमें भीतरी कार्यालय में ले गईं, जहाँ मेरी मुलाकात एक ऐसे व्यक्ति से हुई जो लगभग तीस वर्ष के थे, जिनका चेहरा बुद्धिमान और सौम्य था, रंग गोरा था और उन्होंने डबल-ब्रेस्टेड सूट पहना हुआ था। अपनी कम उम्र के बावजूद, वे मुझे एक अनुभवी और समझदार व्यक्ति लगे। वे ट्रांसकेई के

रहने वाले थे, लेकिन शहरी लहजे में तेज़ी से अंग्रेज़ी बोलते थे। उनके भरे हुए प्रतीक्षालय और कागज़ों से लदे उनके डेस्क को देखकर लगता था कि वे एक व्यस्त और सफल व्यक्ति थे। लेकिन उन्होंने हमें जल्दबाजी नहीं करवाई और हमारी बात में सचमुच रुचि दिखाई। उनका नाम वाल्टर सिसुलु था।
सिसुलु एक रियल एस्टेट कार्यालय चलाते थे जो अफ़्रीकी लोगों के लिए संपत्तियों में विशेषज्ञता रखता था। 1940 के दशक में, अभी भी कई ऐसे क्षेत्र थे जहाँ अफ़्रीकी लोग स्वतंत्र स्वामित्व वाली संपत्तियाँ खरीद सकते थे, जैसे कि एलेक्जेंड्रा और सोफियाटाउन जैसे स्थानों में स्थित छोटी-छोटी ज़मीनें। इनमें से कुछ क्षेत्रों में, अफ़्रीकी लोग कई पीढ़ियों से अपने घरों के मालिक थे। शेष अफ़्रीकी क्षेत्र नगरपालिका बस्तियाँ थीं जिनमें छोटे-छोटे घर थे जिनके लिए निवासी जोहान्सबर्ग नगर परिषद को किराया देते थे।
सिसुलु का नाम एक व्यवसायी और स्थानीय नेता दोनों के रूप में उभर रहा था। वे समुदाय में पहले से ही एक प्रभावशाली व्यक्ति थे। जब मैंने फोर्ट हरे में अपनी कठिनाइयों, वकील बनने की अपनी महत्वाकांक्षा और पत्राचार पाठ्यक्रम के माध्यम से अपनी डिग्री पूरी करने के लिए दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय में दाखिला लेने के अपने इरादे के बारे में बताया, तो उन्होंने ध्यान से सुना। मैंने उन्हें जोहान्सबर्ग पहुंचने की अपनी परिस्थितियों के बारे में नहीं बताया था। जब मैंने अपनी बात समाप्त की, तो वे अपनी कुर्सी पर पीछे झुक गए और मेरी बातों पर विचार करने लगे। फिर, उन्होंने मुझे एक बार फिर देखा और कहा कि उनके साथ लाजर सिडेलस्की नाम का एक श्वेत वकील काम करता है, जिसे वे एक सभ्य और प्रगतिशील व्यक्ति मानते हैं। उन्होंने कहा कि सिडेलस्की अफ्रीकी शिक्षा में रुचि रखते हैं। वे सिडेलस्की से मुझे प्रशिक्षु क्लर्क के रूप में रखने के बारे में बात करेंगे।
उन दिनों मेरा मानना था कि अंग्रेज़ी में दक्षता और व्यापार में सफलता उच्च शैक्षणिक उपलब्धियों का सीधा परिणाम है और मैं यह मानकर चलता था कि सिसुलु विश्वविद्यालय से स्नातक थे। कार्यालय छोड़ने के बाद अपने चचेरे भाई से यह जानकर मुझे बहुत आश्चर्य हुआ कि वाल्टर सिसुलु ने छठी कक्षा से आगे पढ़ाई नहीं की थी। फोर्ट हरे से सीखा यह एक और सबक था जिसे मुझे जोहान्सबर्ग में भूलना पड़ा। मुझे सिखाया गया था कि बी.ए. की डिग्री का

मतलब नेता बनना होता है, और नेता बनने के लिए बी.ए. की डिग्री ज़रूरी होती है। लेकिन जोहान्सबर्ग में मैंने पाया कि कई उत्कृष्ट नेता कभी विश्वविद्यालय नहीं गए थे। हालाँकि मैंने बी.ए. के लिए आवश्यक सभी अंग्रेज़ी पाठ्यक्रम पूरे कर लिए थे, फिर भी मेरी अंग्रेज़ी उतनी धाराप्रवाह और प्रभावशाली नहीं थी जितनी उन लोगों की थी जिनसे मैं जोहान्सबर्ग में मिला था और जिनके पास स्कूल की डिग्री भी नहीं थी।

कुछ समय अपने चचेरे भाई के साथ रहने के बाद, मैंने एलेक्जेंड्रा टाउनशिप में आठवीं एवेन्यू स्थित एंग्लिकन चर्च के रेवरेंड जे. माबुथो के घर में रहने की व्यवस्था की। रेवरेंड माबुथो मेरे ही समुदाय के थेम्बू थे, मेरे परिवार के मित्र थे और एक उदार, ईश्वर से डरने वाले व्यक्ति थे। उनकी पत्नी, जिन्हें हम गोगो कहते थे, मिलनसार, स्नेहशील और एक बेहतरीन रसोइया थीं, जो उदारतापूर्वक भोजन परोसती थीं। मेरे परिवार को जानने वाले एक थेम्बू होने के नाते, रेवरेंड माबुथो ने मेरे प्रति जिम्मेदारी का भाव दिखाया। उन्होंने एक बार मुझसे कहा था, "हमारे पूर्वजों ने हमें साझा करना सिखाया है।"
लेकिन क्राउन माइंस में अपने अनुभव से मैंने कोई सबक नहीं सीखा था, क्योंकि मैंने रेवरेंड माबुथो को ट्रांसकेई छोड़ने की परिस्थितियों के बारे में नहीं बताया था। मेरी इस चूक के बुरे परिणाम हुए। माबुथो परिवार के साथ रहने के कुछ दिनों बाद, मैं उनके साथ चाय पी रहा था, तभी एक मेहमान आ गया। दुर्भाग्य से, उनका दोस्त श्री फेस्टाइल था, जो खान मंडल के प्रमुख थे और उस समय मौजूद थे जब जस्टिस और मैं श्री वेलबिलव्ड से मिले थे। श्री फेस्टाइल और मैंने एक-दूसरे का अभिवादन इस तरह किया जैसे हम एक-दूसरे को जानते हों, और हालांकि हमारी पिछली मुलाकात के बारे में कुछ नहीं कहा गया, अगले दिन रेवरेंड माबुथो मुझे एक तरफ ले गए और स्पष्ट कर दिया कि मैं अब उनके घर में नहीं रह सकता।
मैंने खुद को पूरी सच्चाई न बताने के लिए कोसा। मुझे अपने झूठ बोलने की इतनी आदत हो गई थी कि मैं तब भी झूठ बोलती थी जब झूठ बोलना ज़रूरी नहीं होता था। मुझे यकीन है कि रेवरेंड माबुथो को बुरा नहीं लगता, लेकिन जब

उन्हें फेस्टाइल से मेरी हालत के बारे में पता चला, तो उन्हें धोखा महसूस हुआ। जोहान्सबर्ग में अपने थोड़े समय के प्रवास के दौरान, मैंने झूठ का सिलसिला शुरू कर दिया था, और हर बार झूठ मुझे ही परेशान कर रहा था। उस समय मुझे लगा कि मेरे पास कोई दूसरा विकल्प नहीं है। मैं डरी हुई और अनुभवहीन थी, और मुझे पता था कि मैंने अपने नए जीवन की शुरुआत ठीक से नहीं की है। इस बार, रेवरेंड माबुथो को मुझ पर दया आ गई और उन्होंने मुझे अपने पड़ोसियों, खोमा परिवार के यहाँ रहने की व्यवस्था कर दी।
श्री खोमा, अलेक्जेंड्रा के कुछ गिने-चुने अफ्रीकी ज़मींदारों में से एक थे। उनका घर - 46, सातवीं एवेन्यू - छोटा था, खासकर इसलिए क्योंकि उनके छह बच्चे थे, लेकिन बरामदे और छोटे से बगीचे के साथ वह रहने लायक था। गुज़ारा चलाने के लिए, श्री खोमा, अलेक्जेंड्रा के कई अन्य निवासियों की तरह, किराएदारों को कमरे किराए पर देते थे। उन्होंने अपनी ज़मीन के पीछे टिन की छत वाला एक कमरा बनाया था, जो एक झोपड़ी से ज़्यादा कुछ नहीं था, जिसमें मिट्टी का फर्श था, न तो हीटिंग थी, न बिजली, न ही नल का पानी। लेकिन वह मेरी अपनी जगह थी और मुझे उसमें रहने में खुशी थी।
इसी बीच, वाल्टर की सिफारिश पर, लाजर सिडेलस्की ने मुझे मेरे बी.ए. की पढ़ाई पूरी करने तक क्लर्क के रूप में काम पर रखने की सहमति दे दी। विटकिन, सिडेलस्की और आइडेलमैन की फर्म शहर की सबसे बड़ी लॉ फर्मों में से एक थी और वह श्वेत और अश्वेत दोनों तरह के वकीलों के मामले संभालती थी। दक्षिण अफ्रीका में वकील बनने के लिए कानून की पढ़ाई और कुछ परीक्षाएं पास करने के अलावा, किसी वकील के साथ कई वर्षों तक अप्रेंटिसशिप करनी पड़ती थी, जिसे 'आर्टिकल्स सर्विंग' कहा जाता है। लेकिन आर्टिकल्स सर्विंग शुरू करने के लिए, मुझे पहले अपनी बी.ए. की डिग्री पूरी करनी थी। इसके लिए, मैं रात में यूएनआईएसए (यूनिवर्सिटी ऑफ साउथ अफ्रीका) से पढ़ाई कर रहा था, जो एक प्रतिष्ठित शिक्षण संस्थान है और पत्राचार के माध्यम से क्रेडिट और डिग्री प्रदान करता है।
पारंपरिक कानूनी मामलों की पैरवी करने के अलावा, विटकिन, सिडेलस्की और आइडेलमैन अफ्रीकी ग्राहकों के लिए रियल एस्टेट लेनदेन की देखरेख भी करते थे। वाल्टर फर्म के लिए ऐसे ग्राहक लाते थे जिन्हें बंधक ऋण की आवश्यकता होती थी। फर्म उनके ऋण आवेदनों को संभालती थी और फिर कमीशन लेती थी, जिसे वह रियल एस्टेट एजेंट के साथ बांटती थी। वास्तव में, कानूनी फर्म को ही

फर्म में उस पहले दिन सुबह, एक मिलनसार युवा श्वेत सचिव, मिस लिबरमैन, मुझे एक तरफ ले गईं और बोलीं, “नेल्सन, हमारे लॉ फर्म में कोई रंगभेद नहीं है।” उन्होंने बताया कि दोपहर के समय चायवाला ट्रे में चाय और कई कप लेकर सामने वाले कमरे में आया। उन्होंने कहा, “आपके आने के उपलक्ष्य में, हमने आपके और गौर के लिए दो नए कप खरीदे हैं। सचिव मुख्य लोगों के लिए चाय के कप ले जाती हैं, लेकिन आप और गौर अपनी चाय खुद लेंगे, जैसे हम लेते हैं। चाय आने पर मैं आपको बुलाऊंगी, और फिर आप नए कपों में चाय पी सकते हैं।” उन्होंने आगे कहा कि मुझे यह संदेश गौर को भी देना चाहिए। मैं उनकी इस मदद के लिए आभारी था, लेकिन मैं जानता था कि जिन “दो नए कपों” का उन्होंने इतनी सावधानी से जिक्र किया था, वे उस रंगभेद का सबूत थे जिसके बारे में उन्होंने कहा था कि वह मौजूद नहीं है। सचिव शायद दो अफ्रीकियों के साथ चाय साझा कर सकती थीं, लेकिन चाय पीने के कप नहीं।
जब मैंने गौर को बताया कि मिस लिबरमैन ने क्या कहा था, तो मैंने देखा कि सुनते ही उसके चेहरे के भाव बदल गए, ठीक वैसे ही जैसे किसी बच्चे के मन में कोई शरारती विचार आता है। “नेल्सन,” उसने कहा, “चाय के समय किसी बात की चिंता मत करना। बस मेरी बात मानो।” ग्यारह बजे, मिस लिबरमैन ने हमें बताया कि चाय आ गई है। सचिवों और फर्म के कुछ अन्य सदस्यों के सामने, गौर चाय की थाली के पास गया और दिखावे के तौर पर दो नए कपों को नज़रअंदाज़ करते हुए, पुराने कपों में से एक को चुना और उसमें खूब सारी चीनी, दूध और फिर चाय डाली। उसने धीरे-धीरे अपने कप को हिलाया और फिर बड़े ही आत्मसंतुष्ट भाव से चाय पीने लगा। सचिव गौर को घूरते रहे और फिर गौर ने मेरी ओर सिर हिलाया, मानो कह रहा हो, “अब तुम्हारी बारी है, नेल्सन।”
एक पल के लिए मैं दुविधा में पड़ गया। मैं न तो सचिवों को नाराज़ करना चाहता था और न ही अपने नए सहकर्मी को नाराज़ करना चाहता था, इसलिए मैंने वह रास्ता चुना जो मुझे सबसे समझदारी भरा लगा: मैंने चाय पीने से ही इनकार कर दिया। मैंने कहा कि मुझे प्यास नहीं है। उस समय मैं मात्र तेईस वर्ष का था और एक व्यक्ति के रूप में, जोहान्सबर्ग के निवासी के रूप में और एक श्वेत कंपनी के कर्मचारी के रूप में अपने पैरों पर खड़ा होना सीख रहा था, और मुझे बीच का रास्ता ही सबसे अच्छा और सबसे तर्कसंगत लगा। उसके बाद, चाय के समय, मैं कार्यालय की छोटी रसोई में जाकर अकेले में चाय पीता था।

सचिव हमेशा इतने विचारशील नहीं होते थे। कुछ समय बाद, जब मुझे फर्म में अधिक अनुभव हो गया था, मैं एक श्वेत सचिव को कुछ जानकारी लिखवा रहा था, तभी एक श्वेत ग्राहक, जिसे वह जानती थी, कार्यालय में आ गया। वह शर्मिंदा हो गई, और यह दिखाने के लिए कि वह किसी अफ्रीकी से लिखवा नहीं रही है, उसने अपने पर्स से एक सिक्का निकाला और कड़े स्वर में कहा, "नेल्सन, कृपया बाहर जाकर मेरे लिए केमिस्ट से शैम्पू ले आओ।" मैं कमरे से बाहर गया और उसके लिए शैम्पू ले आया।
शुरुआत में, फर्म में मेरा काम काफी बुनियादी था। मैं क्लर्क और संदेशवाहक का मिला-जुला काम करता था। मैं दस्तावेज़ ढूंढता, व्यवस्थित करता और फाइल करता था, और जोहान्सबर्ग में कागज़ात पहुंचाता था। बाद में, मैं फर्म के कुछ अफ्रीकी ग्राहकों के लिए अनुबंध तैयार करता था। फिर भी, काम चाहे कितना भी छोटा क्यों न हो, श्री सिडेलस्की मुझे समझाते थे कि यह किस लिए है और मैं इसे क्यों कर रहा हूँ। वे एक धैर्यवान और उदार शिक्षक थे, और उनका उद्देश्य न केवल कानून की बारीकियों को समझाना था, बल्कि उसके पीछे के दर्शन को भी बताना था। कानून के प्रति उनका दृष्टिकोण संकीर्ण नहीं बल्कि व्यापक था, क्योंकि उनका मानना था कि यह एक ऐसा साधन है जिसका उपयोग समाज को बदलने के लिए किया जा सकता है।
श्री सिडेलस्की ने कानून के बारे में अपने विचार बताते हुए मुझे राजनीति से दूर रहने की चेतावनी दी। उन्होंने कहा कि राजनीति से इंसान की बुरी आदतें सामने आती हैं। यह परेशानी और भ्रष्टाचार की जड़ है और इससे हर कीमत पर बचना चाहिए। उन्होंने मुझे राजनीति में पड़ने पर होने वाले भयानक परिणामों का वर्णन किया और मुझे उन लोगों की संगति से दूर रहने की सलाह दी जिन्हें वे उपद्रवी और उपद्रवी मानते थे, विशेष रूप से गौर रादेबे और वाल्टर सिसुलु। श्री सिडेलस्की उनकी क्षमताओं का सम्मान तो करते थे, लेकिन उनकी राजनीति से घृणा करते थे।
गौर सचमुच में एक "उपद्रवी" थे, और अफ्रीकी समुदाय में उनका प्रभाव उन तरीकों से था जिनके बारे में श्री सिडेलस्की को पता नहीं था या उन्हें इसका अंदाजा भी नहीं था। वे वेस्टर्न नेटिव टाउनशिप के सलाहकार बोर्ड के सदस्य थे, जो चार स्थानीय लोगों का एक निर्वाचित निकाय था और टाउनशिप से संबंधित मामलों पर अधिकारियों से बातचीत करता था। हालाँकि इस बोर्ड के पास शक्ति कम थी, लेकिन लोगों के बीच इसकी काफी प्रतिष्ठा थी। जैसा कि मुझे

जल्द ही पता चला, गौर एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी दोनों के एक प्रमुख सदस्य थे।
गौर अपने ही विचारों का मालिक था। वह हमारे मालिकों के साथ ज़रूरत से ज़्यादा शिष्टाचार नहीं दिखाता था और अक्सर अफ़्रीकी लोगों के साथ उनके बर्ताव के लिए उन्हें फटकारता था। वह कहता था, “तुम लोगों ने हमारी ज़मीन हमसे छीन ली और हमें गुलाम बना लिया। अब तुम लोग हमसे इसके सबसे खराब हिस्से वापस लेने के लिए मोटी रकम वसूल रहे हो।” एक दिन, जब मैं एक काम निपटाकर लौटा और श्री सिडेलस्की के दफ्तर में दाखिल हुआ, तो गौर ने उसकी ओर मुड़कर कहा, “देखो, तुम वहाँ बड़े शान से बैठे हो जबकि मेरा सरदार तुम्हारे लिए इधर-उधर भागता फिरता है। हालात उलटने चाहिए, और एक दिन ऐसा ज़रूर होगा, और हम तुम सबको समुद्र में फेंक देंगे।” फिर गौर कमरे से चला गया, और श्री सिडेलस्की ने बस अफ़सोस से अपना सिर हिलाया।
गौर एक ऐसे व्यक्ति का उदाहरण थे जिनके पास बी.ए. की डिग्री नहीं थी, फिर भी वे फोर्ट हरे से चमकीली डिग्रियाँ लेकर निकले साथियों की तुलना में कहीं अधिक शिक्षित प्रतीत होते थे। वे न केवल अधिक ज्ञानी थे, बल्कि अधिक साहसी और आत्मविश्वासी भी थे। हालाँकि मेरा इरादा डिग्री पूरी करके लॉ स्कूल में दाखिला लेने का था, लेकिन गौर से मैंने सीखा कि डिग्री अपने आप में नेतृत्व की गारंटी नहीं है और इसका कोई महत्व नहीं है जब तक कि कोई समाज में जाकर खुद को साबित न करे।

विटकिन, सिडेलस्की और आइडेलमैन में मैं अकेला प्रशिक्षु क्लर्क नहीं था। मेरे लगभग हमउम्र नैट ब्रेगमैन नाम का एक साथी मुझसे कुछ समय पहले ही काम पर आया था। नैट होशियार, मिलनसार और विचारशील था। वह रंगभेद से पूरी तरह मुक्त प्रतीत होता था और मेरा पहला श्वेत मित्र बना। वह नकल करने में माहिर था और जेन स्मट्स, फ्रैंकलिन रूजवेल्ट और विंस्टन चर्चिल की आवाज़ों की सटीक नकल कर सकता था। मैं अक्सर कानून और कार्यालय की प्रक्रियाओं के बारे में उससे सलाह लेता था, और वह हमेशा मददगार साबित होता था।

किसी भी सामाजिक समारोह में टाई और जैकेट पहनना अनिवार्य है। हालाँकि मेरे पास कपड़ों का सीमित भंडार था, फिर भी मैंने पार्टी में पहनने के लिए एक टाई ढूंढ ली।
मुझे वहाँ लोगों का एक जीवंत और मिलनसार समूह मिला, जो रंगभेद पर बिल्कुल ध्यान नहीं दे रहा था। यह मेरे द्वारा अटेंड की गई पहली मिश्रित सभाओं में से एक थी, और मैं प्रतिभागी से कहीं अधिक एक दर्शक था। मैं बेहद शर्मीला महसूस कर रहा था, कोई गलती करने से डर रहा था, और उन ऊँचे दर्जे की और तेज़ गति वाली बातचीत में भाग लेने के लिए खुद को असमर्थ पा रहा था। मेरे विचार मेरे आस-पास के परिष्कृत संवाद की तुलना में अविकसित लग रहे थे।
शाम के एक समय मेरी मुलाकात माइकल हार्मेल से हुई, जिनके बारे में मुझे बताया गया था कि उन्होंने रोड्स विश्वविद्यालय से अंग्रेजी में स्नातकोत्तर की उपाधि प्राप्त की है। मैं उनकी डिग्री से प्रभावित हुआ, लेकिन जब मैं उनसे मिला, तो मैंने मन ही मन सोचा, "इस आदमी के पास एम.ए. की डिग्री है और इसने टाई तक नहीं पहनी है!" मैं इस विरोधाभास को समझ ही नहीं पाया। बाद में, माइकल और मैं दोस्त बन गए, और मैं उनका बहुत सम्मान करने लगा, इसका एक बड़ा कारण यह था कि उन्होंने उन कई मूर्खतापूर्ण परंपराओं को अस्वीकार कर दिया था जिन्हें मैंने कभी अपनाया था। वे न केवल एक प्रतिभाशाली लेखक थे, बल्कि साम्यवाद के प्रति इतने समर्पित थे कि उनका जीवन जीने का तरीका किसी अफ्रीकी से कम नहीं था।

10

एलेक्जेंड्रा में जीवन रोमांचक और जोखिम भरा था। वहाँ का वातावरण जीवंत था, लोगों में रोमांच और सूझबूझ थी। हालाँकि बस्ती में कुछ खूबसूरत इमारतें थीं, फिर भी इसे एक झुग्गी बस्ती कहना उचित होगा, जो अधिकारियों की उपेक्षा का जीता-जागता प्रमाण थी। सड़कें कच्ची और गंदी थीं, और भूखे- प्यासे, कुपोषित बच्चे आधे नंगे इधर-उधर भागते रहते थे। टिन के अंगीठियों और चूल्हों में जलते कोयले के धुएँ से हवा भरी रहती थी। एक ही नल से कई घरों में पानी आता था। सड़क के किनारे बदबूदार, रुके हुए पानी के गड्ढे बने रहते थे जिनमें कीड़े-मकोड़े भरे होते थे। बिजली न होने के कारण एलेक्जेंड्रा को "अंधेरा शहर" के नाम से जाना जाता था। रात में घर लौटना खतरनाक था, क्योंकि वहाँ कोई रोशनी नहीं थी, सन्नाटा चीखों, हँसी और कभी- कभार गोलियों की आवाज़ से टूटता रहता था। यह ट्रांसकेई के अंधेरे से कितना अलग था, जो मानो किसी को आलिंगन में समेट लेता था।
यह बस्ती बेहद भीड़भाड़ वाली थी; हर एक वर्ग फुट पर या तो जर्जर मकान थे या टिन की छत वाली झोपड़ियाँ। जैसा कि अक्सर बेहद गरीब जगहों पर होता है, सबसे बुरे तत्व सामने आ गए। जीवन यापन सस्ता था; रात में बंदूक और चाकू का बोलबाला था। छुरा घोंपने वाले गुंडे - जिन्हें त्सोत्सी कहा जाता था - बड़ी संख्या में मौजूद थे और खुलेआम घूमते थे; उन दिनों वे अमेरिकी फिल्म सितारों की नकल करते थे और फेडोरा टोपी, डबल-ब्रेस्टेड सूट और चौड़ी, रंगीन टाई पहनते थे। पुलिस के छापे जीवन का एक नियमित हिस्सा थे। पुलिस नियमित रूप से पास नियमों के उल्लंघन, शराब रखने और मतदान कर न चुकाने के आरोप में बड़ी संख्या में लोगों को गिरफ्तार करती थी। लगभग हर कोने पर अवैध शराबखाने थे, जो झोपड़ियाँ थीं जहाँ घर में बनी बीयर परोसी जाती थी। अलेक्जेंड्रा में जीवन के कई कष्टों के बावजूद, यह कस्बा एक तरह से स्वर्ग भी था। देश के उन गिने-चुने क्षेत्रों में से एक होने के नाते जहाँ अफ़्रीकी लोग अपनी संपत्ति के मालिक बन सकते थे और अपने मामलों का प्रबंधन स्वयं कर सकते थे, जहाँ लोगों को श्वेत नगर पालिका अधिकारियों के अत्याचार के आगे झुकना नहीं पड़ता था, अलेक्जेंड्रा एक शहरी वरदान था, जो इस बात का प्रमाण था कि हमारे लोगों का एक वर्ग ग्रामीण क्षेत्रों से नाता तोड़कर

पास चली गई। उन्होंने मेरी गरीबी का जिक्र किए बिना मुझे भोजन कराया, और तब से मैं उनके पास नियमित रूप से जाती रही।
मेरे मकान मालिक, श्री खोमा, धनी तो नहीं थे, लेकिन परोपकारी स्वभाव के थे। जब तक मैं उनकी संपत्ति पर रहा, हर रविवार को वे और उनकी पत्नी मुझे दोपहर का भोजन देते थे, और सूअर के मांस और सब्जियों से भरी वो गरमागरम थालियाँ अक्सर मेरे लिए सप्ताह का एकमात्र गर्म भोजन होती थीं। मैं चाहे कहीं भी रहूँ या कुछ भी कर रहा हूँ, रविवार को खोमा के घर जाना कभी नहीं भूलता था। सप्ताह के बाकी दिनों में मैं रोटी खाकर गुजारा करता था, और कभी-कभी फर्म की सचिवें मेरे लिए कुछ खाना ले आती थीं।
उन दिनों मैं बहुत पिछड़ा हुआ था और गरीबी व संकीर्ण सोच के कारण कई रोचक घटनाएं हुईं। एक दिन, खोमा परिवार के साथ रहने के कुछ ही समय बाद, मैं जोहान्सबर्ग से घर लौट रहा था और बहुत भूखा था। मेरे पास कुछ पैसे थे जो मैंने बचाए थे, और मैंने सोचा कि ताज़ा मांस खरीद लूँ, जो मैंने बहुत दिनों से नहीं खाया था। मुझे आसपास कोई अच्छा कसाई नहीं दिखा, इसलिए मैं एक डेलीकेटेसन (स्वादिष्ट व्यंजन की दुकान) में चला गया, जोहान्सबर्ग जाने से पहले मैंने कभी इस तरह की दुकान नहीं देखी थी। शीशे के पार से मुझे मांस का एक बड़ा और स्वादिष्ट टुकड़ा दिखाई दिया और मैंने काउंटर के पीछे खड़े आदमी से उसमें से एक टुकड़ा काटने को कहा। उसने उसे लपेट दिया, और मैंने उसे अपनी बगल में दबा लिया और घर की ओर चल पड़ा, उस रात के खाने का सपना देखते हुए जो मेरा इंतजार कर रहा था।
जब मैं अलेक्जेंड्रा में अपने कमरे में लौटा, तो मैंने मुख्य घर में रहने वाली एक छोटी बेटी को आवाज़ दी। वह केवल सात साल की थी, लेकिन बहुत समझदार थी। मैंने उससे कहा, "क्या तुम मांस का यह टुकड़ा अपनी किसी बड़ी बहन के पास ले जाकर उसे मेरे लिए पकाने के लिए कहोगी?" मैं देख सकता था कि वह अपनी मुस्कान दबाने की कोशिश कर रही थी, लेकिन बड़ों का इतना आदर करती थी कि हँसी नहीं। थोड़ी झुंझलाहट के साथ, मैंने उससे पूछा कि क्या कुछ गड़बड़ है। उसने बहुत धीरे से कहा, "यह मांस पका हुआ है।" मैंने उससे पूछा कि वह क्या कह रही है। उसने बताया कि मैंने स्मोक्ड हैम का एक टुकड़ा खरीदा था, और इसे ऐसे ही खाना होता है। यह मेरे लिए बिल्कुल नया था, और अपनी पूरी अज्ञानता स्वीकार करने के बजाय, मैंने उससे कहा कि मुझे पता है कि यह

स्मोक्ड हैम है, लेकिन मैं इसे गर्म करवाना चाहता हूँ। वह जानती थी कि मैं झूठ बोल रहा हूँ, लेकिन फिर भी भाग गई। मांस बहुत स्वादिष्ट था। एलेक्जेंड्रा में मेरी दोस्ती फिर से जीवंत हो उठी, मैं हमेशा हंसमुख और हंसमुख एलेन नकाबिनदे से मिली, जिसे मैं हील्डटाउन से जानती थी और जो उस समय टाउनशिप के एक स्कूल में पढ़ा रही थी। दरअसल, एलेन और मुझे एक-दूसरे से प्यार हो गया। हील्डटाउन में मैं उसे बस थोड़ा-बहुत जानती थी, और एलेक्जेंड्रा में उससे दोबारा मिलने के बाद ही हमारा रिश्ता परवान चढ़ा। उन महीनों में जो थोड़ा-बहुत खाली समय मिलता था, मैं एलेन के साथ बिताती थी। प्रेम-प्रसंग मुश्किल था; हम हमेशा लोगों से घिरे रहते थे, और घूमने- फिरने की जगहें भी कम थीं। एकमात्र जगह जहाँ हम अकेले रह सकते थे, वह थी धूप या तारों के नीचे बाहर। इसलिए, एलेन और मैं टाउनशिप के आसपास के मैदानों और पहाड़ियों में साथ-साथ घूमते थे। ज्यादातर हम बस टहलते थे, और जब हम दोनों के पास समय होता था, तो हम पिकनिक पर भी चले जाते थे।
एलेन स्वाज़ी थी, और हालाँकि बस्ती में कबीलेवाद धीरे-धीरे कम हो रहा था, मेरे एक करीबी दोस्त ने विशुद्ध रूप से कबीले के आधार पर हमारे रिश्ते की निंदा की। मैंने इसे सिरे से खारिज कर दिया। लेकिन हमारी अलग-अलग पृष्ठभूमि ने कुछ समस्याएँ खड़ी कर दीं। पादरी की पत्नी, श्रीमती माबुथो, एलेन को पसंद नहीं करती थीं, मुख्य रूप से इसलिए क्योंकि वह स्वाज़ी थी। एक दिन, जब मैं माबुथो के घर पर था, श्रीमती माबुथो ने दरवाजे पर दस्तक सुनी। एलेन थी, जो मुझे ढूंढ रही थी, और श्रीमती माबुथो ने उसे बताया कि मैं अंदर नहीं हूँ। बाद में श्रीमती माबुथो ने मुझसे कहा, "ओह, नेल्सन, कोई लड़की तुम्हें ढूंढ रही थी।" फिर श्रीमती माबुथो ने मुझसे पूछा, "क्या वह लड़की शांगान है?" हालाँकि शांगान एक गौरवशाली और कुलीन जनजाति है, उस समय शांगान शब्द को अपमानजनक माना जाता था। मुझे यह सुनकर बुरा लगा और मैंने कहा, "नहीं, वह शांगान नहीं है, वह स्वाज़ी है।" श्रीमती माबुथो का दृढ़ विश्वास था कि मुझे केवल खोसा लड़कियों से ही मिलना चाहिए।
ऐसी सलाहों ने मुझे हतोत्साहित नहीं किया। मैं एलेन से प्यार करता था और उनका सम्मान करता था, और असहमति जताने वालों की सलाह को ठुकराने में मुझे ज़रा भी गर्व महसूस नहीं हुआ। यह रिश्ता मेरे लिए एक नया अनुभव था, और एक गैर-खोसा महिला से दोस्ती करने में मुझे साहस महसूस हुआ। मैं युवा था और शहर में थोड़ा खोया हुआ सा था, और एलेन ने न केवल एक प्रेम साथी की भूमिका

निभाई, बल्कि एक माँ की तरह मेरा सहारा बनीं, मुझे आत्मविश्वास दिया और मुझे शक्ति और आशा प्रदान की। लेकिन कुछ ही महीनों में एलेन दूर चली गईं, और दुख की बात है कि हमारा संपर्क टूट गया।
खोमा परिवार में पाँच बेटियाँ थीं, सभी सुंदर थीं, लेकिन उनमें सबसे सुंदर दीदी थीं। दीदी लगभग मेरी ही उम्र की थीं और सप्ताह के अधिकांश दिन जोहान्सबर्ग के एक श्वेत उपनगर में घरेलू कामगार के रूप में काम करती थीं। जब मैं पहली बार उस घर में रहने आया, तो मैं उनसे बहुत कम और क्षणिक रूप से ही मिल पाता था। लेकिन बाद में, जब मेरी उनसे अच्छी जान-पहचान हुई, तो मुझे उनसे प्यार भी हो गया। लेकिन दीदी ने मेरी तरफ़ ज़रा भी ध्यान नहीं दिया, और उन्होंने जो देखा वह यह था कि मेरे पास केवल एक फटा हुआ सूट और एक ही कमीज़ थी, और मैं देखने में किसी आवारा से ज़्यादा अलग नहीं था।
हर सप्ताहांत दीदी एलेक्जेंड्रा लौट आती थीं। उन्हें एक युवक घर लाता था, जिसे मैं उनका प्रेमी समझती थी। वह एक दिखावटी, धनी व्यक्ति था जिसके पास कार थी, जो कि बहुत ही असामान्य बात थी। वह महंगे, दोहरी छाती वाले अमेरिकी सूट और चौड़ी किनारी वाली टोपी पहनता था और अपने पहनावे पर बहुत ध्यान देता था। वह किसी तरह का गैंगस्टर रहा होगा, लेकिन मैं निश्चित नहीं कह सकती। वह आंगन में खड़ा होकर अपने हाथ अपनी जैकेट में डाल लेता और खुद को बहुत श्रेष्ठ दिखाता। उसने मुझे विनम्रता से नमस्कार किया, लेकिन मैं समझ गई कि वह मुझे अपना प्रतिद्वंद्वी नहीं मानता था।
मैं दीदी को बताना चाहता था कि मैं उनसे प्यार करता हूँ, लेकिन मुझे डर था कि मेरी कोशिशें उन्हें पसंद नहीं आएंगी। मैं कोई डॉन जुआन तो था नहीं। लड़कियों के आसपास मैं असहज और झिझकता रहता था, मुझे वो रोमांटिक खेल समझ नहीं आते थे जो दूसरे लोग बड़ी आसानी से खेलते हुए दिखते थे। सप्ताहांत में, दीदी की माँ कभी-कभी मुझसे खाना लाने को कहती थीं। दीदी खाना लेकर मेरे दरवाजे पर आतीं और मैं समझ जाता कि वो बस अपना काम जल्दी निपटाना चाहती हैं, लेकिन मैं उन्हें रोकने की पूरी कोशिश करता। मैं उनसे हर बात पर राय पूछता, तरह-तरह के सवाल पूछता। “तुम स्कूल में किस कक्षा तक पढ़ी?” मैं पूछता। “पाँचवीं कक्षा,” वो जवाब देतीं। “तुमने स्कूल क्यों छोड़ा?” मैंने पूछा। “ऊब गई थी,” वो जवाब देतीं। “अच्छा, तो तुम्हें वापस स्कूल जाना चाहिए,” मैंने कहा। मैंने आगे कहा, “तुम्हारी उम्र लगभग मेरी ही है, और इस उम्र में स्कूल वापस जाने में कोई बुराई नहीं है। वरना बुढ़ापे में

तुम्हें पछतावा होगा। तुम्हें अपने भविष्य के बारे में गंभीरता से सोचना चाहिए। अभी तो तुम्हें अच्छा लग रहा है क्योंकि तुम जवान और खूबसूरत हो और तुम्हारे कई चाहने वाले हैं, लेकिन तुम्हें एक स्वतंत्र पेशा चुनना होगा।”
मुझे पता है कि ये शब्द किसी युवक द्वारा अपनी प्रेमिका से कहे गए सबसे रोमांटिक शब्द नहीं हैं, लेकिन मुझे समझ नहीं आ रहा था कि मैं उससे और क्या बात करूं। उसने ध्यान से सुना, लेकिन मैं समझ गया कि उसे मुझमें कोई दिलचस्पी नहीं थी, बल्कि वह खुद को मुझसे थोड़ा बेहतर समझती थी।
मैं उसे शादी का प्रस्ताव देना चाहता था, लेकिन जब तक मुझे यकीन न हो जाए कि वह हाँ कहेगी, तब तक मैं ऐसा करने को तैयार नहीं था। हालाँकि मैं उससे प्यार करता था, मैं उसे ठुकराए जाने का सुख नहीं देना चाहता था। मैंने उसका पीछा करना जारी रखा, लेकिन मैं डरपोक और झिझक रहा था। राजनीति के विपरीत, प्यार में सावधानी आमतौर पर गुण नहीं होती। न तो मुझमें इतना आत्मविश्वास था कि मैं सफल हो सकूँ, और न ही इतना सुरक्षित कि असफल होने पर असफलता का सामना कर सकूँ।
मैं उस घर में लगभग एक साल तक रही, और अंत में मैंने अपने दिल की बात किसी को नहीं बताई। दीदी ने अपने प्रेमी में न तो कम दिलचस्पी दिखाई और न ही मुझमें। मैंने उनकी मित्रता और परिवार के आतिथ्य सत्कार के लिए आभार व्यक्त करते हुए उन्हें विदा किया। कई सालों तक दीदी से मेरी कोई मुलाकात नहीं हुई। एक दिन, बहुत समय बाद, जब मैं जोहान्सबर्ग में वकालत कर रही थी, एक युवती और उसकी माँ मेरे दफ्तर में आईं। उस युवती का एक बच्चा था, और उसका प्रेमी उससे शादी नहीं करना चाहता था; वह उसके खिलाफ मुकदमा दायर करना चाहती थी। वह युवती दीदी ही थीं, बस अब वह थकी-हारी और फीकी पोशाक पहने हुए थीं। उन्हें देखकर मुझे बहुत दुख हुआ, और मैंने सोचा कि काश हालात कुछ और होते। अंत में, उन्होंने अपने प्रेमी के खिलाफ मुकदमा दायर नहीं किया, और फिर कभी उनसे मुलाकात नहीं हुई।
अपनी प्रेम संबंधी कमियों के बावजूद, मैं धीरे-धीरे बस्ती के जीवन में ढल गई और मुझमें आंतरिक शक्ति का भाव विकसित होने लगा, यह विश्वास जागा कि मैं जिस दुनिया में पली-बढ़ी हूँ, उससे बाहर भी अच्छा कर सकती हूँ। धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि तरक्की के लिए मुझे अपने शाही संबंधों या परिवार के सहारे की ज़रूरत नहीं है, और मैंने उन लोगों से रिश्ते बनाए जिन्हें

थेम्बू शाही परिवार से मेरे संबंध के बारे में पता नहीं था और न ही उन्हें इसकी परवाह थी। मेरा अपना घर था, भले ही वह साधारण था, और मुझमें अपने पैरों पर खड़े होने के लिए ज़रूरी आत्मविश्वास और आत्मनिर्भरता विकसित हो रही थी।

1941 के अंत में, मुझे खबर मिली कि रीजेंट जोहान्सबर्ग आ रहे हैं और मुझसे मिलना चाहते हैं। मैं घबराया हुआ था, लेकिन जानता था कि उनसे मिलना मेरा कर्तव्य है, और वास्तव में मैं उनसे मिलना चाहता भी था। वे डब्ल्यूएनएलए परिसर में ठहरे हुए थे, जो विटवाटरसैंड नेटिव लेबर एसोसिएशन का मुख्यालय था, जो रीफ के किनारे खदान श्रमिकों की भर्ती करने वाली एजेंसी थी।
शासक में काफी बदलाव आ गया था, या शायद मुझमें ही बदलाव आ गया था। उन्होंने एक बार भी मेरे भाग जाने, फोर्ट हरे की घटना या उस अनियोजित विवाह का ज़िक्र नहीं किया जो नहीं हो सका। वे विनम्र और चिंतित थे, और पिता तुल्य भाव से मेरी पढ़ाई और भविष्य की योजनाओं के बारे में मुझसे सवाल करते थे। उन्होंने यह समझ लिया था कि मेरा जीवन अब गंभीरता से शुरू हो रहा है और उस राह से अलग होगा जो उन्होंने सोची और योजना बनाई थी। उन्होंने मुझे मेरे रास्ते से भटकाने की कोशिश नहीं की, और मैं इस बात के लिए आभारी थी कि उन्होंने मुझे यह स्वीकार कर लिया था कि अब मैं उनकी ज़िम्मेदारी नहीं हूँ।
शासक से मेरी मुलाकात का दोहरा प्रभाव पड़ा। मैंने स्वयं को पुनर्स्थापित किया और साथ ही उनके और थेम्बू शाही परिवार के प्रति अपने सम्मान को भी पुनः स्थापित किया। मैं अपने पुराने संबंधों के प्रति उदासीन हो गया था, यह रवैया मैंने आंशिक रूप से अपने पलायन को उचित ठहराने और उस दुनिया से बिछड़ने के दर्द को कुछ हद तक कम करने के लिए अपनाया था जिसे मैं प्यार करता था और महत्व देता था। शासक के गर्मजोशी भरे आलिंगन में वापस आना सुकून देने वाला था।
हालांकि रीजेंट मुझसे संतुष्ट प्रतीत हो रहे थे, लेकिन वे जस्टिस से नाराज़ थे, और उन्होंने कहा कि जस्टिस को म्क्वेकेज़वेनी लौटना होगा। जस्टिस का एक युवती से संबंध था, और मैं जानता था कि उसका घर लौटने का कोई

इरादा नहीं था। रीजेंट के जाने के बाद, उनके एक मुखिया बंगिंडावो ने जस्टिस के खिलाफ कानूनी कार्यवाही शुरू की, और जब जस्टिस को स्थानीय आयुक्त के सामने पेश किया गया, तो मैंने उसकी मदद करने का वादा किया। सुनवाई में, मैंने बताया कि जस्टिस बालिग है, और केवल अपने पिता के आदेश से उसे म्क्वेकेज़वेनी लौटने की कोई बाध्यता नहीं है। बंगिंडावो ने जब बोलना शुरू किया, तो उन्होंने मेरे तर्क का जवाब नहीं दिया, बल्कि मेरी वफादारी का फायदा उठाया। उन्होंने मुझे मेरे गोत्र के नाम मदीबा से संबोधित किया, जो मुझे मेरी थेम्बू विरासत की याद दिलाने के लिए सोच-समझकर किया गया था। उन्होंने कहा, "मदीबा, रीजेंट ने तुम्हारी देखभाल की है, तुम्हें शिक्षित किया है, और तुम्हें अपने बेटे की तरह माना है। अब तुम उनके असली बेटे को उनसे दूर रखना चाहते हो। यह उस व्यक्ति की इच्छा के विरुद्ध है जो तुम्हारा वफादार संरक्षक रहा है, और जस्टिस के लिए निर्धारित मार्ग के भी विरुद्ध है।"
बंगिंडावो के भाषण ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। न्याय का भाग्य मुझसे बिल्कुल अलग था। वह एक सरदार का पुत्र था और भविष्य में स्वयं भी एक सरदार बनने वाला था। सुनवाई के बाद, मैंने न्याय से कहा कि मैंने अपना विचार बदल लिया है और मुझे लगता है कि उसे वापस लौट जाना चाहिए। न्याय मेरी प्रतिक्रिया से अचंभित रह गया और उसने मेरी बात सुनने से इनकार कर दिया। उसने वहीं रहने का निश्चय कर लिया और शायद उसने मेरी सलाह अपनी प्रेमिका को भी बता दी होगी, क्योंकि उसके बाद उसने मुझसे कभी बात नहीं की।

1942 की शुरुआत में, पैसे बचाने और जोहान्सबर्ग शहर के करीब रहने के लिए, मैं खोमास के घर के पीछे वाले कमरे से WNLA परिसर में चला गया। खान चैंबर के प्रमुख श्री फेस्टाइल ने मेरी सहायता की, जिन्होंने एक बार फिर मेरे जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। उन्होंने अपनी पहल पर मुझे खनन परिसर में मुफ्त आवास देने का फैसला किया था।
डब्ल्यूएनएलए परिसर आधुनिक, शहरी दक्षिण अफ्रीका का एक बहुजातीय, बहुभाषी समुदाय था। वहाँ सोथो, त्स्वाना, वेंडा, ज़ुलू, पेडी, शांगान, नामीबियाई, मोज़ाम्बिकियन, स्वाज़ी और खोसा लोग रहते थे। बहुत कम लोग अंग्रेज़ी बोलते थे, और वहाँ की आम बोलचाल की भाषा कई भाषाओं का मिश्रण थी जिसे

फनागालो कहा जाता था। वहाँ मैंने न केवल जातीय द्वेष के भड़कते दृश्य देखे, बल्कि विभिन्न पृष्ठभूमियों के लोगों के बीच संभव सौहार्द भी देखा। फिर भी मैं वहाँ बिल्कुल बेमेल महसूस कर रहा था। दिन भर भूमिगत रहने के बजाय, मैं पढ़ाई कर रहा था या एक विधि कार्यालय में काम कर रहा था जहाँ एकमात्र शारीरिक गतिविधि छोटे-मोटे काम करना या फाइलों को अलमारी में रखना था।
क्योंकि डब्ल्यूएनएलए (WNLA) आने वाले सरदारों के लिए एक पड़ाव था, इसलिए मुझे पूरे दक्षिणी अफ्रीका के आदिवासी नेताओं से मिलने का सौभाग्य प्राप्त हुआ। मुझे याद है एक बार बसुटोलैंड (जो अब लेसोथो है) की रानी रीजेंट, मांत्सेबो मोश्वेश्वे से मेरी मुलाकात हुई थी। उनके साथ दो सरदार थे, जो सबाता के पिता, जोंगिलिज़्वे को जानते थे। मैंने उनसे जोंगिलिज़्वे के बारे में पूछा, और एक घंटे तक मुझे ऐसा लगा जैसे मैं थेम्बुलैंड में वापस आ गया हूँ, क्योंकि उन्होंने उनके शुरुआती जीवन के बारे में कई दिलचस्प किस्से सुनाए।
रानी ने मुझ पर विशेष ध्यान दिया और एक बार मुझसे सीधे बात की, लेकिन उन्होंने सेसोथो भाषा में बात की, जिसके मुझे कुछ ही शब्द आते थे। सेसोथो, सोथो और त्स्वाना लोगों की भाषा है, जिनमें से बड़ी संख्या में लोग ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री स्टेट में रहते हैं। उन्होंने अविश्वास भरी निगाहों से मेरी ओर देखा और फिर अंग्रेजी में कहा, "तुम कैसे वकील और नेता बनोगे जो अपने ही लोगों की भाषा नहीं बोल सकते?" मेरे पास कोई जवाब नहीं था। इस सवाल ने मुझे शर्मिंदा और गंभीर कर दिया; इसने मुझे अपनी संकीर्ण सोच और अपने लोगों की सेवा करने के कार्य के लिए अपनी अपर्याप्त तैयारी का एहसास कराया। मैं अनजाने में श्वेत सरकार द्वारा पोषित जातीय विभाजनों का शिकार हो गया था और मुझे अपने ही सगे-संबंधियों से बात करना नहीं आता था। भाषा के बिना, कोई लोगों से बात नहीं कर सकता और उन्हें समझ नहीं सकता; कोई उनकी आशाओं और आकांक्षाओं को साझा नहीं कर सकता, उनके इतिहास को नहीं समझ सकता, उनकी कविता की सराहना नहीं कर सकता या उनके गीतों का आनंद नहीं ले सकता। मुझे फिर से एहसास हुआ कि हम अलग-अलग भाषाओं वाले अलग-अलग लोग नहीं थे; हम एक ही लोग थे, बस हमारी भाषाएँ अलग-अलग थीं।

जीवन, गौर रादेबे जैसे लोगों से मेरा संपर्क, लॉ फर्म में मेरे अनुभव, ने मेरी मान्यताओं को पूरी तरह से बदल दिया था। मैंने उस नौजवान को याद किया जिसने म्क्वेकेज़वेनी को एक भोले-भाले और संकीर्ण सोच वाले व्यक्ति के रूप में छोड़ा था जिसने दुनिया को बहुत कम देखा था। अब मुझे विश्वास था कि मैं चीजों को वैसे ही देख रहा था जैसी वे थीं। वह भी, बेशक, एक भ्रम ही था। मेरे मन और बुद्धि के बीच अब भी एक आंतरिक संघर्ष चल रहा था। मेरा मन कहता था कि मैं एक थेम्बू हूँ, कि मुझे पाला-पोसा और शिक्षा दी गई ताकि मैं राजशाही को आगे बढ़ाने में एक विशेष भूमिका निभा सकूँ। क्या मृतकों के प्रति मेरा कोई दायित्व नहीं था? मेरे पिता के प्रति, जिन्होंने मुझे शासक की देखरेख में सौंपा था? स्वयं शासक के प्रति, जिन्होंने मुझे पिता की तरह पाला-पोसा था? लेकिन मेरी बुद्धि कहती थी कि हर व्यक्ति को अपने भविष्य की योजना स्वयं बनाने और जीवन में अपनी भूमिका चुनने का अधिकार है। क्या मुझे अपने निर्णय स्वयं लेने की अनुमति नहीं थी?
जस्टिस की परिस्थितियाँ मुझसे भिन्न थीं, और रीजेंट की मृत्यु के बाद उन पर नई महत्वपूर्ण जिम्मेदारियाँ आ पड़ीं। उन्हें रीजेंट के बाद मुखिया बनना था और उन्होंने म्कहेकेज़वेनी में रहकर अपने जन्मसिद्ध अधिकार को ग्रहण करने का निर्णय लिया था। मुझे जोहान्सबर्ग लौटना पड़ा, और मैं उनके राज्याभिषेक समारोह में भी शामिल नहीं हो सका। मेरी भाषा में एक कहावत है: "नदिवेलिमिलाम्बो एनामगामा" (मैंने प्रसिद्ध नदियाँ पार की हैं)। इसका अर्थ है कि किसी ने लंबी दूरी तय की है, व्यापक अनुभव प्राप्त किया है और उससे ज्ञान अर्जित किया है। जोहान्सबर्ग लौटते समय मुझे यही बात याद आई। 1934 से मैंने अपने देश में कई महत्वपूर्ण नदियाँ पार की थीं: हील्डटाउन जाते समय म्बाशे और ग्रेट केई; और जोहान्सबर्ग जाते समय ऑरेंज और वाल। लेकिन अभी भी मुझे कई नदियाँ पार करनी बाकी थीं।

1942 के अंत में मैंने बी.ए. की अंतिम परीक्षा उत्तीर्ण की। मैंने वह मुकाम हासिल कर लिया था जिसे मैं कभी बहुत गौरवशाली मानता था। मुझे बी.ए. की उपाधि प्राप्त करने पर गर्व था, लेकिन मैं यह भी जानता था कि यह डिग्री न तो सफलता की गारंटी थी और न ही आसान सफलता का पासपोर्ट।

फर्म में, मैं गौर के करीब आ गया था, जिससे श्री सिडेलस्की काफी चिढ़ जाते थे। गौर का तर्क था कि शिक्षा हमारी प्रगति के लिए आवश्यक है, लेकिन उन्होंने यह भी बताया कि कोई भी राष्ट्र या देश केवल शिक्षा के माध्यम से ही स्वतंत्र नहीं हुआ है। गौर ने कहा, "शिक्षा अच्छी बात है, लेकिन अगर हम शिक्षा पर निर्भर रहेंगे, तो हमें अपनी स्वतंत्रता के लिए हज़ार साल इंतजार करना पड़ेगा। हम गरीब हैं, हमारे पास शिक्षक कम हैं और स्कूल तो और भी कम हैं। हमारे पास खुद को शिक्षित करने की क्षमता भी नहीं है।"
गौर सैद्धांतिक बातों के बजाय समाधान खोजने में विश्वास रखते थे। उन्होंने जोर देकर कहा कि अफ्रीकियों के लिए परिवर्तन का सूत्रधार अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस (एएनसी) थी; दक्षिण अफ्रीका में सत्ता हासिल करने का सबसे अच्छा तरीका उसकी नीतियां थीं। उन्होंने परिवर्तन की वकालत करने के एएनसी के लंबे इतिहास पर बल दिया और बताया कि एएनसी देश का सबसे पुराना राष्ट्रीय अफ्रीकी संगठन है, जिसकी स्थापना 1912 में हुई थी। इसके संविधान में नस्लवाद की निंदा की गई है, इसके अध्यक्ष विभिन्न जनजातीय समूहों से रहे हैं, और इसने अफ्रीकियों को दक्षिण अफ्रीका का पूर्ण नागरिक बनाने के लक्ष्य का प्रचार किया है।
औपचारिक शिक्षा न होने के बावजूद, गौर ज्ञान के लगभग हर क्षेत्र में मुझसे श्रेष्ठ थे। दोपहर के भोजन के समय वे अक्सर अचानक व्याख्यान देते थे; वे मुझे पढ़ने के लिए किताबें उधार देते थे, मुझे बात करने के लिए लोगों की सलाह देते थे, और मुझे बैठकों में शामिल होने के लिए कहते थे। मैंने फोर्ट हरे में आधुनिक इतिहास के दो पाठ्यक्रम लिए थे, और यद्यपि मुझे कई तथ्य पता थे, गौर विशिष्ट कार्यों के कारणों, मनुष्यों और राष्ट्रों द्वारा किए गए कार्यों के पीछे के कारणों को समझाने में सक्षम थे। मुझे ऐसा लगता था मानो मैं इतिहास को नए सिरे से सीख रहा हूँ।
मेरे मन पर सबसे गहरा प्रभाव गौर की स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अटूट प्रतिबद्धता ने डाला। उनका जीवन मुक्ति की खोज में ही व्यतीत होता था। गौर कभी-कभी एक ही दिन में कई सभाओं में भाग लेते थे, जहाँ वे एक प्रमुख वक्ता के रूप में अपनी भूमिका निभाते थे। ऐसा लगता था मानो वे क्रांति के सिवा किसी और बात के बारे में नहीं सोचते थे।
मैं गौर के साथ टाउनशिप सलाहकार बोर्ड और एएनसी दोनों की बैठकों में गया। मैं एक पर्यवेक्षक के रूप में गया था, प्रतिभागी के रूप में नहीं, क्योंकि

मुझे नहीं लगता कि मैंने कभी कुछ बोला। मैं चर्चा के मुद्दों को समझना चाहता था, तर्कों का मूल्यांकन करना चाहता था और इसमें शामिल लोगों की योग्यता देखना चाहता था। सलाहकार बोर्ड की बैठकें औपचारिक और नौकरशाही वाली थीं, लेकिन एएनसी की बैठकें संसद, पास कानूनों, किराए, बस किराए - अफ़्रीकी लोगों को प्रभावित करने वाले हर विषय पर जीवंत बहस और चर्चा से भरी होती थीं।
अगस्त 1943 में, मैं गौर और दस हज़ार अन्य लोगों के साथ, अलेक्जेंड्रा बस बहिष्कार के समर्थन में एक मार्च में शामिल हुआ। यह बहिष्कार किराए में चार पेंस से पाँच पेंस की बढ़ोतरी के विरोध में था। गौर इस आंदोलन के नेताओं में से एक थे और मैंने उन्हें इसमें भाग लेते हुए देखा। इस अभियान का मुझ पर गहरा प्रभाव पड़ा। एक तरह से, मैं एक दर्शक की भूमिका से हटकर एक भागीदार बन गया था। मैंने पाया कि अपने लोगों के साथ मार्च करना रोमांचकारी और प्रेरणादायक था। लेकिन मैं बहिष्कार की प्रभावशीलता से भी प्रभावित हुआ: नौ दिनों के बाद, जब बसें खाली चलीं, तो कंपनी ने किराया वापस चार पेंस कर दिया।

फर्म में मैं केवल गौर के विचारों पर ही ध्यान नहीं देता था। हैंस मुलर एक श्वेत संपत्ति एजेंट थे जो श्री सिडेलस्की के साथ व्यापार करते थे और मुझसे अक्सर चर्चा करते थे। वे एक आदर्श व्यवसायी थे जो दुनिया को मांग और आपूर्ति के नजरिए से देखते थे। एक दिन, श्री मुलर ने खिड़की की ओर इशारा करते हुए कहा, “बाहर देखो, नेल्सन। क्या तुम उन पुरुषों और महिलाओं को सड़क पर इधर-उधर भागते हुए देख रहे हो? वे क्या चाहते हैं? वे इतनी लगन से किस लिए काम कर रहे हैं? मैं तुम्हें बताता हूँ: वे सभी, बिना किसी अपवाद के, धन और दौलत के पीछे पड़े हैं। क्योंकि धन और दौलत ही सुख है। तुम्हें इसी के लिए संघर्ष करना चाहिए: धन, और कुछ नहीं। एक बार जब तुम्हारे पास पर्याप्त धन हो जाए, तो जीवन में तुम्हें और कुछ नहीं चाहिए होगा।”
विलियम स्मिथ एक अश्वेत व्यक्ति थे जो अफ़्रीकी रियल एस्टेट व्यापार में शामिल थे और अक्सर कार्यालय के आसपास रहते थे। स्मिथ आईसीयू (औद्योगिक और वाणिज्यिक श्रमिक संघ) के एक अनुभवी सदस्य थे, जो दक्षिण अफ्रीका का पहला

अश्वेत ट्रेड यूनियन था, जिसकी स्थापना क्लेमेंट्स कडाली ने की थी, लेकिन उन दिनों के बाद से उनके विचारों में नाटकीय रूप से बदलाव आ गया था। उन्होंने कहा, "नेल्सन, मैं लंबे समय से राजनीति में शामिल रहा हूँ, और मुझे इसका हर पल अफ़सोस है। मैंने अपने जीवन के सबसे अच्छे साल व्यर्थ के प्रयासों में उन घमंडी और स्वार्थी लोगों की सेवा करने में बर्बाद कर दिए, जिन्होंने अपने हितों को उन लोगों के हितों से ऊपर रखा जिनकी सेवा करने का वे दिखावा करते थे। मेरे अनुभव में, राजनीति गरीबों से पैसा लूटने का एक धंधा मात्र है।"
श्री सिडेलस्की इन चर्चाओं में शामिल नहीं होते थे। ऐसा लगता था कि वे राजनीति पर चर्चा को उतना ही समय की बर्बादी मानते थे जितना कि उसमें भाग लेना। बार-बार वे मुझे राजनीति से दूर रहने की सलाह देते थे। उन्होंने मुझे गौर और वाल्टर सिसुलु के बारे में चेतावनी दी। उन्होंने कहा, "ये लोग तुम्हारा दिमाग खराब कर देंगे।" उन्होंने पूछा, "नेल्सन, तुम वकील बनना चाहते हो, है ना?" मैंने हाँ कहा। "और अगर तुम वकील हो, तो तुम एक सफल वकील बनना चाहते हो, है ना?" मैंने फिर हाँ कहा। उन्होंने कहा, "अच्छा, अगर तुम राजनीति में जाओगे, तो तुम्हारा काम ठप्प हो जाएगा। तुम उन अधिकारियों के साथ मुसीबत में पड़ जाओगे जो अक्सर तुम्हारे काम में तुम्हारे सहयोगी होते हैं। तुम अपने सारे मुवक्किल खो दोगे, दिवालिया हो जाओगे, तुम्हारा परिवार बिखर जाएगा, और अंत में तुम जेल में जाओगे। राजनीति में जाने पर यही होगा।"
मैंने इन लोगों की बातें सुनीं और उनके विचारों पर ध्यानपूर्वक विचार किया। सभी तर्कों में कुछ न कुछ सच्चाई थी। मैं पहले से ही किसी न किसी प्रकार की राजनीतिक भागीदारी की ओर झुकाव महसूस कर रहा था, लेकिन मुझे यह नहीं पता था कि किस प्रकार और कैसे, और मैं असमंजस में किनारे पर ही खड़ा रहा कि क्या करूं।
मेरे पेशे की बात करें तो, गौर ने सिर्फ सलाह देने से कहीं बढ़कर काम किया। 1943 की शुरुआत में एक दिन, जब मुझे फर्म में आए दो साल से भी कम समय हुआ था, गौर मुझे एक तरफ ले गए और बोले, “मेरे बेटे, जब तक मैं फर्म में हूँ, वे तुम्हें कभी प्रशिक्षु नहीं बनाएंगे, चाहे तुम्हारे पास डिग्री हो या न हो।” मैं चौंक गया और गौर से कहा कि यह सच नहीं हो सकता, क्योंकि वे तो वकील बनने की ट्रेनिंग भी नहीं ले रहे थे। “इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, नेल्सन,”

उन्होंने आगे कहा। “वे कहेंगे, ‘हमारे पास गौर हैं, वे हमारे लोगों को कानून की अच्छी समझ रखते हैं, हमें किसी और की क्या ज़रूरत है? गौर पहले से ही फर्म के लिए ग्राहक ला रहे हैं।’ लेकिन वे यह बात तुम्हारे सामने नहीं कहेंगे; वे बस टालते रहेंगे। इस देश में हमारे संघर्ष के भविष्य के लिए तुम्हारा वकील बनना ज़रूरी है, इसलिए मैं फर्म छोड़कर अपनी खुद की एस्टेट एजेंसी शुरू करने जा रहा हूँ। मेरे जाने के बाद, उनके पास तुम्हें प्रशिक्षु बनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।”
मैंने उनसे इस्तीफा न देने की विनती की, लेकिन वे टस से मस नहीं हुए। कुछ ही दिनों में उन्होंने श्री सिडेलस्की को अपना इस्तीफा दे दिया, और श्री सिडेलस्की ने वादे के मुताबिक मुझे प्रशिक्षु के रूप में नियुक्त कर लिया। मैं यह नहीं कह सकता कि गौर की अनुपस्थिति का इससे कोई संबंध था या नहीं, लेकिन उनका इस्तीफा उनकी उदारता का एक और उदाहरण था।

1943 की शुरुआत में, UNISA से परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, मैं स्नातक समारोह के लिए फोर्ट हरे लौट आया। विश्वविद्यालय जाने से पहले, मैंने अपने लिए एक अच्छा सूट खरीदने का फैसला किया। इसके लिए मुझे वाल्टर सिसुलु से पैसे उधार लेने पड़े। फोर्ट हरे जाते समय मेरे पास एक नया सूट था, जो रीजेंट ने मेरे लिए खरीदा था, और अब लौटते समय भी मेरे पास एक नया सूट होना था। मैंने अपने मित्र और सहपाठी रैंडल पेटेनी से अकादमिक पोशाक उधार ली। मेरे भतीजे के. डी. मातांज़िमा, जिन्होंने कई साल पहले स्नातक की उपाधि प्राप्त की थी, मेरी माँ और रीजेंट की विधवा नो-इंग्लैंड को समारोह में ले गए। मुझे अपनी माँ की उपस्थिति से प्रसन्नता हुई, लेकिन नो-इंग्लैंड के आने से ऐसा लगा मानो स्वयं रीजेंट ने इस आयोजन को आशीर्वाद दिया हो। स्नातक की पढ़ाई पूरी करने के बाद, मैंने कुछ दिन दलिवोंगा (के.डी. का गोत्र नाम, जिसे मैं उन्हें इसी नाम से पुकारता था) के साथ कमाता स्थित उनके घर पर बिताए। दलिवोंगा ने पारंपरिक नेतृत्व का मार्ग चुन लिया था। वे ट्रांसकेई के सबसे पश्चिमी भाग में स्थित प्रवासी थेम्बुलैंड के प्रमुख बनने के उत्तराधिकार क्रम में थे, और जब मैं उनके साथ रह रहा था, तब उन्होंने मुझे वकील बनने की योग्यता प्राप्त करने के बाद उमटाटा लौटने के

लिए प्रेरित किया। उन्होंने कहा, "तुम जोहान्सबर्ग में क्यों रहते हो? तुम्हारी ज़रूरत यहाँ ज़्यादा है।"
यह एक वाजिब बात थी; ट्रांसकेई की तुलना में ट्रांसवाल में पेशेवर अफ़्रीकी लोगों की संख्या निस्संदेह अधिक थी। मैंने दलिवोंगा से कहा कि उनके सुझाव समय से पहले थे। लेकिन मन ही मन मैं जानता था कि मैं एक अलग प्रतिबद्धता की ओर बढ़ रहा हूँ। गौर और वाल्टर के साथ अपनी मित्रता के माध्यम से, मैं यह समझने लगा था कि मेरा कर्तव्य केवल किसी विशेष क्षेत्र या शाखा के प्रति नहीं, बल्कि समग्र रूप से अपने लोगों के प्रति है। मुझे ऐसा महसूस हो रहा था कि मेरे जीवन की सभी धाराएँ मुझे ट्रांसकेई से दूर ले जाकर उस केंद्र की ओर ले जा रही थीं, जहाँ क्षेत्रीय और जातीय निष्ठाएँ एक साझा उद्देश्य के आगे फीकी पड़ जाती थीं।
फोर्ट हरे में हुए दीक्षांत समारोह ने मुझे आत्मनिरीक्षण और चिंतन का अवसर दिया। मेरे पुराने विचारों और वास्तविक अनुभव के बीच का अंतर मुझे सबसे ज़्यादा झकझोर कर रख गया। मैंने यह धारणा त्याग दी थी कि स्नातक स्वतः ही नेता बन जाते हैं और थेम्बू राजपरिवार से संबंध होने के कारण मुझे सम्मान की गारंटी मिलती है। एक सफल करियर और आरामदायक वेतन अब मेरे अंतिम लक्ष्य नहीं रहे। मैं राजनीति की दुनिया की ओर आकर्षित होने लगा क्योंकि मैं अपने पुराने विश्वासों से संतुष्ट नहीं था।
जोहान्सबर्ग में, मैं ऐसे लोगों के बीच पला-बढ़ा जहाँ उच्च शैक्षणिक योग्यताओं से अधिक व्यावहारिक ज्ञान और अनुभव को महत्व दिया जाता था। अपनी डिग्री प्राप्त करते समय ही मुझे एहसास हुआ कि विश्वविद्यालय में मैंने जो कुछ भी सीखा था, वह मेरे नए परिवेश में शायद ही प्रासंगिक था। विश्वविद्यालय में, शिक्षकों ने नस्लीय उत्पीड़न, अफ्रीकियों के लिए अवसरों की कमी और अश्वेतों को दबाने वाले कानूनों और नियमों के जाल जैसे विषयों से परहेज किया था। लेकिन जोहान्सबर्ग में अपने जीवन में, मुझे इन चीजों का सामना हर दिन करना पड़ा। किसी ने भी मुझे नस्लीय भेदभाव की बुराइयों को दूर करने का तरीका नहीं बताया था, और मुझे यह सब अनुभव से ही सीखना पड़ा।

1943 की शुरुआत में जब मैं जोहान्सबर्ग लौटा, तो मैंने विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय में कानून में स्नातक की उपाधि (एलएलबी.) के लिए दाखिला लिया, जो एक वकील बनने के लिए प्रारंभिक शैक्षणिक प्रशिक्षण होता है। विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय, जिसे सभी "विट्स" के नाम से जानते हैं, उत्तर-मध्य जोहान्सबर्ग के ब्रामफोंटेन में स्थित है, और कई लोगों द्वारा इसे दक्षिण अफ्रीका का प्रमुख अंग्रेजी भाषी विश्वविद्यालय माना जाता है। लॉ फर्म में काम करने के दौरान पहली बार मेरा श्वेत लोगों से नियमित संपर्क हुआ, वहीं विश्वविद्यालय ने मुझे अपनी ही उम्र के श्वेत छात्रों के एक समूह से परिचित कराया। फोर्ट हरे में, ग्राहमस्टाउन स्थित रोड्स विश्वविद्यालय के श्वेत छात्रों से हमारा कभी-कभार संपर्क होता था, लेकिन विट्स विश्वविद्यालय में, मैं श्वेत छात्रों के साथ ही कक्षाएं ले रहा था। यह उनके लिए उतना ही नया था जितना मेरे लिए, क्योंकि मैं विधि संकाय में एकमात्र अफ्रीकी छात्र था।
दक्षिण अफ्रीका के अंग्रेजी भाषी विश्वविद्यालय उदारवादी मूल्यों के महान उद्गम स्थल थे। इन संस्थानों की यह एक बड़ी उपलब्धि थी कि उन्होंने अश्वेत छात्रों को प्रवेश दिया। अफ़्रीकी भाषा बोलने वाले विश्वविद्यालयों के लिए यह बात अकल्पनीय थी।
विश्वविद्यालय के उदारवादी मूल्यों के बावजूद, मैं वहाँ कभी पूरी तरह सहज महसूस नहीं कर पाया। हमेशा एकमात्र अफ्रीकी होने के नाते, जहाँ मुझे ज़्यादा से ज़्यादा एक अजूबा और कम से कम एक घुसपैठिया समझा जाता था, यह एक सुखद अनुभव नहीं था। मेरा व्यवहार सतर्क था, और मुझे उदारता और शत्रुता दोनों का सामना करना पड़ा। हालाँकि मुझे कुछ सहानुभूति रखने वाले श्वेत लोग मिले जो मित्र और बाद में सहकर्मी बने, विट्स विश्वविद्यालय के अधिकांश श्वेत लोग उदार या रंगभेद-मुक्त नहीं थे। मुझे याद है कि एक दिन मैं व्याख्यान में कुछ मिनट देर से पहुँचा और अपने सहपाठी सारेल टिघी के बगल में बैठ गया, जो बाद में यूनाइटेड पार्टी के सांसद बने। हालाँकि व्याख्यान शुरू हो चुका था और कुछ ही सीटें खाली थीं, फिर भी उन्होंने दिखावटी ढंग से अपना सामान समेटा और मुझसे दूर एक सीट पर जाकर बैठ गए। इस तरह का व्यवहार अपवाद नहीं, बल्कि नियम था। किसी ने भी 'काफ़िर' शब्द का उच्चारण नहीं किया; उनकी शत्रुता कम स्पष्ट थी, लेकिन मैंने उसे महसूस किया।

हमारे विधि के प्रोफेसर, श्री हालो, एक सख्त और बौद्धिक किस्म के व्यक्ति थे, जो अपने छात्रों की स्वतंत्रता को बिल्कुल बर्दाश्त नहीं करते थे। महिलाओं और अफ्रीकियों के मामले में कानून को लेकर उनका नजरिया कुछ अजीब था: उनका मानना था कि ये दोनों समूह वकील बनने के लिए नहीं बने हैं। उनका विचार था कि कानून एक सामाजिक विज्ञान है और महिलाएं और अफ्रीकी इसकी पेचीदगियों को समझने के लिए पर्याप्त अनुशासित नहीं हैं। एक बार उन्होंने मुझसे कहा था कि मुझे विट्स में नहीं बल्कि यूएनआईएसए से डिग्री हासिल करनी चाहिए। हालांकि मैं उनके विचारों से सहमत नहीं थी, लेकिन मैंने उन्हें गलत साबित करने के लिए कुछ खास प्रयास नहीं किया। विधि की छात्रा के रूप में मेरा प्रदर्शन निराशाजनक रहा।
विट्स विश्वविद्यालय में मेरी मुलाकात कई ऐसे लोगों से हुई जिन्होंने मुझे मुक्ति संघर्ष के उतार-चढ़ाव का अनुभव कराया और जिनके बिना मैं शायद ही कुछ हासिल कर पाता। कई श्वेत छात्रों ने मुझे सहज महसूस कराने के लिए हर संभव प्रयास किया। विट्स में अपने पहले सत्र के दौरान मेरी मुलाकात जो स्लोवो और उनकी भावी पत्नी रूथ फर्स्ट से हुई। तब भी और अब भी, जो का दिमाग मेरी नज़र में सबसे तेज़ और पैनी नज़र वाला था। वे एक कट्टर कम्युनिस्ट थे और अपनी जोशीली पार्टियों के लिए जाने जाते थे। रूथ का व्यक्तित्व मिलनसार था और वे एक प्रतिभाशाली लेखिका थीं। दोनों दक्षिण अफ्रीका में बसे यहूदी अप्रवासियों की संतान थे। जॉर्ज बिज़ोस और ब्रैम फिशर के साथ मेरी आजीवन मित्रता शुरू हुई। ग्रीक अप्रवासियों के पुत्र जॉर्ज एक ऐसे व्यक्ति थे जिनमें सहानुभूति और पैनी नज़र का अद्भुत मेल था। अंशकालिक व्याख्याता ब्रैम फिशर एक प्रतिष्ठित अफ़्रीकानर परिवार के वंशज थे: उनके दादा ऑरेंज रिवर कॉलोनी के प्रधानमंत्री थे और उनके पिता ऑरेंज फ्री स्टेट के न्यायाधीश-अध्यक्ष थे। हालांकि वे दक्षिण अफ्रीका के प्रधानमंत्री बन सकते थे, लेकिन वे स्वतंत्रता संग्राम के उन सबसे साहसी और दृढ़ मित्रों में से एक बन गए जिन्हें मैं जानता हूँ। मेरी दोस्ती टोनी ओ'डॉउड और हेरोल्ड वोल्पे से हुई, जो राजनीतिक कट्टरपंथी और कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य थे, और जूल्स ब्राउडे और उनकी पत्नी से भी, जो रंगभेद विरोधी आंदोलन के उदारवादी समर्थक थे।
मैंने कई भारतीय छात्रों से भी गहरी दोस्ती कर ली। हालाँकि फोर्ट हरे में कुछ ही भारतीय छात्र थे, लेकिन वे एक अलग छात्रावास में रहते थे और मेरा

उनसे बहुत कम संपर्क होता था। विट्स में मेरी मुलाकात इस्माइल मीर, जे. एन. सिंह, अहमद भूला और रामलाल भूलिया से हुई और हम दोस्त बन गए। इस घनिष्ठ समुदाय का केंद्र इस्माइल का अपार्टमेंट था, फ्लैट नंबर 13, खोलवाद हाउस, जो शहर के बीचोंबीच एक रिहायशी इमारत में चार कमरे थे। वहाँ हम पढ़ाई करते, बातें करते और यहाँ तक कि सुबह के शुरुआती घंटों तक नाचते भी थे, और यह युवा स्वतंत्रता सेनानियों का एक तरह का मुख्यालय बन गया था। जब ऑरलैंडो वापस जाने वाली आखिरी ट्रेन छूटने में बहुत देर हो जाती थी, तो मैं कभी-कभी वहीं सो जाता था।
तेज-तर्रार और गंभीर स्वभाव के इस्माइल मीर का जन्म नेटाल में हुआ था। विट्स विश्वविद्यालय में विधि विद्यालय में अध्ययन के दौरान वे ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस के एक प्रमुख सदस्य बन गए। जे. एन. सिंह एक लोकप्रिय और आकर्षक व्यक्ति थे, जो सभी रंगों के लोगों के साथ सहजता से पेश आते थे और कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य भी थे। एक दिन, इस्माइल, जे. एन. और मैं खोलवाद हाउस जाने की जल्दी में थे, और हमने ट्राम में चढ़ गए, जबकि भारतीयों को तो अनुमति थी, लेकिन अफ्रीकियों को नहीं। ट्राम में चढ़े अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि कंडक्टर ने इस्माइल और जे. एन. की ओर मुड़कर अफ़्रीकी भाषा में कहा कि उनके "काफ़िर मित्र" को ट्राम में चढ़ने की अनुमति नहीं है। इस्माइल और जे. एन. कंडक्टर पर भड़क उठे और कहा कि वह काफ़िर शब्द का अर्थ भी नहीं समझता और मुझे इस नाम से पुकारना अपमानजनक है। कंडक्टर ने तुरंत ट्राम रोक दी और एक पुलिसकर्मी को बुलाया, जिसने हमें गिरफ्तार कर लिया, थाने ले गया और हम पर आरोप लगाए। हमें अगले दिन अदालत में पेश होने का आदेश दिया गया। उसी रात, इस्माइल और जे. एन. ने ब्रैम फिशर को हमारा बचाव करने के लिए नियुक्त किया। अगले दिन, मजिस्ट्रेट ब्रैम के पारिवारिक संबंधों से काफी प्रभावित दिखे। हमें तुरंत बरी कर दिया गया और मैंने प्रत्यक्ष रूप से देखा कि न्याय बिल्कुल भी अंधा नहीं होता। विट्स ने मेरे लिए एक नई दुनिया खोल दी, विचारों, राजनीतिक मान्यताओं और वाद-विवादों की दुनिया, एक ऐसी दुनिया जहाँ लोग राजनीति के प्रति बेहद उत्साही थे। मैं अपनी पीढ़ी के श्वेत और भारतीय बुद्धिजीवियों के बीच था, उन युवाओं के बीच जो आने वाले कुछ वर्षों के सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक आंदोलनों के अग्रदूत बनेंगे। मैंने पहली बार अपनी ही उम्र के ऐसे लोगों को देखा जो मुक्ति संघर्ष के साथ दृढ़ता से जुड़े हुए थे, जो अपने अपेक्षाकृत

विशेषाधिकार के बावजूद, शोषितों के हित के लिए खुद को बलिदान करने को तैयार थे।

[redacted]

[redacted]
[redacted]

11

मैं उस पल को ठीक-ठीक नहीं बता सकता जब मैं राजनीति में जागरूक हुआ, जब मुझे पता चला कि मैं अपना जीवन मुक्ति संघर्ष में व्यतीत करूंगा। दक्षिण अफ्रीका में अफ्रीकी होने का अर्थ है कि व्यक्ति जन्म से ही राजनीति में जागरूक हो जाता है, चाहे वह इसे स्वीकार करे या न करे। एक अफ्रीकी बच्चा केवल अफ्रीकियों के लिए बने अस्पताल में पैदा होता है, केवल अफ्रीकियों के लिए बनी बस में घर जाता है, केवल अफ्रीकियों के लिए बने इलाके में रहता है, और यदि वह स्कूल जाता भी है तो केवल अफ्रीकियों के लिए बने स्कूलों में पढ़ता है।
जब वह बड़ा होगा, तो वह केवल अफ़्रीकी लोगों के लिए आरक्षित नौकरियाँ कर सकेगा, केवल अफ़्रीकी बस्तियों में घर किराए पर ले सकेगा, केवल अफ़्रीकी ट्रेनों में सफ़र कर सकेगा, और दिन या रात किसी भी समय उसे रोका जा सकता है और उससे पासपोर्ट दिखाने को कहा जा सकता है, ऐसा न करने पर उसे गिरफ़्तार कर जेल में डाल दिया जाएगा। उसका जीवन नस्लवादी कानूनों और नियमों से घिरा हुआ है जो उसके विकास को बाधित करते हैं, उसकी क्षमता को धूमिल करते हैं और उसके जीवन को अवरुद्ध करते हैं। यही वास्तविकता थी, और इससे निपटने के कई तरीके थे।
मुझे कोई आध्यात्मिक अहसास नहीं हुआ, कोई विलक्षण रहस्योद्घाटन नहीं हुआ, कोई सत्य का क्षण नहीं आया, बल्कि हजारों अपमानों, हजारों तिरस्कारों, हजारों अनसुने पलों के निरंतर संचय ने मेरे भीतर क्रोध, विद्रोह और उस व्यवस्था से लड़ने की इच्छा उत्पन्न कर दी जिसने मेरे लोगों को कैद कर रखा था। ऐसा कोई विशेष दिन नहीं था जब मैंने कहा हो, "आज से मैं अपने लोगों की मुक्ति के लिए स्वयं को समर्पित कर दूंगा"; बल्कि, मैंने स्वयं को ऐसा करते हुए पाया, और मेरे पास इसके अलावा कोई विकल्प नहीं था।
मैंने कई ऐसे लोगों का ज़िक्र किया है जिन्होंने मुझे प्रभावित किया, लेकिन धीरे-धीरे मैं वाल्टर सिसुलु के ज्ञानपूर्ण मार्गदर्शन में आ गया। वाल्टर दृढ़, तर्कसंगत, व्यावहारिक और समर्पित थे। संकट के समय वे कभी आपा नहीं खोते थे; जब दूसरे शोर मचा रहे होते थे, तब वे अक्सर चुप रहते थे। उनका मानना था कि दक्षिण अफ्रीका में बदलाव लाने का ज़रिया एएनसी है, जो

अश्वेतों की आशाओं और आकांक्षाओं का भंडार है। कभी-कभी किसी संगठन का मूल्यांकन उसमें शामिल लोगों से किया जा सकता है, और मैं जानता था कि मैं किसी भी ऐसे संगठन का सदस्य होने पर गर्व महसूस करूंगा जिसमें वाल्टर सदस्य हों। उस समय, विकल्प बहुत कम थे। एएनसी एकमात्र ऐसा संगठन था जो सभी का स्वागत करता था, जो खुद को एक ऐसी छतरी मानता था जिसके नीचे सभी अफ्रीकी शरण पा सकते थे।
1940 के दशक में बदलाव की हवा चल रही थी। रूजवेल्ट और चर्चिल द्वारा हस्ताक्षरित 1941 के अटलांटिक चार्टर ने प्रत्येक मनुष्य की गरिमा में विश्वास को पुनः स्थापित किया और कई लोकतांत्रिक सिद्धांतों का प्रचार किया। पश्चिम में कुछ लोगों ने इस चार्टर को खोखले वादे समझा, लेकिन अफ्रीका में हम ऐसा नहीं मानते थे। अटलांटिक चार्टर और अत्याचार एवं दमन के विरुद्ध मित्र देशों के संघर्ष से प्रेरित होकर, एएनसी ने अपना स्वयं का चार्टर बनाया, जिसे अफ्रीकी दावे कहा गया, जिसमें सभी अफ्रीकियों के लिए पूर्ण नागरिकता, भूमि खरीदने का अधिकार और सभी भेदभावपूर्ण कानूनों को निरस्त करने की मांग की गई थी। हमें आशा थी कि सरकार और आम दक्षिण अफ्रीकी यह समझेंगे कि जिन सिद्धांतों के लिए वे यूरोप में लड़ रहे थे, वही सिद्धांत हम अपने देश में भी अपना रहे थे।

ऑरलैंडो में वाल्टर का घर कार्यकर्ताओं और एएनसी सदस्यों के लिए एक तीर्थस्थल था। यह एक गर्मजोशी भरा और स्वागतपूर्ण स्थान था और मैं अक्सर वहां राजनीतिक चर्चा सुनने या मासिसुलु के हाथ का खाना चखने जाता था। 1943 की एक रात मेरी मुलाकात एंटोन लेम्बेडे से हुई, जिनके पास कला में स्नातकोत्तर और कानून में स्नातक की डिग्री थी, और ए. पी. म्दा से भी। लेम्बेडे को बोलते ही मैंने जान लिया कि मैं एक ऐसे प्रभावशाली व्यक्तित्व से मिल रहा हूं जो मौलिक और अक्सर चौंकाने वाले तरीके से सोचता था। उस समय वे पूरे दक्षिण अफ्रीका में मुट्ठी भर अफ्रीकी वकीलों में से एक थे और एएनसी के संस्थापकों में से एक, आदरणीय डॉ. पिक्सले का सेमे के कानूनी सहयोगी थे।

लेम्बेडे ने कहा कि अफ्रीका अश्वेतों का महाद्वीप है, और अफ्रीकियों का यह कर्तव्य है कि वे स्वयं को पुनः स्थापित करें और जो उनका अधिकार है उसे वापस प्राप्त करें। वे अश्वेतों की हीन भावना के विचार से घृणा करते थे और पश्चिम तथा उनके विचारों की पूजा और मूर्तिपूजा की कड़ी निंदा करते थे। उन्होंने कहा कि हीन भावना ही मुक्ति की राह में सबसे बड़ी बाधा है। उन्होंने कहा कि जहाँ भी अफ्रीकियों को अवसर दिया गया है, वे श्वेत व्यक्ति के समान ही विकास करने में सक्षम हैं, और इसके लिए उन्होंने मार्कस गार्वे, डब्ल्यू. ई. बी. डु बोइस और हैले सेलासी जैसे अफ्रीकी नायकों का उदाहरण दिया। उन्होंने कहा, "मेरी त्वचा का रंग सुंदर है, ठीक वैसे ही जैसे मातृभूमि अफ्रीका की काली मिट्टी।" उनका मानना था कि सफल जन आंदोलन शुरू करने से पहले अश्वेतों को अपनी आत्म-छवि में सुधार करना होगा। उन्होंने आत्मनिर्भरता और आत्मनिर्णय का उपदेश दिया और अपने दर्शन को अफ्रीकीवाद कहा। हमने यह मान लिया था कि एक दिन वे एएनसी का नेतृत्व करेंगे।
लेम्बेडे ने घोषणा की कि लोगों में एक नई भावना जागृत हो रही है, जातीय भेद मिट रहे हैं, और युवा लड़के-लड़कियां खुद को सबसे पहले अफ्रीकी मानते हैं, न कि खोसा, न्डेबेले या त्स्वाना। लेम्बेडे, जिनके पिता नेटाल के एक निरक्षर ज़ुलू किसान थे, ने एडम कॉलेज में शिक्षक के रूप में प्रशिक्षण प्राप्त किया था, जो अमेरिकन बोर्ड ऑफ मिशन्स का एक संस्थान था। उन्होंने कई वर्षों तक ऑरेंज फ्री स्टेट में पढ़ाया, अफ़्रीकान्स भाषा सीखी, और अफ़्रीकानर राष्ट्रवाद को अफ्रीकी राष्ट्रवाद के आदर्श के रूप में देखा। जैसा कि लेम्बेडे ने बाद में नेटाल के एक अफ्रीकी समाचार पत्र, इन्कुंडला या बंटू में लिखा:

आधुनिक युग का इतिहास राष्ट्रवाद का इतिहास है। राष्ट्रवाद को जन संघर्षों और युद्ध की अग्नि में परखा गया है और यह विदेशी शासन और आधुनिक साम्राज्यवाद के विरुद्ध एकमात्र उपाय सिद्ध हुआ है। इसी कारण महान साम्राज्यवादी शक्तियाँ अपने विदेशी नागरिकों में सभी राष्ट्रवादी प्रवृत्तियों को हतोत्साहित करने और मिटाने के लिए पूरी ताकत से प्रयास करती हैं; इस उद्देश्य के लिए राष्ट्रवाद के विरुद्ध प्रचार पर भारी मात्रा में धन खर्च किया जाता है, जिसे "संकीर्ण," "बर्बर," "असंस्कृत,"

"शैतानी," आदि कहकर खारिज कर दिया जाता है। कुछ विदेशी नागरिक इस कपटपूर्ण प्रचार के शिकार हो जाते हैं और परिणामस्वरूप साम्राज्यवाद के औजार बन जाते हैं, जिसके लिए साम्राज्यवादी शक्ति द्वारा उनकी बहुत प्रशंसा की जाती है और उन्हें "संस्कृत" जैसे विशेषणों से नवाजा जाता है। “उदारवादी,” “प्रगतिशील,” “खुले विचारों वाला,” आदि।

लेम्बेडे के विचारों ने मुझे बहुत प्रभावित किया। मैं भी पितृसत्तात्मक ब्रिटिश उपनिवेशवाद और गोरों द्वारा "संस्कारी", "प्रगतिशील" और "सभ्य" माने जाने की चाहत से प्रभावित था। मैं पहले से ही उस अश्वेत अभिजात वर्ग की ओर अग्रसर था जिसे ब्रिटेन अफ्रीका में स्थापित करना चाहता था। रीजेंट से लेकर श्री सिडेलस्की तक, हर कोई यही चाहता था कि मैं ऐसा ही रहूँ। लेकिन यह एक भ्रम था। लेम्बेडे की तरह, मुझे भी इसका समाधान उग्र अफ्रीकी राष्ट्रवाद में नज़र आया।
लेम्बेडे के मित्र और सहयोगी पीटर म्दा थे, जिन्हें ए.पी. के नाम से जाना जाता था। जहाँ लेम्बेडे अस्पष्टता और वाचालता के लिए जाने जाते थे, वहीं म्दा संयमित और सटीक थे। लेम्बेडे कभी-कभी अस्पष्ट और रहस्यमय हो सकते थे; म्दा विशिष्ट और वैज्ञानिक थे। म्दा की व्यावहारिकता लेम्बेडे के आदर्शवाद के लिए एकदम सही पूरक थी।
अन्य युवा भी इसी तरह सोच रहे थे और हम सब मिलकर इन विचारों पर चर्चा करते थे। लेम्बेडे और म्दा के अलावा, इन लोगों में वाल्टर सिसुलु; ओलिवर टैम्बो; डॉ. लियोनेल माजोम्बोजी; विक्टर म्बोबो, हील्डटाउन में मेरे पूर्व शिक्षक; विलियम नकोमो, एक मेडिकल छात्र जो कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य था; जॉर्डन न्गुबाने, नेटाल का एक पत्रकार जो इंकुंडला और सबसे अधिक बिकने वाले अफ्रीकी समाचार पत्र बंटू वर्ल्ड के लिए काम करता था; डेविड बोपापे, ट्रांसवाल में एएनसी के सचिव और कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्य; और कई अन्य लोग शामिल थे। कई लोगों को, शायद अनुचित रूप से, यह लगता था कि एएनसी कुल मिलाकर एक थके हुए, निष्क्रिय, विशेषाधिकार प्राप्त अफ्रीकी अभिजात वर्ग का गढ़ बन गया है, जो जनता के अधिकारों की रक्षा करने की बजाय अपने अधिकारों की रक्षा करने में अधिक रुचि रखता है। आम सहमति यह थी कि कुछ कार्रवाई की जानी चाहिए, और डॉ. माजोम्बोजी ने एएनसी के नेतृत्व में जोश भरने के लिए एक युवा लीग बनाने का प्रस्ताव रखा।

1943 में, लेम्बेडे, म्दा, सिसुलु, ताम्बो, नकोमो और मैं समेत एक प्रतिनिधिमंडल एएनसी के प्रमुख डॉ. ज़ुमा से मिलने सोफियाटाउन स्थित उनके आलीशान घर गया। डॉ. ज़ुमा के घर पर एक छोटा सा फार्महाउस और एक क्लिनिक भी था। डॉ. ज़ुमा ने एएनसी के लिए बहुत बड़ा योगदान दिया था। डॉ. का सेमे के नेतृत्व में जब संगठन का आकार और महत्व कम हो गया था, तब उन्होंने उसे निष्क्रिय अवस्था से उबारा था। जब उन्होंने अध्यक्ष पद संभाला, तब एएनसी के खजाने में सत्रह शिलिंग और छह पेंस थे, जिसे उन्होंने बढ़ाकर चार हज़ार पाउंड कर दिया था। पारंपरिक नेता उनका सम्मान करते थे, कैबिनेट मंत्रियों से उनके अच्छे संबंध थे, और उनमें आत्मविश्वास और आत्मविश्वास झलकता था। लेकिन उनका व्यवहार कुछ ऐसा भी था जो एक जन संगठन के नेता के लिए शोभा नहीं देता था। एएनसी के प्रति उनकी निष्ठा के बावजूद, उनका चिकित्सा कार्य उनके लिए सर्वोपरि था। ज़ुमा के शासनकाल में प्रतिनिधिमंडलों, बैठकों, पत्रों और टेलीग्रामों का बोलबाला था। सब कुछ अंग्रेज़ी तौर-तरीकों से होता था, यह सोचकर कि मतभेदों के बावजूद हम सब सज्जन हैं। उन्हें श्वेत सत्ता प्रतिष्ठान से मिले संबंधों से संतुष्टि थी और वे राजनीतिक गतिविधियों से उन्हें खतरे में नहीं डालना चाहते थे।
हमारी मुलाकात में हमने उन्हें बताया कि हम एक युवा लीग और जन समर्थन जुटाने के उद्देश्य से एक अभियान आयोजित करने का इरादा रखते हैं। हम अपने साथ संविधान और घोषणापत्र का मसौदा भी लाए थे। हमने डॉ. ज़ुमा को बताया कि अगर एएनसी ने खुद को सक्रिय नहीं किया और नए तरीके नहीं अपनाए तो उसके हाशिए पर चले जाने का खतरा है। डॉ. ज़ुमा हमारे प्रतिनिधिमंडल से भयभीत हो गए और उन्होंने युवा लीग के संविधान का कड़ा विरोध किया। उनका मानना था कि लीग को अधिक अनौपचारिक रूप से संगठित होना चाहिए और मुख्य रूप से एएनसी के लिए भर्ती समिति के रूप में कार्य करना चाहिए। एक रूढ़िवादी लहजे में, डॉ. ज़ुमा ने हमें बताया कि अफ्रीकी लोग एक समूह के रूप में इतने असंगठित और अनुशासनहीन हैं कि वे किसी जन अभियान में भाग नहीं ले सकते और ऐसा अभियान जल्दबाजी भरा और खतरनाक होगा।
डॉ. ज़ुमा के साथ बैठक के कुछ ही समय बाद, विलियम नकोमो के नेतृत्व में युवा लीग की एक अस्थायी समिति का गठन किया गया। समिति के सदस्य दिसंबर 1943 में ब्लोमफोंटेन में आयोजित एएनसी के वार्षिक सम्मेलन में गए, जहाँ

उन्होंने संगठन में नए सदस्यों की भर्ती में सहायता के लिए एक युवा लीग के गठन का प्रस्ताव रखा। इस प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया गया।
यूथ लीग का वास्तविक गठन ईस्टर रविवार, 1944 को एलोफ़ स्ट्रीट स्थित बंटू मेन्स सोशल सेंटर में हुआ था। वहाँ लगभग सौ पुरुष उपस्थित थे, जिनमें से कुछ प्रिटोरिया जैसे दूर-दराज के इलाकों से आए थे। यह एक चुनिंदा समूह था, एक विशिष्ट समूह, हममें से अधिकांश फोर्ट हरे विश्वविद्यालय के स्नातक थे; हम किसी जन आंदोलन से बहुत दूर थे। लेम्बेडे ने राष्ट्रों के इतिहास पर व्याख्यान दिया, जिसमें प्राचीन ग्रीस से लेकर मध्यकालीन यूरोप और उपनिवेशीकरण के युग तक के इतिहास का विस्तृत वर्णन था। उन्होंने अफ्रीका और अफ्रीकियों की ऐतिहासिक उपलब्धियों पर ज़ोर दिया और बताया कि गोरों का खुद को चुनी हुई जाति और जन्मजात श्रेष्ठ नस्ल समझना कितना मूर्खतापूर्ण था।
जॉर्डन न्गुबाने, ए. पी. म्दा और विलियम न्कोमो सभी ने भाषण दिए और अफ्रीकी राष्ट्रवाद की उभरती भावना पर जोर दिया। लेम्बेडे अध्यक्ष, ओलिवर टैम्बो सचिव और वाल्टर सिसुलु कोषाध्यक्ष चुने गए। ए. पी. म्दा, जॉर्डन न्गुबाने, लियोनेल माजोम्बोजी, कांग्रेस म्बाटा, डेविड बोपापे और मैं कार्यकारी समिति के लिए चुने गए। बाद में हमारे साथ गॉडफ्रे पिटजे (एक छात्र, बाद में शिक्षक और फिर वकील), आर्थर लेटेले, विल्सन कोंको, दिलीज़ा म्जी और न्थाटो मोटलाना (सभी डॉक्टर), डैन ट्लोम (एक ट्रेड यूनियन नेता), और जो मैथ्यूज, डूमा नोकवे और रॉबर्ट सोबुकवे (सभी छात्र) जैसे प्रमुख युवा भी शामिल हुए। जल्द ही सभी प्रांतों में शाखाएँ स्थापित हो गईं।
लीग की मूल नीति 1912 में एएनसी के पहले संविधान से भिन्न नहीं थी। लेकिन हम उन मूल चिंताओं को फिर से पुष्ट और रेखांकित कर रहे थे, जिनमें से कई हाशिए पर चली गई थीं। अफ्रीकी राष्ट्रवाद हमारा नारा था, और हमारा सिद्धांत अनेक जनजातियों से एक राष्ट्र का निर्माण, श्वेत वर्चस्व का उन्मूलन और एक सच्चे लोकतांत्रिक शासन की स्थापना था। हमारे घोषणापत्र में कहा गया था: “हमारा मानना है कि अफ्रीकियों की राष्ट्रीय मुक्ति स्वयं अफ्रीकियों द्वारा ही प्राप्त की जाएगी…। कांग्रेस यूथ लीग को अफ्रीकी राष्ट्रवाद की भावना का केंद्र और शक्ति केंद्र बनना चाहिए।”
इस घोषणापत्र ने न्यास की अवधारणा को पूरी तरह से खारिज कर दिया, इस विचार को कि श्वेत सरकार किसी भी तरह अफ़्रीकी हितों का ध्यान रखती है। हमने

पिछले चालीस वर्षों के उन विनाशकारी, अफ़्रीकी-विरोधी कानूनों का हवाला दिया, जिनकी शुरुआत 1913 के भूमि अधिनियम से हुई, जिसने अंततः अश्वेतों को उनकी जन्मभूमि के 87 प्रतिशत क्षेत्र से वंचित कर दिया; 1923 के शहरी क्षेत्र अधिनियम ने श्वेत उद्योगों को सस्ता श्रम उपलब्ध कराने के लिए घनी आबादी वाली अफ़्रीकी झुग्गियाँ बनाईं, जिन्हें शिष्टाचारवश "मूल निवासी स्थान" कहा जाता था; 1926 के रंगभेद अधिनियम ने अफ़्रीकियों को कुशल व्यवसायों में काम करने से प्रतिबंधित कर दिया; 1927 के मूल निवासी प्रशासन अधिनियम ने सर्वोपरि प्रमुखों के बजाय ब्रिटिश राजशाही को सभी अफ़्रीकी क्षेत्रों का सर्वोच्च प्रमुख बना दिया; और अंत में, 1936 में, मूल निवासियों के प्रतिनिधित्व अधिनियम ने केप में अफ़्रीकियों को सामान्य मतदाता सूची से हटा दिया, जिससे यह भ्रम पूरी तरह से टूट गया कि श्वेत अफ़्रीकियों को अपने भाग्य पर नियंत्रण रखने देंगे।
हम साम्यवाद को लेकर बेहद सतर्क थे। दस्तावेज़ में लिखा था, “हम विदेशी विचारधाराओं से कुछ विचार ले सकते हैं, लेकिन हम अफ्रीका में विदेशी विचारधाराओं के पूर्णतः आयात को अस्वीकार करते हैं।” यह कम्युनिस्ट पार्टी पर एक अप्रत्यक्ष प्रहार था, जिसे लेम्बेडे और मेरे समेत कई अन्य लोग अफ्रीकी परिस्थितियों के लिए अनुपयुक्त “विदेशी” विचारधारा मानते थे। लेम्बेडे का मानना था कि कम्युनिस्ट पार्टी पर गोरों का वर्चस्व था, जिससे अफ्रीकियों का आत्मविश्वास और पहल कमज़ोर हो रही थी।
उस दिन कई समितियाँ गठित की गईं, लेकिन युवा लीग का मुख्य उद्देश्य राजनीतिक स्वतंत्रता की खोज में एएनसी को दिशा देना था। हालाँकि मैं इससे सहमत था, फिर भी लीग में शामिल होने को लेकर थोड़ा घबराया हुआ था और अपनी राजनीतिक प्रतिबद्धता की सीमा को लेकर संशय में था। उस समय मैं पूर्णकालिक नौकरी और अंशकालिक पढ़ाई कर रहा था, और इन दोनों गतिविधियों के अलावा मेरे पास बहुत कम समय था। वाल्टर, लेम्बेडे और म्दा की तुलना में राजनीतिक रूप से पिछड़ा हुआ महसूस करते हुए मुझमें एक तरह की असुरक्षा भी थी। वे अपने विचारों को अच्छी तरह से जानते थे, और मैं अभी तक अनुभवहीन था। वक्ता के रूप में मुझमें अभी भी आत्मविश्वास की कमी थी, और लीग के कई सदस्यों की वाक्पटुता से मैं भयभीत था।
लेम्बेडे के अफ्रीकीवाद को सर्वमान्य समर्थन नहीं मिला क्योंकि उनके विचारों में नस्लीय विशिष्टता झलकती थी, जिससे कुछ अन्य युवा लीग सदस्य

असहज हो गए थे। कुछ युवा लीग सदस्यों का मानना था कि श्वेत लोगों को भी शामिल करने वाला राष्ट्रवाद अधिक उपयुक्त मार्ग था। वहीं, मेरे सहित अन्य लोगों का तर्क था कि यदि अश्वेतों को बहुजातीय संघर्ष का विकल्प दिया गया, तो वे श्वेत संस्कृति के प्रति आसक्त ही रहेंगे और हीनता की भावना से ग्रस्त बने रहेंगे। उस समय, मैं कम्युनिस्टों या श्वेत लोगों को लीग में शामिल करने के सख्त खिलाफ था।

* * *

वॉल्टर का घर मेरे लिए घर से दूर दूसरा घर था। 1940 के दशक के शुरुआती महीनों में, जब मेरे पास रहने की कोई और जगह नहीं थी, तो सचमुच वही मेरा घर था। घर हमेशा भरा रहता था, और ऐसा लगता था कि वहाँ राजनीति पर लगातार चर्चा चल रही है। वॉल्टर की पत्नी अल्बर्टिना एक समझदार और प्रभावशाली व्यक्तित्व थीं, और वॉल्टर के राजनीतिक कार्यों की प्रबल समर्थक थीं। (उनकी शादी में एंटोन लेम्बेडे ने कहा था: "अल्बर्टिना, तुमने एक विवाहित व्यक्ति से शादी की है: वॉल्टर ने तुमसे मिलने से बहुत पहले ही राजनीति से शादी कर ली थी।")
सिसुलुस के घर के बैठक कक्ष में ही मेरी मुलाकात एवलिन मेस से हुई, जो मेरी पहली पत्नी थीं। वह ग्रामीण इलाके की एक शांत, सुंदर लड़की थीं, जो सिसुलुस के घर में होने वाली चहल-पहल से बिल्कुल भी विचलित नहीं होती थीं। उस समय वह जोहान्सबर्ग के गैर-यूरोपीय जनरल अस्पताल में अल्बर्टिना और पीटर म्दा की पत्नी रोज़ के साथ नर्स के रूप में प्रशिक्षण ले रही थीं।
एवलिन ट्रांसकेई प्रांत के उमटाटा से कुछ पश्चिम में स्थित एंगकोबो की रहने वाली थीं। उनके पिता, जो एक खनिक थे, का निधन उनके बचपन में ही हो गया था और उनकी माँ का निधन बारह वर्ष की आयु में हुआ था। प्राथमिक विद्यालय की पढ़ाई पूरी करने के बाद, एवलिन को उच्च शिक्षा के लिए जोहान्सबर्ग भेजा गया। वह अपने भाई सैम मासे के साथ रहीं, जो उस समय सिसुलु परिवार के घर में रह रहे थे। वाल्टर की माँ, मा सिसुलु, एवलिन के पिता की माँ की बहन थीं। सिसुलु परिवार एवलिन को अपनी लाडली बेटी की तरह मानता था और वे उसे बहुत प्यार करते थे।

पहली मुलाकात के तुरंत बाद ही मैंने एवलिन को डेट पर जाने के लिए पूछा। और लगभग उतनी ही जल्दी हम एक-दूसरे के प्यार में पड़ गए। कुछ ही महीनों में मैंने उसे शादी का प्रस्ताव दिया और उसने स्वीकार कर लिया। हमने जोहान्सबर्ग में नेटिव कमिश्नर कोर्ट में एक साधारण समारोह में शादी कर ली, जिसमें केवल हस्ताक्षर और एक गवाह की आवश्यकता थी, क्योंकि हम पारंपरिक शादी या दावत का खर्च नहीं उठा सकते थे। हमारी सबसे बड़ी समस्या रहने के लिए जगह ढूंढना थी। पहले हम ऑरलैंडो ईस्ट में उसके भाई के साथ रहने गए और फिर बाद में सिटी डीप माइंस में एवलिन की बहन के साथ रहने चले गए, जहाँ उसकी बहन के पति, मसुंगुली मगडलवा, क्लर्क के रूप में काम करते थे।

12

1946 में कई महत्वपूर्ण घटनाएँ घटीं जिन्होंने मेरे राजनीतिक विकास और संघर्ष की दिशा को प्रभावित किया। 1946 की खनिकों की हड़ताल, जिसमें रीफ खदान के 70,000 अफ्रीकी खनिक हड़ताल पर चले गए थे, ने मुझ पर गहरा प्रभाव डाला। जे. बी. मार्क्स, डैन ट्लोम, गौर राडेबे और कई एएनसी श्रम कार्यकर्ताओं की पहल पर, 1940 के दशक की शुरुआत में अफ्रीकी खनिक श्रमिक संघ (एएमडब्ल्यूयू) का गठन किया गया था। रीफ खदान में लगभग 400,000 अफ्रीकी खनिक काम कर रहे थे, जिनमें से अधिकांश को प्रतिदिन दो शिलिंग से अधिक वेतन नहीं मिलता था। संघ के नेतृत्व ने खान चैंबर से बार-बार प्रतिदिन दस शिलिंग के न्यूनतम वेतन, साथ ही पारिवारिक आवास और दो सप्ताह के सवेतन अवकाश की मांग की थी। चैंबर ने संघ की मांगों को अनसुना कर दिया। दक्षिण अफ़्रीकी इतिहास में इस तरह की सबसे बड़ी कार्रवाइयों में से एक में, खनिकों ने एक सप्ताह तक हड़ताल की और अपनी एकजुटता बनाए रखी। सरकार की जवाबी कार्रवाई निर्मम थी। नेताओं को गिरफ्तार कर लिया गया, पुलिस ने उनके परिसरों को घेर लिया और एएमडब्ल्यूयू के कार्यालयों में तोड़फोड़ की गई। पुलिस ने एक मार्च को बेरहमी से कुचल दिया; बारह खनिक मारे गए। विरोध में मूल निवासी प्रतिनिधि परिषद स्थगित कर दी गई। मेरे कई रिश्तेदार खनिक थे, और हड़ताल के सप्ताह के दौरान मैंने उनसे मुलाकात की, मुद्दों पर चर्चा की और अपना समर्थन व्यक्त किया।
जे. बी. मार्क्स, जो एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी के लंबे समय से सदस्य थे, उस समय अफ्रीकन माइन वर्कर्स यूनियन के अध्यक्ष थे। ट्रांसवाल में जन्मे, मिश्रित माता-पिता के पुत्र, मार्क्स एक करिश्माई व्यक्तित्व और विशिष्ट हास्यबोध वाले व्यक्ति थे। वे लंबे कद के और गोरे रंग के थे। हड़ताल के दौरान मैं कभी-कभी उनके साथ एक खदान से दूसरी खदान जाता था, श्रमिकों से बात करता था और रणनीति बनाता था। सुबह से शाम तक, उन्होंने शांत और तर्कसंगत नेतृत्व का प्रदर्शन किया, और उनका हास्य सबसे कठिन संकट में भी राहत देता था। मैं यूनियन के संगठन और इतने भयंकर विरोध के बावजूद भी अपने सदस्यों को नियंत्रित करने की उसकी क्षमता से प्रभावित था।

अंततः, सरकार की जीत हुई: हड़ताल को दबा दिया गया और यूनियन को कुचल दिया गया। यह हड़ताल मार्क्स के साथ मेरे घनिष्ठ संबंधों की शुरुआत थी। मैं अक्सर उनके घर जाता था और हम साम्यवाद के प्रति मेरे विरोध पर विस्तार से चर्चा करते थे। मार्क्स पार्टी के एक दृढ़ सदस्य थे, लेकिन उन्होंने कभी भी मेरी आपत्तियों को व्यक्तिगत रूप से नहीं लिया और उनका मानना था कि एक युवा व्यक्ति के लिए राष्ट्रवाद को अपनाना स्वाभाविक है, लेकिन जैसे-जैसे मैं बड़ा और अनुभवी होता जाऊंगा, मेरे विचार व्यापक होते जाएंगे। मैंने मोसेस कोटाने और यूसुफ दादू के साथ भी इसी तरह की चर्चाएँ कीं, जो मार्क्स की तरह ही मानते थे कि साम्यवाद को अफ्रीकी परिस्थितियों के अनुरूप ढालना होगा। एएनसी के अन्य कम्युनिस्ट सदस्यों ने मेरी और अन्य युवा लीग सदस्यों की निंदा की, लेकिन मार्क्स, कोटाने और दादू ने कभी नहीं की। हड़ताल के बाद, कोटाने, मार्क्स और कई अन्य कम्युनिस्टों सहित बावन लोगों को गिरफ्तार किया गया और उन पर मुकदमा चलाया गया, पहले उकसाने के आरोप में और फिर राजद्रोह के आरोप में। यह एक राजनीतिक मुकदमा था, राज्य द्वारा यह दिखाने का प्रयास कि वह कम्युनिस्ट खतरे के प्रति नरम रुख नहीं अपना रहा है।
उसी वर्ष, एक अन्य घटना ने मुझे राजनीतिक कार्य के प्रति अपने संपूर्ण दृष्टिकोण को बदलने के लिए मजबूर कर दिया। 1946 में, स्मट्स सरकार ने एशियाई भूमि स्वामित्व अधिनियम पारित किया, जिसने भारतीयों की स्वतंत्र आवाजाही को सीमित कर दिया, उन क्षेत्रों को निर्धारित कर दिया जहाँ भारतीय निवास और व्यापार कर सकते थे, और संपत्ति खरीदने के उनके अधिकार को गंभीर रूप से प्रतिबंधित कर दिया। इसके बदले में, उन्हें संसद में नाममात्र के श्वेत प्रतिनिधियों द्वारा प्रतिनिधित्व प्रदान किया गया। ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. दादू ने इन प्रतिबंधों की कड़ी निंदा की और संसदीय प्रतिनिधित्व के प्रस्ताव को "एक दिखावटी मताधिकार का झूठा प्रस्ताव" कहकर खारिज कर दिया। यह कानून - जिसे बस्ती अधिनियम के नाम से जाना जाता है - भारतीय समुदाय का घोर अपमान था और समूह क्षेत्र अधिनियम का अग्रदूत था, जिसने अंततः सभी अश्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों की स्वतंत्रता को सीमित कर दिया।
भारतीय समुदाय आक्रोशित हो गया और इन उपायों के विरोध में दो साल तक चलने वाला संगठित अहिंसक प्रतिरोध अभियान चलाया। डॉ. दादू और जी. एम. नायकर

(नेटाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष) के नेतृत्व में भारतीय समुदाय ने एक जन अभियान चलाया, जिसकी संगठनात्मक क्षमता और समर्पण ने हमें प्रभावित किया। गृहिणियों, पुजारियों, डॉक्टरों, वकीलों, व्यापारियों, छात्रों और श्रमिकों ने विरोध प्रदर्शन में अग्रणी भूमिका निभाई। दो वर्षों तक लोगों ने अपना जीवन स्थगित करके इस संघर्ष में भाग लिया। जनसभाएं आयोजित की गईं; गोरों के लिए आरक्षित भूमि पर कब्जा कर लिया गया और धरना प्रदर्शन किया गया। लगभग दो हजार स्वयंसेवक जेल गए, और डॉ. दादू और नायकर को छह महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई।
यह अभियान भारतीय समुदाय तक ही सीमित था और अन्य समूहों की भागीदारी को प्रोत्साहित नहीं किया गया। फिर भी, डॉ. ज़ुमा और अन्य अफ्रीकी नेताओं ने कई सभाओं में भाषण दिए और यूथ लीग के साथ मिलकर भारतीय जनता के संघर्ष को पूरा नैतिक समर्थन दिया। सरकार ने कठोर कानूनों और धमकियों से विद्रोह को कुचल दिया, लेकिन यूथ लीग और एएनसी में हमने भारतीय जनता को रंगभेद के खिलाफ एक असाधारण विरोध दर्ज करते देखा, जैसा कि अफ्रीकियों और एएनसी ने नहीं देखा था। इस्माइल मीर और जे. एन. सिंह ने अपनी पढ़ाई बीच में ही छोड़ दी, अपने परिवारों को अलविदा कहा और जेल चले गए। अहमद कथराडा, जो उस समय हाई स्कूल के छात्र थे, ने भी यही किया। मैं अक्सर अमीना पहाड़ के घर दोपहर के भोजन के लिए जाती थी, और फिर अचानक, इस प्यारी महिला ने अपना एप्रन उतार दिया और अपने विश्वासों के लिए जेल चली गई। अगर मैंने कभी भारतीय समुदाय की उत्पीड़न के खिलाफ विरोध करने की इच्छा पर सवाल उठाया था, तो अब मैं ऐसा नहीं कर सकती।
भारतीय अभियान उस तरह के विरोध का आदर्श बन गया जिसकी हम युवा लीग में वकालत कर रहे थे। इसने लोगों में विद्रोह और उग्रवाद की भावना जगाई, जेल का डर तोड़ा और एनआईसी तथा टीआईसी की लोकप्रियता और प्रभाव को बढ़ाया। इसने हमें याद दिलाया कि स्वतंत्रता संग्राम केवल भाषण देने, सभाएँ आयोजित करने, प्रस्ताव पारित करने और प्रतिनिधिमंडल भेजने का मामला नहीं था, बल्कि सुनियोजित संगठन, जुझारू जन आंदोलन और सबसे बढ़कर, कष्ट सहने और बलिदान करने की इच्छाशक्ति का मामला था। भारतीय अभियान ने 1913 के उस अहिंसक प्रतिरोध अभियान की याद दिला दी जिसमें महात्मा गांधी ने नेटाल से ट्रांसवाल तक अवैध रूप से सीमा पार करने वाले भारतीयों के एक उग्र जुलूस

का नेतृत्व किया था। वह इतिहास था; यह अभियान मेरी आँखों के सामने घट रहा था।

1946 की शुरुआत में, एवलिन और मैं ऑरलैंडो ईस्ट में अपने दो कमरों वाले नगरपालिका मकान में रहने चले गए और उसके बाद ऑरलैंडो वेस्ट में 8115 नंबर पर एक थोड़े बड़े मकान में रहने लगे। ऑरलैंडो वेस्ट धूल भरा, सादा इलाका था जहाँ चौकोर आकार के नगरपालिका मकान थे, जो बाद में ग्रेटर सोवेटो का हिस्सा बन गया। सोवेटो दक्षिण-पश्चिमी टाउनशिप का संक्षिप्त रूप है। हमारा मकान उस इलाके में स्थित था जिसे वहाँ के निवासी उत्तर में स्थित आलीशान श्वेत उपनगर के नाम पर वेस्टक्लिफ कहते थे।
हमारे नए घर का किराया सत्रह शिलिंग और छह पेंस प्रति माह था। घर खुद सैकड़ों अन्य घरों जैसा ही था, जो कच्ची सड़कों पर छोटे-छोटे भूखंडों पर बने थे। उसमें भी वही मानक टिन की छत, वही सीमेंट का फर्श, एक छोटी रसोई और पीछे बाल्टी वाला शौचालय था। बाहर स्ट्रीट लैंप लगे होने के बावजूद, हम अंदर मिट्टी के तेल के लैंप इस्तेमाल करते थे क्योंकि घरों में बिजली नहीं थी। शयनकक्ष इतना छोटा था कि एक डबल बेड लगभग पूरी जगह घेर लेता था। ये घर नगर पालिका द्वारा उन श्रमिकों के लिए बनाए गए थे जिन्हें शहर के पास रहने की आवश्यकता थी। एकरसता से बचने के लिए, कुछ लोगों ने छोटे-छोटे बगीचे लगाए या अपने दरवाजों को चमकीले रंगों से रंगा। यह भव्यता के बिल्कुल विपरीत था, लेकिन यह मेरा पहला सच्चा अपना घर था और मुझे इस पर बहुत गर्व था। एक आदमी तब तक असली आदमी नहीं होता जब तक उसका अपना घर न हो। तब मुझे नहीं पता था कि यह कई वर्षों तक मेरा एकमात्र निवास स्थान होगा जो पूरी तरह से मेरा होगा।
राज्य ने यह घर एवलिन और मुझे आवंटित किया था क्योंकि हम अब दो नहीं, बल्कि तीन हो गए थे। उसी वर्ष, हमारे पहले बेटे, मदीबा थेम्बेकिले का जन्म हुआ। उसे मेरे गोत्र का नाम मदीबा दिया गया, लेकिन वह थेम्बी उपनाम से जाना जाता था। वह एक स्वस्थ और खुशमिजाज बच्चा था, जिसके बारे में ज्यादातर लोग कहते थे कि वह अपने पिता की तुलना में अपनी माँ से अधिक मिलता-जुलता था। अब मेरे पास एक उत्तराधिकारी था, हालाँकि मेरे पास उसे देने के लिए अभी बहुत कुछ

नहीं था। लेकिन मैंने मंडेला नाम और मदीबा गोत्र को अमर कर दिया था, जो एक खोसा पुरुष का मूलभूत दायित्व है।
आखिरकार मुझे एक स्थिर ठिकाना मिल गया, और मैं दूसरों के घरों में मेहमान बनकर रहने से लेकर अपने घर में मेहमानों की मेजबानी करने लगी। मेरी बहन लीबी हमारे साथ आ गई और मैं उसे रेलवे लाइन पार करके ऑरलैंडो हाई स्कूल में दाखिला दिलाने ले गई। हमारी संस्कृति में, परिवार के सभी सदस्यों को परिवार के किसी भी सदस्य के घर में मेहमाननवाज़ी का अधिकार होता है; मेरे बड़े संयुक्त परिवार और मेरे नए घर के कारण बहुत सारे मेहमान आने लगे। मुझे घर-गृहस्थी का सुख मिलता था, भले ही इसके लिए मेरे पास समय कम होता था। मुझे थेम्बी के साथ खेलना, उसे नहलाना, खाना खिलाना और उसे कहानी सुनाकर सुलाना बहुत अच्छा लगता था। सच कहूँ तो, मुझे बच्चों के साथ खेलना और उनसे बातें करना बहुत पसंद है; यह हमेशा से उन चीजों में से एक रही है जिनसे मुझे सबसे ज्यादा सुकून मिलता है। मुझे घर पर आराम करना, शांति से पढ़ना और रसोई में उबलते बर्तनों से आती मीठी-स्वादुनी खुशबू का आनंद लेना अच्छा लगता था। लेकिन इन चीजों का आनंद लेने के लिए मैं अक्सर घर पर नहीं होती थी।
उस साल के आखिरी हिस्से में, रेवरेंड माइकल स्कॉट हमारे साथ रहने आए। स्कॉट एक एंग्लिकन पादरी और अफ्रीकी अधिकारों के लिए एक महान योद्धा थे। उनसे कोमो नाम के एक व्यक्ति ने संपर्क किया था, जो जोहान्सबर्ग के बाहर एक झुग्गी बस्ती का प्रतिनिधित्व कर रहा था, जिसे सरकार स्थानांतरित करना चाहती थी। कोमो चाहता था कि स्कॉट इस विस्थापन के खिलाफ विरोध प्रदर्शन करें। स्कॉट ने कहा, "अगर मैं आपकी मदद करने जा रहा हूँ, तो मुझे आप में से एक बनना होगा," और वे झुग्गी बस्ती में चले गए और वहाँ एक मंडली की स्थापना की। स्कॉट की बेघरों के लिए बनी झुग्गी बस्ती एक पथरीली पहाड़ी के पास थी और निवासियों ने युद्ध के उत्तरी अफ्रीका अभियान में हुई लड़ाई के नाम पर इसका नाम टोब्रुक रखा। यह वह जगह थी जहाँ मैं कभी-कभी रविवार की सुबह थेम्बी को ले जाता था, क्योंकि उसे चट्टानों के बीच लुका-छिपी खेलना पसंद था। स्कॉट द्वारा अपनी मंडली स्थापित करने के बाद, उन्हें पता चला कि कोमो विस्थापन के खिलाफ लड़ाई में योगदान देने वाले लोगों से पैसे का गबन कर रहा था। जब स्कॉट ने कोमो का सामना किया, तो कोमो ने स्कॉट को शिविर से बाहर निकाल दिया और उनकी जान को खतरा बताया।

स्कॉट ने ऑरलैंडो में हमारे यहाँ शरण ली और अपने साथ डलामिनी नाम के एक अफ्रीकी पादरी को भी ले आए, जिनकी पत्नी और बच्चे भी थे। हमारा घर छोटा था, इसलिए स्कॉट बैठक में सोते थे, डलामिनी और उनकी पत्नी दूसरे कमरे में सोते थे, और हम सभी बच्चों को रसोई में सुला देते थे। रेवरेंड स्कॉट एक विनम्र और सरल स्वभाव के व्यक्ति थे, लेकिन डलामिनी को बर्दाश्त करना थोड़ा मुश्किल था। खाने के समय, वे खाने की शिकायत करते थे। वे कहते, “देखो, ये तुम्हारा मांस कितना दुबला और सख्त है, ठीक से पका ही नहीं है। मुझे ऐसे खाने की आदत नहीं है।” स्कॉट को यह सुनकर बहुत बुरा लगा और उन्होंने डलामिनी को फटकारा, लेकिन डलामिनी ने उनकी बात नहीं मानी। अगली रात वे शायद कहते, “ठीक है, ये कल से थोड़ा बेहतर है, लेकिन बिल्कुल भी ठीक से पका नहीं है। मंडेला, आपको पता है कि आपकी पत्नी को खाना बनाना बिल्कुल नहीं आता।”
डलामिनी ने अप्रत्यक्ष रूप से इस स्थिति को सुलझाने में अहम भूमिका निभाई, क्योंकि मैं उसे घर से बाहर निकालने के लिए इतना उत्सुक था कि मैं खुद झुग्गी बस्ती में गया और समझाया कि स्कॉट उनका सच्चा दोस्त है, कोमो के विपरीत, और उन्हें दोनों में से किसी एक को चुनना होगा। तब उन्होंने चुनाव करवाया जिसमें स्कॉट विजयी हुआ, और वह फादर डलामिनी को अपने साथ झुग्गी बस्ती में वापस चला गया।

1947 की शुरुआत में, मैंने तीन साल की अनिवार्य इंटर्नशिप पूरी कर ली और विटकिन, सिडेलस्की और आइडेलमैन में मेरा कार्यकाल समाप्त हो गया। मैंने पूर्णकालिक छात्र बनने का संकल्प लिया ताकि मैं एलएलबी. की डिग्री हासिल कर सकूं और अपना खुद का वकीली करियर शुरू कर सकूं। सिडेलस्की में मिलने वाली आठ पाउंड, दस शिलिंग और एक पेनी प्रति माह की आय का नुकसान मेरे लिए बेहद दुखद था। मैंने जोहान्सबर्ग स्थित दक्षिण अफ्रीकी नस्ल संबंध संस्थान के बंटू कल्याण ट्रस्ट से 250 पाउंड स्टर्लिंग के ऋण के लिए आवेदन किया ताकि मेरी कानून की पढ़ाई का खर्च, जिसमें विश्वविद्यालय शुल्क, पाठ्यपुस्तकें और मासिक भत्ता शामिल था, पूरा हो सके। मुझे 150 पाउंड का ऋण दिया गया।

तीन महीने बाद, मैंने उन्हें फिर से पत्र लिखा, जिसमें मैंने बताया कि मेरी पत्नी मातृत्व अवकाश लेने वाली है, और हमें उसकी सत्रह पाउंड प्रति माह की तनख्वाह नहीं मिलेगी, जो हमारे जीवनयापन के लिए अत्यंत आवश्यक थी। मुझे अतिरिक्त धन प्राप्त हुआ, जिसके लिए मैं आभारी था, लेकिन परिस्थितियाँ दुर्भाग्यपूर्ण थीं। हमारी बेटी मकाज़िवे का जन्म कष्टदायी नहीं था, फिर भी वह कमज़ोर और बीमार थी। शुरू से ही हमें सबसे बुरे की आशंका थी। कई रातों तक, एवलिन और मैंने बारी-बारी से उसकी देखभाल की। हमें नहीं पता था कि इस नन्ही बच्ची को क्या बीमारी थी और डॉक्टर भी समस्या की प्रकृति नहीं समझा पा रहे थे। एवलिन ने एक माँ की अथक लगन और एक नर्स की पेशेवर दक्षता के साथ बच्ची की देखभाल की। जब वह नौ महीने की थी, तब मकाज़िवे का देहांत हो गया। एवलिन व्याकुल थी, और मेरे अपने दुख को कम करने में केवल एक ही चीज़ ने मदद की, और वह थी उसके दुख को कम करने की कोशिश करना।

राजनीति में, चाहे कितनी भी योजना बना ली जाए, परिस्थितियाँ अक्सर घटनाओं को निर्धारित करती हैं। जुलाई 1947 में, यूथ लीग के कामकाज के बारे में लेम्बेडे के साथ एक अनौपचारिक चर्चा के दौरान, उन्होंने मुझे पेट में अचानक दर्द और ठंड लगने की शिकायत की। दर्द बढ़ने पर, हम उन्हें कोरोनेशन अस्पताल ले गए, और उसी रात तैंतीस वर्ष की आयु में उनका निधन हो गया। उनकी मृत्यु से कई लोग गहरे सदमे में थे। वाल्टर सिसुलु शोक से लगभग व्याकुल प्रतीत हो रहे थे। उनका निधन आंदोलन के लिए एक बड़ा झटका था, क्योंकि लेम्बेडे विचारों का स्रोत थे और उन्होंने दूसरों को संगठन से जुड़ने के लिए प्रेरित किया था।
लेम्बेडे के बाद पीटर म्दा ने पदभार संभाला, जिनका विश्लेषणात्मक दृष्टिकोण, स्पष्ट और सरल अभिव्यक्ति की क्षमता और सामरिक अनुभव उन्हें एक उत्कृष्ट राजनीतिज्ञ और युवा लीग का एक असाधारण नेता बनाते थे। म्दा दुबले-पतले थे; उनका वजन न के बराबर था, और वे शब्दों का अनावश्यक प्रयोग भी नहीं करते थे। विभिन्न विचारों के प्रति उनकी व्यापक सहिष्णुता के कारण, उनकी स्वयं की सोच लेम्बेडे की तुलना में कहीं अधिक परिपक्व थी। लेम्बेडे के उद्देश्य को आगे बढ़ाने में म्दा के नेतृत्व की ही आवश्यकता थी।

म्दा का मानना था कि यूथ लीग को एक आंतरिक दबाव समूह के रूप में कार्य करना चाहिए, जो समग्र रूप से एएनसी के भीतर एक उग्र राष्ट्रवादी विंग हो और संगठन को एक नए युग में ले जाए। उस समय, एएनसी में एक भी पूर्णकालिक कर्मचारी नहीं था, और आम तौर पर संगठन बहुत खराब था और अव्यवस्थित तरीके से काम कर रहा था। (बाद में, वाल्टर बेहद कम वेतन पर एएनसी के पहले और एकमात्र पूर्णकालिक कर्मचारी बने।)
जेड. के. मैथ्यूज और मानव विज्ञान के व्याख्याता गॉडफ्रे पिटजे के मार्गदर्शन में, म्दा ने फोर्ट हरे में यूथ लीग की एक शाखा की शीघ्र ही स्थापना की। उन्होंने उत्कृष्ट छात्रों को भर्ती किया, जिससे नई ऊर्जा और नए विचार आए। इनमें सबसे उत्कृष्ट प्रोफेसर मैथ्यूज के प्रतिभाशाली पुत्र जो और रॉबर्ट सोबुकवे थे, जो एक प्रभावशाली वक्ता और तीक्ष्ण विचारक थे।
म्दा राष्ट्रवाद के मामले में लेम्बेडे से कहीं अधिक उदार थे, और उनकी सोच में लेम्बेडे की तरह नस्लीय भेदभाव नहीं था। वे श्वेत उत्पीड़न और श्वेत वर्चस्व से नफरत करते थे, न कि स्वयं श्वेत लोगों से। कम्युनिस्ट पार्टी के विरोध में भी वे लेम्बेडे या मुझसे कहीं कम उग्र थे। मैं उन युवा लीग सदस्यों में से था जिन्हें श्वेत वामपंथियों पर संदेह था। हालांकि मैंने कई श्वेत कम्युनिस्टों से दोस्ती कर ली थी, फिर भी मैं एएनसी में श्वेत प्रभाव को लेकर सतर्क था, और मैंने पार्टी के साथ संयुक्त अभियानों का विरोध किया। मुझे चिंता थी कि कम्युनिस्ट संयुक्त कार्रवाई की आड़ में हमारे आंदोलन पर कब्जा करने की कोशिश कर रहे हैं। मेरा मानना था कि शुद्ध अफ्रीकी राष्ट्रवाद ही हमें मुक्ति दिलाएगा, न कि मार्क्सवाद या बहुजातीयवाद। लीग में अपने कुछ साथियों के साथ, मैंने तो कम्युनिस्ट पार्टी की बैठकों को मंच पर धावा बोलकर, बैनर फाड़कर और माइक छीनकर भंग करने तक की कोशिश की। दिसंबर में एएनसी के राष्ट्रीय सम्मेलन में, युवा लीग ने कम्युनिस्ट पार्टी के सभी सदस्यों को निष्कासित करने की मांग वाला प्रस्ताव पेश किया, लेकिन हमें करारी हार का सामना करना पड़ा। 1946 के भारतीय निष्क्रिय प्रतिरोध अभियान का मुझ पर प्रभाव होने के बावजूद, भारतीयों के बारे में मेरी वही भावना थी जो कम्युनिस्टों के बारे में थी: कि वे एएनसी पर हावी होने की प्रवृत्ति रखेंगे, आंशिक रूप से उनकी बेहतर शिक्षा, अनुभव और प्रशिक्षण के कारण।

1947 में, मैं ट्रांसवाल एएनसी की कार्यकारी समिति के लिए चुना गया और ट्रांसवाल क्षेत्र के अध्यक्ष सी. एस. रामोहानो के अधीन कार्य किया। एएनसी में यह मेरा पहला पद था और संगठन के प्रति मेरी प्रतिबद्धता में एक महत्वपूर्ण मोड़ था। उस समय तक, मैंने जो बलिदान दिए थे, वे केवल सप्ताहांत में पत्नी और परिवार से दूर रहने और देर शाम घर लौटने तक ही सीमित थे। मैं किसी बड़े अभियान में प्रत्यक्ष रूप से शामिल नहीं हुआ था, और मुझे अभी तक एक स्वतंत्रता सेनानी के जीवन के खतरों और अंतहीन कठिनाइयों का अंदाजा नहीं था। मैं बिना किसी कीमत चुकाए अपनी प्रतिबद्धता को सहजता से निभा रहा था। ट्रांसवाल क्षेत्र की कार्यकारी समिति के लिए चुने जाने के बाद से, मैंने स्वयं को संपूर्ण कांग्रेस के साथ, उसकी आशाओं और निराशाओं, उसकी सफलताओं और असफलताओं के साथ जोड़ लिया; अब मैं हृदय और आत्मा से उससे बंध गया था।
रामोहानो उन लोगों में से एक थे जिनसे मैंने बहुत कुछ सीखा। वे एक कट्टर राष्ट्रवादी और कुशल आयोजक थे, जो विभिन्न विचारों को संतुलित करने और उपयुक्त समझौता करने में सक्षम थे। हालाँकि रामोहानो कम्युनिस्टों के प्रति सहानुभूति नहीं रखते थे, फिर भी उन्होंने उनके साथ अच्छा काम किया। उनका मानना था कि एएनसी एक राष्ट्रीय संगठन है जिसे हमारे उद्देश्य का समर्थन करने वाले सभी लोगों का स्वागत करना चाहिए।

1947 में, भारतीय अहिंसक प्रतिरोध अभियान के फलस्वरूप, एएनसी के अध्यक्ष डॉ. ज़ुमा, ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. दादू और नेटाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. नाइकर ने डॉक्टर्स पैक्ट पर हस्ताक्षर किए, जिसमें उन्होंने एक साझा शत्रु के विरुद्ध एकजुट होने की सहमति व्यक्त की। यह अफ्रीकी और भारतीय आंदोलनों की एकता की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम था। विभिन्न आंदोलनों को निर्देशित करने के लिए एक केंद्रीय राजनीतिक निकाय बनाने के बजाय, उन्होंने साझा हितों के मामलों

पर सहयोग करने पर सहमति जताई। बाद में, उनके साथ एपीओ (अफ्रीकन पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन), एक अश्वेत संगठन भी जुड़ गया।
लेकिन ऐसा समझौता अत्यंत अस्थायी ही था, क्योंकि प्रत्येक राष्ट्रीय समूह को अपनी विशिष्ट समस्याओं का सामना करना पड़ रहा था। उदाहरण के लिए, पास प्रणाली का भारतीयों या अश्वेतों पर न के बराबर ही प्रभाव पड़ा। घेटो अधिनियम, जिसके कारण भारतीयों ने विरोध प्रदर्शन किया था, का अफ्रीकियों पर न के बराबर ही प्रभाव पड़ा। उस समय अश्वेत समूह नस्ल वर्गीकरण और रोजगार आरक्षण को लेकर अधिक चिंतित थे, ऐसे मुद्दे जिनका अफ्रीकियों और भारतीयों पर समान रूप से प्रभाव नहीं था।
डॉक्टर्स पैक्ट ने अफ़्रीकी, भारतीय और अश्वेत लोगों के भविष्य के सहयोग की नींव रखी, क्योंकि इसने प्रत्येक समूह की स्वतंत्रता का सम्मान किया, लेकिन साथ ही एकजुट होकर काम करने से प्राप्त होने वाली उपलब्धियों को भी स्वीकार किया। डॉक्टर्स पैक्ट ने देश भर में गैर-नस्लीय, सरकार-विरोधी अभियानों की एक श्रृंखला को गति दी, जिनका उद्देश्य अफ़्रीकी और भारतीयों को स्वतंत्रता संग्राम में एकजुट करना था। इन अभियानों में से पहला अभियान था प्रथम ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री स्टेट पीपुल्स असेंबली फॉर वोट्स फॉर ऑल, जो सभी अश्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों को मताधिकार देने का अभियान था। डॉ. ज़ुमा ने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में एएनसी की भागीदारी की घोषणा की, जिसकी अध्यक्षता मैंने की थी। उस समय, हमारा मानना था कि अभियान एएनसी द्वारा चलाया जाएगा, लेकिन जब हमें पता चला कि एएनसी अभियान का नेतृत्व नहीं करेगी, तो ट्रांसवाल कार्यकारी समिति ने एएनसी को पीछे हटने का फैसला किया। उस समय मेरा विचार था कि एएनसी को केवल उन्हीं अभियानों में शामिल होना चाहिए जिनका नेतृत्व स्वयं एएनसी करे। मुझे इस बात की अधिक चिंता थी कि श्रेय किसे मिलेगा, बजाय इसके कि अभियान सफल होगा या नहीं। वापसी के बाद भी, एएनसी के ट्रांसवाल क्षेत्र के अध्यक्ष रामोहानो ने एक प्रेस विज्ञप्ति जारी कर प्रांत के अफ्रीकियों से 'सभी के लिए वोट' अभियान में भाग लेने का आह्वान किया, जो ट्रांसवाल कार्यकारी समिति के निर्णय का स्पष्ट उल्लंघन था। यह अवज्ञा का ऐसा कार्य था जिसे समिति बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। इस विवाद को सुलझाने के लिए बुलाई गई एक बैठक में, मुझे रामोहानो की अवज्ञा के लिए उनके खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव लाने के लिए कहा गया। मैं कर्तव्य और व्यक्तिगत निष्ठा, अपने संगठन और अपने मित्र के प्रति

अपने दायित्वों के बीच एक तीव्र संघर्ष में फंसा हुआ था। मैं भली-भांति जानता था कि मैं एक ऐसे व्यक्ति के कार्य की निंदा कर रहा हूँ जिसकी सत्यनिष्ठा और संघर्ष के प्रति समर्पण पर मैंने कभी संदेह नहीं किया, एक ऐसा व्यक्ति जिसका मुक्ति संघर्ष में बलिदान मेरे अपने बलिदान से कहीं अधिक था। मैं जानता था कि उन्होंने जिस कार्य का आह्वान किया था वह वास्तव में एक नेक कार्य था; उनका मानना था कि अफ्रीकियों को अपने भारतीय भाइयों की मदद करनी चाहिए।
लेकिन रामोहानो की अवज्ञा की गंभीरता बहुत अधिक थी। यद्यपि एएनसी जैसा संगठन व्यक्तियों से मिलकर बना है, फिर भी यह अपने किसी भी व्यक्तिगत भाग से कहीं अधिक बड़ा है, और संगठन के प्रति निष्ठा किसी व्यक्ति के प्रति निष्ठा से अधिक महत्वपूर्ण है। मैंने इस विरोध का नेतृत्व करने की जिम्मेदारी ली और उनके खिलाफ निंदा प्रस्ताव पेश किया, जिसका ओलिवर टैम्बो ने समर्थन किया। इससे सदन में हंगामा मच गया, और क्षेत्रीय स्तर पर अपने अध्यक्ष का समर्थन करने वालों और कार्यपालिका के पक्ष में खड़े लोगों के बीच तीखी बहस छिड़ गई। अंततः बैठक अव्यवस्था में समाप्त हुई।

13

अफ़्रीकी लोग वोट नहीं दे सकते थे, लेकिन इसका मतलब यह नहीं था कि हमें इस बात की परवाह नहीं थी कि चुनाव कौन जीतता है। 1948 के श्वेत आम चुनाव में सत्ताधारी यूनाइटेड पार्टी, जिसका नेतृत्व जनरल स्मट्स कर रहे थे और जो उस समय अंतरराष्ट्रीय स्तर पर काफी लोकप्रिय थे, का मुकाबला पुनर्जीवित नेशनल पार्टी से था। जहाँ स्मट्स ने द्वितीय विश्व युद्ध में दक्षिण अफ़्रीका को मित्र देशों के पक्ष में शामिल किया था, वहीं नेशनल पार्टी ने ग्रेट ब्रिटेन का समर्थन करने से इनकार कर दिया और सार्वजनिक रूप से नाज़ी जर्मनी के प्रति सहानुभूति व्यक्त की। नेशनल पार्टी का चुनाव प्रचार "स्वार्ट गेवार" (काला खतरा) के इर्द-गिर्द केंद्रित था, और उन्होंने दो नारों पर चुनाव लड़ा: "डाई काफ़र ओप सी प्लेक" (नीग्रो अपनी जगह पर) और "डाई कोएलीज़ उइट डाई लैंड" (कुली देश से बाहर) - कुली अफ़्रीकनर लोगों द्वारा भारतीयों के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला अपमानजनक शब्द था।
डच रिफॉर्म चर्च के पूर्व मंत्री और एक समाचार पत्र संपादक डॉ. डैनियल मालन के नेतृत्व में राष्ट्रवादी दल कड़वाहट से भरा हुआ था - अंग्रेजों के प्रति कड़वाहट, जिन्होंने दशकों तक उनके साथ हीन व्यवहार किया था, और अफ्रीकियों के प्रति कड़वाहट, जिनके बारे में राष्ट्रवादियों का मानना था कि वे अफ्रीकनर संस्कृति की समृद्धि और शुद्धता के लिए खतरा हैं। अफ्रीकियों की जनरल स्मट्स के प्रति कोई निष्ठा नहीं थी, लेकिन हमारी निष्ठा तो नेशनल पार्टी के प्रति और भी कम थी।
मालन का मंच रंगभेद के नाम से जाना जाता था। रंगभेद एक नया शब्द था, लेकिन एक पुरानी विचारधारा थी। इसका शाब्दिक अर्थ है "अलगाव", और यह उन सभी कानूनों और नियमों को एक दमनकारी व्यवस्था में समेकित करने का प्रतिनिधित्व करता था, जिन्होंने सदियों से अफ्रीकियों को गोरों से हीन स्थिति में रखा था। जो लगभग वास्तविक था, वह अब कानूनी रूप से भी लागू होने वाला था। पिछले तीन सौ वर्षों का अक्सर अव्यवस्थित अलगाव एक ऐसी विशाल व्यवस्था में समेकित किया जाना था जो अपने विवरण में भयावह, अपनी पहुंच में अपरिहार्य और अपनी शक्ति में अत्यधिक शक्तिशाली थी। रंगभेद का आधार यह था कि गोरे अफ्रीकियों, रंगीन लोगों और भारतीयों से श्रेष्ठ थे, और इसका

उद्देश्य श्वेत वर्चस्व को हमेशा के लिए स्थापित करना था। जैसा कि राष्ट्रवादियों ने कहा, "Die wit man moet altyd baas wees" (गोरा व्यक्ति हमेशा मालिक बना रहेगा)। उनका मंच "baasskap" शब्द पर आधारित था, जिसका शाब्दिक अर्थ है "मालिकता", एक ऐसा शब्द जो अपने सभी रूपों में श्वेत वर्चस्व का प्रतीक था। इस नीति को डच रिफॉर्म चर्च का समर्थन प्राप्त था, जिसने यह कहकर रंगभेद को धार्मिक आधार प्रदान किया कि अफ़्रीकानर ईश्वर के चुने हुए लोग हैं और अश्वेत एक अधीन प्रजाति हैं। अफ़्रीकानरों की विश्वदृष्टि में, रंगभेद और चर्च एक दूसरे के परोक्ष रूप से जुड़े हुए थे। राष्ट्रवादियों की जीत अफ़्रीकानरों पर अंग्रेज़ों के प्रभुत्व के अंत की शुरुआत थी। अब अंग्रेज़ी को आधिकारिक भाषा के रूप में अफ़्रीकान्स का दूसरा स्थान प्राप्त हुआ। राष्ट्रवादियों का नारा उनके मिशन को समाहित करता था: “Eie volk, eie taal, eie land” — हमारे अपने लोग, हमारी अपनी भाषा, हमारी अपनी भूमि। अफ़्रीकानरों की विकृत विश्वदृष्टि में, राष्ट्रवादियों की जीत इस्राएलियों की प्रतिज्ञा भूमि की यात्रा के समान थी। यह ईश्वर के वादे की पूर्ति थी, और उनके इस विचार का औचित्य था कि दक्षिण अफ़्रीका हमेशा के लिए श्वेत पुरुषों का देश होना चाहिए।
यह जीत चौंकाने वाली थी। यूनाइटेड पार्टी और जनरल स्मट्स ने नाजियों को हराया था, और उन्हें पूरा यकीन था कि वे नेशनल पार्टी को भी हरा देंगे। चुनाव के दिन, मैं ओलिवर टैम्बो और कई अन्य लोगों के साथ जोहान्सबर्ग में एक बैठक में शामिल हुआ। हमने नेशनलिस्ट सरकार के बारे में मुश्किल से ही चर्चा की क्योंकि हमें इसकी उम्मीद ही नहीं थी। बैठक पूरी रात चली और भोर होते ही हम बाहर निकले तो देखा कि एक अखबार बेचने वाला रैंड डेली मेल बेच रहा था: नेशनलिस्ट पार्टी विजयी हो गई थी। मैं स्तब्ध और निराश था, लेकिन ओलिवर ने अधिक संयमित रुख अपनाया। उन्होंने कहा, "मुझे यह अच्छा लग रहा है। मुझे यह अच्छा लग रहा है।" मैं समझ नहीं पा रहा था कि क्यों। उन्होंने समझाया, "अब हमें ठीक-ठीक पता चल जाएगा कि हमारे दुश्मन कौन हैं और हमारी स्थिति क्या है।"
जनरल स्मट्स भी इस कठोर विचारधारा के खतरों को भांप गए थे और उन्होंने रंगभेद को "पूर्वाग्रह और भय से जन्मी एक पागल अवधारणा" कहकर निंदा की थी। राष्ट्रवादियों के चुनाव के क्षण से ही हम जान गए थे कि हमारी भूमि अब से तनाव और संघर्ष का स्थान होगी। दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में पहली बार, एक

विशुद्ध अफ़्रीकानर पार्टी ने सरकार का नेतृत्व किया। मालन ने अपने विजय भाषण में घोषणा की, "दक्षिण अफ्रीका एक बार फिर हमारा है।"

उसी वर्ष, यूथ लीग ने म्दा द्वारा लिखित और लीग की कार्यकारी समिति द्वारा जारी एक दस्तावेज़ में अपनी नीति की रूपरेखा तैयार की। यह श्वेत वर्चस्व को उखाड़ फेंकने के लिए सभी देशभक्त युवाओं का आह्वान था। हमने इस साम्यवादी धारणा को खारिज कर दिया कि अफ़्रीकी मुख्य रूप से एक आर्थिक वर्ग के रूप में उत्पीड़ित थे, न कि एक नस्ल के रूप में। हमने आगे कहा कि हमें अफ़्रीकी राष्ट्रवाद के झंडे तले एक शक्तिशाली राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन खड़ा करने की आवश्यकता है, जिसका नेतृत्व स्वयं अफ़्रीकी ही करें। हमने न्यायसंगत आधार पर भूमि के पुनर्वितरण, अफ्रीकियों को कुशल कार्य करने से रोकने वाले रंगभेद को समाप्त करने और मुफ्त एवं अनिवार्य शिक्षा की आवश्यकता का समर्थन किया। इस दस्तावेज़ में अफ्रीकी राष्ट्रवाद के दो प्रतिद्वंद्वी सिद्धांतों के बीच चल रही खींचतान को भी स्पष्ट किया गया है: एक ओर मार्कस गार्वे से प्रेरित अधिक चरमपंथी "अफ्रीका अफ्रीकियों के लिए" राष्ट्रवाद है, और दूसरी ओर यूथ लीग का अफ्रीकीवाद है, जो मानता है कि दक्षिण अफ्रीका एक बहुजातीय देश है।
मैं अफ़्रीकी राष्ट्रवाद की अति-क्रांतिकारी धारा के प्रति सहानुभूति रखता था। मुझे श्वेत व्यक्ति पर गुस्सा था, नस्लवाद पर नहीं। हालाँकि मैं श्वेत व्यक्ति को समुद्र में फेंकने के लिए तैयार नहीं था, लेकिन अगर वह अपनी मर्ज़ी से अपने जहाज़ों पर सवार होकर महाद्वीप छोड़ देता, तो मुझे बहुत खुशी होती।
यूथ लीग भारतीयों और अश्वेतों के प्रति कुछ हद तक अधिक मित्रवत थी। उसका कहना था कि अफ्रीकियों की तरह भारतीय भी उत्पीड़ित थे, लेकिन उनके पास भारत जैसा मातृभूमि था, जिस पर वे भरोसा कर सकते थे। अश्वेत भी उत्पीड़ित थे, लेकिन भारतीयों के विपरीत, उनके पास अफ्रीका के अलावा कोई मातृभूमि नहीं थी। मैं भारतीयों और अश्वेतों को स्वीकार करने के लिए तैयार था, बशर्ते वे हमारी नीतियों को स्वीकार करें; लेकिन उनके हित हमारे हितों से भिन्न थे, और मुझे संदेह था कि वे वास्तव में हमारे उद्देश्य को अपना पाएंगे या नहीं।

कुछ ही समय में, मालन ने अपना विनाशकारी कार्यक्रम लागू करना शुरू कर दिया। सत्ता में आने के कुछ ही हफ्तों के भीतर, राष्ट्रवादी सरकार ने रोबे लीब्रैंड्ट को क्षमा कर दिया, जो युद्धकालीन गद्दार था और जिसने नाज़ी जर्मनी के समर्थन में विद्रोहों का आयोजन किया था। सरकार ने ट्रेड यूनियन आंदोलन को कुचलने और भारतीय, रंगीन और अफ्रीकी लोगों के सीमित मताधिकारों को समाप्त करने की घोषणा की। अलग मतदाता प्रतिनिधित्व अधिनियम ने अंततः रंगीन लोगों को संसद में उनके प्रतिनिधित्व से वंचित कर दिया। मिश्रित विवाह निषेध अधिनियम 1949 में लागू किया गया और इसके तुरंत बाद अनैतिकता अधिनियम लाया गया, जिसने श्वेत और गैर-श्वेत लोगों के बीच यौन संबंधों को अवैध बना दिया। जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम ने सभी दक्षिण अफ्रीकियों को नस्ल के आधार पर वर्गीकृत किया, जिससे रंग ही व्यक्तियों का सबसे महत्वपूर्ण निर्धारक बन गया। मालन ने समूह क्षेत्र अधिनियम पेश किया - जिसे उन्होंने "रंगभेद का सार" बताया - जिसके तहत प्रत्येक नस्लीय समूह के लिए अलग शहरी क्षेत्र अनिवार्य कर दिए गए। अतीत में, श्वेत लोग बलपूर्वक भूमि छीनते थे; अब वे इसे कानून बनाकर सुरक्षित करते थे।
राज्य से उत्पन्न इस नए और कहीं अधिक शक्तिशाली खतरे के जवाब में, एएनसी ने एक अपरंपरागत और ऐतिहासिक मार्ग अपनाया। 1949 में, एएनसी ने स्वयं को एक वास्तविक जन संगठन में बदलने के लिए एक महत्वपूर्ण प्रयास शुरू किया। युवा लीग ने एक कार्य योजना तैयार की, जिसका आधार जन लामबंदी अभियान था। ब्लूमफ़ॉन्टेन में आयोजित एएनसी के वार्षिक सम्मेलन में, संगठन ने लीग के कार्य योजना को अपनाया, जिसमें बहिष्कार, हड़ताल, घर पर रहना, अहिंसक प्रतिरोध, विरोध प्रदर्शन और अन्य प्रकार की जन-कार्रवाई का आह्वान किया गया था। यह एक क्रांतिकारी बदलाव था: एएनसी की नीति हमेशा से कानून के दायरे में रहकर काम करने की रही थी। यूथ लीग में हमने नस्लीय उत्पीड़न के विरुद्ध कानूनी और संवैधानिक साधनों की विफलता देखी थी; अब पूरा संगठन अधिक सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार था।
ये बदलाव आंतरिक उथल-पुथल के बिना नहीं आए। सम्मेलन से कुछ सप्ताह पहले, वाल्टर सिसुलु, ओलिवर टैम्बो और मैं सोफियाटाउन स्थित डॉ. ज़ुमा के घर पर उनसे निजी तौर पर मिले। हमने उन्हें समझाया कि हमारा मानना है कि भारत में

गांधीजी के अहिंसक विरोध प्रदर्शनों और 1946 के निष्क्रिय प्रतिरोध अभियान की तर्ज पर जन आंदोलन का समय आ गया है, और हमने जोर देकर कहा कि एएनसी दमन के सामने बहुत ही निष्क्रिय हो गई है। हमने कहा कि एएनसी के नेताओं को गांधीजी की तरह अपने विश्वासों के लिए कानून तोड़ने और यदि आवश्यक हो तो जेल जाने के लिए भी तैयार रहना होगा।
डॉ. ज़ुमा ने इसका कड़ा विरोध करते हुए दावा किया कि ऐसी रणनीतियाँ समय से पहले की हैं और इनसे सरकार को एएनसी को कुचलने का बहाना मिल जाएगा। उन्होंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका में इस तरह के विरोध प्रदर्शन भविष्य में भी होंगे, लेकिन फिलहाल ऐसा कदम घातक साबित होगा। उन्होंने स्पष्ट किया कि वे एक सफल और व्यापक पेशे वाले डॉक्टर हैं और जेल जाकर वे अपने पेशे को खतरे में नहीं डालेंगे।
हमने डॉ. ज़ुमा को अल्टीमेटम दिया: हम एएनसी के अध्यक्ष पद के लिए उनके पुनर्निर्वाचन का समर्थन करेंगे, बशर्ते वे हमारे प्रस्तावित कार्य योजना का समर्थन करें। यदि वे हमारी योजना का समर्थन नहीं करेंगे, तो हम उनका समर्थन नहीं करेंगे। डॉ. ज़ुमा क्रोधित हो गए, हम पर ब्लैकमेल का आरोप लगाया और अपने पक्ष में मतदान करने के लिए शर्तें रख दीं। उन्होंने हमसे कहा कि हम युवा और अभिमानी हैं और उनका अनादर कर रहे हैं। हमने उनका विरोध किया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। वे हमारे प्रस्ताव से सहमत नहीं हुए।
रात के 11 बजे उसने हमें बिना किसी औपचारिकता के अपने घर से बाहर निकाल दिया और दरवाज़ा बंद कर दिया। सोफियाटाउन में कोई स्ट्रीटलाइट नहीं थी और रात में चाँद नहीं निकला था। सार्वजनिक परिवहन के सभी साधन बहुत पहले ही बंद हो चुके थे और हम ऑरलैंडो में मीलों दूर रहते थे। ओलिवर ने कहा कि ज़ुमा कम से कम हमें कोई परिवहन तो दे सकता था। वाल्टर पास में रहने वाले एक परिवार से परिचित था, और हमने उन्हें हमें रात भर अपने घर में ठहराने के लिए मना लिया।

उस दिसंबर में हुए सम्मेलन में, यूथ लीग के हम सदस्यों को पता था कि हमारे पास डॉ. ज़ुमा को पद से हटाने के लिए पर्याप्त वोट हैं। वैकल्पिक उम्मीदवार के रूप में, हमने अध्यक्ष पद के लिए डॉ. जे. एस. मोरोका का समर्थन

ध्यान दूं और राजनीति को भूल जाऊं। अगर मैं सम्मेलन में जाता तो मेरी नौकरी चली जाती और मैं ऐसा करने का जोखिम नहीं उठा सकता था।

जन आंदोलन का जोश उमड़ रहा था, लेकिन कम्युनिस्टों और भारतीयों के साथ मिलकर की जाने वाली किसी भी कार्रवाई को लेकर मैं संशय में था। मार्च 1950 में ट्रांसवाल एएनसी, ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस, अफ्रीकन पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन और कम्युनिस्ट पार्टी की जिला समिति द्वारा आयोजित "अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता की रक्षा सम्मेलन" में जोहान्सबर्ग के मार्केट स्क्वायर में दस हजार लोग एकत्रित हुए। डॉ. मोरोका ने कार्यपालिका से परामर्श किए बिना ही सम्मेलन की अध्यक्षता करने की सहमति दे दी। सम्मेलन सफल रहा, फिर भी मैं सतर्क रहा, क्योंकि इसके पीछे मुख्य प्रेरक शक्ति पार्टी ही थी।

कम्युनिस्ट पार्टी और भारतीय कांग्रेस के उकसावे पर, सम्मेलन ने 1 मई को एक दिवसीय आम हड़ताल का प्रस्ताव पारित किया, जिसे स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया गया। इसमें पास कानूनों और सभी भेदभावपूर्ण कानूनों को समाप्त करने की मांग की गई थी। हालांकि मैं इन उद्देश्यों का समर्थन करता था, लेकिन मेरा मानना था कि कम्युनिस्ट एएनसी के राष्ट्रीय विरोध दिवस की लोकप्रियता को कम करने की कोशिश कर रहे थे। मैंने मई दिवस की हड़ताल का विरोध इस आधार पर किया कि एएनसी ने इस अभियान की शुरुआत नहीं की थी, और मेरा मानना था कि हमें अपने अभियान पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
अहमद कथराडा उस समय मुश्किल से इक्कीस साल के थे और बाकी युवाओं की तरह अपनी ताकत दिखाने के लिए बेताब थे। वे ट्रांसवाल इंडियन यूथ कांग्रेस के एक प्रमुख सदस्य थे और उन्होंने सुना था कि मैं मई दिवस की हड़ताल का विरोध कर रहा हूँ। एक दिन कमिश्नर स्ट्रीट पर चलते हुए मेरी मुलाकात कथराडा से हुई और उन्होंने मुझसे तीखी बहस करते हुए आरोप लगाया कि मैं और यूथ लीग भारतीयों या अश्वेतों के साथ काम नहीं करना चाहते। चुनौती भरे लहजे में उन्होंने कहा, “आप एक अफ्रीकी नेता हैं और मैं एक भारतीय युवा हूँ। लेकिन मुझे पूरा यकीन है कि अफ्रीकी जनता हड़ताल का समर्थन करेगी और मैं आपको चुनौती देता हूँ कि आप किसी भी अफ्रीकी बस्ती को बैठक के लिए नामित करें और

मैं गारंटी देता हूँ कि लोग मेरा समर्थन करेंगे।” यह एक खोखली धमकी थी, लेकिन फिर भी मुझे बहुत गुस्सा आया। मैंने एएनसी, साउथ अफ्रीकन इंडियन कांग्रेस और कम्युनिस्ट पार्टी की कार्यकारी समिति की संयुक्त बैठक में शिकायत भी की, लेकिन इस्माइल मीर ने मुझे शांत करते हुए कहा, “नेल्सन, वह युवा और जल्दबाज़ है, तुम भी वैसा मत बनो।” इसके बाद मुझे अपने किए पर थोड़ी शर्मिंदगी महसूस हुई और मैंने शिकायत वापस ले ली। हालांकि मैं कथराडा से असहमत था, लेकिन मैं उसके जोश की प्रशंसा करता था, और यह एक ऐसी घटना थी जिस पर हम बाद में हंसने लगे।
स्वतंत्रता दिवस की हड़ताल एएनसी के आधिकारिक समर्थन के बिना ही संपन्न हुई। आशंका के चलते सरकार ने 1 मई को सभी सभाओं और जमावड़ों पर प्रतिबंध लगा दिया था। एक दिवसीय हड़ताल के दौरान दो-तिहाई से अधिक अफ्रीकी श्रमिक घर पर ही रहे। उस रात, वाल्टर और मैं ऑरलैंडो वेस्ट में स्वतंत्रता दिवस के उपलक्ष्य में इकट्ठा हुई भीड़ के किनारे पर थे, जो सरकार के प्रतिबंधों के बावजूद जमा हुई थी। चाँद चमकीला था, और जब हम प्रदर्शनकारियों के व्यवस्थित मार्च को देख रहे थे, तो हमें लगभग पाँच सौ गज दूर एक नाले के पार डेरा डाले पुलिसकर्मियों का एक समूह दिखाई दिया। उन्होंने हमें भी देख लिया होगा, क्योंकि अचानक ही उन्होंने हमारी ओर गोलियाँ चलाना शुरू कर दिया। हम ज़मीन पर लेट गए, और वहीं पड़े रहे जब तक कि घुड़सवार पुलिस भीड़ में घुसकर लोगों को लाठियों से पीटने लगी। हमने पास के एक नर्सों के छात्रावास में शरण ली, जहाँ हमें इमारत की दीवार से टकराती गोलियों की आवाज़ सुनाई दी। इस अंधाधुंध और बिना उकसावे के हुए हमले में अठारह अफ्रीकी मारे गए और कई अन्य घायल हो गए।
विरोध और आलोचना के बावजूद, राष्ट्रवादियों ने दमनकारी नीतियों को और भी कड़ा कर दिया। कुछ सप्ताह बाद, सरकार ने कुख्यात साम्यवाद दमन अधिनियम लागू किया और एएनसी ने जोहान्सबर्ग में एक आपातकालीन सम्मेलन बुलाया। इस अधिनियम ने दक्षिण अफ्रीका की कम्युनिस्ट पार्टी को गैरकानूनी घोषित कर दिया और पार्टी का सदस्य होना या साम्यवाद के उद्देश्यों को आगे बढ़ाना अपराध बना दिया, जिसके लिए अधिकतम दस वर्ष की कैद की सजा का प्रावधान था। लेकिन विधेयक को इतने व्यापक ढंग से तैयार किया गया था कि इसने राज्य के विरुद्ध सबसे हल्के विरोध को छोड़कर सभी प्रकार के विरोध को गैरकानूनी घोषित कर दिया, और किसी भी ऐसे सिद्धांत का समर्थन करना अपराध माना जो

"अशांति या अव्यवस्था को बढ़ावा देकर संघ के भीतर राजनीतिक, औद्योगिक, सामाजिक या आर्थिक परिवर्तन" को बढ़ावा देता हो। संक्षेप में, विधेयक ने सरकार को किसी भी संगठन को गैरकानूनी घोषित करने और उसकी नीतियों का विरोध करने वाले किसी भी व्यक्ति को प्रतिबंधित करने की अनुमति दे दी।
एएनसी, एसएआईसी और एपीओ ने इन नए उपायों पर चर्चा करने के लिए फिर से बैठक की, और डॉ. दादू समेत अन्य लोगों ने कहा कि अतीत के मतभेदों को सरकार के खिलाफ एकजुट मोर्चे को रोकने देना मूर्खता होगी। मैंने भी अपनी बात रखी और उनके विचारों का समर्थन किया: स्पष्ट रूप से, किसी भी एक मुक्ति समूह का दमन सभी मुक्ति समूहों के खिलाफ दमन था। उसी बैठक में ओलिवर ने दूरदर्शी शब्द कहे: “आज कम्युनिस्ट पार्टी है। कल हमारे ट्रेड यूनियन, हमारी इंडियन कांग्रेस, हमारी एपीओ, हमारी अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस होंगी।”
SAIC और APO के समर्थन से, ANC ने 26 जून, 1950 को राष्ट्रीय विरोध दिवस मनाने का संकल्प लिया। यह विरोध 1 मई को सरकार द्वारा अठारह अफ्रीकियों की हत्या और साम्यवाद दमन अधिनियम पारित किए जाने के विरोध में था। प्रस्ताव को मंजूरी मिल गई और विरोध दिवस की तैयारी में, हमने SAIC, APO और कम्युनिस्ट पार्टी के साथ एकजुटता दिखाई। मेरा मानना था कि यहाँ एक पर्याप्त खतरा था जिसने हमें अपने भारतीय और कम्युनिस्ट सहयोगियों के साथ हाथ मिलाने के लिए मजबूर कर दिया।
उस साल की शुरुआत में मुझे एएनसी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति में शामिल कर लिया गया था, जहाँ मैंने डॉ. ज़ुमा की जगह ली थी, जिन्होंने अध्यक्ष-महासचिव के रूप में दोबारा चुने जाने में असफल होने के बाद इस्तीफा दे दिया था। मुझे यह बात अच्छी तरह याद थी कि दस साल पहले जब मैं जोहान्सबर्ग आया था और राजनीति में आने का मेरा कोई इरादा नहीं था, तब डॉ. ज़ुमा ने ही मुझे मेरी पहली नौकरी दिलाने की कोशिश की थी। अब, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में, मैं एएनसी के सबसे वरिष्ठ लोगों के साथ मुख्य भूमिका में था। मैं संगठन के भीतर एक आलोचक की भूमिका से निकलकर उन शक्तियों में से एक बन गया था जिनके खिलाफ मैं विद्रोह करता रहा था। यह एक रोमांचक अनुभव था, और इसमें मिली-जुली भावनाएँ भी थीं। कुछ मायनों में, असंतुष्ट होना आसान होता है, क्योंकि तब व्यक्ति ज़िम्मेदारी से मुक्त होता है। कार्यकारी समिति के सदस्य के रूप में, मुझे तर्कों का मूल्यांकन

करना था और निर्णय लेने थे, और अपने जैसे विद्रोहियों द्वारा आलोचना किए जाने की उम्मीद भी रखनी थी।

दक्षिण अफ्रीका में जन आंदोलन करना जोखिम भरा था, जहाँ किसी अफ्रीकी नागरिक के लिए हड़ताल करना आपराधिक अपराध था और जहाँ अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता और आवागमन के अधिकारों पर बेरहमी से अंकुश लगाया गया था। हड़ताल करने पर एक अफ्रीकी श्रमिक न केवल अपनी नौकरी खो सकता था, बल्कि अपनी पूरी आजीविका और अपने क्षेत्र में रहने का अधिकार भी खो सकता था। मेरे अनुभव में, राजनीतिक हड़ताल हमेशा आर्थिक हड़ताल से अधिक जोखिम भरी होती है। उच्च वेतन या कम काम के घंटे जैसे स्पष्ट मुद्दों के बजाय राजनीतिक शिकायत पर आधारित हड़ताल विरोध का एक अधिक जोखिम भरा रूप है और इसके लिए विशेष रूप से कुशल संगठन की आवश्यकता होती है। विरोध दिवस एक आर्थिक हड़ताल के बजाय एक राजनीतिक हड़ताल थी।
26 जून की तैयारियों के लिए वाल्टर ने स्थानीय नेताओं से परामर्श करने के लिए देश भर का दौरा किया। उनकी अनुपस्थिति में, मैंने व्यस्त एएनसी कार्यालय का कार्यभार संभाला, जो एक जटिल राष्ट्रीय अभियान का केंद्र था। प्रतिदिन, विभिन्न नेता यह सुनिश्चित करने के लिए आते थे कि कार्ययोजना के अनुसार चल रहा है: मूसा कोटाने, डॉ. दादू, दिलीज़ा म्जी, ट्रांसवाल एएनसी के अध्यक्ष जे. बी. मार्क्स, यूसुफ कचालिया और उनके भाई मौलवी, काउंसिल ऑफ एक्शन के सचिव गौर रादेबे, माइकल हार्मेल, पीटर राबोरोको, न्थाटो मोटलाना। मैं देश के विभिन्न हिस्सों में गतिविधियों का समन्वय कर रहा था और क्षेत्रीय नेताओं से फोन पर बात कर रहा था। हमारे पास समय बहुत कम था, और योजना जल्दबाजी में बनाई गई थी।
विरोध दिवस एएनसी का राष्ट्रीय स्तर पर राजनीतिक हड़ताल आयोजित करने का पहला प्रयास था और यह एक हद तक सफल रहा। शहरों में, अधिकांश श्रमिक घर पर ही रहे और अश्वेतों के व्यवसाय बंद रहे। बेथल में, गर्ट सिबांडे, जो बाद में ट्रांसवाल एएनसी के अध्यक्ष बने, ने पाँच हज़ार लोगों के प्रदर्शन का नेतृत्व किया, जिसे देश भर के प्रमुख समाचार पत्रों में सुर्खियाँ मिलीं। विरोध दिवस ने हमारा मनोबल बढ़ाया, हमें हमारी शक्ति का एहसास कराया और

मलान सरकार को चेतावनी दी कि हम रंगभेद के सामने निष्क्रिय नहीं रहेंगे। 26 जून तब से स्वतंत्रता संग्राम में एक ऐतिहासिक दिन बन गया है और मुक्ति आंदोलन के भीतर इसे स्वतंत्रता दिवस के रूप में मनाया जाता है।
यह पहली बार था जब मैंने किसी राष्ट्रीय अभियान में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी, और मैंने दुश्मन के खिलाफ सुनियोजित लड़ाई की सफलता से उत्पन्न होने वाले उत्साह और प्रतिकूल परिस्थितियों से लड़ने से पैदा होने वाली भाईचारे की भावना का अनुभव किया।
मैं यह सीख रहा था कि संघर्ष सर्वथा व्याकुल था। संघर्ष में लीन व्यक्ति का अपना कोई पारिवारिक जीवन नहीं होता था। विरोध दिवस के दौरान ही मेरे दूसरे पुत्र, मकागाथो लेवानिका का जन्म हुआ। जब उनका जन्म हुआ, तब मैं एवलिन के साथ अस्पताल में था, लेकिन यह मेरे जीवन की गतिविधियों से बस एक क्षणिक विश्राम था। उनका नाम सेफाको मापोगो मकागाथो के नाम पर रखा गया था, जो 1917 से 1924 तक एएनसी के दूसरे अध्यक्ष थे, और लेवानिका, जो ज़ाम्बिया के एक प्रमुख सरदार थे। पेडी सरदार के पुत्र मकागाथो ने स्वयंसेवकों का नेतृत्व करते हुए उस रंगभेद का विरोध किया था, जिसके तहत अफ्रीकियों को प्रिटोरिया की सड़कों पर चलने की अनुमति नहीं थी, और उनका नाम मेरे लिए अदम्य साहस और अदम्यता का प्रतीक था।
एक दिन, इसी दौरान, मेरी पत्नी ने मुझे बताया कि मेरे बड़े बेटे थेम्बी, जो उस समय पाँच साल का था, ने उससे पूछा, "पापा कहाँ रहते हैं?" मैं रात को देर से घर लौटता था, उसके सो जाने के काफी देर बाद, और सुबह जल्दी उसके जागने से पहले ही निकल जाता था। मुझे अपने बच्चों के साथ से वंचित रहना अच्छा नहीं लगता था। उन दिनों मुझे उनकी बहुत याद आती थी, उस समय से बहुत पहले जब मुझे जरा भी अंदाजा नहीं था कि मुझे दशकों तक उनसे अलग रहना पड़ेगा।

उन दिनों मैं इस बात को लेकर कहीं अधिक आश्वस्त था कि मैं किस बात का विरोध कर रहा हूँ, बजाय इसके कि मैं किस बात का समर्थन कर रहा हूँ। साम्यवाद के प्रति मेरा दीर्घकालिक विरोध कमजोर पड़ रहा था। पार्टी के महासचिव और एएनसी की कार्यकारी समिति के सदस्य मूसा कोटाने अक्सर देर रात मेरे घर आते थे और हम सुबह तक बहस करते रहते थे। स्पष्ट सोच वाले और स्व-शिक्षित कोटाने

ट्रांसवाल के किसान परिवार के पुत्र थे। वे कहते थे, “नेल्सन, तुम्हें हमसे क्या आपत्ति है? हम सब एक ही दुश्मन से लड़ रहे हैं। हम एएनसी पर प्रभुत्व स्थापित करना नहीं चाहते; हम अफ्रीकी राष्ट्रवाद के संदर्भ में काम कर रहे हैं।” अंत में, उनके तर्कों का मेरे पास कोई अच्छा जवाब नहीं था।
कोताने, इस्माइल मीर और रूथ फर्स्ट के साथ मेरी मित्रता और उनके बलिदानों को देखकर, पार्टी के प्रति मेरे पूर्वाग्रह को सही ठहराना मेरे लिए दिन-प्रतिदिन कठिन होता जा रहा था। एएनसी के भीतर, पार्टी सदस्य जे. बी. मार्क्स, एडविन मोफुत्सान्याना, डैन ट्लोम और डेविड बोपापे, अन्य लोगों के साथ, समर्पित और मेहनती थे, और स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। 1946 के प्रतिरोध आंदोलन के नेताओं में से एक डॉ. दादू एक प्रसिद्ध मार्क्सवादी थे, जिन्होंने मानवाधिकारों के लिए संघर्ष करके सभी समूहों के लिए एक नायक का दर्जा प्राप्त कर लिया था। मैं ऐसे पुरुषों और महिलाओं की सत्यनिष्ठा पर सवाल नहीं उठा सकता था, और अब भी नहीं उठाता हूँ।
यदि मैं उनकी निष्ठा को चुनौती नहीं दे सकता था, तो भी मैं मार्क्सवाद के दार्शनिक और व्यावहारिक आधारों पर सवाल उठा सकता था। लेकिन मुझे मार्क्सवाद का बहुत कम ज्ञान था, और अपने कम्युनिस्ट मित्रों के साथ राजनीतिक चर्चाओं में मैंने खुद को मार्क्सवादी दर्शन के बारे में अपनी अज्ञानता के कारण असमर्थ पाया। मैंने इसे दूर करने का निश्चय किया। मैंने मार्क्स और एंगेल्स, लेनिन, स्टालिन, माओ त्से-तुंग और अन्य विद्वानों की संपूर्ण रचनाएँ प्राप्त कीं और द्वंद्वात्मक एवं ऐतिहासिक भौतिकवाद के दर्शन का गहन अध्ययन किया। इन रचनाओं का ठीक से अध्ययन करने के लिए मेरे पास बहुत कम समय था। जहाँ कम्युनिस्ट घोषणापत्र ने मुझे प्रेरित किया, वहीं दास कैपिटल ने मुझे थका दिया। फिर भी, वर्गहीन समाज के विचार ने मुझे दृढ़ता से आकर्षित किया, जो मेरे विचार में पारंपरिक अफ्रीकी संस्कृति के समान था, जहाँ जीवन साझा और सामुदायिक होता था। मैंने मार्क्स के मूल सिद्धांत को अपनाया, जिसमें स्वर्णिम नियम की सरलता और उदारता है: "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार; प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार।"

समाप्त करने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार था। उनके साथ काम करने के लिए मुझे कम्युनिस्ट बनने की आवश्यकता नहीं थी। मैंने पाया कि अफ्रीकी राष्ट्रवादियों और अफ्रीकी कम्युनिस्टों में आम तौर पर विभाजनकारी तत्वों की तुलना में एकजुट करने वाले तत्व कहीं अधिक थे। संशयवादी हमेशा यह सुझाव देते रहे हैं कि कम्युनिस्ट हमारा उपयोग कर रहे थे। लेकिन कौन कह सकता है कि हम उनका उपयोग नहीं कर रहे थे?

14

सत्ता में आने से पहले अगर हमें नेशनल पार्टी से कोई उम्मीद या भ्रम था, तो वह जल्द ही टूट गया। काफिरों को उनकी औकात दिखाने की उनकी धमकी कोरे में नहीं थी। कम्युनिज़्म दमन अधिनियम के अलावा, 1950 में पारित दो कानूनों ने रंगभेद की नींव रखी: जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम और समूह क्षेत्र अधिनियम। जैसा कि मैंने उल्लेख किया है, जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम ने सरकार को आधिकारिक तौर पर सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों को नस्ल के आधार पर वर्गीकृत करने का अधिकार दिया। अगर पहले से ऐसा नहीं था, तो नस्ल दक्षिण अफ़्रीकी समाज का अनिवार्य आधार बन गई। काले और रंगीन, या रंगीन और गोरे लोगों के बीच अंतर करने के लिए मनमाने और अर्थहीन परीक्षणों के परिणामस्वरूप अक्सर दुखद मामले सामने आते थे, जहाँ एक ही परिवार के सदस्यों को अलग-अलग वर्गीकृत किया जाता था, यह सब इस बात पर निर्भर करता था कि एक बच्चे का रंग हल्का है या गहरा। किसी को कहाँ रहने और काम करने की अनुमति होगी, यह बालों की लटों की बनावट या होंठों के आकार जैसे बेतुके भेदों पर निर्भर हो सकता था।
समूह क्षेत्र अधिनियम आवासीय रंगभेद की नींव था। इसके नियमों के तहत, प्रत्येक नस्लीय समूह केवल अपने अलग क्षेत्र में ही भूमि का स्वामित्व रख सकता था, परिसरों पर कब्जा कर सकता था और व्यापार कर सकता था। भारतीय अब केवल भारतीय क्षेत्रों में, अफ्रीकी अफ्रीकी क्षेत्रों में और रंगीन लोग रंगीन क्षेत्रों में ही रह सकते थे। यदि श्वेत लोग अन्य समूहों की भूमि या घरों पर कब्जा करना चाहते थे, तो वे बस उस भूमि को श्वेत क्षेत्र घोषित करके उस पर कब्जा कर सकते थे। समूह क्षेत्र अधिनियम ने जबरन विस्थापन के युग की शुरुआत की, जब नवगठित "श्वेत" शहरी क्षेत्रों में स्थित अफ्रीकी समुदायों, कस्बों और गांवों को हिंसक रूप से विस्थापित किया गया क्योंकि आस-पास के श्वेत भूस्वामियों को अपने पास अफ्रीकी लोगों का रहना पसंद नहीं था या वे केवल उनकी जमीन चाहते थे।
हटाए जाने वाले क्षेत्रों की सूची में सबसे ऊपर सोफियाटाउन था, जो पचास हजार से अधिक लोगों का एक जीवंत समुदाय था और जोहान्सबर्ग की सबसे पुरानी अश्वेत बस्तियों में से एक था। गरीबी के बावजूद, सोफियाटाउन में जीवन की

अपार रौनक थी और यह अफ्रीकी जीवन और संस्कृति में कई नई और मूल्यवान चीजों का उद्गम स्थल था। सरकार द्वारा इसे हटाने के प्रयासों से पहले भी, सोफियाटाउन का अफ्रीकी लोगों के लिए प्रतीकात्मक महत्व इसकी छोटी आबादी के अनुपात से कहीं अधिक था।
अगले वर्ष, सरकार ने दो और कानून पारित किए जिन्होंने सीधे तौर पर अश्वेतों और अफ्रीकियों के अधिकारों पर हमला किया। पृथक मतदाता प्रतिनिधित्व अधिनियम का उद्देश्य अश्वेतों को केप में एक अलग मतदाता सूची में स्थानांतरित करना था, जिससे उनके मताधिकार के अधिकार, जो उन्हें एक सदी से अधिक समय से प्राप्त थे, कमजोर हो गए। बंटू प्राधिकरण अधिनियम ने अफ्रीकियों के लिए राष्ट्रीय प्रतिनिधित्व के एकमात्र अप्रत्यक्ष मंच, मूल निवासी प्रतिनिधि परिषद को समाप्त कर दिया और उसके स्थान पर सरकार द्वारा नियुक्त जनजातीय प्रमुखों की एक पदानुक्रमित प्रणाली स्थापित की। इसका उद्देश्य पारंपरिक और मुख्य रूप से रूढ़िवादी जातीय नेताओं को सत्ता में वापस लाना था ताकि उन जातीय भिन्नताओं को कायम रखा जा सके जो धीरे-धीरे कम होने लगी थीं। ये दोनों कानून राष्ट्रवादी सरकार की विचारधारा का प्रतीक थे, जो दिखावा करती थी कि वह जिसे नष्ट करने का प्रयास कर रही है उसे संरक्षित कर रही है। लोगों के अधिकारों को छीनने वाले कानूनों को अक्सर उन अधिकारों को बहाल करने वाले कानूनों के रूप में वर्णित किया जाता था।

अश्वेत लोगों ने पृथक मतदाता अधिनियम के विरुद्ध आंदोलन किया और मार्च 1951 में केप टाउन में एक विशाल प्रदर्शन का आयोजन किया। अप्रैल में हुई हड़ताल के कारण दुकानें बंद रहीं और बच्चे घर पर ही रहे। भारतीयों, अश्वेतों और अफ्रीकियों के इस सक्रिय आंदोलन के संदर्भ में ही वाल्टर सिसुलु ने हममें से एक छोटे समूह के समक्ष राष्ट्रीय सविनय अवज्ञा अभियान का विचार रखा। उन्होंने एक योजना प्रस्तुत की जिसके अंतर्गत सभी समूहों के चयनित स्वयंसेवक कुछ कानूनों का उल्लंघन करके जानबूझकर कारावास को आमंत्रित करेंगे।

यह विचार मुझे और बाकी लोगों को तुरंत पसंद आ गया, लेकिन वाल्टर से इस बात पर असहमति थी कि इसमें कौन भाग ले। मैं हाल ही में यूथ लीग का राष्ट्रीय अध्यक्ष बना था, और अपनी इस नई भूमिका में मैंने ज़ोर दिया कि यह अभियान पूरी तरह से अफ़्रीकी होना चाहिए। मैंने कहा कि आम अफ़्रीकी लोग अभी भी भारतीयों और अश्वेतों के साथ मिलकर काम करने को लेकर सतर्क थे। हालाँकि मैंने साम्यवाद के विरोध में प्रगति की थी, फिर भी मुझे भारतीयों के प्रभाव का डर था। इसके अलावा, हमारे कई ज़मीनी स्तर के अफ़्रीकी समर्थक भारतीयों को दुकानदार और व्यापारी के रूप में अश्वेत मज़दूरों का शोषण करने वाला मानते थे।
वाल्टर ने इस बात से घोर असहमति जताई और कहा कि भारतीय, अश्वेत और अफ्रीकी लोग आपस में अटूट रूप से जुड़े हुए हैं। राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की बैठक में इस मुद्दे पर चर्चा हुई और मेरे विचार को खारिज कर दिया गया, यहाँ तक कि उन लोगों ने भी जो कट्टर अफ्रीकी राष्ट्रवादी माने जाते थे। लेकिन मैं फिर भी दृढ़ रहा और मैंने दिसंबर 1951 में राष्ट्रीय सम्मेलन में इस मामले को एक बार फिर उठाया, जहाँ प्रतिनिधियों ने मेरे विचार को उतनी ही दृढ़ता से खारिज कर दिया जितना कि राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने किया था। अब जब एएनसी के उच्चतम स्तर पर मेरे विचार को अस्वीकार कर दिया गया था, तो मैंने सर्वसम्मति से अपनाई गई स्थिति को पूरी तरह स्वीकार कर लिया। जहाँ एक ओर अकेले चलने की रणनीति की वकालत करने वाले मेरे भाषण को ठंडी प्रतिक्रिया मिली, वहीं युवा लीग के अध्यक्ष के रूप में मेरे द्वारा दिए गए भाषण को, जब लीग ने सहयोग की नई नीति के लिए अपना समर्थन देने का वादा किया, तो उसे जोरदार सराहना मिली।
डॉ. मोरोका, वाल्टर, जे. बी. मार्क्स, यूसुफ दादू और यूसुफ कचालिया की संयुक्त योजना परिषद के आग्रह पर, एएनसी सम्मेलन ने एक प्रस्ताव पारित किया जिसमें सरकार से 29 फरवरी, 1952 तक साम्यवाद दमन अधिनियम, समूह क्षेत्र अधिनियम, पृथक मतदाता प्रतिनिधित्व अधिनियम, बंटू प्राधिकरण अधिनियम, पास कानूनों और पशुधन सीमा कानूनों को निरस्त करने का आह्वान किया गया। इन कानूनों का उद्देश्य मवेशियों द्वारा अत्यधिक चराई को कम करना था, लेकिन इनका प्रभाव अफ्रीकियों के लिए भूमि को और कम करना था। परिषद ने संकल्प लिया कि एएनसी अन्यायपूर्ण कानूनों के विरोध अभियान की शुरुआत के उपलक्ष्य में 6 अप्रैल, 1952 को प्रदर्शन आयोजित करेगी। उसी

दिन श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोग 1652 में जान वैन रीबीक के केप द्वीप पर आगमन की तीन सौवीं वर्षगांठ मना रहे होंगे। 6 अप्रैल वह दिन है जिसे श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोग प्रतिवर्ष अपने देश की स्थापना के रूप में मनाते हैं
- और अफ़्रीकी लोग इसे तीन सौ वर्षों की गुलामी की शुरुआत के रूप में निंदा करते हैं।
एएनसी ने प्रधानमंत्री को इन प्रस्तावों और कानूनों को निरस्त करने की समय सीमा के बारे में सूचित करते हुए एक पत्र का मसौदा तैयार किया। चूंकि यह पत्र डॉ. मोरोका के नाम से भेजा जाना था, और डॉ. मोरोका ने इसे लिखने में भाग नहीं लिया था, इसलिए मुझे निर्देश दिया गया कि मैं उन्हें यह पत्र उनके घर थाबा 'नचू ले जाऊं, जो कि देश के एक बेहद रूढ़िवादी क्षेत्र ऑरेंज फ्री स्टेट में ब्लोमफोंटेन के पास एक कस्बा है। मैं लगभग उनसे मिलने वहां नहीं पहुंच पाया।

कुछ ही हफ़्ते पहले मैंने ड्राइविंग का टेस्ट दिया था। उन दिनों, अफ्रीकी लोगों के लिए ड्राइविंग लाइसेंस होना एक असामान्य बात थी, क्योंकि बहुत कम अश्वेत लोगों के पास कारें होती थीं। तय दिन पर, मैंने टेस्ट के लिए एक कार उधार ली। मैं थोड़ा आत्मविश्वास से भरा हुआ था और मैंने खुद ही कार चलाकर जाने का फैसला किया। मुझे देर हो रही थी और मैं ज़रूरत से ज़्यादा तेज़ गाड़ी चला रहा था। जब मैं एक गली से होते हुए मुख्य सड़क पर कार मोड़ रहा था, तो मैंने दोनों तरफ देखे बिना दूसरी तरफ से आ रही एक कार से टक्कर मार दी। नुकसान मामूली था, लेकिन अब मुझे निश्चित रूप से देर हो जाएगी। दूसरा ड्राइवर समझदार था और हम दोनों ने अपने-अपने खर्चे उठाने पर सहमति जताई। जब मैं परीक्षा केंद्र पर पहुँचा, तो मैंने अपने आगे एक श्वेत महिला को परीक्षा देते हुए देखा। वह ठीक से और सावधानी से गाड़ी चला रही थी। परीक्षा समाप्त होने पर, ड्राइविंग इंस्पेक्टर ने कहा, "धन्यवाद। कृपया गाड़ी वहाँ पार्क कर दें," और पास की एक जगह की ओर इशारा किया। महिला ने परीक्षा पास करने लायक अच्छी तरह से दी थी, लेकिन जैसे ही वह पार्किंग स्थल की ओर गाड़ी ले जा रही थी, उसने मोड़ पर गाड़ी को ठीक से नहीं मोड़ा और पिछला पहिया फुटपाथ पर चढ़ गया। इंस्पेक्टर जल्दी से पास आया और बोला,

"क्षमा कीजिए महोदया, आप परीक्षा में फेल हो गई हैं; कृपया दोबारा अपॉइंटमेंट लें।" मेरा आत्मविश्वास डगमगाने लगा। अगर यह आदमी एक श्वेत महिला को धोखे से परीक्षा में फेल करवा सकता है, तो मेरी क्या उम्मीद होगी? लेकिन मैंने परीक्षा में अच्छा प्रदर्शन किया, और जब परीक्षा समाप्त होने पर इंस्पेक्टर ने मुझे गाड़ी पार्क करने के लिए कहा, तो मैंने इतनी सावधानी से गाड़ी चलाई कि मुझे लगा कि वह मुझे धीमी गति से गाड़ी चलाने के लिए दंडित कर सकता है।
जब मुझे कानूनी तौर पर गाड़ी चलाने की अनुमति मिल गई, तो मैं एक अकेला टैक्सी ड्राइवर बन गया। साथियों और दोस्तों को लिफ्ट देना एक कर्तव्य था। इसलिए मुझे डॉ. मोरोका को पत्र ले जाने का काम सौंपा गया। यह मेरे लिए कोई मुश्किल काम नहीं था क्योंकि मुझे गाड़ी चलाते समय खिड़की से बाहर देखना हमेशा अच्छा लगता था। ऐसा लगता था कि ग्रामीण इलाकों में गाड़ी चलाते समय, जब हवा खिड़की से टकराती थी, तो मेरे दिमाग में सबसे अच्छे विचार आते थे। थाबा 'नचू जाते समय, मैं जोहान्सबर्ग से लगभग 120 मील दक्षिण में स्थित फ्री स्टेट के एक रूढ़िवादी कस्बे क्रूनस्टैड से गुज़रा। मैं एक पहाड़ी पर गाड़ी चला रहा था और मैंने अपने आगे साइकिल पर दो गोरे लड़कों को देखा। मेरी गाड़ी अभी भी थोड़ी अस्थिर थी, और मैं लड़कों के बहुत करीब आ गया। उनमें से एक ने अचानक बिना सिग्नल दिए मोड़ लिया और हमारी टक्कर हो गई। वह साइकिल से गिर गया और जब मैं उसकी मदद करने के लिए गाड़ी से बाहर निकला तो वह दर्द से कराह रहा था। उसने मुझे उठाने के लिए अपने हाथ फैला रखे थे, लेकिन जैसे ही मैं उसे उठाने वाला था, एक गोरे ट्रक ड्राइवर ने चिल्लाकर मुझे लड़के को न छूने के लिए कहा। ट्रक ड्राइवर ने बच्चे को डरा दिया, और फिर उसने अपने हाथ नीचे कर लिए जैसे कि वह नहीं चाहता था कि मैं उसे उठाऊं। लड़के को ज़्यादा चोट नहीं आई थी, और ट्रक ड्राइवर उसे पास ही स्थित पुलिस स्टेशन ले गया।
कुछ देर बाद स्थानीय पुलिस आ गई, और गोरे सार्जेंट ने मुझे देखते ही कहा, “काफ़िर, तुम आज शौच करोगे!” (काफ़िर, तुम आज शौच करोगे!) मैं इस घटना और उसके शब्दों की कठोरता से हिल गया था, लेकिन मैंने उसे साफ-साफ कह दिया कि मैं शौच तब करूँगा जब मेरा मन करेगा, न कि किसी पुलिसवाले के कहने पर। इस पर सार्जेंट ने मेरी जानकारी दर्ज करने के लिए अपनी नोटबुक निकाली।

अफ़्रीकी पुलिसवाले इस बात से हैरान थे कि एक अश्वेत व्यक्ति अंग्रेज़ी बोल सकता है, और जवाब देना तो दूर की बात है।
मेरे परिचय देने के बाद, वह कार की ओर मुड़ा और उसे खंगालने लगा। फर्श की चटाई के नीचे से उसने वामपंथी साप्ताहिक अखबार 'द गार्जियन' की एक प्रति निकाली, जिसे मैंने दुर्घटना के तुरंत बाद छिपा दिया था। (मैंने डॉ. मोरोका के लिए पत्र अपनी कमीज़ के अंदर रख लिया था।) उसने शीर्षक देखा और फिर उसे किसी समुद्री डाकू की तरह हवा में लहराते हुए चिल्लाया: "वाह, हमने एक कम्युनिस्ट को पकड़ लिया!" अखबार लहराते हुए वह जल्दी से चला गया। लगभग चार घंटे बाद सार्जेंट एक अन्य अधिकारी के साथ लौटा। यह सार्जेंट भी अफ्रीकानर था और अपना कर्तव्य ठीक से निभाने के लिए दृढ़ संकल्पित था। उसने कहा कि पुलिस रिकॉर्ड के लिए उसे दुर्घटनास्थल पर माप लेना होगा। मैंने सार्जेंट से कहा कि रात में माप लेना उचित नहीं है क्योंकि दुर्घटना दिन के उजाले में हुई थी। मैंने यह भी कहा कि मैं थाबा 'नचू में रात बिताना चाहता हूँ और क्रूनस्टैड में रुकने का खर्च वहन नहीं कर सकता। सार्जेंट ने मुझे अधीरता से देखा और पूछा, "आपका नाम क्या है?"
मैंने कहा, "मंडेला।"
“नहीं, पहला वाला,” उसने कहा। मैंने उसे बताया।
“नेल्सन,” सार्जेंट ने ऐसे कहा जैसे किसी बच्चे से बात कर रहा हो, “मैं तुम्हारी यात्रा फिर से शुरू करने में तुम्हारी मदद करना चाहता हूँ। लेकिन अगर तुम मेरे साथ बदतमीज़ी करोगे तो मेरे पास तुम्हारे साथ बदतमीज़ी करने और तुम्हें रात भर के लिए जेल में बंद करने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचेगा।” यह सुनकर मैं होश में आ गया और नाप-जोख के लिए राज़ी हो गया।
मैंने उस रात देर से अपनी यात्रा फिर से शुरू की, और अगली सुबह जब मैं एक्सेल्सियर जिले से गुजर रहा था, तभी मेरी कार रुक गई। मेरा पेट्रोल खत्म हो गया था। मैं पास के एक फार्महाउस तक पैदल गया और एक बुजुर्ग श्वेत महिला को अंग्रेजी में समझाया कि मुझे पेट्रोल खरीदना है। दरवाजा बंद करते हुए उसने कहा, "मेरे पास आपके लिए पेट्रोल नहीं है।" मैं दो मील चलकर अगले फार्म तक गया और अपनी पहली असफल कोशिश से सबक लेते हुए, मैंने एक अलग तरीका आजमाया। मैंने किसान से मिलने का अनुरोध किया, और जब वह आया तो मैंने विनम्रता का भाव दिखाया। मैंने कहा, "मेरे मालिक का पेट्रोल खत्म हो गया

है।" (मालिक या स्वामी के लिए अफ्रीकी शब्द 'बास' का अर्थ अधीनता होता है।) मिलनसार और मददगार किसान प्रधानमंत्री स्ट्राइडम का रिश्तेदार था। फिर भी, मुझे लगता है कि अगर मैंने उसे सच बताया होता और 'बास' शब्द का इस्तेमाल न किया होता, तो वह मुझे पेट्रोल दे देता।

डॉ. मोरोका के साथ मेरी मुलाकात मेरी यात्रा की तुलना में कहीं कम घटनापूर्ण रही। उन्होंने पत्र को स्वीकार कर लिया और मैं बिना किसी घटना के जोहान्सबर्ग वापस लौट आया। प्रधानमंत्री को लिखे पत्र में उल्लेख किया गया था कि एएनसी ने अपने वैध अधिकारों को प्राप्त करने के लिए उपलब्ध सभी संवैधानिक साधनों का उपयोग कर लिया है, और हम 29 फरवरी, 1952 तक छह "अन्यायपूर्ण कानूनों" को निरस्त करने की मांग करते हैं, अन्यथा हम गैर-संवैधानिक कार्रवाई करेंगे। मालन के निजी सचिव द्वारा हस्ताक्षरित उत्तर में कहा गया था कि श्वेतों को एक अलग समुदाय के रूप में अपनी पहचान बनाए रखने के लिए उपाय करने का अंतर्निहित अधिकार है, और अंत में यह धमकी दी गई थी कि यदि हम अपनी कार्रवाई जारी रखते हैं तो सरकार किसी भी प्रकार की अशांति को दबाने के लिए अपनी पूरी मशीनरी का उपयोग करने में संकोच नहीं करेगी।
मालन द्वारा हमारी मांगों को सिरे से खारिज करना हमने युद्ध की घोषणा के समान समझा। अब हमारे पास सविनय अवज्ञा के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था, और हमने बड़े पैमाने पर जन आंदोलन की तैयारी शुरू कर दी। स्वयंसेवकों की भर्ती और प्रशिक्षण अभियान के आवश्यक कार्यों में से एक था और इसकी सफलता या विफलता काफी हद तक इसी पर निर्भर थी। 6 अप्रैल को जोहान्सबर्ग, प्रिटोरिया, पोर्ट एलिजाबेथ, डरबन और केप टाउन में प्रारंभिक प्रदर्शन हुए। जब डॉ. मोरोका जोहान्सबर्ग के फ्रीडम स्क्वायर में एक सभा को संबोधित कर रहे थे, तब मैंने गारमेंट वर्कर्स यूनियन में संभावित स्वयंसेवकों के एक समूह से बात की। मैंने सैकड़ों अफ्रीकियों, भारतीयों और अश्वेतों के समूह को समझाया कि स्वयंसेवा करना एक कठिन और खतरनाक कर्तव्य है, क्योंकि अधिकारी स्वयंसेवकों को डराने-धमकाने, कैद करने और संभवतः उन पर हमला करने की कोशिश करेंगे। अधिकारी चाहे कुछ भी करें, स्वयंसेवक जवाबी कार्रवाई

नहीं कर सकते, अन्यथा इससे पूरे प्रयास का महत्व ही कम हो जाएगा। उन्हें हिंसा का जवाब अहिंसा से देना होगा; अनुशासन हर कीमत पर बनाए रखना होगा। 31 मई को एएनसी और एसएआईसी के कार्यकारियों ने पोर्ट एलिजाबेथ में बैठक की और घोषणा की कि अवज्ञा अभियान 26 जून से शुरू होगा, जो प्रथम राष्ट्रीय विरोध दिवस की वर्षगांठ है। उन्होंने अभियान का संचालन करने के लिए एक राष्ट्रीय कार्य समिति और स्वयंसेवकों की भर्ती और प्रशिक्षण के लिए एक राष्ट्रीय स्वयंसेवक बोर्ड का गठन भी किया। मुझे अभियान का राष्ट्रीय स्वयंसेवक प्रमुख और कार्य समिति तथा स्वयंसेवक बोर्ड दोनों का अध्यक्ष नियुक्त किया गया। मेरी जिम्मेदारियाँ अभियान का आयोजन करना, क्षेत्रीय शाखाओं का समन्वय करना, स्वयंसेवकों के लिए प्रचार करना और धन जुटाना थीं। हमने इस बात पर भी चर्चा की कि क्या अभियान को गांधीवादी अहिंसा के सिद्धांतों का पालन करना चाहिए, या महात्मा गांधी द्वारा बताए गए सत्याग्रह का, जो धर्म परिवर्तन के माध्यम से विजय प्राप्त करने का प्रयास करता है। कुछ लोगों ने विशुद्ध नैतिक आधार पर अहिंसा का समर्थन करते हुए कहा कि यह किसी भी अन्य विधि से नैतिक रूप से श्रेष्ठ है। इस विचार का दृढ़तापूर्वक समर्थन महात्मा गांधी के पुत्र और इंडियन ओपिनियन समाचार पत्र के संपादक मनीलाल गांधी ने किया, जो एसएआईसी के एक प्रमुख सदस्य थे। अपने सौम्य स्वभाव के कारण गांधीजी अहिंसा के साक्षात स्वरूप प्रतीत होते थे, और उन्होंने इस बात पर जोर दिया कि अभियान को भारत में उनके पिता द्वारा चलाए गए अभियान के समान ही चलाया जाए।
कुछ लोगों का कहना था कि हमें इस मुद्दे को सिद्धांतों के नज़रिए से नहीं, बल्कि रणनीति के नज़रिए से देखना चाहिए और परिस्थितियों के अनुसार ही तरीका अपनाना चाहिए। अगर कोई विशेष तरीका या रणनीति हमें दुश्मन को हराने में सक्षम बनाती है, तो उसका इस्तेमाल किया जाना चाहिए। इस मामले में, राज्य हमसे कहीं अधिक शक्तिशाली था और हमारे द्वारा हिंसा का कोई भी प्रयास बुरी तरह कुचल दिया जाता। इससे अहिंसा एक विकल्प के बजाय एक व्यावहारिक आवश्यकता बन गई। यही मेरा विचार था और मैंने गांधीवादी आदर्श में अहिंसा को एक अटूट सिद्धांत के रूप में नहीं, बल्कि परिस्थिति के अनुसार इस्तेमाल की जाने वाली रणनीति के रूप में देखा। सिद्धांत इतना महत्वपूर्ण नहीं था कि रणनीति का इस्तेमाल तब भी किया जाए जब वह आत्मघाती हो, जैसा कि स्वयं गांधी जी मानते थे। मैंने अहिंसक विरोध का आह्वान तब तक

किया जब तक वह प्रभावी था। मनीलाल गांधी के कड़े विरोध के बावजूद, मेरा यही विचार प्रबल रहा।
संयुक्त योजना परिषद ने असहयोग और अहिंसा के एक अनिश्चितकालीन कार्यक्रम पर सहमति व्यक्त की। अवज्ञा के दो चरण प्रस्तावित किए गए। पहले चरण में, कुछ प्रशिक्षित स्वयंसेवक चुनिंदा शहरी क्षेत्रों में कुछ विशेष कानूनों का उल्लंघन करेंगे। वे बिना अनुमति के प्रतिबंधित क्षेत्रों में प्रवेश करेंगे, केवल श्वेतों के लिए आरक्षित सुविधाओं जैसे शौचालय, केवल श्वेतों के लिए आरक्षित रेलवे डिब्बे, प्रतीक्षालय और डाकघर के प्रवेश द्वार का उपयोग करेंगे। वे कर्फ्यू के बाद जानबूझकर शहर में ही रहेंगे। अवज्ञा करने वालों के प्रत्येक समूह का एक नेता होगा जो अवज्ञा की घटना की सूचना पुलिस को पहले ही दे देगा ताकि कम से कम व्यवधान के साथ गिरफ्तारियां की जा सकें। दूसरे चरण में देश भर में हड़तालों और औद्योगिक कार्रवाइयों के साथ सामूहिक अवज्ञा की परिकल्पना की गई थी।
अवज्ञा अभियान के उद्घाटन से पहले, 22 जून को डरबन में 'स्वयंसेवकों का दिवस' नामक एक रैली आयोजित की गई। नेटाल एएनसी के अध्यक्ष चीफ लुथुली और नेटाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष डॉ. नाइकर, दोनों ने भाषण दिए और अभियान के प्रति अपनी प्रतिबद्धता व्यक्त की। मैं एक दिन पहले ही वहाँ पहुँच गया था और मुख्य वक्ता था। लगभग दस हज़ार लोग उपस्थित थे, और मैंने भीड़ से कहा कि अवज्ञा अभियान दक्षिण अफ्रीका में शोषित जनता द्वारा अब तक की सबसे शक्तिशाली कार्रवाई होगी। मैंने इससे पहले कभी इतनी बड़ी भीड़ को संबोधित नहीं किया था, और यह एक रोमांचकारी अनुभव था। कोई व्यक्ति इतने बड़े जनसमूह को उतनी कुशलता से संबोधित नहीं कर सकता जितना कि दो दर्जन लोगों के समूह को। फिर भी मैंने हमेशा बड़ी सभाओं को भी उतनी ही सावधानी से समझाने का प्रयास किया है जितनी छोटी सभाओं को। मैंने लोगों से कहा कि वे इतिहास रचेंगे और दक्षिण अफ्रीका की नस्लवादी नीतियों पर दुनिया का ध्यान केंद्रित करेंगे। मैंने इस बात पर ज़ोर दिया कि दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत लोगों - अफ्रीकियों, रंगीन लोगों और भारतीयों - के बीच एकता अंततः एक वास्तविकता बन गई है।

पूरे देश में, 26 जून को विरोध प्रदर्शन करने वालों ने साहस, उत्साह और ऐतिहासिक भावना के साथ ऐसा किया। अभियान की शुरुआत पोर्ट एलिजाबेथ में तड़के हुई, जहाँ रेमंड म्हालाबा के नेतृत्व में तैंतीस प्रदर्शनकारियों ने केवल गोरों के लिए आरक्षित प्रवेश द्वार से रेलवे स्टेशन में प्रवेश किया और उन्हें गिरफ्तार कर लिया गया। वे स्वतंत्रता के गीत गाते हुए आगे बढ़े, और उनके दोस्तों और परिवार ने उनका उत्साहवर्धन किया। प्रदर्शनकारियों और भीड़ ने एक साथ मिलकर नारा लगाया, "मयिबुये अफ्रीका!" (अफ्रीका वापस आए!)
छब्बीस तारीख की सुबह मैं एएनसी कार्यालय में दिन के प्रदर्शनों की देखरेख कर रहा था। ट्रांसवाल से आए स्वयंसेवकों के दल को दोपहर में जोहान्सबर्ग के पूर्व में बोक्सबर्ग के पास एक अफ्रीकी बस्ती में कार्रवाई करनी थी। रेवरेंड एन. बी. तांतसी के नेतृत्व में, उन्हें बिना अनुमति के बस्ती में प्रवेश करने पर गिरफ्तार होना था। रेवरेंड तांतसी एक बुजुर्ग व्यक्ति थे, अफ्रीकन मेथोडिस्ट एपिस्कोपल चर्च में पादरी और ट्रांसवाल एएनसी के कार्यवाहक अध्यक्ष थे।
सुबह काफ़ी देर हो चुकी थी और मैं प्रिटोरिया से रेवरेंड तांतसी के आने का इंतज़ार कर रहा था, तभी उन्होंने मुझे दफ्तर में फ़ोन किया। उनकी आवाज़ में उदासी थी और उन्होंने बताया कि उनके डॉक्टर ने उन्हें आदेश का उल्लंघन करके जेल जाने से मना किया है। मैंने उन्हें भरोसा दिलाया कि हम उन्हें गर्म कपड़े मुहैया कराएंगे और उन्हें सिर्फ़ एक रात जेल में बितानी होगी, लेकिन इसका कोई फ़ायदा नहीं हुआ। यह बहुत बड़ी निराशा थी, क्योंकि रेवरेंड तांतसी एक प्रतिष्ठित व्यक्ति थे और उन्हें इसलिए चुना गया था ताकि अधिकारियों को दिखाया जा सके कि हम सिर्फ़ कुछ उपद्रवी नौजवान नहीं हैं। रेवरेंड तांतसी के स्थान पर, हमें तुरंत एक समान रूप से सम्मानित व्यक्ति मिल गया: ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष नाना सीता, जिन्होंने 1946 के विरोध अभियान के दौरान अपने अहिंसक प्रतिरोध के लिए एक महीने जेल में बिताए थे। अपनी बढ़ती उम्र और गंभीर गठिया के बावजूद, सीता एक जुझारू व्यक्ति थे और उन्होंने हमारे विरोधियों का नेतृत्व करने के लिए सहमति दी।
दोपहर में, जब हम बोक्सबर्ग जाने की तैयारी कर रहे थे, मुझे एहसास हुआ कि एएनसी की ट्रांसवाल शाखा के सचिव का कोई पता नहीं चल रहा था। उन्हें नाना

सीता के साथ बोक्सबर्ग जाना था। यह एक और संकट था, और मैंने वाल्टर की ओर मुड़कर कहा, "तुम्हें जाना ही होगा।" ट्रांसवाल में यह हमारा पहला कार्यक्रम था, और यह ज़रूरी था कि प्रमुख व्यक्ति विरोध प्रदर्शन का नेतृत्व करें, अन्यथा ऐसा लगता कि नेता पीछे हट रहे हैं जबकि जनता को दंड भुगतना पड़ रहा है। हालाँकि वाल्टर आयोजकों में से एक थे और बाद में विरोध प्रदर्शन करने वाले थे, फिर भी वे तुरंत मान गए। मेरी मुख्य चिंता यह थी कि उन्होंने सूट पहना हुआ था, जो जेल के लिए अव्यवहारिक पोशाक थी, लेकिन हमने उनके लिए कुछ पुराने कपड़े ढूंढ लिए।
फिर हम बोक्सबर्ग के लिए रवाना हुए, जहाँ यूसुफ कचालिया और मैंने बोक्सबर्ग मजिस्ट्रेट को एक पत्र सौंपने की योजना बनाई थी, जिसमें उन्हें सूचित किया गया था कि हमारे पचास स्वयंसेवक उस दिन बिना परमिट के उनके क्षेत्र में स्थित अफ्रीकी बस्ती में प्रवेश करेंगे। जब हम मजिस्ट्रेट के कार्यालय पहुँचे, तो हमने वहाँ बड़ी संख्या में पत्रकारों और फोटोग्राफरों को पाया। जैसे ही मैंने मजिस्ट्रेट को लिफाफा सौंपा, फोटोग्राफर हरकत में आ गए। मजिस्ट्रेट ने कैमरों की फ्लैश से खुद को बचाया और फिर यूसुफ और मुझे निजी तौर पर इस मामले पर चर्चा करने के लिए अपने कक्ष में आमंत्रित किया। वे एक समझदार व्यक्ति थे और उन्होंने कहा कि उनका कार्यालय हमेशा हमारे लिए खुला है, लेकिन अत्यधिक प्रचार से मामला और बिगड़ जाएगा।
मजिस्ट्रेट के कार्यालय से हम सीधे उस कस्बे की ओर गए जहाँ प्रदर्शन हो रहा था, और आधे मील दूर से ही हमें अपने स्वयंसेवकों के जोशीले गायन और उन्हें प्रोत्साहित करने आए समर्थकों की विशाल भीड़ की आवाज़ सुनाई दी। मौके पर हमने देखा कि कस्बे के ऊँचे धातु के द्वार बंद थे और हमारे स्वयंसेवक धैर्यपूर्वक बाहर इंतज़ार कर रहे थे, प्रवेश की माँग कर रहे थे। कुल बावन स्वयंसेवक थे, जिनमें अफ्रीकी और भारतीय दोनों शामिल थे, और सैकड़ों उत्साही दर्शक और पत्रकार भी मौजूद थे। वाल्टर प्रदर्शनकारियों के मुखिया थे; उनकी उपस्थिति इस बात का प्रमाण थी कि हम गंभीर थे। लेकिन प्रदर्शनकारियों के मार्गदर्शक नाना सीता थे, जो गठिया रोग से पीड़ित होने के बावजूद, प्रदर्शनकारियों के बीच पूरे जोश के साथ घूम रहे थे, उनकी पीठ थपथपा रहे थे और अपने आत्मविश्वास से उनका हौसला बढ़ा रहे थे।

पहले एक घंटे तक गतिरोध बना रहा। पुलिस असामान्य रूप से संयमित थी और उनका व्यवहार हमें हैरान कर रहा था। क्या उनका संयम स्वयंसेवकों को थकाने की रणनीति थी? क्या वे पत्रकारों के जाने का इंतज़ार कर रहे थे और फिर अंधेरे की आड़ में नरसंहार करने वाले थे? या फिर वे इस दुविधा में थे कि हमें गिरफ्तार करके - जो कि वे सामान्यतः करते - वे वही कर रहे होंगे जो हम चाहते थे? लेकिन जब हम सोच-विचार कर ही रहे थे, अचानक स्थिति बदल गई। पुलिस ने फाटक खोलने का आदेश दिया। तुरंत ही स्वयंसेवक फाटकों से अंदर घुस गए, इस प्रकार उन्होंने कानून तोड़ दिया। एक पुलिस लेफ्टिनेंट ने सीटी बजाई और कुछ ही सेकंड बाद पुलिस ने स्वयंसेवकों को घेर लिया और उन्हें गिरफ्तार करना शुरू कर दिया। अभियान शुरू हो चुका था। प्रदर्शनकारियों को स्थानीय पुलिस स्टेशन ले जाया गया और उन पर आरोप लगाए गए।
उसी शाम, एक्शन कमेटी के नेता, जिनमें ओलिवर टैम्बो, यूसुफ कैचालिया और मैं शामिल थे, शहर में एक बैठक में शामिल हुए, जहाँ दिन की घटनाओं पर चर्चा की गई और आने वाले सप्ताह की योजना बनाई गई। यह उस इलाके के पास था जहाँ एएनसी की केंद्रीय शाखा के अध्यक्ष फ्लैग बोशिएलो के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन करने वालों का दूसरा समूह गिरफ्तारी के लिए तैयार था। ग्यारह बजे के कुछ ही देर बाद, हमने उन्हें सड़क पर एक साथ मार्च करते हुए पाया; ग्यारह बजे कर्फ्यू लागू हो जाता था और अफ्रीकियों को बाहर निकलने के लिए परमिट की आवश्यकता होती थी।
हम आधी रात को अपनी बैठक से निकले। मैं थका हुआ महसूस कर रहा था और विरोध करने के बजाय गर्म खाना और चैन की नींद के बारे में सोच रहा था। उसी क्षण, एक पुलिसकर्मी यूसुफ और मेरे पास आया। यह स्पष्ट था कि हम घर जा रहे थे, विरोध प्रदर्शन नहीं कर रहे थे। "नहीं, मंडेला," पुलिसकर्मी ने पुकारा। "तुम भाग नहीं सकते।" उसने अपनी लाठी से पास खड़ी पुलिस वैन की ओर इशारा किया और कहा, "वैन में बैठो।" मेरा मन किया कि मैं उसे समझाऊं कि मैं अभियान के दैनिक कार्यों का प्रभारी हूं और मुझे अभी विरोध करने और गिरफ्तार होने की कोई योजना नहीं है, लेकिन जाहिर है, यह हास्यास्पद होता। मैंने देखा कि उसने यूसुफ को गिरफ्तार कर लिया, जो इस सब की विडंबना पर जोर से हंस पड़ा। पुलिस द्वारा ले जाते समय उसे मुस्कुराते हुए देखना एक सुखद दृश्य था।

कुछ ही क्षणों में, यूसुफ और मैं फ्लैग बोशिएलो के नेतृत्व में अपने पचास से अधिक स्वयंसेवकों के बीच थे, जिन्हें ट्रकों में बिठाकर मार्शल स्क्वायर नामक लाल ईंटों से बने पुलिस स्टेशन ले जाया जा रहा था। एक्शन कमेटी के नेताओं के रूप में, हम चिंतित थे कि अन्य लोग हमारी अनुपस्थिति पर आश्चर्य करेंगे और मैं इस बात को लेकर चिंतित था कि अभियान का नेतृत्व कौन करेगा। लेकिन हमारा मनोबल बुलंद था। जेल जाते समय भी, वैनें प्रदर्शनकारियों की बुलंद आवाज़ों में "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" (ईश्वर अफ़्रीका को आशीर्वाद दे) गाए जा रहे मधुर अफ्रीकी राष्ट्रगान की धुन पर झूम रही थीं।
उस पहली रात, ड्रिल यार्ड में, हममें से एक को एक श्वेत वार्डर ने इतनी ज़ोर से धक्का दिया कि वह सीढ़ियों से गिर गया और उसका टखना टूट गया। मैंने वार्डर से उसके इस व्यवहार का विरोध किया, तो उसने मुझ पर लात मारकर मुझे पिंडली पर घूंसा मारा। मैंने घायल व्यक्ति के लिए चिकित्सा सहायता की मांग की और हमने एक छोटा लेकिन मुखर प्रदर्शन शुरू किया। हमें संक्षिप्त रूप से बताया गया कि यदि घायल व्यक्ति चाहे तो अगले दिन डॉक्टर से मिलने का अनुरोध कर सकता है। हम पूरी रात उसके तीव्र दर्द से अवगत थे।
तब तक मैंने जेल में थोड़ा-थोड़ा समय बिताया था, लेकिन यह मेरा पहला गहन अनुभव था। मार्शल स्क्वायर गंदा, अंधेरा और बदहाल था, लेकिन हम सब एक साथ थे और इतने जोश और उत्साह से भरे हुए थे कि मुझे अपने आसपास की चीजों का शायद ही एहसास हुआ। हमारे साथी विद्रोहियों की दोस्ती ने दो दिन बहुत जल्दी गुजार दिए।

* * *

अवज्ञा अभियान के पहले दिन, देश भर में 250 से अधिक स्वयंसेवकों ने विभिन्न अन्यायपूर्ण कानूनों का उल्लंघन किया और उन्हें जेल में डाल दिया गया। यह एक शुभ शुरुआत थी। हमारे सैनिक अनुशासित, व्यवस्थित और आत्मविश्वासी थे।
अगले पाँच महीनों में, 8,500 लोगों ने इस अभियान में भाग लिया। डॉक्टर, कारखाने के मजदूर, वकील, शिक्षक, छात्र, मंत्री, सभी ने अवज्ञा की और जेल गए। उन्होंने गीत गाया, “हे मालन! जेल के दरवाजे खोलो। हम अंदर जाना चाहते

हैं।” यह अभियान विटवाटरसैंड से लेकर डरबन, पोर्ट एलिजाबेथ, ईस्ट लंदन और केप टाउन तक, और पूर्वी और पश्चिमी केप के छोटे कस्बों तक फैल गया। ग्रामीण क्षेत्रों में भी प्रतिरोध की भावना पनपने लगी थी। अधिकतर अपराध मामूली थे, और सजा कुछ रातों से लेकर कुछ हफ्तों तक की जेल थी, जिसमें जुर्माने का विकल्प भी था, जो शायद ही कभी दस पाउंड से अधिक होता था। इस अभियान को व्यापक प्रचार मिला और एएनसी की सदस्यता लगभग 20,000 से बढ़कर 100,000 हो गई, जिसमें सबसे उल्लेखनीय वृद्धि पूर्वी केप में हुई, जिसने सभी नए सदस्यों में से आधे का योगदान दिया।
अभियान के छह महीनों के दौरान मैंने पूरे देश में बहुत यात्रा की। मैं आम तौर पर कार से जाता था, रात में या सुबह बहुत जल्दी निकलता था। मैंने केप, नेटाल और ट्रांसवाल का दौरा किया, छोटे समूहों को अभियान के बारे में समझाया, कभी-कभी बस्तियों में घर-घर जाकर लोगों से मिला। अक्सर, मेरा काम उन क्षेत्रों में मतभेदों को दूर करना होता था जो कार्रवाई शुरू करने वाले थे या हाल ही में कर चुके थे। उन दिनों, जब अफ्रीकियों के लिए जनसंचार के साधन आदिम या न के बराबर थे, राजनीति संकीर्ण थी। हमें लोगों को एक-एक करके अपने पक्ष में करना पड़ा।
एक बार मैं पूर्वी केप गया था, ताकि एल्कोट ग्वेंटशे से जुड़े एक विवाद को सुलझा सकूँ, जो पूर्वी लंदन में आंदोलन का नेतृत्व कर रहे थे। ग्वेंटशे एक सफल दुकानदार थे और दो साल पहले 26 जून के विरोध प्रदर्शन के लिए पूर्वी लंदन को संगठित करने में उन्होंने महत्वपूर्ण भूमिका निभाई थी। अवज्ञा अभियान की शुरुआत में उन्हें कुछ समय के लिए जेल भी जाना पड़ा था। वे एक मजबूत और सक्षम व्यक्ति थे, लेकिन वे एक व्यक्तिवादी थे जो कार्यकारी परिषद की सलाह को नजरअंदाज करते हुए अपने फैसले खुद लेते थे। अब उनका अपनी ही कार्यकारी परिषद से मतभेद था, जिसमें ज्यादातर बुद्धिजीवी लोग शामिल थे।
ग्वेंट्शे अपने विरोधियों को बदनाम करने के लिए कुछ मुद्दों का फायदा उठाना जानते थे। वे स्थानीय सदस्यों के सामने बोलते थे, जो मजदूर थे, बुद्धिजीवी नहीं, और कहते थे - ज़ोसा भाषा में, कभी अंग्रेजी में नहीं, क्योंकि अंग्रेजी बुद्धिजीवियों की भाषा थी - "साथियों, मुझे लगता है आप जानते हैं कि मैंने संघर्ष के लिए कितना कष्ट सहा है। मेरे पास एक अच्छी नौकरी थी और फिर अवज्ञा अभियान की शुरुआत में मुझे जेल जाना पड़ा और मेरी

नौकरी चली गई। अब जब मैं जेल से बाहर आ गया हूँ, तो ये बुद्धिजीवी आए हैं और कह रहे हैं, 'ग्वेंट्शे, हम आपसे बेहतर शिक्षित हैं, हम आपसे अधिक सक्षम हैं, हमें यह अभियान चलाने दीजिए।' "
जब मैंने स्थिति की जाँच की तो पाया कि ग्वेंटशे ने वास्तव में कार्यपालिका की सलाह को अनसुना कर दिया था। लेकिन जनता उनके साथ थी, और उन्होंने स्वयंसेवकों का एक अनुशासित और सुव्यवस्थित समूह बना लिया था, जिन्होंने ग्वेंटशे के जेल में रहते हुए भी व्यवस्थित तरीके से विरोध प्रदर्शन किया था। हालाँकि मुझे लगा कि कार्यपालिका की अवहेलना करना ग्वेंटशे की गलती थी, फिर भी वह अच्छा काम कर रहे थे और इतने मज़बूती से अपनी जगह बना चुके थे कि उन्हें आसानी से हटाया नहीं जा सकता था। जब मैं कार्यपालिका के सदस्यों से मिला, तो मैंने उन्हें समझाया कि अब इस स्थिति में कुछ करना अव्यावहारिक है, लेकिन अगर वे इसे सुधारना चाहते हैं, तो उन्हें अगले चुनाव में उन्हें हराना होगा। यह उन पहले अनुभवों में से एक था जब मैंने देखा कि जनता के विरुद्ध जाना मूर्खता है। ऐसा कोई कदम उठाना व्यर्थ है जिसका जनता विरोध करे, क्योंकि तब उसे लागू करना असंभव हो जाएगा।

सरकार इस अभियान को अपनी सुरक्षा और रंगभेद की नीति के लिए खतरा मानती थी। वे सविनय अवज्ञा को विरोध का एक रूप नहीं, बल्कि एक अपराध समझते थे और अफ़्रीकी एवं भारतीय लोगों के बीच बढ़ती साझेदारी से चिंतित थे। रंगभेद का उद्देश्य नस्लीय समूहों को विभाजित करना था, और हमने यह साबित कर दिया कि विभिन्न समूह एक साथ मिलकर काम कर सकते हैं। अफ़्रीकी एवं भारतीय लोगों के बीच, उदारवादियों एवं कट्टरपंथियों के बीच एक संयुक्त मोर्चा बनने की संभावना ने उन्हें बेहद चिंतित कर दिया था। राष्ट्रवादियों ने जोर देकर कहा कि यह अभियान कम्युनिस्ट आंदोलनकारियों द्वारा उकसाया और चलाया गया था। न्याय मंत्री ने घोषणा की कि वे जल्द ही हमारे विरोध से निपटने के लिए कानून पारित करेंगे, जिसे उन्होंने 1953 के संसदीय सत्र के दौरान सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम पारित करके अमल में लाया। इस अधिनियम ने सरकार को मार्शल लॉ घोषित करने और बिना मुकदमे के लोगों को हिरासत में लेने का

अधिकार दिया, और आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम पारित किया, जिसने अवज्ञा करने वालों के लिए शारीरिक दंड को अधिकृत किया।
सरकार ने अभियान को रोकने के लिए कई छल-कपट किए। सरकारी प्रचारकों ने बार-बार दावा किया कि अभियान के नेता आराम से जीवन यापन कर रहे हैं जबकि आम जनता जेलों में सड़ रही है। यह आरोप सत्य से कोसों दूर था, फिर भी इसे कुछ हद तक मान्यता मिल गई। सरकार ने संगठन में जासूसों और उकसाने वाले एजेंटों को भी भेजा। एएनसी लगभग हर उस व्यक्ति का स्वागत करती थी जो इसमें शामिल होना चाहता था। हालांकि हमारे स्वयंसेवकों को विरोध प्रदर्शन के लिए चुने जाने से पहले सावधानीपूर्वक जांचा गया था, फिर भी पुलिस न केवल हमारी स्थानीय शाखाओं में, बल्कि विरोध प्रदर्शन करने वालों के कुछ समूहों में भी घुसपैठ करने में कामयाब रही। जब मुझे गिरफ्तार करके मार्शल स्क्वायर भेजा गया, तो मैंने विरोध प्रदर्शन करने वालों में दो लोगों को देखा, जिनमें से एक को मैंने पहले कभी नहीं देखा था। उसने अजीबोगरीब जेल के कपड़े पहने हुए थे: सूट और टाई, ऊपर से ओवरकोट और रेशमी स्कार्फ। भला कौन इस तरह के कपड़े पहनकर जेल जाता है? उसका नाम रमाईला था, और तीसरे दिन जब हमारी रिहाई होनी थी, वह अचानक गायब हो गया।
दूसरा साथी, जिसका नाम मखांडा था, अपने फौजी अंदाज़ के कारण सबसे अलग दिख रहा था। हम सब आँगन में थे और पूरे जोश में थे। विरोध करने वाले यूसुफ और मेरे आगे-आगे चलते और हमें सलाम करते। मखांडा, जो लंबा और दुबला-पतला था, एक सिपाही की तरह चलता और फिर बड़े सलीके से सलाम करता। कई साथियों ने उसे चिढ़ाया कि इतनी अच्छी तरह से सलाम करने के लिए वह ज़रूर पुलिसवाला होगा। मखांडा पहले एएनसी मुख्यालय में सफाईकर्मी के रूप में काम करता था। वह बहुत मेहनती था और साथियों के बीच लोकप्रिय था क्योंकि जब भी कोई भूखा होता, वह दौड़कर मछली और चिप्स ले आता था। लेकिन बाद में हुई सुनवाई में पता चला कि मखांडा और रमाईला दोनों पुलिस जासूस थे। रमाईला ने गवाही दी कि उसने विद्रोहियों के बीच घुसपैठ की थी; जबकि भरोसेमंद मखांडा वास्तव में जासूस सार्जेंट मोटलौंग था।
अपने ही भाइयों के खिलाफ जासूसी करने वाले अफ्रीकी आम तौर पर पैसे के लिए ऐसा करते थे। दक्षिण अफ्रीका में कई अश्वेतों का मानना था कि श्वेतों को चुनौती देने का अश्वेतों का कोई भी प्रयास मूर्खतापूर्ण और असफल होना तय था; श्वेत बहुत चालाक और शक्तिशाली थे। ये जासूस हमें श्वेत सत्ता संरचना

के लिए नहीं, बल्कि अश्वेतों के हितों के लिए खतरा मानते थे, क्योंकि श्वेत कुछ आंदोलनकारियों के आचरण के आधार पर सभी अश्वेतों के साथ दुर्व्यवहार करते थे।
फिर भी, कई अश्वेत पुलिसकर्मी ऐसे थे जिन्होंने गुप्त रूप से हमारी सहायता की। वे भले लोग थे और नैतिक दुविधा में फंसे हुए थे। वे अपने नियोक्ता के प्रति वफादार थे और अपने परिवारों का भरण-पोषण करने के लिए उन्हें अपनी नौकरी बनाए रखनी पड़ती थी, लेकिन वे हमारे उद्देश्य के प्रति सहानुभूति रखते थे। सुरक्षा पुलिस के कुछ अफ्रीकी अधिकारियों के साथ हमारा समझौता था कि वे हमें पुलिस छापे की सूचना देंगे। ये लोग देशभक्त थे जिन्होंने संघर्ष में सहयोग देने के लिए अपनी जान जोखिम में डाली।
सरकार ही हमारी एकमात्र बाधा नहीं थी। जिन लोगों से हमें मदद मिल सकती थी, उन्होंने इसके बजाय हमें रोका। अवज्ञा अभियान के चरम पर, यूनाइटेड पार्टी ने अपने दो सांसदों को अभियान रोकने के लिए भेजा। उन्होंने कहा कि अगर हम यूनाइटेड पार्टी के नेता जे. जी. एन. स्ट्रॉस के आह्वान पर अपना अभियान छोड़ देते हैं, तो इससे पार्टी को अगले चुनाव में राष्ट्रवादियों को हराने में मदद मिलेगी। हमने इसे अस्वीकार कर दिया और स्ट्रॉस ने उसी तरह से हम पर हमला किया जैसे राष्ट्रवादियों ने किया था।
हमें एएनसी के एक विद्रोही गुट, नेशनल माइंडेड ब्लॉक, के हमले का भी सामना करना पड़ा। राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के पूर्व सदस्य सेलोप थेमा के नेतृत्व में, यह गुट एएनसी से तब अलग हो गया जब जे. बी. मार्क्स ट्रांसवाल एएनसी के अध्यक्ष चुने गए। बंटू वर्ल्ड अखबार के संपादक थेमा ने अपने अखबार में इस अभियान की कड़ी आलोचना करते हुए दावा किया कि कम्युनिस्टों ने एएनसी पर कब्जा कर लिया है और भारतीय अफ्रीकियों का शोषण कर रहे हैं। उन्होंने जोर देकर कहा कि अब जब कम्युनिस्ट भूमिगत रूप से काम कर रहे हैं, तो वे और भी खतरनाक हो गए हैं, और भारतीय आर्थिक हित अफ्रीकियों के हितों से टकरा रहे हैं। हालांकि वे एएनसी में अल्पमत में थे, लेकिन उनके विचारों को कुछ कट्टरपंथी यूथ लीग के सदस्यों के बीच सहानुभूति मिली।

मई में, अवज्ञा अभियान के चरम पर, जे. बी. मार्क्स को 1950 के साम्यवाद दमन अधिनियम के तहत "साम्यवाद के उद्देश्यों को बढ़ावा देने" के आरोप में

प्रतिबंधित कर दिया गया था। प्रतिबंध सरकार का एक कानूनी आदेश था, और आम तौर पर इसमें निर्दिष्ट संगठनों से जबरन इस्तीफा देना और किसी भी प्रकार की सभाओं में भाग लेने पर प्रतिबंध शामिल होता था। यह एक प्रकार की चलती- फिरती कैद थी। किसी व्यक्ति को प्रतिबंधित करने के लिए सरकार को किसी सबूत की आवश्यकता नहीं होती थी, न ही कोई आरोप लगाया जाता था; न्याय मंत्री केवल इसकी घोषणा कर देते थे। यह एक ऐसी रणनीति थी जिसका उद्देश्य व्यक्ति को संघर्ष से अलग करना और उसे राजनीति से बाहर एक सीमित जीवन जीने की अनुमति देना था। प्रतिबंध आदेश का उल्लंघन या अवहेलना करना कारावास को आमंत्रित करने के समान था।
उस वर्ष अक्टूबर में ट्रांसवाल सम्मेलन में, प्रतिबंधित जे. बी. मार्क्स के स्थान पर मेरा नाम प्रस्तावित किया गया, जिन्होंने मुझे अपना उत्तराधिकारी बनाने की सिफारिश की थी। मैं युवा लीग का राष्ट्रीय अध्यक्ष था और मार्क्स के पद का प्रबल दावेदार था, लेकिन ट्रांसवाल एएनसी के भीतर के एक समूह ने मेरी उम्मीदवारी का विरोध किया, जिसने खुद को "बफाबेगिया" (नाचते हुए मरने वाले) कहा। इस समूह में मुख्य रूप से पूर्व कम्युनिस्ट थे जो बाद में अतिवादी अफ्रीकी राष्ट्रवादी बन गए थे। वे भारतीय कार्यकर्ताओं से सभी संबंध तोड़ना चाहते थे और एएनसी को अधिक टकरावपूर्ण रणनीति की ओर ले जाना चाहते थे। उनका नेतृत्व मैकडोनाल्ड मासेको कर रहे थे, जो एक पूर्व कम्युनिस्ट थे और अवज्ञा अभियान के दौरान एएनसी की ऑरलैंडो शाखा के अध्यक्ष थे, और सेपेरेपेरे मारुपेंग, जो विटवाटरसैंड में अवज्ञा अभियान के मुख्य स्वयंसेवक थे। मासेको और मारुपेंग दोनों ट्रांसवाल के अध्यक्ष पद के लिए चुनाव लड़ने का इरादा रखते थे।
मरुपेंग को एक तरह का जनवादी नेता माना जाता था। वह सेना की शैली का खाकी सूट पहनते थे, जिसमें कंधे पर बैज और सोने के बटन लगे होते थे, और उनके हाथ में वैसी ही लाठी होती थी जैसी फील्ड मार्शल मोंटगोमरी के समय में मशहूर थी। वह सभाओं के सामने खड़े होकर, लाठी को बगल में दबाए, कहते थे: “मैं आज़ादी का इंतज़ार करते-करते थक गया हूँ। मुझे अभी आज़ादी चाहिए! मैं मालन से चौराहे पर मिलूंगा और उसे दिखाऊंगा कि मुझे क्या चाहिए।” फिर, लाठी को मंच पर पटकते हुए, वह चिल्लाते थे, “मुझे अभी आज़ादी चाहिए!”
इस तरह के भाषणों के कारण, मारुपेंग अवज्ञा अभियान के दौरान बेहद लोकप्रिय हो गए, लेकिन लोकप्रियता चुनाव में केवल एक कारक है। उन्हें लगा कि अपनी इस

नई लोकप्रियता के कारण वे राष्ट्रपति चुनाव जीत जाएंगे। चुनाव से पहले, जब यह पता चला कि मैं राष्ट्रपति पद का उम्मीदवार हूँ, तो मैंने उनसे संपर्क किया और कहा, "मैं चाहता हूँ कि आप कार्यपालिका के चुनाव में खड़े हों ताकि जब मैं राष्ट्रपति बनूँ तो आप मेरे साथ काम कर सकें।" उन्होंने इसे अपमान समझा, जैसे कि मैं उन्हें पदावनत कर रहा हूँ, और उन्होंने इनकार कर दिया, और इसके बजाय स्वयं राष्ट्रपति पद के लिए चुनाव लड़ने का फैसला किया। लेकिन उनका अनुमान गलत निकला, क्योंकि मैंने भारी बहुमत से चुनाव जीत लिया।

30 जुलाई 1952 को, अवज्ञा अभियान अपने चरम पर था, मैं उस समय अपनी लॉ फर्म एच. एम. बास्नर में काम कर रहा था, तभी पुलिस मेरे गिरफ्तारी वारंट के साथ आ गई। आरोप था कम्युनिज़्म दमन अधिनियम का उल्लंघन। सरकार ने जोहान्सबर्ग, पोर्ट एलिजाबेथ और किम्बरली में अभियान के नेताओं की एक साथ कई गिरफ्तारियां कीं। महीने की शुरुआत में, पुलिस ने पूरे देश में एएनसी और एसएआईसी के अधिकारियों के घरों और दफ्तरों पर छापे मारे थे और कागजात व दस्तावेज़ ज़ब्त किए थे। इस तरह की छापेमारी एक नई बात थी और इसने व्यापक और अवैध तलाशी का एक पैटर्न स्थापित किया, जो बाद में सरकार के व्यवहार का एक नियमित हिस्सा बन गया।
मेरी और अन्य लोगों की गिरफ्तारी के परिणामस्वरूप सितंबर में जोहान्सबर्ग में इक्कीस आरोपियों पर मुकदमा चला, जिनमें एएनसी, एसएआईसी, एएनसी यूथ लीग और ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस के अध्यक्ष और महासचिव शामिल थे। जोहान्सबर्ग में जिन इक्कीस लोगों पर मुकदमा चल रहा था, उनमें डॉ. मोरोका, वाल्टर सिसुलु और जे. बी. मार्क्स भी शामिल थे। डॉ. दादू, यूसुफ कचालिया और अहमद कथराडा सहित कई भारतीय नेताओं को गिरफ्तार किया गया। अदालत में हमारी पेशी जोशीली राजनीतिक रैलियों का अवसर बन गई। प्रदर्शनकारियों की भारी भीड़ जोहान्सबर्ग की सड़कों से गुज़री और शहर की मजिस्ट्रेट अदालत में जमा हो गई। इनमें विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय के श्वेत छात्र, एलेक्जेंड्रा के पुराने एएनसी कार्यकर्ता, प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों के भारतीय स्कूली बच्चे, और हर उम्र और रंग के लोग

शामिल थे। अदालत में इससे पहले कभी इतनी भीड़ नहीं उमड़ी थी। अदालत कक्ष लोगों से खचाखच भरा हुआ था, और "मयिबुये अफ्रीका!" के नारे कार्यवाही के दौरान गूंजते रहे।
यह मुकदमा दृढ़ संकल्प और एकजुटता का अवसर होना चाहिए था, लेकिन डॉ. मोरोका के विश्वासघात ने इसे कलंकित कर दिया। एएनसी के अध्यक्ष-जनरल और अभियान के प्रमुख व्यक्ति डॉ. मोरोका ने अपने वकील को नियुक्त करके हम सभी को चौंका दिया। योजना यह थी कि हम सभी पर एक साथ मुकदमा चलाया जाएगा। मेरे साथी आरोपियों ने मुझे डॉ. मोरोका से इस मामले पर चर्चा करने और उन्हें अलग न होने के लिए मनाने का काम सौंपा था। मुकदमे से एक दिन पहले, मैं जोहान्सबर्ग के विलेज डीप में डॉ. मोरोका से मिलने गया।
हमारी मुलाकात की शुरुआत में, मैंने उन्हें कुछ विकल्प सुझाए, लेकिन उन्हें उनमें कोई दिलचस्पी नहीं थी और इसके बजाय उन्होंने कई शिकायतें रखीं। डॉ. मोरोका को लगा कि उन्हें चुनाव प्रचार की योजना से बाहर रखा गया है। वैसे तो मोरोका अक्सर एएनसी के मामलों में बिल्कुल भी दिलचस्पी नहीं रखते थे और इसी बात से संतुष्ट थे। लेकिन उन्होंने कहा कि सबसे ज्यादा परेशान करने वाली बात यह थी कि हम सबके साथ बचाव में खड़े होने से उनका नाम उन लोगों के साथ जुड़ जाएगा जो कम्युनिस्ट थे। डॉ. मोरोका सरकार की तरह ही साम्यवाद के प्रति शत्रुता रखते थे। मैंने उनसे इस बात पर आपत्ति जताई और कहा कि नस्लीय उत्पीड़न के खिलाफ खड़े किसी भी व्यक्ति के साथ काम करना एएनसी की परंपरा है। लेकिन डॉ. मोरोका टस से मस नहीं हुए।
सबसे बड़ा झटका तब लगा जब डॉ. मोरोका ने जज रम्पफ के सामने शर्मनाक तरीके से अपनी सजा कम करने की अपील की और गवाही देते हुए उन सिद्धांतों को ही नकार दिया जिन पर एएनसी की स्थापना हुई थी। जब उनसे पूछा गया कि क्या उन्हें लगता है कि दक्षिण अफ्रीका में काले और गोरे लोगों के बीच समानता होनी चाहिए, तो डॉ. मोरोका ने जवाब दिया कि ऐसा कभी नहीं होगा। हम सब निराशा से अपनी सीटों पर बैठ गए। जब उनके अपने वकील ने उनसे पूछा कि क्या प्रतिवादियों में से कुछ कम्युनिस्ट हैं, तो डॉ. मोरोका ने डॉ. दादू और वाल्टर समेत कई लोगों की ओर उंगली उठाना शुरू कर दिया। जज ने उन्हें बताया कि ऐसा करना जरूरी नहीं है।
उनका प्रदर्शन संगठन के लिए एक बड़ा झटका था और हम सभी तुरंत समझ गए कि एएनसी अध्यक्ष के रूप में डॉ. मोरोका के दिन गिने-चुने रह गए हैं। उन्होंने

संगठन और जनता से ऊपर अपने स्वार्थ को रखकर घोर पाप किया था। वे अपने राजनीतिक विचारों के लिए अपने चिकित्सा करियर और संपत्ति को दांव पर लगाने को तैयार नहीं थे, इस प्रकार उन्होंने एएनसी और अवज्ञा अभियान के लिए तीन वर्षों के साहसी कार्य के दौरान बनाई गई अपनी छवि को नष्ट कर दिया था। मैंने इसे एक त्रासदी माना, क्योंकि अदालत में डॉ. मोरोका की कायरता ने अभियान की चमक को कुछ हद तक कम कर दिया। जिस व्यक्ति ने देश भर में अभियान के महत्व का प्रचार किया था, उसने अब इसे त्याग दिया था।
2 दिसंबर को, हम सभी को उस अपराध का दोषी पाया गया जिसे न्यायाधीश रम्पफ ने "वैधानिक साम्यवाद" के रूप में परिभाषित किया था - उनके अनुसार "आम तौर पर साम्यवाद के रूप में जाने जाने वाले" साम्यवाद के विपरीत। साम्यवाद दमन अधिनियम के प्रावधानों के अनुसार, सरकार का किसी भी तरह से विरोध करने वाले लगभग किसी भी व्यक्ति को "वैधानिक" साम्यवादी माना जा सकता था और इसलिए दोषी ठहराया जा सकता था, भले ही वह कभी पार्टी का सदस्य न रहा हो। निष्पक्ष और तर्कसंगत न्यायाधीश ने कहा कि यद्यपि हमने "कानूनों के खुले उल्लंघन से लेकर राजद्रोह के बराबर" कृत्यों की योजना बनाई थी, उन्होंने यह स्वीकार किया कि हमने अपने सदस्यों को लगातार "शांतिपूर्ण मार्ग अपनाने और किसी भी रूप में हिंसा से बचने" की सलाह दी थी। हमें नौ महीने के कठोर कारावास की सजा सुनाई गई, लेकिन सजा को दो साल के लिए निलंबित कर दिया गया।

हमने कई गलतियाँ कीं, लेकिन अवज्ञा अभियान ने संघर्ष में एक नया अध्याय शुरू किया। जिन छह कानूनों को हमने विशेष रूप से निशाना बनाया था, उन्हें रद्द नहीं किया गया; लेकिन हमें कभी यह भ्रम भी नहीं था कि ऐसा होगा। हमने उन्हें जनता के जीवन पर सबसे बड़ा तात्कालिक बोझ मानते हुए और संघर्ष में अधिक से अधिक लोगों को शामिल करने के सर्वोत्तम तरीके के रूप में चुना था। अभियान से पहले, एएनसी सिर्फ़ बातें करती थी, काम कुछ नहीं करती थी। हमारे पास कोई वेतनभोगी आयोजक नहीं थे, कोई कर्मचारी नहीं थे, और हमारे सदस्य भी हमारे उद्देश्य के लिए सिर्फ़ दिखावा करते थे। अभियान के परिणामस्वरूप, हमारे सदस्यों की संख्या बढ़कर 100,000 हो गई। एएनसी एक वास्तविक जन-

आधारित संगठन के रूप में उभरी, जिसमें अनुभवी कार्यकर्ताओं का एक प्रभावशाली दल था, जिन्होंने पुलिस, अदालतों और जेलों का सामना किया था। कारावास से जुड़ा कलंक मिट गया था। यह एक महत्वपूर्ण उपलब्धि थी, क्योंकि जेल का डर मुक्ति संघर्ष में एक बड़ी बाधा होता है। अवज्ञा अभियान के बाद से, जेल जाना अफ़्रीकी लोगों के बीच सम्मान की बात बन गई।
हमें इस बात पर बेहद गर्व था कि छह महीने के अभियान के दौरान हमारी तरफ से हिंसा की एक भी घटना नहीं हुई। हमारे प्रतिरोधियों का अनुशासन अनुकरणीय था। अभियान के उत्तरार्ध में पोर्ट एलिजाबेथ और पूर्वी लंदन में दंगे भड़क उठे जिनमें चालीस से अधिक लोग मारे गए। हालांकि इन दंगों का अभियान से कोई लेना-देना नहीं था, फिर भी सरकार ने हमें इनसे जोड़ने का प्रयास किया। इसमें सरकार सफल रही, क्योंकि दंगों ने कुछ श्वेत लोगों के विचारों को दूषित कर दिया जो अन्यथा हमारे प्रति सहानुभूति रख सकते थे।
एएनसी के कुछ सदस्यों की उम्मीदें अवास्तविक थीं और उन्हें पूरा यकीन था कि इस अभियान से सरकार गिर जाएगी। हमने उन्हें याद दिलाया कि इस अभियान का उद्देश्य हमारी शिकायतों पर ध्यान केंद्रित करना था, न कि उन्हें जड़ से खत्म करना। उन्होंने तर्क दिया कि सरकार हमारे नियंत्रण में है और हमें इस अभियान को अनिश्चित काल तक जारी रखना चाहिए। मैंने हस्तक्षेप करते हुए कहा कि यह सरकार इतनी मजबूत और इतनी निर्दयी है कि इसे इस तरह गिराना असंभव है। हम उन्हें शर्मिंदा तो कर सकते हैं, लेकिन अवज्ञा अभियान के जरिए उन्हें सत्ता से हटाना नामुमकिन है।
असल में, हमने अभियान को बहुत लंबे समय तक जारी रखा। हमें डॉ. ज़ुमा की बात सुननी चाहिए थी। अभियान के अंतिम दौर में योजना समिति ने डॉ. ज़ुमा से मुलाकात की और उन्होंने हमें बताया कि अभियान जल्द ही अपनी गति खो देगा और इससे पहले कि यह पूरी तरह से समाप्त हो जाए, इसे बंद कर देना बुद्धिमानी होगी। अभियान को तब रोकना जब वह अभी भी आक्रामक था, एक चतुर चाल होती जो सुर्खियां बटोर लेती। डॉ. ज़ुमा सही थे: अभियान जल्द ही धीमा पड़ गया, लेकिन अपने उत्साह और यहां तक कि अहंकार में, हमने उनकी सलाह को अनसुना कर दिया। मेरा दिल अभियान को जारी रखना चाहता था लेकिन मेरा दिमाग कहता था कि इसे रोक देना चाहिए। मैंने अभियान को समाप्त करने के पक्ष में तर्क दिया लेकिन बहुमत के साथ चला गया। साल के अंत तक, अभियान विफल हो गया।

यह अभियान शहरी इलाकों में रहने वाले छोटे-छोटे प्रदर्शनकारियों के शुरुआती दौर से आगे नहीं बढ़ पाया। बड़े पैमाने पर विरोध प्रदर्शन, खासकर ग्रामीण क्षेत्रों में, कभी सफल नहीं हो पाया। पूर्वी केप एकमात्र ऐसा क्षेत्र था जहाँ हम दूसरे चरण तक पहुँचने में कामयाब रहे और जहाँ ग्रामीण इलाकों में एक सशक्त प्रतिरोध आंदोलन उभरा। कुल मिलाकर, हम ग्रामीण क्षेत्रों में पैठ नहीं बना पाए, जो एएनसी की एक ऐतिहासिक कमजोरी रही है। अभियान में बाधा यह थी कि हमारे पास कोई पूर्णकालिक आयोजक नहीं थे। मैं अभियान का आयोजन करने के साथ-साथ वकालत भी कर रहा था, और इस तरह से जन अभियान चलाना संभव नहीं है। हम अभी भी अनुभवहीन थे।
फिर भी मुझे अपार उपलब्धि और संतोष का अहसास हुआ: मैं एक न्यायपूर्ण उद्देश्य में संलग्न था और उसमें लड़ने और जीतने का साहस मुझमें था। इस अभियान ने मेरे मन में बची-खुची शंकाओं या हीनता की भावना को दूर कर दिया; इसने मुझे श्वेत पुरुष और उसकी संस्थाओं की शक्ति और प्रतीत होने वाली अजेयता से अभिभूत होने की भावना से मुक्त कर दिया। लेकिन अब श्वेत पुरुष ने मेरे प्रहारों की शक्ति को महसूस कर लिया था और मैं एक पुरुष की तरह सीधा खड़ा होकर चल सकता था, और उत्पीड़न और भय के आगे न झुकने के गौरव के साथ हर किसी की आँखों में आँखें डालकर देख सकता था। मैं एक स्वतंत्रता सेनानी के रूप में परिपक्व हो चुका था।

भाग चार

संघर्ष ही मेरा जीवन है

15

1952 के अंत में एएनसी के वार्षिक सम्मेलन में नेतृत्व परिवर्तन हुआ। एएनसी ने एक नए, अधिक सक्रिय युग के लिए एक नए, अधिक ऊर्जावान अध्यक्ष को नामित किया: चीफ अल्बर्ट लुथुली। एएनसी संविधान के अनुसार, ट्रांसवाल के अंतरिम अध्यक्ष के रूप में, मैं चार उप-अध्यक्षों में से एक बन गया। इसके अलावा, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने मुझे ट्रांसवाल के अध्यक्ष के पद के अतिरिक्त प्रथम उप-अध्यक्ष नियुक्त किया। लुथुली उन गिने-चुने शासक प्रमुखों में से एक थे जो एएनसी में सक्रिय थे और उन्होंने सरकार की नीतियों का कड़ा विरोध किया था।
सेवंथ-डे एडवेंटिस्ट मिशनरी के पुत्र, लुथुली का जन्म तत्कालीन दक्षिणी रोडेशिया में हुआ था और उन्होंने नेटाल में शिक्षा प्राप्त की। उन्होंने डरबन के पास एडम कॉलेज में शिक्षक के रूप में प्रशिक्षण लिया। कद में लंबे, मजबूत शरीर वाले, गहरे रंग के, चौड़ी मुस्कान वाले लुथुली में विनम्रता और आत्मविश्वास का अद्भुत मेल था। वे धैर्य और दृढ़ता के धनी थे, जो धीरे-धीरे और स्पष्ट रूप से बोलते थे मानो हर शब्द समान रूप से महत्वपूर्ण हो।
मेरी उनसे पहली मुलाकात 1940 के दशक के उत्तरार्ध में हुई थी, जब वे मूलनिवासी प्रतिनिधि परिषद के सदस्य थे। सितंबर 1952 में, वार्षिक सम्मेलन से कुछ ही महीने पहले, लुथुली को प्रिटोरिया बुलाया गया और उन्हें एक अल्टीमेटम दिया गया: या तो वे एएनसी की सदस्यता और अवज्ञा अभियान के समर्थन को त्याग दें, अन्यथा उन्हें निर्वाचित और सरकार द्वारा वेतनभोगी आदिवासी प्रमुख के पद से बर्खास्त कर दिया जाएगा। लुथुली एक शिक्षक, एक धर्मनिष्ठ ईसाई और एक गौरवान्वित ज़ुलू प्रमुख थे, लेकिन वे रंगभेद के खिलाफ संघर्ष के प्रति और भी अधिक दृढ़ थे। लुथुली ने एएनसी से इस्तीफा देने से इनकार कर दिया और सरकार ने उन्हें उनके पद से बर्खास्त कर दिया। अपनी बर्खास्तगी के जवाब में, उन्होंने "स्वतंत्रता का मार्ग क्रूस से होकर जाता है" नामक सिद्धांतों का एक बयान जारी किया, जिसमें उन्होंने अहिंसक निष्क्रिय प्रतिरोध के लिए अपने समर्थन की पुष्टि की और अपने चुनाव को उन शब्दों से उचित ठहराया जो आज भी मार्मिक रूप से गूंजते हैं: "कौन इनकार करेगा कि मेरे जीवन के तीस वर्ष एक बंद और अवरुद्ध दरवाजे पर

व्यर्थ, धैर्यपूर्वक, संयम से और विनम्रता से दस्तक देने में व्यतीत हुए हैं?"
मैंने चीफ लुथुली का समर्थन किया, लेकिन मैं राष्ट्रीय सम्मेलन में शामिल नहीं हो सका। सम्मेलन शुरू होने से कुछ दिन पहले, देश भर के बावन नेताओं पर छह महीने के लिए किसी भी बैठक या सभा में भाग लेने पर प्रतिबंध लगा दिया गया था। मैं भी उन नेताओं में से एक था, और मेरी आवाजाही उसी अवधि के लिए जोहान्सबर्ग जिले तक सीमित कर दी गई थी।
मुझ पर लगाए गए प्रतिबंध सभी प्रकार की बैठकों पर लागू होते थे, न कि केवल राजनीतिक बैठकों पर। उदाहरण के लिए, मैं अपने बेटे की जन्मदिन की पार्टी में शामिल नहीं हो सकता था। मुझे एक समय में एक से अधिक व्यक्ति से बात करने की मनाही थी। यह सरकार द्वारा रंगभेद विरोधी आंदोलन के नेताओं को चुप कराने, सताने और निष्क्रिय करने के सुनियोजित प्रयास का हिस्सा था और मुझ पर लगाए गए प्रतिबंधों की श्रृंखला में यह पहला कदम था, जो कुछ वर्षों बाद तक जारी रहा, जिसमें बीच-बीच में मुझे कुछ समय के लिए स्वतंत्रता भी मिली, और अंततः मेरी सारी स्वतंत्रता छीन ली गई।
प्रतिबंध न केवल शारीरिक रूप से सीमित करता है, बल्कि आत्मा को भी कैद कर लेता है। यह एक प्रकार का मनोवैज्ञानिक घुटन पैदा करता है, जिससे व्यक्ति न केवल आवागमन की स्वतंत्रता बल्कि आध्यात्मिक मुक्ति के लिए भी व्याकुल हो जाता है। प्रतिबंध एक खतरनाक खेल था, क्योंकि व्यक्ति सलाखों के पीछे जंजीरों या बेड़ियों में जकड़ा हुआ नहीं था; सलाखें कानून और नियम थे जिनका आसानी से उल्लंघन किया जा सकता था और अक्सर किया भी जाता था। व्यक्ति थोड़े समय के लिए चुपके से निकल सकता था और स्वतंत्रता का क्षणिक भ्रम पा सकता था। प्रतिबंधों का कपटी प्रभाव यह था कि एक निश्चित बिंदु पर व्यक्ति को यह लगने लगता था कि उत्पीड़क बाहर नहीं बल्कि भीतर ही है।

हालांकि मुझे 1952 के वार्षिक सम्मेलन में भाग लेने से रोक दिया गया था, लेकिन मुझे तुरंत ही इस बात की जानकारी दे दी गई कि क्या हुआ था। सबसे महत्वपूर्ण निर्णयों में से एक वह था जो गुप्त रूप से लिया गया था और उस समय सार्वजनिक नहीं किया गया था।

❖

❖

नेतृत्व के बीच बहुत अच्छा तालमेल था, और निर्णय लेने की प्रक्रिया पहले की तरह ही सामूहिक थी। कभी-कभी ऐसा लगता था मानो कुछ भी नहीं बदला है, सिवाय इसके कि हमें गुप्त रूप से मिलना पड़ता था।

एम-प्लान को नेक इरादों से तैयार किया गया था, लेकिन इसे लागू करने में मामूली सफलता ही मिली और यह व्यापक रूप से प्रचलित नहीं हो पाया। सबसे प्रभावशाली परिणाम एक बार फिर पूर्वी केप और पोर्ट एलिजाबेथ में देखने को मिले। पूर्वी केप में अवज्ञा अभियान की भावना अन्य जगहों के लुप्त हो जाने के बहुत बाद तक बनी रही, और वहाँ के एएनसी सदस्यों ने सरकार के प्रति विरोध जारी रखने के तरीके के रूप में एम-प्लान को अपनाया।
इस योजना को कई समस्याओं का सामना करना पड़ा: सदस्यों को इसके बारे में पर्याप्त रूप से समझाया नहीं गया; इसे लागू करने या प्रबंधित करने में सहायता के लिए कोई वेतनभोगी आयोजक नहीं थे; और शाखाओं के भीतर अक्सर मतभेद होते थे जिससे योजना को लागू करने पर सहमति नहीं बन पाती थी। कुछ प्रांतीय नेताओं ने इसका विरोध किया क्योंकि उनका मानना था कि इससे उनकी शक्ति कम हो जाएगी। कुछ लोगों को सरकार की कार्रवाई तत्काल संभावित नहीं लग रही थी, इसलिए उन्होंने इसके प्रभाव को कम करने के लिए आवश्यक सावधानियां नहीं बरतीं। जब सरकार ने कठोर कार्रवाई की, तो वे तैयार नहीं थे।

16

अवज्ञा अभियान के दौरान मेरा जीवन दो अलग-अलग रास्तों पर चल रहा था: संघर्ष में मेरा काम और एक वकील के रूप में मेरी आजीविका। मैं कभी भी एएनसी का पूर्णकालिक आयोजक नहीं था; संगठन में केवल एक ही आयोजक था, और वह थे थॉमस टाइटस नकोबी। मुझे जो भी काम करना पड़ता था, उसे एक वकील के रूप में अपने व्यस्त कार्यक्रम के अनुसार ही करना पड़ता था। 1951 में, विटकिन, सिडेलस्की और आइडेलमैन में अपना प्रशिक्षण पूरा करने के बाद, मैं टेरब्लैंच एंड ब्रिगिश लॉ फर्म में काम करने चला गया। जब मैंने अपना प्रशिक्षण पूरा किया, तब मैं पूरी तरह से एक योग्य वकील नहीं था, लेकिन मैं अदालती दस्तावेज तैयार करने, समन भेजने, गवाहों का साक्षात्कार करने जैसी सभी चीजों में सक्षम था - ये सभी काम एक वकील को किसी मामले के अदालत में जाने से पहले करने होते हैं।
सिडेलस्की छोड़ने के बाद, मैंने कई श्वेत लॉ फर्मों की जाँच की - ज़ाहिर है, वहाँ कोई अफ्रीकी लॉ फर्म नहीं थी। मुझे इन फर्मों द्वारा ली जाने वाली फीस के पैमाने में विशेष रुचि थी और यह जानकर मुझे बहुत गुस्सा आया कि कई प्रतिष्ठित लॉ फर्म आपराधिक और दीवानी मामलों में अपने कहीं अधिक धनी श्वेत ग्राहकों की तुलना में अफ्रीकियों से कहीं अधिक फीस वसूलती थीं। टेरब्लैंच एंड ब्रिगिश में लगभग एक साल काम करने के बाद, मैं हेलमैन एंड मिशेल फर्म में शामिल हो गया। यह एक उदार फर्म थी और उन गिनी-चुनी फर्मों में से एक थी जो अफ्रीकियों से उचित शुल्क लेती थी। इसके अलावा, फर्म को अफ्रीकी शिक्षा के प्रति अपने समर्पण पर गर्व था, जिसके लिए वे उदारतापूर्वक दान करते थे। फर्म के वरिष्ठ साझेदार श्री हेलमैन, अफ्रीकी मुद्दों में तब से शामिल थे जब वे लोकप्रिय या प्रचलित नहीं हुए थे। फर्म के दूसरे साझेदार, रॉडनी मिशेल, द्वितीय विश्व युद्ध के अनुभवी, भी अत्यंत उदार थे। वे एक पायलट थे, और वर्षों बाद दमन के सबसे बुरे दौर में उन्होंने एएनसी के लोगों को दक्षिण अफ्रीका से बाहर निकालने में मदद की। मिशेल की एकमात्र स्पष्ट दुर्गुण यह थी कि वे एक भारी धूम्रपान करने वाले थे जो कार्यालय में दिन भर एक के बाद एक सिगरेट पीते रहते थे।

मैं अपनी योग्यता परीक्षा की तैयारी के दौरान कई महीनों तक हेलमैन और मिशेल के यहाँ रुका था, जिससे मुझे एक पूर्ण वकील के रूप में मान्यता मिल जाती। कई बार परीक्षा में असफल होने के बाद मैंने विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय से एलएलबी की पढ़ाई छोड़ दी थी। मैंने योग्यता परीक्षा देने का विकल्प इसलिए चुना ताकि मैं वकालत कर सकूँ और अपने परिवार का भरण-पोषण करने के लिए पर्याप्त आय अर्जित कर सकूँ। उस समय मेरी बहन हमारे साथ रह रही थी और मेरी माँ मिलने आई थीं, और नर्स प्रशिक्षु के रूप में एवलिन की तनख्वाह और मेरी अपनी मामूली आमदनी हम सभी के लिए पर्याप्त नहीं थी। योग्यता परीक्षा उत्तीर्ण करने के बाद, मैंने एच. एम. बास्नर की फर्म में एक पूर्ण विकसित वकील के रूप में काम करना शुरू किया। बास्नर सीनेट में अफ्रीकी प्रतिनिधि, कम्युनिस्ट पार्टी के शुरुआती सदस्य और अफ्रीकी अधिकारों के प्रबल समर्थक रह चुके थे। एक वकील के रूप में, वे अफ्रीकी नेताओं और ट्रेड यूनियनवादियों के रक्षक थे। वहां काम करने के दौरान, मैं अक्सर फर्म के कई अफ्रीकी मुवक्किलों का प्रतिनिधित्व करने के लिए अदालतों में उपस्थित रहता था। श्री बास्नर एक उत्कृष्ट बॉस थे और जब तक मैं फर्म में अपना काम ठीक से करता रहा, वे मुझे राजनीतिक कार्यों के लिए प्रोत्साहित करते रहे। वहां प्राप्त अनुभव के बाद, मुझे लगा कि मैं अपना खुद का काम शुरू करने के लिए तैयार हूं।
अगस्त 1952 में, मैंने अपना खुद का लॉ ऑफिस खोला। मुझे जो शुरुआती सफलता मिली, उसका श्रेय मेरी सेक्रेटरी जुबैदा पटेल को जाता है। उनसे मेरी मुलाकात तब हुई थी जब वह एच. एम. बासनर में काम करने आई थीं, एक अफ्रीकी भाषी सेक्रेटरी, मिस कोच की जगह, जिन्होंने मेरी बात मानने से इनकार कर दिया था। जुबैदा मेरे मित्र कासिम पटेल की पत्नी थीं, जो भारतीय कांग्रेस के सदस्य थे, और उनमें रंगभेद की कोई भावना नहीं थी। उनके दोस्तों का दायरा बहुत बड़ा था, वे कानूनी जगत में कई लोगों को जानती थीं, और जब मैंने अपना खुद का काम शुरू किया, तो उन्होंने मेरे लिए काम करने की सहमति दी। उन्होंने मेरे लिए बहुत सारे क्लाइंट्स लाए।
उस समय ओलिवर टैम्बो कोवाल्स्की एंड टच नामक फर्म में काम कर रहे थे। मैं अक्सर उनके लंच के समय उनसे मिलने जाता था और जानबूझकर श्वेत-प्रतिनिधि प्रतीक्षालय में श्वेत-प्रतिनिधि कुर्सी पर बैठता था। ओलिवर और मैं बहुत अच्छे दोस्त थे और हम मुख्य रूप से लंच के समय एएनसी के कामकाज पर चर्चा

करते थे। उन्होंने मुझे पहली बार फोर्ट हरे में प्रभावित किया था, जहाँ मैंने उनकी विचारशील बुद्धिमत्ता और तीक्ष्ण वाद-विवाद कौशल को देखा था। अपने शांत, तार्किक अंदाज से वे अपने प्रतिद्वंदी के तर्क को ध्वस्त कर सकते थे - ठीक उसी तरह की बुद्धिमत्ता जो अदालत में काम आती है। फोर्ट हरे से पहले, वे जोहान्सबर्ग के सेंट पीटर स्कूल में एक प्रतिभाशाली छात्र थे। मुद्दों पर मेरी भावुक प्रतिक्रियाओं के विपरीत, उनका शांत और निष्पक्ष दृष्टिकोण मेरे लिए एक प्रतिकार था। ओलिवर बहुत धार्मिक थे और लंबे समय से धर्मोपदेश को अपना कर्तव्य मानते थे। वे मेरे पड़ोसी भी थे: वे ट्रांसकेई के पोंडोलैंड में बिज़ाना से थे और उनके चेहरे पर उनकी जनजाति के विशिष्ट निशान थे। हमारे लिए साथ में प्रार्थना करना स्वाभाविक लगा और मैंने उनसे मेरे साथ जुड़ने का अनुरोध किया। कुछ महीनों बाद, जब ओलिवर अपनी फर्म से अलग होने में सफल हो गया, तो हमने जोहान्सबर्ग के केंद्र में अपना खुद का कार्यालय खोला।

जोहान्सबर्ग के मध्य में मजिस्ट्रेट कोर्ट के सामने खड़ी न्याय की संगमरमर की मूर्तियों के ठीक सामने स्थित चांसलर हाउस नामक एक छोटी सी इमारत में हमारे कार्यालय के दरवाजे पर पीतल की प्लेट पर "मंडेला और टैम्बो" लिखा था। भारतीयों के स्वामित्व वाली हमारी इमारत शहर में उन कुछ जगहों में से एक थी जहाँ अफ्रीकी लोग कार्यालय किराए पर ले सकते थे। शुरुआत से ही, मंडेला और टैम्बो के पास ग्राहकों की भीड़ लगी रहती थी। हम दक्षिण अफ्रीका में एकमात्र अफ्रीकी वकील नहीं थे, लेकिन हम अफ्रीकी वकीलों की एकमात्र फर्म थे। अफ्रीकियों के लिए, हम पहली पसंद और आखिरी सहारा थे। हर सुबह अपने कार्यालय पहुँचने के लिए, हमें गलियारों, सीढ़ियों और अपने छोटे से प्रतीक्षा कक्ष में लोगों की भीड़ से होकर गुजरना पड़ता था।
सरकारी इमारतों में अफ़्रीकी लोग कानूनी मदद के लिए बेताब थे: केवल गोरों के लिए आरक्षित दरवाजे से अंदर जाना अपराध था, केवल गोरों के लिए आरक्षित बस में यात्रा करना अपराध था, केवल गोरों के लिए आरक्षित पीने के पानी के फव्वारे का उपयोग करना अपराध था, केवल गोरों के लिए आरक्षित समुद्र तट पर

चलना अपराध था, रात ग्यारह बजे के बाद सड़कों पर रहना अपराध था, पासबुक न होना अपराध था और उस पासबुक में गलत हस्ताक्षर होना अपराध था, बेरोजगार होना अपराध था और गलत जगह पर कार्यरत होना अपराध था, कुछ खास जगहों पर रहना अपराध था और रहने के लिए कोई जगह न होना अपराध था।
हर हफ्ते हम ग्रामीण इलाकों के उन बुजुर्गों का साक्षात्कार लेते थे, जो हमें बताते थे कि उनकी पीढ़ियों ने बंजर ज़मीन के एक टुकड़े पर खेती की थी, जिससे अब उन्हें बेदखल किया जा रहा था। हर हफ्ते हम उन बुजुर्ग महिलाओं का साक्षात्कार लेते थे जो अपनी छोटी-सी आमदनी को बढ़ाने के लिए अफ़्रीकी बीयर बनाती थीं, और अब उन्हें जेल की सज़ा और ऐसे जुर्माने का सामना करना पड़ रहा था जिन्हें चुकाना उनके बस की बात नहीं थी। हर हफ्ते हम उन लोगों का साक्षात्कार लेते थे जो दशकों से एक ही घर में रह रहे थे, लेकिन अब उसे श्वेत क्षेत्र घोषित कर दिया गया था और उन्हें बिना किसी मुआवज़े के घर छोड़ना पड़ा। हर दिन हम उन हज़ारों अपमानों को सुनते और देखते थे जिनका सामना आम अफ़्रीकी लोग अपने जीवन के हर दिन करते थे।

ओलिवर में काम करने की असाधारण क्षमता थी। वे प्रत्येक ग्राहक के साथ काफी समय बिताते थे, पेशेवर कारणों से नहीं बल्कि इसलिए कि वे असीम करुणा और धैर्य के धनी थे। वे अपने ग्राहकों के मामलों और उनके जीवन में गहराई से उतर जाते थे। वे समग्र रूप से जनसमूह और प्रत्येक व्यक्ति की दुर्दशा से व्याकुल थे।
मुझे जल्द ही एहसास हो गया कि मंडेला और टैम्बो आम अफ्रीकियों के लिए क्या मायने रखते थे। यह एक ऐसी जगह थी जहाँ वे आकर सहानुभूतिपूर्वक अपनी बात रख सकते थे और एक सक्षम सहयोगी पा सकते थे, एक ऐसी जगह जहाँ उन्हें न तो ठुकराया जाता था और न ही धोखा दिया जाता था, एक ऐसी जगह जहाँ वे वास्तव में अपने ही रंग के पुरुषों द्वारा प्रतिनिधित्व किए जाने पर गर्व महसूस कर सकते थे। यही कारण था कि मैंने वकील बनने का फैसला किया था, और मेरा काम अक्सर मुझे यह एहसास दिलाता था कि मैंने सही निर्णय लिया है।
हम अक्सर एक सुबह में आधा दर्जन मामलों को निपटाते थे और दिनभर अदालतों में आते-जाते रहते थे। कुछ अदालतों में हमारे साथ शिष्टाचार से पेश आया

जाता था; तो कुछ में हमारा अपमान किया जाता था। लेकिन वकालत करते, केस लड़ते और जीतते रहने के बावजूद, हम हमेशा जानते थे कि वकील के तौर पर हम चाहे कितनी भी मेहनत कर लें, हम कभी अभियोजक, मजिस्ट्रेट या जज नहीं बन सकते। हालांकि हम ऐसे अधिकारियों से निपट रहे थे जिनकी योग्यता हमसे कम नहीं थी, फिर भी उनका अधिकार उनकी त्वचा के रंग पर आधारित था और उसी से सुरक्षित था।
हमें अदालत में भी अक्सर भेदभाव का सामना करना पड़ता था। श्वेत गवाह अक्सर अश्वेत वकील के सवालों का जवाब देने से इनकार कर देते थे। अदालत की अवमानना का आरोप लगाने के बजाय, मजिस्ट्रेट उन्हीं सवालों को मुझसे पूछ लेते थे जिनका जवाब वे नहीं दे पाते थे। मैं अक्सर पुलिसकर्मियों को कटघरे में खड़ा करके उनसे पूछताछ करता था; हालांकि मैं उनके झूठ और गलत बयानों को पकड़ लेता था, फिर भी वे मुझे हमेशा एक "काफ़िर वकील" ही समझते थे।
मुझे याद है एक बार मुकदमे की शुरुआत में मुझसे मेरी पहचान बताने को कहा गया था। यह प्रथा थी। मैंने कहा, "मैं नेल्सन मंडेला हूँ और मैं आरोपी की ओर से पेश हुआ हूँ।" मजिस्ट्रेट ने कहा, "मैं आपको नहीं जानता। आपका प्रमाणपत्र कहाँ है?" प्रमाणपत्र तो वो कीमती डिप्लोमा होता है जिसे लोग फ्रेम करवाकर दीवार पर टांगते हैं; ये वो चीज नहीं है जिसे कोई वकील अपने साथ रखता है। यह ऐसा ही था जैसे किसी से उसकी विश्वविद्यालय की डिग्री माँगना। मैंने मजिस्ट्रेट से अनुरोध किया कि वे मामला शुरू करें और मैं उचित समय पर अपना प्रमाणपत्र ले आऊँगा। लेकिन मजिस्ट्रेट ने मामला सुनने से इनकार कर दिया, यहाँ तक कि उन्होंने एक अदालत अधिकारी को मुझे बाहर निकालने का आदेश भी दे दिया।
यह अदालती प्रक्रिया का स्पष्ट उल्लंघन था। मामला अंततः सर्वोच्च न्यायालय तक पहुंचा और मेरे मित्र, वकील जॉर्ज बिज़ोस, मेरी ओर से पेश हुए। सुनवाई के दौरान, पीठासीन न्यायाधीश ने मजिस्ट्रेट के आचरण की आलोचना की और आदेश दिया कि मामले की सुनवाई किसी अन्य मजिस्ट्रेट द्वारा की जाए। वकील होने से अदालत के बाहर भी सम्मान की गारंटी नहीं मिलती थी। एक दिन, हमारे दफ्तर के पास, मैंने एक बुजुर्ग श्वेत महिला को देखा जिसकी कार दो कारों के बीच फंसी हुई थी। मैं तुरंत गया और कार को धक्का दिया, जिससे वह निकल गई। अंग्रेजी बोलने वाली महिला ने मेरी ओर मुड़कर कहा, "धन्यवाद, जॉन"
- जॉन वह नाम था जिसका इस्तेमाल श्वेत लोग किसी भी अफ्रीकी को संबोधित करने

के लिए करते थे जिसका नाम वे नहीं जानते थे। फिर उसने मुझे एक सिक्सपेंस का सिक्का दिया, जिसे मैंने विनम्रता से मना कर दिया। उसने सिक्का मेरी ओर बढ़ाया, और मैंने फिर से कहा, "नहीं, धन्यवाद।" तब वह चिल्लाई, "तुम सिक्सपेंस को मना कर रहे हो। तुम्हें एक शिलिंग चाहिए होगा, लेकिन तुम्हें वह नहीं मिलेगा!" और फिर उसने सिक्का मेरी ओर फेंक दिया और गाड़ी चलाकर चली गई।
एक साल के भीतर, ओलिवर और मुझे पता चला कि शहरी क्षेत्र अधिनियम के तहत हमें मंत्री की अनुमति के बिना शहर में व्यावसायिक परिसर रखने की अनुमति नहीं थी। हमारा अनुरोध अस्वीकार कर दिया गया और इसके बजाय हमें समूह क्षेत्र अधिनियम के तहत एक अस्थायी परमिट दिया गया, जो जल्द ही समाप्त हो गया। अधिकारियों ने इसे नवीनीकृत करने से इनकार कर दिया और जोर दिया कि हम अपने कार्यालयों को अफ्रीका में कई मील दूर एक ऐसे स्थान पर स्थानांतरित करें जहाँ हमारे ग्राहक लगभग न पहुँच सकें। हमने इसे अधिकारियों द्वारा हमें व्यवसाय से बाहर करने का प्रयास समझा और बेदखली की लगातार धमकियों के बावजूद अवैध रूप से अपने परिसर पर कब्जा बनाए रखा।
दक्षिण अफ्रीका में वकील के रूप में काम करने का मतलब था न्याय की एक भ्रष्ट प्रणाली के तहत काम करना, एक ऐसी कानून संहिता जो समानता को नहीं बल्कि उसके विपरीत स्थापित करती थी। इसका एक सबसे घिनौना उदाहरण जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम है, जिसने उस असमानता को परिभाषित किया। एक बार मैंने एक अश्वेत व्यक्ति का मामला संभाला जिसे गलती से अफ्रीकी के रूप में वर्गीकृत कर दिया गया था। उसने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्तरी अफ्रीका और इटली में दक्षिण अफ्रीका के लिए लड़ाई लड़ी थी, लेकिन उसकी वापसी के बाद, एक श्वेत अधिकारी ने उसे अफ्रीकी के रूप में पुनः वर्गीकृत कर दिया था। यह उस प्रकार का मामला था, जो दक्षिण अफ्रीका में बिल्कुल भी असामान्य नहीं था, जिसने नैतिक पहेली को जन्म दिया। मैं जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम के सिद्धांतों का समर्थन या मान्यता नहीं देता था, लेकिन मेरे मुवक्किल को प्रतिनिधित्व की आवश्यकता थी, और उसे वह वर्गीकृत किया गया था जो वह नहीं था। अफ्रीकी के बजाय अश्वेत के रूप में वर्गीकृत होने के कई व्यावहारिक लाभ थे, जैसे कि अश्वेत पुरुषों को पास रखने की आवश्यकता नहीं थी।

उनकी ओर से, मैंने वर्गीकरण बोर्ड में अपील की, जो जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम के अंतर्गत आने वाले मामलों का निपटारा करता था। बोर्ड में एक मजिस्ट्रेट और दो अन्य अधिकारी थे, सभी श्वेत थे। मेरे पास अपने मुवक्किल के मामले को साबित करने के लिए पुख्ता दस्तावेजी सबूत थे और अभियोजक ने औपचारिक रूप से संकेत दिया कि वह हमारी अपील का विरोध नहीं करेगा। लेकिन मजिस्ट्रेट न तो मेरे सबूतों में और न ही अभियोजक के विरोध में कोई दिलचस्पी दिखा रहा था। उसने मेरे मुवक्किल को घूरा और रूखेपन से उसे पीठ करके बेंच की ओर मुड़ने को कहा। मेरे मुवक्किल के कंधों को ध्यान से देखने के बाद, जो तेज़ी से नीचे की ओर झुके हुए थे, उसने अन्य अधिकारियों को इशारा किया और अपील को स्वीकार कर लिया। उन दिनों श्वेत अधिकारियों की नज़र में, झुके हुए कंधे अश्वेत लोगों के शारीरिक गठन की एक रूढ़िवादी छवि थी। और इस तरह इस व्यक्ति के जीवन का फैसला पूरी तरह से मजिस्ट्रेट की उसके कंधों की बनावट के बारे में राय पर आधारित हो गया।
हमने पुलिस की बर्बरता से जुड़े कई मामलों की पैरवी की, हालांकि हमारी सफलता दर काफी कम रही। पुलिस द्वारा किए गए हमलों को साबित करना हमेशा मुश्किल होता था। पुलिस इतनी चालाक होती थी कि वह कैदी को इतने लंबे समय तक हिरासत में रखती थी कि उसके घाव और चोटें भर जाती थीं, और अक्सर मामला सिर्फ एक पुलिसकर्मी के बयान पर ही टिक जाता था। मजिस्ट्रेट स्वाभाविक रूप से पुलिस का ही पक्ष लेते थे। पुलिस हिरासत में हुई मौत पर कोरोनर का फैसला अक्सर "कई कारणों से मौत" या कोई अस्पष्ट स्पष्टीकरण होता था जिससे पुलिस बच जाती थी।
जब भी मेरा कोई मामला जोहान्सबर्ग से बाहर होता था, मैं अपने ऊपर लगे प्रतिबंधों को अस्थायी रूप से हटाने के लिए आवेदन करता था, और अक्सर यह आवेदन स्वीकार हो जाता था। उदाहरण के लिए, मैं पूर्वी ट्रांसवाल गया और कैरोलिना शहर में एक मुवक्किल का बचाव किया। मेरे आगमन से काफी हलचल मच गई, क्योंकि कई लोगों ने इससे पहले कभी किसी अफ्रीकी वकील को नहीं देखा था। मजिस्ट्रेट और अभियोजक ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया, और मामला काफी देर तक शुरू नहीं हुआ, क्योंकि उन्होंने मुझसे मेरे पेशे और वकील बनने के बारे में कई सवाल पूछे। अदालत भी उत्सुक शहरवासियों से खचाखच भरी हुई थी। पास के एक गाँव में, मैं जादू-टोने के आरोप में फंसे एक स्थानीय वैद्य का पक्ष लेने गया। इस मामले को देखने के लिए भी भारी भीड़ उमड़ी थी - मुझे

देखने नहीं, बल्कि यह जानने के लिए कि क्या श्वेत लोगों के कानून किसी वैद्य पर भी लागू हो सकते हैं। उस वैद्य का इलाके में बहुत दबदबा था और कई लोग उसकी पूजा भी करते थे और उससे डरते भी थे। एक बार, मेरे मुवक्किल को ज़ोरदार छींक आई, जिससे अदालत में भगदड़ मच गई; ज़्यादातर लोगों का मानना था कि वह जादू कर रहा है। उसे निर्दोष पाया गया, लेकिन मुझे लगता है कि स्थानीय लोगों ने इसका कारण मेरी वकीली कुशलता को नहीं, बल्कि उस वैद्य की जड़ी-बूटियों के जादू को माना।
एक वकील के तौर पर, मैं अदालत में काफी जोशीला हो सकता था। मैं ऐसा व्यवहार नहीं करता था मानो मैं किसी श्वेत न्यायालय में बैठा एक अश्वेत व्यक्ति हूँ, बल्कि ऐसा लगता था मानो हर कोई—श्वेत और अश्वेत—मेरी अदालत में मेहमान हो। किसी मुकदमे की सुनवाई के दौरान, मैं अक्सर बड़े-बड़े इशारे करता था और आडंबरपूर्ण भाषा का प्रयोग करता था। मैं अदालत के सभी नियमों का कड़ाई से पालन करता था, लेकिन गवाहों के साथ कभी-कभी अपरंपरागत तरीके भी अपनाता था। मुझे जिरह करना पसंद था, और मैं अक्सर नस्लीय तनाव को हवा देता था। दर्शक दीर्घा आमतौर पर खचाखच भरी रहती थी, क्योंकि कस्बे के लोग मनोरंजन के तौर पर अदालत में आते थे।
मुझे याद है एक बार मैंने कस्बे में घरेलू कामगार के तौर पर काम करने वाली एक अफ्रीकी महिला का बचाव किया था। उस पर अपनी "मालकिन" के कपड़े चुराने का आरोप था। कथित तौर पर चुराए गए कपड़े अदालत में मेज पर रखे थे। "मालकिन" की गवाही के बाद, मैंने सबूतों की मेज की ओर बढ़ते हुए अपनी जिरह शुरू की। मैंने कपड़ों को ध्यान से देखा और फिर अपनी पेंसिल की नोक से एक महिला का अंडरवियर उठाया। मैंने धीरे से गवाहों के कटघरे की ओर मुड़ते हुए अंडरवियर लहराया और बस इतना पूछा, "मालकिन, क्या ये... आपके हैं?" "नहीं," उसने तुरंत जवाब दिया, क्योंकि वह यह मानने में बहुत शर्मिंदा थी कि वे उसके हैं। इस जवाब और उसकी गवाही में अन्य विसंगतियों के कारण, मजिस्ट्रेट ने मामला खारिज कर दिया।

17

जोहान्सबर्ग के केंद्र से चार मील पश्चिम में, शहर को देखते हुए एक चट्टानी टीले पर, अफ्रीकी शैली की सोफियाटाउन बस्ती स्थित थी। फादर ट्रेवर हडलस्टन, जो इस बस्ती के सबसे करीबी दोस्तों में से एक थे, ने एक बार सोफियाटाउन की तुलना एक इतालवी पहाड़ी कस्बे से की थी और दूर से देखने पर यह जगह वाकई आकर्षक लगती थी: पास-पास बने लाल छतों वाले घर; गुलाबी आसमान में उठता धुआं; बस्ती को घेरे हुए लंबे और पतले यूकेलिप्टस के पेड़। पास से देखने पर सोफियाटाउन के कई लोगों की गरीबी और बदहाली साफ दिखाई देती थी। सड़कें संकरी और कच्ची थीं, और हर जगह दर्जनों झुग्गियां एक-दूसरे से सटी हुई थीं।
सोफियाटाउन, मार्टिनडेल और न्यूक्लेयर के साथ, पश्चिमी क्षेत्र की बस्तियों के नाम से जाने जाने वाले इलाकों का हिस्सा था। यह इलाका मूल रूप से गोरों के लिए बनाया गया था, और एक रियल एस्टेट डेवलपर ने वास्तव में वहां गोरे खरीदारों के लिए कई घर बनाए थे। लेकिन इलाके में नगरपालिका के कचरा डंप होने के कारण, गोरों ने कहीं और रहना पसंद किया। अनिच्छा से, डेवलपर ने अपने घर अफ्रीकियों को बेच दिए। सोफियाटाउन ट्रांसवाल के उन कुछ स्थानों में से एक था जहां 1923 के शहरी क्षेत्र अधिनियम से पहले अफ्रीकियों को प्लॉट खरीदने की अनुमति थी। टिन की छतों वाले बरामदों वाले कई पुराने ईंट और पत्थर के घर आज भी सोफियाटाउन में मौजूद हैं, जो बस्ती को पुराने जमाने की शान और भव्यता का एहसास कराते हैं। जोहान्सबर्ग में उद्योग के विकास के साथ, सोफियाटाउन तेजी से बढ़ते अफ्रीकी कामगारों का घर बन गया। यह सुविधाजनक था और शहर के करीब था। मजदूर पुरानी इमारतों के आगे- पीछे बने झोपड़ियों में रहते थे। कई परिवार एक ही झोपड़ी में ठसाठस भरे रहते थे। चालीस लोग तक एक ही नल का इस्तेमाल करते थे। गरीबी के बावजूद, सोफियाटाउन की अपनी एक अलग पहचान थी; अफ़्रीकी लोगों के लिए, यह पेरिस का लेफ्ट बैंक, न्यूयॉर्क का ग्रीनविच विलेज, लेखकों, कलाकारों, डॉक्टरों और वकीलों का घर था। यह एक साथ बोहेमियन और पारंपरिक, जीवंत और शांत दोनों था। यह डॉ. ज़ुमा का घर था, जहाँ उनका क्लिनिक था, और साथ ही बर्लिनर्स और अमेरिकन्स जैसे कई गुंडों (त्सोत्सी) का भी, जिन्होंने जॉन वेन और हम्फ्री

बोगार्ट जैसे अमेरिकी फिल्म सितारों के नाम अपना लिए थे। सोफियाटाउन में जोहान्सबर्ग में अफ़्रीकी बच्चों के लिए एकमात्र स्विमिंग पूल था।

जोहान्सबर्ग में, पश्चिमी क्षेत्र निष्कासन योजना के तहत सोफियाटाउन, मार्टिनडेल और न्यूक्लेयर को खाली कराया गया, जिनकी कुल आबादी लगभग 60,000 से 100,000 थी। 1953 में, राष्ट्रवादी सरकार ने शहर से तेरह मील दूर स्थित मीडोलैंड्स नामक एक भूखंड खरीदा था। लोगों को वहाँ सात अलग-अलग "जातीय समूहों" में बसाया जाना था। सरकार द्वारा दिया गया बहाना झुग्गी- झोपड़ी उन्मूलन था, जो सरकार की उस नीति को छिपाने का एक बहाना था जिसके तहत सभी शहरी क्षेत्रों को श्वेत क्षेत्र माना जाता था जहाँ अफ्रीकी लोग अस्थायी निवासी थे।
सरकार पर वेस्टडेन और न्यूलैंड्स के आसपास के इलाकों में रहने वाले उसके समर्थकों का दबाव था, जो तुलनात्मक रूप से गरीब श्वेत आबादी वाले क्षेत्र थे। ये श्रमिक वर्ग के श्वेत लोग सोफियाटाउन में अश्वेतों के स्वामित्व वाले कुछ आलीशान घरों से ईर्ष्या करते थे। सरकार सभी अफ्रीकियों की आवाजाही को नियंत्रित करना चाहती थी, और ऐसा नियंत्रण स्वतंत्र शहरी बस्तियों में कहीं अधिक कठिन था, जहाँ अश्वेत संपत्ति के मालिक हो सकते थे और लोग अपनी मर्जी से आते-जाते थे। हालाँकि पास प्रणाली अभी भी लागू थी, लेकिन नगरपालिका क्षेत्रों की तरह स्वतंत्र बस्ती में प्रवेश करने के लिए किसी विशेष परमिट की आवश्यकता नहीं थी। अफ्रीकी पचास वर्षों से अधिक समय से सोफियाटाउन में रह रहे थे और संपत्ति के मालिक थे; अब सरकार निर्दयतापूर्वक सोफियाटाउन के सभी अफ्रीकी निवासियों को एक अन्य अश्वेत बस्ती में स्थानांतरित करने की योजना बना रही थी। सरकार की योजना इतनी निंदनीय थी कि विस्थापित लोगों के लिए घर बनने से पहले ही उन्हें स्थानांतरित करने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई थी। सोफियाटाउन को स्थानांतरित करना अवज्ञा अभियान के बाद एएनसी और उसके सहयोगियों के लिए शक्ति की पहली बड़ी परीक्षा थी।
हालाँकि सोफियाटाउन को खाली कराने का सरकारी अभियान 1950 में शुरू हो गया था, लेकिन एएनसी द्वारा इसका मुकाबला करने के प्रयास 1953 तक गंभीरता से

शुरू नहीं हुए थे। साल के मध्य तक, एएनसी और टीआईसी की स्थानीय शाखाओं और स्थानीय करदाता संघ ने लोगों को विरोध के लिए संगठित करना शुरू कर दिया था। जून 1953 में, एएनसी और टीआईसी की प्रांतीय कार्यकारिणी ने सोफियाटाउन के ओडिन सिनेमा में इस अभियान के विरोध पर चर्चा करने के लिए एक सार्वजनिक बैठक बुलाई। यह एक जीवंत और उत्साहपूर्ण बैठक थी जिसमें बारह सौ से अधिक लोग शामिल हुए, और उनमें से कोई भी भारी हथियारों से लैस दर्जनों पुलिसकर्मियों की उपस्थिति से भयभीत नहीं हुआ।
बैठक से कुछ ही दिन पहले, मेरे और वाल्टर दोनों के प्रतिबंध की अवधि समाप्त हो गई थी। इसका मतलब यह था कि अब हमें किसी भी सभा में भाग लेने या बोलने से रोका नहीं जा सकता था, और मेरे लिए थिएटर में बोलने की व्यवस्था तुरंत कर दी गई।
बैठक शुरू होने से कुछ ही देर पहले, एक पुलिस अधिकारी ने वाल्टर और मुझे सिनेमाघर के बाहर फादर हडलस्टन से बात करते हुए देखा। फादर हडलस्टन उस प्रतिबंध का विरोध कर रहे नेताओं में से एक थे। अधिकारी ने हम दोनों को बताया कि प्रतिबंधित होने के कारण हमें वहाँ रहने का कोई अधिकार नहीं है, और फिर उसने अपने अधिकारियों को हमें गिरफ्तार करने का आदेश दिया। फादर हडलस्टन ने हमारी ओर आ रहे पुलिसकर्मियों को चिल्लाकर कहा, "नहीं, मेरे प्यारे बच्चों, आप मुझे गिरफ्तार कीजिए।" अधिकारी ने फादर हडलस्टन को एक तरफ हटने का आदेश दिया, लेकिन उन्होंने इनकार कर दिया। जब पुलिसकर्मी फादर हडलस्टन को रास्ते से हटा रहे थे, तो मैंने अधिकारी से कहा, "आपको यह सुनिश्चित करना होगा कि हम पर प्रतिबंध है या नहीं। सावधान रहें, क्योंकि अगर हमारा प्रतिबंध समाप्त हो गया है तो हमें गिरफ्तार करना गलत होगा। अब, क्या आपको लगता है कि अगर हमारा प्रतिबंध समाप्त नहीं हुआ होता तो हम आज रात आपसे बात कर रहे होते?"
पुलिस अपने रिकॉर्ड रखने में बेहद लापरवाह थी और अक्सर उन्हें पता ही नहीं होता था कि प्रतिबंध कब समाप्त हुए। वह अधिकारी भी इस बात को उतना ही जानता था जितना मैं। उसने मेरी बात पर गौर किया, फिर अपने साथियों को पीछे हटने का आदेश दिया। जैसे ही हम हॉल में दाखिल हुए, वे एक तरफ हट गए।
अंदर, पुलिस का रवैया उकसाने वाला और अपमानजनक था। पिस्तौल और राइफलों से लैस होकर वे हॉल में अकड़ते हुए लोगों को धक्का दे रहे थे और अपमानजनक टिप्पणियाँ कर रहे थे। मैं कई अन्य नेताओं के साथ मंच पर बैठा था, और जैसे

ही बैठक शुरू होने वाली थी, मैंने मेजर प्रिंसलू को कई सशस्त्र अधिकारियों के साथ मंच के दरवाजे से अकड़ते हुए अंदर आते देखा। मेरी नज़र उनसे मिली, और मैंने इशारा किया जैसे पूछ रहा हो, "मैं?" और उन्होंने सिर हिलाकर मना कर दिया। फिर वे पोडियम की ओर बढ़े, जहाँ यूसुफ कचालिया पहले ही बोलना शुरू कर चुके थे, और अन्य अधिकारियों को उन्हें गिरफ्तार करने का आदेश दिया, जिसके बाद उन्होंने उन्हें बांहों से पकड़कर घसीटना शुरू कर दिया। बाहर, पुलिस रॉबर्ट रेशा और अहमद कथरादा को पहले ही गिरफ्तार कर चुकी थी।
भीड़ चिल्लाने और हूटिंग करने लगी, और मैंने देखा कि अगर भीड़ ने खुद को काबू में नहीं रखा तो हालात बेहद खराब हो सकते थे। मैं मंच पर कूद गया और एक मशहूर विरोध गीत गाने लगा, और जैसे ही मैंने पहले कुछ शब्द बोले, भीड़ भी मेरे साथ गाने लगी। मुझे डर था कि अगर भीड़ बेकाबू हो गई तो पुलिस गोली चला सकती है।

उस समय एएनसी सोफियाटाउन के केंद्र में स्थित फ्रीडम स्क्वायर में हर रविवार शाम को बैठकें आयोजित कर रही थी, ताकि विस्थापन के विरोध में लोगों को संगठित किया जा सके। ये बैठकें बहुत ही जीवंत होती थीं, जिनमें बार-बार "असिहांबी!" (हम नहीं हटेंगे!) के नारे लगते थे और "सोफियाटाउन लिखाया लाम असिहांबी" (सोफियाटाउन मेरा घर है; हम नहीं हटेंगे) गीत गाए जाते थे। इन बैठकों को एएनसी के प्रमुख सदस्यों, मकान मालिकों, किरायेदारों, नगर पार्षदों और अक्सर फादर हडलस्टन द्वारा संबोधित किया जाता था, जो पुलिस की चेतावनियों को अनसुना करते हुए चर्च के मामलों तक ही सीमित रहते थे। ओडिन में हुई घटना के कुछ ही समय बाद, एक रविवार शाम को मुझे फ्रीडम स्क्वायर में भाषण देना था। उस रात भीड़ बहुत जोशीली थी, और उनकी भावनाओं ने निस्संदेह मेरी भावनाओं को भी प्रभावित किया। वहाँ बड़ी संख्या में युवा मौजूद थे, और वे क्रोधित और कार्रवाई के लिए उत्सुक थे। हमेशा की तरह, पुलिसकर्मी चारों ओर घेरा बनाकर तैनात थे, उनके पास बंदूकें और पेंसिलें थीं, जिनका इस्तेमाल वे यह नोट करने के लिए कर रहे थे कि कौन बोल रहा है और वक्ता क्या कह रहा है। हमने पुलिस के साथ यथासंभव खुलकर बात करके इसे एक सकारात्मक पहलू बनाने की कोशिश की, ताकि उन्हें यह दिखाया जा सके कि

के किसी भी वैध विरोध को बेरहमी से दबा देंगे। एक पुलिस राज्य का उदय दूर नहीं लग रहा था।
मुझे यह संदेह होने लगा था कि कानूनी और गैर-संवैधानिक दोनों प्रकार के विरोध प्रदर्शन जल्द ही असंभव हो जाएंगे। भारत में, गांधी जी एक ऐसी विदेशी शक्ति से निपट रहे थे जो अंततः अधिक यथार्थवादी और दूरदर्शी थी। दक्षिण अफ्रीका में अफ़्रीकानरों के साथ ऐसा नहीं था। अहिंसक निष्क्रिय प्रतिरोध तभी तक प्रभावी होता है जब तक आपका विरोधी आपके समान नियमों का पालन करता है। लेकिन यदि शांतिपूर्ण विरोध का सामना हिंसा से किया जाता है, तो उसकी प्रभावशीलता समाप्त हो जाती है। मेरे लिए, अहिंसा एक नैतिक सिद्धांत नहीं बल्कि एक रणनीति थी; अप्रभावी हथियार का उपयोग करने में कोई नैतिक अच्छाई नहीं है। लेकिन इस विषय पर मेरे विचार अभी पूरी तरह से विकसित नहीं हुए थे, और मैंने जल्दबाजी में बोल दिया था।
राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का यही मत था। जब उन्हें मेरे भाषण के बारे में पता चला, तो स्वीकृत नीति से इतने बड़े विचलन की वकालत करने के लिए मुझे कड़ी फटकार लगाई गई। हालाँकि कार्यकारी समिति के कुछ सदस्यों ने मेरी बातों से सहानुभूति जताई, लेकिन किसी ने भी मेरे उग्र तरीके का समर्थन नहीं किया। कार्यकारी समिति ने मुझे चेतावनी देते हुए कहा कि मैंने जिस आवेगपूर्ण नीति की वकालत की थी, वह न केवल समय से पहले थी, बल्कि खतरनाक भी थी। ऐसे भाषण शत्रु को संगठन को पूरी तरह कुचलने के लिए उकसा सकते थे, जबकि शत्रु मजबूत था और हम अभी भी कमजोर थे। मैंने निंदा स्वीकार कर ली और उसके बाद सार्वजनिक रूप से अहिंसा की नीति का निष्ठापूर्वक बचाव किया। लेकिन मन ही मन मैं जानता था कि अहिंसा समाधान नहीं है।
उन दिनों, मैं अक्सर कार्यकारी समिति के साथ विवाद में पड़ जाता था। 1953 की शुरुआत में, चीफ लुथुली, ज़ेड. के. मैथ्यूज और एएनसी के कुछ अन्य उच्च पदस्थ नेताओं को श्वेत लोगों के एक समूह के साथ बैठक में आमंत्रित किया गया था, जो लिबरल पार्टी बनाने की प्रक्रिया में थे। इसके बाद एएनसी कार्यकारी समिति की एक बैठक हुई, जिसमें हममें से कुछ लोगों ने श्वेत उदारवादियों के साथ हुई पिछली बैठक की रिपोर्ट मांगी। उपस्थित लोगों ने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि उन्हें निजी तौर पर आमंत्रित किया गया था, न कि एएनसी के सदस्यों के रूप में। हम उन्हें परेशान करते रहे, और अंत में प्रोफेसर मैथ्यूज, जो एक वकील थे, ने कहा कि यह एक गोपनीय बातचीत थी।

गुस्से में आकर मैंने कहा, "आप किस तरह के नेता हैं जो श्वेत उदारवादियों के एक समूह के साथ मामलों पर चर्चा कर सकते हैं और फिर उस जानकारी को एएनसी में अपने सहयोगियों के साथ साझा नहीं करते? यही तो आपकी समस्या है, आप श्वेत व्यक्ति से डरते हैं और उनके प्रति भयभीत हैं। आप अपने अफ्रीकी साथियों की तुलना में उनकी संगति को अधिक महत्व देते हैं।"
इस उद्गार ने प्रोफ़ेसर मैथ्यूज और चीफ लुथुली दोनों को क्रोधित कर दिया। पहले प्रोफ़ेसर मैथ्यूज ने जवाब दिया, “मंडेला, तुम गोरों के बारे में क्या जानते हो? मैंने तुम्हें गोरों के बारे में जो कुछ भी सिखाया है, फिर भी तुम अज्ञानी हो। अभी तो तुम मुश्किल से छात्र जीवन से बाहर निकले हो।” लुथुली आग बबूला हो रहे थे और बोले, “ठीक है, अगर तुम मुझ पर गोरे आदमी से डरने का आरोप लगा रहे हो, तो मेरे पास इस्तीफ़ा देने के अलावा कोई चारा नहीं है। अगर यही तुम्हारा कहना है, तो मैं यही करने वाला हूँ।” मुझे नहीं पता था कि लुथुली सिर्फ़ धमकी दे रहे थे या नहीं, लेकिन उनकी धमकी ने मुझे डरा दिया। मैंने बिना सोचे-समझे, बिना ज़िम्मेदारी समझे जल्दबाजी में बोल दिया था, और अब मुझे इसका बहुत अफ़सोस हो रहा था। मैंने तुरंत अपना आरोप वापस ले लिया और माफ़ी माँगी। मैं एक ऐसा नौजवान था जिसने अपनी अज्ञानता को उग्रवाद से छिपाने की कोशिश की थी।

सोफियाटाउन में मेरे भाषण के दौरान ही, वाल्टर ने मुझे बताया कि उन्हें बुखारेस्ट में आयोजित शांति और मित्रता के लिए युवा और छात्र विश्व महोत्सव में विशिष्ट अतिथि के रूप में आमंत्रित किया गया है। निमंत्रण के समय ने वाल्टर को राष्ट्रीय कार्यकारी समिति से परामर्श करने का लगभग कोई अवसर नहीं दिया। मैं चाहता था कि वह जाएं और मैंने उन्हें ऐसा करने के लिए प्रोत्साहित किया, चाहे उन्होंने कार्यकारी समिति से परामर्श किया हो या नहीं। वाल्टर ने जाने का निश्चय किया और मैंने उन्हें एक वैकल्पिक पासपोर्ट, उनकी पहचान और नागरिकता का शपथ पत्र तैयार करने में मदद की। (सरकार उन्हें कभी भी वैध पासपोर्ट जारी नहीं करती।) वाल्टर सिसुलु और डूमा नोकवे के नेतृत्व में समूह ने एकमात्र ऐसी एयरलाइन से यात्रा की जिसने इस तरह के शपथ पत्र को स्वीकार किया: इजरायली एयरलाइन, एल अल।

कार्यपालिका से फटकार मिलने के बावजूद, मुझे पूरा विश्वास था कि राष्ट्रवादियों की नीतियां जल्द ही अहिंसा को और भी सीमित और अप्रभावी बना देंगी। वाल्टर मेरे विचारों से अवगत था और उसके जाने से पहले मैंने एक सुझाव दिया: उसे पीपुल्स रिपब्लिक ऑफ चाइना की यात्रा की व्यवस्था करनी चाहिए और उनसे सशस्त्र संघर्ष के लिए हमें हथियार मुहैया कराने की संभावना पर चर्चा करनी चाहिए। वाल्टर को यह विचार पसंद आया और उसने प्रयास करने का वादा किया।
यह कार्रवाई पूरी तरह से मेरी अपनी मर्जी से की गई थी और मेरे तरीके बेहद अपरंपरागत थे। कुछ हद तक, ये एक उग्र क्रांतिकारी के कार्य थे जिन्होंने बिना सोचे-समझे और अनुशासनहीनता से काम किया। ये एक ऐसे व्यक्ति के कार्य थे जो रंगभेद की अनैतिकता और उसे संरक्षित करने में राज्य की क्रूरता से व्याकुल था।
वाल्टर की यात्रा से कार्यपालिका में हलचल मच गई। मैंने व्यक्तिगत रूप से उनकी माफी मांगने का जिम्मा उठाया। मैंने अपने गुप्त अनुरोध का जिक्र नहीं किया। लुथुली ने एएनसी की आचार संहिता के उल्लंघन पर आपत्ति जताई और प्रोफेसर मैथ्यूज ने वाल्टर के समाजवादी देशों की यात्रा पर निराशा व्यक्त की। कार्यपालिका वाल्टर के इरादों को लेकर संशय में थी और उन्होंने परिस्थितियों के बारे में मेरे स्पष्टीकरण पर सवाल उठाए। कुछ लोग वाल्टर और मुझे औपचारिक रूप से फटकार लगाना चाहते थे, लेकिन अंत में उन्होंने ऐसा नहीं किया।
वॉल्टर किसी तरह चीन पहुँचने में कामयाब रहे, जहाँ के नेतृत्व ने उनका गर्मजोशी से स्वागत किया। उन्होंने हमारे संघर्ष के प्रति अपना समर्थन जताया, लेकिन जब उन्होंने सशस्त्र संघर्ष का विचार रखा तो वे सतर्क और सावधान हो गए। उन्होंने वॉल्टर को आगाह किया कि सशस्त्र संघर्ष एक बेहद गंभीर कदम है और उन्होंने सवाल उठाया कि क्या मुक्ति आंदोलन इस तरह के प्रयास को जायज़ ठहराने के लिए पर्याप्त रूप से परिपक्व हो चुका है। वॉल्टर प्रोत्साहन लेकर लौटे, लेकिन अपने साथ हथियार नहीं लाए।

18

जोहान्सबर्ग में, मैं शहर का आदमी बन चुका था। मैं शानदार सूट पहनता था; मैं एक विशाल ओल्ड्समोबाइल चलाता था, और शहर की तंग गलियों से अच्छी तरह वाकिफ था। मैं रोज़ाना शहर के बीचोंबीच स्थित अपने दफ्तर जाता था। लेकिन असल में मैं दिल से एक देहाती लड़का ही था, और नीले आसमान, खुले मैदान और हरी घास से बढ़कर मुझे कोई और चीज़ इतनी खुशी नहीं देती थी। सितंबर में, प्रतिबंध हटने के बाद, मैंने अपनी आज़ादी का फ़ायदा उठाने और शहर की भागदौड़ से कुछ समय के लिए राहत पाने का फैसला किया। मैंने ऑरेंज फ्री स्टेट के छोटे से कस्बे विलियर्स में एक केस अपने हाथ में लिया। जोहान्सबर्ग से ऑरेंज फ्री स्टेट तक का सफर कई घंटों का होता था, और मैं ऑरलैंडो से सुबह 3 बजे निकलता था, जो हमेशा से मेरा पसंदीदा समय रहा है। मैं वैसे भी जल्दी उठने वाला व्यक्ति हूँ, और सुबह 3 बजे सड़कें खाली और शांत होती हैं, और इंसान अपने विचारों में खो सकता है। मुझे भोर का आगमन देखना, रात और दिन का परिवर्तन देखना अच्छा लगता है, जो हमेशा ही भव्य होता है। यह निकलने का सुविधाजनक समय भी था क्योंकि आमतौर पर पुलिस कहीं नज़र नहीं आती थी।
ऑरेंज फ्री स्टेट प्रांत का मुझ पर हमेशा से ही जादुई असर रहा है, हालांकि श्वेत आबादी के कुछ सबसे नस्लवादी तत्व भी फ्री स्टेट को अपना घर मानते हैं। दूर-दूर तक फैली समतल, धूल भरी ज़मीन, ऊपर फैला विशाल नीला आकाश, पीले मक्के के खेतों, झाड़ियों और घनी वनस्पतियों के अंतहीन विस्तार के साथ, फ्री स्टेट का नज़ारा मेरे मन को हर हाल में खुश कर देता है। जब मैं वहाँ होता हूँ, तो मुझे ऐसा लगता है कि कोई मुझे रोक नहीं सकता, मेरे विचार क्षितिज की तरह दूर-दूर तक विचरण कर सकते हैं।
यह इलाका जनरल क्रिस्टियान डी वेट की छाप लिए हुए था, जो एक प्रतिभाशाली बोअर कमांडर थे और जिन्होंने एंग्लो-बोअर युद्ध के अंतिम महीनों में दर्जनों लड़ाइयों में अंग्रेजों को पछाड़ दिया था; निडर, स्वाभिमानी और चतुर, अगर वे सिर्फ अफ्रीकियों के लिए नहीं बल्कि सभी दक्षिण अफ्रीकियों के अधिकारों के लिए लड़ रहे होते, तो वे मेरे नायकों में से एक होते। उन्होंने एक कमजोर पक्ष के साहस और सूझबूझ का प्रदर्शन किया, और एक कम

परिष्कृत लेकिन देशभक्त सेना की ताकत को एक अनुभवी युद्ध मशीन के सामने साबित किया। गाड़ी चलाते समय, मैंने जनरल डी वेट की सेना के छिपने के स्थानों की कल्पना की और सोचा कि क्या वे कभी अफ्रीकी विद्रोहियों को शरण देंगे।
विलियर्स तक की यात्रा ने मुझे काफी उत्साहित कर दिया था, और 3 सितंबर की सुबह जब मैं छोटे से न्यायालय में दाखिल हुआ तो मैं सुरक्षा के झूठे एहसास में डूबा हुआ था। वहाँ पुलिसकर्मियों का एक समूह मेरा इंतजार कर रहा था। बिना कुछ कहे, उन्होंने मुझे साम्यवाद दमन अधिनियम के तहत एक आदेश थमा दिया, जिसमें मुझे एएनसी से इस्तीफा देने, जोहान्सबर्ग जिले तक सीमित रहने और दो साल तक किसी भी बैठक या सभा में शामिल होने पर प्रतिबंध लगाने का आदेश था। मुझे पता था कि ऐसे कदम उठाए जाएंगे, लेकिन मुझे विलियर्स जैसे दूरदराज के कस्बे में ये प्रतिबंध मिलने की उम्मीद नहीं थी।
मैं पैंतीस वर्ष का था और इन नए और अधिक कठोर प्रतिबंधों ने एएनसी के साथ मेरे लगभग एक दशक के जुड़ाव को समाप्त कर दिया। ये वे वर्ष थे जिनमें मेरी राजनीतिक जागरूकता और विकास हुआ था, और धीरे-धीरे उस संघर्ष के प्रति मेरी प्रतिबद्धता बढ़ी थी जो मेरा जीवन बन गया था। अब से, एएनसी और मुक्ति संघर्ष के लिए मेरे सभी कार्य और योजनाएँ गुप्त और अवैध हो जाएँगी। नोटिस मिलते ही मुझे तुरंत जोहान्सबर्ग लौटना पड़ा।
मेरे प्रतिबंधों ने मुझे संघर्ष के केंद्र से हाशिए पर धकेल दिया, एक प्राथमिक भूमिका से एक गौण भूमिका में। हालाँकि मुझसे अक्सर सलाह ली जाती थी और मैं घटनाओं की दिशा को प्रभावित करने में सक्षम था, मैंने ऐसा दूर से और केवल स्पष्ट रूप से पूछे जाने पर ही किया। मैं अब शरीर के किसी महत्वपूर्ण अंग - हृदय, फेफड़े या रीढ़ की हड्डी - की तरह नहीं, बल्कि एक कटे हुए अंग की तरह महसूस कर रहा था। यहाँ तक कि स्वतंत्रता सेनानियों को भी, कम से कम तब, कानूनों का पालन करना पड़ता था, और उस समय, मेरे प्रतिबंधों का उल्लंघन करने पर कारावास एएनसी और मेरे लिए व्यर्थ होता। हम अभी उस मुकाम पर नहीं पहुँचे थे जहाँ हम खुले क्रांतिकारी थे, जो किसी भी कीमत पर व्यवस्था के खिलाफ खुलकर लड़ते थे। तब हमारा मानना था कि जेल जाने से बेहतर भूमिगत रूप से संगठित होना है। जब मुझे एएनसी से इस्तीफा देने के लिए मजबूर किया गया, तो संगठन को मेरी जगह किसी और को नियुक्त करना पड़ा, और चाहे मैं कुछ भी चाहता, मैं अब उस अधिकार का प्रयोग नहीं कर सकता

था जो मेरे पास कभी था। जब मैं जोहान्सबर्ग वापस जा रहा था, तो फ्री स्टेट के दृश्यों का मुझ पर पहले जैसा उत्साहवर्धक प्रभाव नहीं था।

19

जब मुझे प्रतिबंध का नोटिस मिला, तब अगले महीने एएनसी का ट्रांसवाल सम्मेलन होने वाला था, और मैंने अपने अध्यक्षीय भाषण का मसौदा पहले ही पूरा कर लिया था। इसे कार्यकारी समिति के सदस्य एंड्रयू कुनेने ने सम्मेलन में पढ़ा। उस भाषण में, जिसे बाद में जवाहरलाल नेहरू के एक कथन से प्रेरित होकर "आज़ादी की राह आसान नहीं" भाषण के नाम से जाना गया, मैंने कहा कि जनता को अब राजनीतिक संघर्ष के नए रूपों के लिए तैयार रहना होगा। सरकार के नए कानूनों और रणनीतियों ने जन विरोध के पुराने रूपों - सार्वजनिक सभाओं, प्रेस विज्ञप्तियों, हड़तालों - को बेहद खतरनाक और आत्मघाती बना दिया था। अखबार हमारे बयान प्रकाशित नहीं करते थे; प्रिंटिंग प्रेस हमारे पर्चे छापने से इनकार कर देते थे, ये सब कम्युनिज़्म दमन अधिनियम के तहत अभियोजन के डर से था। मैंने लिखा, "इन घटनाक्रमों के लिए राजनीतिक संघर्ष के नए रूपों का विकास आवश्यक है। मैंने कहा, पुराने तरीके अब 'आत्मघाती' साबित हो चुके हैं।"
“दबे-कुचले लोग और उत्पीड़क आमने-सामने हैं। स्वतंत्रता और प्रतिक्रियावादी ताकतों के बीच हिसाब-किताब का दिन बहुत दूर नहीं है। मुझे इसमें जरा भी संदेह नहीं है कि जब वह दिन आएगा, तो सत्य और न्याय की जीत होगी…। दबे-कुचले लोगों की भावनाएँ पहले से कहीं अधिक तीव्र हैं। जनता की दयनीय स्थिति उन्हें हमारे देश पर शासन करने वाले गुंडों की घिनौनी नीतियों का अंत तक विरोध करने के लिए विवश करती है…। अत्याचार को उखाड़ फेंकना मानवता द्वारा स्वीकृत है और प्रत्येक स्वतंत्र व्यक्ति की सर्वोच्च आकांक्षा है।”

अप्रैल 1954 में, ट्रांसवाल लॉ सोसाइटी ने सर्वोच्च न्यायालय में याचिका दायर कर मेरा नाम मान्यता प्राप्त वकीलों की सूची से हटाने की मांग की, इस

आधार पर कि अवज्ञा मामले में जिन राजनीतिक गतिविधियों के लिए मुझे दोषी ठहराया गया था, वे अव्यवसायिक और अपमानजनक आचरण के अंतर्गत आती थीं। यह उस समय हुआ जब मंडेला और टैम्बो का प्रभाव चरम पर था और मैं सप्ताह में दर्जनों बार अदालतों में पेश होता था।
मेरे कार्यालय में दस्तावेज़ सौंपे गए, और मेरे खिलाफ आवेदन दायर होते ही और सार्वजनिक होते ही मुझे समर्थन और मदद के प्रस्ताव मिलने लगे। मुझे कई जाने-माने अफ़्रीकानर वकीलों से भी मदद के प्रस्ताव मिले। इनमें से कई लोग नेशनल पार्टी के समर्थक थे, लेकिन उनका मानना था कि आवेदन पक्षपातपूर्ण और अनुचित था। उनकी प्रतिक्रिया से मुझे यह समझ आया कि नस्लवादी दक्षिण अफ़्रीका में भी पेशेवर एकजुटता कभी-कभी रंगभेद से परे होती है, और अभी भी ऐसे वकील और न्यायाधीश मौजूद हैं जो एक अनैतिक शासन के हाथों की कठपुतली बनने से इनकार करते हैं।
जोहान्सबर्ग बार काउंसिल के अध्यक्ष, एडवोकेट वाल्टर पोलक, क्यू.सी. ने कुशलतापूर्वक मेरा पक्ष रखा। जब मैंने वाल्टर पोलक को अपना वकील नियुक्त किया, तो मुझे सलाह दी गई कि मुझे किसी ऐसे व्यक्ति को भी नियुक्त करना चाहिए जिसका संघर्ष से कोई संबंध न हो, क्योंकि इससे ट्रांसवाल बार पर सकारात्मक प्रभाव पड़ेगा। इसी उद्देश्य से, हमने विलियम एरोनसोहन को अपना वकील नियुक्त किया, जो जोहान्सबर्ग की सबसे पुरानी लॉ फर्मों में से एक के प्रमुख थे। दोनों ने बिना किसी शुल्क के मेरा पक्ष रखा। हमने तर्क दिया कि यह आवेदन न्याय के सिद्धांत का अपमान है और मुझे अपने राजनीतिक विश्वासों के लिए लड़ने का जन्मजात अधिकार है, जो कि कानून के शासन वाले राज्य में सभी मनुष्यों का अधिकार है।
लेकिन सबसे महत्वपूर्ण तर्क पोलक द्वारा स्ट्रिजडोम नामक व्यक्ति के मामले का उपयोग था, जिसे द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान बी. जे. वॉर्स्टर (जो बाद में प्रधानमंत्री बने) के साथ हिरासत में लिया गया था। दोनों को नाज़ी समर्थक रुख अपनाने के कारण नज़रबंद किया गया था। भागने के असफल प्रयास के बाद, स्ट्रिजडोम को कार चोरी का दोषी पाया गया। बाद में, रिहा होने के बाद, उन्होंने बार काउंसिल में वकील के रूप में प्रवेश के लिए आवेदन किया। उनके अपराधों और बार काउंसिल के कड़े विरोध के बावजूद, अदालत ने उन्हें इस आधार पर प्रवेश देने का फैसला किया कि उनका अपराध राजनीतिक था और किसी व्यक्ति को अपने राजनीतिक विचारों के आधार पर वकील के रूप में

वकालत करने से नहीं रोका जा सकता। पोलक ने कहा, "स्ट्रिजडोम और मंडेला में निश्चित रूप से अंतर हैं। मंडेला राष्ट्रवादी नहीं हैं और मंडेला श्वेत नहीं हैं।"
इस मामले की सुनवाई करने वाले न्यायाधीश रैम्सबॉटम एक ऐसे न्यायाधीश का उदाहरण थे जिन्होंने राष्ट्रवादियों का मुखपत्र बनने से इनकार कर दिया और न्यायपालिका की स्वतंत्रता को बरकरार रखा। इस मामले में उनके फैसले ने हमारे इस दावे को पूरी तरह से सही ठहराया कि मुझे अपने राजनीतिक विचारों के लिए प्रचार करने का अधिकार है, भले ही वे सरकार के विरोध में हों, और उन्होंने लॉ सोसाइटी की अर्जी खारिज कर दी। और एक दुर्लभ मामले में, लॉ सोसाइटी को अपने खर्चों का भुगतान स्वयं करने का आदेश दिया गया।

20

सोफियाटाउन में निष्कासन विरोधी अभियान एक लंबी लड़ाई थी। हम डटे रहे, और सरकार भी। 1954 से 1955 तक, बुधवार और रविवार की शाम को सप्ताह में दो बार रैलियाँ आयोजित की गईं। एक के बाद एक वक्ता सरकार की योजनाओं की निंदा करते रहे। डॉ. ज़ुमा के नेतृत्व में एएनसी और करदाता संघ ने पत्रों और याचिकाओं के माध्यम से सरकार से विरोध जताया। हमने निष्कासन विरोधी अभियान "हमारी लाशों पर से" के नारे पर चलाया, जो अक्सर मंचों से चिल्लाया जाता था और श्रोताओं द्वारा दोहराया जाता था। एक रात, इसने आमतौर पर सतर्क रहने वाले डॉ. ज़ुमा को भी पिछली शताब्दी में अफ्रीकी योद्धाओं को युद्ध के लिए प्रेरित करने वाले जोशीले नारे को बोलने के लिए प्रेरित किया: "ज़ेम्क' इनकोमो मगवालंदिनी!" (दुश्मन ने मवेशियों पर कब्जा कर लिया है, तुम कायर हो!)
सरकार ने 9 फरवरी, 1955 को निष्कासन की तारीख तय की थी। जैसे-जैसे वह दिन नज़दीक आता गया, ओलिवर और मैं रोज़ाना बस्ती में जाकर स्थानीय नेताओं से मिलते, योजनाओं पर चर्चा करते और उन लोगों के लिए पेशेवर तौर पर काम करते जिन्हें इलाके से निकाला जा रहा था या जिन पर मुकदमा चलाया जा रहा था। हम अदालत में यह साबित करने की कोशिश कर रहे थे कि सरकार के दस्तावेज़ अक्सर गलत होते थे और इसलिए कई निष्कासन आदेश अवैध थे। लेकिन यह सिर्फ़ एक

प्रतिबंधित या गिरफ्तार कर लिया गया था, और अंत में, सोफियाटाउन गोलियों की आवाज़ से नहीं, बल्कि ट्रकों और हथौड़ों की गड़गड़ाहट से दब गया। अगले दिन के अखबार में छपने वाली किसी राजनीतिक घटना के बारे में आपका अनुमान सही हो सकता है, लेकिन जब आप किसी गरमागरम राजनीतिक संघर्ष के केंद्र में होते हैं, तो सोचने-समझने का समय बहुत कम मिलता है। पश्चिमी क्षेत्रों में निष्कासन विरोधी अभियान में हमने कई गलतियाँ कीं और उनसे कई सबक सीखे। "हमारी लाशों पर से गुज़रना होगा" एक प्रभावशाली नारा था, लेकिन यह मदद से ज़्यादा बाधा साबित हुआ। नारा संगठन और जनता के बीच एक महत्वपूर्ण कड़ी होता है, जिसका नेतृत्व वह करना चाहता है। इसे किसी विशेष शिकायत को संक्षिप्त और सारगर्भित शब्दों में व्यक्त करना चाहिए, साथ ही लोगों को इसके खिलाफ लड़ने के लिए प्रेरित करना चाहिए। हमारे नारे ने लोगों का ध्यान तो खींचा, लेकिन इससे उन्हें यह विश्वास हो गया कि हम निष्कासन का विरोध करने के लिए जान की बाज़ी लगा देंगे। वास्तव में, एएनसी ऐसा करने के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थी।
हमने लोगों को मीडोलैंड्स में जाने के अलावा कोई दूसरा विकल्प नहीं दिया। जब सोफियाटाउन के लोगों को एहसास हुआ कि हम न तो सरकार को रोक सकते हैं और न ही उन्हें कहीं और आवास उपलब्ध करा सकते हैं, तो उनका विरोध कम हो गया और मीडोलैंड्स की ओर लोगों का आना बढ़ गया। कई किरायेदार स्वेच्छा से चले गए, क्योंकि उन्हें मीडोलैंड्स में अधिक जगह और साफ-सुथरे घर मिले। हमने मकान मालिकों और किरायेदारों की अलग-अलग परिस्थितियों पर ध्यान नहीं दिया। जहाँ मकान मालिकों के पास वहाँ रहने के कारण थे, वहीं कई किरायेदारों के पास वहाँ से जाने का प्रोत्साहन था। एएनसी की कई अफ्रीकीवादी सदस्यों ने आलोचना की और नेतृत्व पर किरायेदारों के हितों की कीमत पर मकान मालिकों के हितों की रक्षा करने का आरोप लगाया।
इस अभियान से मैंने यही सबक सीखा कि अंत में हमारे पास सशस्त्र और हिंसक प्रतिरोध के अलावा कोई विकल्प नहीं बचा था। हमने बार-बार अपने सभी अहिंसक हथियार आजमाए—भाषण, प्रतिनिधिमंडल, धमकियाँ, जुलूस, हड़तालें, काम बंद, स्वैच्छिक कारावास—लेकिन सब व्यर्थ, क्योंकि हमने जो भी किया, उसका कड़ा विरोध हुआ। एक स्वतंत्रता सेनानी को यह कठिन अनुभव होता है कि संघर्ष की प्रकृति उत्पीड़क द्वारा निर्धारित की जाती है, और उत्पीड़ित के पास

अक्सर उत्पीड़क के तरीकों को अपनाने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। एक समय ऐसा आता है जब आग से आग बुझाने के अलावा कोई चारा नहीं होता।

शिक्षा व्यक्तिगत विकास का सबसे बड़ा साधन है। शिक्षा के माध्यम से ही एक किसान की बेटी डॉक्टर बन सकती है, एक खनिक का बेटा खदान का प्रमुख बन सकता है, और एक खेतिहर मजदूर का बच्चा एक महान राष्ट्र का राष्ट्रपति बन सकता है। जो हमें दिया गया है, उससे नहीं, बल्कि जो हमारे पास है, उससे हम क्या बनाते हैं, वही एक व्यक्ति को दूसरे से अलग करता है।
सदी की शुरुआत से ही, अफ़्रीकी लोगों को शिक्षा के अवसर मुख्य रूप से उन विदेशी चर्चों और मिशनों की बदौलत मिले जिन्होंने स्कूल स्थापित किए और उन्हें प्रायोजित किया। यूनाइटेड पार्टी के शासनकाल में, अफ़्रीकी माध्यमिक विद्यालयों और श्वेत माध्यमिक विद्यालयों का पाठ्यक्रम लगभग एक जैसा था। मिशन विद्यालयों ने अफ़्रीकी लोगों को पश्चिमी शैली की अंग्रेज़ी भाषा की शिक्षा प्रदान की, जो मैंने स्वयं प्राप्त की। हमारे पास सुविधाएं कम थीं, लेकिन पढ़ने, सोचने या सपने देखने की क्षमता सीमित नहीं थी।
फिर भी, राष्ट्रवादियों के सत्ता में आने से पहले भी, धन के असमान वितरण से नस्लवादी शिक्षा की कहानी स्पष्ट होती है। सरकार श्वेत छात्रों पर अफ्रीकी छात्रों की तुलना में लगभग छह गुना अधिक खर्च करती थी। अफ्रीकियों के लिए शिक्षा अनिवार्य नहीं थी और केवल प्राथमिक कक्षाओं में ही निःशुल्क थी। स्कूली उम्र के आधे से भी कम अफ्रीकी बच्चे किसी भी स्कूल में जाते थे, और बहुत कम संख्या में अफ्रीकी छात्र हाई स्कूल से स्नातक होते थे।
इतनी शिक्षा भी राष्ट्रवादियों को पसंद नहीं आई। अफ़्रीकनर हमेशा से अफ़्रीकियों की शिक्षा के प्रति उदासीन रहे हैं। उनके लिए यह महज़ एक बर्बादी थी, क्योंकि अफ़्रीकी स्वभाव से ही अज्ञानी और आलसी होते हैं और किसी भी तरह की शिक्षा से इस समस्या का समाधान नहीं हो सकता। अफ़्रीकनर परंपरा से ही अफ़्रीकियों के अंग्रेज़ी सीखने के विरोधी रहे हैं, क्योंकि

अंग्रेज़ी उनके लिए एक विदेशी भाषा थी, जबकि हमारे लिए यह मुक्ति की भाषा थी।
1953 में, राष्ट्रवादी-बहुमत वाली संसद ने बंटू शिक्षा अधिनियम पारित किया, जिसका उद्देश्य अफ्रीकी शिक्षा पर रंगभेद की छाप छोड़ना था। इस अधिनियम के तहत अफ्रीकी शिक्षा का नियंत्रण शिक्षा विभाग से हटाकर अत्यधिक तिरस्कृत मूलनिवासी मामलों के विभाग को सौंप दिया गया। अधिनियम के अनुसार, चर्च और मिशन संस्थाओं द्वारा संचालित अफ्रीकी प्राथमिक और माध्यमिक विद्यालयों को दो विकल्प दिए गए: या तो वे अपने विद्यालयों को सरकार को सौंप दें या धीरे-धीरे कम होती सब्सिडी प्राप्त करें; या तो सरकार अफ्रीकियों की शिक्षा का जिम्मा ले ले या फिर अफ्रीकियों के लिए कोई शिक्षा उपलब्ध न हो। अफ्रीकी शिक्षकों को सरकार या किसी भी विद्यालय प्राधिकरण की आलोचना करने की अनुमति नहीं थी। यह बौद्धिक "बास्काप" था, हीनता को संस्थागत रूप देने का एक तरीका।
बंटू शिक्षा मंत्री डॉ. हेनड्रिक वेरवोर्ड ने समझाया कि शिक्षा का उद्देश्य "लोगों को उनके जीवन में मिलने वाले अवसरों के अनुसार प्रशिक्षित और शिक्षित करना" होना चाहिए। उनका तात्पर्य था कि अफ्रीकियों के पास न तो कोई अवसर हैं और न ही भविष्य में होंगे, इसलिए उन्हें शिक्षित क्यों किया जाए? उन्होंने कहा, "कुछ विशेष प्रकार के श्रम से ऊपर यूरोपीय समुदाय में बंटू लोगों के लिए कोई स्थान नहीं है।" संक्षेप में, अफ्रीकियों को निम्न स्तर के कामगार बनने के लिए प्रशिक्षित किया जाना चाहिए, ताकि वे श्वेत व्यक्ति के प्रति स्थायी रूप से अधीन रहें। एएनसी के लिए, यह अधिनियम एक बेहद खतरनाक कदम था जिसे समग्र रूप से अफ्रीकी संस्कृति की प्रगति को बाधित करने के लिए बनाया गया था और यदि इसे लागू किया जाता, तो अफ्रीकी लोगों के स्वतंत्रता संघर्ष को स्थायी रूप से पीछे धकेल दिया जाता। अफ्रीकी लोगों की आने वाली सभी पीढ़ियों की मानसिक सोच दांव पर लगी थी। जैसा कि प्रोफेसर मैथ्यूज ने उस समय लिखा था, "वेरवोर्ड के स्कूलों में अज्ञानता और हीनता की शिक्षा, बिल्कुल भी शिक्षा न होने से भी बदतर है।"
इस अधिनियम और वेरवोर्ड द्वारा इसकी भद्दी व्याख्या ने अश्वेत और श्वेत दोनों वर्गों में व्यापक आक्रोश पैदा कर दिया। डच रिफॉर्म चर्च, जिसने रंगभेद का समर्थन किया था, और लूथरन मिशन को छोड़कर, सभी ईसाई चर्चों ने इस

नए उपाय का विरोध किया। लेकिन विरोध की एकता केवल नीति की निंदा तक ही सीमित थी, इसका विरोध करने तक नहीं। एंग्लिकन चर्च, जो इस नई नीति के सबसे निडर और लगातार आलोचक थे, की नीति विभाजित थी। जोहान्सबर्ग के बिशप एम्ब्रोस रीव्स ने दस हजार बच्चों के कुल नामांकन वाले अपने स्कूलों को बंद करने का चरम कदम उठाया। लेकिन दक्षिण अफ्रीका में चर्च के आर्कबिशप, बच्चों को सड़कों से दूर रखने के लिए चिंतित थे, उन्होंने शेष स्कूलों को सरकार को सौंप दिया। उनके विरोध के बावजूद, रोमन कैथोलिक, सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट और यूनाइटेड ज्यूइश रिफॉर्म कांग्रिगेशन को छोड़कर, अन्य सभी चर्चों ने भी ऐसा ही किया - ये चर्च बिना सरकारी सहायता के अपना काम करते रहे। यहां तक कि मेरे अपने चर्च, वेस्लेयन चर्च ने भी अपने दो लाख अफ्रीकी छात्रों को सरकार को सौंप दिया। यदि अन्य सभी चर्चों ने प्रतिरोध करने वालों का अनुसरण किया होता, तो सरकार को एक ऐसे गतिरोध का सामना करना पड़ता जिससे समझौता करने के लिए मजबूर होना पड़ सकता था। इसके बजाय, राज्य ने हम पर अत्याचार किया।

1 अप्रैल, 1955 को मूलनिवासी मामलों के विभाग को सत्ता का हस्तांतरण होना था, और एएनसी ने उसी दिन से शुरू होने वाले स्कूल बहिष्कार की योजना पर चर्चा शुरू कर दी। कार्यपालिका के बीच हमारी गुप्त चर्चा इस बात पर केंद्रित थी कि क्या हमें जनता से सीमित अवधि के लिए विरोध प्रदर्शन करने का आह्वान करना चाहिए या फिर बंतू शिक्षा अधिनियम को जड़ पकड़ने से पहले ही नष्ट करने के लिए स्थायी स्कूल बहिष्कार की घोषणा करनी चाहिए। चर्चाएँ तीखी थीं और दोनों पक्षों के प्रबल समर्थक थे। अनिश्चितकालीन बहिष्कार के पक्ष में तर्क यह था कि बंतू शिक्षा एक ऐसा जहर है जिसे प्यास से मरते समय भी नहीं पिया जा सकता। इसे किसी भी रूप में स्वीकार करना अपूरणीय क्षति का कारण बनेगा। उनका तर्क था कि देश विस्फोटक अवस्था में था और लोग मात्र विरोध प्रदर्शन से कहीं अधिक प्रभावशाली कार्रवाई के लिए तरस रहे थे। हालांकि मेरी छवि एक उग्र नेता की थी, फिर भी मैं हमेशा यही मानता था कि संगठन को अपनी क्षमता से अधिक करने का वादा नहीं करना चाहिए, क्योंकि इससे लोगों का उस पर से भरोसा उठ जाएगा। मेरा मानना था कि हमारे कार्य

आदर्शवादी विचारों पर नहीं, बल्कि व्यावहारिक विचारों पर आधारित होने चाहिए। अनिश्चितकालीन बहिष्कार के लिए विशाल मशीनरी और संसाधनों की आवश्यकता होगी जो हमारे पास नहीं थे, और हमारे पिछले अभियानों से भी यह संकेत नहीं मिला था कि हम ऐसा करने में सक्षम हैं। हमारे लिए लाखों विद्यार्थियों को समायोजित करने के लिए इतनी जल्दी अपने स्वयं के स्कूल बनाना असंभव था, और यदि हम अपने लोगों को कोई विकल्प नहीं देते, तो हम उन्हें कुछ भी नहीं दे रहे होते। दूसरों के साथ मिलकर, मैंने एक सप्ताह के बहिष्कार का आग्रह किया।
राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने संकल्प लिया कि 1 अप्रैल से एक सप्ताह का स्कूल बहिष्कार शुरू किया जाए। यह सिफारिश दिसंबर 1954 में डरबन में आयोजित वार्षिक सम्मेलन में की गई थी, लेकिन प्रतिनिधियों ने इस सिफारिश को अस्वीकार कर दिया और अनिश्चितकालीन बहिष्कार के पक्ष में मतदान किया। सम्मेलन सर्वोच्च प्राधिकरण था, कार्यपालिका से भी बड़ा, और हम पर एक ऐसा बहिष्कार थोप दिया गया जिसे लागू करना लगभग असंभव था। डॉ. वेरवोर्ड ने घोषणा की कि सरकार बहिष्कार किए गए सभी स्कूलों को स्थायी रूप से बंद कर देगी और जो बच्चे स्कूल नहीं आएंगे उन्हें दोबारा प्रवेश नहीं दिया जाएगा।

इस बहिष्कार के सफल होने के लिए, अभिभावकों और समुदाय को स्कूलों की जगह लेनी होगी। मैंने अभिभावकों और एएनसी सदस्यों से बात की और उनसे कहा कि हर घर, हर झोपड़ी, हर सामुदायिक संरचना, हमारे बच्चों के लिए शिक्षा का केंद्र बनना चाहिए।
बहिष्कार 1 अप्रैल को शुरू हुआ और इसके मिले-जुले परिणाम रहे। यह अक्सर अनियमित, अव्यवस्थित और अप्रभावी रहा। पूर्वी रैंड में इससे लगभग सात हजार स्कूली बच्चे प्रभावित हुए। तड़के सुबह निकाले गए जुलूसों में माता- पिता से अपने बच्चों को घर पर रखने का आह्वान किया गया। महिलाओं ने स्कूलों के बाहर धरना दिया और उनमें भटक गए बच्चों को बाहर निकाला।
शहर के दक्षिण-पूर्व में स्थित जर्मिस्टन नामक बस्ती में, हमारे स्थानीय शाखा के अध्यक्ष जोशुआ माकुए ने बहिष्कार करने वाले आठ सौ बच्चों के लिए

तीन साल तक एक स्कूल चलाया। पोर्ट एलिजाबेथ में, बैरेट टायेसी ने सरकारी शिक्षण पद छोड़कर बहिष्कार करने वाले बच्चों के लिए एक स्कूल चलाया। 1956 में, उन्होंने इन बच्चों में से सत्तर को छठी कक्षा की परीक्षा में शामिल किया; तीन को छोड़कर सभी उत्तीर्ण हुए। कई जगहों पर, अस्थायी स्कूलों (जिन्हें अधिकारियों का ध्यान आकर्षित न करने के लिए "सांस्कृतिक क्लब" कहा जाता था) में बहिष्कार करने वाले छात्रों को पढ़ाया जाता था। सरकार ने बाद में एक कानून पारित किया जिसके तहत अनधिकृत शिक्षा प्रदान करना जुर्माने या कारावास के योग्य अपराध बना दिया गया। पुलिस ने इन क्लबों को परेशान किया, लेकिन कई गुप्त रूप से चलते रहे। अंततः, सामुदायिक स्कूल धीरे-धीरे बंद हो गए और माता-पिता, घटिया शिक्षा और बिल्कुल भी शिक्षा न मिलने के बीच चुनाव करने के लिए मजबूर होकर, घटिया शिक्षा को ही चुना। मेरे अपने बच्चे सेवेंथ-डे एडवेंटिस्ट स्कूल में पढ़ते थे, जो निजी था और सरकारी अनुदान पर निर्भर नहीं था।
इस अभियान का मूल्यांकन दो स्तरों पर किया जाना चाहिए: क्या तात्कालिक उद्देश्य प्राप्त हुआ, और क्या इसने अधिक लोगों को राजनीतिक रूप से जागरूक किया और उन्हें संघर्ष में शामिल किया। पहले स्तर पर, अभियान स्पष्ट रूप से विफल रहा। हमने न तो पूरे देश में अफ्रीकी स्कूलों को बंद किया और न ही बंटू शिक्षा अधिनियम को समाप्त किया। लेकिन हमारे विरोध से सरकार इतनी विचलित हो गई कि उसने अधिनियम में संशोधन किया, और एक समय वेरवोर्ड को यह घोषणा करने के लिए विवश होना पड़ा कि शिक्षा सभी के लिए समान होनी चाहिए। सरकार का नवंबर 1954 का मसौदा पाठ्यक्रम, जनजातीय आधार पर विद्यालय प्रणाली को मॉडल बनाने की मूल अवधारणा से पीछे हटना था। अंततः, हमारे पास दो बुराइयों में से कम बुरी को चुनने के अलावा कोई विकल्प नहीं था, और हमने कमतर शिक्षा को चुना। लेकिन बंटू शिक्षा के परिणाम अप्रत्याशित तरीकों से सरकार के लिए मुसीबत बन गए। क्योंकि बंटू शिक्षा ने ही 1970 के दशक में अश्वेत युवाओं की सबसे उग्र और विद्रोही पीढ़ी को जन्म दिया, जो देश ने पहले कभी नहीं देखी थी। जब बंटू शिक्षा के ये बच्चे अपनी किशोरावस्था के उत्तरार्ध और बीसवें दशक के आरंभ में पहुँचे, तो वे उग्र रूप से विद्रोह पर उतर आए।

चीफ लुथुली के एएनसी के अध्यक्ष चुने जाने के कई महीनों बाद, प्रोफेसर जेड. के. मैथ्यूज अमेरिका में एक साल तक अतिथि प्रोफेसर रहने के बाद दक्षिण अफ्रीका लौटे, उनके पास एक ऐसा विचार था जो मुक्ति संघर्ष को नया रूप देने वाला था। केप में एएनसी के वार्षिक सम्मेलन में अपने भाषण में प्रोफेसर मैथ्यूज ने कहा, "मुझे आश्चर्य होता है कि क्या अब समय नहीं आ गया है कि अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने पर विचार करे, एक जनसभा, जो इस देश के सभी लोगों का प्रतिनिधित्व करे, चाहे उनकी जाति या रंग कुछ भी हो, ताकि भविष्य के लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के लिए एक स्वतंत्रता चार्टर तैयार किया जा सके।"
कुछ ही महीनों में एएनसी के राष्ट्रीय सम्मेलन ने प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और जन परिषद का गठन किया गया, जिसके अध्यक्ष चीफ लुथुली और संयुक्त सचिव वाल्टर सिसुलु और यूसुफ कचालिया थे। जन परिषद को नए दक्षिण अफ्रीका की नींव के लिए सिद्धांतों का एक समूह तैयार करना था। नए संविधान के सुझाव जनता से ही आने थे और देश भर के एएनसी नेताओं को अपने-अपने क्षेत्र के सभी लोगों से लिखित में सुझाव मांगने का अधिकार दिया गया था। यह संविधान जनता द्वारा निर्मित एक दस्तावेज होगा।
जनसभा संगठन के भीतर सक्रिय दो प्रमुख विचारधाराओं में से एक का प्रतिनिधित्व करती थी। ऐसा प्रतीत होता था कि सरकार एएनसी पर प्रतिबंध लगा देगी, और कई लोगों का तर्क था कि संगठन को भूमिगत और अवैध रूप से कार्य करने के लिए तैयार रहना चाहिए। साथ ही, हम उन महत्वपूर्ण सार्वजनिक नीतियों और गतिविधियों को छोड़ना नहीं चाहते थे जिन्होंने एएनसी को लोकप्रियता और जनसमर्थन दिलाया था। जनसभा शक्ति प्रदर्शन का एक सार्वजनिक माध्यम होगी।
जनसभा के लिए हमारा सपना था कि यह स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास में एक ऐतिहासिक घटना बने - एक ऐसा सम्मेलन जो दक्षिण अफ्रीका के सभी शोषितों और सभी प्रगतिशील शक्तियों को एकजुट करके परिवर्तन के लिए एक सशक्त आह्वान करे। हमारी आशा थी कि एक दिन इसे भी उसी श्रद्धा से देखा जाएगा जिस श्रद्धा से 1912 में एएनसी की स्थापना हुई थी।
हमने व्यापक स्तर पर प्रायोजन प्राप्त करने का प्रयास किया और लगभग दो सौ संगठनों - श्वेत, अश्वेत, भारतीय और रंगीन - को मार्च 1954 में डरबन के निकट

टोंगाट में आयोजित एक योजना सम्मेलन में प्रतिनिधि भेजने के लिए आमंत्रित किया। वहाँ गठित राष्ट्रीय कार्य परिषद में चार प्रायोजक संगठनों में से प्रत्येक के आठ सदस्य शामिल थे। अध्यक्ष चीफ लुथुली थे, और सचिवालय में वाल्टर सिसुलु (बाद में वाल्टर पर लगे प्रतिबंध के कारण उन्हें इस्तीफा देना पड़ा, जिसके बाद ओलिवर ने उनकी जगह ली), एसएआईसी के यूसुफ कचालिया, दक्षिण अफ्रीकी रंगीन जन संगठन (एसएसीपीओ) के स्टेनली लोलन और कांग्रेस ऑफ डेमोक्रेट्स (सीओडी) के लियोनेल बर्नस्टीन शामिल थे।
सितंबर 1953 में केप टाउन में अश्वेत नेताओं और ट्रेड यूनियनवादियों द्वारा गठित, SACPO केप में अश्वेतों के मताधिकार को संरक्षित करने के संघर्ष की एक परिणामी शाखा थी और इसका उद्देश्य अश्वेतों के हितों का प्रतिनिधित्व करना था। SACPO के संस्थापक सम्मेलन को ओलिवर टैम्बो और यूसुफ कैचालिया ने संबोधित किया था। अवज्ञा अभियान से प्रेरित होकर, COD का गठन 1952 के अंत में कट्टरपंथी, वामपंथी, सरकार विरोधी श्वेतों की पार्टी के रूप में किया गया था। COD, हालांकि छोटी थी और मुख्य रूप से जोहान्सबर्ग और केप टाउन तक सीमित थी, लेकिन इसका प्रभाव इसकी संख्या के अनुपात से कहीं अधिक था। इसके सदस्य, जैसे माइकल हार्मेल, ब्रैम फिशर और रस्टी बर्नस्टीन, हमारे उद्देश्य के प्रबल समर्थक थे। COD ने स्वयं को ANC और SAIC के साथ घनिष्ठ रूप से जोड़ा और सार्वभौमिक मताधिकार और अश्वेत और श्वेतों के बीच पूर्ण समानता की वकालत की। हमने COD को एक ऐसे माध्यम के रूप में देखा जिसके द्वारा हमारे विचारों को सीधे श्वेत जनता के सामने रखा जा सकता था। COD ने अफ्रीकियों के लिए एक महत्वपूर्ण प्रतीकात्मक भूमिका निभाई; जो अश्वेत लोग श्वेत-विरोधी होने के कारण इस संघर्ष में शामिल हुए थे, उन्होंने पाया कि वास्तव में सद्भावपूर्ण श्वेत लोग भी थे जो अफ्रीकियों के साथ समान व्यवहार करते थे।
राष्ट्रीय कार्रवाई परिषद ने सभी सहभागी संगठनों और उनके अनुयायियों को स्वतंत्रता चार्टर के लिए सुझाव भेजने के लिए आमंत्रित किया। देशभर के कस्बों और गांवों में परिपत्र भेजे गए। उनमें पूछा गया, “यदि आप कानून बना सकते… तो आप क्या करते?” “आप दक्षिण अफ्रीका को यहाँ रहने वाले सभी लोगों के लिए एक खुशहाल जगह बनाने के लिए क्या कदम उठाते?” कुछ पर्चे और पत्रक उस काव्यात्मक आदर्शवाद से भरे हुए थे जो योजना की विशेषता थी।

हम दक्षिण अफ्रीका के लोगों को काले और गोरे कहते हैं - आइए हम सब मिलकर स्वतंत्रता की आवाज़ उठाएँ! ... सभी लोगों की आवाज़ सुनी जाए। और उन सभी मांगों को दर्ज किया जाए जो हमें स्वतंत्र करेंगी। इन मांगों को स्वतंत्रता के एक महान चार्टर में संकलित किया जाए।

इस आह्वान ने जनता के मन में हलचल मचा दी। खेल और सांस्कृतिक क्लबों, चर्च समूहों, करदाताओं के संगठनों, महिला संगठनों, स्कूलों और ट्रेड यूनियन शाखाओं से सुझाव आने लगे। ये सुझाव नैपकिन पर, अभ्यास पुस्तिकाओं से फाड़े गए कागजों पर, बड़े कागजों के टुकड़ों पर और हमारे अपने पर्चों के पीछे लिखे हुए थे। यह देखकर विनम्रता का भाव जागा कि आम लोगों के सुझाव अक्सर नेताओं के सुझावों से कहीं आगे थे। सबसे आम मांग एक व्यक्ति-एक वोट की थी। यह मान्यता थी कि देश उन सभी का है जिन्होंने इसे अपना घर बनाया है। एएनसी की शाखाओं ने चार्टर लिखने की प्रक्रिया में महत्वपूर्ण योगदान दिया और वास्तव में सर्वश्रेष्ठ दो मसौदे डरबन और पीटरमैरिट्जबर्ग से आए। इन मसौदों को मिलाकर विभिन्न क्षेत्रों और समितियों को टिप्पणियों और प्रश्नों के लिए भेजा गया। चार्टर का मसौदा राष्ट्रीय कार्य परिषद की एक छोटी समिति द्वारा तैयार किया गया और एएनसी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति द्वारा इसकी समीक्षा की गई।
इस चार्टर को जनता की सभा में प्रस्तुत किया जाना था और इसके प्रत्येक भाग को अनुमोदन के लिए प्रतिनिधियों के समक्ष रखा जाना था। जून में, सभा के निर्धारित समय से कुछ दिन पहले, हममें से एक छोटे समूह ने मसौदे की समीक्षा की। समय कम होने और दस्तावेज़ के पहले से ही अच्छी स्थिति में होने के कारण हमने कुछ ही बदलाव किए।

जनता की कांग्रेस 25 और 26 जून, 1955 को दो साफ, धूप भरे दिनों में हुई, जोहान्सबर्ग से कुछ मील दक्षिण-पश्चिम में स्थित एक छोटे से मैदानी इलाके में बसे बहुजातीय गांव क्लिपटाउन में। तीन हजार से अधिक प्रतिनिधियों ने पुलिस की धमकियों का सामना करते हुए अंतिम दस्तावेज को मंजूरी देने के लिए इकट्ठा हुए। वे कार, बस, ट्रक और पैदल चलकर आए थे। हालांकि प्रतिनिधियों की

भारी संख्या अश्वेत थी, फिर भी उनमें तीन सौ से अधिक भारतीय, दो सौ अश्वेत और एक सौ श्वेत प्रतिनिधि शामिल थे।
मैं वाल्टर के साथ क्लिपटाउन गया। हम दोनों पर प्रतिबंध लगा हुआ था, इसलिए हमने भीड़ के किनारे एक ऐसी जगह ढूंढी जहाँ हम बिना भीड़ में घुल-मिल जाए या किसी की नज़र में आए, सब कुछ देख सकें। भीड़ अपने आकार और अनुशासन दोनों में प्रभावशाली थी। काले, हरे और पीले रंग के बाजूबंद पहने "स्वतंत्रता स्वयंसेवकों" ने प्रतिनिधियों का स्वागत किया और उनके बैठने की व्यवस्था की। वहाँ कांग्रेस की स्कर्ट, ब्लाउज़ और स्कार्फ पहने बूढ़ी औरतें और जवान औरतें थीं; कांग्रेस के बाजूबंद और टोपी पहने बूढ़े और जवान आदमी थे। हर जगह तख्तियाँ लगी थीं जिन पर लिखा था, "हमारे जीवनकाल में स्वतंत्रता, संघर्ष अमर रहे!" मंच रंगों से जगमगा रहा था: सीओडी के श्वेत प्रतिनिधि, एसएआईसी के भारतीय प्रतिनिधि, एसएसीपीओ के रंगीन प्रतिनिधि, सभी कांग्रेस गठबंधन के चार संगठनों का प्रतिनिधित्व करने वाले चार तीलियों वाले पहिये की प्रतिकृति के सामने बैठे थे। श्वेत और अफ्रीकी पुलिस और विशेष शाखा के सदस्य इधर-उधर घूम रहे थे, तस्वीरें ले रहे थे, नोटबुक में लिख रहे थे और प्रतिनिधियों को डराने की नाकाम कोशिश कर रहे थे।
दर्जनों गीत और भाषण हुए। भोजन परोसा गया। माहौल गंभीर और उत्सवपूर्ण दोनों था। पहले दिन दोपहर को, संविधान को अंग्रेज़ी, सेसोथो और ज़ोसा भाषाओं में लोगों को खंड-दर-खंड पढ़कर सुनाया गया। प्रत्येक खंड के बाद, भीड़ ने "अफ़्रीका!" और "मयिबुये!" के नारों के साथ अपनी सहमति व्यक्त की। सम्मेलन का पहला दिन सफल रहा।
दूसरा दिन भी पहले दिन जैसा ही था। चार्टर के प्रत्येक खंड को सर्वसम्मति से पारित कर दिया गया था और 3:30 बजे अंतिम अनुमोदन के लिए मतदान होना था, तभी स्टेन गन लहराते हुए पुलिस और स्पेशल ब्रांच के जासूसों का एक दस्ता मंच पर आ गिरा। कर्कश, अफ़्रीकी लहजे वाली आवाज़ में, एक पुलिसकर्मी ने माइक लेकर घोषणा की कि राजद्रोह का संदेह है और पुलिस की अनुमति के बिना कोई भी सभा छोड़कर नहीं जा सकता। पुलिस ने लोगों को मंच से धकेलना शुरू कर दिया और दस्तावेज़, तस्वीरें, यहाँ तक कि "मांस का सूप" और "मांस रहित सूप" जैसे बैनर भी ज़ब्त कर लिए। राइफलों से लैस कांस्टेबलों के एक अन्य समूह ने भीड़ के चारों ओर घेरा बना लिया। लोगों ने ज़ोर-ज़ोर से "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" गाकर शानदार प्रतिक्रिया दी। इसके बाद प्रतिनिधियों

को एक-एक करके जाने दिया गया, प्रत्येक व्यक्ति से पुलिस ने पूछताछ की और उसका नाम दर्ज किया। जब पुलिस ने छापा मारना शुरू किया, तब मैं भीड़ के किनारे पर था। मेरी सहज प्रवृत्ति वहीं रुककर मदद करने की थी, लेकिन सावधानी बरतना ही समझदारी भरा कदम लगा, क्योंकि मुझे तुरंत गिरफ्तार करके जेल में डाल दिया जाता। जोहान्सबर्ग में एक आपातकालीन बैठक बुलाई गई थी और मैं वापस वहीं चला गया। जोहान्सबर्ग लौटते ही मुझे एहसास हुआ कि यह छापा सरकार की ओर से एक कठोर नए रुख का संकेत था।

हालाँकि जनसभा भंग हो चुकी थी, फिर भी यह चार्टर मुक्ति संघर्ष के लिए एक महान मार्गदर्शक बन गया। अमेरिकी स्वतंत्रता घोषणापत्र, फ्रांसीसी मानवाधिकार घोषणापत्र और कम्युनिस्ट घोषणापत्र जैसे अन्य स्थायी राजनीतिक दस्तावेजों की तरह, स्वतंत्रता चार्टर व्यावहारिक लक्ष्यों और काव्यात्मक भाषा का मिश्रण है। यह नस्लीय भेदभाव के उन्मूलन और सभी के लिए समान अधिकारों की प्राप्ति की प्रशंसा करता है। यह स्वतंत्रता को अपनाने वाले सभी लोगों का एक लोकतांत्रिक, गैर-नस्लीय दक्षिण अफ्रीका के निर्माण में भाग लेने के लिए स्वागत करता है। इसने जनता की आशाओं और सपनों को समेटा और मुक्ति संघर्ष तथा राष्ट्र के भविष्य के लिए एक खाका के रूप में कार्य किया। प्रस्तावना में लिखा है:
हम, दक्षिण अफ्रीका के नागरिक, अपने देश और दुनिया को यह सूचित करते हैं कि: —
दक्षिण अफ्रीका उन सभी का है जो इसमें रहते हैं, चाहे वे काले हों या गोरे, और यह कि
कोई भी सरकार जनता की इच्छा पर आधारित हुए बिना अधिकार का दावा नहीं कर सकती;
हमारे लोगों को उनकी जन्मसिद्ध भूमि, स्वतंत्रता और अधिकारों से वंचित कर दिया गया है।
अन्याय और असमानता पर आधारित शासन प्रणाली द्वारा शांति स्थापित करना; हमारा देश तब तक कभी समृद्ध या स्वतंत्र नहीं होगा जब तक हमारे सभी लोग स्वस्थ जीवन न जी सकें।

भाईचारे में रहते हुए, समान अधिकारों और अवसरों का आनंद लेते हुए;
केवल जनता की इच्छा पर आधारित एक लोकतांत्रिक राज्य ही सुरक्षा प्रदान कर सकता है।
सभी को रंग, नस्ल, लिंग या धर्म के भेदभाव के बिना उनके जन्मसिद्ध अधिकार प्राप्त हों;
और इसलिए, हम, दक्षिण अफ्रीका के लोग, काले और गोरे, एक साथ
सभी समर्थकों, देशवासियों और भाइयों, इस स्वतंत्रता घोषणापत्र को अपनाएं। और हम प्रतिज्ञा करते हैं कि हम अपनी पूरी शक्ति और साहस का प्रयोग करते हुए, इसमें उल्लिखित लोकतांत्रिक परिवर्तनों को प्राप्त करने के लिए मिलकर प्रयास करेंगे।

इसके बाद चार्टर में एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के लिए आवश्यक शर्तों का उल्लेख किया गया है।

जनता ही शासन करेगी!
प्रत्येक पुरुष और महिला को मतदान करने और चुनाव लड़ने का अधिकार होगा।
कानून बनाने वाले सभी निकायों के लिए उम्मीदवार।
सभी लोगों को प्रशासन में भाग लेने का अधिकार होगा।
देश।
जाति, रंग या नस्ल के आधार पर लोगों के अधिकार समान होंगे।
सेक्स।
अल्पसंख्यक शासन के सभी निकाय, सलाहकार बोर्ड, परिषदें और प्राधिकरण इन्हें लोकतांत्रिक स्वशासन निकायों द्वारा प्रतिस्थापित किया जाएगा।

सभी राष्ट्रीय समूहों को समान अधिकार प्राप्त होंगे!

राज्य के निकायों, न्यायालयों और अन्य पदों में समान दर्जा होगा।
सभी राष्ट्रीय समूहों और नस्लों के लिए विद्यालय;
सभी राष्ट्रीय समूहों को उनकी नस्ल के अपमान से कानून द्वारा सुरक्षा प्रदान की जाएगी।
और राष्ट्रीय गौरव;

सभी लोगों को अपनी भाषा का उपयोग करने और उसे बोलने का समान अधिकार होगा। अपनी स्वयं की लोक संस्कृति और रीति-रिवाजों का विकास करना;
राष्ट्रीय, नस्लीय या रंगभेद का प्रचार और अभ्यास
अवमानना एक दंडनीय अपराध होगा;
सभी रंगभेद संबंधी कानूनों और प्रथाओं को निरस्त किया जाएगा।
जनता को देश की संपत्ति में हिस्सेदारी मिलेगी!

हमारे देश की राष्ट्रीय संपदा, सभी दक्षिण अफ़्रीकी लोगों की विरासत, इसे जनता को वापस लौटा दिया जाएगा;
मिट्टी के नीचे छिपी खनिज संपदा, बैंक और एकाधिकार उद्योग
इसका स्वामित्व समग्र रूप से जनता के पास स्थानांतरित कर दिया जाएगा; अन्य सभी उद्योगों और व्यापार को कल्याणकारी व्यवस्था के लिए नियंत्रित किया जाएगा।
लोगों की;
सभी लोगों को अपनी पसंद के स्थान पर व्यापार करने का समान अधिकार होगा। विनिर्माण करने और सभी व्यापारों, शिल्पों और व्यवसायों में प्रवेश करने के लिए।

यह भूमि उन लोगों के बीच बांटी जाएगी जो इस पर खेती करते हैं!

नस्लीय आधार पर भूमि स्वामित्व पर लगी पाबंदी समाप्त की जाएगी, और सभी भूमि को उस पर काम करने वालों के बीच पुनर्वितरित किया जाए, ताकि अकाल और भूमिहीनता को दूर किया जा सके...

एएनसी के कुछ सदस्यों, विशेष रूप से अफ़्रीकीवादी गुट, जो साम्यवाद-विरोधी और श्वेत-विरोधी थे, ने इस चार्टर का विरोध करते हुए कहा कि यह एएनसी द्वारा अपने पूरे इतिहास में प्रस्तावित दक्षिण अफ़्रीका से बिल्कुल अलग दक्षिण अफ़्रीका की कल्पना है। उनका दावा था कि चार्टर समाजवादी व्यवस्था का समर्थन करता है और उनका मानना था कि सीओडी और श्वेत कम्युनिस्टों का इसकी विचारधारा पर अत्यधिक प्रभाव था। जून 1956 में, मासिक पत्रिका लिबरेशन में, मैंने इस बात पर प्रकाश डाला कि चार्टर निजी उद्यम का समर्थन

करता है और अफ़्रीकियों के बीच पहली बार पूंजीवाद को फलने-फूलने की अनुमति देगा। चार्टर ने गारंटी दी कि स्वतंत्रता मिलने पर, अफ़्रीकियों को अपने नाम से अपने व्यवसाय, अपने घर और संपत्ति का स्वामित्व रखने का अवसर मिलेगा, संक्षेप में, पूंजीपति और उद्यमी के रूप में समृद्ध होने का। चार्टर में वर्गों और निजी संपत्ति के उन्मूलन, उत्पादन के साधनों के सार्वजनिक स्वामित्व, या वैज्ञानिक समाजवाद के किसी भी सिद्धांत के प्रचार की बात नहीं की गई है। खानों, बैंकों और एकाधिकार उद्योगों के संभावित राष्ट्रीयकरण पर चर्चा करने वाला खंड एक ऐसा कदम था जिसे उठाना आवश्यक था यदि अर्थव्यवस्था को पूरी तरह से श्वेत व्यापारियों के स्वामित्व और संचालन में नहीं रखना था।
यह चार्टर वास्तव में एक क्रांतिकारी दस्तावेज था, क्योंकि इसमें परिकल्पित परिवर्तन दक्षिण अफ्रीका की आर्थिक और राजनीतिक संरचना में आमूल-चूल परिवर्तन किए बिना हासिल नहीं किए जा सकते थे। इसका उद्देश्य पूंजीवादी या समाजवादी होना नहीं था, बल्कि उत्पीड़न को समाप्त करने के लिए जनता की मांगों का एकीकरण था। दक्षिण अफ्रीका में, केवल निष्पक्षता प्राप्त करने के लिए भी, रंगभेद को ही समाप्त करना आवश्यक था, क्योंकि यह अन्याय का साक्षात प्रतीक था।

21

सितंबर 1955 की शुरुआत में, मेरे प्रतिबंध समाप्त हो गए। मैंने आखिरी बार 1948 में छुट्टी ली थी, जब मैं एएनसी में एक अनुभवहीन, कम सक्रिय नेता था और ट्रांसवाल कार्यकारी की बैठकों में भाग लेने और कभी-कभार सार्वजनिक सभाओं को संबोधित करने के अलावा मेरी कोई खास ज़िम्मेदारी नहीं थी। अब, अड़तीस साल की उम्र में, मैं हल्के हैवीवेट वर्ग में पहुँच चुका था और मुझ पर ज़िम्मेदारी और भी बढ़ गई थी। मैं दो साल से जोहान्सबर्ग में ही सीमित था, अपने कानूनी और राजनीतिक कामों में जकड़ा हुआ था, और ट्रांसकेई में मंडेला परिवार के मामलों की उपेक्षा कर रहा था। मैं फिर से ग्रामीण इलाकों में जाने के लिए उत्सुक था, अपने बचपन के खुले मैदानों और लहरदार घाटियों में रहने के लिए। मैं अपने परिवार से मिलने और ट्रांसकेई से जुड़े कुछ मुद्दों पर सबाता और दलिवोंगा से परामर्श करने के लिए बेचैन था, जबकि एएनसी चाहती थी कि मैं उनसे राजनीतिक मामलों पर परामर्श करूँ। मैं एक कामकाजी छुट्टी मनाने जा रहा था, छुट्टी मनाने का यही एकमात्र तरीका मुझे आता था।
मेरे जाने से एक रात पहले, कई दोस्त मुझे विदा करने के लिए मेरे घर पर जमा हुए। उनमें युवा और मिलनसार वकील दुमा नोकवे भी थे, जो उस समय यूथ लीग के राष्ट्रीय सचिव थे। दुमा, वाल्टर के साथ बुखारेस्ट में आयोजित युवा सम्मेलन में गए थे, और उस रात उन्होंने हमें अपने यात्रा के दौरान सीखे रूसी और चीनी गाने सुनाकर मनोरंजन किया। आधी रात को, जब मेरे मेहमान जाने की तैयारी कर रहे थे, मेरी दो साल की बेटी मकाज़िवे जाग उठी और मुझसे पूछा कि क्या वह मेरे साथ आ सकती है। मैं अपने परिवार के साथ पर्याप्त समय नहीं बिता पा रहा था और मकाज़िवे के इस अनुरोध ने मुझे अपराधबोध से भर दिया। अचानक, यात्रा को लेकर मेरा उत्साह गायब हो गया। लेकिन मैंने उसे वापस बिस्तर पर लिटाया और उसे शुभ रात्रि का चुंबन दिया, और जैसे ही वह सो गई, मैंने अपनी यात्रा की अंतिम तैयारियाँ शुरू कर दीं।
मैं एक तथ्य-खोज अभियान पर निकल रहा था, जिसे मैं ग्रामीण इलाकों को देखने और पुराने मित्रों और साथियों से मिलने के सुख के साथ जोड़ना चाहता था। मैं देश के अन्य हिस्सों में हो रहे घटनाक्रमों से कटा हुआ था और भीतरी

इलाकों में क्या घट रहा है, इसे स्वयं देखने के लिए उत्सुक था। यद्यपि मैं देश भर के विभिन्न समाचार पत्र पढ़ता हूँ, लेकिन समाचार पत्र वास्तविकता का एक धुंधला सा प्रतिबिंब मात्र होते हैं; उनकी जानकारी एक स्वतंत्रता सेनानी के लिए इसलिए महत्वपूर्ण नहीं है कि वह सत्य को उजागर करती है, बल्कि इसलिए महत्वपूर्ण है कि वह समाचार पत्र प्रकाशित करने वालों और पढ़ने वालों दोनों के पूर्वाग्रहों और धारणाओं को प्रकट करती है। इस यात्रा पर मैं जमीनी स्तर पर काम कर रहे अपने लोगों से सीधे बात करना चाहता था।
मैं आधी रात के कुछ ही समय बाद निकला और एक घंटे के भीतर डरबन जाने वाले राजमार्ग पर था। सड़कें खाली थीं और मेरे साथ केवल तारे और ट्रांसवाल की हल्की हवाएँ थीं। हालाँकि मैं सोया नहीं था, फिर भी मैं हल्का और तरोताज़ा महसूस कर रहा था। भोर होते ही मैंने वोल्क्रस्ट से नेटाल की ओर प्रस्थान किया, जो ज़ुलुओं के अंतिम स्वतंत्र राजा सेटीवायो का देश था, जिनकी सेना ने 1879 में इसंधलवाना में ब्रिटिश सेना को हराया था। लेकिन राजा ब्रिटिश सेना की भारी गोलाबारी का सामना नहीं कर सका और अंततः उसने अपना राज्य ब्रिटिशों के हवाले कर दिया। नेटाल सीमा पर नदी पार करने के कुछ ही समय बाद मैंने माजुबा पहाड़ियाँ देखीं, वह खड़ी ढलान जहाँ सेटीवायो की हार के दो साल से भी कम समय बाद एक छोटे बोअर कमांडो ने ब्रिटिश सैनिकों की एक टुकड़ी पर घात लगाकर हमला किया और उन्हें पराजित किया। माजुबा पहाड़ी पर उस अफ़्रीकानर ने ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध अपनी स्वतंत्रता की दृढ़ता से रक्षा की और राष्ट्रवाद के लिए एक बड़ा प्रहार किया। अब उन्हीं स्वतंत्रता सेनानियों के वंशज मेरे लोगों पर अत्याचार कर रहे थे, जो ठीक उसी चीज़ के लिए संघर्ष कर रहे थे जिसके लिए कभी अफ़्रीकानरों ने लड़ाई लड़ी थी और अपनी जान दी थी। मैं उन ऐतिहासिक पहाड़ियों से गुज़र रहा था और इतिहास की विडंबनाओं के बारे में कम सोच रहा था, जिसमें उत्पीड़ित ही उत्पीड़क बन जाता है, बल्कि इस बात पर ज़्यादा सोच रहा था कि निर्दयी अफ़्रीकानरों को मेरे लोगों के हाथों मजूबा हिल जैसी ही सज़ा मिलनी चाहिए थी।
मेरी कार के रेडियो पर रेडियो बंटू के मधुर संगीत ने मेरे इस कठोर चिंतन को तोड़ दिया। सरकारी साउथ अफ्रीकन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन द्वारा प्रसारित रेडियो बंटू की रूढ़िवादी राजनीति से मुझे घृणा थी, लेकिन इसके

संगीत में मुझे आनंद आता था। (दक्षिण अफ्रीका में अफ्रीकी कलाकार संगीत बनाते थे, लेकिन श्वेत रिकॉर्ड कंपनियां पैसा कमाती थीं।) मैं "रेडिफ्यूजन सर्विस" नामक एक लोकप्रिय कार्यक्रम सुन रहा था, जिसमें देश के अधिकांश प्रमुख अफ्रीकी गायक गाते थे: मिरियम मेकबा, डॉली राथेबे, डोरोथी मासुकु, थोको शुकुमा और मैनहट्टन ब्रदर्स की मधुर आवाज़। मुझे हर तरह का संगीत पसंद है, लेकिन अपने देश का संगीत सीधे मेरे दिल को छू जाता है। अफ्रीकी संगीत की अनूठी सुंदरता यह है कि यह दुख भरी कहानी सुनाते हुए भी मन को प्रसन्न करता है। आप गरीब हो सकते हैं, आपके पास एक जर्जर घर हो सकता है, आपकी नौकरी जा चुकी हो सकती है, लेकिन वह गीत आपको आशा देता है। अफ्रीकी संगीत अक्सर अफ्रीकी लोगों की आकांक्षाओं को व्यक्त करता है, और यह उन लोगों के राजनीतिक संकल्प को भी जगा सकता है जो अन्यथा राजनीति के प्रति उदासीन हों। अफ़्रीकी रैलियों में होने वाले जोशीले गायन को देखकर ही यह स्पष्ट हो जाता है कि संगीत से राजनीति को मजबूती मिल सकती है, लेकिन संगीत में ऐसी शक्ति होती है जो राजनीति से परे होती है।
मैंने नेटाल में कई जगहों पर रुककर एएनसी नेताओं से गुप्त मुलाकातें कीं। डरबन के पास पहुँचकर मैंने पीटरमैरिट्जबर्ग में रुकने का मौका लिया, जहाँ मैंने डॉ. छोटा मोटाला, मूसा मभिदा और अन्य लोगों के साथ पूरी रात बिताई और देश की राजनीतिक स्थिति की समीक्षा की। इसके बाद मैं ग्राउटविले के लिए रवाना हुआ और मुखिया लुथुली के साथ पूरा दिन बिताया। हालाँकि उन्हें एक साल से अधिक समय से प्रतिबंध के तहत नज़रबंद रखा गया था, फिर भी मुखिया एएनसी की गतिविधियों से भली-भांति परिचित थे। वे जोहान्सबर्ग में एएनसी के बढ़ते केंद्रीकरण और क्षेत्रीय शक्तियों के कम होते प्रभाव को लेकर चिंतित थे। मैंने उन्हें आश्वस्त किया कि हम क्षेत्रीय शक्तियों को मजबूत बनाए रखना चाहते हैं।
मेरी अगली मुलाकात डरबन में डॉ. नाइकर और नेटाल इंडियन कांग्रेस की कार्यकारी समिति के साथ हुई, जहाँ मैंने यह संवेदनशील मुद्दा उठाया कि राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का मानना था कि इंडियन कांग्रेस हाल ही में निष्क्रिय हो गई है। मैं ऐसा करने में हिचकिचा रहा था क्योंकि डॉ. नाइकर मुझसे वरिष्ठ थे और मुझसे कहीं अधिक कष्ट झेल चुके थे, लेकिन हमने सरकारी प्रतिबंधों को दूर करने के तरीकों पर चर्चा की।

डरबन से मैं तट के किनारे दक्षिण की ओर पोर्ट शेपस्टोन और पोर्ट सेंट जॉन्स से होते हुए आगे बढ़ा। ये छोटे और खूबसूरत औपनिवेशिक कस्बे हिंद महासागर के सामने चमकते समुद्र तटों पर बसे हुए थे। इस क्षेत्र की सुंदरता से मैं मंत्रमुग्ध था, लेकिन साथ ही साथ उन इमारतों और सड़कों को देखकर मेरा मन भी आहत हो रहा था जिनके नाम उन श्वेत साम्राज्यवादियों के नाम पर रखे गए थे जिन्होंने उन्हीं लोगों को दबाया था जिनके नाम वहां के मूल निवासी थे। यहीं पर मैंने भीतरी इलाके की ओर रुख किया और आगे की चर्चा और परामर्श के लिए एएनसी के कोषाध्यक्ष डॉ. कोंको से मिलने उमज़िमकुलु की ओर चल पड़ा।
उत्साह से भर कर मैं उमटाटा के लिए रवाना हुआ। जब मैं उमटाटा की मुख्य सड़क यॉर्क रोड पर मुड़ा, तो मुझे घर लौटने पर मिलने वाली जानी-पहचानी और सुखद यादों का एहसास हुआ, जो लंबे समय के निर्वासन के बाद होता है। मैं तेरह साल दूर रहा था, और यद्यपि इस विदा पुत्र के लौटने पर स्वागत के लिए कोई झंडे या मोटे बछड़े नहीं थे, फिर भी मैं अपनी माँ, अपने साधारण घर और अपने बचपन के दोस्तों को देखकर बेहद उत्साहित था। लेकिन ट्रांसकेई की मेरी यात्रा का एक दूसरा उद्देश्य भी था: मेरा आगमन ट्रांसकेई की बुंगा प्रणाली को बंटू अधिकारियों की प्रणाली में बदलने की प्रक्रिया की देखरेख के लिए नियुक्त विशेष समिति की बैठक के साथ हुआ।
बुंगा की भूमिका, जिसमें 108 सदस्य थे, जिनमें से एक-चौथाई श्वेत और तीन-चौथाई अफ्रीकी थे, क्षेत्र में अफ्रीकियों को प्रभावित करने वाले कानूनों पर सरकार को सलाह देना और करों और सड़कों जैसे स्थानीय मामलों को विनियमित करना था। यद्यपि बुंगा ट्रांसकेई में सबसे प्रभावशाली राजनीतिक निकाय था, इसके प्रस्ताव केवल सलाहकारी थे और इसके निर्णयों की समीक्षा श्वेत मजिस्ट्रेटों द्वारा की जाती थी। बुंगा की शक्ति उतनी ही थी जितनी श्वेतों ने उसे दी थी। फिर भी, बंटू प्राधिकरण अधिनियम ने इसे एक और भी दमनकारी व्यवस्था से बदल दिया: एक सामंती व्यवस्था जो राज्य द्वारा निर्धारित वंशानुगत और जनजातीय भेदों पर आधारित थी। सरकार ने सुझाव दिया कि बंटू प्राधिकरण लोगों को श्वेत मजिस्ट्रेटों के नियंत्रण से मुक्त कर देगा, लेकिन यह राज्य द्वारा लोकतंत्र को कमजोर करने और जनजातीय प्रतिद्वंद्विता को बढ़ावा देने का एक छलावा था। एएनसी ने बंटू प्राधिकरणों की किसी भी स्वीकृति को सरकार के सामने आत्मसमर्पण माना।

मेरे आगमन की रात, मेरी ट्रांसकेई के कई पार्षदों और अपने भतीजे के. डी. मातांज़िमा से संक्षिप्त मुलाकात हुई, जिसे मैं दलिवोंगा कहकर पुकारता था। दलिवोंगा बुंगा समुदाय को बंटू सत्ता को स्वीकार करने के लिए राजी करने में अग्रणी भूमिका निभा रहा था, क्योंकि नई व्यवस्था से प्रवासी थेम्बुलैंड के मुखिया के रूप में उसकी शक्ति और भी मजबूत और बढ़ जाएगी। दलिवोंगा और मैं इस जटिल मुद्दे पर अलग-अलग राय रखते थे। हमारे विचार बदल गए थे: उसने पारंपरिक नेतृत्व की भूमिका चुन ली थी और व्यवस्था के साथ सहयोग कर रहा था। लेकिन काफी रात हो चुकी थी, और लंबी चर्चा शुरू करने के बजाय, हमने अगले दिन मिलने का फैसला किया।
मैंने वह रात शहर के एक गेस्ट हाउस में बिताई, सुबह जल्दी उठा और अपने कमरे में दो स्थानीय सरदारों के साथ कॉफी पीने के लिए आया ताकि नई बंटू अथॉरिटीज में उनकी भूमिका पर चर्चा कर सकें। हमारी बातचीत के बीच में ही गेस्ट हाउस की मालकिन घबराकर एक गोरे आदमी को मेरे कमरे में ले आई। उसने पूछा, "क्या आप नेल्सन मंडेला हैं?"
“और कौन पूछ रहा है?” मैंने कहा।
उन्होंने अपना नाम और सुरक्षा पुलिस में जासूस सार्जेंट के रूप में अपना पद बताया।
“क्या मैं आपका वारंट देख सकता हूँ?” मैंने पूछा। यह स्पष्ट था कि सार्जेंट को मेरी इस गुस्ताखी पर गुस्सा आया, लेकिन उसने अनिच्छा से एक आधिकारिक दस्तावेज़ दिखाया। जी हाँ, मैं नेल्सन मंडेला हूँ, मैंने उसे बताया। उसने मुझे बताया कि कमांडिंग ऑफिसर मुझसे मिलना चाहते हैं। मैंने जवाब दिया कि अगर वे मुझसे मिलना चाहते हैं तो उन्हें पता है कि मैं कहाँ हूँ। फिर उसने मुझे पुलिस स्टेशन चलने का आदेश दिया। मैंने उससे पूछा कि क्या मुझे गिरफ्तार किया जा रहा है, और उसने जवाब दिया कि नहीं।
“तो फिर,” मैंने कहा, “मैं नहीं जा रहा।” मेरे इनकार से वह चौंक गया, लेकिन जानता था कि मेरा इनकार कानूनी तौर पर सही है। उसने मुझसे सवालों की झड़ी लगा दी: मैंने जोहान्सबर्ग कब छोड़ा था? मैं कहाँ-कहाँ गया था? मैंने किससे बात की थी? क्या मेरे पास ट्रांसकेई में प्रवेश करने का परमिट है और मैं वहाँ कितने दिन रुकूँगा? मैंने उसे बताया कि ट्रांसकेई मेरा घर है और मुझे वहाँ प्रवेश करने के लिए परमिट की आवश्यकता नहीं है। सार्जेंट गुस्से में कमरे से बाहर चला गया।

सरदारों को मेरा व्यवहार देखकर आश्चर्य हुआ और उन्होंने मेरी बदतमीज़ी के लिए मुझे फटकारा। मैंने समझाया कि मैंने उनके साथ वैसा ही व्यवहार किया था जैसा उन्होंने मेरे साथ किया था। सरदारों को मेरी बात पर यकीन नहीं हुआ और उन्हें साफ तौर पर लगा कि मैं एक जल्दबाज़ नौजवान हूँ जो मुसीबत मोल लेगा। ये वे लोग थे जिन्हें मैं बंटू सत्ता का विरोध करने के लिए मनाने की कोशिश कर रहा था, और यह स्पष्ट था कि मैं उन पर कोई अच्छा प्रभाव नहीं डाल पाया था। इस घटना ने मुझे याद दिलाया कि तेरह साल पहले जब मैं अपने वतन से निकला था, उससे बिल्कुल अलग होकर लौटा था।
ट्रांस्केई में पुलिस का व्यवहार अप्रशिक्षित था, और जिस क्षण मैंने गेस्ट हाउस छोड़ा, वे हर जगह मेरा पीछा करते रहे। किसी से भी बात करने के बाद, पुलिस उस व्यक्ति को रोककर कहती, "अगर तुमने मंडेला से बात की, तो हम आकर तुम्हें गिरफ्तार कर लेंगे।"
मेरी स्थानीय एएनसी नेता से संक्षिप्त मुलाकात हुई और संगठन के पास धन की कमी के बारे में जानकर मुझे निराशा हुई, लेकिन उस समय मैं संगठन के बारे में कम और अपने अगले पड़ाव के बारे में ज्यादा सोच रहा था: कुनु, वह गांव जहां मेरा पालन-पोषण हुआ था और जहां मेरी मां अभी भी रहती हैं।
मैंने अपनी माँ को जगाया, जो पहले तो मानो भूत देख रही थीं। लेकिन फिर वो बहुत खुश हुईं। मैं कुछ खाने का सामान लाया था—फल, मांस, चीनी, नमक और एक मुर्गी—और मेरी माँ ने चाय बनाने के लिए चूल्हा जलाया। हमने गले नहीं मिले, न ही चुंबन किए; यह हमारी परंपरा नहीं थी। हालाँकि मैं वापस आकर खुश था, लेकिन अपनी माँ को इतनी दयनीय स्थिति में अकेले रहते देखकर मुझे अपराधबोध हुआ। मैंने उन्हें जोहान्सबर्ग में मेरे साथ रहने के लिए मनाने की कोशिश की, लेकिन उन्होंने कसम खाई कि वो अपने प्यारे गाँव को नहीं छोड़ेंगी। मैंने सोचा—और यह पहली बार नहीं था—कि क्या दूसरों के कल्याण के लिए अपने परिवार के कल्याण की उपेक्षा करना कभी उचित हो सकता है? क्या अपनी बूढ़ी माँ की देखभाल करने से ज़्यादा महत्वपूर्ण कुछ हो सकता है? क्या राजनीति केवल अपनी ज़िम्मेदारियों से बचने का बहाना है, अपनी इच्छानुसार परिवार की ज़रूरतों को पूरा न कर पाने का बहाना है?
अपनी माँ के साथ एक घंटे बिताने के बाद, मैं मक़्हेकेज़वेनी में रात बिताने के लिए निकल पड़ा। जब मैं पहुँचा तो रात हो चुकी थी, और उत्साह में मैंने अपनी कार का हॉर्न बजाना शुरू कर दिया। मैंने यह नहीं सोचा था कि इस

शोर का क्या मतलब निकाला जा सकता है और लोग डर के मारे अपनी झोपड़ियों से बाहर निकल आए, यह सोचकर कि शायद पुलिस आ गई है। लेकिन जब मुझे पहचाना गया, तो कई ग्रामीणों ने आश्चर्य और खुशी से मेरा स्वागत किया।
लेकिन अपने पुराने बिस्तर पर बच्चे की तरह सोने के बजाय, मैं उस रात करवटें बदलता रहा और सोचता रहा कि क्या मैंने सही रास्ता चुना है या नहीं। लेकिन मुझे इस बात पर कोई संदेह नहीं था कि मैंने सही चुनाव किया है। मेरा यह कहने का तात्पर्य नहीं है कि स्वतंत्रता संग्राम अपने परिवार की देखभाल करने से कहीं अधिक नैतिक महत्व रखता है। ऐसा नहीं है; वे केवल भिन्न हैं। अगली सुबह कुनु लौटकर मैंने पूरा दिन लोगों के साथ पुरानी यादें ताजा करने और गाँव के आसपास के खेतों में घूमने में बिताया। मैं अपनी बहन मेबल से भी मिलने गई, जो मेरी बहनों में सबसे व्यावहारिक और सहज स्वभाव की थी और जिससे मुझे बहुत लगाव था। मेबल की शादी हो चुकी थी, लेकिन उसकी शादी की कहानी दिलचस्प है। मेरी बहन बलिवा, जो मेबल से बड़ी थी, की सगाई हो चुकी थी और लोबोला (शादी के बाद दिया जाने वाला दहेज) भी अदा हो चुका था। लेकिन शादी से दो हफ्ते पहले, बलिवा, जो एक उत्साही लड़की थी, भाग गई। हम मवेशियों को वापस नहीं ला सके, क्योंकि उन्हें पहले ही स्वीकार कर लिया गया था, इसलिए परिवार ने फैसला किया कि मेबल बलिवा की जगह लेगी, और उसने ऐसा ही किया। मैं उस दोपहर देर से म्कहेकेज़वेनी के लिए रवाना हुआ। मैं फिर से रात में पहुँचा और ज़ोर-ज़ोर से हूटिंग करके अपनी उपस्थिति दर्ज कराई, लेकिन इस बार लोग अपने घरों से इस उम्मीद में निकले कि उनके मुखिया जस्टिस लौट आए हैं। जस्टिस को सरकार ने मुखिया पद से हटा दिया था और वे उस समय डरबन में रह रहे थे। हालाँकि सरकार ने उनकी जगह किसी और को नियुक्त कर दिया था, लेकिन मुखिया जन्म से ही मुखिया होता है और अधिकार उसके वंश के कारण होता है। वे मुझे देखकर खुश थे, लेकिन जस्टिस का घर वापसी पर स्वागत करने से वे और भी अधिक प्रसन्न होते।
मेरी दूसरी माँ, नो-इंग्लैंड, जो रीजेंट की विधवा थीं, मेरे पहुँचने पर गहरी नींद में सो रही थीं, लेकिन जब वे नाइटड्रेस में उठीं और मुझे देखा, तो वे इतनी उत्साहित हो गईं कि उन्होंने मुझसे तुरंत पास के एक रिश्तेदार के घर जश्न मनाने के लिए ले जाने को कहा। वे मेरी कार में बैठ गईं और हम जंगली मैदानों से होते हुए उनके रिश्तेदार के दूरदराज के गोल घर की ओर

निकल पड़े। वहाँ हमने एक और परिवार को जगाया, और मैं आखिरकार भोर से ठीक पहले, थका हुआ और खुश होकर सो गया।
अगले दो सप्ताहों तक मैं कुनु और मक़्हेकेज़वेनी के बीच आता-जाता रहा, बारी-बारी से अपनी माँ और नो-इंग्लैंड के साथ रहा, दोस्तों और रिश्तेदारों से मिलता और उनका स्वागत करता रहा। मैंने वही खाना खाया जो मैं बचपन में खाता था, उन्हीं खेतों में चला, और दिन में उसी आकाश को निहारा, रात में उन्हीं तारों को देखा। एक स्वतंत्रता सेनानी के लिए अपनी जड़ों से जुड़ाव बनाए रखना महत्वपूर्ण होता है, और शहर की भागदौड़ भरी जिंदगी अतीत को मिटा देती है। इस यात्रा ने मुझे नई ऊर्जा दी और उस जगह के लिए मेरी भावनाओं को फिर से जगा दिया जहाँ मैं पला-बढ़ा था। मैं एक बार फिर अपनी माँ का बेटा था, उनके घर में; मैं एक बार फिर महान स्थान में शासक की देखरेख में था।
यह यात्रा मेरे द्वारा तय की गई दूरी को मापने का भी एक तरीका थी। मैंने देखा कि मेरे अपने लोग एक ही जगह पर स्थिर रहे, जबकि मैं आगे बढ़ गया और नई दुनिया देखी और नए विचार प्राप्त किए। अगर मुझे पहले यह एहसास नहीं हुआ था, तो अब मुझे पता चल गया कि फोर्ट हरे के बाद ट्रांसकेई न लौटना मेरा सही फैसला था। अगर मैं लौट जाता, तो मेरा राजनीतिक विकास रुक जाता।
जब बंटू प्राधिकरणों की स्थापना पर विचार कर रही विशेष समिति की बैठक स्थगित हुई, तो मैं और दलिवोंगा उमटाटा के अस्पताल में सबाता से मिलने गए। मेरी उम्मीद थी कि मैं सबाता से बंटू प्राधिकरणों के बारे में बात कर सकूँ, लेकिन उनकी खराब सेहत के कारण यह संभव नहीं हो पाया। मैं चाहता था कि सबाता और उनके भाई दलिवोंगा, सबाता के स्वस्थ होते ही इस मुद्दे पर बातचीत शुरू करें, और मैंने यह बात स्पष्ट कर दी थी। न्गुबेंगचुका के वंशजों के बीच एक बैठक आयोजित करने पर मुझे गर्व महसूस हो रहा था, और मैंने एक पल के लिए इस विडंबना पर विचार किया कि मैं अंततः सबाता के सलाहकार की उस भूमिका को निभा रहा था जिसके लिए मुझे इतने वर्षों पहले तैयार किया गया था।
उमटाटा से, मैं और दलिवोंगा क़माटा गए, जहाँ हमारी मुलाकात उनके छोटे भाई जॉर्ज से हुई, जो उस समय एक वकील थे। उनके दो प्रशिक्षु क्लर्क मुझे अच्छी तरह से जानते थे और मुझे उन दोनों को देखकर खुशी हुई: ए. पी. म्दा और त्सेपो लेटलाका। दोनों अभी भी संगठन के पक्के समर्थक थे, जिन्होंने अध्यापन छोड़कर वकील बनने का फैसला किया था। क़माटा में, हम सब प्रस्तावित बंटू प्राधिकरणों के मुद्दे पर चर्चा करने के लिए बैठ गए।

मेरा उद्देश्य दालिवोंगा को, जो ट्रांसकेई की राजनीति में एक अग्रणी भूमिका निभाने वाले थे, बंटू अधिकारियों की नियुक्ति का विरोध करने के लिए राजी करना था। मैं नहीं चाहता था कि हमारी मुलाकात टकराव या बहस का रूप ले; मैं न तो कोई दिखावा करना चाहता था और न ही एक-दूसरे पर दोषारोपण करना, बल्कि ऐसे लोगों के बीच एक गंभीर चर्चा चाहता था जिनके दिल में अपने लोगों और राष्ट्र का हित निहित था।
कई मायनों में, दलिवोंगा मुझे अब भी अपना कनिष्ठ मानते थे, चाहे वह थेम्बू समुदाय में मेरी पदवी हो या मेरा अपना राजनीतिक विकास। यद्यपि मैं पूर्व में उनका कनिष्ठ था, मेरा मानना था कि राजनीतिक विचारों में मैं अपने पूर्व गुरु से कहीं आगे बढ़ चुका था। जहाँ उनकी चिंताएँ केवल अपने कबीले तक सीमित थीं, वहीं मैं उन लोगों से जुड़ चुका था जो पूरे राष्ट्र के बारे में सोचते थे। मैं बड़ी-बड़ी राजनीतिक विचारधाराएँ लाकर चर्चा को जटिल नहीं बनाना चाहता था; मैं सामान्य ज्ञान और हमारे इतिहास के तथ्यों पर भरोसा करूँगा। चर्चा शुरू करने से पहले, दलिवोंगा ने म्दा, लेटलाका और अपने भाई जॉर्ज को भी शामिल होने के लिए आमंत्रित किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया और हम दोनों की बात सुनना पसंद किया। सम्मान के प्रतीक के रूप में म्दा ने कहा, "भतीजे और चाचा को बहस का संचालन करने दीजिए।" शिष्टाचार के अनुसार, मुझे पहले अपनी बात रखनी थी और उन्हें बीच में टोकना नहीं था; फिर वे उत्तर देते और मैं सुनता रहता।
मैंने सबसे पहले कहा कि बंटू प्राधिकरण अव्यावहारिक था, क्योंकि अधिक से अधिक अफ्रीकी ग्रामीण क्षेत्रों से शहरों की ओर पलायन कर रहे थे। सरकार की नीति अफ्रीकियों को जातीय बस्तियों में बसाने की थी क्योंकि वे अफ्रीकी एकता की शक्ति से भयभीत थे। मैंने कहा कि जनता लोकतंत्र चाहती थी, और राजनीतिक नेतृत्व योग्यता पर आधारित हो, न कि जन्म के आधार पर। बंटू प्राधिकरण लोकतंत्र से पीछे हटना था।
दालिवोंगा ने जवाब दिया कि वे अपने शाही परिवार की प्रतिष्ठा को बहाल करने की कोशिश कर रहे हैं, जिसे अंग्रेजों ने कुचल दिया था। उन्होंने जनजातीय व्यवस्था और पारंपरिक नेतृत्व के महत्व और जीवंतता पर ज़ोर दिया और ऐसी व्यवस्था को अस्वीकार नहीं करना चाहते थे जो इन मूल्यों को समाहित करती हो। वे भी एक स्वतंत्र दक्षिण अफ्रीका चाहते थे, लेकिन उनका मानना था कि सरकार की अलग विकास नीति के माध्यम से इस लक्ष्य को अधिक तेज़ी से और

लिफ्ट देने की पेशकश की। वह लगभग मेरी ही उम्र का था, कद में छोटा और थोड़ा अस्त-व्यस्त सा था; उसने काफी समय से नहाया नहीं था। उसने बताया कि उमटाटा के दूसरी तरफ उसकी गाड़ी खराब हो गई थी और वह कई दिनों से पैदल चलकर पोर्ट एलिजाबेथ की ओर आ रहा था। मुझे उसकी कहानी में कई विसंगतियां नज़र आईं, इसलिए मैंने उससे उसकी गाड़ी का मॉडल पूछा। उसने जवाब दिया, ब्यूक। और रजिस्ट्रेशन नंबर? मैंने पूछा। उसने एक नंबर बताया। कुछ मिनट बाद, मैंने पूछा, "आपने रजिस्ट्रेशन नंबर क्या बताया था?" उसने थोड़ा अलग नंबर बताया। मुझे शक हुआ कि वह पुलिसवाला है, इसलिए मैंने बहुत कम बोलने का फैसला किया। मेरे साथी ने पोर्ट एलिजाबेथ तक पूरे रास्ते बात करते हुए मेरी झिझक को महसूस नहीं किया। उसने कई रोचक बातें बताईं और क्षेत्र के इतिहास की उसे अच्छी जानकारी थी। उसने मुझसे कभी नहीं पूछा कि मैं कौन हूँ और मैंने भी उसे नहीं बताया। लेकिन वह मनोरंजक था और मुझे उसकी बातचीत उपयोगी और दिलचस्प लगी।
मैंने पूर्वी लंदन में रुककर कुछ एएनसी कार्यकर्ताओं से बात की। वहाँ से निकलने से पहले मैंने बस्ती के कुछ अन्य लोगों से भी बातचीत की, जिनमें से एक मुझे गुप्त पुलिसकर्मी लगा। मेरे साथी को मेरी पहचान पता चल गई थी, और कार में वापस आने के कुछ मिनट बाद ही उसने मुझसे कहा, "मंडेला, मुझे शक था कि आखिर में खड़ा वह आदमी पुलिसकर्मी था।" इससे मेरा शक और बढ़ गया, और मैंने अपने साथी से कहा, "देखो, मुझे कैसे पता चलेगा कि तुम खुद पुलिसकर्मी नहीं हो? तुम्हें मुझे बताना होगा कि तुम कौन हो - नहीं तो मैं तुम्हें वापस सड़क पर छोड़ दूँगा।"
उसने विरोध करते हुए कहा, “नहीं, मैं अपना परिचय ठीक से दूंगा।” उसने कबूल किया कि वह तस्कर था और पोंडोलैंड तट से गांजा (मारिजुआना) ले जा रहा था जब वह पुलिस नाके पर फंस गया। नाकाबंदी देखकर वह कार से कूद गया और भागने की कोशिश करने लगा। पुलिस ने गोली चलाई, जिससे उसके पैर में चोट लगी। इसी वजह से वह लंगड़ाकर चलता था और उसके पास आने-जाने का कोई साधन नहीं था। उसने मुझे हाथ हिलाकर रोका क्योंकि उसे लगा कि पुलिस उसकी तलाश कर रही है। मैंने उनसे पूछा कि उन्होंने इतना खतरनाक पेशा क्यों चुना। उन्होंने बताया कि वे पहले शिक्षक बनना चाहते थे, लेकिन उनके माता-पिता इतने गरीब थे कि उन्हें कॉलेज नहीं भेज सके। स्कूल के बाद उन्होंने एक कारखाने में काम किया, लेकिन मजदूरी इतनी कम थी कि वे अकेले गुजारा नहीं कर सकते थे।

उन्होंने गांजा की तस्करी करके अपनी आय बढ़ाने का काम शुरू किया और जल्द ही उन्हें यह इतना लाभदायक लगा कि उन्होंने कारखाना पूरी तरह छोड़ दिया। उन्होंने कहा कि दुनिया के किसी भी अन्य देश में उन्हें अपनी प्रतिभा के लिए अवसर मिल जाता। “मैंने ऐसे श्वेत पुरुषों को देखा जो मुझसे काबिल और बुद्धिमान थे, फिर भी वे मुझसे पचास गुना अधिक कमा रहे थे।” कुछ देर चुप रहने के बाद, उन्होंने गंभीर स्वर में कहा, “मैं एएनसी का सदस्य भी हूँ।” उन्होंने बताया कि उन्होंने 1952 के अवज्ञा अभियान में भाग लिया था और पोर्ट एलिजाबेथ में विभिन्न स्थानीय समितियों में काम किया था। मैंने उनसे कई लोगों के बारे में पूछा, जिनसे वे परिचित प्रतीत होते थे, और बाद में पोर्ट एलिजाबेथ में मैंने पुष्टि की कि वे सच कह रहे थे। वास्तव में, वे अवज्ञा अभियान के दौरान जेल जाने वालों में सबसे भरोसेमंद लोगों में से एक थे। मुक्ति संघर्ष के द्वार उन सभी के लिए खुले हैं जो उनमें से होकर गुजरना चाहते हैं।
एक वकील के तौर पर, जिसका आपराधिक मामलों का काफी बड़ा कार्यक्षेत्र था, मैं ऐसी कहानियों से अच्छी तरह वाकिफ था। मैंने बार-बार देखा कि मेरे साथी जैसे प्रतिभाशाली और बुद्धिमान लोग भी पेट पालने के लिए अपराध का सहारा लेते थे। हालांकि मुझे लगता है कि कुछ लोग आनुवंशिक कारणों या दुर्व्यवहारपूर्ण परवरिश के कारण अपराध की ओर प्रवृत्त होते हैं, लेकिन मुझे पूरा विश्वास है कि रंगभेद ने कई कानून का पालन करने वाले नागरिकों को अपराधी बना दिया। यह स्वाभाविक है कि एक अनैतिक और अन्यायपूर्ण कानूनी व्यवस्था अपने कानूनों और नियमों के प्रति अवमानना को जन्म देगी।
हम सूर्यास्त के समय पोर्ट एलिजाबेथ पहुँचे, और ज़ेड. के. मैथ्यूज के बेटे जो मैथ्यूज ने हमारे रहने का इंतज़ाम किया। अगली सुबह मेरी मुलाकात रेमंड म्हालाबा, फ्रांसिस बार्ड और गोवन म्बेकी से हुई, जिनसे मैं पहली बार मिल रहा था। मैं उनके काम से परिचित था, क्योंकि छात्र जीवन में मैंने उनकी पुस्तिका "द ट्रांसकेई इन द मेकिंग" पढ़ी थी। वे ट्रांसकेई में एक सहकारी दुकान चला रहे थे, जिसे उन्होंने जल्द ही छोड़कर साप्ताहिक पत्रिका "न्यू एज" के संपादक बनने का फैसला किया। गोवन गंभीर, विचारशील और मृदुभाषी थे, विद्वत्ता और राजनीतिक सक्रियता दोनों क्षेत्रों में समान रूप से सहज थे। वे जनसभा की योजना बनाने में गहराई से शामिल थे और संगठन में नेतृत्व के उच्चतम स्तर तक पहुँचने वाले थे।

मैं सुबह देर से केप टाउन के लिए रवाना हुआ, मेरे साथ सिर्फ मेरा रेडियो था। मैंने इससे पहले कभी पोर्ट एलिजाबेथ और केप टाउन के बीच की सड़कों पर गाड़ी नहीं चलाई थी, और मैं कई मील तक फैले मनमोहक दृश्यों का आनंद लेने के लिए उत्सुक था। गर्मी बहुत थी, और सड़क के दोनों ओर घनी वनस्पति थी। शहर से निकलते ही मेरी गाड़ी एक बड़े सांप के ऊपर से गुजरी जो सड़क पार कर रहा था। मैं अंधविश्वासी नहीं हूँ और अपशकुनों में विश्वास नहीं करता, लेकिन सांप की मौत मुझे अच्छी नहीं लगी। मुझे किसी भी जीवित प्राणी को मारना पसंद नहीं है, यहाँ तक कि उन जीवों को भी नहीं जिनसे कुछ लोगों को डर लगता है। ह्यूमन्सडॉर्प से आगे बढ़ते ही जंगल घने हो गए और मैंने पहली बार जंगली हाथी और बबून देखे। एक बड़ा बबून मेरे सामने सड़क पार कर रहा था, और मैंने गाड़ी रोक दी। वह वहीं खड़ा रहा और मुझे ऐसे घूरता रहा मानो वह कोई स्पेशल ब्रांच का जासूस हो। यह विडंबना ही थी कि मैं, एक अफ्रीकी, कहानियों और किंवदंतियों में वर्णित अफ्रीका को पहली बार देख रहा था। मैंने सोचा, कितनी खूबसूरत ज़मीन है, और यह सब पहुँच से बाहर है, गोरों की मिल्कियत है और एक अश्वेत व्यक्ति के लिए अछूत है। मैं इतनी सुंदरता में रहने का विकल्प उसी तरह नहीं चुन सकता था जैसे संसद के लिए चुनाव लड़ना। राजद्रोह के विचार एक स्वतंत्रता सेनानी का पीछा करते हैं, चाहे वह कहीं भी जाए। पोर्ट एलिजाबेथ से सौ मील से अधिक पश्चिम में स्थित नाइस्ना शहर में, मैं आसपास के वातावरण का जायजा लेने के लिए रुका। शहर के ऊपर की सड़क से दूर-दूर तक फैला मनोरम दृश्य दिखाई देता है। हर दिशा में मुझे घने जंगल दिखाई दिए और मेरा ध्यान हरियाली पर नहीं, बल्कि इस तथ्य पर केंद्रित था कि यहाँ कई ऐसे स्थान हैं जहाँ एक गुरिल्ला सेना बिना किसी की नज़र में आए रह सकती है और प्रशिक्षण ले सकती है।
मैं आधी रात को केप टाउन पहुँचा और वहाँ मेरा प्रवास दो सप्ताह का रहा। मैं मेथोडिस्ट चर्च के एक प्रमुख नेता रेवरेंड वाल्टर टेका के घर पर ठहरा, लेकिन मैंने अपने अधिकांश दिन जॉनसन न्ग्वेवेला और ग्रीनवुड न्गोत्याना के साथ बिताए। न्ग्वेवेला एएनसी के केप पश्चिमी क्षेत्र के अध्यक्ष थे और न्गोत्याना इसकी कार्यकारी समिति के सदस्य थे। दोनों कम्युनिस्ट होने के साथ-साथ वेस्लेयन चर्च के प्रमुख सदस्य भी थे। मैं प्रतिदिन वॉर्सेस्टर, पार्ल, स्टेलनबोश, साइमनस्टाउन और हरमनस जैसे स्थानों पर एएनसी अधिकारियों से मिलने जाता था। मैंने अपने प्रवास के प्रत्येक दिन काम

करने की योजना बनाई थी और जब मैंने पूछा कि रविवार के लिए क्या व्यवस्था की गई है - जो ट्रांसवाल में मेरे लिए एक कार्य दिवस होता है - तो उन्होंने मुझे बताया कि रविवार का दिन चर्च जाने के लिए आरक्षित है। मैंने विरोध किया, लेकिन कोई लाभ नहीं हुआ। कम्युनिज़्म और ईसाई धर्म, कम से कम अफ्रीका में, परस्पर विरोधी नहीं थे।
एक दिन जब मैं शहर में घूम रहा था, तो मैंने देखा कि एक श्वेत महिला नाले में मछली की हड्डियाँ कुतर रही थी। वह गरीब और बेघर लग रही थी, लेकिन वह जवान और देखने में सुंदर थी। मैं जानता था कि गरीब श्वेत लोग भी होते हैं, जो अफ्रीकियों जितने ही गरीब होते हैं, लेकिन ऐसे लोग कम ही दिखते थे। मैं सड़कों पर काले भिखारियों को देखने का आदी था, इसलिए एक श्वेत भिखारी को देखकर मैं चौंक गया। हालाँकि मैं आम तौर पर अफ्रीकी भिखारियों को कुछ नहीं देता था, लेकिन उस महिला को पैसे देने की तीव्र इच्छा हुई। उसी क्षण मुझे रंगभेद के धोखे का एहसास हुआ, क्योंकि अफ्रीकियों की रोज़मर्रा की परेशानियाँ वहाँ आम बात मानी जाती हैं, जबकि मेरा दिल तुरंत उस बदहाल श्वेत महिला के लिए पिघल गया। दक्षिण अफ्रीका में, गरीब और काला होना सामान्य बात थी, जबकि गरीब और श्वेत होना एक त्रासदी थी।

* * *

केप टाउन छोड़ने की तैयारी करते हुए, मैं कुछ पुराने दोस्तों से मिलने और उनकी संपादकीय नीति पर चर्चा करने के लिए न्यू एज के दफ्तर गया। न्यू एज, जो पहले प्रतिबंधित वामपंथी प्रकाशनों का उत्तराधिकारी था, एएनसी का मित्र था। 27 सितंबर की सुबह का समय था, और जैसे ही मैं सीढ़ियाँ चढ़ रहा था, मुझे दफ्तर के अंदर से गुस्से भरी आवाज़ें और फर्नीचर के खिसकने की आवाज़ सुनाई दी। मैंने अखबार के प्रबंधक और उसके मार्गदर्शक फ्रेड कार्नेसन की आवाज़ पहचान ली। मैंने दफ्तरों की तलाशी ले रहे सुरक्षा पुलिसकर्मियों की कर्कश आवाज़ें भी सुनीं। मैं चुपचाप निकल गया, और बाद में पता चला कि यह कोई अकेली घटना नहीं थी, बल्कि दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में की गई सबसे बड़ी राष्ट्रव्यापी छापेमारी का हिस्सा थी। राजद्रोह, राजद्रोह या साम्यवाद दमन अधिनियम के उल्लंघन के सबूत माने जाने वाली किसी भी चीज़ को ज़ब्त करने के वारंट के साथ, पुलिस ने देश भर में पाँच सौ

से अधिक लोगों के घरों और दफ्तरों की तलाशी ली। जोहान्सबर्ग स्थित मेरे कार्यालय की तलाशी ली गई, साथ ही डॉ. मोरोका, फादर हडलस्टन और प्रोफेसर मैथ्यूज के घरों की भी तलाशी ली गई।
उस छापे ने केप टाउन में मेरे आखिरी दिन पर एक काला साया डाल दिया, क्योंकि यह राज्य की नई और भी दमनकारी रणनीति की पहली चाल का संकेत था। कम से कम, प्रतिबंधों का एक नया दौर शुरू होना था, और मुझे यकीन था कि मेरा नाम भी उनमें शामिल होगा। उस शाम, रेवरेंड टेका और उनकी पत्नी ने मुझे विदाई देने के लिए कई लोगों को अपने घर बुलाया, और रेवरेंड के नेतृत्व में, हमने उन लोगों की भलाई के लिए प्रार्थना की जिनके घरों पर छापे मारे गए थे। मैं सुबह 3 बजे अपने पसंदीदा प्रस्थान समय पर घर से निकला, और आधे घंटे के भीतर मैं किम्बरली के लिए सड़क पर था, वह उबड़-खाबड़ खनन शहर जहाँ पिछली शताब्दी में दक्षिण अफ्रीकी हीरे का कारोबार शुरू हुआ था।
मुझे डॉ. आर्थर लेटेले के घर पर एक रात रुकना था। बाद में एएनसी के कोषाध्यक्ष बने आर्थर एक बेहद ईमानदार चिकित्सक थे। मुझे सर्दी-जुकाम था, और जब उन्होंने मेरे आने पर मेरा स्वागत किया, तो उन्होंने मुझे बिस्तर पर ही आराम करने को कहा। वे एक बहादुर और समर्पित व्यक्ति थे, और उन्होंने अवज्ञा अभियान के दौरान विद्रोहियों के एक छोटे समूह का नेतृत्व करते हुए उन्हें जेल भिजवाया था। एक ऐसे शहर में, जहाँ अश्वेतों द्वारा राजनीतिक गतिविधियाँ दुर्लभ थीं, एक डॉक्टर के लिए यह एक जोखिम भरा कदम था। जोहान्सबर्ग में, ऐसे ही खतरनाक कामों में शामिल सैकड़ों, बल्कि हजारों लोगों का समर्थन मिलता है, लेकिन किम्बरली जैसी रूढ़िवादी जगह पर, जहाँ उदारवादी प्रेस या पुलिस पर निगरानी रखने के लिए न्यायपालिका नहीं है, ऐसे काम के लिए सच्चे साहस की आवश्यकता होती है। किम्बरली में ही अवज्ञा अभियान के दौरान एएनसी के एक प्रमुख सदस्य को स्थानीय मजिस्ट्रेट द्वारा कोड़े मारने की सजा सुनाई गई थी।
सर्दी लगने के बावजूद, आर्थर ने मुझे अगली शाम अपने घर पर एएनसी की बैठक में भाषण देने की अनुमति दी। मैं अगली सुबह तीन बजे निकलने की तैयारी कर रहा था, लेकिन आर्थर और उनकी पत्नी ने नाश्ते के लिए रुकने पर ज़ोर दिया, और मैं रुक गया। जोहान्सबर्ग वापस आते समय मैंने समय का सदुपयोग किया और रात के खाने से ठीक पहले घर पहुँच गया, जहाँ मेरे बच्चों ने उत्साह से मेरा स्वागत किया, क्योंकि वे अच्छी तरह जानते थे कि मैं उपहार लेकर आया हूँ।

मैंने केप टाउन से खरीदे गए उपहार एक-एक करके उन्हें दिए और यात्रा के बारे में उनके सवालों के धैर्यपूर्वक जवाब दिए। हालाँकि यह एक सच्ची छुट्टी नहीं थी, लेकिन इसका असर वैसा ही हुआ: मैं तरोताज़ा महसूस कर रहा था और एक बार फिर संघर्ष करने के लिए तैयार था।

22

वापस लौटते ही मैंने एएनसी की कार्यकारी समिति को अपनी यात्रा की रिपोर्ट दी। उनकी मुख्य चिंता यह थी कि क्या कांग्रेस गठबंधन सरकार की योजनाओं को रोकने के लिए पर्याप्त मजबूत है या नहीं। मैंने उन्हें कोई अच्छी खबर नहीं दी। मैंने कहा कि ट्रांसकेई एएनसी का सुव्यवस्थित क्षेत्र नहीं है और सुरक्षा पुलिस की ताकत एएनसी के बचे-खुचे प्रभाव को भी जल्द ही निष्क्रिय कर देगी।
मैंने एक ऐसा विकल्प रखा जो मुझे पता था कि अलोकप्रिय होगा। एएनसी को जनता से जुड़े रहने के साधन के रूप में नई बंटू प्राधिकरण संरचनाओं में भाग क्यों नहीं लेना चाहिए? समय के साथ, ऐसी भागीदारी हमारे अपने विचारों और नीतियों के लिए एक मंच बन जाएगी।
रंगभेद की व्यवस्था में किसी भी तरह से भाग लेने के किसी भी सुझाव का तुरंत ही कड़ा विरोध होता था। अपने शुरुआती दिनों में, मैं भी इसका कड़ा विरोध करता। लेकिन देश के प्रति मेरी समझ यह थी कि संघर्ष में शामिल होने के लिए बलिदान देने को तैयार लोगों की संख्या अपेक्षाकृत कम थी। हमें जनता से उनके अपने तरीके से मिलना चाहिए, भले ही इसका मतलब सहयोग का दिखावा करना ही क्यों न हो। मेरा विचार था कि हमारा आंदोलन एक विशाल तंबू की तरह होना चाहिए जिसमें अधिक से अधिक लोग शामिल हों।

* * *

उस समय, मेरी रिपोर्ट को नज़रअंदाज़ कर दिया गया क्योंकि एक अन्य संबंधित रिपोर्ट का प्रकाशन हुआ था जिसके दूरगामी परिणाम थे। बंटू क्षेत्रों के सामाजिक-आर्थिक विकास के लिए गठित टॉमलिंसन आयोग की रिपोर्ट के प्रकाशन ने देशव्यापी बहस छेड़ दी थी। सरकार द्वारा गठित इस आयोग ने तथाकथित बंटू क्षेत्रों या बंटुस्तानों के विकास के लिए एक योजना प्रस्तावित की थी। वास्तव में, इसका परिणाम "अलग विकास" या व्यापक रंगभेद की रूपरेखा के रूप में सामने आया।

बंटुस्तान प्रणाली की कल्पना स्वदेशी मामलों के मंत्री डॉ. एच. एफ. वेरवोर्ड ने दक्षिण अफ्रीका की नस्लीय नीतियों की अंतरराष्ट्रीय आलोचना को दबाने और साथ ही रंगभेद को संस्थागत रूप देने के उद्देश्य से की थी। बंटुस्तान, जिन्हें आरक्षित क्षेत्र भी कहा जाता था, सभी अफ्रीकी नागरिकों के लिए अलग-अलग जातीय क्षेत्र या मातृभूमि थे। वेरवोर्ड ने कहा कि अफ्रीकियों को "दोनों पैरों से आरक्षित क्षेत्रों में खड़ा होना चाहिए" जहाँ उन्हें "अपनी इच्छानुसार विकास करना था"। इसका उद्देश्य यथास्थिति बनाए रखना था, जहाँ 30 लाख श्वेतों के पास 87 प्रतिशत भूमि थी, और 80 लाख अफ्रीकियों को शेष 13 प्रतिशत भूमि तक सीमित कर दिया गया था। रिपोर्ट का मुख्य विषय नस्लों के एकीकरण के विचार को खारिज करते हुए, अश्वेत और श्वेत लोगों के अलग-अलग विकास की नीति का समर्थन करना था। इस उद्देश्य से, रिपोर्ट ने अफ्रीकी क्षेत्रों के औद्योगीकरण की सिफारिश की, और कहा कि विकास का कोई भी कार्यक्रम जो अफ्रीकियों को उनके अपने क्षेत्रों में अवसर प्रदान करने का लक्ष्य नहीं रखता, वह असफल होने के लिए अभिशप्त है। आयोग ने बताया कि अफ्रीकी क्षेत्रों की वर्तमान भौगोलिक संरचना बहुत खंडित है, और इसके बजाय अफ्रीकी क्षेत्रों को सात प्रमुख जातीय समूहों के "ऐतिहासिक-तार्किक" मातृभूमियों में समेकित करने की सिफारिश की।
लेकिन आयोग द्वारा प्रस्तावित अलग-अलग, आत्मनिर्भर बंटुस्तानों का निर्माण हास्यास्पद था। प्रस्तावित मातृभूमि प्रणाली का मुख्य आकर्षण माने जाने वाले ट्रांसकेई को भौगोलिक रूप से तीन अलग-अलग खंडों में विभाजित कर दिया जाएगा। स्वाज़ी बंटुस्तान, लेबोवा और वेंडा में से प्रत्येक में तीन-तीन खंड थे; गाज़ांकुले में चार; सिस्केई में सत्रह; बोफुथात्सवाना में उन्नीस; और क्वाज़ुलु में उनतीस। राष्ट्रवादी लोगों के जीवन का एक क्रूर पहेलीनुमा खेल बना रहे थे।
होमलैंड प्रणाली बनाने के पीछे सरकार का इरादा ट्रांसकेई और अन्य अफ्रीकी क्षेत्रों को श्वेत उद्योगों के लिए सस्ते श्रम के भंडार के रूप में बनाए रखना था। साथ ही, सरकार का गुप्त लक्ष्य अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस और मुक्ति संघर्ष के प्रभाव को कम करने के लिए एक अफ्रीकी मध्यम वर्ग का निर्माण करना था।

टॉमलिंसन आयोग की रिपोर्ट में कुछ उदारवादी सिफारिशों के बावजूद, एएनसी ने इसकी कड़ी निंदा की। जैसा कि मैंने दलिवोंगा को बताया, अलग विकास एक ऐसी समस्या का भ्रामक समाधान था जिसे श्वेत लोग नियंत्रित करना नहीं जानते थे। अंततः, सरकार ने रिपोर्ट को मंजूरी दे दी, लेकिन इसकी कई सिफारिशों को अति प्रगतिशील बताकर खारिज कर दिया।

बढ़ते अंधकार और सरकार की नीतियों के प्रति मेरी निराशा के बावजूद, मैं भविष्य के बारे में सोच रहा था। फरवरी 1956 में, मैं उमटाटा में एक भूखंड खरीदने के लिए ट्रांसकेई लौट आया। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि एक व्यक्ति को अपने जन्मस्थान के पास घर होना चाहिए, जहाँ उसे वह शांति मिल सके जो उसे कहीं और नहीं मिल सकती।
वॉल्टर के साथ, मैं ट्रांसकेई की यात्रा पर गया। वॉल्टर और मैं उमटाटा और डरबन, जहाँ हम सबसे पहले गए थे, दोनों जगहों पर एएनसी के विभिन्न लोगों से मिले। एक बार फिर, स्पेशल ब्रांच पुलिस ने हमारा अनाड़ीपन से पीछा किया। डरबन में, हमने नेटाल इंडियन कांग्रेस में अपने सहयोगियों से मुलाकात की ताकि उस क्षेत्र में सक्रियता को बढ़ावा दिया जा सके।
उमटाटा में, वाल्टर की मदद से, मैंने सी. के. साकवे को कस्बे में उनकी ज़मीन के एक टुकड़े के लिए अग्रिम भुगतान किया। साकवे बुंगा समुदाय के सदस्य थे और मूलनिवासी प्रतिनिधि परिषद में भी काम कर चुके थे। वहाँ रहते हुए उन्होंने हमें पिछले शनिवार को बुम्भाने, सबाता के महान स्थान पर हुई एक घटना के बारे में बताया। यह घटना सरकारी अधिकारियों और सरदारों की बंटुस्तानों की शुरुआत के बारे में हुई बैठक में घटी थी। कई सरदारों ने सरकार की इस नीति का विरोध किया और मजिस्ट्रेट पर मौखिक हमला किया। बैठक गुस्से में समाप्त हो गई; इससे हमें बंटू प्राधिकरण अधिनियम के प्रति जमीनी स्तर पर हो रहे विरोधों का कुछ अंदाजा हुआ।
मार्च 1956 में, कुछ महीनों की अपेक्षाकृत स्वतंत्रता के बाद, मुझे तीसरी बार प्रतिबंध का सामना करना पड़ा, जिसने मुझे पाँच वर्षों के लिए जोहान्सबर्ग तक सीमित कर दिया और उसी अवधि के लिए मुझे बैठकों में भाग लेने से भी रोक दिया। अगले साठ महीनों तक मैं उसी जिले में कैद रहा, उन्हीं

सड़कों को देखता रहा, क्षितिज पर उन्हीं खदानों के ढेर देखता रहा, उसी आसमान को देखता रहा। मुझे जोहान्सबर्ग के बाहर क्या हो रहा है, इसकी जानकारी के लिए अखबारों और अन्य लोगों पर निर्भर रहना पड़ा, जो एक और ऐसी स्थिति थी जिसे मैं पसंद नहीं करता था।
लेकिन इस बार प्रतिबंधों के प्रति मेरा रवैया पूरी तरह बदल गया था। जब मुझ पर पहली बार प्रतिबंध लगाया गया था, तब मैंने अपने उत्पीड़कों के नियमों और विनियमों का पालन किया था। अब मेरे मन में इन पाबंदियों के प्रति तिरस्कार का भाव पैदा हो गया था। मैं अपने संघर्ष में अपनी भागीदारी और अपनी राजनीतिक गतिविधियों के दायरे को उस शत्रु के हाथों तय नहीं होने देने वाला था, जिसके विरुद्ध मैं लड़ रहा था। अपने विरोधियों द्वारा अपनी गतिविधियों को सीमित किए जाने देना एक प्रकार की हार थी, और मैंने ठान लिया था कि मैं स्वयं अपना जेलर नहीं बनूंगा।
मैं जल्द ही जोहान्सबर्ग में एक कड़वे राजनीतिक विवाद में मध्यस्थता करने में जुट गया। इसमें दो पक्ष आमने-सामने थे और दोनों ही मेरा समर्थन चाहते थे। इस संगठन में दोनों पक्षों की अपनी-अपनी जायज़ शिकायतें थीं और दोनों ही एक-दूसरे के कट्टर विरोधी थे। यह विवाद एक भयंकर गृहयुद्ध में बदलने की कगार पर था और मैंने इसे रोकने की पूरी कोशिश की। मैं यहाँ डोनाल्डसन ऑरलैंडो कम्युनिटी सेंटर स्थित बॉक्सिंग और वेटलिफ्टिंग क्लब में चल रहे संघर्ष की बात कर रहा हूँ, जहाँ मैं लगभग हर शाम अभ्यास करता था।
मैं 1950 में क्लब में शामिल हुआ था, और लगभग हर खाली रात को कम्युनिटी सेंटर में अभ्यास करता था। पिछले कुछ वर्षों से मैं अपने बेटे थेम्बी को भी साथ ले जाता था, और 1956 तक, जब वह दस साल का था, वह दुबला-पतला होने के बावजूद एक उत्साही पेपरवेट बॉक्सर बन चुका था। क्लब का प्रबंधन जोहान्स (स्किपर एडोनिस) मोलोत्सी करते थे, और इसके सदस्यों में पेशेवर और शौकिया मुक्केबाजों के साथ-साथ कई समर्पित भारोत्तोलक भी शामिल थे। हमारे स्टार बॉक्सर, जेरी (उयिंजा) मोलोई, बाद में ट्रांसवाल लाइटवेट चैंपियन और राष्ट्रीय खिताब के लिए नंबर एक दावेदार बने।
जिम में ज़रूरी साज़-सामान की कमी थी। हमारे पास रिंग खरीदने के पैसे नहीं थे और हम सीमेंट के फर्श पर ट्रेनिंग करते थे, जो मुक्केबाज़ के गिरने पर बेहद खतरनाक होता था। हमारे पास सिर्फ़ एक पंचिंग बैग और कुछ मुक्केबाज़ी के दस्ताने थे। हमारे पास न तो मेडिसिन बॉल थी, न स्पीड बॉल, न ही ठीक से

नेतृत्व, पहल और आत्मविश्वास विकसित करने के लिए हम बारी-बारी से प्रशिक्षण सत्रों का नेतृत्व करते थे। थेम्बी को इन सत्रों का नेतृत्व करना विशेष रूप से पसंद था। जिन रातों को मेरा बेटा ज़िम्मेदारी संभालता था, उन रातों में मेरे लिए थोड़ी मुश्किल हो जाती थी, क्योंकि वह आलोचना के लिए मुझे ही चुनता था। जब भी मैं आलसी हो जाता, वह मुझे तुरंत डांटता था। जिम में सभी मुझे "चीफ" कहकर बुलाते थे, यह एक सम्मानजनक उपाधि थी जिससे वह परहेज करता था, वह मुझे "मिस्टर मंडेला" कहता था, और कभी-कभी, जब उसे अपने पिता के लिए सहानुभूति होती थी, तो "माई ब्रा" कहता था, जो बस्ती की बोलचाल की भाषा में "मेरा भाई" होता है। जब वह मुझे सुस्त देखता, तो वह सख्त स्वर में कहता, "मिस्टर मंडेला, आप आज शाम हमारा समय बर्बाद कर रहे हैं। अगर आप साथ नहीं चल सकते, तो घर जाकर बूढ़ी औरतों के साथ क्यों नहीं बैठ जाते?" सभी को ये ताने बहुत पसंद आते थे, और मुझे अपने बेटे को इतना खुश और आत्मविश्वासी देखकर खुशी होती थी।
उस साल स्किपर मोलोत्सी और जेरी मोलोई के बीच झगड़े के कारण क्लब का सौहार्द टूट गया। जेरी और अन्य मुक्केबाजों को लगा कि स्किपर क्लब पर पर्याप्त ध्यान नहीं दे रहे हैं। स्किपर एक कुशल कोच थे, लेकिन अपना ज्ञान बांटने के लिए वे शायद ही कभी मौजूद रहते थे। वे मुक्केबाजी के इतिहास के ज्ञाता थे और 1915 में हवाना में हुए जैक जॉनसन के प्रसिद्ध मुकाबले के छब्बीस राउंड का ब्योरा दे सकते थे, जब विश्व के पहले अश्वेत हैवीवेट चैंपियन ने अपना खिताब गंवा दिया था। लेकिन स्किपर अक्सर मैच या टूर्नामेंट से ठीक पहले ही आते थे, अपनी मामूली फीस लेने के लिए। मैं खुद जेरी के दृष्टिकोण से सहमत था, लेकिन सद्भाव बनाए रखने के लिए मैंने झगड़े को सुलझाने की पूरी कोशिश की। अंत में, मेरे बेटे ने भी स्किपर के बारे में जेरी की आलोचना से सहमति जताई और मैं इस दरार को रोकने के लिए कुछ नहीं कर सका।
जेरी के नेतृत्व में मुक्केबाजों ने क्लब से अलग होकर अपना खुद का क्लब बनाने की धमकी दी। मैंने सभी सदस्यों की एक बैठक बुलाई और यह एक जोरदार सत्र था - जो सेसोथो, ज़ुलू, खोसा और अंग्रेजी में आयोजित किया गया। स्किपर ने विद्रोही मुक्केबाजों पर हमला करते हुए शेक्सपियर का हवाला भी दिया और जेरी पर सीज़र के साथ ब्रूटस के विश्वासघात की तरह धोखा देने का आरोप लगाया। मेरे बेटे ने पूछा, "सीज़र और ब्रूटस कौन हैं?" इससे पहले कि मैं

जवाब दे पाता, किसी ने कहा, "क्या वे मर नहीं गए?" जिस पर स्किपर ने जवाब दिया, "हाँ, लेकिन विश्वासघात की सच्चाई अभी भी ज़िंदा है!"
बैठक में कोई हल नहीं निकला और मुक्केबाज दूसरे स्थान के लिए रवाना हो गए जबकि भारोत्तोलक सामुदायिक केंद्र में ही रहे। मैं मुक्केबाजों के साथ शामिल हो गया और अलगाव के पहले कुछ हफ्तों तक हमने एक स्वतंत्रता सेनानी के लिए असुविधाजनक जगह, पुलिस व्यायामशाला में प्रशिक्षण लिया। इसके बाद, एंग्लिकन चर्च ने हमें ऑरलैंडो ईस्ट में उचित किराए पर परिसर दिया और हमने साइमन (म्शेंगु) त्शाबलाला के मार्गदर्शन में प्रशिक्षण लिया, जो बाद में एएनसी के प्रमुख भूमिगत स्वतंत्रता सेनानियों में से एक बने।
हमारी नई सुविधाएं पुरानी सुविधाओं से बेहतर नहीं थीं, और क्लब का कभी पुनर्गठन नहीं हुआ। सभी अश्वेत खिलाड़ियों और कलाकारों की तरह, अफ्रीकी मुक्केबाज भी गरीबी और नस्लवाद की दोहरी मार झेल रहे थे। एक अफ्रीकी मुक्केबाज जो भी कमाता था, वह आमतौर पर भोजन, किराया, कपड़े आदि पर खर्च हो जाता था, और जो कुछ बचता था वह मुक्केबाजी के उपकरण और प्रशिक्षण पर खर्च होता था। उसे उन श्वेत मुक्केबाजी क्लबों का सदस्य बनने का अवसर नहीं मिलता था जिनके पास एक प्रथम श्रेणी का, विश्व स्तरीय मुक्केबाज तैयार करने के लिए आवश्यक उपकरण और प्रशिक्षक होते थे। श्वेत पेशेवर मुक्केबाजों के विपरीत, अफ्रीकी पेशेवर मुक्केबाजों के पास पूर्णकालिक नौकरियां होती थीं। अभ्यास के साथी कम और कम वेतन वाले होते थे; उचित प्रशिक्षण और अभ्यास के बिना, प्रदर्शन पर बहुत बुरा असर पड़ता था। फिर भी, कई अफ्रीकी मुक्केबाज इन कठिनाइयों पर विजय प्राप्त करने और बड़ी सफलता हासिल करने में सक्षम रहे। एलिजा (मास्ट्रो) मोकोने, एनोक (स्कूलबॉय) नहलापो, कंगारू माओटो (जो रिंग के सबसे बेहतरीन मुक्केबाजों में से एक थे), लेवी (गोल्डन बॉय) माडी, नकोसाना एमजीक्साजी, मैकीड मोफोकेन्ग और नॉर्मन सेक्गापेन जैसे मुक्केबाजों ने शानदार जीत हासिल की, वहीं हमारे सबसे बड़े हीरो जेक तुली ने ब्रिटिश और एम्पायर फ्लाईवेट खिताब जीता। वे इस बात का सबसे बेहतरीन उदाहरण थे कि अगर अफ्रीकी मुक्केबाजों को मौका दिया जाए तो वे क्या-क्या हासिल कर सकते हैं।

[redacted]

[redacted]

23

5 दिसंबर, 1956 की सुबह, भोर होते ही, मेरे दरवाजे पर ज़ोरदार दस्तक से मेरी नींद खुल गई। कोई पड़ोसी या दोस्त कभी इस तरह से अचानक दस्तक नहीं देता, और मैं तुरंत समझ गया कि ये सुरक्षा पुलिस है। मैंने जल्दी से कपड़े पहने और देखा कि हेड कॉन्स्टेबल रूसो, जो हमारे इलाके में एक जाना-पहचाना चेहरा थे, और दो पुलिसकर्मी मौजूद थे। उन्होंने तलाशी वारंट निकाला, और देखते ही तीनों ने पूरे घर की तलाशी शुरू कर दी, ताकि कोई आपत्तिजनक कागज़ात या दस्तावेज़ मिल सकें। तब तक बच्चे जाग चुके थे, और मैंने उन्हें सख्त नज़र से शांत रहने को कहा। बच्चों ने तसल्ली के लिए मेरी तरफ देखा। पुलिस ने दराजों, अलमारियों और कोठरियों, हर उस जगह की तलाशी ली जहाँ प्रतिबंधित सामान छिपा हो सकता था। पैंतालीस मिनट बाद, रूसो ने बेफिक्री से कहा, “मंडेला, हमारे पास आपके गिरफ्तारी का वारंट है। मेरे साथ आइए।” मैंने वारंट देखा, और उस पर लिखे शब्द मेरी आँखों के सामने आ गए: “होगवेर्राड — राजद्रोह।”
मैं उनके साथ कार तक गया। अपने बच्चों के सामने गिरफ्तार होना सुखद नहीं होता, भले ही आप जानते हों कि आप जो कर रहे हैं वह सही है। लेकिन बच्चे स्थिति की जटिलता को नहीं समझ पाते; वे बस अपने पिता को बिना किसी स्पष्टीकरण के श्वेत अधिकारियों द्वारा ले जाते हुए देखते हैं।
रूसो गाड़ी चला रहा था और मैं उसके बगल में आगे की सीट पर बिना हथकड़ी के बैठा था। उसके पास शहर में मेरे दफ्तर की तलाशी का वारंट था, जहाँ हम पास के एक इलाके में दो अन्य पुलिसकर्मियों को छोड़ने के बाद जा रहे थे। जोहान्सबर्ग के मुख्य इलाके तक पहुँचने के लिए एक सुनसान राजमार्ग से होकर गुजरना पड़ता था जो निर्जन क्षेत्र से होकर जाता था। जब हम इस रास्ते पर गाड़ी चला रहे थे, मैंने रूसो से कहा कि मेरे साथ अकेले और बिना हथकड़ी के गाड़ी चलाने का उसका आत्मविश्वास तो जायज़ ही होगा। वह चुप रहा। मैंने कहा, "अगर मैं तुम्हें पकड़ लूं और तुम पर काबू पा लूं तो क्या होगा?" रूसो असहज महसूस करते हुए हिलने लगे। उन्होंने कहा, "मंडेला, तुम आग से खेल रहे हो।"
मैंने जवाब दिया, "आग से खेलना मेरा खेल है।"

"अगर तुम इसी तरह बोलते रहे तो मुझे तुम्हें हथकड़ी लगानी पड़ेगी," रूसो ने धमकी भरे लहजे में कहा।
और अगर मैं मना कर दूं तो?
कुछ और मिनटों तक हमारी यह तनावपूर्ण बहस जारी रही, लेकिन जैसे ही हम लैंगलाग्टे पुलिस स्टेशन के पास एक आबादी वाले इलाके में पहुँचे, रूसो ने मुझसे कहा: “मंडेला, मैंने आपके साथ अच्छा व्यवहार किया है और मैं आपसे भी यही उम्मीद करता हूँ। मुझे आपके चुटकुले पसंद नहीं हैं।”
पुलिस स्टेशन में थोड़ी देर रुकने के बाद, एक और अधिकारी हमारे साथ शामिल हो गया और हम मेरे कार्यालय गए, जिसकी उन्होंने अगले पैंतालीस मिनट तक तलाशी ली। वहाँ से मुझे मार्शल स्क्वायर ले जाया गया, जो जोहान्सबर्ग की लाल ईंटों से बनी एक विशाल जेल थी, जहाँ मैंने 1952 में अवज्ञा अभियान के दौरान कुछ रातें बिताई थीं। मेरे कई साथी पहले से ही वहाँ मौजूद थे, जिन्हें उसी सुबह गिरफ्तार कर लिया गया था और उनके नाम दर्ज किए गए थे। अगले कुछ घंटों में, और भी दोस्त और साथी धीरे-धीरे आने लगे। यह वही कार्रवाई थी जिसकी सरकार लंबे समय से योजना बना रही थी। किसी ने दोपहर के अखबार 'द स्टार' की एक प्रति चुपके से अंदर पहुँचा दी, और हमने उसकी मुख्य सुर्खियों से जाना कि यह छापा पूरे देश में मारा गया था और कांग्रेस गठबंधन के सभी प्रमुख नेताओं को राजद्रोह और राज्य को उखाड़ फेंकने की कथित साजिश के आरोप में गिरफ्तार किया जा रहा था। देश के विभिन्न हिस्सों में गिरफ्तार किए गए लोगों - चीफ लुथुली, मोंटी नाइकर, रेगी सितंबर, लिलियन न्गोयी, पीट बेलेवेल्ड - को सैन्य विमानों से जोहान्सबर्ग लाया गया, जहाँ उन्हें अदालत में पेश किया जाना था। कुल 144 लोगों को गिरफ्तार किया गया था। अगले दिन हम अदालत में पेश हुए और हम पर औपचारिक रूप से आरोप लगाए गए। एक हफ्ते बाद, वाल्टर सिसुलु और ग्यारह अन्य लोगों को गिरफ्तार किया गया, जिससे कुल संख्या 156 हो गई। कुल मिलाकर, 105 अफ्रीकी, 21 भारतीय, 23 श्वेत और 7 अश्वेत थे। प्रतिबंधित और गैर-प्रतिबंधित दोनों ही एएनसी के लगभग पूरे कार्यकारी नेतृत्व को गिरफ्तार कर लिया गया था। अंततः सरकार ने अपना कदम उठा ही लिया था।

हमें जल्द ही जोहान्सबर्ग जेल में स्थानांतरित कर दिया गया, जिसे लोकप्रिय रूप से 'किला' के नाम से जाना जाता था, जो शहर के मध्य में एक पहाड़ी पर स्थित एक उजाड़, महल जैसी इमारत थी। प्रवेश करते ही हमें एक खुले मैदान में ले जाया गया और पूरी तरह से कपड़े उतारकर दीवार के सहारे कतार में खड़े होने का आदेश दिया गया। हमें वहाँ एक घंटे से अधिक समय तक खड़े रहने के लिए मजबूर किया गया, ठंडी हवा में कांपते हुए और असहज महसूस करते हुए - पुजारी, प्रोफेसर, डॉक्टर, वकील, व्यापारी, मध्यम या वृद्धावस्था के पुरुष, जिनके साथ आमतौर पर सम्मान और आदर का व्यवहार किया जाता था। अपने गुस्से के बावजूद, मैं अपने आस-पास के पुरुषों को देखकर अपनी हंसी नहीं रोक सका। पहली बार, "कपड़े ही इंसान की पहचान बनाते हैं" इस कहावत की सच्चाई मेरे सामने स्पष्ट हुई। यदि सुडौल शरीर और प्रभावशाली कद-काठी नेता बनने के लिए आवश्यक थे, तो मैंने देखा कि हममें से कुछ ही इसके योग्य थे।

अंततः एक श्वेत चिकित्सक आया और उसने पूछा कि क्या हममें से कोई बीमार है। किसी ने भी किसी बीमारी की शिकायत नहीं की। हमें कपड़े पहनने का आदेश दिया गया और फिर सीमेंट के फर्श वाली, बिना फर्नीचर की दो बड़ी कोठरियों में ले जाया गया। कोठरियों को हाल ही में रंगा गया था और उनमें पेंट की दुर्गंध आ रही थी। हममें से प्रत्येक को तीन पतले कंबल और एक सिसल की चटाई दी गई। प्रत्येक कोठरी में फर्श पर केवल एक ही शौचालय था, जो पूरी तरह खुला हुआ था। कहते हैं कि किसी राष्ट्र को तब तक सही मायने में नहीं जाना जा सकता जब तक कि वह उसकी जेलों के अंदर न गया हो। किसी राष्ट्र का मूल्यांकन इस आधार पर नहीं किया जाना चाहिए कि वह अपने उच्च नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है, बल्कि इस आधार पर किया जाना चाहिए कि वह अपने निम्नतम नागरिकों के साथ कैसा व्यवहार करता है - और दक्षिण अफ्रीका ने अपने कैद अफ्रीकी नागरिकों के साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया।

हम दो सप्ताह तक किले में रहे, और तमाम कठिनाइयों के बावजूद हमारा मनोबल अत्यंत बुलंद रहा। हमें अखबार पढ़ने की अनुमति थी और हमने अपनी गिरफ्तारी के कारण उमड़े आक्रोश को पढ़कर संतोष का अनुभव किया। पूरे दक्षिण अफ्रीका

में विरोध प्रदर्शन और सभाएँ आयोजित की जा रही थीं; लोग "हम अपने नेताओं के साथ खड़े हैं" लिखे हुए बैनर लिए हुए थे। हमने अपनी कैद के विरोध में दुनिया भर में हो रहे प्रदर्शनों के बारे में पढ़ा।
हमारी सामुदायिक कोठरी दूर-दराज के स्वतंत्रता सेनानियों के लिए एक तरह का सम्मेलन बन गई थी। हममें से कई लोग कड़ी पाबंदियों के तहत जी रहे थे, जिसके चलते मिलना-जुलना और बात करना गैरकानूनी था। अब, हमारे दुश्मन ने हम सबको एक छत के नीचे इकट्ठा कर दिया था, जो वर्षों में कांग्रेस गठबंधन की सबसे बड़ी और सबसे लंबी बिना प्रतिबंध वाली बैठक बन गई। युवा नेता उन वरिष्ठ नेताओं से मिले जिनके बारे में उन्होंने सिर्फ पढ़ा था। नेटाल के लोग ट्रांसवाल के नेताओं से मिले-जुले। मुकदमे की प्रतीक्षा करते हुए दो हफ्तों तक विचारों और अनुभवों का आदान-प्रदान करने के इस अवसर का हमने भरपूर आनंद लिया।
हर दिन, हम गतिविधियों का एक कार्यक्रम बनाते थे। पैट्रिक मोलाओआ और पीटर नथाइट, दोनों ही यूथ लीग के प्रमुख सदस्य थे, वे शारीरिक प्रशिक्षण का आयोजन करते थे। विभिन्न विषयों पर वार्ताएँ निर्धारित थीं, और हमने प्रोफेसर मैथ्यूज को एएनसी और अमेरिकी नीग्रो के इतिहास पर भाषण देते हुए सुना, देबी सिंह ने एसएआईसी के इतिहास पर व्याख्यान दिया, आर्थर लेटेले ने अफ्रीकी वैद्य के बारे में चर्चा की, जबकि रेवरेंड जेम्स कालाटा ने अफ्रीकी संगीत पर बात की और अपनी सुरीली आवाज़ में गीत गाए। हर दिन, वुयिसिले मिनी, जिन्हें वर्षों बाद राजनीतिक अपराधों के लिए सरकार द्वारा फांसी दी गई, समूह को स्वतंत्रता गीत गाने में नेतृत्व करते थे। सबसे लोकप्रिय गीतों में से एक था: “नैंस’ इंडोड’ एमन्यामा स्ट्रिज्डोम, भासोभा नैंस’ इंडोड’ एमन्यामा स्ट्रिज्डोम” (यह रहा काला आदमी, स्ट्रिज्डोम, काले आदमी से सावधान रहो, स्ट्रिज्डोम)। हम पूरे जोश से गाते थे, और इससे हमारा मनोबल ऊंचा रहता था।
एक बार, ज़ुलू मज़दूर के बेटे और नेटाल एएनसी के प्रांतीय सचिव, मसाबलाला येंगवा (जो एम. बी. येंगवा के नाम से ज़्यादा जाने जाते थे) ने संगीत पर एक व्याख्यान में ज़ुलू योद्धा और राजा शाका के सम्मान में एक स्तुति गीत सुनाकर अपना योगदान दिया। येंगवा ने अपने ऊपर एक कंबल ओढ़ा, एक अखबार को मोड़कर भाले जैसा आकार बनाया और स्तुति गीत की पंक्तियाँ गाते हुए आगे- पीछे चलने लगे। हम सभी, यहाँ तक कि जो ज़ुलू भाषा नहीं समझते थे,

मंत्रमुग्ध हो गए। फिर वे नाटकीय ढंग से रुके और ये पंक्तियाँ ज़ोर से बोलीं, “इन्योन’ एड्ल’ एज़िन्ये! यथ’ इसाद्ल’ एज़िन्ये, यडल’ एज़िन्ये!” ये पंक्तियाँ शाका की तुलना एक विशाल शिकारी पक्षी से करती हैं जो निर्दयता से अपने शत्रुओं का वध करता है। इन शब्दों के समाप्त होते ही चारों ओर शोर मच गया। मुखिया लुथुली, जो तब तक शांत थे, अचानक खड़े हो गए और ज़ोर से चिल्लाए, “न्गु शाका लोवो!” (यह शाका है!), और फिर नाचने और गाने लगे। उनके नृत्य ने हमें झकझोर दिया और हम सब अपने पैरों पर खड़े हो गए। कुशल बॉलरूम नर्तक, और वे आलसी लोग जिन्हें न तो पारंपरिक नृत्य आता था और न ही पश्चिमी नृत्य, सभी ज़ुलू के पारंपरिक युद्ध नृत्य, इंदलामु में शामिल हो गए। कुछ लोग सहजता से नाच रहे थे, तो कुछ जमे हुए पर्वतारोहियों की तरह लग रहे थे जो ठंड से कांप रहे हों, लेकिन सभी उत्साह और भावना से नाच रहे थे। अचानक वहाँ न तो खोसा थे, न ज़ुलू, न भारतीय, न अफ्रीकी, न दक्षिणपंथी, न वामपंथी, न धार्मिक, न राजनीतिक नेता; हम सब राष्ट्रवादी और देशभक्त थे जो अपने साझा इतिहास, अपनी संस्कृति, अपने देश और अपने लोगों के प्रति प्रेम से बंधे हुए थे। उस क्षण, हम सबके भीतर कुछ गहरा जागृत हुआ, कुछ मजबूत और अंतरंग, जिसने हमें एक-दूसरे से जोड़ दिया। उस क्षण हमने उस महान अतीत का स्पर्श महसूस किया जिसने हमें वह बनाया जो हम थे और उस महान उद्देश्य की शक्ति को महसूस किया जिसने हम सबको एक साथ जोड़ दिया।

दो सप्ताह बीतने के बाद, 19 दिसंबर को हम जोहान्सबर्ग के ड्रिल हॉल में अपनी प्रारंभिक परीक्षा के लिए उपस्थित हुए। यह एक सैन्य इमारत थी जिसका उपयोग सामान्यतः न्यायालय के रूप में नहीं किया जाता था। यह एक विशाल, खाली खलिहान जैसी इमारत थी जिसकी छत नालीदार लोहे की थी और इसे एकमात्र ऐसी सार्वजनिक इमारत माना जाता था जो इतने सारे आरोपियों के मुकदमे के लिए पर्याप्त रूप से बड़ी थी।
हमें सीलबंद पुलिस वैन में ले जाया गया, जिनके साथ छह सशस्त्र सैनिकों से भरे वाहन चल रहे थे। राज्य द्वारा बरती जा रही सावधानियों को देखकर ऐसा लग रहा था मानो कोई पूर्ण पैमाने पर गृहयुद्ध चल रहा हो। हमारे समर्थकों की भारी भीड़ ने ट्विस्ट स्ट्रीट पर यातायात रोक दिया था; हम उनकी जयजयकार और

गायन सुन सकते थे, और वे वैन के अंदर से हमारी प्रतिक्रियाएँ सुन सकते थे। भीड़ के कारण धीमी गति से चल रही वैन के हिलने से यह यात्रा एक विजय जुलूस में तब्दील हो गई। हॉल के चारों ओर बंदूकधारी पुलिसकर्मियों और सैनिकों का घेरा था। वैन को हॉल के पीछे एक जगह पर लाया गया और इस तरह खड़ा किया गया कि हम सीधे वैन से उतरकर अदालत कक्ष में पहुँच गए।
अंदर जाते ही हमें समर्थकों की एक और भीड़ मिली, जिससे हॉल किसी गंभीर अदालत की बजाय एक शोरगुल भरी विरोध सभा जैसा लग रहा था। हमने एएनसी के प्रतीक के रूप में अंगूठा उठाकर अंदर प्रवेश किया और गैर-श्वेत-प्रतिनिधि अनुभाग में बैठे अपने समर्थकों को सिर हिलाकर अभिवादन किया। अंदर का माहौल दंडात्मक से अधिक उत्सवपूर्ण था, क्योंकि आरोपी पत्रकारों और दोस्तों के साथ घुलमिल रहे थे।
सरकार ने हम सभी एक सौ छप्पन लोगों पर राजद्रोह और देशव्यापी साजिश रचने का आरोप लगाया था, जिसमें मौजूदा सरकार को उखाड़ फेंकने और उसकी जगह कम्युनिस्ट राज्य स्थापित करने के लिए हिंसा का इस्तेमाल करना शामिल था। अभियोग में 1 अक्टूबर, 1952 से 13 दिसंबर, 1956 तक की अवधि शामिल थी: इसमें अवज्ञा अभियान, सोफियाटाउन निष्कासन और जनसभा शामिल थी। दक्षिण अफ्रीका का राजद्रोह कानून अंग्रेजी कानून पर आधारित नहीं था, बल्कि रोमन डच कानूनों पर आधारित था, और राजद्रोह को राज्य की स्वतंत्रता या सुरक्षा को भंग करने, नुकसान पहुंचाने या खतरे में डालने के शत्रुतापूर्ण इरादे के रूप में परिभाषित करता था। इसका दंड मृत्युदंड था।
प्रारंभिक जांच का उद्देश्य यह निर्धारित करना था कि क्या सरकार द्वारा लगाए गए आरोप हमें सर्वोच्च न्यायालय में मुकदमे के लिए पर्याप्त हैं। साक्ष्य प्रस्तुत करने के दो चरण थे। पहला चरण मजिस्ट्रेट की अदालत में होता था। यदि मजिस्ट्रेट यह निर्धारित करता कि आरोपी के विरुद्ध पर्याप्त साक्ष्य हैं, तो मामला सर्वोच्च न्यायालय में जाता और न्यायाधीश के समक्ष सुनवाई होती। यदि मजिस्ट्रेट अपर्याप्त साक्ष्य होने का निर्णय लेता, तो आरोपियों को बरी कर दिया जाता।
मजिस्ट्रेट श्री एफ. सी. वेसेल थे, जो ब्लोमफोंटेन के मुख्य मजिस्ट्रेट थे। पहले दिन, जब वेसेल ने अपनी धीमी आवाज़ में बोलना शुरू किया, तो उन्हें सुनना असंभव था। राज्य ने माइक्रोफोन और लाउडस्पीकर उपलब्ध नहीं कराए थे, और ध्वनि बढ़ाने के लिए उपकरण मिलने तक अदालत को दो घंटे के लिए स्थगित कर

दिया गया। हम एक आंगन में इकट्ठा हुए और बाहर से मंगवाए गए भोजन के साथ एक तरह से पिकनिक का आनंद लिया। माहौल लगभग उत्सव जैसा था। दो घंटे बाद, उचित लाउडस्पीकर न मिलने के कारण अदालत को उस दिन के लिए स्थगित कर दिया गया। भीड़ की जय-जयकार के बीच, हमें एक बार फिर किले में वापस ले जाया गया। अगले दिन, बाहर भीड़ और भी अधिक थी, पुलिस और भी अधिक सतर्क थी। पांच सौ सशस्त्र पुलिसकर्मियों ने ड्रिल हॉल को घेर लिया था। जब हम वहाँ पहुँचे, तो हमने पाया कि राज्य ने हमारे बैठने के लिए एक विशाल तार का पिंजरा खड़ा कर दिया था। यह हीरे के आकार के जालीदार तार से बना था, जो खंभों और मचानों से जुड़ा हुआ था और इसके आगे और ऊपर जाली लगी हुई थी। हमें अंदर ले जाया गया और सोलह सशस्त्र गार्डों से घिरे हुए बेंचों पर बैठा दिया गया।
इसके प्रतीकात्मक प्रभाव के अलावा, पिंजरे ने हमें हमारे वकीलों से संपर्क करने से भी रोक दिया, जिन्हें अंदर जाने की अनुमति नहीं थी। मेरे एक सहकर्मी ने कागज के एक टुकड़े पर कुछ लिखा और फिर उसे पिंजरे के किनारे चिपका दिया: "खतरनाक। कृपया इसे खाना न खिलाएं।"
हमारे समर्थकों और संगठन ने एक सशक्त बचाव दल का गठन किया था, जिसमें ब्रैम फिशर, नॉर्मन रोसेनबर्ग, इज़राइल मैसेल्स, मौरिस फ्रैंक्स और वर्नोन बेरेंज शामिल थे। इनमें से किसी ने भी अदालत में इस तरह की संरचना पहले कभी नहीं देखी थी। फ्रैंक्स ने खुले न्यायालय में राज्य द्वारा अपने मुवक्किलों को इस तरह से अपमानित करने और उनके साथ, उनके अनुसार, "जंगली जानवरों की तरह" व्यवहार करने के खिलाफ जोरदार विरोध दर्ज कराया। उन्होंने घोषणा की कि यदि पिंजरा तुरंत नहीं हटाया गया, तो पूरा बचाव दल अदालत से बाहर चला जाएगा। संक्षिप्त स्थगन के बाद, मजिस्ट्रेट ने पिंजरे को गिराने का फैसला किया; इस बीच, उसका अगला हिस्सा हटा दिया गया।
तभी राज्य ने अपना पक्ष रखना शुरू किया। मुख्य अभियोजक, श्री वैन नीकरक ने हमारे खिलाफ क्राउन के मामले की रूपरेखा बताते हुए 18,000 शब्दों के भाषण का कुछ अंश पढ़ना शुरू किया। बाहर हो रहे शोर और गाने के कारण उनकी आवाज़ लाउडस्पीकर के बावजूद मुश्किल से सुनाई दे रही थी, और एक समय पुलिसकर्मियों का एक समूह बाहर आ भागा। हमने एक रिवॉल्वर की गोली चलने की आवाज़ सुनी, जिसके बाद चीख-पुकार और गोलियों की आवाज़ें आईं। मजिस्ट्रेट द्वारा वकीलों से बैठक करने के दौरान अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई। बीस लोग घायल हो गए थे।

अगले दो दिनों तक आरोपों को सुनाने का सिलसिला जारी रहा। वैन नीकरक ने कहा कि वह अदालत में यह साबित कर देंगे कि आरोपी अन्य देशों की मदद से मौजूदा सरकार को हिंसा के बल पर उखाड़ फेंकने और दक्षिण अफ्रीका में कम्युनिस्ट सरकार थोपने की साजिश रच रहे थे। यह राजद्रोह का आरोप था। सरकार ने स्वतंत्रता चार्टर को हमारे कम्युनिस्ट इरादों के प्रमाण और मौजूदा सत्ता को उखाड़ फेंकने की हमारी साजिश के सबूत के तौर पर पेश किया। तीसरे दिन तक, पिंजरा लगभग पूरी तरह से हटा दिया गया था। आखिरकार, चौथे दिन हमें जमानत पर रिहा कर दिया गया। जमानत भी रंगभेद के घटते-बढ़ते पैमाने का एक और उदाहरण थी: गोरों के लिए 250 पाउंड; भारतीयों के लिए 100 पाउंड; और अफ्रीकियों और अश्वेतों के लिए 25 पाउंड। राजद्रोह भी रंगभेद नहीं देखता था। समाज के विभिन्न क्षेत्रों से आए शुभचिंतकों ने प्रत्येक आरोपी की जमानत की गारंटी देने के लिए आगे आए, समर्थन के ये संकेत बाद में बिशप रीव्स, एलन पैटन और एलेक्स हेपल द्वारा शुरू किए गए राजद्रोह मुकदमे रक्षा कोष की नींव बने। मुकदमे की सुनवाई के दौरान इस निधि का प्रबंधन मैरी बेन्सन और फिर फ्रेडा लेवसन ने कुशलतापूर्वक किया। हमें इस शर्त पर रिहा किया गया कि हम सप्ताह में एक बार पुलिस को रिपोर्ट करेंगे, और हमें सार्वजनिक समारोहों में भाग लेने से मना किया गया था। अदालत की कार्यवाही जनवरी की शुरुआत में फिर से शुरू होनी थी।
अगले दिन मैं सुबह-सुबह अपने दफ्तर पहुँच गया। ओलिवर और मैं दोनों जेल में थे, और इस बीच हमारा काम का बोझ काफी बढ़ गया था। उस सुबह काम करने की कोशिश करते हुए, मेरा एक पुराना दोस्त जाबावु मुझसे मिलने आया, जो एक पेशेवर दुभाषिया था और जिससे मैं कई महीनों से नहीं मिला था। गिरफ्तारी से पहले मैंने जानबूझकर अपना वजन कम कर लिया था, क्योंकि मुझे जेल जाने का डर था, जहाँ दुबला-पतला होना चाहिए और कम में गुजारा करना चाहिए। जेल में भी मैंने व्यायाम जारी रखा था और अपने चुस्त-दुरुस्त शरीर से खुश था। लेकिन जाबावु ने मुझे शक की निगाह से देखा। "मदीबा," उसने कहा, "तुम इतने पतले क्यों दिख रहे हो?" अफ्रीकी संस्कृति में, मोटापा अक्सर धन और खुशहाली से जुड़ा होता है। वह भड़क उठा: "यार, तुम जेल से डर गए थे, बस। तुमने हमें, हम खोसा लोगों को शर्मिंदा किया है!"

24

मुकदमे की सुनवाई से पहले ही, एवलिन के साथ मेरा वैवाहिक जीवन बिखरने लगा था। 1953 में, एवलिन ने सामान्य नर्सिंग में अपने चार वर्षीय प्रमाणपत्र को अपग्रेड करने का निश्चय कर लिया था। उसने डरबन के किंग एडवर्ड VII अस्पताल में दाईगिरी के पाठ्यक्रम में दाखिला लिया, जिसके कारण उसे कई महीनों तक घर से दूर रहना पड़ा। यह इसलिए संभव हो पाया क्योंकि मेरी माँ और बहन हमारे साथ रह रही थीं और बच्चों की देखभाल कर सकती थीं। डरबन में रहने के दौरान, मैं कम से कम एक बार उससे मिलने गया था।
एवलिन परीक्षा उत्तीर्ण करके लौटी। वह दोबारा गर्भवती थी और उसी वर्ष उसने मकाज़िवे को जन्म दिया, जिसका नाम हमने छह साल पहले खोई अपनी बेटी के नाम पर रखा। हमारी संस्कृति में, नवजात शिशु को मृत शिशु का नाम देना, पहले शिशु की स्मृति का सम्मान करने और उस शिशु के प्रति एक आध्यात्मिक लगाव बनाए रखने का एक तरीका माना जाता है जो असमय हमें छोड़कर चला गया।
अगले एक साल के दौरान एवलिन यहोवा के साक्षी चर्च के एक संगठन, वॉच टावर से जुड़ गई। क्या यह उस समय उसके जीवन से किसी असंतोष के कारण था, यह मैं नहीं जानता। यहोवा के साक्षी बाइबल को आस्था का एकमात्र आधार मानते थे और अच्छाई और बुराई के बीच आने वाले आर्मागेडन में विश्वास करते थे। एवलिन ने उत्साहपूर्वक उनके प्रकाशन 'द वॉचटावर' का वितरण शुरू किया और मुझे भी धर्म परिवर्तन के लिए प्रेरित करने लगी, मुझसे आग्रह किया कि मैं संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता को ईश्वर के प्रति प्रतिबद्धता में बदल दूं। हालाँकि मुझे वॉच टावर की प्रणाली के कुछ पहलू रोचक और सार्थक लगे, मैं उसकी भक्ति को साझा नहीं कर सका और न ही किया। उसमें एक जुनूनी तत्व था जिसने मुझे विचलित कर दिया। जहाँ तक मैं समझ सका, उसकी आस्था उत्पीड़न के सामने निष्क्रियता और समर्पण सिखाती थी, जिसे मैं स्वीकार नहीं कर सकता था।
एएनसी और संघर्ष के प्रति मेरी निष्ठा अटूट थी। इससे एवलिन परेशान थीं। उन्होंने हमेशा यही माना था कि राजनीति जवानी का एक शौक है, कि मैं एक दिन ट्रांसकेई लौटकर वहाँ वकील बनूँगा। हालाँकि यह संभावना अब दूर होती जा रही थी, फिर भी उन्होंने कभी यह स्वीकार नहीं किया कि जोहान्सबर्ग ही

हमारा घर होगा, और न ही उन्होंने उमटाटा वापस जाने की संभावना को छोड़ा। उनका मानना था कि एक बार ट्रांसकेई लौटकर, अपने परिवार के बीच, सबाता के सलाहकार के रूप में काम करते हुए, मुझे राजनीति की कमी महसूस नहीं होगी। उन्होंने दलिवोंगा के मुझे उमटाटा वापस आने के लिए मनाने के प्रयासों को बढ़ावा दिया। इस विषय पर हमारी कई बार बहस हुई, और मैंने धैर्यपूर्वक उन्हें समझाया कि राजनीति कोई मनोरंजन नहीं बल्कि मेरा जीवन-प्रबंध है, यह मेरे अस्तित्व का एक अनिवार्य और मूलभूत हिस्सा है। लेकिन वह इसे स्वीकार नहीं कर सकीं। जीवन में अपनी-अपनी भूमिकाओं के बारे में इतने अलग-अलग विचार रखने वाले पुरुष और महिला का करीबी रिश्ता नहीं रह सकता।
मैंने उसे संघर्ष की अनिवार्यता समझाने की कोशिश की, जबकि वह मुझे धार्मिक आस्था का महत्व समझाने का प्रयास करती रही। जब मैं उसे बताता कि मैं राष्ट्र की सेवा कर रहा हूँ, तो वह कहती कि राष्ट्र की सेवा से बढ़कर ईश्वर की सेवा है। हम दोनों के बीच कोई सहमति नहीं बन पा रही थी, और मुझे यह विश्वास होने लगा था कि हमारा रिश्ता अब कायम नहीं रह सकता।
हमने बच्चों के मन और हृदय को जीतने के लिए भी संघर्ष किया। वह चाहती थी कि वे धार्मिक बनें, और मैं सोचता था कि उन्हें राजनीतिक होना चाहिए। वह उन्हें हर अवसर पर चर्च ले जाती और उन्हें वॉच टावर का साहित्य पढ़कर सुनाती। उसने लड़कों को टाउनशिप में बांटने के लिए वॉच टावर के पर्चे भी दिए। मैं लड़कों से राजनीति की बातें करता था। थेम्बी एएनसी के किशोर संघ, पायनियर्स का सदस्य था, इसलिए वह पहले से ही राजनीतिक रूप से जागरूक था। मैं मकागाथो को सरल शब्दों में समझाता था कि कैसे श्वेत व्यक्ति द्वारा अश्वेत व्यक्ति पर अत्याचार किया जाता है।
घर की दीवारों पर रूजवेल्ट, चर्चिल, स्टालिन, गांधी और 1917 में सेंट पीटर्सबर्ग में विंटर पैलेस पर हुए हमले की तस्वीरें लगी थीं। मैंने लड़कों को समझाया कि इनमें से प्रत्येक व्यक्ति कौन था और वह किस चीज़ का प्रतिनिधित्व करता था। वे जानते थे कि दक्षिण अफ्रीका के श्वेत नेता बहुत अलग चीज़ों का प्रतिनिधित्व करते थे। एक दिन, मकागाथो दौड़ता हुआ घर आया और बोला, "पापा, पापा, पहाड़ी पर मालन हैं!" मालन पहले राष्ट्रवादी प्रधानमंत्री थे और लड़के ने उन्हें बंटू शिक्षा अधिकारी विली मारे समझ लिया था, जिन्होंने उस दिन टाउनशिप में एक जनसभा को संबोधित करने की घोषणा की थी। मैं यह देखने के लिए बाहर गया कि मकागाथो किस बारे में बात कर रहा

बुरी लगी। एवलिन अपने भाई के साथ रहने चली गई थी, जिसने मुझसे कहा, "शायद यही अच्छा है; हो सकता है जब हालात सामान्य हो जाएं तो तुम दोनों फिर से साथ आ जाओ।" यह सलाह तो ठीक थी, लेकिन ऐसा नहीं हुआ।
एवलिन और मेरे बीच कभी न सुलझने वाले मतभेद थे। मैं इस संघर्ष में अपना जीवन नहीं कुर्बान कर सकता था, और वह मेरे द्वारा खुद और परिवार के अलावा किसी और चीज़ के प्रति समर्पण को बर्दाश्त नहीं कर सकती थी। वह बहुत अच्छी महिला थीं, आकर्षक, मजबूत और वफादार, और एक बेहतरीन माँ थीं। उनके प्रति मेरा सम्मान और प्रशंसा कभी कम नहीं हुई, लेकिन अंत में, हम अपने वैवाहिक जीवन को सफल नहीं बना सके।
किसी भी विवाह का टूटना बहुत दुखद होता है, खासकर बच्चों के लिए। हमारा परिवार भी इसका अपवाद नहीं था, और हमारे अलग होने से सभी बच्चे आहत हुए। मकागाथो मेरे बिस्तर पर सोने लगा। वह एक शांत स्वभाव का बच्चा था, स्वभाव से ही शांतिप्रिय था और उसने मेरे और अपनी माँ के बीच सुलह कराने की कोशिश की। मकाज़ीवे अभी बहुत छोटी थी, और मुझे याद है एक दिन, जब मैं जेल या अदालत में नहीं थी, मैं बिना बताए उसके क्रेश (नर्सरी स्कूल) चली गई। वह हमेशा से ही बहुत स्नेहशील बच्ची रही थी, लेकिन उस दिन, जब उसने मुझे देखा, तो वह एकदम शांत हो गई। उसे समझ नहीं आ रहा था कि वह मेरे पास दौड़े या पीछे हट जाए, मुस्कुराए या नाराज़ हो जाए। उसके छोटे से दिल में कोई कशमकश चल रही थी, जिसे वह सुलझाना नहीं जानती थी। यह बहुत दर्दनाक था।
उस समय दस साल का थेम्बी सबसे ज़्यादा प्रभावित हुआ। उसने पढ़ाई छोड़ दी और अंतर्मुखी हो गया। उसे अंग्रेज़ी और शेक्सपियर में बहुत रुचि थी, लेकिन अलगाव के बाद पढ़ाई के प्रति उसकी उदासीनता बढ़ती चली गई। उसके स्कूल के प्रधानाचार्य ने एक बार मुझसे बात की, लेकिन मैं कुछ खास नहीं कर पाया। जब भी संभव होता, मैं उसे जिम ले जाता, और कभी-कभी वह थोड़ा खुश हो जाता। कई बार मैं उसके साथ नहीं रह पाता था, और बाद में जब मैं भूमिगत था, तो वाल्टर थेम्बी को अपने बेटे के साथ ले जाता था। एक बार वाल्टर उसे एक कार्यक्रम में ले गया, और बाद में वाल्टर ने मुझसे कहा, "यार, यह लड़का कितना शांत है।" अलगाव के बाद, थेम्बी अक्सर मेरे कपड़े पहनता था, भले ही वे उसके लिए बहुत बड़े होते थे; उन कपड़ों से उसे अपने अक्सर दूर रहने वाले पिता से एक तरह का लगाव महसूस होता था।

25

9 जनवरी, 1957 को हम एक बार फिर ड्रिल हॉल में एकत्रित हुए। राज्य के आरोपों का खंडन करने की बारी बचाव पक्ष की थी। हमारे विरुद्ध अभियोजन पक्ष के मामले का सारांश प्रस्तुत करने के बाद, हमारे प्रमुख वकील वर्नोन बेरेंज ने हमारी दलीलें सुनाईं। उन्होंने कहा, “बचाव पक्ष इस बात का पुरजोर खंडन करेगा कि स्वतंत्रता चार्टर की शर्तें राजद्रोह या आपराधिक हैं। इसके विपरीत, बचाव पक्ष यह तर्क देगा कि इस चार्टर में व्यक्त विचार और मान्यताएँ, यद्यपि वर्तमान सरकार की नीति के विपरीत हैं, फिर भी वे सभी जातियों और रंगों के अधिकांश मानव जाति और इस देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा साझा की जाती हैं।” अपने वकीलों से परामर्श करने के बाद, हमने निर्णय लिया था कि हम केवल राजद्रोह के आरोप से अपनी बेगुनाही साबित नहीं करेंगे, बल्कि यह एक राजनीतिक मुकदमा है जिसमें सरकार हमें नैतिक रूप से उचित कार्यों के लिए प्रताड़ित कर रही है।
लेकिन शुरुआती बहस के नाटकीय अंत के बाद अदालती कार्यवाही की नीरसता छा गई। मुकदमे का पहला महीना राज्य द्वारा सबूत पेश करने में ही बीत गया। पुलिस ने पिछले तीन वर्षों की तलाशी में जो भी कागज़, पुस्तिका, दस्तावेज़, किताब, नोटबुक, पत्र, पत्रिका और अखबार की कतरनें जमा की थीं, उन्हें एक-एक करके पेश किया गया और क्रमांकित किया गया; कुल मिलाकर बारह हज़ार। पेश किए गए सबूतों में संयुक्त राष्ट्र मानवाधिकार घोषणापत्र से लेकर एक रूसी पाक-पुस्तिका तक शामिल थे। उन्होंने जनसभा के दो बैनर भी पेश किए: "मांस वाला सूप" और "मांस रहित सूप"।
तैयारी संबंधी परीक्षा, जो महीनों तक चली, के दौरान हमने प्रतिदिन अफ्रीकी और अफ्रीकी जासूसों को एएनसी बैठकों के अपने नोट्स या भाषणों की प्रतिलिपियाँ पढ़ते हुए सुना। ये विवरण हमेशा अस्पष्ट और अक्सर बेतुके या सरासर झूठे होते थे। बाद में बेर्रांगे ने अपनी कुशल जिरह में खुलासा किया कि कई अफ्रीकी जासूस अंग्रेजी भाषा को समझ या लिख नहीं पाते थे, जिस भाषा में भाषण दिए गए थे।

राज्य के इस असाधारण आरोप का समर्थन करने के लिए कि हमारा इरादा मौजूदा सरकार को सोवियत-शैली की सरकार से बदलने का था, क्राउन ने केप टाउन विश्वविद्यालय के राजनीति विज्ञान विभाग के प्रमुख प्रोफेसर एंड्रयू मरे के साक्ष्यों पर भरोसा किया। मरे ने हमसे जब्त किए गए कई दस्तावेजों को, जिनमें स्वयं फ्रीडम चार्टर भी शामिल था, साम्यवादी करार दिया। प्रोफेसर मरे शुरू में अपेक्षाकृत जानकार प्रतीत हुए, लेकिन यह तब तक था जब तक बेरेंज ने उनसे जिरह शुरू नहीं की। बेरेंज ने कहा कि वह मरे को विभिन्न दस्तावेजों से कुछ अंश पढ़कर सुनाना चाहते हैं और फिर उनसे यह जानना चाहते हैं कि वे साम्यवादी हैं या नहीं। बेरेंज ने उन्हें पहला अंश पढ़कर सुनाया, जिसमें आम श्रमिकों के आपसी सहयोग और एक-दूसरे का शोषण न करने की आवश्यकता पर चर्चा थी। मरे ने कहा, "यह साम्यवादी है।" बेरेंज ने फिर बताया कि यह कथन दक्षिण अफ्रीका के पूर्व प्रधानमंत्री डॉ. मालन ने दिया था। बेरेंज ने उन्हें दो अन्य कथन पढ़कर सुनाए, जिन्हें प्रोफेसर मरे ने साम्यवादी बताया। वास्तव में ये अंश अमेरिकी राष्ट्रपतियों अब्राहम लिंकन और वुडरो विल्सन द्वारा कहे गए थे। सबसे दिलचस्प क्षण तब आया जब बेरेंज ने मरे को एक ऐसा अंश पढ़कर सुनाया जिसे प्रोफेसर ने बिना किसी झिझक के "सीधा-सादा साम्यवाद" बताया। बेरेंज ने फिर खुलासा किया कि यह कथन स्वयं प्रोफेसर मरे ने 1930 के दशक में लिखा था।
मुकदमे के सातवें महीने में, राज्य ने कहा कि वह अवज्ञा अभियान के दौरान हुई सुनियोजित हिंसा के सबूत पेश करेगा। राज्य ने अपने प्रमुख गवाहों में से पहले, सोलोमन न्गुबासे को बुलाया, जिन्होंने सनसनीखेज सबूत पेश किए जिनसे एएनसी की संलिप्तता प्रतीत होती थी। न्गुबासे तीस वर्ष की आयु के आसपास के एक मृदुभाषी व्यक्ति थे, जिनकी अंग्रेजी पर पकड़ कमजोर थी और जो वर्तमान में धोखाधड़ी के आरोप में सजा काट रहे थे। अपने प्रारंभिक बयान में, न्गुबासे ने अदालत को बताया कि उन्होंने फोर्ट हरे से कला स्नातक की डिग्री प्राप्त की है और वे एक वकील हैं। उन्होंने कहा कि वे एएनसी की पोर्ट एलिजाबेथ शाखा के सचिव और राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य बने। उन्होंने दावा किया कि वे राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की उस बैठक में मौजूद थे जब वाल्टर सिसुलु और डेविड बोपापे को दक्षिण अफ्रीका में हिंसक क्रांति के लिए हथियार प्राप्त करने हेतु सोवियत संघ भेजने का निर्णय लिया गया था। उन्होंने कहा कि वे 1952 के पोर्ट एलिजाबेथ दंगे की योजना

बनाने वाली बैठक में मौजूद थे और उन्होंने एएनसी के उस निर्णय को देखा था जिसमें ट्रांसकेई में सभी गोरों की हत्या उसी तरह करने का निर्णय लिया गया था जैसे केन्या में माउ माउ ने किया था। न्गुबासे की सनसनीखेज गवाही ने अदालत के अंदर और बाहर हलचल मचा दी। आखिरकार, साजिश का सबूत मिल ही गया। लेकिन जब वर्नोन बेरेंज ने न्गुबेस से जिरह की, तो पता चला कि वह पूरी तरह से पागल और झूठा था। बेरेंज, जिसकी जिरह करने की कला ने आरोपियों के बीच उसे 'इसांगोमा' (बीमारी दूर करने वाला ज्योतिषी या वैद्य) का उपनाम दिलाया था, ने तुरंत साबित कर दिया कि न्गुबेस न तो विश्वविद्यालय का स्नातक था, न ही एएनसी का सदस्य, और न ही राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का सदस्य। बेरेंज ने दिखाया कि न्गुबेस ने विश्वविद्यालय की डिग्री के लिए जाली प्रमाण पत्र बनवाए थे, कई वर्षों तक अवैध रूप से वकालत की थी, और उसके खिलाफ धोखाधड़ी का एक और मामला लंबित था। जिस बैठक में उसने पोर्ट एलिजाबेथ दंगे की योजना बनाने के लिए शामिल होने का दावा किया था, उस समय वह डरबन की जेल में धोखाधड़ी के आरोप में सजा काट रहा था। न्गुबेस की गवाही का लगभग कोई भी हिस्सा सच्चाई से दूर-दूर तक मेल नहीं खाता था। जिरह के अंत में, बेरेंज ने गवाह से पूछा, "क्या आप जानते हैं कि बदमाश किसे कहते हैं?" न्गुबेस ने कहा कि वह नहीं जानता। "आप, महोदय, एक बदमाश हैं!" बेरंगे ने विस्मय व्यक्त किया।
आरोपियों में से एक, जो स्लोवो, एक कुशल वकील थे, उन्होंने अपना बचाव स्वयं किया। अपने तीखे सवालों और यह साबित करने के प्रयासों के कारण कि कानूनों का उल्लंघन कांग्रेस ने नहीं बल्कि राज्य ने किया था, वे राज्य के लिए एक परेशानी का सबब थे। स्लोवो की जिरह अक्सर बेर्रांगे की जिरह जितनी ही तीखी होती थी। स्पेशल ब्रांच के कुछ गिने-चुने अफ्रीकी सदस्यों में से एक, जासूस जेरेमिया मोलसन ने दावा किया कि उन्हें एएनसी के उन भाषणों की पंक्तियाँ शब्दशः याद हैं जिनमें वे उपस्थित थे। लेकिन उन्होंने जो बताया वह आमतौर पर निरर्थक या सरासर मनगढ़ंत बातें थीं।
स्लोवो: "क्या आपको अंग्रेजी समझ आती है?"
मॉलसन: "इतना अच्छा नहीं।"
स्लोवो: "क्या आपका मतलब यह है कि आपने इन भाषणों की अंग्रेजी में रिपोर्टिंग की, लेकिन आपको अंग्रेजी अच्छी तरह से समझ नहीं आती?"
मॉलसन: "जी हां, माननीय।"

स्लोवो: "क्या आप इस बात से सहमत हैं कि आपके नोट्स पूरी तरह से बेकार हैं?" मोलसन: "मुझे नहीं पता।"
इस आखिरी प्रतिक्रिया पर अभियुक्तों में हंसी का सैलाब उमड़ पड़ा। मजिस्ट्रेट ने हमें हंसने के लिए फटकार लगाई और कहा, "कार्यवाही उतनी मजेदार नहीं है जितनी दिखती है।"
एक मौके पर वेसेल ने स्लोवो से कहा कि वह अदालत की निष्ठा पर सवाल उठा रहा है और उस पर अवमानना का जुर्माना लगाया। इससे अधिकांश आरोपियों में आक्रोश फैल गया और मुख्य लूथुली के संयमपूर्ण हस्तक्षेप से ही कई आरोपियों को अवमानना के लिए दोषी ठहराए जाने से बचाया जा सका।
जैसे-जैसे गवाही आगे बढ़ती गई, जिसमें ज़्यादातर उबाऊ कानूनी दांव-पेच शामिल थे, हम दूसरे कामों में व्यस्त होने लगे। मैं अक्सर पढ़ने के लिए कोई किताब या काम करने के लिए कोई कानूनी दस्तावेज़ ले आता था। बाकी लोग अखबार पढ़ते, क्रॉसवर्ड हल करते या शतरंज या स्क्रैबल खेलते थे। कभी-कभी, न्यायाधीश हमें ध्यान न देने के लिए डांटते, और किताबें और पहेलियाँ गायब हो जातीं। लेकिन, धीरे-धीरे, जैसे ही गवाही अपनी धीमी गति पर वापस आती, खेल और पढ़ने की सामग्री फिर से सामने आ जाती।
प्रारंभिक जांच जारी रहने के साथ-साथ राज्य की हताशा बढ़ती गई। यह बात स्पष्ट होती जा रही थी कि राज्य एक हारी हुई लड़ाई में मदद के लिए सबूत जुटा रहा था - अक्सर मनगढ़ंत सबूत गढ़ रहा था।
अंततः, 11 सितंबर को, ड्रिल हॉल में हमारी पहली बैठक के दस महीने बाद, अभियोजक ने घोषणा की कि प्रारंभिक जांच में राज्य का मामला पूरा हो गया है। मजिस्ट्रेट ने बचाव पक्ष को आठ हजार पृष्ठों के टाइप किए गए साक्ष्यों और बारह हजार दस्तावेजों की छानबीन करके अपना मामला तैयार करने के लिए चार महीने का समय दिया।
प्रारंभिक जांच पूरे 1957 तक चली। सितंबर में अदालत स्थगित हो गई और बचाव पक्ष ने सबूतों की समीक्षा शुरू कर दी। तीन महीने बाद, बिना किसी पूर्व सूचना और स्पष्टीकरण के, अभियोजन पक्ष ने घोषणा की कि 61 आरोपियों के खिलाफ आरोप हटा दिए गए हैं। इनमें से अधिकांश आरोपी एएनसी में अपेक्षाकृत कम महत्वपूर्ण व्यक्ति थे, लेकिन उनमें चीफ लुथुली और ओलिवर टैम्बो भी शामिल थे। अभियोजन पक्ष द्वारा लुथुली और टैम्बो की रिहाई से हमें खुशी तो हुई, लेकिन हम हैरान भी रह गए।

जनवरी में, जब सरकार को अपने आरोपों का सारांश प्रस्तुत करना था, तब क्राउन ने एक नए अभियोजक, प्रभावशाली ओसवाल्ड पिरो, क्यू.सी. को नियुक्त किया। पिरो न्याय और रक्षा मंत्री रह चुके थे और नेशनल पार्टी की राजनीति के एक प्रमुख स्तंभ थे। वे लंबे समय से अफ़्रीकानर राष्ट्रवादी थे और नाज़ी विचारधारा के मुखर समर्थक थे; उन्होंने एक बार हिटलर को "अपने युग का महानतम व्यक्ति" बताया था। वे कट्टर साम्यवाद-विरोधी थे। पिरो की नियुक्ति इस बात का नया प्रमाण थी कि सरकार परिणाम को लेकर चिंतित थी और जीत को अत्यधिक महत्व देती थी।
पिरो के अंतिम बयान से पहले, बेरेंज ने घोषणा की कि वह इस आधार पर हमारी रिहाई के लिए अर्जी देंगे कि राज्य ने हमारे खिलाफ पर्याप्त सबूत पेश नहीं किए हैं। पिरो ने इस अर्जी का विरोध किया और आरोपियों के कई भड़काऊ भाषणों का हवाला देते हुए अदालत को बताया कि पुलिस ने एक बेहद खतरनाक साजिश के और सबूत जुटाए हैं। उन्होंने चेतावनी भरे लहजे में कहा कि देश एक ज्वालामुखी के शिखर पर बैठा है। यह एक प्रभावशाली और बेहद नाटकीय प्रस्तुति थी। पिरो ने मुकदमे का माहौल बदल दिया। हम अति आत्मविश्वास में आ गए थे और हमें याद दिलाया गया कि हम एक गंभीर आरोप का सामना कर रहे हैं। वकील ने हमसे कहा, "खुद को धोखा मत दो, तुम लोग जेल जा सकते हो।" उनकी चेतावनियों ने हमें गंभीर बना दिया।
तेरह महीने की प्रारंभिक जांच के बाद, मजिस्ट्रेट ने फैसला सुनाया कि उन्हें ट्रांसवाल सुप्रीम कोर्ट में राजद्रोह के आरोप में हम पर मुकदमा चलाने के लिए "पर्याप्त कारण" मिले हैं। जनवरी में अदालत स्थगित हो गई और शेष पंचानवे आरोपियों को मुकदमे के लिए पेश किया गया। वास्तविक मुकदमा कब शुरू होगा, यह हमें नहीं पता था।

26

एक दोपहर, तैयारी परीक्षा के दौरान अवकाश में, मैं अपने एक मित्र को ऑरलैंडो से विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल तक गाड़ी से ले जा रहा था और रास्ते में जोहान्सबर्ग के प्रमुख अश्वेत अस्पताल, बारागनाथ अस्पताल के पास से गुजरा। पास के एक बस स्टॉप से गुजरते हुए, मेरी नज़र एक खूबसूरत युवती पर पड़ी जो बस का इंतज़ार कर रही थी। उसकी सुंदरता ने मुझे मंत्रमुग्ध कर दिया और मैंने उसे और करीब से देखने के लिए अपना सिर घुमाया, लेकिन मेरी गाड़ी बहुत तेज़ी से निकल चुकी थी। उस युवती का चेहरा मेरे मन में बस गया - मैंने तो यहाँ तक सोचा कि गाड़ी मोड़कर दूसरी दिशा में निकल जाऊँ - लेकिन मैं आगे बढ़ गया।
कुछ सप्ताह बाद एक विचित्र संयोग घटित हुआ। मैं दफ्तर में था, और जब मैं ओलिवर से मिलने गया, तो मैंने देखा कि वही युवती अपने भाई के साथ ओलिवर की डेस्क के सामने बैठी थी। मैं दंग रह गया, और इस अद्भुत संयोग पर अपनी हैरानी या खुशी को छिपाने की पूरी कोशिश की। ओलिवर ने मुझे उनसे मिलवाया और बताया कि वे एक कानूनी मामले के सिलसिले में उनसे मिलने आए थे।
उनका नाम नोमज़ामो विनीफ्रेड मैडिकिज़ेला था, लेकिन लोग उन्हें विनी के नाम से जानते थे। उन्होंने हाल ही में जोहान्सबर्ग के जान हॉफमेयर स्कूल ऑफ सोशल वर्क से अपनी पढ़ाई पूरी की थी और बारागनाथ अस्पताल में पहली अश्वेत महिला सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम कर रही थीं। उस समय मैंने उनके बैकग्राउंड या कानूनी समस्या पर ज़्यादा ध्यान नहीं दिया, क्योंकि उनकी मौजूदगी ने मुझे अंदर तक झकझोर दिया था। मैं इस बारे में ज़्यादा सोच रहा था कि मैं उन्हें डेट पर कैसे बुलाऊँ, बजाय इसके कि हमारी फर्म उनका केस कैसे संभालेगी। मैं निश्चित रूप से यह तो नहीं कह सकता कि पहली नज़र में प्यार जैसी कोई चीज़ होती है या नहीं, लेकिन मैं इतना ज़रूर जानता हूँ कि विनी नोमज़ामो को पहली बार देखते ही मुझे पता चल गया था कि मैं उन्हें अपनी पत्नी बनाना चाहता हूँ।
विनी, स्कूल प्रिंसिपल से व्यवसायी बने सी. के. मडिकेज़ेला की ग्यारह संतानों में से छठी संतान थीं। उनका नाम नोमज़ामो था, जिसका अर्थ है संघर्ष करने वाली या कठिनाइयों का सामना करने वाली, एक ऐसा नाम जो मेरे नाम

की तरह ही भविष्यसूचक है। वह पोंडोलैंड के बिज़ाना से थीं, जो ट्रांसकेई के उस हिस्से से सटा हुआ क्षेत्र है जहाँ मैं पला-बढ़ा। वह अमांगुत्याना के फोंडो कबीले से थीं, और उनके परदादा मडिकेज़ेला थे, जो उन्नीसवीं सदी के नेटाल के एक शक्तिशाली सरदार थे और इम्फेकेन के समय ट्रांसकेई में आकर बस गए थे।
अगले दिन मैंने अस्पताल में विनी को फोन किया और जेन हॉफमेयर स्कूल से राजद्रोह मुकदमे के बचाव कोष के लिए धन जुटाने में मदद मांगी। यह महज़ उसे दोपहर के भोजन पर आमंत्रित करने का बहाना था, और मैंने उसे आमंत्रित कर दिया। मैं उसे शहर में उसके ठहरने की जगह से लेने गया और उसे अपने कार्यालय के पास एक भारतीय रेस्तरां में ले गया, जो उन कुछ जगहों में से एक था जहाँ अफ़्रीकी लोगों को खाना परोसा जाता था और जहाँ मैं अक्सर खाना खाता था। विनी बेहद आकर्षक थी, और यहाँ तक कि उसने पहले कभी करी का स्वाद नहीं चखा था और अपने मुँह को ठंडा करने के लिए लगातार पानी पी रही थी, इससे भी उसका आकर्षण और बढ़ गया।
दोपहर के भोजन के बाद मैं उसे जोहान्सबर्ग और एवेटन के बीच के एक इलाके में घुमाने ले गया, जो एल्डोराडो पार्क से थोड़ा आगे एक खुला मैदान था। हम लंबी घास पर चले, जो ट्रांसकेई की घास से बहुत मिलती-जुलती थी, जहाँ हम दोनों पले-बढ़े थे। मैंने उसे अपनी उम्मीदों और राजद्रोह मुकदमे की कठिनाइयों के बारे में बताया। मुझे उसी क्षण पता चल गया कि मैं उससे शादी करना चाहता हूँ - और मैंने उसे यह बात कह भी दी। उसकी आत्मा, उसका जुनून, उसकी जवानी, उसका साहस, उसका दृढ़ निश्चय - ये सब मैंने उसे पहली बार देखते ही महसूस कर लिया था।
अगले कुछ हफ्तों और महीनों में हम जब भी मौका मिलता, एक-दूसरे से मिलते रहे। वह ड्रिल हॉल और मेरे दफ्तर में मुझसे मिलने आती थी। वह मुझे जिम में कसरत करते देखने आती थी; वह थेम्बी, मकागाथो और मकाज़िवे से मिली। वह बैठकों और राजनीतिक चर्चाओं में आती थी; मैं उसे रिझाने के साथ-साथ उसे राजनीति में भी जागरूक कर रहा था। एक छात्रा के रूप में, विनी गैर-यूरोपीय एकता आंदोलन (NEUM) की ओर आकर्षित थी, क्योंकि उसका एक भाई उस पार्टी से जुड़ा हुआ था। बाद के वर्षों में, मैं उसकी इस शुरुआती निष्ठा को लेकर उसे चिढ़ाता था, और कहता था कि अगर वह मुझसे न मिली होती, तो उसकी शादी NEUM के किसी नेता से हो जाती।

एवलिन से तलाक के लिए अर्जी दाखिल करने के कुछ ही समय बाद, मैंने विनी से कहा कि उसे शादी की पोशाक की फिटिंग के लिए माइकल हार्मेल की पत्नी रे हार्मेल से मिलना चाहिए। रे एक एक्टिविस्ट होने के साथ-साथ एक बेहतरीन दर्जी भी थीं। मैंने विनी से पूछा कि वह कितनी ब्राइड्समेड रखना चाहती हैं, और उसे सुझाव दिया कि वह बिज़ाना जाकर अपने माता-पिता को बता दे कि हमारी शादी होने वाली है। विनी हंसते हुए लोगों से कहती है कि मैंने उसे कभी प्रपोज़ नहीं किया, लेकिन मैं हमेशा उससे कहता था कि मैंने उसे हमारी पहली ही डेट पर प्रपोज़ किया था और उस दिन से मैंने इसे स्वाभाविक मान लिया था।

राजद्रोह का मुकदमा अपने दूसरे वर्ष में था और इसने हमारी वकालत पर भारी दबाव डाला। मंडेला और ताम्बो का मामला बिखर रहा था क्योंकि हम वहां मौजूद नहीं हो सकते थे, और ओलिवर और मैं दोनों गंभीर आर्थिक कठिनाइयों का सामना कर रहे थे। चूंकि ओलिवर के खिलाफ आरोप हटा दिए गए थे, इसलिए वह कुछ हद तक स्थिति को सुधारने में सक्षम हुए; लेकिन नुकसान तो हो ही चुका था। हमारी व्यस्त वकालत, जो पहले ग्राहकों को मना कर देती थी, अब ग्राहकों के लिए गिड़गिड़ाने जैसी हो गई थी। मैं उमटाटा में खरीदी गई जमीन पर बकाया पचास पाउंड का भुगतान भी नहीं कर पा रहा था, और मुझे उसे छोड़ना पड़ा।

मैंने विनी को ये सब समझाया। मैंने उससे कहा कि शायद हमें समाजसेवी के तौर पर उसकी छोटी-सी तनख्वाह पर ही गुज़ारा करना पड़ेगा। विनी समझ गई और उसने कहा कि वो जोखिम उठाने और मेरा साथ देने के लिए तैयार है। मैंने उसे कभी सोने-हीरे का वादा नहीं किया था, और न ही मैं उसे ये दे सकता था।
शादी 14 जून, 1958 को हुई। मैंने अपने प्रतिबंध आदेशों में ढील देने के लिए आवेदन किया और मुझे जोहान्सबर्ग से छह दिन की छुट्टी मिल गई। मैंने विनी के पिता को पारंपरिक दहेज (लोबोला) का भुगतान करने की भी व्यवस्था की।
शादी का जुलूस 12 जून की सुबह तड़के जोहान्सबर्ग से निकला और हम उसी दिन दोपहर बाद बिज़ाना पहुँचे। हमेशा की तरह, जब कहीं जाने पर रोक लगी होती है, तो सबसे पहले मैं पुलिस स्टेशन गया और अपने आने की सूचना दी। शाम ढलते ही,

करने के लिए मौजूद थे। एक भेड़ का वध किया गया था और हमारे सम्मान में एक दावत का आयोजन किया गया था।
हनीमून के लिए न तो समय था और न ही पैसा, और जीवन जल्दी ही मुकदमे की व्यस्त दिनचर्या में सिमट गया। हम सुबह बहुत जल्दी उठते थे, आमतौर पर लगभग चार बजे। मेरे निकलने से पहले विनी नाश्ता तैयार करती थी। फिर मैं बस से मुकदमे के लिए जाता था, या सुबह-सुबह अपने दफ्तर जाता था। जितना हो सके, दोपहर और शाम का समय दफ्तर में ही बीतता था, ताकि हम अपना काम जारी रख सकें और कुछ पैसे कमा सकें। शामें अक्सर राजनीतिक कामों और बैठकों में बीतती थीं। एक स्वतंत्रता सेनानी की पत्नी अक्सर विधवा जैसी होती है, भले ही उसका पति जेल में न हो। हालाँकि मुझ पर राजद्रोह का मुकदमा चल रहा था, विनी ने मुझे उम्मीद की किरण दिखाई। मुझे ऐसा लगा जैसे मुझे जीवन में एक नया और दूसरा मौका मिला हो। उसके लिए मेरे प्यार ने मुझे आगे आने वाले संघर्षों के लिए अतिरिक्त शक्ति दी।

27

1958 में देश के सामने सबसे बड़ी घटना आम चुनाव थी — “आम” केवल इस अर्थ में कि इसमें केवल तीन मिलियन श्वेत ही भाग ले सकते थे, लेकिन तेरह मिलियन अफ़्रीकी नहीं। हमने विरोध प्रदर्शन करने या न करने पर बहस की। मुख्य मुद्दा यह था: क्या केवल श्वेतों के भाग लेने वाले चुनाव से अफ़्रीकी लोगों पर कोई फर्क पड़ेगा? एएनसी के अनुसार, इसका उत्तर यह था कि प्रक्रिया से बाहर रखे जाने पर भी हम उदासीन नहीं रह सकते थे। हमें बाहर रखा गया था, लेकिन हम अप्रभावित नहीं थे: नेशनल पार्टी की हार हमारे और सभी अफ़्रीकी लोगों के हित में थी।
एएनसी ने अन्य कांग्रेसों और एसएसीटीयू (दक्षिण अफ्रीकी ट्रेड यूनियन कांग्रेस) के साथ मिलकर अप्रैल में चुनावों के दौरान तीन दिवसीय हड़ताल का आह्वान किया। कारखानों और दुकानों में, रेलवे स्टेशनों और बस स्टॉप पर, बार और अस्पतालों में, और घर-घर जाकर पर्चे बांटे गए। "नैशनल पार्टी को जाना होगा!" इस अभियान का मुख्य नारा था। हमारी तैयारियों ने सरकार को

चिंतित कर दिया; चुनाव से चार दिन पहले, सरकार ने फैसला सुनाया कि किसी भी शहरी क्षेत्र में दस से अधिक अफ्रीकियों का जमावड़ा अवैध है।
किसी भी नियोजित विरोध प्रदर्शन, बहिष्कार या काम से अनुपस्थिति से एक रात पहले, आयोजन के नेता पुलिस की अचानक होने वाली कार्रवाई से बचने के लिए भूमिगत हो जाते थे। पुलिस उस समय चौबीसों घंटे हमारी निगरानी नहीं कर रही थी, इसलिए एक-दो दिन के लिए गायब हो जाना आसान था। हड़ताल से एक रात पहले, वाल्टर, ओलिवर, मूसा कोटाने, जे. बी. मार्क्स, डैन ट्लोम, डूमा नोकवे और मैं ऑरलैंडो में मेरे चिकित्सक डॉ. नथाटो मोटलाना के घर पर रुके। अगली सुबह बहुत जल्दी, हम उसी मोहल्ले के एक दूसरे घर में चले गए, जहाँ से हम शहर के अन्य नेताओं से टेलीफोन पर संपर्क में रह सके। उन दिनों संचार व्यवस्था बहुत कुशल नहीं थी, खासकर उन बस्तियों में जहाँ बहुत कम लोगों के पास टेलीफोन थे, और हड़ताल की निगरानी करना एक मुश्किल काम था। हमने बस्तियों के रणनीतिक स्थानों पर कुछ लोगों को भेजा ताकि वे ट्रेनों, बसों और टैक्सियों पर नज़र रखें और पता लगा सकें कि लोग काम पर जा रहे हैं या नहीं। वे बुरी खबर लेकर लौटे: बसें और ट्रेनें भरी हुई थीं; लोग हड़ताल को नज़रअंदाज़ कर रहे थे। तभी हमें पता चला कि जिस सज्जन के घर में हम ठहरे हुए थे, वे कहीं नज़र नहीं आ रहे थे—वे चुपके से निकलकर काम पर चले गए थे। हड़ताल नाकाम होती दिख रही थी।
हमने हड़ताल रद्द करने का फैसला किया। तीन दिन की हड़ताल जो पहले दिन ही रद्द हो जाती है, वह सिर्फ एक दिन की विफलता होती है; लगातार तीन दिन तक विफल रहने वाली हड़ताल पूरी तरह से नाकामयाबी होती है। पीछे हटना अपमानजनक था, लेकिन हमें लगा कि पीछे न हटना और भी अपमानजनक होता। हड़ताल रद्द करने का बयान जारी करने के एक घंटे से भी कम समय में, सरकारी साउथ अफ्रीकन ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन (एसएबीसी) ने हमारी घोषणा पूरी तरह से पढ़ डाली। आम तौर पर, एसएबीसी एएनसी को पूरी तरह से नजरअंदाज कर देता था; हम केवल हार की स्थिति में ही उनके प्रसारण में शामिल होते थे। इस बार, उन्होंने हड़ताल रद्द करने पर हमारी प्रशंसा भी की। इससे मूसा कोटाने बहुत नाराज हो गए। उन्होंने सिर हिलाते हुए कहा, "एसएबीसी से प्रशंसा पाना, यह तो हद से ज्यादा है।" कोटाने ने सवाल उठाया कि क्या हमने जल्दबाजी में कदम उठाया और सरकार के हाथों में खेल गए। यह एक जायज चिंता थी, लेकिन फैसले अहंकार या शर्मिंदगी के कारण नहीं, बल्कि विशुद्ध रणनीति के आधार पर

लिए जाने चाहिए - और यहां रणनीति का मतलब था हड़ताल रद्द करना। दुश्मन ने हमारे आत्मसमर्पण का फायदा उठाया, इसका मतलब यह नहीं था कि हमारा आत्मसमर्पण करना गलत था।
लेकिन कुछ इलाकों में हड़ताल रद्द होने की खबर ही नहीं पहुंची, जबकि अन्य ने हमारी अपील को अनसुना कर दिया। एएनसी के गढ़ पोर्ट एलिजाबेथ और केप के अन्य इलाकों में पहले दिन की तुलना में दूसरे और तीसरे दिन प्रतिक्रिया बेहतर रही। हालांकि, कुल मिलाकर हम इस तथ्य को छिपा नहीं सके कि हड़ताल असफल रही। मानो इतना ही काफी नहीं था, चुनाव में राष्ट्रवादियों ने अपने वोटों में 10 प्रतिशत से अधिक की वृद्धि दर्ज की।
हमने इस बात पर गरमागरम बहस की कि क्या हमें दबाव बनाने के उपायों का सहारा लेना चाहिए था। क्या हमें धरना-प्रदर्शन करना चाहिए था, जो आम तौर पर लोगों को उनके कार्यस्थल में प्रवेश करने से रोकते हैं? कट्टरपंथियों का सुझाव था कि यदि हमने धरना-प्रदर्शन किया होता, तो हड़ताल सफल हो जाती। लेकिन मैंने हमेशा ऐसे तरीकों का विरोध किया है। जनता के स्वेच्छा से दिए गए समर्थन पर भरोसा करना ही सबसे अच्छा है; अन्यथा, वह समर्थन कमजोर और क्षणभंगुर होता है। संगठन एक आश्रय स्थल होना चाहिए, न कि जेल। हालांकि, यदि संगठन या जनता का बहुमत किसी निर्णय का समर्थन करता है, तो कुछ मामलों में बहुमत के हित में असंतुष्ट अल्पसंख्यक के खिलाफ दबाव का इस्तेमाल किया जा सकता है। अल्पसंख्यक, चाहे कितना भी मुखर क्यों न हो, बहुमत की इच्छा को विफल नहीं कर सकता।
अपने घर में, मैंने एक अलग तरह का दबाव बनाने की कोशिश की, लेकिन सफलता नहीं मिली। इडा मथिमखुलु, जो मेरी ही उम्र की सोथो भाषा बोलने वाली महिला थीं, उस समय हमारी घरेलू सहायिका थीं। इडा एक कर्मचारी से ज़्यादा परिवार के सदस्य जैसी थीं और मैं उन्हें कगैत्सेदी कहकर बुलाती थी, जिसका अर्थ है "बहन", और यह स्नेह का एक शब्द है। इडा घर को सैन्य कुशलता से चलाती थीं, और विनी और मैं उनके आदेशों का सहर्ष पालन करते थे; मैं अक्सर उनके आदेश पर छोटे-मोटे काम करने के लिए बाहर चली जाती थी।
हड़ताल से एक दिन पहले, मैं इडा और उसके बारह वर्षीय बेटे को घर छोड़ रहा था, और मैंने उनसे कहा कि अगले दिन मुझे कुछ कमीज़ें धुलवाकर इस्त्री करवानी हैं। इसके बाद एक लंबा और असामान्य सन्नाटा छा गया। फिर इडा मेरी

ओर मुड़ी और लगभग छिपी हुई नफ़रत के साथ बोली, "आप अच्छी तरह जानते हैं कि मैं यह नहीं कर सकती।"
“क्यों नहीं?” मैंने उसकी प्रतिक्रिया की तीव्रता से आश्चर्यचकित होकर उत्तर दिया।
“क्या आप भूल गए हैं कि मैं भी एक मजदूर हूँ?” उसने कुछ संतुष्टि के साथ कहा। “मैं कल अपने लोगों और साथी मजदूरों के साथ हड़ताल पर रहूँगी!”
मेरे बेटे ने मेरी शर्मिंदगी देखी और अपने बचकाने अंदाज़ में यह कहकर माहौल को हल्का करने की कोशिश की कि "अंकल नेल्सन" हमेशा उसे बहन की तरह मानते थे, कामवाली की तरह नहीं। चिढ़कर उसने अपने भले-बुरे बेटे पर पलटवार किया और कहा, "बेटा, जब मैं उस घर में अपने अधिकारों के लिए संघर्ष कर रही थी, तब तुम कहाँ थे? अगर मैंने तुम्हारे 'अंकल नेल्सन' के खिलाफ़ ज़ोरदार लड़ाई न लड़ी होती, तो आज मुझे बहन की तरह न माना जाता!" अगले दिन इडा काम पर नहीं आई और मेरे कपड़े बिना इस्त्री किए रह गए।

28

महिलाओं के लिए पास का मुद्दा जितना संवेदनशील था, उतना शायद ही किसी और मुद्दे ने हो। राज्य ने महिलाओं पर पास थोपने के अपने संकल्प में कोई कमी नहीं आने दी थी और महिलाओं ने भी इसके विरोध में अपना दृढ़ निश्चय नहीं खोया था। हालांकि सरकार अब पास को "संदर्भ पुस्तिका" कहती थी, लेकिन महिलाएं मूर्ख नहीं बनीं: "संदर्भ पुस्तिका" प्रस्तुत न करने पर उन्हें अब भी दस पाउंड का जुर्माना या एक महीने की कैद हो सकती थी।
1957 में, एएनसी महिला लीग के प्रयासों से प्रेरित होकर, देश भर की महिलाओं ने, ग्रामीण और शहरी क्षेत्रों में, राज्य द्वारा अनिवार्य पास रखने के आदेश का पुरजोर विरोध किया। ये महिलाएं साहसी, दृढ़, उत्साही और अथक थीं, और पास के खिलाफ उनके विरोध ने सरकार विरोधी प्रदर्शनों का एक ऐसा मानक स्थापित किया जिसकी बराबरी कभी नहीं की जा सकी। जैसा कि चीफ लुथुली ने कहा, "जब महिलाएं संघर्ष में सक्रिय रूप से भाग लेना शुरू कर देती हैं, तो धरती की कोई भी शक्ति हमें अपने जीवनकाल में स्वतंत्रता प्राप्त करने से नहीं रोक सकती।"
दक्षिणपूर्वी ट्रांसवाल के सभी इलाकों में, स्टैंडर्टन, हीडलबर्ग, बालफोर और अन्य छोटे कस्बों में, हजारों महिलाओं ने विरोध प्रदर्शन किया। राजद्रोह मुकदमे की कार्यवाही में अवकाश के दौरान, फ्रांसिस बार्ड और फ्लोरेंस माटोमेला ने अपने गृहनगर पोर्ट एलिजाबेथ में महिलाओं को पास लेने से इनकार करने के लिए संगठित किया। अक्टूबर में, जोहान्सबर्ग में, महिलाओं का एक बड़ा समूह केंद्रीय पास कार्यालय में इकट्ठा हुआ और पास लेने आई महिलाओं और कार्यालय में काम करने वाले क्लर्कों को भगा दिया, जिससे कार्यालय का कामकाज ठप्प हो गया। पुलिस ने सैकड़ों महिलाओं को गिरफ्तार कर लिया।
इन गिरफ्तारियों के कुछ ही समय बाद, विनी और मैं रात के खाने के बाद आराम कर रहे थे, तभी उसने चुपके से मुझे बताया कि वह ऑरलैंडो की उन महिलाओं के समूह में शामिल होने का इरादा रखती है जो अगले दिन पास ऑफिस के सामने विरोध प्रदर्शन करेंगी। मैं थोड़ा चौंक गया, और हालांकि मैं उसकी प्रतिबद्धता से खुश था और उसके साहस की प्रशंसा करता था, मैं थोड़ा चिंतित भी था। हमारी

शादी के बाद से विनी का राजनीतिकरण बढ़ता जा रहा था, और वह एएनसी की महिला लीग की ऑरलैंडो वेस्ट शाखा में शामिल हो गई थी, जिसे मैंने प्रोत्साहित किया था।
मैंने उससे कहा कि मैं उसके फैसले का स्वागत करता हूँ, लेकिन मुझे उसे उसके इस कदम की गंभीरता के बारे में आगाह करना होगा। मैंने कहा कि एक ही झटके में उसका जीवन पूरी तरह बदल जाएगा। अफ़्रीकी मानकों के अनुसार, विनी एक संपन्न परिवार से थी और दक्षिण अफ़्रीका में जीवन की कुछ अप्रिय वास्तविकताओं से बची हुई थी। कम से कम, उसे कभी इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ी थी कि उसे अगला भोजन कहाँ से मिलेगा। हमारी शादी से पहले, वह अपेक्षाकृत धनी और सुख-सुविधाओं वाले लोगों के बीच पली-बढ़ी थी, एक ऐसा जीवन जो स्वतंत्रता सेनानी के अक्सर तंगहाली भरे जीवन से बिल्कुल अलग था। मैंने उसे बताया कि अगर उसे गिरफ्तार कर लिया गया तो प्रांतीय प्रशासन द्वारा उसे निश्चित रूप से नौकरी से निकाल दिया जाएगा - हम दोनों जानते थे कि उसकी थोड़ी सी आमदनी से ही घर का खर्च चलता था - और वह शायद फिर कभी सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में काम नहीं कर पाएगी, क्योंकि जेल जाने के कलंक के कारण सरकारी एजेंसियां उसे नौकरी देने से कतराएंगी। अंत में, वह गर्भवती थी, और मैंने उसे जेल की शारीरिक कठिनाइयों और अपमानों के बारे में चेतावनी दी। मेरा जवाब कठोर लग सकता है, लेकिन एक पति और संघर्ष के नेता के रूप में, मुझे यह जिम्मेदारी महसूस हुई कि मैं उसे उसके इस कदम के परिणामों के बारे में यथासंभव स्पष्ट रूप से बताऊं। मेरे मन में भी मिली- जुली भावनाएं थीं, क्योंकि एक पति और एक नेता की चिंताएं हमेशा एक जैसी नहीं होतीं।
लेकिन विनी एक दृढ़ निश्चयी महिला हैं, और मुझे लगता है कि मेरी निराशावादी प्रतिक्रिया ने उनके संकल्प को और मजबूत कर दिया। उन्होंने मेरी सारी बातें सुनीं और मुझे बताया कि उन्होंने अपना मन बना लिया है। अगली सुबह मैं जल्दी उठकर उनके लिए नाश्ता बनाने गई, और हम सिसुलुस के घर वाल्टर की पत्नी अल्बर्टिना से मिलने गए, जो विरोध प्रदर्शन की प्रमुख नेताओं में से एक थीं। फिर हम ऑरलैंडो के फेफेनी स्टेशन गए, जहाँ से महिलाएं ट्रेन पकड़कर शहर जाने वाली थीं। ट्रेन में चढ़ने से पहले मैंने उन्हें गले लगाया। विनी घबराई हुई थीं, फिर भी दृढ़ थीं, उन्होंने ट्रेन से मुझे हाथ हिलाकर अभिवादन किया, और मुझे ऐसा लगा जैसे वह एक लंबी और खतरनाक

यात्रा पर निकल रही हों, जिसका अंत हम दोनों में से किसी को भी नहीं पता था।

जोहान्सबर्ग के केंद्रीय पास कार्यालय के बाहर सैकड़ों महिलाएं जमा हो गईं। उनमें बूढ़ी और जवान दोनों थीं; कुछ ने अपने बच्चों को पीठ पर उठाया हुआ था, कुछ ने पारंपरिक कंबल ओढ़े हुए थे, जबकि कुछ ने शानदार सूट पहने हुए थे। वे गाती, मार्च करती और नारे लगाती रहीं। कुछ ही मिनटों में, दर्जनों सशस्त्र पुलिसकर्मियों ने उन्हें घेर लिया और सभी को गिरफ्तार कर लिया, वैन में भरकर मार्शल स्क्वायर पुलिस स्टेशन ले गए। महिलाएं पूरे समय खुश थीं; जब उन्हें ले जाया जा रहा था, तो कुछ ने पत्रकारों से कहा, "हमारी मैडमों को बता देना कि हम कल काम पर नहीं आएंगी!" कुल मिलाकर, एक हजार से अधिक महिलाओं को गिरफ्तार किया गया।
मुझे यह इसलिए नहीं पता था कि मैं गिरफ्तार महिलाओं में से एक का पति था, बल्कि इसलिए पता था कि मंडेला और टैम्बो को गिरफ्तार की गई अधिकांश महिलाओं का प्रतिनिधित्व करने के लिए बुलाया गया था। मैं कैदियों से मिलने और जमानत का इंतजाम करने के लिए तुरंत मार्शल स्क्वायर की ओर चल पड़ा। मुझे विनी से मिलने का मौका मिला, जो मुझे देखकर मुस्कुरा उठी और एक खाली पुलिस कोठरी में भी वह बेहद खुश लग रही थी। ऐसा लग रहा था मानो उसने मुझे कोई अनमोल तोहफा दिया हो, जिसे देखकर मैं बहुत खुश हो जाऊंगा। मैंने उससे कहा कि मुझे उस पर गर्व है, लेकिन मैं रुककर उससे बात नहीं कर सकता था क्योंकि मुझे काफी कानूनी काम करना था।
दूसरे दिन के अंत तक, गिरफ्तारियों की संख्या बढ़ गई थी और लगभग दो हज़ार महिलाओं को जेल में डाल दिया गया था, जिनमें से कई को मुकदमे की प्रतीक्षा में फोर्ट में भेज दिया गया था। इससे न केवल ओलिवर और मेरे लिए, बल्कि पुलिस और जेल अधिकारियों के लिए भी गंभीर समस्याएँ खड़ी हो गईं। उन सभी को रखने के लिए पर्याप्त जगह नहीं थी। कंबल, चटाई और शौचालय बहुत कम थे, और भोजन भी बहुत कम था। फोर्ट में हालात तंग और गंदे थे। जबकि एएनसी के कई सदस्य, जिनमें मैं भी शामिल था, महिलाओं को जमानत पर छुड़ाने के लिए उत्सुक थे, महिला लीग की राष्ट्रीय अध्यक्ष लिलियन न्गोयी और दक्षिण अफ्रीकी महिला संघ की सचिव हेलेन जोसेफ का मानना था कि विरोध को वास्तविक और

प्रभावी बनाने के लिए, महिलाओं को मजिस्ट्रेट द्वारा तय की गई सजा काटनी चाहिए। मैंने उनका विरोध किया, लेकिन मुझे स्पष्ट शब्दों में कहा गया कि यह मामला महिलाओं का है और एएनसी - साथ ही चिंतित पतियों - को इसमें दखल नहीं देना चाहिए। मैंने लिलियन से कहा कि मुझे लगता है कि उसे फैसला लेने से पहले खुद उन महिलाओं से इस मुद्दे पर चर्चा करनी चाहिए, और मैं उसे उन कोठरियों तक ले गया जहाँ वह कैदियों से बात कर सकती थी। कई महिलाएँ जमानत पाने के लिए बेताब थीं और जेल में उनका क्या हाल होगा, इसके लिए वे ठीक से तैयार नहीं थीं। एक समझौते के तौर पर, मैंने लिलियन को सुझाव दिया कि महिलाएँ दो सप्ताह जेल में बिताएँ, जिसके बाद हम उन्हें जमानत पर छुड़ा लेंगे। लिलियन मान गई।
अगले दो हफ्तों में, मैंने महिलाओं की जमानत का इंतजाम करने के लिए अदालत में कई घंटे बिताए। कुछ महिलाएं निराश थीं और उन्होंने अपना गुस्सा मुझ पर निकाला। एक महिला ने मुझसे कहा, "मंडेला, मैं आपके इस मामले से तंग आ चुकी हूं। अगर यह आज खत्म नहीं हुआ तो मैं फिर कभी अदालत में पेश नहीं होऊंगी।" रिश्तेदारों और चंदा इकट्ठा करने वाली संस्थाओं की मदद से, हम दो हफ्तों के भीतर उन सभी को जमानत पर छुड़वाने में कामयाब रहे।
विनी को जेल के अनुभव से कोई खास परेशानी नहीं हुई थी। अगर उसे कोई तकलीफ हुई भी होती, तो वो मुझे बताती भी नहीं। जेल में रहते हुए विनी की दोस्ती दो किशोर अफ्रीकी वार्ड्रेस से हो गई। वे सहानुभूति और जिज्ञासा से भरी थीं, और विनी के जमानत पर रिहा होने के बाद, हमने उन्हें अपने घर आने का न्योता दिया। उन्होंने न्योता स्वीकार कर लिया और ट्रेन से ऑरलैंडो आईं। हमने उन्हें घर पर दोपहर का भोजन कराया और उसके बाद विनी उन्हें कस्बे की सैर कराने ले गईं। विनी और दोनों वार्ड्रेस लगभग एक ही उम्र की थीं और उनकी आपस में खूब बनती थी। वे ऐसे हंसती थीं जैसे बहनें हों। दोनों लड़कियों ने एक सुखद दिन बिताया और विनी को धन्यवाद देते हुए कहा कि वे फिर आना चाहेंगी। लेकिन ऐसा नहीं हो सका, क्योंकि ऑरलैंडो जाते समय उन्हें मजबूरी में एक गैर-श्वेत डिब्बे में बैठना पड़ा। (ऑरलैंडो के लिए कोई श्वेत ट्रेन नहीं थी, क्योंकि कोई श्वेत व्यक्ति ऑरलैंडो जाता ही नहीं था।) नतीजतन, उन्होंने सबका ध्यान अपनी ओर खींच लिया और जल्द ही यह बात सबको पता चल गई कि फोर्ट की दो अफ्रीकी वार्ड्रेस विनी और मुझसे मिलने आई थीं। यह हमारे लिए कोई समस्या नहीं थी, लेकिन उनके लिए यह एक समस्या बन गई: जेल

[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]

29

जनवरी में प्रारंभिक सुनवाई समाप्त होने के बाद से छह महीनों तक हम अपने औपचारिक मुकदमे की प्रतीक्षा और तैयारी में लगे रहे, जो अगस्त 1958 में शुरू होना था। सरकार ने एक विशेष उच्च न्यायालय का गठन किया - तीन सदस्यीय न्यायालय के अध्यक्ष न्यायमूर्ति एफ. एल. रम्पफ, न्यायमूर्ति केनेडी और न्यायमूर्ति लुडोर्फ। यह पैनल आशाजनक नहीं था: इसमें तीन श्वेत पुरुष थे, जिनके सत्तारूढ़ दल से संबंध थे। यद्यपि न्यायाधीश रम्पफ एक सक्षम व्यक्ति थे और औसत श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी की तुलना में अधिक जानकार थे, फिर भी उनके बारे में अफवाह थी कि वे ब्रोएडरबॉन्ड के सदस्य थे, जो एक गुप्त अफ़्रीकानर संगठन था जिसका उद्देश्य अफ़्रीकानर सत्ता को मजबूत करना था। न्यायाधीश लुडोर्फ नेशनल पार्टी के एक जाने-माने सदस्य थे, जैसा कि न्यायाधीश केनेडी थे। केनेडी को फांसी देने वाले न्यायाधीश के रूप में जाना जाता था, क्योंकि उन्होंने दो श्वेत पुलिसकर्मियों की हत्या के लिए तेईस अफ़्रीकी लोगों को फांसी पर चढ़ाया था।
मामले की सुनवाई दोबारा शुरू होने से कुछ ही समय पहले, राज्य ने हमारे साथ एक और अप्रिय चाल चली। उन्होंने घोषणा की कि मुकदमे का स्थान जोहान्सबर्ग से बदलकर प्रिटोरिया कर दिया जाएगा, जो छत्तीस मील दूर है। मुकदमा एक भव्य पूर्व यहूदी प्रार्थनास्थल में चलेगा जिसे अदालत में बदल दिया गया था। सभी आरोपी और हमारी बचाव टीम जोहान्सबर्ग में रहते थे, इसलिए हमें हर दिन प्रिटोरिया जाना पड़ेगा। अब मुकदमे में हमारा और भी अधिक समय और पैसा खर्च होगा - जो हमारे पास प्रचुर मात्रा में नहीं था। जिन लोगों की नौकरियां बची थीं, वे इसलिए बच पाई थीं क्योंकि अदालत उनके कार्यस्थल के पास थी। स्थान बदलना हमारे स्वाभाविक समर्थकों से हमें अलग करके हमारा मनोबल तोड़ने का भी एक प्रयास था। प्रिटोरिया नेशनल पार्टी का गढ़ था, और एएनसी की वहां नाममात्र की उपस्थिति थी।
बानवे आरोपियों में से लगभग सभी लोग प्रिटोरिया जाने के लिए एक भारी-भरकम, असुविधाजनक बस में सफर करते थे, जिसकी सीटें लकड़ी की सख्त पट्टियों से बनी थीं। यह बस हर दिन सुबह छह बजे निकलती थी और ओल्ड सिनेगॉग पहुँचने में दो घंटे का समय लेती थी। हमारी आने-जाने की यात्रा में लगभग पाँच घंटे लगते

थे - यह समय भोजन, किराया और बच्चों के कपड़ों के लिए पैसे कमाने में कहीं बेहतर तरीके से इस्तेमाल किया जा सकता था।
एक बार फिर हमें एक शानदार और जुझारू बचाव दल का सौभाग्य प्राप्त हुआ, जिसका नेतृत्व वकील इज़राइल मैसेल्स ने कुशलतापूर्वक किया और ब्रैम फिशर, रेक्स वेल्श, वर्नोन बेरेंज, सिडनी केंट्रिज, टोनी ओ'डॉउड और जी. निकोलस ने उनका सहयोग किया। मुकदमे के पहले दिन, उन्होंने एक जोखिम भरी कानूनी रणनीति अपनाकर अपनी जुझारू क्षमता का प्रदर्शन किया, जिस पर हममें से कई लोगों ने वकीलों से परामर्श करके निर्णय लिया था। इस्सी मैसेल्स नाटकीय ढंग से खड़ी हुईं और न्यायाधीश लुडॉर्फ और रम्पफ को इस आधार पर मामले से हटाने के लिए आवेदन किया कि दोनों के हित टकराव के कारण वे हमारे मामले के निष्पक्ष मध्यस्थ नहीं हो सकते। अदालत में हल्की फुसफुसाहट सुनाई दी। बचाव पक्ष ने तर्क दिया कि रम्पफ, 1952 के अवज्ञा मुकदमे में न्यायाधीश के रूप में, वर्तमान अभियोग के कुछ पहलुओं पर पहले ही फैसला सुना चुके थे और इसलिए न्याय के हित में यह उचित नहीं था कि वे इस मामले की सुनवाई करें। हमने तर्क दिया कि लुडोर्फ पक्षपाती थे क्योंकि उन्होंने 1954 में पुलिस के वकील के रूप में सरकार का प्रतिनिधित्व किया था जब हेरोल्ड वोल्पे ने पीपुल्स कांग्रेस की बैठक से पुलिस को बाहर निकालने के लिए अदालत से निषेधाज्ञा मांगी थी।
यह एक खतरनाक रणनीति थी, क्योंकि हम इस कानूनी लड़ाई को आसानी से जीत सकते थे, लेकिन युद्ध हार सकते थे। हालाँकि हम लुडॉर्फ और रुम्फ दोनों को नेशनल पार्टी के प्रबल समर्थक मानते थे, लेकिन देश में उनसे कहीं अधिक बुरे न्यायाधीश थे जो उनकी जगह ले सकते थे। वास्तव में, जहाँ हम लुडॉर्फ के पद छोड़ने के लिए उत्सुक थे, वहीं हम गुप्त रूप से आशा कर रहे थे कि रुम्फ, जिनका हम एक ईमानदार मध्यस्थ के रूप में सम्मान करते थे, स्वयं को इस मामले से अलग न करें। रुम्फ हमेशा कानून के लिए खड़े रहे, चाहे उनके अपने राजनीतिक विचार कुछ भी हों, और हमें विश्वास था कि कानून की दृष्टि से हम केवल निर्दोष ही साबित हो सकते हैं।
उस सोमवार को, जब लाल वस्त्र पहने तीनों न्यायाधीश अदालत में दाखिल हुए, तो माहौल में उत्सुकता का भाव था। न्यायाधीश लुडोर्फ ने घोषणा की कि वे इस मामले से हट रहे हैं, और कहा कि वे पिछले मामले के बारे में पूरी तरह भूल चुके हैं। लेकिन रम्पफ ने खुद को अलग करने से इनकार कर दिया और इसके बजाय

आश्वासन दिया कि अवज्ञा मामले में उनके फैसले का इस मामले पर कोई प्रभाव नहीं पड़ेगा। लुडोर्फ की जगह राज्य ने न्यायमूर्ति बेकर को नियुक्त किया, जो एक ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें हम शुरू से ही पसंद करते थे और जिनका नेशनल पार्टी से कोई संबंध नहीं था। हम रम्पफ के इस फैसले से खुश थे।
इस पहले दांव की सफलता के बाद, हमने दूसरा दांव आजमाया, जो लगभग उतना ही जोखिम भरा था। हमने अभियोग का खंडन करते हुए एक लंबी और विस्तृत बहस शुरू की। हमने अन्य बातों के अलावा यह दावा किया कि अभियोग अस्पष्ट था और उसमें स्पष्टता की कमी थी। हमने यह भी तर्क दिया कि राजद्रोह साबित करने के लिए हिंसा की योजना बनाना आवश्यक था, और अभियोजन पक्ष को यह साबित करने के लिए उदाहरण प्रस्तुत करने की आवश्यकता थी कि हमारा इरादा हिंसक कार्रवाई करने का था। हमारी बहस के अंत तक यह स्पष्ट हो गया कि तीनों न्यायाधीश सहमत थे। अगस्त में, अदालत ने साम्यवाद दमन अधिनियम के तहत लगाए गए दो आरोपों में से एक को रद्द कर दिया। 13 अक्टूबर को, दो और महीनों की कानूनी खींचतान के बाद, अभियोजन पक्ष ने अचानक अभियोग को पूरी तरह से वापस लेने की घोषणा कर दी। यह असाधारण था, लेकिन हम राज्य के कुटिल तरीकों से इतने भली-भांति परिचित थे कि जश्न नहीं मना सके। एक महीने बाद अभियोजन पक्ष ने एक नया, अधिक सावधानीपूर्वक तैयार किया गया अभियोग जारी किया और घोषणा की कि केवल तीस आरोपियों के खिलाफ मुकदमा चलेगा; बाकी पर बाद में मुकदमा चलाया जाएगा। मैं उन पहले तीस लोगों में शामिल था, जो सभी एएनसी के सदस्य थे।
नए अभियोग के तहत, अभियोजन पक्ष को अब हिंसक कार्रवाई करने के इरादे को साबित करना आवश्यक था। जैसा कि पिरो ने कहा, आरोपियों को पता था कि स्वतंत्रता चार्टर के लक्ष्यों की प्राप्ति में "राज्य को हिंसा द्वारा उखाड़ फेंकना अनिवार्य होगा।" कानूनी दांव-पेच 1959 के मध्य तक जारी रहे, जब अदालत ने शेष इकसठ आरोपियों के खिलाफ क्राउन के अभियोग को खारिज कर दिया। महीनों तक, अदालत में होने वाली गतिविधियाँ कल्पना से परे नीरस कानूनी दांव-पेच तक ही सीमित रहीं। सरकार के मामले की कमज़ोरी को उजागर करने में बचाव पक्ष की सफलताओं के बावजूद, राज्य हठपूर्वक अड़ा रहा। जैसा कि न्याय मंत्री ने कहा, "यह मुकदमा चलेगा, चाहे इसमें कितने भी करोड़ों पाउंड खर्च हों। इससे क्या फर्क पड़ता है कि इसमें कितना समय लगता है?"

* * *

4 फरवरी, 1958 की आधी रात के ठीक बाद, मैं एक बैठक से घर लौटा तो विनी अकेली और दर्द से कराह रही थी, मानो उसे प्रसव पीड़ा होने वाली हो। मैं उसे तुरंत बारागनाथ अस्पताल ले गया, लेकिन मुझे बताया गया कि प्रसव में अभी कई घंटे लगेंगे। मैं तब तक वहीं रुका रहा जब तक मुझे प्रिटोरिया में मुकदमे के लिए रवाना नहीं होना पड़ा। जैसे ही बैठक समाप्त हुई, मैं डूमा नोकवे के साथ तेजी से वापस लौटा और माँ और बेटी को बिल्कुल स्वस्थ पाया। मैंने अपनी नवजात बेटी को अपनी बाहों में लिया और उसे सच्ची मंडेला घोषित किया। मेरे रिश्तेदार, चीफ मडिंगी ने उसका नाम ज़ेनानी रखने का सुझाव दिया, जिसका अर्थ है "तुमने दुनिया को क्या दिया है?" - एक काव्यात्मक नाम जो एक चुनौती को दर्शाता है, यह बताता है कि व्यक्ति को समाज में कुछ योगदान देना चाहिए। यह एक ऐसा नाम है जो केवल मिलता नहीं है, बल्कि उसे सार्थक रूप से जीना पड़ता है।
मेरी माँ विनी की मदद करने के लिए ट्रांसकेई से आई थीं और उन्होंने ज़ेनानी को खोसा रीति से बपतिस्मा देने की योजना बनाई थी। इसके लिए उन्होंने एक आदिवासी वैद्य (इन्यांगा) को बुलाकर बच्ची को पारंपरिक जड़ी- बूटियों से स्नान कराने का प्रस्ताव रखा था। लेकिन विनी ने इसका कड़ा विरोध किया, क्योंकि उनका मानना था कि यह अस्वास्थ्यकर और पुराना तरीका है। इसके बजाय, विनी ने ज़ेनानी के पूरे शरीर पर जैतून का तेल मल दिया, उसके शरीर पर जॉनसन बेबी पाउडर लगाया और उसके पेट में शार्क का तेल भर दिया।
विनी के उठते-बैठते ही मैंने घर की नई माँ को गाड़ी चलाना सिखाने का जिम्मा उठाया। उन दिनों गाड़ी चलाना मर्दों का काम माना जाता था; बहुत कम औरतें, खासकर अफ्रीकी औरतें, ड्राइवर की सीट पर नज़र आती थीं। लेकिन विनी आत्मनिर्भर थी और सीखने के लिए बेताब थी, और यह उसके लिए फ़ायदेमंद भी था क्योंकि मैं ज़्यादातर समय घर से बाहर रहती थी और उसे खुद कहीं ले जा नहीं सकती थी। शायद मैं एक अधीर शिक्षिका हूँ या शायद मेरी छात्रा ज़िद्दी थी, लेकिन जब मैंने विनी को ऑरलैंडो की अपेक्षाकृत सपाट और शांत सड़क पर गाड़ी चलाना सिखाने की कोशिश की, तो हम बिना झगड़े के गियर नहीं बदल पा रहे थे। आखिरकार, जब उसने मेरी कई सलाहों को नज़रअंदाज़ कर दिया, तो मैं गुस्से में गाड़ी से उतर गई और पैदल घर चली गई। विनी को मेरी देखरेख के बिना ज़्यादा अच्छा लगा, क्योंकि उसने अगले एक घंटे तक कस्बे में खुद ही गाड़ी चलाई। तब

तक हम सुलह करने के लिए तैयार थे, और यह एक ऐसी कहानी है जिस पर हम बाद में खूब हँसे।
विनी के लिए वैवाहिक जीवन और मातृत्व एक चुनौतीपूर्ण दौर था। वह उस समय पच्चीस वर्ष की युवती थी, जिसने अभी तक अपना व्यक्तित्व पूरी तरह से विकसित नहीं किया था। मैं पहले से ही विकसित और काफी जिद्दी थी। मैं जानती थी कि दूसरे लोग अक्सर उसे "मंडेला की पत्नी" के रूप में देखते थे। मेरे साये में अपनी पहचान बनाना उसके लिए निस्संदेह कठिन था। मैंने उसे अपने दम पर आगे बढ़ने देने की पूरी कोशिश की, और जल्द ही उसने बिना मेरी किसी मदद के ऐसा कर लिया।

30

6 अप्रैल, 1959 को, जान वैन रीबीक के केप द्वीप पर आगमन की वर्षगांठ पर, एक नए संगठन का जन्म हुआ जिसने देश के प्रमुख अफ्रीकी राजनीतिक संगठन के रूप में एएनसी को टक्कर देने और तीन शताब्दियों पहले शुरू हुए श्वेत वर्चस्व को नकारने का प्रयास किया। ऑरलैंडो कम्युनल हॉल में देश भर से आए कुछ सौ प्रतिनिधियों के साथ, पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस ने स्वयं को एक अफ्रीकीवादी संगठन के रूप में स्थापित किया जिसने एएनसी के बहुजातीयवाद को स्पष्ट रूप से अस्वीकार कर दिया। पंद्रह वर्ष पूर्व यूथ लीग का गठन करने वाले हम लोगों की तरह, इस नए संगठन के संस्थापकों का मानना था कि एएनसी पर्याप्त रूप से जुझारू नहीं थी, जनता से कटी हुई थी और गैर-अफ्रीकियों द्वारा शासित थी।
रॉबर्ट सोबुकवे राष्ट्रपति चुने गए और पोटलाको लेबेलो राष्ट्रीय सचिव बने। ये दोनों ही पूर्व एएनसी यूथ लीग के सदस्य थे। पीएसी ने एक घोषणापत्र और संविधान प्रस्तुत किया, साथ ही सोबुकवे का उद्घाटन भाषण भी, जिसमें उन्होंने "अफ्रीकियों की, अफ्रीकियों द्वारा और अफ्रीकियों के लिए सरकार" का आह्वान किया। पीएसी ने घोषणा की कि उनका उद्देश्य श्वेत वर्चस्व को उखाड़ फेंकना और एक ऐसी सरकार स्थापित करना है जो मूल रूप से अफ्रीकीवादी, विषयवस्तु में समाजवादी और स्वरूप में लोकतांत्रिक हो। उन्होंने साम्यवाद के सभी रूपों को अस्वीकार कर दिया और श्वेतों और भारतीयों को "विदेशी अल्पसंख्यक समूह" या "अजनबी" माना जिनका दक्षिण अफ्रीका में कोई स्वाभाविक स्थान नहीं था। दक्षिण अफ्रीका केवल अफ्रीकियों के लिए था, किसी और के लिए नहीं।
पीएसी का गठन हमारे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी। एएनसी के भीतर अफ्रीकीवादी तीन साल से अधिक समय से अपनी शिकायतें मुखर रूप से उठा रहे थे। 1957 में, अफ्रीकीवादियों ने राष्ट्रीय सम्मेलन में ट्रांसवाल कार्यपालिका के खिलाफ अविश्वास प्रस्ताव का आह्वान किया था, लेकिन उन्हें हार का सामना करना पड़ा था। उन्होंने 1958 के चुनाव दिवस पर घर पर रहने के आदेश का विरोध किया था, और उनके नेता पोटलाको लेबेलो को एएनसी से निष्कासित कर दिया गया था। नवंबर 1958 के एएनसी सम्मेलन में,

अफ्रीकीवादियों के एक समूह ने स्वतंत्रता चार्टर का विरोध करते हुए दावा किया था कि यह अफ्रीकी राष्ट्रवाद के सिद्धांतों का उल्लंघन करता है। पीएसी ने दावा किया कि उन्हें 1912 में एएनसी की स्थापना से जुड़े सिद्धांतों से प्रेरणा मिली, लेकिन उनके विचार मुख्य रूप से 1944 में यूथ लीग की स्थापना के दौरान एंटोन लेम्बेडे और ए. पी. म्दा द्वारा प्रतिपादित भावनात्मक अफ्रीकी राष्ट्रवाद से प्रेरित थे। पीएसी ने उस समय के सिद्धांतों और नारों को दोहराया: अफ्रीका अफ्रीकियों के लिए और एक संयुक्त अफ्रीकी राज्य। लेकिन उनके अलग होने का तात्कालिक कारण फ्रीडम चार्टर और कांग्रेस एलायंस के नेतृत्व में गोरों और भारतीयों की उपस्थिति पर उनकी आपत्ति थी। वे अंतरजातीय सहयोग के विरोधी थे, जिसका मुख्य कारण यह था कि उनका मानना था कि श्वेत कम्युनिस्टों और भारतीयों ने एएनसी पर अपना वर्चस्व स्थापित कर लिया था।
पीएसी के सभी संस्थापकों को मैं अच्छी तरह जानता था। रॉबर्ट सोबुकवे मेरे पुराने दोस्त थे। वे एक आदर्श सज्जन और विद्वान व्यक्ति थे (उनके सहकर्मी उन्हें "प्रोफेसर" कहते थे)। अपने सिद्धांतों के लिए लगातार संघर्ष करने की उनकी तत्परता ने मेरे मन में उनके प्रति अटूट सम्मान पैदा किया। पोटलाको लेबेलो, पीटर राबोरोको और ज़ेफानिया मोथोपेंग सभी मेरे मित्र और सहकर्मी थे। मुझे यह जानकर आश्चर्य और कुछ हद तक निराशा हुई कि मेरे राजनीतिक गुरु गौर रादेबे पीएसी में शामिल हो गए हैं। मुझे यह बात अजीब लगी कि कम्युनिस्ट पार्टी की केंद्रीय समिति के एक पूर्व सदस्य ने एक ऐसे संगठन के साथ जुड़ने का फैसला किया, जो उस समय स्पष्ट रूप से मार्क्सवाद को अस्वीकार करता था।
पीएसी से जुड़ने वाले कई लोगों ने व्यक्तिगत द्वेष या निराशाओं के कारण ऐसा किया और वे संघर्ष की प्रगति के बारे में नहीं, बल्कि अपनी ईर्ष्या या प्रतिशोध की भावनाओं के बारे में सोच रहे थे। मेरा हमेशा से मानना रहा है कि एक स्वतंत्रता सेनानी बनने के लिए व्यक्ति को उन कई व्यक्तिगत भावनाओं को दबाना पड़ता है जो उसे जन आंदोलन का हिस्सा होने के बजाय एक अलग व्यक्ति होने का एहसास कराती हैं। व्यक्ति लाखों लोगों की मुक्ति के लिए लड़ रहा होता है, न कि किसी एक व्यक्ति की महिमा के लिए। मेरा यह सुझाव नहीं है कि व्यक्ति रोबोट बन जाए और अपनी सभी व्यक्तिगत भावनाओं और प्रेरणाओं को त्याग दे। लेकिन जिस प्रकार एक स्वतंत्रता सेनानी अपने परिवार को जनता के

परिवार के अधीन रखता है, उसी प्रकार उसे अपनी व्यक्तिगत भावनाओं को आंदोलन के अधीन रखना चाहिए।
मुझे पीएसी के विचार और व्यवहार अपरिपक्व लगे। एक दार्शनिक ने कहा था कि अगर कोई व्यक्ति जवानी में उदार और बुढ़ापे में रूढ़िवादी न हो तो यह अजीब बात है। मैं रूढ़िवादी नहीं हूँ, लेकिन इंसान परिपक्व होता है और जवानी के कुछ विचारों को अपरिपक्व और नासमझ समझने लगता है। हालाँकि मैं अफ्रीकी आंदोलनकारियों के विचारों से सहमत था और एक समय उनमें से कई विचारों को मानता भी था, लेकिन मेरा मानना था कि स्वतंत्रता संग्राम में समझौता करना और उस तरह के अनुशासन को स्वीकार करना आवश्यक था जिसका युवा और आवेगशील व्यक्ति विरोध करता था।
पीएसी ने एक नाटकीय और अतिमहत्वाकांक्षी कार्यक्रम पेश किया जिसमें त्वरित समाधान का वादा किया गया था। उनका सबसे नाटकीय—और भोला-भाला— वादा यह था कि 1963 के अंत तक मुक्ति प्राप्त हो जाएगी, और उन्होंने अफ्रीकियों से उस ऐतिहासिक घड़ी के लिए तैयार रहने का आग्रह किया। उन्होंने वादा किया, “1960 में हम अपना पहला कदम उठाएंगे, 1963 में स्वतंत्रता और आजादी की ओर हमारा आखिरी कदम।” हालांकि इस भविष्यवाणी ने इंतजार करते-करते थक चुके लोगों में आशा और उत्साह जगाया, लेकिन किसी भी संगठन के लिए ऐसे वादे करना हमेशा खतरनाक होता है जिन्हें वह पूरा नहीं कर सकता।
पीएसी के साम्यवाद-विरोध के कारण, वे पश्चिमी प्रेस और अमेरिकी विदेश विभाग के चहेते बन गए, जिन्होंने इसके गठन को अफ्रीकी वामपंथियों के दिल पर एक करारा प्रहार बताया। यहां तक कि नेशनल पार्टी ने भी पीएसी में एक संभावित सहयोगी देखा: उन्होंने पीएसी को अपने साम्यवाद-विरोध का प्रतिबिंब और पृथक विकास पर अपने विचारों का समर्थक माना। राष्ट्रवादियों ने अंतरजातीय सहयोग को भी अस्वीकार कर दिया, और नेशनल पार्टी और अमेरिकी विदेश विभाग दोनों ने अपने स्वार्थों के लिए इस नए संगठन के आकार और महत्व को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करना उचित समझा।
पीएसी द्वारा संघर्ष में लाए गए हर व्यक्ति का हमने स्वागत किया, लेकिन संगठन की भूमिका लगभग हमेशा ही बाधा डालने वाली रही। उन्होंने एक नाजुक समय में जनता को विभाजित किया, और यह बात भुला पाना मुश्किल है। जब हमने आम हड़ताल का आह्वान किया, तो वे लोगों से काम पर जाने को कहते थे, और हमारे

किसी भी बयान का खंडन करने के लिए भ्रामक बयान देते थे। फिर भी, पीएसी ने मेरे मन में यह आशा जगाई कि भले ही इसके संस्थापक एएनसी से अलग हुए लोग थे, लेकिन हमारे दोनों समूहों के बीच एकता संभव है। मुझे लगा कि एक बार गरमागरम बहस शांत हो जाए, तो संघर्ष की मूलभूत समानता हमें एक साथ ले आएगी। इसी विश्वास से प्रेरित होकर, मैंने उनके नीतिगत बयान और गतिविधियों पर विशेष ध्यान दिया, ताकि मतभेदों के बजाय समानताओं को खोज सकूँ।
पीएसी के उद्घाटन सम्मेलन के अगले दिन, मैंने सोबुकवे से उनके अध्यक्षीय भाषण की प्रति, साथ ही संविधान और अन्य नीतिगत सामग्री मांगी। मुझे लगा कि सोबुकवे मेरी रुचि देखकर प्रसन्न हुए और उन्होंने कहा कि वे सुनिश्चित करेंगे कि मुझे मांगी गई सामग्री मिल जाए। कुछ समय बाद मैं उनसे फिर मिला और उन्हें अपनी विनती याद दिलाई, तो उन्होंने कहा कि सामग्री रास्ते में है। इसके बाद मैं पोटलाको लेबेलो से मिला और कहा, "यार, तुम लोग मुझे अपनी सामग्री देने का वादा तो करते रहते हो, लेकिन किसी ने मुझे दी ही नहीं।" उन्होंने कहा, "नेल्सन, हमने तुम्हें यह न देने का फैसला किया है क्योंकि हम जानते हैं कि तुम इसका इस्तेमाल सिर्फ हम पर हमला करने के लिए करना चाहते हो।" मैंने उनकी इस गलतफहमी को दूर किया और वे मान गए और मुझे वह सब कुछ दे दिया जो मैंने मांगा था।

31

1959 में, संसद ने बंटू स्वशासन प्रोत्साहन अधिनियम पारित किया, जिससे आठ अलग-अलग जातीय बंटूस्तान बने। यही वह आधार था जिसे सरकार ने 'ग्रूट' या 'ग्रैंड रंगभेद' कहा। लगभग उसी समय, सरकार ने भ्रामक नाम से 'विश्वविद्यालय शिक्षा विस्तार अधिनियम' पेश किया, जो ग्रैंड रंगभेद का एक और हिस्सा था, जिसने गैर-गोरों को नस्लीय रूप से "खुले" विश्वविद्यालयों में प्रवेश से वंचित कर दिया। बंटू स्वशासन अधिनियम पेश करते हुए, बंटू प्रशासन और विकास मंत्री डी वेट नेल ने कहा कि प्रत्येक व्यक्ति और जनसंख्या समूह का कल्याण उसके अपने राष्ट्रीय समुदाय के भीतर ही सर्वोत्तम रूप से विकसित किया जा सकता है। उन्होंने कहा कि अफ्रीकियों को कभी भी श्वेत समुदाय में एकीकृत नहीं किया जा सकता।
बंटुस्तान नीति की अनैतिकता स्पष्ट थी, जिसके तहत 70 प्रतिशत लोगों को केवल 13 प्रतिशत भूमि आवंटित की जानी थी। इस नई नीति के अंतर्गत, यद्यपि दो-तिहाई अफ्रीकी तथाकथित श्वेत क्षेत्रों में रहते थे, उन्हें केवल अपनी "जनजातीय मातृभूमि" में ही नागरिकता प्राप्त थी। इस योजना ने हमें न तो "श्वेत" क्षेत्रों में स्वतंत्रता दी और न ही उन क्षेत्रों में जिन्हें वे "हमारे" क्षेत्र मानते थे। वेरवोर्ड ने कहा कि बंटुस्तानों के निर्माण से इतनी सद्भावना उत्पन्न होगी कि वे कभी भी विद्रोह का स्रोत नहीं बनेंगे। असलियत में हालात बिलकुल उलट थे। ग्रामीण इलाकों में अशांत माहौल था। ज़ीरस्ट जैसा ज़बरदस्त संघर्ष शायद ही किसी इलाके ने किया हो, जहाँ मुखिया अब्राम मोइलवा (वकील जॉर्ज बिज़ोस की मदद से) ने अपने लोगों को तथाकथित बंटू सत्ता के खिलाफ़ लड़ने के लिए प्रेरित किया। ये इलाके आम तौर पर प्रेस की नज़रों से दूर रहते थे, और सरकार ने उनकी इस दुर्गमता का फ़ायदा उठाकर राज्य की क्रूरता को छिपाया। सैकड़ों निर्दोष लोगों को गिरफ़्तार किया गया, उन पर मुक़दमे चलाए गए, जेल में डाला गया, देश निकाला दिया गया, पीटा गया, यातनाएँ दी गईं और उनकी हत्या कर दी गई। सेखुखुनेलैंड के लोगों ने भी विद्रोह किया, और प्रमुख मुखिया मोरोमात्शो सेखुखुने, गॉडफ़्रे सेखुखुने और अन्य सलाहकारों को देश निकाला दे दिया गया या गिरफ़्तार कर लिया गया। सेखुखुने के एक मुखिया, कोलाने कगोलोको, जिन्हें सरकार का चमचा

समझा जाता था, की हत्या कर दी गई। 1960 तक, सेखुखुनेलैंड में प्रतिरोध खुलेआम विद्रोह में बदल गया था, और लोग कर देने से इनकार कर रहे थे। जीरस्ट और सेखुखुनेलैंड में, एएनसी की शाखाओं ने विरोध प्रदर्शनों में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई। भीषण दमन के बावजूद, जीरस्ट क्षेत्र में एएनसी की कई नई शाखाएँ खुल गईं, जिनमें से एक ने लगभग दो हजार सदस्यों की भर्ती की। सेखुखुनेलैंड और जीरस्ट दक्षिण अफ्रीका के पहले ऐसे क्षेत्र थे जहाँ सरकार द्वारा एएनसी पर प्रतिबंध लगाया गया था, जो इन दूरस्थ क्षेत्रों में हमारी शक्ति का प्रमाण है।
पूर्वी पोंडोलैंड में विरोध प्रदर्शन भड़क उठे, जहां सरकारी गुंडों पर हमला किया गया और उन्हें मार डाला गया। थेम्बुलैंड और ज़ुलुलैंड ने कड़ा प्रतिरोध किया और आत्मसमर्पण करने वाले अंतिम क्षेत्रों में से थे। लोगों को पीटा गया, गिरफ्तार किया गया, निर्वासित किया गया और जेल में डाला गया। थेम्बुलैंड में 1955 से प्रतिरोध जारी था, जिसमें सबाटा भी विरोध प्रदर्शन करने वाली ताकतों का हिस्सा थे।
मेरे लिए यह विशेष रूप से दुखद था कि ट्रांसकेई में जनता का क्रोध मेरे भतीजे और कभी गुरु रहे के. डी. मातांज़िमा के विरुद्ध था। इसमें कोई संदेह नहीं था कि दलिवोंगा सरकार के साथ मिलीभगत कर रहा था। वर्षों से मैंने उससे जो भी विनती की थी, सब व्यर्थ गई। ऐसी खबरें थीं कि मातांज़िमा के मुख्यालय से आए इम्पीस (पारंपरिक योद्धाओं) ने उसका विरोध करने वाले गांवों को जला दिया था। उस पर कई बार जानलेवा हमले भी हुए। उतना ही दुखद यह तथ्य था कि विनी के पिता मातांज़िमा की परिषद में थे और उनके कट्टर समर्थक थे। विनी के लिए यह बेहद कठिन था: उसके पिता और उसके पति एक ही मुद्दे पर विपरीत पक्षों में थे। वह अपने पिता से प्यार करती थी, लेकिन उसकी राजनीति उसे पसंद नहीं थी।
कई बार ट्रांसकेई के कबीले के लोग और रिश्तेदार ऑरलैंडो में मुझसे मिलने आए और सरदारों द्वारा सरकार के साथ मिलीभगत की शिकायत की। सबाता बंटू अधिकारियों के विरोधी थे और झुकने को तैयार नहीं थे, लेकिन मेरे आगंतुकों को डर था कि मातांज़िमा उन्हें पद से हटा देंगे, और अंततः ऐसा ही हुआ। एक बार राजद्रोह के मुकदमे के दौरान खुद दलिवोंगा मुझसे मिलने आए और मैं उन्हें अपने साथ प्रिटोरिया ले गया। अदालत में इस्सी मैसेल्स ने उनका परिचय न्यायाधीशों से कराया और उन्होंने उन्हें सम्मान की सीट दी। लेकिन

बाहर - आरोपियों के बीच - उनके साथ ऐसा सम्मानजनक व्यवहार नहीं किया गया। उन्होंने आक्रामक ढंग से विभिन्न प्रतिवादियों से पूछना शुरू कर दिया, जो उन्हें गद्दार मानते थे, कि वे अलग विकास का विरोध क्यों करते हैं। लिलियन न्गोयी ने टिप्पणी की: "तिहिनी, उयादेलेला लो मंतु" (हे भगवान, यह आदमी तो उकसाने वाला है)।

32

कहते हैं कि ईश्वर की चक्की बहुत धीमी चलती है, लेकिन दक्षिण अफ़्रीकी न्याय प्रणाली की चालों के आगे भगवान की चालें भी फीकी पड़ जाती हैं। 3 अगस्त 1959 को, हमारी गिरफ़्तारी के दो साल और आठ महीने बाद, और पूरे एक साल की कानूनी दांव-पेच के बाद, प्रिटोरिया के पुराने आराधनालय में असल मुक़दमा शुरू हुआ। आख़िरकार हम सभी को औपचारिक रूप से अदालत में पेश किया गया और हम तीसों ने खुद को निर्दोष बताया।
हमारी रक्षा टीम का नेतृत्व एक बार फिर इस्सी मैसेल्स ने किया, और सिडनी केंट्रिज, ब्रैम फिशर और वर्नोन बेरेंज ने उनका सहयोग किया। इस बार, आखिरकार, मुकदमा गंभीरता से शुरू हुआ। मुकदमे के पहले दो महीनों के दौरान, अभियोजन पक्ष ने लगभग दो हजार दस्तावेज़ रिकॉर्ड में दर्ज किए और दो सौ दस गवाहों को पेश किया, जिनमें से दो सौ विशेष शाखा के सदस्य थे। इन जासूसों ने स्वीकार किया कि वे अलमारियों और बिस्तरों के नीचे छिपते थे, एएनसी सदस्यों का रूप धारण करते थे, और हमारे संगठन के बारे में जानकारी प्राप्त करने के लिए लगभग हर तरह का छल करते थे। फिर भी, राज्य द्वारा प्रस्तुत किए गए कई दस्तावेज़ और उनके द्वारा लिखित भाषण सार्वजनिक दस्तावेज़, सार्वजनिक भाषण और सभी के लिए उपलब्ध जानकारी थे। पहले की तरह, अभियोजन पक्ष के अधिकांश साक्ष्य 1952 और 1956 के बीच हुई कई छापेमारी के दौरान आरोपियों से जब्त की गई पुस्तकों, कागजों और दस्तावेजों के साथ-साथ इसी अवधि के दौरान कांग्रेस की बैठकों में पुलिस द्वारा लिए गए नोट्स से बने थे। पहले की तरह, विशेष शाखा के अधिकारियों द्वारा हमारे भाषणों की रिपोर्टें आम तौर पर अस्पष्ट थीं। हम मजाक में कहते थे कि हॉल की खराब ध्वनि व्यवस्था और स्पेशल ब्रांच के जासूसों की भ्रमित और गलत रिपोर्टों के बीच, हमें उन बातों के लिए जुर्माना देना पड़ सकता है जो हमने नहीं कहीं, उन बातों के लिए जेल हो सकती है जो हम नहीं सुन सके, और उन कामों के लिए फांसी हो सकती है जो हमने नहीं किए।
प्रत्येक दिन दोपहर के भोजन के समय हमें पास के एक पादरी के घर के विशाल बगीचे में बाहर बैठने की अनुमति दी जाती थी, जहाँ हमें श्रीमती थायनागी पिल्ले और उनकी सहेलियों द्वारा पकाया गया भोजन परोसा जाता था। वे लगभग हर

दिन हमारे लिए मसालेदार भारतीय दोपहर का भोजन तैयार करती थीं, और सुबह और दोपहर के अवकाश के दौरान चाय, कॉफ़ी और सैंडविच भी देती थीं। ये विश्राम के क्षण अदालती कामकाज से छोटी-छोटी छुट्टियों की तरह थे, और हमें आपस में राजनीति पर चर्चा करने का मौका देते थे। पादरी के घर के लॉन में जैकारांडा के पेड़ों की छाँव में बिताए गए वे पल मुकदमे के सबसे सुखद क्षण थे, क्योंकि कई मायनों में यह मामला न्याय की परीक्षा से कहीं अधिक हमारी सहनशक्ति की परीक्षा था।

11 अक्टूबर की सुबह, जब हम अदालत जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी रेडियो पर यह घोषणा हुई कि अभियोजक ओसवाल्ड पिरो का अचानक स्ट्रोक से निधन हो गया है। उनकी मृत्यु सरकार के लिए एक बड़ा झटका थी, और उसके बाद से क्राउन टीम की प्रभावशीलता और आक्रामकता में कमी आ गई। उस दिन अदालत में, न्यायाधीश रम्पफ ने पिरो को भावभीनी श्रद्धांजलि दी और उनकी कानूनी कुशलता और गहनता की प्रशंसा की। हालाँकि हमें उनकी अनुपस्थिति से लाभ हुआ, फिर भी हमने उनकी मृत्यु पर खुशी नहीं मनाई। पिरो के घृणित राजनीतिक विचारों के बावजूद, हम उनके प्रति एक विशेष स्नेह विकसित कर चुके थे, क्योंकि वे एक मानवीय व्यक्ति थे और उनमें उस सरकार की तरह घोर व्यक्तिगत नस्लवाद नहीं था जिसके लिए वे काम कर रहे थे। हमें "अफ्रीकी" कहकर संबोधित करने की उनकी आदत (यहाँ तक कि हमारे अपने वकीलों में से एक ने कभी-कभी गलती से हमें "मूल निवासी" कह दिया था) उनके श्रेष्ठतावादी राजनीतिक झुकाव के विपरीत थी। अजीब बात यह थी कि पुरानी आराधनालय के अंदर हमारी छोटी सी दुनिया संतुलित सी लगती थी, जब हर सुबह हम पिरो को अपनी मेज पर दक्षिणपंथी नुवे ऑर्डर पढ़ते हुए और ब्रैम फिशर को हमारी मेज पर वामपंथी न्यू एज पढ़ते हुए देखते थे। उन्होंने हमें तैयारी परीक्षा की सौ से अधिक पुस्तकें मुफ्त में दान कर दीं, जो एक उदारतापूर्ण कार्य था और इससे बचाव पक्ष को काफी धन की बचत हुई। एडवोकेट डी वोस क्राउन की टीम के नए नेता बने, लेकिन वे अपने पूर्ववर्ती की वाक्पटुता और बुद्धिमत्ता की बराबरी नहीं कर सके।

पिरो की मृत्यु के कुछ ही समय बाद, अभियोजन पक्ष ने साक्ष्य प्रस्तुत करने की प्रक्रिया पूरी कर ली। इसके बाद अभियोजन पक्ष ने विशेषज्ञ गवाहों से पूछताछ शुरू की, जिसकी शुरुआत प्रोफेसर मरे से हुई, जो साम्यवाद के विशेषज्ञ माने जा रहे थे, लेकिन प्रारंभिक परीक्षा के दौरान अपने विषय में पूरी तरह अक्षम साबित हुए थे। मैसेल्स द्वारा की गई कड़ी जिरह में, मरे ने स्वीकार किया कि चार्टर वास्तव में एक मानवीय दस्तावेज था जो दक्षिण अफ्रीका की कठोर परिस्थितियों के प्रति गैर-श्वेत लोगों की स्वाभाविक प्रतिक्रिया और आकांक्षाओं को दर्शाता था।
मुर्रे एकमात्र ऐसे सरकारी गवाह नहीं थे जिन्होंने राज्य के मामले को आगे बढ़ाने में कोई खास योगदान नहीं दिया। सरकारी साक्ष्यों की प्रचुरता और विशेषज्ञ गवाहों की गवाही के पन्नों के बावजूद, अभियोजन पक्ष एएनसी द्वारा हिंसा की साजिश रचने का कोई ठोस सबूत पेश नहीं कर पाया था, और वे यह बात जानते थे। फिर, मार्च में, अभियोजन पक्ष ने नए सिरे से आत्मविश्वास दिखाया। वे अपना सबसे निर्णायक सबूत पेश करने वाले थे। बड़े धूमधाम से और प्रेस में खूब प्रचार के साथ, राज्य ने अदालत में रॉबर्ट रेशा का गुप्त रूप से रिकॉर्ड किया गया भाषण सुनाया। यह भाषण उन्होंने 1956 में ट्रांसवाल के मुख्य स्वयंसेवक के रूप में फ्रीडम वॉलंटियर्स से भरे एक कमरे में दिया था, हम सभी की गिरफ्तारी से कुछ सप्ताह पहले। अदालत का कमरा एकदम शांत था, और रिकॉर्डिंग की अस्पष्ट ध्वनि और पृष्ठभूमि के शोर के बावजूद, रॉबर्ट के शब्द स्पष्ट रूप से सुनाई दे रहे थे।

जब आप अनुशासित हों और संगठन द्वारा आपको हिंसा न करने के लिए कहा जाए, तो आपको हिंसा नहीं करनी चाहिए... लेकिन यदि आप सच्चे स्वयंसेवक हैं और आपको हिंसा करने के लिए कहा जाए, तो आपको निश्चित रूप से हिंसा करनी चाहिए, आपको हत्या करनी चाहिए! हत्या! बस इतना ही।

अभियोजन पक्ष को लगा कि उसने अपना मामला पक्का कर लिया है। अखबारों में रेशा के शब्दों को प्रमुखता से छापा गया और राज्य की भावनाओं को प्रतिबिंबित किया गया। क्राउन के लिए, भाषण ने एएनसी के असली और गुप्त इरादे को उजागर किया, जिससे एएनसी के अहिंसा के दिखावे का पर्दाफाश हो

गया। लेकिन वास्तव में, रेशा के शब्द एक अपवाद थे। रॉबर्ट एक उत्कृष्ट वक्ता थे, हालांकि वे थोड़े उत्तेजित हो जाते थे, और उनके द्वारा उपमा का चुनाव दुर्भाग्यपूर्ण था। लेकिन जैसा कि बचाव पक्ष ने साबित किया, वे केवल अनुशासन के महत्व पर जोर दे रहे थे और यह बता रहे थे कि स्वयंसेवक को जो भी आदेश दिया जाए, चाहे वह कितना भी अप्रिय क्यों न हो, उसे करना ही चाहिए। हमारे गवाहों ने बार-बार यह दिखाया कि रेशा का भाषण न केवल संदर्भ से बाहर लिया गया था, बल्कि एएनसी की नीति का प्रतिनिधित्व भी नहीं करता था।

अभियोजन पक्ष ने 10 मार्च, 1960 को अपना पक्ष समाप्त कर दिया, और हमें बचाव पक्ष के लिए अपना पहला गवाह चार दिन बाद पेश करना था। हम महीनों से निष्क्रिय थे, लेकिन जैसे ही हमने अपनी गवाही की तैयारी शुरू की, हम आक्रामक रुख अपनाने के लिए उत्सुक हो गए। हम बहुत लंबे समय से दुश्मन के हमलों का सामना कर रहे थे।
प्रेस में काफी अटकलें लगाई जा रही थीं कि हमारे पहले गवाह चीफ लुथुली होंगे। अभियोजन पक्ष को भी शायद यही लगता था, क्योंकि 14 मार्च को जब हमारे पहले गवाह लुथुली नहीं बल्कि डॉ. विल्सन कोंको निकले, तो अभियोजन पक्ष में भारी अफरा-तफरी मच गई।
कोंको, नेटाल के खूबसूरत इक्सोपो जिले के एक ज़ुलू पशुपालक के पुत्र थे। एक चिकित्सक होने के साथ-साथ, वे यूथ लीग के संस्थापकों में से एक, अवज्ञा अभियान के सक्रिय भागीदार और एएनसी के कोषाध्यक्ष भी थे। अपनी गवाही की तैयारी के दौरान, उनसे विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय में उनके शानदार शैक्षणिक रिकॉर्ड के बारे में पूछा गया, जहाँ उन्होंने श्वेत विशेषाधिकार प्राप्त सभी पुत्र-पुत्रियों से आगे, अपने मेडिकल स्कूल की कक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया था। जब कोंको की उपलब्धियों का उल्लेख किया गया, तो मुझे स्पष्ट रूप से यह आभास हुआ कि न्यायमूर्ति कैनेडी, जो स्वयं नेटाल से थे, गर्व महसूस कर रहे थे। नेटाल के लोग अपने क्षेत्र के प्रति अपनी निष्ठा के लिए जाने जाते हैं, और लगाव के ये अनूठे बंधन कभी-कभी रंगभेद से भी परे होते हैं। वास्तव में, कई नेटालवासी खुद को श्वेत ज़ुलू मानते थे। न्यायमूर्ति कैनेडी हमेशा से एक निष्पक्ष व्यक्ति प्रतीत होते थे, और

मुझे लगा कि विल्सन कोंको के उदाहरण के माध्यम से, वे हमें लापरवाह उपद्रवियों के रूप में नहीं, बल्कि योग्य महत्वाकांक्षाओं वाले पुरुषों के रूप में देखने लगे, जो अपने देश की मदद कर सकते हैं, बशर्ते उनका देश उनकी मदद करे। कोन्को की गवाही के अंत में, जब उनकी किसी चिकित्सीय उपलब्धि का उल्लेख किया गया, तो कैनेडी ने ज़ुलू भाषा में, जिसमें वे धाराप्रवाह थे, कहा, "सिंजालो थीना माज़ुलू," जिसका अर्थ है, "हम ज़ुलू लोग ऐसे ही हैं।" डॉ. कोन्को एक शांत और स्पष्टवादी गवाह साबित हुए जिन्होंने अहिंसा के प्रति एएनसी की प्रतिबद्धता की पुष्टि की।
इसके बाद चीफ लुथुली की बारी थी। अपनी गरिमा और ईमानदारी से उन्होंने अदालत पर गहरी छाप छोड़ी। वे उच्च रक्तचाप से पीड़ित थे, इसलिए अदालत ने उनके बयान के दौरान केवल सुबह के समय ही सुनवाई करने पर सहमति जताई। उनका मुख्य बयान कई दिनों तक चला और उनसे लगभग तीन सप्ताह तक जिरह की गई। उन्होंने एएनसी की नीति के विकास को सरल और स्पष्ट शब्दों में समझाया, और शिक्षक और मुखिया के रूप में उनके पूर्व पदों ने उनके शब्दों को और भी अधिक गंभीरता और अधिकार प्रदान किया। एक धर्मनिष्ठ ईसाई होने के नाते, वे इस बात पर चर्चा करने के लिए एकदम सही व्यक्ति थे कि एएनसी ने नस्लीय सद्भाव के लिए किस प्रकार ईमानदारी से प्रयास किए थे।
प्रमुख ने मनुष्य की जन्मजात अच्छाई में अपने विश्वास की गवाही दी और बताया कि नैतिक प्रोत्साहन और आर्थिक दबाव से श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के हृदय में परिवर्तन लाया जा सकता है। एएनसी की अहिंसा की नीति पर चर्चा करते हुए उन्होंने इस बात पर ज़ोर दिया कि अहिंसा और शांतिवाद में अंतर है। शांतिवादी हिंसक हमले की स्थिति में भी आत्मरक्षा करने से इनकार करते हैं, लेकिन अहिंसा का समर्थन करने वालों के लिए यह ज़रूरी नहीं है। कभी-कभी, अहिंसक होने पर भी, मनुष्यों और राष्ट्रों को हमले की स्थिति में आत्मरक्षा करनी पड़ती है।
जब मैं कोंको और लुथुली को सुन रहा था, तो मुझे लगा कि यहाँ, शायद अपने जीवन में पहली बार, न्यायाधीश अपने उन घरेलू नौकरों की बात नहीं सुन रहे थे जो केवल वही कहते थे जो उनके मालिक सुनना पसंद करेंगे, बल्कि स्वतंत्र और मुखर अफ्रीकियों की बात सुन रहे थे जो अपने राजनीतिक विश्वासों को स्पष्ट कर रहे थे और यह बता रहे थे कि वे उन्हें कैसे साकार करने की उम्मीद करते हैं।

मुख्य न्यायाधीश से अधिवक्ता ट्रेंगोव ने जिरह की, जिन्होंने लगातार यह मनवाने की कोशिश की कि एएनसी पर कम्युनिस्टों का वर्चस्व है और उसकी दोहरी नीति है - जनता के लिए अहिंसा की नीति और हिंसक क्रांति छेड़ने की गुप्त योजना। मुख्य न्यायाधीश ने ट्रेंगोव के आरोपों का दृढ़तापूर्वक खंडन किया। वे स्वयं संयम की मूर्ति थे, खासकर तब जब ट्रेंगोव अपना आपा खोते हुए प्रतीत हुए। एक समय ट्रेंगोव ने मुख्य न्यायाधीश पर पाखंड का आरोप लगाया। मुख्य न्यायाधीश ने ट्रेंगोव के आरोपों को अनसुना करते हुए शांत भाव से न्यायाधीश से कहा, "माननीय न्यायाधीश, मुझे लगता है कि सरकार बेलगाम हो रही है।"
लेकिन 21 मार्च को, अदालत के बाहर एक दिल दहला देने वाली घटना के कारण मुखिया की गवाही बाधित हो गई। उस दिन, देश एक ऐसी भयावह घटना से हिल गया था कि जब मुखिया लुथुली एक महीने बाद गवाही देने लौटे, तो अदालत और पूरा दक्षिण अफ्रीका एक बिल्कुल अलग जगह थी।

33

दिसंबर 1959 में एएनसी का वार्षिक सम्मेलन डरबन में आयोजित किया गया था, जो उस शहर में चल रहे जोरदार पास-विरोधी प्रदर्शनों के दौरान हुआ था। सम्मेलन में सर्वसम्मति से 31 मार्च से शुरू होने वाले और 26 जून को पासों के भीषण अलाव के साथ समाप्त होने वाले एक बड़े राष्ट्रव्यापी पास-विरोधी अभियान को शुरू करने का निर्णय लिया गया।
योजना का काम तुरंत शुरू हो गया। 31 मार्च को स्थानीय अधिकारियों के पास प्रतिनिधिमंडल भेजे गए। एएनसी के अधिकारियों ने देश भर का दौरा किया और शाखाओं से अभियान के बारे में बात की। एएनसी के जमीनी कार्यकर्ताओं ने कस्बों और कारखानों में प्रचार-प्रसार किया। पर्चे, स्टिकर और पोस्टर छपवाकर वितरित किए गए और ट्रेनों व बसों में लगाए गए।
देश का माहौल बेहद गंभीर था। सरकार संगठन पर प्रतिबंध लगाने की धमकी दे रही थी और मंत्रिमंडल के मंत्री एएनसी को चेतावनी दे रहे थे कि जल्द ही उस पर "बिना दस्ताने के मुक्के" से प्रहार किया जाएगा। अफ्रीका के अन्य हिस्सों में, स्वतंत्रता संग्राम जारी था: 1957 में घाना के स्वतंत्र गणराज्य के उदय और उसके सर्व-अफ्रीकीवादी, रंगभेद-विरोधी नेता क्वामे न्क्रुमाह के उदय ने राष्ट्रवादियों को चिंतित कर दिया था और उन्हें देश में असहमति को कुचलने के लिए और भी दृढ़ बना दिया था। 1960 में, अफ्रीका के सत्रह पूर्व उपनिवेश स्वतंत्र राज्य बनने वाले थे। फरवरी में, ब्रिटिश प्रधानमंत्री हेरोल्ड मैकमिलन ने दक्षिण अफ्रीका का दौरा किया और संसद के समक्ष भाषण दिया जिसमें उन्होंने अफ्रीका में चल रही "परिवर्तन की हवाओं" की बात की।
उस समय पीएसी दिशाहीन प्रतीत हो रही थी; उनका नेतृत्व अनुयायियों की तलाश में था और उन्होंने अभी तक ऐसा कोई कदम नहीं उठाया था जिससे उन्हें राजनीतिक मानचित्र पर पहचान मिल सके। वे एएनसी के एंटीपास अभियान से अवगत थे और उन्हें इसमें शामिल होने का निमंत्रण भी मिला था, लेकिन कांग्रेस आंदोलन के साथ हाथ मिलाने के बजाय, उन्होंने हमें नुकसान पहुंचाने की कोशिश की। पीएसी ने 21 मार्च को अपना एंटीपास अभियान शुरू करने की घोषणा की, जो हमारे अभियान के शुरू होने से दस दिन पहले था। उन्होंने तारीख पर

चर्चा करने के लिए कोई सम्मेलन आयोजित नहीं किया था, न ही कोई महत्वपूर्ण संगठनात्मक कार्य किया था। यह अवसरवादिता का स्पष्ट उदाहरण था। उनके कार्यों के पीछे दुश्मन को हराने की बजाय एएनसी को कमजोर करने की इच्छा अधिक थी।
निर्धारित प्रदर्शन से चार दिन पहले, सोबुकवे ने हमें पीएसी में शामिल होने का निमंत्रण दिया। सोबुकवे का यह प्रस्ताव एकता का प्रतीक नहीं था, बल्कि पीएसी को हमें शामिल न करने के लिए आलोचना से बचाने की एक रणनीतिक चाल थी। उन्होंने यह प्रस्ताव अंतिम समय में दिया, और हमने भाग लेने से इनकार कर दिया। 21 मार्च की सुबह, सोबुकवे और उनके कार्यकारी सदस्य गिरफ्तारी के लिए ऑरलैंडो पुलिस स्टेशन गए। काम पर जा रहे हजारों लोगों ने पीएसी सदस्यों को अनसुना कर दिया। मजिस्ट्रेट की अदालत में, सोबुकवे ने घोषणा की कि पीएसी अपने नारे "न जमानत, न बचाव, न जुर्माना" के अनुसार अपना बचाव करने का प्रयास नहीं करेगी। उनका मानना था कि विरोध करने वालों को कुछ हफ्तों की सजा मिलेगी। लेकिन सोबुकवे को तीन सप्ताह की नहीं, बल्कि तीन साल की कैद की सजा सुनाई गई, जिसमें जुर्माने का विकल्प भी नहीं था। जोहान्सबर्ग में पीएसी के आह्वान पर प्रतिक्रिया नगण्य रही। डरबन, पोर्ट एलिजाबेथ या ईस्ट लंदन में तो कोई प्रदर्शन हुआ ही नहीं। लेकिन एवेटन में, जेड. बी. मोलेट ने, जो मोलेफी और वुसुमुज़ी मेक की मदद से, पूरे कस्बे का समर्थन जुटाया, जब सैकड़ों पुरुषों ने बिना पास के गिरफ्तारी के लिए खुद को पेश किया। केप टाउन में शहर के इतिहास में सबसे बड़े पास विरोधी प्रदर्शनों में से एक देखने को मिला। केप टाउन के बाहर लांगा टाउनशिप में, युवा छात्र फिलिप कगोसाना के नेतृत्व में लगभग तीस हजार लोग इकट्ठा हुए और पुलिस की लाठीचार्ज से भड़क उठे और दंगा करने लगे। दो लोग मारे गए। लेकिन प्रदर्शनों का अंतिम क्षेत्र सबसे भयावह था और वह क्षेत्र जिसका नाम आज भी त्रासदी की याद दिलाता है: शार्पविले।
शार्पविले, जोहान्सबर्ग से लगभग पैंतीस मील दक्षिण में, वेरिनिगिंग के आसपास के सुनसान औद्योगिक क्षेत्र में स्थित एक छोटा सा कस्बा था। पीएसी कार्यकर्ताओं ने इलाके को संगठित करने का बेहतरीन काम किया था। दोपहर होते-होते, कई हज़ार लोगों की भीड़ ने पुलिस स्टेशन को घेर लिया। प्रदर्शनकारी संयमित और निहत्थे थे। पचहत्तर पुलिसकर्मियों की संख्या बहुत कम थी और वे घबराए हुए थे। किसी ने भी चेतावनी के तौर पर चलाई गई

गोलियों या गोली चलाने के आदेश की आवाज़ नहीं सुनी, लेकिन अचानक पुलिस ने भीड़ पर गोलियां चला दीं और प्रदर्शनकारियों के डर से भागने पर भी गोलियां चलती रहीं। जब इलाका खाली हुआ, तो उनहत्तर अफ्रीकी मृत पड़े थे, जिनमें से अधिकांश भागते समय पीठ में गोली लगने से मारे गए थे। कुल मिलाकर, भीड़ पर सात सौ से अधिक गोलियां चलाई गईं, जिनमें दर्जनों महिलाओं और बच्चों सहित चार सौ से अधिक लोग घायल हुए। यह एक नरसंहार था, और अगले दिन प्रेस की तस्वीरों ने दुनिया भर के अखबारों के पहले पन्नों पर इस बर्बरता को दिखाया।
शार्पविल में हुई गोलीबारी ने देशव्यापी उथल-पुथल और सरकार संकट को जन्म दिया। अमेरिकी विदेश विभाग समेत दुनिया भर से आक्रोशित विरोध प्रदर्शन हुए। पहली बार संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद ने दक्षिण अफ्रीका के मामलों में हस्तक्षेप करते हुए गोलीबारी के लिए सरकार को दोषी ठहराया और नस्लीय समानता लाने के लिए कदम उठाने का आग्रह किया। जोहान्सबर्ग शेयर बाजार में भारी गिरावट आई और देश से पूंजी का पलायन शुरू हो गया। दक्षिण अफ्रीका के श्वेत नागरिक देश छोड़कर पलायन करने की योजना बनाने लगे। उदारवादियों ने वेरवोर्ड से अफ्रीकियों को रियायतें देने का आग्रह किया। सरकार ने जोर देकर कहा कि शार्पविल की घटना कम्युनिस्ट साजिश का परिणाम थी।
शार्पविले नरसंहार ने देश में एक नई स्थिति पैदा कर दी। अपने नेताओं की अनुभवहीनता और अवसरवादिता के बावजूद, पीएसी के कार्यकर्ताओं ने शार्पविले और लांगा में अपने प्रदर्शनों में अदम्य साहस और दृढ़ता का परिचय दिया। महज एक दिन में वे संघर्ष की अग्रिम पंक्ति में आ गए थे, और रॉबर्ट सोबुकवे को देश और विदेश में मुक्ति आंदोलन के उद्धारकर्ता के रूप में सराहा जा रहा था। एएनसी में हमें इस नई स्थिति के अनुरूप तेजी से बदलाव करने पड़े, और हमने ऐसा किया।
हममें से कुछ लोग—वाल्टर, डूमा नोकवे, जो स्लोवो और मैं—ने जोहान्सबर्ग में रात भर बैठक करके प्रतिक्रिया की योजना बनाई। हम जानते थे कि हमें किसी न किसी तरह से इन घटनाओं को स्वीकार करना होगा और लोगों को अपना गुस्सा और दुख व्यक्त करने का मौका देना होगा। हमने अपनी योजनाएँ चीफ लुथुली को बताईं और उन्होंने सहर्ष स्वीकार कर लीं। 26 मार्च को प्रिटोरिया में चीफ ने सार्वजनिक रूप से अपना पास जला दिया और दूसरों से

भी ऐसा ही करने का आह्वान किया। उन्होंने 28 मार्च को पूरे देश में घर पर रहने की घोषणा की, जो शार्पविले में हुए अत्याचारों के लिए राष्ट्रीय शोक और विरोध दिवस था। इसके बाद ऑरलैंडो में, डूमा नोकवे और मैंने सैकड़ों लोगों और दर्जनों प्रेस फोटोग्राफरों के सामने अपने पास जला दिए।
दो दिन बाद, अट्ठाईस तारीख को, देश ने शानदार प्रतिक्रिया दी जब कई लाख अफ्रीकियों ने मुखिया के आह्वान का पालन किया। केवल एक वास्तविक जन संगठन ही ऐसी गतिविधियों का समन्वय कर सकता था, और एएनसी ने ऐसा ही किया। केप टाउन में लांगा टाउनशिप में पचास हजार लोगों की भीड़ गोलीबारी के विरोध में इकट्ठा हुई। कई इलाकों में दंगे भड़क उठे। सरकार ने आपातकाल की घोषणा कर दी, बंदी प्रत्यक्षीकरण को निलंबित कर दिया और हर तरह के विध्वंस के खिलाफ कार्रवाई करने के लिए व्यापक शक्तियां ग्रहण कर लीं। दक्षिण अफ्रीका में अब मार्शल लॉ लागू था।

34

30 मार्च की सुबह 1:30 बजे, मेरे दरवाजे पर तेज, अप्रिय दस्तक से मेरी नींद खुली, जो पुलिस की स्पष्ट पहचान थी। मैंने मन ही मन कहा, "समय आ गया है," और दरवाजा खोलकर देखा तो सामने आधा दर्जन हथियारबंद सुरक्षाकर्मी खड़े थे। उन्होंने घर को तहस-नहस कर दिया और लगभग हर कागज़ात ले गए, जिनमें मेरी माँ द्वारा हाल ही में परिवार के इतिहास और जनजातीय लोककथाओं के बारे में लिखे गए मेरे दस्तावेज़ भी शामिल थे। मैं उन्हें फिर कभी नहीं देख पाया। मुझे बिना वारंट के गिरफ्तार कर लिया गया और मेरे वकील को फोन करने का मौका भी नहीं दिया गया। उन्होंने मेरी पत्नी को यह बताने से भी इनकार कर दिया कि मुझे कहाँ ले जाया जा रहा है। मैंने विनी को बस सिर हिलाकर इशारा किया; यह सांत्वना के शब्दों का समय नहीं था।
तीस मिनट बाद हम न्यूलैंड्स पुलिस स्टेशन पहुँचे, जो मेरे लिए जाना-पहचाना था क्योंकि मैं वहाँ कई बार मुलाक़ात के लिए गया था। यह स्टेशन सोफियाटाउन में स्थित था, या यूँ कहें कि उसके बचे-खुचे हिस्से में, क्योंकि कभी गुलज़ार रहने वाला यह कस्बा अब बुलडोज़र से गिराई गई इमारतों और खाली ज़मीनों का खंडहर बन चुका था। अंदर मुझे मेरे कई सहकर्मी मिले जिन्हें भी मेरी तरह बिस्तर से उठा दिया गया था, और रात भर में और भी लोग आते गए; सुबह तक हम कुल चालीस हो गए थे। हमें एक तंग से आँगन में बिठा दिया गया जहाँ सिर्फ़ आसमान ही छत था और रोशनी के लिए एक मंद बल्ब था, जगह इतनी छोटी और सीलन भरी थी कि हम पूरी रात खड़े रहे।
सात बजकर पंद्रह मिनट पर हमें एक छोटी सी कोठरी में ले जाया गया, जिसके फर्श में एक ही नाली का छेद था जिसे केवल बाहर से ही साफ किया जा सकता था। हमें न कंबल दिए गए, न खाना, न चटाई और न ही टॉयलेट पेपर। वह छेद बार-बार बंद हो जाता था और कमरे में असहनीय बदबू आती थी। हमने कई बार विरोध किया, जिनमें खाना देने की मांग भी शामिल थी। हमारी मांगों का हमने कठोर शब्दों में जवाब दिया, और हमने ठान लिया कि अगली बार जब दरवाजा खुलेगा, तो हम बाहर निकलकर पास के आंगन में चले जाएंगे और खाना मिलने तक कोठरी में वापस नहीं लौटेंगे। ड्यूटी पर तैनात युवा पुलिसकर्मी डर गया और जैसे ही हम दरवाजे से

बाहर भागे, वह वहां से चला गया। कुछ मिनट बाद, एक हट्टा-कट्टा और सख्त मिजाज सार्जेंट आंगन में आया और हमें कोठरी में वापस जाने का आदेश दिया। "अंदर जाओ!" वह चिल्लाया। "अगर नहीं गए, तो मैं लाठियों के साथ पचास आदमी लाऊंगा और हम तुम्हारी खोपड़ी तोड़ देंगे!" शार्पविले की भयावहता के बाद, यह धमकी खोखली नहीं लग रही थी।
स्टेशन कमांडर हमें देखने के लिए आंगन के द्वार तक आए और फिर मेरे पास आकर मुझे जेब में हाथ डाले खड़े होने पर डांटने लगे। “क्या तुम एक अधिकारी के सामने ऐसे ही पेश आते हो?” उन्होंने चिल्लाकर कहा। “अपने गंदे हाथ जेब से बाहर निकालो!” मैंने अपने हाथ जेब में ही मजबूती से जमाए रखे, मानो मैं किसी सर्द दिन में टहल रहा हूँ। मैंने उनसे कहा कि अगर हमें खाना मिल जाए तो शायद मैं अपने हाथ निकाल लूँ।
दोपहर 3 बजे, हममें से अधिकांश लोगों के आगमन के बारह घंटे से अधिक समय बाद, हमें पतले मक्के के दलिया का एक डिब्बा दिया गया और कोई बर्तन नहीं दिए गए। सामान्यतः, मैं इसे खाने के लिए अनुपयुक्त मानता, लेकिन हमने बिना धुले हाथों से ही उसे खाया, मानो हमें दुनिया का सबसे स्वादिष्ट भोजन परोसा गया हो। भोजन के बाद, हमने अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए एक समिति का चुनाव किया, जिसमें डूमा नोकवे और पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस के प्रचार सचिव ज़ेड. बी. मोलेट और मैं शामिल थे। मुझे प्रवक्ता चुना गया। हमने तुरंत अनुपयुक्त परिस्थितियों का विरोध करते हुए और अपनी तत्काल रिहाई की मांग करते हुए एक याचिका तैयार की, क्योंकि हमारी हिरासत अवैध थी।
शाम छह बजे हमें सोने के लिए चटाई और कंबल मिले। मुझे नहीं लगता कि शब्दों में इस बिस्तर की गंदगी और बदहाली का वर्णन करना संभव है। कंबल सूखे खून और उल्टी से सने हुए थे, जूँ, कीड़े-मकोड़े और तिलचट्टों से भरे हुए थे, और उनसे इतनी दुर्गंध आ रही थी कि नाले की बदबू से भी ज़्यादा भयानक थी।
आधी रात के करीब, हमें बताया गया कि हमें बुलाया जाएगा, लेकिन किसलिए, यह हमें नहीं पता था। कुछ लोग रिहाई की उम्मीद में मुस्कुरा रहे थे। बाकी लोग बेहतर जानते थे। मुझे सबसे पहले बुलाया गया और मुझे जेल के मुख्य द्वार तक ले जाया गया, जहाँ मुझे कुछ पुलिस अधिकारियों के सामने थोड़ी देर के लिए रिहा किया गया। लेकिन इससे पहले कि मैं हिल पाता, एक अधिकारी चिल्लाया। "नाम!"
मैंने कहा, "मंडेला।"

“नेल्सन मंडेला,” अधिकारी ने कहा, “मैं आपको आपातकालीन नियमों के तहत प्रदत्त शक्तियों का प्रयोग करते हुए गिरफ्तार करता हूँ।” हमें रिहा नहीं किया जाना था, बल्कि आपातकाल की स्थिति में फिर से गिरफ्तार किया जाना था, जिसके बारे में हमें बाद में पता चला। हममें से प्रत्येक को बारी-बारी से कुछ सेकंड के लिए रिहा किया गया और फिर से गिरफ्तार कर लिया गया। आपातकाल की स्थिति से पहले हमें अवैध रूप से गिरफ्तार किया गया था; अब हमें आधी रात से लागू हुए आपातकाल की स्थिति के तहत विधिवत गिरफ्तार किया जा रहा था। हमने कमांडर को एक ज्ञापन लिखकर अपने अधिकारों के बारे में पूछा।
अगली सुबह मुझे कमांडर के दफ्तर में बुलाया गया, जहाँ मैंने अपने सहकर्मी रॉबर्ट रेशा को पाया, जिन्हें गिरफ्तार कर लिया गया था और स्टेशन कमांडर उनसे पूछताछ कर रहे थे। जब मैं कमरे में दाखिल हुआ, तो रेशा ने कमांडर से पूछा कि पिछली रात उन्होंने मुझ पर इतना गुस्सा क्यों किया था। उनका जवाब एक विशिष्ट श्वेत बॉस जैसा था: "मंडेला बदतमीज़ थे।" मैंने जवाब दिया, "मैं तुम्हारे जैसे लोगों के लिए, तब भी और अब भी, अपनी जेब से हाथ निकालने के लिए बाध्य नहीं हूँ।" कमांडर अपनी कुर्सी से उछल पड़े, लेकिन अन्य अधिकारियों ने उन्हें रोक लिया। उसी क्षण, स्पेशल ब्रांच के डिटेक्टिव सार्जेंट हेलबर्ग दफ्तर में दाखिल हुए और उन्होंने बड़े ही विनम्र लहजे में कहा, "हेलो, नेल्सन!" जिस पर मैंने पलटकर जवाब दिया, "मैं तुम्हारे लिए नेल्सन नहीं हूँ, मैं श्री मंडेला हूँ।" कमरा पूरी तरह से लड़ाई में बदलने की कगार पर था, तभी हमें सूचित किया गया कि हमें प्रिटोरिया में राजद्रोह मुकदमे में शामिल होने के लिए निकलना होगा। मुझे समझ नहीं आ रहा था कि हँसूँ या निराश हो जाऊँ, लेकिन छत्तीस घंटों के इस दुर्व्यवहार और आपातकाल की घोषणा के बीच भी, सरकार ने हमें प्रिटोरिया वापस लाना उचित समझा ताकि हमारे खिलाफ़ अपने बेताब और अब अप्रचलित प्रतीत हो रहे मुकदमे को जारी रख सके। हमें सीधे प्रिटोरिया स्थानीय जेल ले जाया गया, जहाँ हमें हिरासत में रखा गया।

35

इस बीच, हमारी अनुपस्थिति में 31 मार्च को अदालत की कार्यवाही फिर से शुरू हुई, लेकिन गवाहों का कटघरा पूरी तरह खाली था। उपस्थित लोग वे आरोपी थे जिन्हें आपातकाल के दौरान पुलिस गिरफ्तार करने में विफल रही थी। मुखिया लुथुली अपनी गवाही दे रहे थे, और न्यायाधीश रम्पफ ने उनकी अनुपस्थिति का कारण पूछा। उन्हें बताया गया कि मुखिया को पिछली रात हिरासत में ले लिया गया था। न्यायाधीश रम्पफ ने इस स्पष्टीकरण पर नाराजगी व्यक्त की और कहा कि उन्हें समझ नहीं आता कि आपातकाल उनके मुकदमे में बाधा क्यों बनना चाहिए। उन्होंने पुलिस से मुखिया को अदालत में लाने की मांग की ताकि वे अपनी गवाही फिर से शुरू कर सकें, और अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।
बाद में हमें पता चला कि मुखिया की गिरफ्तारी के बाद उन पर हमला किया गया था। वे सीढ़ियाँ चढ़ रहे थे तभी एक वार्डर ने उन्हें धक्का दिया, जिससे उनकी टोपी ज़मीन पर गिर गई। जब वे उसे उठाने के लिए झुके तो उन्हें सिर और चेहरे पर ज़ोरदार थप्पड़ पड़ा। यह सब हमारे लिए असहनीय था। एक ऐसे व्यक्ति को, जो अत्यंत गरिमा और उपलब्धियों से परिपूर्ण था, जीवन भर एक धर्मनिष्ठ ईसाई रहा और एक गंभीर हृदय रोग से पीड़ित था, ऐसे लोगों द्वारा पशु की तरह व्यवहार किया गया जो उनके जूते के फीते बाँधने के भी लायक नहीं थे।
उस सुबह जब हमें दोबारा सुनवाई के लिए बुलाया गया, तो जज रम्पफ को बताया गया कि पुलिस ने मुख्य अधिकारी को अदालत में लाने से इनकार कर दिया है। जज ने अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी और हम घर जाने की सोच रहे थे। लेकिन जैसे ही वे परिवहन की व्यवस्था करने के लिए अदालत परिसर से निकल रहे थे, हम सभी को एक बार फिर गिरफ्तार कर लिया गया।
लेकिन पुलिस ने अपनी हमेशा की अव्यवस्थित और अति-उत्साही हरकत से एक हास्यास्पद गलती कर दी। आरोपियों में से एक, विल्टन म्कवेई, जो लंबे समय से यूनियन नेता और एएनसी के सदस्य थे, मुकदमे के लिए पोर्ट एलिजाबेथ से प्रिटोरिया आए थे। किसी तरह वे अपने साथियों से अलग हो गए और जब वे गेट के पास पहुंचे और अपने साथी आरोपियों की गिरफ्तारी का शोरगुल देखा, तो उन्होंने एक पुलिसकर्मी से पूछा कि क्या हो रहा है। पुलिसकर्मी ने उन्हें वहां से जाने का आदेश दिया। विल्टन वहीं खड़े रहे। पुलिसकर्मी ने उन्हें

मैंने कहा कि हमें एक शांत और अच्छी रोशनी वाला कमरा भी चाहिए ताकि हम अपने मामले की तैयारी कर सकें। कर्नल का रवैया फिर से तिरस्कारपूर्ण था: "सरकारी नियमों के अनुसार कैदियों को किताबें पढ़ना अनिवार्य नहीं है, अगर आप पढ़ भी सकते हैं तो।" कर्नल के इस अपमानजनक रवैये के बावजूद, कोठरियों को जल्द ही रंग दिया गया और कीटाणुनाशक से साफ किया गया तथा हमें नए कंबल और साफ पानी की बाल्टियाँ उपलब्ध कराई गईं। हमें दिन का अधिकांश समय आंगन में बिताने की अनुमति दी गई, जबकि राजद्रोह मुकदमे में शामिल लोगों को परामर्श के लिए एक बड़ी कोठरी दी गई, जिसमें हमें कानूनी किताबें रखने की भी अनुमति थी।
आने वाले समय में प्रिटोरिया लोकल ही हमारा घर होगा। हम सुबह मुकदमे के लिए निकलते और दोपहर को जेल लौट आते। रंगभेद के नियमों के अनुसार, जेल में कैदियों को रंग के आधार पर अलग रखा जाता था। हम पहले से ही अपने श्वेत साथियों से अलग थे, लेकिन उसी गैर-श्वेत जेल में अपने भारतीय और अश्वेत साथियों से अलग रहना सरासर अन्याय जैसा लग रहा था। हमने साथ रखे जाने की मांग की, और हमें इसके असंभव होने के लिए तरह-तरह के बेतुके बहाने दिए गए। जब लालफीताशाही की अड़ियलपन नस्लवाद की संकीर्ण मानसिकता के साथ मिल जाती है, तो परिणाम चौंकाने वाला हो सकता है। लेकिन अंततः अधिकारियों ने झुककर राजद्रोह के मुकदमे में शामिल लोगों को एक साथ रखने की अनुमति दे दी। हालांकि हमें एक साथ रखा गया था, हमारा भोजन नस्ल के आधार पर तय किया गया था। नाश्ते में, अफ़्रीकी, भारतीय और अश्वेत लोगों को समान मात्रा में भोजन दिया जाता था, सिवाय इसके कि भारतीयों और अश्वेत लोगों को आधा चम्मच चीनी दी जाती थी, जो हमें नहीं मिलती थी। रात के भोजन में भी भोजन एक जैसा ही होता था, सिवाय इसके कि भारतीयों और अश्वेत लोगों को चार औंस रोटी दी जाती थी, जबकि हमें कुछ नहीं मिलता था। यह अंतर इस अजीब धारणा पर आधारित था कि अफ़्रीकी लोग स्वाभाविक रूप से रोटी पसंद नहीं करते थे, जो कि अधिक परिष्कृत या "पश्चिमी" स्वाद था। श्वेत कैदियों का भोजन अफ़्रीकी लोगों की तुलना में कहीं बेहतर था। अधिकारी रंगभेद के प्रति इतने सजग थे कि श्वेत और अश्वेत लोगों को दी जाने वाली चीनी और रोटी का प्रकार भी अलग-अलग था: श्वेत कैदियों को सफेद चीनी और सफेद रोटी दी जाती थी, जबकि अश्वेत और भारतीय कैदियों को भूरी चीनी और भूरी रोटी दी जाती थी।

हमने खाने की घटिया गुणवत्ता के बारे में ज़ोरदार शिकायत की, और परिणामस्वरूप, हमारे वकील सिडनी केंट्रिज ने अदालत में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई। मैंने कहा कि खाना इंसानों के खाने लायक नहीं था। जज रम्पफ खुद खाना चखने के लिए राज़ी हो गए और उसी दिन ऐसा करने के लिए चले गए। जेल में मिलने वाला सबसे अच्छा खाना सैंप और बीन्स था, और इस बार अधिकारियों ने सामान्य से ज़्यादा बीन्स और ग्रेवी डाली थी। जज रम्पफ ने कुछ चम्मच खाए और खाने को अच्छी तरह पका हुआ और स्वादिष्ट बताया। उन्होंने यह भी कहा कि इसे गरम परोसा जाना चाहिए। हम सब आपस में "गरम" जेल के खाने के विचार पर हँसे; यह विरोधाभासी बात थी। आखिरकार, अधिकारियों ने कैदियों को वह दिया जिसे वे बेहतर आहार कहते थे: अफ्रीकियों को रोटी दी गई, जबकि भारतीयों और अश्वेतों को वही खाना दिया गया जो श्वेत कैदियों को दिया जाता था।

हमारी कैद के दौरान मुझे एक असाधारण सुविधा मिली: सप्ताहांत में जोहान्सबर्ग की यात्राएँ। ये जेल से छुट्टी नहीं, बल्कि एक तरह की मौज-मस्ती थी। आपातकाल की घोषणा से कुछ समय पहले, ओलिवर एएनसी के निर्देशों पर दक्षिण अफ्रीका छोड़कर चले गए। हमें लंबे समय से संदेह था कि दमनकारी कार्रवाई होने वाली है, और कांग्रेस ने फैसला किया कि कुछ सदस्यों को देश छोड़कर विदेशों में संगठन को मजबूत करने की आवश्यकता है, क्योंकि उस समय तक संगठन पर पूर्ण प्रतिबंध लग सकता था।
ओलिवर का जाना आंदोलन द्वारा उठाए गए सबसे सुनियोजित और सौभाग्यशाली कदमों में से एक था। उस समय हमें शायद ही अंदाजा था कि बाहरी शाखा कितनी महत्वपूर्ण हो जाएगी। अपनी बुद्धिमत्ता और शांत स्वभाव, धैर्य और संगठनात्मक कौशल, नेतृत्व करने और बिना किसी को ठेस पहुंचाए प्रेरणा देने की क्षमता के साथ, ओलिवर इस कार्य के लिए एकदम सही विकल्प थे।
जाने से पहले, ओलिवर ने हमारे एक साझा मित्र, स्थानीय वकील हाइमी डेविडॉफ को हमारे कार्यालय को बंद करने और हमारी वकालत को समाप्त करने के लिए नियुक्त किया था। डेविडॉफ ने कर्नल प्रिंसलू से विशेष अनुरोध किया कि मुझे सप्ताहांत में जोहान्सबर्ग आने की अनुमति दी जाए ताकि मैं उन्हें व्यवस्था संभालने में मदद कर सकूँ। उदारता दिखाते हुए, कर्नल प्रिंसलू

मान गए और मुझे शुक्रवार दोपहर को जोहान्सबर्ग जाने की अनुमति दी, जहाँ मैं पूरे सप्ताहांत कार्यालय में काम करता था और फिर सोमवार सुबह मुझे वापस मुकदमे के लिए लाया जाता था। सार्जेंट क्रूगर और मैं शुक्रवार को दोपहर एक बजे अदालत की कार्यवाही समाप्त होने के बाद निकलते थे और अपने कार्यालय पहुँचने पर, मैं डेविडॉफ और हमारे लेखाकार नाथन मार्कस के साथ काम करता था। मैं रातें मार्शल स्क्वायर जेल में और दिन कार्यालय में बिताता था।
सार्जेंट क्रूगर एक लंबा-चौड़ा और प्रभावशाली व्यक्ति था, जो हमारे साथ निष्पक्ष व्यवहार करता था। प्रिटोरिया से जोहान्सबर्ग जाते समय, वह अक्सर गाड़ी रोक देता और मुझे अंदर ही छोड़कर दुकान में जाकर हम दोनों के लिए बिल्टोंग, संतरे और चॉकलेट खरीद लेता था। मैं गाड़ी से कूदने के बारे में सोचता था, खासकर शुक्रवार को, जब फुटपाथ और सड़कें व्यस्त होती थीं और भीड़ में खो जाने का खतरा रहता था।
जब मैं दफ्तर में होता था, तो मैं नीचे भूतल पर बने कैफे में जाकर छोटी- मोटी चीजें खरीद लेता था, और विनी के मुझसे मिलने आने पर वह एक-दो बार मुझसे नज़रें फेर लेता था। हमारे बीच एक तरह का सज्जनतापूर्ण समझौता था: मैं भागकर उसे मुसीबत में नहीं डालता था, जबकि वह मुझे कुछ हद तक आज़ादी देता था।

36

25 अप्रैल को, मुकदमे की सुनवाई फिर से शुरू होने से एक दिन पहले, इस्सी मैसेल्स ने हमें बुलाया और आपातकाल के मुकदमे की कार्यवाही पर पड़ रहे गंभीर प्रभाव पर चर्चा की। आपातकालीन नियमों के कारण, आरोपियों और हमारे वकीलों के बीच परामर्श लगभग असंभव हो गया था। जोहान्सबर्ग में स्थित हमारे वकीलों को जेल में हमसे मिलने में कठिनाई हो रही थी और वे हमारे मामले की तैयारी नहीं कर पा रहे थे। वे अक्सर गाड़ी से आते और उन्हें बताया जाता कि हम उपलब्ध नहीं हैं। यहां तक कि जब हम उनसे मिल पाते, तब भी परामर्श में बाधा डाली जाती और उसे बीच में ही रोक दिया जाता। इससे भी महत्वपूर्ण बात यह है कि मैसेल्स ने समझाया कि आपातकालीन नियमों के तहत, जो लोग पहले से ही हिरासत में हैं, वे केवल गवाही देकर खुद को और अधिक हिरासत में लिए जाने के जोखिम में डाल रहे होंगे, क्योंकि वे अनिवार्य रूप से ऐसे बयान देंगे जिन्हें "विद्रोही" माना जाएगा, जिससे वे और अधिक दंड के भागी बन जाएंगे। बचाव पक्ष के जो गवाह जेल में नहीं थे, अब गवाही देने पर उन्हें भी हिरासत में लिए जाने का खतरा था।
बचाव पक्ष ने विरोध में मुकदमे से हटने का प्रस्ताव रखा। मैसेल्स ने इस तरह के हटने के गंभीर परिणामों और मृत्युदंड के मामले में स्वयं बचाव करने के परिणामों के बारे में बताया। उन्होंने कहा कि उस समय के प्रतिकूल माहौल में, न्यायाधीश हमें लंबी कैद की सजा दे सकते हैं। हमने आपस में इस प्रस्ताव पर चर्चा की और उनतीस आरोपियों में से प्रत्येक (अब विल्टन म्कवेई शामिल नहीं थे) को अपनी राय व्यक्त करने का अवसर मिला। प्रस्ताव को सर्वसम्मति से स्वीकार कर लिया गया और यह तय किया गया कि हमारे वकीलों की अनुपस्थिति में डूमा नोकवे और मैं मुकदमे की तैयारी में मदद करेंगे। मैं इस नाटकीय कदम के पक्ष में था, क्योंकि इससे आपातकाल की स्थिति की असमानताओं पर प्रकाश पड़ता था।
26 अप्रैल को, ट्रांसवाल के पहले अफ्रीकी वकील, डूमा नोकवे, अदालत में खड़े हुए और सनसनीखेज घोषणा की कि आरोपी अपने बचाव पक्ष के वकीलों को मामले से हटने का निर्देश दे रहे हैं। इसके बाद मैसेल्स ने सीधे-सीधे कहा, "हमारे पास अब कोई अधिकार नहीं है और इसलिए हम माननीय न्यायाधीशों को और

परेशान नहीं करेंगे," जिसके बाद बचाव पक्ष की टीम चुपचाप आराधनालय से बाहर निकल गई। इससे तीन न्यायाधीशों का पैनल स्तब्ध रह गया, जिन्होंने हमें अपने बचाव स्वयं करने के खतरों के बारे में कड़ी चेतावनी दी। लेकिन हम क्रोधित थे और राज्य से मुकाबला करने के लिए उत्सुक थे। अगले पांच महीनों तक, आपातकाल की लगभग समाप्ति तक, हमने अपना बचाव स्वयं किया।
हमारी रणनीति सरल और रक्षात्मक थी: आपातकाल हटने और हमारे वकीलों के वापस आने तक मामले को खींचना। मामला पहले ही इतना लंबा खिंच चुका था कि इसे और आगे बढ़ाने से कोई फर्क नहीं पड़ता था। व्यवहार में, यह रणनीति हास्यास्पद साबित हुई। कानून के अनुसार, हममें से प्रत्येक को अपना बचाव स्वयं करने का अधिकार था और वह अन्य सभी आरोपियों को गवाह के रूप में बुला सकता था; और प्रत्येक आरोपी को प्रत्येक गवाह से जिरह करने का अधिकार था। हमें केस फाइल के अनुसार वर्णमाला क्रम में व्यवस्थित किया गया था और आरोपी नंबर एक ट्रांसवाल इंडियन यूथ कांग्रेस के फरीद एडम्स थे। फरीद अपना पक्ष रखते हुए आरोपी नंबर दो, हेलेन जोसेफ को पहले गवाह के रूप में बुलाते। फरीद द्वारा पूछताछ के बाद, हेलेन से सत्ताईस अन्य सह-आरोपियों द्वारा जिरह की जाती। फिर उनसे अभियोजन पक्ष द्वारा जिरह की जाती और आरोपी नंबर एक द्वारा पुनः पूछताछ की जाती। इसके बाद एडम्स आरोपी नंबर तीन को बुलाते, और इसी तरह यह प्रक्रिया तब तक दोहराई जाती जब तक कि सभी आरोपियों को इस तरह से बुलाया न जाए। इस रफ्तार से तो हमें सहस्राब्दी तक मुकदमे का सामना करना पड़ेगा।

जेल से मुकदमा तैयार करना कभी आसान नहीं होता, और इस मामले में हमें भेदभाव से जुड़ी पुरानी बाधाओं का सामना करना पड़ा। सभी आरोपियों को एक साथ मिलना आवश्यक था, लेकिन जेल के नियमों के अनुसार पुरुष और महिला कैदियों के बीच, और काले और गोरे कैदियों के बीच बैठकें प्रतिबंधित थीं, इसलिए हमें हेलेन जोसेफ, लियोन लेवी, लिलियन न्गोयी और बर्था माशाबा से परामर्श करने की अनुमति नहीं मिली।
हेलेन, जिसे पहली गवाह के रूप में बुलाया गया था, को डूमा, मेरी और फरीद एडम्स की उपस्थिति में अपना साक्ष्य तैयार करना था, जो उससे पूछताछ करने वाले थे। जेल अधिकारियों के साथ लंबी बातचीत के बाद, हमें बहुत सख्त

शर्तों के तहत परामर्श करने की अनुमति दी गई। हेलेन जोसेफ, लिलियन, लियोन और बर्था को उनकी विभिन्न जेलों और अनुभागों (जाति और लिंग के आधार पर अलग-अलग) से अफ्रीकी पुरुषों की जेल में लाया जाना था। पहली शर्त यह थी कि श्वेत और अश्वेत कैदियों के बीच, और पुरुष और महिला कैदियों के बीच कोई शारीरिक संपर्क नहीं हो सकता। अधिकारियों ने हेलेन और लियोन (श्वेत होने के कारण) को हमसे अलग करने के लिए एक लोहे की जाली लगाई और दूसरी जाली उन्हें लिलियन से अलग करने के लिए लगाई, जो तैयारियों में भी भाग ले रही थी। एक कुशल वास्तुकार को भी ऐसी संरचना डिजाइन करने में कठिनाई होती। जेल में हम इस जटिल धातु की संरचना से एक-दूसरे से अलग थे, जबकि अदालत में हम सभी स्वतंत्र रूप से मिल-जुल रहे थे।
सबसे पहले हमें फरीद को अदालत के शिष्टाचार सिखाने और हेलेन की गवाही का अभ्यास कराने की आवश्यकता थी। हेलेन की मदद करने के लिए, मैं अदालत में फरीद की भूमिका निभा रहा था। मैंने अदालत के उचित तौर-तरीकों को अपनाते हुए पूछताछ शुरू की।
“नाम?” मैंने कहा।
“हेलेन जोसेफ,” उसने उत्तर दिया।
"आयु?"
सन्नाटा। मैंने दोहराया, "उम्र?"
हेलेन ने अपने होंठ सिकोड़े और इंतज़ार किया। फिर कुछ क्षण बाद, उसने मुझे घूरकर देखा और तीखे स्वर में कहा, "नेल्सन, इस मामले से मेरी उम्र का क्या लेना-देना है?"
हेलेन जितनी आकर्षक थीं, उतनी ही साहसी भी, लेकिन उनमें एक दबंग स्वभाव भी था। वह एक उम्रदराज महिला थीं और इस बात को लेकर संवेदनशील भी थीं। मैंने उन्हें समझाया कि गवाह का नाम, उम्र, पता और जन्मस्थान जैसी जानकारी दर्ज करना प्रथागत है। गवाह की उम्र अदालत को उसकी गवाही का मूल्यांकन करने में मदद करती है और सजा तय करने में भी इसका प्रभाव पड़ता है।
मैंने आगे पूछा: "उम्र?"
हेलेन अकड़ गई। उसने कहा, "नेल्सन, जब अदालत में मामला आएगा तब मैं इस बारे में सोचूंगी, लेकिन तब तक नहीं। चलिए आगे बढ़ते हैं।"

फिर मैंने उससे कई सवाल पूछे जिनकी वह क्राउन से उम्मीद कर सकती थी, और शायद यह सवाल उसके लिए कुछ ज्यादा ही यथार्थवादी था, क्योंकि एक समय हेलेन मेरी तरफ मुड़ी और बोली, "क्या आप मंडेला हैं या आप अभियोजक हैं?"
कुछ अन्य हल्के-फुल्के पल भी थे, जिनमें से कुछ काफी उत्साहवर्धक थे। मुझे सप्ताहांत में हेलेन जोसेफ से मिलने और कार्यवाही के रिकॉर्ड लाने की अनुमति थी। इन मौकों पर मैं अन्य महिला बंदियों से मिलती और संभावित गवाहों के तौर पर उनसे सलाह लेती। मैं श्वेत वार्ड प्रहरियों के साथ हमेशा बहुत सौहार्दपूर्ण व्यवहार करती थी, और मैंने देखा कि मेरी मुलाकातों में काफी दिलचस्पी पैदा होती थी। वार्ड प्रहरियों को कभी पता ही नहीं था कि कोई अफ्रीकी वकील या डॉक्टर भी हो सकता है, और वे मुझे एक अजीब प्राणी समझती थीं। लेकिन जैसे-जैसे मैं उनसे अधिक परिचित होती गई, वे अधिक मित्रवत और सहज होती गईं, और मैं उनसे मजाक में कहती थी कि मैं उनकी किसी भी कानूनी समस्या का समाधान कर दूंगी। एक प्रतिष्ठित और शिक्षित श्वेत महिला को एक अश्वेत पुरुष के साथ पूर्ण समानता के आधार पर गंभीर मामलों पर चर्चा करते देखना वार्ड प्रहरियों की रंगभेद संबंधी धारणाओं को कमजोर करने में ही सहायक सिद्ध हो सकता था।
एक बार हेलेन के साथ एक लंबे साक्षात्कार के दौरान, मैंने वार्ड्रेस की ओर मुड़कर, जिसे हमारी बातचीत में बैठने के लिए कहा गया था, कहा, "मुझे इस अंतहीन परामर्श से आपको ऊबाने के लिए खेद है।"
“नहीं,” उसने कहा, “आप मुझे बिल्कुल भी बोर नहीं कर रहे हैं, मुझे मज़ा आ रहा है।” मैं देख सकता था कि वह हमारी बातचीत पर ध्यान दे रही थी, और एक-दो बार उसने छोटे-मोटे सुझाव भी दिए। मैंने इसे मुकदमे का एक अतिरिक्त लाभ समझा। इनमें से ज़्यादातर जेल की महिलाओं को पता ही नहीं था कि हम जेल में क्यों हैं, और धीरे-धीरे उन्हें समझ आने लगा कि हम किस बात के लिए लड़ रहे हैं और आखिर क्यों हम जेल जाने का जोखिम उठाने को तैयार थे।
यही कारण है कि नेशनल पार्टी एकीकरण के सभी रूपों का घोर विरोध करती थी। केवल श्वेत मतदाता, जो अश्वेतों के खतरे के विचार से प्रभावित थे और अफ्रीकी विचारों और नीतियों से अनभिज्ञ थे, नेशनल पार्टी के इस भयानक नस्लवादी दर्शन का समर्थन कर सकते थे। इस मामले में, जान-पहचान से घृणा नहीं, बल्कि समझ और अंततः सद्भाव उत्पन्न होगा।

जेल में बिताए कुछ खुशनुमा पल भी उन बुरे पलों की भरपाई नहीं कर सके। जब मैं प्रिटोरिया में थी, विनी को कई बार मुझसे मिलने की इजाज़त मिली, और हर बार वह ज़ेनानी को साथ लाती थी, जो तब चलना और बोलना सीख रही थी। अगर गार्ड इजाज़त देते, तो मैं उसे गोद में लेकर चूमती और मुलाकात के अंत में उसे विनी को वापस सौंप देती। जब विनी अलविदा कह रही होती और गार्ड उन्हें बाहर ले जा रहे होते, तो ज़ेनानी अक्सर मुझे उनके साथ आने का इशारा करती, और मैं उसके छोटे से हैरान चेहरे पर देख सकती थी कि उसे समझ नहीं आ रहा था कि मैं क्यों नहीं आ सकती।

अदालत में, फरीद एडम्स ने बड़ी कुशलता से हेलेन को मुख्य साक्ष्य प्रस्तुत करने में मार्गदर्शन दिया। उन्होंने न्यायाधीशों के साथ बार-बार और काफी सक्षम ढंग से बहस की। अब हममें जोश आ गया था: अब समय बिताने के लिए कोई भी क्रॉसवर्ड पहेलियाँ नहीं सुलझा रहा था। जैसे-जैसे आरोपियों ने बारी-बारी से गवाहों से जिरह की, अभियोजन पक्ष और सरकारी वकीलों को पहली बार मुकदमे का सामना कर रहे पुरुषों और महिलाओं की वास्तविक क्षमता का अंदाजा लगने लगा।
दक्षिण अफ़्रीकी कानून के अनुसार, चूंकि हम सर्वोच्च न्यायालय में थे, इसलिए वकील होने के नाते डुमा ही एकमात्र ऐसे व्यक्ति थे जिन्हें न्यायाधीशों को सीधे संबोधित करने की अनुमति थी। मैं, एक वकील होने के नाते, उन्हें निर्देश दे सकता था, लेकिन तकनीकी रूप से मुझे न्यायालय को संबोधित करने की अनुमति नहीं थी, और न ही अन्य किसी प्रतिवादी को। हमने इस सही धारणा के तहत अपने वकीलों को छुट्टी दे दी थी कि प्रतिनिधित्व की अनुपस्थिति में, आरोपी को न्यायालय को संबोधित करने की अनुमति होगी। मैंने न्यायालय को संबोधित किया और न्यायमूर्ति रम्पफ ने हमें रोकने की कोशिश करते हुए मुझे बीच में ही रोक दिया। उन्होंने कहा, "श्रीमान मंडेला, आप इस तथ्य को समझते हैं कि श्री नोकवे, एक वकील होने के नाते, एकमात्र ऐसे वकील हैं जिन्हें न्यायालय को संबोधित करने की अनुमति है।" जिस पर मैंने उत्तर दिया, "ठीक है, माननीय न्यायाधीश, मुझे विश्वास है कि हम सभी इसका पालन करने के लिए तैयार हैं, बशर्ते आप श्री नोकवे को उनकी फीस का भुगतान

करने के लिए तैयार हों।" उसके बाद से किसी ने भी किसी भी आरोपी के न्यायालय को संबोधित करने पर आपत्ति नहीं जताई।
जब फरीद हेलेन और बाद के गवाहों से पूछताछ कर रहे थे, तब मैं और दुमा उनके दोनों ओर बैठे थे, उन्हें प्रश्न दे रहे थे और कानूनी मुद्दों को सुलझाने में उनकी मदद कर रहे थे। आम तौर पर उन्हें ज्यादा मार्गदर्शन की जरूरत नहीं पड़ती थी। लेकिन एक दिन, जब हम लगातार दबाव में थे, तो हम हर कुछ सेकंड में उन्हें सुझाव फुसफुसा रहे थे। फरीद थके हुए लग रहे थे और मेरे पास भी ज्यादा सामग्री नहीं बची थी। तभी, हमसे बिना पूछे, फरीद ने अचानक न्यायाधीशों से कार्यवाही स्थगित करने का अनुरोध किया और कहा कि वह थके हुए हैं। न्यायाधीशों ने उनका आवेदन यह कहते हुए अस्वीकार कर दिया कि यह कार्यवाही स्थगित करने का पर्याप्त कारण नहीं है और उन्होंने वही चेतावनी दोहराई जो उन्होंने हमें उस दिन दी थी जब हमारे वकीलों ने कार्यवाही से नाम वापस ले लिया था।
उस दोपहर जब हम जेल लौटे तो कोई गाना नहीं गाया गया, और सभी उदास चेहरों के साथ बैठे थे। आरोपियों के बीच एक संकट मंडरा रहा था। जेल पहुँचते ही, कुछ आरोपियों ने बैठक की मांग की। मैंने सभी लोगों को एक साथ बुलाया, और पोर्ट एलिजाबेथ के एक व्यवसायी जे. न्कम्पेनी, जिन्होंने अवज्ञा अभियान के दौरान अवज्ञा करने वालों के परिवारों की मदद की थी, ने उस बैठक का नेतृत्व किया जो अंततः एक हमले में तब्दील हो गई।
“मदीबा,” उन्होंने सम्मान के प्रतीक के रूप में मेरे कबीले का नाम लेते हुए कहा, “मैं आपसे जानना चाहता हूँ कि आपने हमारे वकीलों को क्यों भगा दिया।” मैंने उन्हें याद दिलाया कि वकीलों को किसी एक व्यक्ति ने नहीं हटाया था; उनकी वापसी सभी की सहमति से हुई थी, जिसमें वे स्वयं भी शामिल थे। “लेकिन हमें अदालत की प्रक्रिया के बारे में क्या पता था, मदीबा?” उन्होंने कहा। “हमने तो आप वकीलों पर भरोसा किया था।”
कई लोगों ने न्कम्पेनी की आशंकाओं से सहमति जताई। मैंने उन्हें निराश होने के खतरों के प्रति आगाह किया और जोर देकर कहा कि हम काफी अच्छा कर रहे हैं। मैंने कहा कि आज तो बस एक छोटी सी बाधा है, और हमें इससे भी बड़ी कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा। हमारा मामला केवल सरकार और कानून तोड़ने के आरोप में फंसे लोगों के बीच कानूनी मुद्दों की सुनवाई से कहीं अधिक था। यह शक्ति की परीक्षा थी, एक नैतिक विचार बनाम एक अनैतिक विचार की शक्ति का

परीक्षण था, और मैंने कहा कि हमें अपने वकीलों की कानूनी तकनीक से कहीं अधिक चीजों के बारे में चिंता करने की आवश्यकता है। विरोध शांत हो गया। हेलेन जोसेफ से जिरह और फिर से जिरह के बाद, तीसरे आरोपी अहमद कथराडा ने अपना पक्ष रखा। कैथी के दूसरे गवाह, चौथे आरोपी स्टेनली लोलन, जो कलर्ड पीपुल्स कांग्रेस के कार्यकारी सदस्य थे, की गवाही के दौरान ही प्रधानमंत्री वेरवोर्ड ने घोषणा की कि आपातकाल जल्द ही हटा लिया जाएगा। आपातकाल कभी भी स्थायी नहीं था, और सरकार का मानना था कि उसने मुक्ति संघर्ष को सफलतापूर्वक दबा दिया था। इसी समय, हमारे बचाव पक्ष के वकील वापस आ गए, जिससे हम सभी को राहत मिली, हालांकि हमें कुछ और हफ्तों तक जेल में ही रहना पड़ा। हमें पांच महीने से अधिक समय तक हिरासत में रखा गया था और हमने अपने वकीलों के बिना ही काम चलाया था।

मेरी गवाही 3 अगस्त को शुरू हुई। दूसरों की गवाही तैयार करने के कारण मैं अच्छी तरह से तैयार महसूस कर रहा था। तीन साल की चुप्पी, प्रतिबंध और आंतरिक निर्वासन के बाद, मैं उन लोगों के सामने बोलने के अवसर का बेसब्री से इंतजार कर रहा था जो मुझे आंकने की कोशिश कर रहे थे। अपनी मुख्य गवाही के दौरान मैंने संयम का उपदेश दिया और अहिंसक संघर्ष के प्रति एएनसी की प्रतिबद्धता को दोहराया। जब मुझसे पूछा गया कि क्या क्रमिक सुधारों के माध्यम से लोकतंत्र प्राप्त किया जा सकता है, तो मैंने सुझाव दिया कि यह संभव है।

हम सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार की मांग करते हैं और अपनी मांगों को पूरा करवाने के लिए आर्थिक दबाव डालने को भी तैयार हैं। हम विरोध प्रदर्शन और धरना-प्रदर्शन करेंगे, चाहे अकेले हों या सामूहिक रूप से, जब तक कि सरकार यह न कह दे, “महोदय, हम इस स्थिति को बर्दाश्त नहीं कर सकते, कानूनों का उल्लंघन हो रहा है और धरना-प्रदर्शनों से यह पूरी स्थिति पैदा हो गई है। आइए बात करते हैं।” मेरे विचार से मैं कहूंगा, “हां, आइए बात करते हैं” और सरकार कहेगी, “हमारा मानना है कि यूरोपीय लोग फिलहाल ऐसी सरकार के लिए तैयार नहीं हैं जहां उन पर गैर-यूरोपियों का प्रभुत्व हो। हमारा मानना है

कि हमें आपको 60 सीटें देनी चाहिए। अफ्रीकी आबादी संसद में अपना प्रतिनिधित्व करने के लिए 60 अफ्रीकियों को चुनेगी। हम इस मामले को पांच साल के लिए स्थगित कर रहे हैं और पांच साल के अंत में इसकी समीक्षा करेंगे।” मेरे विचार से, यह एक जीत होगी, माननीयगण; हम अफ्रीकियों के लिए सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार प्राप्त करने की दिशा में एक महत्वपूर्ण कदम उठा चुके होंगे, और फिर हम पांच साल के लिए कहेंगे, हम सविनय अवज्ञा को स्थगित कर रहे हैं।

सरकार मुझे एक खतरनाक, हिंसा भड़काने वाला कम्युनिस्ट साबित करने पर तुली हुई थी। हालांकि मैं न तो कम्युनिस्ट था और न ही पार्टी का सदस्य, फिर भी मैं अपने कम्युनिस्ट सहयोगियों से दूरी नहीं बनाना चाहता था। हालांकि ऐसे विचार व्यक्त करने पर मुझे वापस जेल भेजा जा सकता था, लेकिन मैंने कम्युनिस्टों द्वारा हमें दिए गए अपार समर्थन को दोहराने में जरा भी संकोच नहीं किया। एक समय तो न्यायाधीश ने मुझसे यह भी पूछा कि क्या मुझे लगता है कि दक्षिण अफ्रीका के लिए एकदलीय शासन व्यवस्था एक व्यवहार्य विकल्प है या नहीं।
एनएम: मेरे प्रभु, यह रूप का प्रश्न नहीं है, यह लोकतंत्र का प्रश्न है। यदि
यदि एकदलीय प्रणाली से लोकतंत्र का सर्वोत्तम रूप व्यक्त हो सकता है, तो मैं इस प्रस्ताव की बहुत सावधानीपूर्वक जांच करूंगा। लेकिन यदि बहुदलीय प्रणाली से लोकतंत्र का सर्वोत्तम रूप व्यक्त हो सकता है, तो मैं उसकी भी सावधानीपूर्वक जांच करूंगा। उदाहरण के लिए, हमारे देश में वर्तमान में बहुदलीय प्रणाली है, लेकिन गैर-यूरोपियों के लिए यह सबसे क्रूर तानाशाही है जिसकी कल्पना की जा सकती है।

मुझे जज रम्पफ पर गुस्सा आया जब उन्होंने सार्वभौमिक मताधिकार के विचार को लेकर कई श्वेत दक्षिण अफ्रीकियों जैसी ही गलती दोहराई। उनका मानना था कि इस जिम्मेदारी को निभाने के लिए मतदाताओं का "शिक्षित" होना आवश्यक है। संकीर्ण सोच वाले व्यक्ति को यह समझाना मुश्किल है कि "शिक्षित" होने का अर्थ केवल साक्षर होना और बीए की डिग्री होना नहीं है, और एक निरक्षर

व्यक्ति भी उच्च डिग्री प्राप्त व्यक्ति की तुलना में कहीं अधिक "शिक्षित" मतदाता हो सकता है।

न्यायमूर्ति रम्पफ: सरकार में भागीदारी का क्या महत्व है?
ऐसे लोगों की स्थिति जो कुछ नहीं जानते?
एनएम: मेरे प्रभु, जब अशिक्षित श्वेत लोग मतदान करते हैं तो क्या होता है… न्यायमूर्ति रम्पफ: क्या वे भी उतने ही प्रभाव के अधीन नहीं हैं?
चुनाव नेताओं को बच्चे कैसे होते?
एनएम: नहीं, मेरे प्रभु, व्यवहार में यही होता है। एक आदमी खड़ा हो जाता है एक व्यक्ति किसी विशेष क्षेत्र से चुनाव लड़ता है; वह अपना घोषणापत्र तैयार करता है और कहता है, "ये वे विचार हैं जिनके लिए मैं चुनाव लड़ रहा हूँ"; यह एक ग्रामीण क्षेत्र है और वह कहता है, "मैं पशुधन नियंत्रण के खिलाफ हूँ"; फिर, उस व्यक्ति की नीतियों को सुनकर, आप तय करते हैं कि यदि आप उसे संसद में चुनते हैं तो क्या वह आपके हितों को आगे बढ़ाएगा, और इसी आधार पर आप उम्मीदवार को वोट देते हैं। इसका शिक्षा से कोई लेना-देना नहीं है। न्यायमूर्ति रम्पफ: क्या वह केवल अपने हितों की ही रक्षा करता है?
एनएम: नहीं, एक व्यक्ति उस व्यक्ति को देखता है जो उसके दृष्टिकोण को सबसे अच्छे तरीके से प्रस्तुत कर सके।
उस व्यक्ति के लिए विचार और वोट।

मैंने अदालत को बताया कि हमारा मानना था कि हम अपनी संख्यात्मक श्रेष्ठता के माध्यम से हिंसा के बिना अपनी मांगों को पूरा कर सकते हैं।

हमें यह विश्वास था कि निकट भविष्य में हम इन मांगों को पूरा कर सकेंगे, और हमने इस आधार पर काम किया कि यूरोपीय लोग, पूर्वाग्रह और शत्रुता की दीवार के बावजूद, जिसका हमने सामना किया, हमारी मांगों के प्रति अनिश्चित काल तक उदासीन नहीं रह सकते, क्योंकि हम अपनी नीति से उन्हें करारा प्रहार कर रहे हैं।
आर्थिक दबाव। यूरोपीय लोग इसे अनदेखा करने की हिम्मत नहीं कर सकते। उन्हें इसका जवाब देना ही होगा और वास्तव में, मेरे प्रभु, वे इसका जवाब दे रहे हैं।

अगस्त के आखिरी दिन आपातकाल हटा लिया गया। हम पाँच महीनों में पहली बार घर जा रहे थे। जब जोहान्सबर्ग के लोगों को आपातकाल खत्म होने की खबर मिली, तो वे इस उम्मीद में वहाँ पहुँच गए कि शायद हमें भी रिहा कर दिया जाए; जब हमें रिहा किया गया, तो दोस्तों और परिवार ने हमारा ज़ोरदार स्वागत किया। विनी को प्रिटोरिया तक लिफ्ट मिल गई थी और हमारा मिलन बेहद खुशी भरा था। मैंने पाँच महीनों से अपनी पत्नी को गले नहीं लगाया था और न ही उसकी खुशी भरी मुस्कान देखी थी। पाँच महीनों में पहली बार, उस रात मैं अपने बिस्तर पर सोया।
जेल से निकलने के बाद, इंसान छोटी-छोटी चीजों की कद्र करने लगता है: जब चाहे टहलने जाना, दुकान में जाकर अखबार खरीदना, बोलना या चुप रहना। अपने ऊपर नियंत्रण रखने जैसी सरल चीजें भी मायने रखती हैं।

आपातकाल समाप्त होने के बाद भी, मुकदमा 29 मार्च, 1961 तक नौ महीने और चला। कई मायनों में, ये आरोपियों के लिए गौरवशाली दिन थे, क्योंकि हमारे अपने लोग निडर होकर एएनसी की नीति का स्पष्ट प्रतिपादन कर रहे थे। रॉबर्ट रेशा ने सरकार के इस बेतुके दावे का जोरदार खंडन किया कि एएनसी सरकार को हिंसा के लिए उकसाना चाहती थी ताकि हम भी बदले में हिंसा का प्रयोग कर सकें। गर्ट सिबांडे ने अदालत को अफ्रीकी कृषि श्रमिकों की दुर्दशा का मार्मिक वर्णन किया। अफ्रीकन नेटिव मिशन चर्च के 81 वर्षीय उपदेशक, लेडीस्मिथ के आदरणीय इसहाक बेहंडी ने समझाया कि हमने हड़तालों के बजाय घर पर रहने का विकल्प क्यों चुना।
अक्टूबर में, प्रखर प्रोफेसर मैथ्यूज को हमारे अंतिम गवाह के रूप में बुलाया गया। वे गवाही देते समय बिल्कुल शांत थे और अभियोजन पक्ष के वकीलों के साथ ऐसा व्यवहार कर रहे थे मानो वे कोई शरारती छात्र हों जिन्हें कड़ी फटकार की आवश्यकता हो। अक्सर वे घबराए हुए अभियोजक को कुछ इस तरह जवाब देते थे: “आप मुझसे वास्तव में यह कहलवाना चाहते हैं कि जिस भाषण को आप हिंसक बता रहे हैं, वह मेरे संगठन की नीति का प्रतिनिधित्व करता है। पहली बात, आपका दावा गलत है और दूसरी बात, मैं ऐसा नहीं कहने वाला।”

उन्होंने सुंदर शब्दों में समझाया कि अफ्रीकी लोग जानते थे कि अहिंसक संघर्ष में कष्ट सहना पड़ेगा, लेकिन उन्होंने इसे चुना क्योंकि वे स्वतंत्रता को सर्वोपरि मानते थे। उन्होंने कहा कि लोग उत्पीड़न से मुक्ति पाने के लिए स्वेच्छा से सबसे भीषण पीड़ा सहने को तैयार रहते हैं। प्रोफेसर मैथ्यूज के कटघरे में खड़े होने के साथ ही बचाव पक्ष ने सशक्त तरीके से अपना पक्ष समाप्त किया। गवाही समाप्त होने के बाद, न्यायमूर्ति कैनेडी ने उनसे हाथ मिलाया और आशा व्यक्त की कि वे बेहतर परिस्थितियों में फिर मिलेंगे।

37

आपातकाल हटने के बाद, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने सितंबर में गुप्त रूप से बैठक करके भविष्य पर चर्चा की। मुकदमे के दौरान जेल में हमारी चर्चाएँ हुई थीं, लेकिन यह हमारी पहली औपचारिक बैठक थी। राज्य किसी बाहरी खतरे से नहीं, बल्कि आंतरिक खतरे से निपटने के लिए तैयारी कर रहा था। हम भंग नहीं होंगे, बल्कि भूमिगत रहकर अपना काम जारी रखेंगे। हमें एएनसी के संविधान में उल्लिखित लोकतांत्रिक प्रक्रियाओं, जैसे सम्मेलन, शाखा बैठकें और सार्वजनिक सभाएँ आयोजित करने के तरीके से हटना होगा। प्रतिबंधित न किए गए कांग्रेस संगठनों से संवाद के लिए नई संरचनाएँ बनानी होंगी। लेकिन ये सभी नई संरचनाएँ अवैध थीं और इनमें भाग लेने वालों को गिरफ़्तारी और कारावास का सामना करना पड़ता। कार्यकारी समिति और उसकी अधीनस्थ संरचनाओं को अवैध परिस्थितियों के अनुकूल ढलने के लिए बहुत ही सुव्यवस्थित करना होगा। मजबूरी में, हमने एएनसी युवा लीग और महिला लीग को भंग कर दिया। कुछ लोगों ने इन बदलावों का कड़ा विरोध किया; लेकिन सच्चाई यह थी कि अब हम एक अवैध संगठन थे। जो लोग इसमें भाग लेते रहे, उनके लिए राजनीति एक जोखिम भरा पेशा होने के बजाय वास्तव में एक खतरनाक पेशा बन गई।
हालाँकि मंडेला और टैम्बो ने अपना काम बंद कर दिया था और अपने सभी बकाया खाते निपटा दिए थे, फिर भी मैंने जितना हो सका उतना कानूनी काम करना जारी रखा। कई सहकर्मियों ने सहर्ष अपने कार्यालय, कर्मचारी और फोन की सुविधा मुझे उपलब्ध कराई, लेकिन ज्यादातर समय मैं अहमद कथरादा के फ्लैट, नंबर 13 खोलवाद हाउस से काम करना पसंद करता था। हालाँकि मेरा वकालत का काम बंद हो गया था, लेकिन एक वकील के रूप में मेरी प्रतिष्ठा पर कोई आंच नहीं आई थी। जल्द ही, नंबर 13 के लाउंज और बाहर का गलियारा ग्राहकों से भर गया। कैथी घर लौटता और यह देखकर निराश हो जाता कि उसके अकेले रहने के लिए एकमात्र कमरा उसकी रसोई ही थी।
इस दौरान मुझे खाने का भी मुश्किल से समय मिलता था और परिवार से भी बहुत कम मिल पाता था। मैं प्रिटोरिया में देर तक रुककर अपने केस की तैयारी करता था, या फिर किसी दूसरे केस के लिए जल्दी वापस आ जाता था। जब कभी परिवार के साथ बैठकर खाना खाने का मौका मिलता, तो फोन की घंटी बज जाती और मुझे कहीं और

बुला लिया जाता। विनी दोबारा गर्भवती थी और बहुत धैर्यवान थी। उसे उम्मीद थी कि शायद उसके पति प्रसव के समय अस्पताल में मौजूद हों। लेकिन ऐसा नहीं हो सका।
सन् 1960 में क्रिसमस की छुट्टियों के दौरान, मुझे पता चला कि मकागाथो ट्रांसकेई में बीमार है, जहाँ वह स्कूल में पढ़ रहा था। मैंने अपने प्रतिबंध के आदेशों का उल्लंघन करते हुए उससे मिलने के लिए वहाँ का रुख किया। मैं पूरी रात गाड़ी चलाता रहा, केवल पेट्रोल भरवाने के लिए रुका। मकागाथो को सर्जरी की आवश्यकता थी, इसलिए मैंने उसे अपने साथ जोहान्सबर्ग वापस लाने का फैसला किया। मैं फिर से पूरी रात गाड़ी चलाता रहा और मकागाथो को उसकी माँ के घर छोड़ दिया, जबकि मैं उसकी सर्जरी की व्यवस्था करने चला गया। जब मैं लौटा, तो मुझे पता चला कि विनी को प्रसव पीड़ा शुरू हो गई थी। मैं तुरंत ब्रिजमैन मेमोरियल अस्पताल के गैर-यूरोपीय विभाग में पहुँचा, जहाँ मुझे पता चला कि माँ और बेटी पहले से ही वहाँ भर्ती थीं। नवजात बच्ची ठीक थी, लेकिन विनी बहुत कमजोर थी।
हमने अपनी नवजात बेटी का नाम ज़िंदज़िस्वा रखा, जो खोसा समुदाय के राजकवि सैमुअल म्क्हायी की बेटी के नाम पर था, जिन्होंने कई साल पहले हील्डटाउन में मुझे प्रेरित किया था। कवि एक लंबी यात्रा से घर लौटे तो उन्होंने पाया कि उनकी पत्नी ने एक बेटी को जन्म दिया है। उन्हें पता नहीं था कि उनकी पत्नी गर्भवती हैं और उन्होंने मान लिया था कि बच्चा किसी और पुरुष का है। हमारी संस्कृति में, जब कोई महिला बच्चे को जन्म देती है, तो पति दस दिनों तक घर में प्रवेश नहीं करता, जहाँ वह प्रसव के बाद रहती है। इस मामले में, कवि इतने क्रोधित थे कि वे इस रिवाज का पालन नहीं कर सके और एक भाला लेकर घर में घुस गए, माँ और बेटी दोनों को मारने के लिए तैयार थे। लेकिन जब उन्होंने बच्ची को देखा और पाया कि वह बिल्कुल उन्हीं की तरह दिखती है, तो वे पीछे हट गए और बोले, "उ ज़िंदज़िले," जिसका अर्थ है, "तुम अच्छी तरह से स्थापित हो।" उन्होंने उसका नाम ज़िंदज़िस्वा रखा, जो उनके कहे का स्त्रीलिंग रूप था।

38

अदालत को अपना फैसला सुनाने में एक महीने से ज़्यादा का समय लगा, जिसमें बार-बार न्यायाधीशों ने दलीलों में खामियों को उजागर करते हुए हस्तक्षेप किया। मार्च में हमारी बारी आई। इस्सी मैसेल्स ने हिंसा के आरोपों का स्पष्ट खंडन किया। उन्होंने कहा, “हम मानते हैं कि असहयोग और निष्क्रिय प्रतिरोध का मामला है। हम साफ-साफ कहेंगे कि अगर असहयोग और निष्क्रिय प्रतिरोध राजद्रोह की श्रेणी में आते हैं, तो हम दोषी हैं। लेकिन ये राजद्रोह के कानून के दायरे में नहीं आते।”
मैसेल्स की दलील को ब्रैम फिशर ने आगे बढ़ाया, लेकिन 23 मार्च को न्यायाधीशों ने ब्रैम की अंतिम दलील को बीच में ही रोक दिया। अभी भी कई हफ़्तों तक बहस चलनी बाकी थी, लेकिन न्यायाधीशों ने एक सप्ताह के लिए कार्यवाही स्थगित करने का अनुरोध किया। यह असामान्य था, लेकिन हमने इसे एक आशाजनक संकेत माना, क्योंकि इससे संकेत मिलता था कि न्यायाधीशों ने पहले ही अपना मत बना लिया था। हमें छह दिन बाद अदालत में वापस आना था, जहाँ हमें उम्मीद थी कि फैसला सुनाया जाएगा। इस बीच, मुझे कुछ काम करना था।
मेरे प्रतिबंध स्थगन के दो दिन बाद समाप्त होने वाले थे। मुझे लगभग यकीन था कि पुलिस को इसकी जानकारी नहीं होगी, क्योंकि वे शायद ही कभी प्रतिबंधों की समाप्ति तिथि का हिसाब रखते थे। लगभग पाँच वर्षों में यह पहली बार होगा कि मैं जोहान्सबर्ग से बाहर जाने और किसी बैठक में भाग लेने के लिए स्वतंत्र होऊंगा। उस सप्ताहांत पीटरमैरिट्जबर्ग में बहुप्रतीक्षित सर्वसम्मत सम्मेलन था। इसका उद्देश्य सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों के लिए एक राष्ट्रीय संवैधानिक सम्मेलन की मांग करना था। मुझे गुप्त रूप से सम्मेलन में मुख्य वक्ता के रूप में आमंत्रित किया गया था। मैं अपने भाषण से एक रात पहले तीन सौ मील की दूरी तय करके पीटरमैरिट्जबर्ग के लिए रवाना हो जाऊंगा।
मेरे जाने से एक दिन पहले, राष्ट्रीय कार्य समिति ने गुप्त रूप से रणनीति पर चर्चा करने के लिए बैठक की। जेल के अंदर और बाहर कई बैठकों के बाद, हमने तय किया कि हम भूमिगत रहकर काम करेंगे और एम-प्लान की तर्ज पर रणनीति अपनाएंगे। संगठन गुप्त रूप से चलता रहेगा। यह तय किया गया कि अगर हमें

दोषी नहीं ठहराया गया, तो मैं प्रस्तावित राष्ट्रीय सम्मेलन के आयोजन के लिए देश भर में यात्रा करने के लिए भूमिगत हो जाऊंगा। केवल वही व्यक्ति जो पूरी तरह से भूमिगत रहकर काम करता है, दुश्मन द्वारा लगाए गए प्रतिबंधों से मुक्त हो सकता है। यह भी तय किया गया कि मैं कुछ खास कार्यक्रमों में उपस्थित होकर अधिकतम प्रचार पाने की कोशिश करूंगा, ताकि यह दिखाया जा सके कि एएनसी अभी भी संघर्ष कर रही है। यह प्रस्ताव मेरे लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थी, न ही यह मुझे विशेष रूप से पसंद आया, लेकिन यह कुछ ऐसा था जो मुझे करना ही था। यह एक जोखिम भरा जीवन होगा, और मैं अपने परिवार से दूर रहूंगा, लेकिन जब किसी व्यक्ति को अपने विश्वास के अनुसार जीवन जीने के अधिकार से वंचित कर दिया जाता है, तो उसके पास भगोड़ा बनने के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता।
जब मैं मीटिंग से घर लौटा तो ऐसा लगा जैसे विनी मेरे मन की बात पढ़ सकती हो। मेरा चेहरा देखकर वो समझ गई कि मैं एक ऐसी ज़िंदगी शुरू करने जा रहा हूँ जो हम दोनों में से कोई नहीं चाहता था। मैंने उसे सारी बात बताई और कहा कि मैं अगले दिन जा रहा हूँ। उसने इसे शांत भाव से सुना, मानो उसे पहले से ही इसका अंदाज़ा था। वो समझ गई थी कि मुझे क्या करना है, लेकिन इससे उसके लिए कुछ भी आसान नहीं हुआ। मैंने उससे मेरे लिए एक छोटा सा सूटकेस पैक करने को कहा। मैंने उसे बताया कि मेरे जाने के बाद दोस्त और रिश्तेदार उसका ख्याल रखेंगे। मैंने उसे यह नहीं बताया कि मैं कितने दिन के लिए जा रहा हूँ और उसने पूछा भी नहीं। अच्छा ही हुआ, क्योंकि मुझे खुद भी इसका जवाब नहीं पता था। मैं सोमवार को फैसले के लिए प्रिटोरिया वापस जाऊँगा। नतीजा चाहे जो भी हो, मैं घर नहीं लौटूँगा: अगर हमें दोषी ठहराया गया, तो मैं सीधे जेल चला जाऊँगा; अगर हमें बरी कर दिया गया, तो मैं तुरंत छिप जाऊँगा।
मेरा बड़ा बेटा थेम्बी ट्रांसकेई के स्कूल में था, इसलिए मैं उसे अलविदा नहीं कह सका, लेकिन उस दोपहर मैं माकगाथो और अपनी बेटी माकाज़ीवे को ऑरलैंडो ईस्ट में उनकी माँ के घर से ले आया। हमने कुछ घंटे साथ बिताए, कस्बे के बाहर खुले मैदान में टहलते हुए, बातें करते हुए और खेलते हुए। मैंने उन्हें अलविदा कहा, यह जाने बिना कि मैं उनसे दोबारा कब मिल पाऊंगा। एक स्वतंत्रता सेनानी के बच्चे भी अपने पिता से ज्यादा सवाल न पूछना सीखते हैं, और मैं उनकी आँखों में देख सकता था कि वे समझ गए थे कि कुछ गंभीर घटित हो रहा है।

घर पहुँचकर मैंने दोनों लड़कियों को अलविदा कहते हुए चूमा और जब मैं विल्सन कॉनको के साथ कार में बैठा और नेटल के लिए लंबी यात्रा शुरू की तो उन्होंने मुझे हाथ हिलाकर विदा किया।

देश भर से चौदह सौ प्रतिनिधि, जो विभिन्न धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक और राजनीतिक संगठनों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे, पीटरमैरिट्जबर्ग में आयोजित सर्वसम्मत सम्मेलन में शामिल हुए। शनिवार शाम, 25 मार्च को जब मैं इस निष्ठावान और उत्साही श्रोताओं के सामने मंच पर आया, तो लगभग पाँच साल बाद मुझे सार्वजनिक मंच पर भाषण देने का अवसर मिला था। मुझे एक आनंदमय प्रतिक्रिया मिली। मैं लगभग भूल ही गया था कि भीड़ को संबोधित करने का अनुभव कितना गहन होता है।
अपने भाषण में मैंने एक राष्ट्रीय सम्मेलन का आह्वान किया जिसमें सभी दक्षिण अफ़्रीकी, चाहे वे काले हों या गोरे, भारतीय हों या रंगीन, भाईचारे की भावना से एक साथ बैठें और एक ऐसा संविधान बनाएँ जो पूरे देश की आकांक्षाओं को प्रतिबिंबित करे। मैंने एकता का आह्वान किया और कहा कि यदि हम एक स्वर में बोलें तो हम अजेय होंगे।
सर्वसम्मत सम्मेलन में दक्षिण अफ्रीका के लिए एक नया गैर-नस्लीय लोकतांत्रिक संविधान निर्धारित करने हेतु सभी वयस्क पुरुषों और महिलाओं के समान आधार पर निर्वाचित प्रतिनिधियों के राष्ट्रीय सम्मेलन का आह्वान किया गया। इस मांग को सरकार तक पहुंचाने के लिए एक राष्ट्रीय कार्य परिषद का चुनाव किया गया, जिसमें मुझे मानद सचिव बनाया गया। यदि सरकार ऐसा सम्मेलन बुलाने में विफल रहती, तो हम 29 मई से शुरू होने वाले तीन दिवसीय राष्ट्रव्यापी हड़ताल का आह्वान करते, जो दक्षिण अफ्रीका को गणतंत्र घोषित किए जाने के साथ मेल खाता। मुझे इस बात का कोई भ्रम नहीं था कि सरकार हमारे प्रस्ताव को स्वीकार करेगी।
अक्टूबर 1960 में, सरकार ने इस बात पर एक जनमत संग्रह कराया कि क्या दक्षिण अफ्रीका को गणतंत्र बनाया जाना चाहिए। यह अफ़्रीकानर राष्ट्रवाद के लंबे समय से पोषित सपनों में से एक था, उस देश से संबंध तोड़ना जिसके विरुद्ध उन्होंने एंग्लो-बोअर युद्ध लड़ा था। गणतंत्र समर्थक भावना को 52 प्रतिशत मत प्राप्त हुए और गणतंत्र की घोषणा 31 मई, 1961 को निर्धारित की

गई। हमने घोषणा की तिथि पर घर पर रहने का निर्णय लिया ताकि यह दर्शाया जा सके कि हमारे लिए यह परिवर्तन मात्र दिखावटी था।
सम्मेलन के तुरंत बाद मैंने प्रधानमंत्री वेरवोर्ड को एक पत्र भेजा जिसमें मैंने उनसे औपचारिक रूप से राष्ट्रीय संवैधानिक सम्मेलन बुलाने का आग्रह किया। मैंने उन्हें चेतावनी दी कि यदि उन्होंने सम्मेलन नहीं बुलाया तो हम 29 मई से शुरू होने वाली देश की अब तक की सबसे बड़ी तीन दिवसीय हड़ताल करेंगे। मैंने लिखा, "हमें आपकी सरकार द्वारा उठाए जाने वाले जवाबी कदमों के बारे में कोई भ्रम नहीं है। पिछले बारह महीनों में हमने एक क्रूर तानाशाही का दौर देखा है।" मैंने प्रेस विज्ञप्तियां भी जारी कीं जिनमें यह पुष्टि की गई कि हड़ताल एक शांतिपूर्ण और अहिंसक घर पर रहने का आंदोलन है। वेरवोर्ड ने कोई जवाब नहीं दिया, सिवाय इसके कि उन्होंने संसद में मेरे पत्र को "अहंकारी" बताया। इसके बजाय सरकार ने देश के इतिहास में अब तक के सबसे भयावह बल प्रदर्शन में से एक को अंजाम देना शुरू कर दिया।

39

29 मार्च, 1961 की सुबह, राजद्रोह मुकदमे के बहुप्रतीक्षित फैसले के दिन, पुराने आराधनालय के दरवाजे खुलने से पहले ही समर्थकों और पत्रकारों की भीड़ अंदर जाने के लिए धक्का-मुक्की करने लगी। सैकड़ों लोगों को वापस भेज दिया गया। जब न्यायाधीशों ने अदालत की कार्यवाही शुरू की, तो दर्शक दीर्घा और प्रेस बेंच खचाखच भरी हुई थी। न्यायमूर्ति रम्पफ द्वारा हथौड़ा पटकने के क्षण भर बाद ही, अभियोजन पक्ष ने अभियोग में बदलाव के लिए एक असाधारण आवेदन किया। यह अंतिम क्षण का 59 वां मिनट था, और दो साल की देरी हो चुकी थी। अदालत ने अभियोजन पक्ष के आवेदन को खारिज कर दिया और दर्शक दीर्घा ने मौन सहमति व्यक्त की।
“अदालत में सन्नाटा छा जाए!” अर्दली चिल्लाया, और न्यायाधीश रम्पफ ने घोषणा की कि तीन न्यायाधीशों के पैनल ने फैसला सुना दिया है। अब सन्नाटा छा गया। अपनी गहरी, शांत आवाज में, न्यायाधीश रम्पफ ने अदालत के निष्कर्षों की समीक्षा की। हाँ, अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस सरकार को एक “पूरी तरह से अलग तरह के राज्य” से बदलने के लिए काम कर रही थी; हाँ, अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस ने अवज्ञा अभियान के दौरान विरोध के अवैध साधनों का इस्तेमाल किया था; हाँ, कुछ एएनसी नेताओं ने हिंसा की वकालत करते हुए भाषण दिए थे; और हाँ, एएनसी में एक मजबूत वामपंथी प्रवृत्ति थी जो उसके साम्राज्यवाद-विरोधी, पश्चिम-विरोधी, सोवियत-समर्थक रवैये में प्रकट हुई थी, लेकिन —

इस न्यायालय के समक्ष प्रस्तुत सभी साक्ष्यों और हमारे तथ्यात्मक निष्कर्ष के आधार पर, इस न्यायालय के लिए इस निष्कर्ष पर पहुंचना असंभव है कि अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस ने हिंसा के माध्यम से राज्य को उखाड़ फेंकने की नीति अपनाई थी, यानी इस अर्थ में कि जनता को राज्य के खिलाफ हिंसा के प्रत्यक्ष कृत्यों को करने के लिए तैयार या प्रेरित किया जाना था।

अदालत ने कहा कि अभियोजन पक्ष यह साबित करने में विफल रहा कि एएनसी एक कम्युनिस्ट संगठन था या फ्रीडम चार्टर में कम्युनिस्ट राज्य की परिकल्पना की गई थी। चालीस मिनट तक बोलने के बाद, न्यायमूर्ति रम्पफ ने कहा, "आरोपियों को तदनुसार निर्दोष पाया जाता है और उन्हें रिहा किया जाता है।"
दर्शक दीर्घा खुशी से झूम उठी। हम सब खड़े हो गए और एक-दूसरे को गले लगाया, और अदालत में मौजूद सभी खुश लोगों की ओर हाथ हिलाया। फिर हम सब मुस्कुराते, हंसते और रोते हुए आंगन में चले गए। हमारे निकलते ही भीड़ ने नारे लगाने शुरू कर दिए। हममें से कई लोगों ने अपने बचाव पक्ष के वकीलों को अपने कंधों पर उठा लिया, जो इस्सी मैसेल्स के मामले में आसान काम नहीं था, क्योंकि वह बहुत बड़े कद के आदमी थे। चारों ओर फ्लैशबल्ब चमक रहे थे। हमने अपने दोस्तों, पत्नियों और रिश्तेदारों को ढूंढना शुरू किया। विनी आ गई और मैंने खुशी से उसे गले लगा लिया, हालांकि मुझे पता था कि भले ही मैं इस पल के लिए आज़ाद हो गई हूँ, लेकिन मैं इस आज़ादी का आनंद नहीं ले पाऊँगी। जब हम सब एक साथ बाहर आ गए, तो राजद्रोह के मुकदमे के सभी आरोपियों और भीड़ ने मिलकर "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" गाना शुरू कर दिया।
चार साल से अधिक चले न्यायालयीय मुकदमे, दर्जनों अभियोजकों, हजारों दस्तावेजों और दसियों हज़ार पन्नों की गवाही के बाद भी, राज्य अपने मिशन में विफल रहा। यह फैसला सरकार के लिए देश और विदेश दोनों जगह शर्मनाक साबित हुआ। फिर भी, इस परिणाम ने राज्य के मन में हमारे प्रति कड़वाहट और भी बढ़ा दी। उन्होंने इससे यह सबक नहीं लिया कि हमारी शिकायतें जायज़ थीं, बल्कि यह लिया कि उन्हें और भी अधिक निर्दयी होने की आवश्यकता है।

मैंने इस फैसले को न तो कानूनी व्यवस्था की जीत माना और न ही इस बात का सबूत कि किसी अश्वेत व्यक्ति को श्वेत न्यायालय में निष्पक्ष सुनवाई मिल सकती है। यह सही और न्यायसंगत फैसला था, लेकिन यह काफी हद तक बेहतर बचाव पक्ष की टीम और इन न्यायाधीशों के निष्पक्ष रवैये का नतीजा था।
हालांकि, दक्षिण अफ्रीका में शायद न्यायालय ही एकमात्र ऐसा स्थान था जहाँ किसी अफ्रीकी को निष्पक्ष सुनवाई मिल सकती थी और जहाँ कानून का शासन अभी

भी लागू हो सकता था। यह बात विशेष रूप से उन न्यायालयों के संदर्भ में सच थी जहाँ यूनाइटेड पार्टी द्वारा नियुक्त प्रबुद्ध न्यायाधीशों का संचालन होता था। इनमें से कई न्यायाधीश आज भी कानून के शासन का समर्थन करते थे। एक विद्यार्थी के रूप में मुझे सिखाया गया था कि दक्षिण अफ्रीका एक ऐसा देश है जहाँ कानून का शासन सर्वोपरि है और यह सभी व्यक्तियों पर लागू होता है, चाहे उनकी सामाजिक स्थिति या पद कुछ भी हो। मैं इस बात पर पूरी तरह विश्वास करता था और इसी धारणा के आधार पर मैंने अपने जीवन की योजना बनाई थी। लेकिन एक वकील और कार्यकर्ता के रूप में मेरे करियर ने मेरी सोच बदल दी। मैंने देखा कि व्याख्यान में मुझे जो सिखाया गया था और अदालत में मैंने जो सीखा, उसमें बहुत बड़ा अंतर था। कानून को न्याय की तलवार मानने की मेरी आदर्शवादी सोच से बदलकर यह धारणा विकसित हो गई कि कानून शासक वर्ग द्वारा समाज को अपने हित में ढालने के लिए इस्तेमाल किया जाने वाला एक उपकरण है। मैंने अदालत में कभी न्याय की उम्मीद नहीं की, चाहे मैंने इसके लिए कितना भी संघर्ष किया हो, और हालांकि मुझे कभी-कभी न्याय मिला भी। राजद्रोह के मुकदमे में, तीनों न्यायाधीशों ने अपने पूर्वाग्रहों, अपनी शिक्षा और अपनी पृष्ठभूमि से ऊपर उठकर न्याय किया। मनुष्यों में अच्छाई का एक अंश होता है जो दबा हुआ या छिपा हुआ हो सकता है और फिर अप्रत्याशित रूप से उभर आता है। न्यायमूर्ति रम्पफ ने अपने तटस्थ स्वभाव से पूरी कार्यवाही के दौरान यह आभास दिया कि वे सत्ताधारी श्वेत अल्पसंख्यक के दृष्टिकोण से सहमत हैं। फिर भी अंत में, उनके निर्णय में निष्पक्षता का भाव प्रबल रहा। कैनेडी अपने सहयोगियों की तुलना में कम रूढ़िवादी थे और समानता के विचार से आकर्षित प्रतीत होते थे। उदाहरण के लिए, एक बार वे और डूमा नोकवे डरबन से जोहान्सबर्ग तक एक ही विमान में यात्रा कर रहे थे, और जब एयरलाइन की बस ने डूमा को ले जाने से इनकार कर दिया, तो कैनेडी ने भी उसमें बैठने से इनकार कर दिया। न्यायाधीश बेकर मुझे हमेशा खुले विचारों वाले लगे और ऐसा प्रतीत होता था कि वे इस बात से अवगत थे कि उनके समक्ष आरोपी ने राज्य के हाथों बहुत कष्ट झेला था। मैंने इन तीनों व्यक्तियों की प्रशंसा की, न कि न्यायालय, राज्य या अपनी जाति के प्रतिनिधियों के रूप में, बल्कि विपरीत परिस्थितियों में मानवीय शालीनता के उदाहरण के रूप में।

जज बेकर की पत्नी दूसरों की जरूरतों के प्रति संवेदनशील थीं। आपातकाल के दौरान, उन्होंने सामान इकट्ठा किया और उसे आरोपी के पास पहुंचाया।
लेकिन सरकार की इस शर्मनाक हार का नतीजा यह हुआ कि राज्य ने तय किया कि ऐसा दोबारा कभी नहीं होने दिया जाएगा। उस दिन से उन्होंने तय किया कि वे उन न्यायाधीशों पर भरोसा नहीं करेंगे जिन्हें उन्होंने खुद नियुक्त नहीं किया था। वे उन कानूनी पेचीदगियों का पालन नहीं करेंगे जिन्हें वे आतंकवादियों की रक्षा करने वाला या दोषी कैदियों को जेल में कुछ विशेष अधिकार देने वाला मानते थे। राजद्रोह के मुकदमे के दौरान, किसी भी व्यक्ति को जानकारी निकलवाने के लिए अलग-थलग करने, पीटने या यातना देने का कोई उदाहरण नहीं मिला। ये सभी बातें कुछ ही समय बाद आम हो गईं।

भाग छह

द ब्लैक पिम्परनेल

40

फैसला आने के बाद मैं घर नहीं लौटा। हालाँकि बाकी लोग जश्न मनाने के मूड में थे, लेकिन मुझे पता था कि अधिकारी किसी भी क्षण कार्रवाई कर सकते हैं, और मैं उन्हें मौका नहीं देना चाहता था। मैं प्रतिबंधित या गिरफ्तार होने से पहले वहाँ से निकलना चाहता था, और मैंने जोहान्सबर्ग के एक सुरक्षित ठिकाने में रात बिताई। अनजान बिस्तर पर वह रात बेचैनी भरी थी, और हर गाड़ी की आवाज सुनकर मैं चौंक जाता था, मुझे लगता था कि कहीं पुलिस तो नहीं है। वाल्टर और डूमा ने मेरी यात्रा के पहले चरण के लिए मुझे विदा किया, जो मुझे पोर्ट एलिजाबेथ ले जाना था। पोर्ट एलिजाबेथ में, मैंने गोवन म्बेकी और रेमंड म्हाबा से संगठन की नई भूमिगत संरचनाओं पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की। हमारी मुलाकात डॉ. मसला पाथर के घर पर हुई, जिन्हें बाद में हमें अपने घर पर मिलने की अनुमति देने के लिए दो साल की जेल की सजा सुनाई गई। संगठन द्वारा व्यवस्थित सुरक्षित स्थानों पर, मैंने उदारवादी पोर्ट एलिजाबेथ इवनिंग पोस्ट के संपादक से राष्ट्रीय सम्मेलन के अभियान पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की, एक ऐसा लक्ष्य जिसे बाद में कई समाचार पत्रों ने समर्थन दिया। बाद में मैं उदारवादी साप्ताहिक कॉन्टैक्ट के संपादक और प्रकाशक पैट्रिक डंकन से मिला, जो लिबरल पार्टी के संस्थापक सदस्य और अवज्ञा अभियान के दौरान पहले श्वेत विरोधियों में से एक थे। उनके अखबार ने बार-बार एएनसी की नीतियों को कम्युनिस्टों द्वारा निर्देशित बताया था, लेकिन जब उन्होंने मुझे देखा तो सबसे पहले उन्होंने कहा कि राजद्रोह मुकदमे के रिकॉर्ड को ध्यान से पढ़ने से उनका यह भ्रम दूर हो गया है और वे अपने अखबार में इसे सुधारेंगे।
उस रात मैंने केपटाउन में अफ्रीकी बस्तियों के पादरियों की एक सभा को संबोधित किया। मैं इसका उल्लेख इसलिए कर रहा हूँ क्योंकि उनमें से एक पादरी की शुरुआती प्रार्थना इतने वर्षों से मेरे मन में बसी हुई है और एक कठिन समय में मेरे लिए शक्ति का स्रोत रही है। उन्होंने प्रभु की कृपा और भलाई, उनकी दया और सभी मनुष्यों के प्रति उनकी चिंता के लिए उनका धन्यवाद किया। लेकिन फिर उन्होंने प्रभु को यह याद दिलाने की हिम्मत की कि उनके कुछ अनुयायी दूसरों की तुलना में अधिक दबे-कुचले हैं, और कभी-कभी ऐसा लगता

है मानो प्रभु उन पर ध्यान नहीं दे रहे हैं। पादरी ने आगे कहा कि यदि प्रभु अश्वेत व्यक्ति को उद्धार की ओर ले जाने में थोड़ी और पहल न करें, तो अश्वेत व्यक्ति को स्वयं ही अपने जीवन की बागडोर संभालनी पड़ेगी। आमीन। केप टाउन में अपनी आखिरी सुबह, मैं दक्षिण अफ्रीकी रंगीन जन संगठन के संस्थापक सदस्य जॉर्ज पीक के साथ होटल से निकल रहा था और होटल के रंगीन प्रबंधक को मेरी अच्छी देखभाल के लिए धन्यवाद देने के लिए रुका। वह आभारी तो थे, लेकिन उत्सुक भी थे। उन्हें मेरी पहचान का पता चल गया था और उन्होंने मुझे बताया कि रंगीन समुदाय को डर है कि अफ्रीकी सरकार के अधीन भी उन पर उतना ही अत्याचार होगा जितना वर्तमान श्वेत सरकार के अधीन हो रहा है। वह एक मध्यमवर्गीय व्यवसायी थे जिनका शायद अफ्रीकियों से बहुत कम संपर्क था और वे उनसे उसी तरह डरते थे जैसे श्वेत लोग डरते हैं। यह रंगीन समुदाय, विशेष रूप से केप टाउन में, की एक आम चिंता थी और यद्यपि मुझे देर हो रही थी, मैंने उन्हें स्वतंत्रता चार्टर के बारे में समझाया और गैर-नस्लवाद के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर जोर दिया। एक स्वतंत्रता सेनानी को जनता के सामने अपनी बात रखने का हर अवसर अवश्य लेना चाहिए।
अगले दिन मैं डरबन में एएनसी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति और कांग्रेस आंदोलन के संयुक्त कार्यकारियों की एक गुप्त बैठक में शामिल हुआ। इस बैठक में इस बात पर चर्चा होनी थी कि नियोजित कार्रवाई को घर पर रहने के रूप में लिया जाए या संगठित धरना-प्रदर्शनों के साथ पूर्ण हड़ताल के रूप में। हड़ताल के पक्षधरों का कहना था कि 1950 से चली आ रही घर पर रहने की रणनीति अब प्रासंगिक नहीं रह गई है, और ऐसे समय में जब पीएसी जनता को लुभा रहा है, संघर्ष के अधिक उग्र रूप आवश्यक हैं। दूसरा दृष्टिकोण, जिसका मैंने समर्थन किया, यह था कि घर पर रहने से हमें दुश्मन पर प्रहार करने का मौका मिलता है, जबकि उसे पलटवार करने से रोका जा सकता है। मैंने तर्क दिया कि हमारे अभियानों में लोगों का विश्वास इसलिए बढ़ा है क्योंकि उन्हें एहसास हुआ है कि हम उनके जीवन के प्रति लापरवाह नहीं हैं। मैंने कहा कि शार्पविले की घटना में, प्रदर्शनकारियों के तमाम शौर्य के बावजूद, दुश्मन को हमारे लोगों पर गोलियां चलाने का मौका मिल गया। मैंने घर पर रहने का समर्थन किया, हालांकि मुझे पता था कि देश भर में हमारे लोग संघर्ष के निष्क्रिय तरीकों से अधीर हो रहे थे, लेकिन मुझे नहीं लगता था कि व्यापक योजना के बिना हमें अपनी आजमाई हुई रणनीति से पीछे हटना चाहिए, और हमारे

पास ऐसा करने के लिए न तो समय था और न ही संसाधन। अंततः घर पर रहने का निर्णय लिया गया।

भूमिगत जीवन जीने के लिए एक गहरा मनोवैज्ञानिक परिवर्तन आवश्यक है। हर काम की योजना बनानी पड़ती है, चाहे वह कितना भी छोटा और महत्वहीन क्यों न लगे। कुछ भी निर्दोष नहीं होता। हर बात पर सवाल उठते हैं। आप अपने आप नहीं रह सकते; आपको अपनी भूमिका को पूरी तरह से निभाना पड़ता है। कुछ मायनों में, दक्षिण अफ्रीका में एक अश्वेत व्यक्ति के लिए यह कोई बहुत बड़ा अनुकूलन नहीं है। रंगभेद के तहत, एक अश्वेत व्यक्ति वैधानिक और अवैध, खुलेपन और छिपाव के बीच एक रहस्यमय जीवन जीता था। दक्षिण अफ्रीका में एक अश्वेत व्यक्ति होने का मतलब था किसी पर भी भरोसा न करना, जो लगभग पूरी जिंदगी भूमिगत रहने जैसा ही था।
मैं रात का प्राणी बन गया था। मैं दिन में अपने छिपने की जगह पर रहता था और अंधेरा होते ही काम करने के लिए बाहर निकलता था। मैं मुख्य रूप से जोहान्सबर्ग से काम करता था, लेकिन ज़रूरत पड़ने पर यात्रा भी करता था। मैं खाली फ्लैटों में, लोगों के घरों में, जहाँ भी मुझे अकेला और गुमनाम रहने का मौका मिलता, वहीं रहता था। हालाँकि मैं मिलनसार व्यक्ति हूँ, फिर भी मुझे एकांत बहुत पसंद है। मुझे अकेले रहने, योजना बनाने, सोचने और योजना बनाने का मौका हमेशा अच्छा लगता था। लेकिन एकांत भी कभी-कभी बुरा हो जाता है। मुझे अपनी पत्नी और परिवार की बहुत याद आती थी।
भूमिगत रहने की कुंजी अदृश्य होना है। जैसे किसी कमरे में चलने का एक तरीका होता है जिससे आप अलग दिखें, वैसे ही चलने और व्यवहार करने का एक तरीका होता है जिससे आप किसी का ध्यान आकर्षित न करें। एक नेता अक्सर प्रसिद्धि चाहता है; एक भगोड़े के रूप में, इसका ठीक उल्टा होता है। भूमिगत रहते हुए मैं पहले की तरह अकड़कर नहीं चलता था और न ही सीधा खड़ा होता था। मैं धीमी आवाज़ में, कम स्पष्टता और विशिष्टता के साथ बोलता था। मैं अधिक निष्क्रिय और कम ध्यान खींचने वाला था; मैं किसी से कुछ नहीं मांगता था, बल्कि लोगों को मुझे काम करने का निर्देश देने देता था। मैं दाढ़ी नहीं बनाता था और न ही बाल कटवाता था। मेरा सबसे आम वेश एक ड्राइवर, एक रसोइया या एक "बागवानी करने वाले" का होता था। मैं खेत में काम करने वाले मज़दूरों

का नीला ओवरऑल पहनता था और अक्सर गोल, बिना फ्रेम वाले चश्मे लगाता था जिन्हें मज़्ज़ावती चाय के गिलास के नाम से जाना जाता था। मेरे पास एक कार थी और मैं अपने ओवरऑल के साथ ड्राइवर की टोपी पहनता था। ड्राइवर का वेश सुविधाजनक था क्योंकि मैं अपने मालिक की कार चलाने के बहाने यात्रा कर सकता था।
उन शुरुआती महीनों में, जब मेरे खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी था और पुलिस मेरा पीछा कर रही थी, मेरी गैर-कानूनी जिंदगी ने अखबारों का ध्यान खींचा। अखबारों के पहले पन्नों पर मेरे बारे में तरह-तरह की खबरें छपती रहीं। पूरे देश में नाकाबंदी कर दी गई, लेकिन पुलिस को बार-बार खाली हाथ लौटना पड़ा। मुझे 'ब्लैक पिम्परनेल' का उपनाम दिया गया, जो बैरोनेस ओर्ज़ी के काल्पनिक पात्र 'स्कार्लेट पिम्परनेल' का कुछ हद तक अपमानजनक रूपांतरण था, जिसने फ्रांसीसी क्रांति के दौरान बहादुरी से गिरफ्तारी से खुद को बचा लिया था।
मैं छुपकर देश भर में घूमता था; केप में मुसलमानों के साथ, नेटाल में गन्ना श्रमिकों के साथ, पोर्ट एलिजाबेथ में कारखाने के श्रमिकों के साथ। मैं देश के विभिन्न हिस्सों में बसे कस्बों में घूमता था और रात में गुप्त बैठकों में शामिल होता था। मैं तो ब्लैक पिम्परनेल की कहानियों को और हवा देता था, जेब में 20 (तीन पैसे के सिक्के) लेकर, टेलीफोन बूथों से अलग-अलग अखबारों के पत्रकारों को फोन करता था और उन्हें हमारी योजनाओं या पुलिस की नाकामी के बारे में कहानियां सुनाता था। मैं यहाँ-वहाँ प्रकट होता रहता था, जिससे पुलिस परेशान होती थी और जनता खुश होती थी।
भूमिगत जीवन के मेरे अनुभवों के बारे में कई मनगढ़ंत और गलत कहानियां प्रचलित थीं। लोग साहसिक कारनामों की कहानियों को बढ़ा-चढ़ाकर बताने में माहिर होते हैं। हालांकि, कई बार मैं बाल-बाल बचा, जिनके बारे में किसी को पता नहीं था। एक बार मैं शहर में गाड़ी चला रहा था और एक ट्रैफिक लाइट पर रुका। मैंने बाईं ओर देखा और बगल वाली कार में विटवाटरसैंड सुरक्षा शाखा के प्रमुख कर्नल स्पेंगलर को देखा। उनके लिए ब्लैक पिम्परनेल को पकड़ना एक बड़ा मौका होता। मैंने एक मजदूर की टोपी, नीले रंग का ओवरऑल और चश्मा पहना हुआ था। उन्होंने मेरी तरफ देखा तक नहीं, लेकिन फिर भी लाइट बदलने का इंतजार करते हुए जो पल मैंने बिताए, वे घंटों जैसे लगे।

एक दोपहर, जब मैं जोहान्सबर्ग में एक ड्राइवर बनकर, अपनी लंबी डस्टर और टोपी पहने घूम रहा था, एक चौराहे पर किसी के आने का इंतज़ार कर रहा था, तभी मैंने एक अफ्रीकी पुलिसकर्मी को अपनी ओर तेज़ी से बढ़ते देखा। मैंने भागने की जगह ढूंढने के लिए चारों ओर देखा, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ कर पाता, उसने मुझे देखकर मुस्कुराया और चुपके से मुझे अंगूठा ऊपर करके एएनसी का सलाम किया और चला गया। इस तरह की घटनाएं कई बार हुईं, और मुझे यह देखकर तसल्ली मिली कि कई अफ्रीकी पुलिसकर्मियों का समर्थन हमारे साथ था। एक अश्वेत सार्जेंट था जो विनी को पुलिस की गतिविधियों की जानकारी दिया करता था। वह उससे फुसफुसाकर कहता था, "ध्यान रखना कि बुधवार रात को मडीबा अलेक्जेंड्रा में न हों, क्योंकि वहाँ छापा पड़ने वाला है।" संघर्ष के दौरान अश्वेत पुलिसकर्मियों की अक्सर कड़ी आलोचना हुई है, लेकिन कई पुलिसकर्मियों ने गुप्त भूमिकाएँ निभाई हैं जो बेहद महत्वपूर्ण साबित हुई हैं।
जब मैं भूमिगत था, तो मैं यथासंभव अस्त-व्यस्त रहता था। मेरी वर्दी ऐसी दिखती थी मानो उसने जीवन भर कड़ी मेहनत की हो। पुलिस के पास दाढ़ी वाली मेरी एक तस्वीर थी, जिसे उन्होंने खूब बाँटा, और मेरे साथियों ने मुझसे दाढ़ी मुंडवाने का आग्रह किया। लेकिन मुझे अपनी दाढ़ी से लगाव हो गया था, और मैंने दाढ़ी मुंडवाने के सभी प्रयासों का विरोध किया।
मुझे न सिर्फ पहचाना नहीं गया, बल्कि कई बार मेरा अपमान भी किया गया। एक बार मैं जोहान्सबर्ग के एक दूरदराज इलाके में एक सभा में शामिल होने की योजना बना रहा था और एक जाने-माने पादरी ने अपने दोस्तों से मेरे लिए रात भर रुकने का इंतजाम किया। मैं दरवाजे पर पहुंचा, और इससे पहले कि मैं अपना परिचय दे पाता, दरवाजा खोलने वाली बुजुर्ग महिला ने कहा, "नहीं, हम आप जैसे आदमी को यहां नहीं चाहते!" और दरवाजा बंद कर दिया।

41

भूमिगत रहकर बिताया गया मेरा अधिकांश समय 29 मई के धरने की योजना बनाने में व्यतीत हुआ। यह धरना राज्य और मुक्ति आंदोलन के बीच एक तरह का युद्ध बनता जा रहा था। मई के अंत में, सरकार ने विपक्षी नेताओं के घरों पर देशव्यापी छापे मारे। सभाओं पर प्रतिबंध लगा दिया गया; प्रिंटिंग प्रेस

जब्त कर लिए गए; और संसद में जल्दबाजी में एक विधेयक पारित किया गया जिसके तहत पुलिस को आरोपित कैदियों को बिना जमानत के बारह दिनों तक हिरासत में रखने की अनुमति मिल गई।
वेरवोर्ड ने घोषणा की कि हड़ताल का समर्थन करने वाले, जिनमें सहानुभूति रखने वाले अखबार भी शामिल थे, "आग से खेल रहे हैं", जो राज्य की क्रूरता को देखते हुए एक खतरनाक बयान था। सरकार ने उद्योगों से श्रमिकों के लिए सोने की व्यवस्था करने का आग्रह किया ताकि उन्हें हड़ताल के दौरान घर वापस न लौटना पड़े। घर पर रहने की घोषणा से दो दिन पहले, सरकार ने दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में शांति काल में सबसे बड़ा शक्ति प्रदर्शन किया। सेना ने युद्ध के बाद से अपनी सबसे बड़ी भर्ती की। पुलिस की छुट्टियां रद्द कर दी गईं। कस्बों के प्रवेश और निकास द्वारों पर सैन्य इकाइयां तैनात की गईं। जब सारसेन टैंक कस्बों की कच्ची सड़कों पर गरज रहे थे, तब हेलीकॉप्टर ऊपर मंडरा रहे थे और किसी भी भीड़ को तितर-बितर करने के लिए नीचे उतर रहे थे। रात में, हेलीकॉप्टरों ने घरों पर सर्चलाइटें डालीं।
अंग्रेजी भाषा के अखबारों ने अभियान शुरू होने से कुछ दिन पहले तक इसका व्यापक प्रचार किया था। लेकिन घर पर रहने के आदेश की पूर्व संध्या पर पूरा अंग्रेजी भाषा का अखबार धराशायी हो गया और लोगों से काम पर जाने का आग्रह करने लगा। पीएसी ने विध्वंसक की भूमिका निभाई और हजारों पर्चे बांटे जिनमें लोगों से घर पर रहने के आदेश का विरोध करने को कहा गया था और एएनसी नेताओं को कायर बताया गया था। पीएसी की इस हरकत से हम स्तब्ध रह गए। आलोचना करना एक बात है, और हम इसे स्वीकार कर सकते हैं, लेकिन लोगों को काम पर जाने का आह्वान करके हड़ताल को तोड़ने का प्रयास करना सीधे दुश्मन के हितों की पूर्ति करता है।

लॉकडाउन से एक रात पहले, मुझे सोवेटो के एक सुरक्षित ठिकाने पर एएनसी के जोहान्सबर्ग स्थित नेतृत्व से मिलना था। पुलिस नाकाबंदी से बचने के लिए, मैं क्लिपटाउन के रास्ते सोवेटो में दाखिल हुआ, जहाँ आम तौर पर गश्त नहीं होती थी। लेकिन जैसे ही मैं एक अंधे मोड़ पर पहुँचा, मैं सीधे उसी जगह पहुँच गया जहाँ से मैं बचने की कोशिश कर रहा था: एक नाकाबंदी। एक श्वेत पुलिसकर्मी ने मुझे रुकने का इशारा किया। मैंने हमेशा की तरह ओवरऑल और

ड्राइवर की टोपी पहनी हुई थी। उसने खिड़की से मुझे घूरकर देखा और फिर आगे बढ़कर खुद ही मेरी कार की तलाशी ली। आम तौर पर, यह अफ्रीकी पुलिस का काम होता है। कुछ न मिलने पर उसने मेरा पास माँगा। मैंने उसे बताया कि मैं उसे गलती से घर पर भूल गया था, और लापरवाही से एक मनगढ़ंत पास नंबर बता दिया। इससे वह संतुष्ट हो गया और उसने मुझे आगे जाने का इशारा किया।
सोमवार, 29 मई को, घर पर रहने के पहले दिन, लाखों लोगों ने काम पर न जाकर अपनी नौकरी और आजीविका को जोखिम में डाला। डरबन में, भारतीय कामगार कारखानों से बाहर चले गए, जबकि केप टाउन में हजारों अश्वेत कामगार घर पर ही रहे। जोहान्सबर्ग में आधे से अधिक कर्मचारी घर पर ही रहे और पोर्ट एलिजाबेथ में यह दर और भी अधिक थी। मैंने प्रेस के सामने इस प्रतिक्रिया को "शानदार" बताया और अपने लोगों की "राज्य द्वारा अभूतपूर्व धमकियों का सामना करने" के लिए प्रशंसा की। गणतंत्र दिवस का श्वेत लोगों का उत्सव हमारे विरोध प्रदर्शन के आगे फीका पड़ गया।
हालांकि लॉकडाउन के पहले दिन की रिपोर्टों से देश के विभिन्न हिस्सों में तीव्र प्रतिक्रियाओं का संकेत मिला, लेकिन कुल मिलाकर प्रतिक्रिया हमारी उम्मीदों से कम रही। संचार कठिन था, और बुरी खबरें अच्छी खबरों की तुलना में अधिक तेज़ी से फैलती हैं। जैसे-जैसे और रिपोर्टें आती गईं, मैं प्रतिक्रिया से निराश और हताश महसूस करने लगा। उस शाम, हतोत्साहित और कुछ हद तक क्रोधित होकर, मैंने रैंड डेली मेल के बेंजामिन पोग्रंड से बात की, जिसमें मैंने सुझाव दिया कि अहिंसक संघर्ष के दिन अब समाप्त हो चुके हैं। घर पर रहने के दूसरे दिन, अपने सहयोगियों से सलाह मशवरा करने के बाद, मैंने इसे रद्द कर दिया। उस सुबह, एक शांत उपनगर में स्थित एक सुरक्षित फ्लैट में, मैंने स्थानीय और विदेशी प्रेस के कई सदस्यों से मुलाकात की, और मैंने एक बार फिर घर पर रहने को "असाधारण सफलता" बताया। लेकिन मैंने इस बात को नहीं छिपाया कि मुझे विश्वास था कि एक नए युग की शुरुआत हो रही है। मैंने कहा, "यदि सरकार की प्रतिक्रिया हमारे अहिंसक संघर्ष को बलपूर्वक कुचलने की है, तो हमें अपनी रणनीति पर पुनर्विचार करना होगा। मेरे विचार में, हम अहिंसक नीति के इस प्रश्न पर एक अध्याय समाप्त कर रहे हैं।" यह एक गंभीर घोषणा थी, और मैं यह जानता था। संगठन में इस पर चर्चा होने से पहले ही यह टिप्पणी करने के लिए हमारी कार्यकारी समिति ने मेरी आलोचना की, लेकिन कभी-

कभी किसी अनिच्छुक संगठन को अपनी इच्छित दिशा में धकेलने के लिए किसी विचार को सार्वजनिक करना आवश्यक होता है।
हिंसा के प्रयोग पर बहस हमारे बीच सन् 1960 के आरंभ से ही चल रही थी। मैंने सशस्त्र संघर्ष के बारे में पहली बार सन् 1952 में वाल्टर से चर्चा की थी। अब मैंने उनसे फिर से विचार-विमर्श किया और हम इस बात पर सहमत हुए कि संगठन को एक नए मार्ग पर चलना होगा। कम्युनिस्ट पार्टी ने गुप्त रूप से भूमिगत रूप से अपना पुनर्गठन कर लिया था और अब वह अपनी सैन्य शाखा बनाने पर विचार कर रही थी। हमने तय किया कि मुझे कार्यकारी समिति के समक्ष सशस्त्र संघर्ष का मुद्दा उठाना चाहिए, और मैंने जून 1961 में एक बैठक में ऐसा किया। मैंने अभी अपना प्रस्ताव रखना शुरू ही किया था कि कम्युनिस्ट पार्टी के सचिव और एएनसी कार्यकारिणी के सबसे प्रभावशाली व्यक्तियों में से एक, मूसा कोटाने ने पलटवार करते हुए मुझ पर आरोप लगाया कि मैंने प्रस्ताव पर ठीक से विचार नहीं किया है। उन्होंने कहा कि सरकार की कार्रवाइयों ने मुझे पछाड़ दिया है और पंगु बना दिया है, और अब हताशा में मैं क्रांतिकारी भाषा का सहारा ले रहा हूँ। उन्होंने जोर देकर कहा, “यदि हम कल्पनाशील और दृढ़ निश्चयी हों तो पुराने तरीकों के लिए अभी भी गुंजाइश है। यदि हम मंडेला द्वारा सुझाए गए मार्ग पर चलते हैं, तो हम निर्दोष लोगों को दुश्मन के नरसंहार के खतरे में डाल देंगे।”
मोसेस ने बड़ी ही प्रभावशाली ढंग से अपनी बात रखी और मैं समझ गया कि उसने मेरे प्रस्ताव को विफल कर दिया है। वाल्टर ने भी मेरी तरफ से कुछ नहीं कहा, और मैं पीछे हट गया। बाद में मैंने वाल्टर से बात की और अपनी निराशा व्यक्त करते हुए उसे मेरी मदद न करने के लिए फटकारा। वह हँसा और बोला कि यह तो गुस्से में भरे शेरों के झुंड से लड़ने जैसा ही मूर्खतापूर्ण होता। वाल्टर एक कुशल कूटनीतिज्ञ और बेहद साधन संपन्न व्यक्ति है। उसने कहा, "मैं मोसेस से आपके साथ निजी मुलाकात का इंतजाम करवा देता हूँ, और आप इस तरह अपनी बात रख सकते हैं।" मैं भूमिगत था, लेकिन वाल्टर ने किसी तरह हम दोनों को बस्ती के एक घर में मिला दिया और हमने पूरा दिन बातें कीं। मैंने खुलकर अपनी बात रखी और समझाया कि मुझे क्यों लगता है कि हमारे पास हिंसा का सहारा लेने के अलावा कोई चारा नहीं है। मैंने एक पुरानी अफ्रीकी कहावत का इस्तेमाल किया: सेबताना हा से बोक्वे का डियाटला (जंगली जानवर के हमले को केवल खाली हाथों से नहीं रोका जा सकता)। मूसा एक कट्टर कम्युनिस्ट

थे, और मैंने उनसे कहा कि उनका विरोध क्यूबा में बतिस्ता के नेतृत्व वाली कम्युनिस्ट पार्टी जैसा था। पार्टी का कहना था कि अभी तक अनुकूल परिस्थितियां नहीं बनी हैं, और वे इंतज़ार कर रहे थे क्योंकि वे केवल लेनिन और स्टालिन की किताबी परिभाषाओं का पालन कर रहे थे। कास्त्रो ने इंतज़ार नहीं किया, उन्होंने कार्रवाई की - और उन्हें जीत मिली। अगर आप किताबी परिस्थितियों का इंतज़ार करते रहेंगे, तो वे कभी नहीं बनेंगी। मैंने मूसा से साफ-साफ कहा कि उनका दिमाग एएनसी के एक कानूनी संगठन होने की पुरानी सोच में फंसा हुआ है। लोग पहले से ही अपने दम पर सैन्य इकाइयां बना रहे थे, और एकमात्र संगठन जिसके पास उनका नेतृत्व करने की ताकत थी, वह एएनसी थी। हमने हमेशा यही कहा है कि जनता हमसे आगे है, और अब वे सच में आगे हैं।
हमने पूरे दिन बात की, और अंत में मूसा ने मुझसे कहा, “नेल्सन, मैं तुमसे कोई वादा नहीं करूँगा, लेकिन इस मुद्दे को समिति में फिर से उठाओ, और हम देखेंगे कि क्या होता है।” एक हफ्ते बाद बैठक तय हुई, और मैंने एक बार फिर यह मुद्दा उठाया। इस बार मूसा चुप रहे, और बैठक में सबकी आम सहमति यह थी कि मुझे डरबन में राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सामने यह प्रस्ताव रखना चाहिए। वाल्टर बस मुस्कुरा दिए।
डरबन में कार्यकारी बैठक, उस समय की सभी एएनसी बैठकों की तरह, पुलिस से बचने के लिए गुप्त रूप से और रात में आयोजित की गई थी। मुझे आशंका थी कि मुझे कठिनाइयों का सामना करना पड़ेगा क्योंकि चीफ लुथुली भी उपस्थित होने वाले थे और मैं अहिंसा के प्रति उनकी नैतिक प्रतिबद्धता से अवगत था। समय को लेकर भी मैं सतर्क था: राजद्रोह मुकदमे के तुरंत बाद मैं हिंसा का मुद्दा उठा रहा था, जहाँ हमने तर्क दिया था कि एएनसी के लिए अहिंसा एक अटूट सिद्धांत है, न कि परिस्थितियों के अनुसार बदलने वाली कोई रणनीति। मैं स्वयं इसके ठीक विपरीत मानता था: कि अहिंसा एक ऐसी रणनीति है जिसे तब छोड़ देना चाहिए जब वह कारगर न रहे।
बैठक में मैंने तर्क दिया कि राज्य ने हमें हिंसा के अलावा कोई विकल्प नहीं दिया है। मैंने कहा कि लोगों को किसी प्रकार का विकल्प दिए बिना राज्य द्वारा सशस्त्र हमलों का शिकार बनाना गलत और अनैतिक है। मैंने फिर से कहा कि लोगों ने स्वयं ही हथियार उठा लिए हैं। हिंसा तो शुरू होगी ही, चाहे हम इसकी शुरुआत करें या न करें। क्या यह बेहतर नहीं होगा कि हम स्वयं

पर नए सिरे से विचार करने का अनुरोध करता हूँ।" यह स्पष्ट था कि चीफ हमारे नए रुख से पूरी तरह सहमत नहीं थे।
हमने रात 8 बजे अपना सत्र शुरू किया और यह काफी हंगामेदार रहा। मैंने वही तर्क दोहराए जो मैं पहले से देता आ रहा था, और कई लोगों ने अपनी आपत्तियां व्यक्त कीं। यूसुफ कचालिया और डॉ. नाइकर ने हमसे इस मार्ग पर न चलने की विनती की, उनका तर्क था कि राज्य पूरे मुक्ति आंदोलन का संहार कर देगा। एक कुशल वाद-विवादकर्ता जे. एन. सिंह ने उस रात कुछ ऐसे शब्द कहे जो आज भी मेरे मन में गूंजते हैं। उन्होंने कहा, "अहिंसा ने हमें विफल नहीं किया है, बल्कि हमने अहिंसा को विफल किया है।" मैंने इसका जवाब देते हुए कहा कि वास्तव में अहिंसा ने हमें विफल किया है, क्योंकि इसने न तो राज्य की हिंसा को रोका है और न ही हमारे उत्पीड़कों का हृदय बदला है।
पूरी रात हमारी बहस चलती रही, और सुबह होते-होते मुझे लगने लगा कि हम कुछ प्रगति कर रहे हैं। कई भारतीय नेता अब अहिंसा के अंत पर दुख भरे स्वर में बोल रहे थे। लेकिन तभी अचानक दक्षिण अफ्रीकी भारतीय कांग्रेस के सदस्य एम. डी. नायडू भड़क उठे और अपने भारतीय साथियों से बोले, “अरे, आप जेल जाने से डरते हैं, बस यही बात है!” उनके इस कथन से बैठक में हंगामा मच गया। जब आप किसी व्यक्ति की ईमानदारी पर सवाल उठाते हैं, तो लड़ाई होना तय है। पूरी बहस फिर से शुरू हो गई। लेकिन भोर होते-होते एक समाधान निकल आया। कांग्रेस ने मुझे एएनसी से अलग एक नया सैन्य संगठन बनाने की अनुमति दे दी। एएनसी की नीति अहिंसा की ही रहेगी। मुझे इस संगठन को बनाने के लिए अपनी इच्छानुसार या आवश्यकतानुसार किसी के भी साथ जुड़ने का अधिकार दिया गया और मैं मातृ संगठन के सीधे नियंत्रण में नहीं रहूंगा।
यह एक निर्णायक कदम था। पचास वर्षों तक, एएनसी ने अहिंसा को एक मूलभूत सिद्धांत के रूप में माना था, जिस पर कोई सवाल या बहस नहीं हो सकती थी। अब से, एएनसी एक अलग तरह का संगठन होगा। हम एक नए और अधिक खतरनाक रास्ते पर चल रहे थे, संगठित हिंसा के रास्ते पर, जिसके परिणाम हम नहीं जानते थे और न ही जान सकते थे।

42

मैं, जो कभी सैनिक नहीं रहा था, जिसने कभी युद्ध नहीं लड़ा था, जिसने कभी दुश्मन पर बंदूक नहीं चलाई थी, मुझे एक सेना बनाने का काम सौंपा गया था। यह काम किसी अनुभवी सेनापति के लिए भी बहुत कठिन होता, एक नौसिखिए के लिए तो और भी मुश्किल। इस नए संगठन का नाम उमखोंटो वे सिज़वे (राष्ट्र का भाला) रखा गया - या संक्षेप में एमके। भाले को प्रतीक के रूप में इसलिए चुना गया क्योंकि इसी साधारण हथियार से अफ्रीकियों ने सदियों तक गोरों के आक्रमणों का प्रतिरोध किया था।
हालांकि एएनसी की कार्यकारी समिति में श्वेत सदस्यों को अनुमति नहीं थी, लेकिन एमके पर कोई पाबंदी नहीं थी। मैंने तुरंत जो स्लोवो को भर्ती किया और वाल्टर सिसुलु के साथ मिलकर हमने उच्च कमान का गठन किया, जिसमें मैं अध्यक्ष बना। जो के माध्यम से मैंने श्वेत कम्युनिस्ट पार्टी के सदस्यों को अपने साथ जोड़ा, जिन्होंने हिंसा का रास्ता अपना लिया था और सरकारी टेलीफोन और संचार लाइनों को काटने जैसी तोड़फोड़ की घटनाएं पहले ही अंजाम दे चुके थे। हमने जैक हॉजसन को भर्ती किया, जो द्वितीय विश्व युद्ध में लड़ चुके थे और स्प्रिंगबोक लीजन के सदस्य थे, और रस्टी बर्नस्टीन को भी, जो दोनों पार्टी के सदस्य थे। जैक हमारे पहले विध्वंस विशेषज्ञ बने। हमारा उद्देश्य राज्य के खिलाफ हिंसा करना था - ये हिंसा किस रूप में होगी, यह अभी तय होना बाकी था। हमारा इरादा था कि हम शुरुआत में ऐसे तरीके अपनाएं जो व्यक्तियों के लिए कम से कम हिंसक हो लेकिन राज्य को सबसे ज्यादा नुकसान पहुंचाए।
मैंने अपने ज्ञान के एकमात्र तरीके से शुरुआत की, यानी पढ़कर और विशेषज्ञों से बात करके। मैं क्रांति शुरू करने के मूलभूत सिद्धांतों का पता लगाना चाहता था। मुझे पता चला कि इस विषय पर बहुत कुछ लिखा जा चुका है, और मैंने सशस्त्र युद्ध, विशेष रूप से गुरिल्ला युद्ध पर उपलब्ध साहित्य का अध्ययन किया। मैं जानना चाहता था कि गुरिल्ला युद्ध के लिए कौन सी परिस्थितियाँ उपयुक्त होती हैं; गुरिल्ला सेना का गठन, प्रशिक्षण और रखरखाव कैसे किया जाता है; उसे हथियार कैसे दिए जाने चाहिए; उसे आपूर्ति कहाँ से मिलती है - ये सभी बुनियादी और महत्वपूर्ण प्रश्न थे।
हर स्रोत मेरे लिए रुचिकर था। मैंने क्यूबा की कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव ब्लास रोका की रिपोर्ट पढ़ी, जिसमें उन्होंने बतिस्ता शासन के दौरान एक अवैध संगठन के रूप में उनके वर्षों का वर्णन किया था। डेनीज़

रीट्ज़ की पुस्तक 'कमांडो' में मैंने एंग्लो-बोअर युद्ध के दौरान बोअर जनरलों की अपरंपरागत गुरिल्ला रणनीति के बारे में पढ़ा। मैंने चे ग्वेरा, माओ त्से तुंग और फिदेल कास्त्रो की रचनाएँ और उनके बारे में पढ़ीं। एडगर स्नो की शानदार पुस्तक 'रेड स्टार ओवर चाइना' में मैंने देखा कि माओ के दृढ़ संकल्प और अपरंपरागत सोच ने ही उन्हें विजय दिलाई थी। मैंने मेनाकेम बेगिन की 'द रिवोल्ट' पढ़ी और इस तथ्य से प्रेरित हुआ कि इस इजरायली नेता ने एक ऐसे देश में गुरिल्ला सेना का नेतृत्व किया था जहाँ न तो पहाड़ थे और न ही जंगल, जो हमारे देश की स्थिति से काफी मिलती-जुलती थी। मैं मुसोलिनी के विरुद्ध इथियोपिया के लोगों के सशस्त्र संघर्ष और केन्या, अल्जीरिया और कैमरून की गुरिल्ला सेनाओं के बारे में और अधिक जानने के लिए उत्सुक था। मैंने दक्षिण अफ्रीका के अतीत का अध्ययन किया। मैंने श्वेत लोगों के आगमन से पहले और बाद के हमारे इतिहास का अध्ययन किया। मैंने अफ़्रीकी बनाम अफ़्रीकी, अफ़्रीकी बनाम श्वेत और श्वेत बनाम श्वेत के युद्धों की पड़ताल की। मैंने देश के प्रमुख औद्योगिक क्षेत्रों, परिवहन व्यवस्था और संचार नेटवर्क का सर्वेक्षण किया। मैंने विस्तृत मानचित्र संकलित किए और देश के विभिन्न क्षेत्रों के भूभाग का व्यवस्थित विश्लेषण किया।

26 जून, 1961 को, हमारे स्वतंत्रता दिवस पर, मैंने भूमिगत रहकर दक्षिण अफ़्रीकी समाचार पत्रों को एक पत्र जारी किया, जिसमें मैंने हाल ही में हुए धरना-प्रदर्शन के दौरान लोगों के साहस की सराहना की और एक बार फिर राष्ट्रीय संवैधानिक सम्मेलन बुलाने का आह्वान किया। मैंने फिर से घोषणा की कि यदि सरकार ऐसा सम्मेलन आयोजित करने में विफल रहती है, तो देशव्यापी असहयोग आंदोलन शुरू किया जाएगा। मेरे पत्र का कुछ अंश इस प्रकार था:

मुझे सूचना मिली है कि मेरे खिलाफ गिरफ्तारी वारंट जारी किया गया है और पुलिस मेरी तलाश कर रही है। राष्ट्रीय कार्रवाई परिषद ने इस मामले पर गंभीरतापूर्वक विचार किया है और मुझे आत्मसमर्पण न करने की सलाह दी है। मैंने यह सलाह मान ली है और मैं उस सरकार के सामने आत्मसमर्पण नहीं करूंगा जिसे मैं मान्यता नहीं देता। कोई भी गंभीर राजनेता यह समझेगा कि देश की

मौजूदा परिस्थितियों में पुलिस के सामने आत्मसमर्पण करके सस्ती शहादत हासिल करने की कोशिश करना नासमझी और अपराध है।
मैंने यह कोर्स चुना है जो अधिक कठिन है और जिसमें अधिक मेहनत लगती है। जेल में बैठने से ज्यादा जोखिम और कठिनाई है। मुझे खुद को अपने से अलग करना पड़ा है।
प्रिय पत्नी और बच्चों, मैं अपनी माँ और बहनों से विदा लेकर अपने ही देश में भगोड़े की तरह जीवन व्यतीत कर रहा हूँ। मुझे अपना व्यवसाय बंद करना पड़ा है, अपना पेशा छोड़ना पड़ा है और गरीबी में जीना पड़ रहा है, जैसा कि मेरे कई लोग कर रहे हैं…। मैं सरकार से आपके साथ कंधे से कंधा मिलाकर, कदम-कदम और मील-मील तब तक लड़ूँगा जब तक विजय प्राप्त न हो जाए। आप क्या करने वाले हैं? क्या आप हमारा साथ देंगे, या आप अपने ही लोगों की मांगों और आकांक्षाओं को दबाने के सरकार के प्रयासों में सहयोग करेंगे? क्या आप मेरे लोगों, हमारे लोगों के जीवन-मरण के इस मामले में चुप और तटस्थ रहेंगे? मैंने अपना निर्णय ले लिया है। मैं दक्षिण अफ्रीका नहीं छोड़ूँगा, न ही आत्मसमर्पण करूँगा। केवल कठिनाइयों, बलिदान और जुझारू कार्रवाई से ही स्वतंत्रता प्राप्त की जा सकती है। संघर्ष ही मेरा जीवन है। मैं अपने जीवन के अंत तक स्वतंत्रता के लिए लड़ता रहूँगा।

43

भूमिगत रहने के उन शुरुआती कुछ महीनों के दौरान, मैं कुछ हफ्तों तक मार्केट स्ट्रीट पर एक परिवार के साथ रहा, जिसके बाद मैंने डाउनटाउन से थोड़ी दूरी पर स्थित एक शांत उपनगर बेरिया में वोल्फी कोडेश के साथ भूतल पर एक कमरे का फ्लैट साझा किया। वोल्फी डेमोक्रेट्स कांग्रेस के सदस्य थे, न्यू एज अखबार के पत्रकार थे और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान उत्तरी अफ्रीका और इटली में लड़ चुके थे। युद्ध के बारे में उनका ज्ञान और युद्ध का प्रत्यक्ष अनुभव मेरे लिए अत्यंत सहायक था। उनके सुझाव पर मैंने प्रशियाई जनरल कार्ल वॉन क्लॉज़विट्ज़ की क्लासिक कृति 'ऑन वॉर' पढ़ी। क्लॉज़विट्ज़ का मुख्य विचार, कि युद्ध कूटनीति का ही एक दूसरा रूप है, मेरे अपने विचारों से मेल खाता था। मैं पढ़ने की सामग्री जुटाने के लिए वोल्फी पर निर्भर था और मुझे डर है कि मैंने उनके जीवन पर कब्जा कर लिया, उनके काम और आनंद दोनों में दखल दिया। लेकिन वे इतने मिलनसार और विनम्र व्यक्ति थे कि उन्होंने कभी शिकायत नहीं की।

* * *

मैंने लगभग दो महीने उसके फ्लैट में बिताए, चुनावी प्रचार के लिए इस्तेमाल होने वाले स्ट्रेचर पर सोता था, दिन में खिड़कियों पर पर्दे गिराकर अंदर ही रहता था, पढ़ता और योजना बनाता था, केवल रात में बैठकों या आयोजन सत्रों के लिए ही बाहर निकलता था। मैं हर सुबह वोल्फी को परेशान करता था, क्योंकि मैं सुबह पांच बजे उठता, अपने आरामदायक कपड़े पहनता और एक घंटे से अधिक समय तक एक ही जगह पर दौड़ता रहता था। आखिरकार वोल्फी ने मेरी दिनचर्या को मान लिया और शहर जाने से पहले सुबह मेरे साथ कसरत करने लगा।
एमके उस समय विस्फोट करने का अभ्यास कर रहा था। एक रात, मैं वोल्फी के साथ शहर के बाहरी इलाके में स्थित एक पुरानी ईंट फैक्ट्री में प्रदर्शन देखने गया। सुरक्षा की दृष्टि से यह जोखिम भरा था, लेकिन मैं एमके के विस्फोटक उपकरण के पहले परीक्षण को देखना चाहता था। ईंट फैक्ट्री में विस्फोट आम बात थी, क्योंकि कंपनियां ईंटें बनाने के लिए बड़ी मशीनों द्वारा मिट्टी

❖

मैं जोहान्सबर्ग में एक डॉक्टर के घर पर रुका, रात में नौकरों के क्वार्टर में सोता और दिन में डॉक्टर के स्टडी रूम में काम करता। जब भी दिन में कोई घर आता, मैं दौड़कर पिछवाड़े में चला जाता और माली होने का नाटक करता। फिर मैंने लगभग दो सप्ताह नेटाल में एक चीनी बागान में बिताए, जहाँ मैं डरबन से कुछ ही दूरी पर स्थित टोंगाट नामक एक छोटे से समुदाय में अफ्रीकी मजदूरों और उनके परिवारों के साथ रहा। मैं एक छात्रावास में रहता था और खुद को एक कृषि प्रदर्शक बताता था जो सरकार के कहने पर ज़मीन का मूल्यांकन करने आया था।

मुझे संगठन द्वारा प्रदर्शक के औजार दिए गए थे और मैं दिन का कुछ हिस्सा मिट्टी की जाँच और प्रयोग करने में बिताता था। मुझे अपने काम की ज़्यादा समझ नहीं थी और मुझे नहीं लगता कि मैं टोंगाट के लोगों को बेवकूफ बना पाया। लेकिन ये पुरुष और महिलाएं, जो ज़्यादातर खेतिहर मजदूर थे, स्वाभाविक रूप से समझदार थे और उन्होंने मेरी पहचान पर सवाल नहीं उठाया, यहाँ तक कि जब उन्होंने रात में कारों में लोगों को आते देखा, जिनमें से कुछ जाने-माने स्थानीय राजनेता थे। अक्सर मैं पूरी रात बैठकों में रहता था और पूरे दिन सोता था - यह एक कृषि प्रदर्शक का सामान्य कार्यक्रम नहीं था। लेकिन अन्य कामों में व्यस्त होने के बावजूद भी मुझे समुदाय से एक अपनापन महसूस होता था। मैं रविवार को प्रार्थना सभाओं में जाता था और मुझे इन ज़ायोनिस्ट ईसाई पादरियों का पुराने ज़माने का, बाइबल का प्रचार करने का अंदाज़ बहुत पसंद था। जाने की योजना बनाने से कुछ समय पहले, मैंने एक बुजुर्ग व्यक्ति को मेरी देखभाल करने के लिए धन्यवाद दिया। उन्होंने कहा, "आपका स्वागत है, लेकिन, क्वेडेनी [युवक], कृपया हमें बताइए, मुखिया लुथुली क्या चाहते हैं?" मैं चौंक गया, लेकिन मैंने तुरंत जवाब दिया। "खैर, बेहतर होगा कि आप उनसे खुद पूछें और मैं उनकी तरफ से कुछ नहीं कह सकता, लेकिन जैसा कि मैं समझता हूं, वह हमारी जमीन वापस चाहते हैं, वह चाहते हैं कि हमारे राजाओं को उनकी शक्ति वापस मिल जाए, और वह चाहते हैं कि हम अपना भविष्य खुद तय कर सकें और अपनी मर्जी के अनुसार अपना जीवन जी सकें।"
“और अगर उसके पास सेना नहीं है तो वह यह कैसे करेगा?” बूढ़े आदमी ने कहा।

मैं उस बूढ़े आदमी को बताना चाहता था कि मैं उस सेना को बनाने में व्यस्त हूँ, लेकिन मैं बता नहीं सका। बूढ़े आदमी की बातों से मुझे हौसला तो मिला, लेकिन साथ ही डर भी लग रहा था कि कहीं दूसरों को भी मेरे मिशन के बारे में पता न चल गया हो। एक बार फिर मैं एक ही जगह पर बहुत देर रुक गया था, और अगली रात मैं उतनी ही खामोशी से चला गया जितनी खामोशी से आया था।

44

मेरा अगला ठिकाना छिपने की जगह से कहीं अधिक सुरक्षित आश्रय स्थल था: लिलीज़लीफ फार्म, जोहान्सबर्ग के एक शांत उत्तरी उपनगर रिवोनिया में स्थित था, और मैं अक्टूबर में वहाँ चला गया। उन दिनों रिवोनिया में मुख्य रूप से खेत और छोटी-छोटी ज़मीनें थीं। इस फार्महाउस और संपत्ति को आंदोलन द्वारा भूमिगत कार्यकर्ताओं के लिए एक सुरक्षित घर बनाने के उद्देश्य से खरीदा गया था। यह एक पुराना घर था जिसे मरम्मत की आवश्यकता थी और वहाँ कोई नहीं रहता था।
मैंने यह बहाना बनाकर काम करना शुरू किया कि मैं घर का नौकर या देखभाल करने वाला हूँ जो मेरे मालिक के कब्ज़े में आने तक जगह की देखभाल करेगा। मैंने डेविड मोत्समायी का छद्म नाम अपना लिया था, जो मेरे एक पुराने ग्राहक का नाम था। फार्म पर मैं सादे नीले रंग के ओवरऑल पहनता था जो काले पुरुष नौकरों की वर्दी होती थी। दिन के समय, जगह पर कामगारों, बिल्डरों और पेंटरों की चहल-पहल रहती थी जो मुख्य घर की मरम्मत और बाहरी इमारतों के विस्तार का काम कर रहे थे। हम घर में कुछ छोटे कमरे बनवाना चाहते थे ताकि और लोग रह सकें। सभी कामगार अलेक्जेंड्रा टाउनशिप के अफ्रीकी थे और वे मुझे "वेटर" या "लड़का" कहकर बुलाते थे (उन्होंने कभी मेरा नाम नहीं पूछा)। मैं उनके लिए नाश्ता बनाता था और सुबह और दोपहर में उन्हें चाय पिलाता था। वे मुझे फार्म के छोटे-मोटे कामों के लिए भी भेजते थे, या मुझे फर्श साफ करने या कचरा उठाने का आदेश देते थे।
एक दोपहर, मैंने उन्हें बताया कि मैंने रसोई में चाय बना ली है। वे अंदर आए और मैंने कप, चाय, दूध और चीनी से भरी एक ट्रे सबको दी। हर आदमी ने एक कप लिया और अपनी पसंद से चाय बना ली। ट्रे ले जाते हुए मैं एक आदमी के पास पहुँचा जो कहानी सुना रहा था। उसने चाय का कप लिया, लेकिन उसका ध्यान मेरी बजाय अपनी कहानी पर ज़्यादा था, और वह बात करते समय चम्मच को हवा में उठाए हुए था, चीनी लेने के बजाय उससे इशारे कर रहा था और अपनी कहानी सुना रहा था। मैं वहाँ कई मिनट तक खड़ा रहा और आखिरकार, थोड़ी झुंझलाहट में, मैं वहाँ से जाने लगा। तभी उसने मुझे देखा और तेज़ी से बोला, "वेटर, वापस आओ, मैंने तुम्हें जाने के लिए नहीं कहा।"

एक प्रतिभाशाली सिद्धांतकार थे और कम्युनिस्ट पार्टी के लिए नीतिगत मामलों पर काम कर रहे थे, और उन्हें इस पर पूर्णकालिक रूप से काम करने के लिए एक शांत और सुरक्षित स्थान की आवश्यकता थी।
दिन के समय, मैं माइकल से दूरी बनाए रखता था क्योंकि एक श्वेत पेशेवर व्यक्ति और एक अफ्रीकी नौकर का आपस में बातचीत करना बेहद अजीब लगता। लेकिन रात में, कामगारों के चले जाने के बाद, हम कम्युनिस्ट पार्टी और एएनसी के बीच संबंधों पर लंबी बातचीत करते थे। एक रात मैं एक बैठक के बाद देर से खेत पर लौटा। जब मैं वहाँ अकेला था, तो मैंने सुनिश्चित किया कि सभी द्वार बंद हों और बत्तियाँ बुझी हों। मैंने काफी सावधानी बरती क्योंकि आधी रात को रिवोनिया के एक छोटे से खेत में एक अश्वेत व्यक्ति का कार चलाना अवांछित सवालों को आमंत्रित करता। लेकिन मैंने देखा कि घर की बत्तियाँ जल रही थीं, और जैसे ही मैं घर के पास पहुँचा, मुझे रेडियो की तेज़ आवाज़ सुनाई दी। सामने का दरवाज़ा खुला था और मैं अंदर गया तो माइकल बिस्तर पर गहरी नींद में सो रहा था। सुरक्षा में इस चूक से मैं बहुत क्रोधित हुआ, और मैंने उसे जगाकर कहा, "यार, तुम बत्तियाँ और रेडियो कैसे चालू छोड़ सकते हो!" वह नींद में था लेकिन गुस्से में था। "नेल, क्या तुम्हें मेरी नींद में खलल डालना ज़रूरी था? क्या यह कल तक नहीं रुक सकता था?" मैंने कहा कि ऐसा नहीं हो सकता, यह सुरक्षा का मामला है, और मैंने उसके लापरवाह आचरण के लिए उसे फटकार लगाई।
इसके कुछ समय बाद ही आर्थर गोल्डरिच और उनका परिवार आधिकारिक किरायेदार के रूप में मुख्य घर में रहने लगे और मैंने नवनिर्मित घरेलू कामगारों की कुटिया का कार्यभार संभाल लिया। आर्थर की उपस्थिति ने हमारी गतिविधियों को एक सुरक्षित आवरण प्रदान किया। आर्थर पेशे से कलाकार और डिज़ाइनर थे, कांग्रेस ऑफ डेमोक्रेट्स के सदस्य और एमके के शुरुआती सदस्यों में से एक थे। उनकी राजनीतिक विचारधारा पुलिस को ज्ञात नहीं थी और इससे पहले उनसे कभी पूछताछ या छापा नहीं मारा गया था। 1940 के दशक में, आर्थर ने पल्माच के साथ लड़ाई लड़ी थी, जो फिलिस्तीन में यहूदी राष्ट्रीय आंदोलन की सैन्य शाखा थी। उन्हें गुरिल्ला युद्ध का अच्छा ज्ञान था और उन्होंने मेरे ज्ञान की कई कमियों को दूर करने में मदद की। आर्थर एक उत्साही व्यक्ति थे और उन्होंने फार्म में एक जीवंत वातावरण बनाए रखा।

फार्म में नियमित समूह में अंतिम सदस्य श्री जेलिमन थे, जो एक मिलनसार श्वेत पेंशनभोगी और आंदोलन के पुराने मित्र थे और फार्म के फोरमैन बन गए। श्री जेलिमन सेखुखुनेलैंड से कई युवा श्रमिकों को लाए और जल्द ही वह जगह देश के अन्य छोटे खेतों की तरह दिखने लगी। जेलिमन एएनसी के सदस्य नहीं थे, लेकिन वे वफादार, विवेकशील और मेहनती थे। मैं उनके लिए नाश्ता और रात का खाना बनाया करता था, और वे हमेशा विनम्रता से पेश आते थे। बहुत बाद में, जेलिमन ने मेरी मदद करने के साहसी प्रयास में अपनी जान और आजीविका को जोखिम में डाल दिया।

फार्म पर सबसे सुखद पल वे होते थे जब मेरी पत्नी और परिवार मुझसे मिलने आते थे। गोल्डरिच परिवार के आने के बाद, विनी सप्ताहांत में मुझसे मिलने आती थी। हम उसके आने-जाने का पूरा ध्यान रखते थे, उसे एक ड्राइवर लेने आता, फिर दूसरी जगह छोड़ता, और फिर दूसरा ड्राइवर उसे फार्म तक पहुँचाता था। बाद में, वह खुद बच्चों के साथ गाड़ी चलाकर सबसे घुमावदार रास्ते से आती थी। पुलिस अभी तक उसकी हर हरकत पर नज़र नहीं रख रही थी।
इन सप्ताहांतों पर, ऐसा लगता था मानो समय थम गया हो, क्योंकि हम ये मानो एक साथ बिताए गए ये अनमोल पल हमारे जीवन का अपवाद नहीं बल्कि नियम थे।
विडंबना यह थी कि लिलीज़लीफ में हमें घर से कहीं अधिक एकांत मिलता था।
बच्चे बेफिक्र होकर खेल सकते थे, और हम इस सुखद माहौल में, चाहे कुछ समय के लिए ही सही, सुरक्षित महसूस करते थे।
विनी मेरे लिए ऑरलैंडो में रखी एक पुरानी एयर राइफल लाई थी और मैं और आर्थर उसका इस्तेमाल निशाना लगाने या खेत में कबूतरों का शिकार करने के लिए करते थे। एक दिन, मैं खेत के सामने वाले लॉन में था और मैंने एक ऊँचे पेड़ पर बैठी चिड़िया पर निशाना साधा। आर्थर की पत्नी हेज़ल गोल्डरिच मुझे देख रही थीं और उन्होंने मज़ाक में कहा कि मैं कभी निशाना नहीं लगा पाऊँगा। लेकिन उनके वाक्य पूरा होने से पहले ही चिड़िया ज़मीन पर गिर गई। मैं उनकी ओर मुड़ा और अपनी उपलब्धि पर गर्व करने ही वाला था कि गोल्डरिच के बेटे पॉल, जो उस समय लगभग पाँच साल का था, ने आँखों में आँसू लिए मेरी ओर मुड़कर कहा, “डेविड, तुमने उस चिड़िया को क्यों मार डाला? उसकी माँ दुखी होगी।”

मेरा भाव तुरंत गर्व से शर्म में बदल गया; मुझे लगा कि इस छोटे लड़के में मुझसे कहीं ज़्यादा इंसानियत है। एक नवोदित गुरिल्ला सेना के नेता के लिए यह एक अजीब एहसास था।

45

एमके की दिशा और स्वरूप तय करते समय, हमने चार प्रकार की हिंसक गतिविधियों पर विचार किया: तोड़फोड़, गुरिल्ला युद्ध, आतंकवाद और खुली क्रांति। एक छोटी और नवगठित सेना के लिए खुली क्रांति अकल्पनीय थी। आतंकवाद का इस्तेमाल करने वालों पर निश्चित रूप से बुरा प्रभाव पड़ता था, जिससे उसे मिलने वाला जनसमर्थन भी कम हो जाता था। गुरिल्ला युद्ध एक संभावना थी, लेकिन चूंकि एएनसी हिंसा को अपनाने से हिचकिचा रही थी, इसलिए हिंसा के उस रूप से शुरुआत करना उचित था जिससे व्यक्तियों को कम से कम नुकसान पहुंचे: तोड़फोड़।
क्योंकि इसमें किसी की जान नहीं गई, इसलिए बाद में विभिन्न नस्लों के बीच सुलह की यही सबसे अच्छी उम्मीद थी। हम श्वेत और अश्वेतों के बीच खून-खराबा शुरू नहीं करना चाहते थे। एंग्लो-बोअर युद्ध के पचास साल बाद भी अफ़्रीकानर और अंग्रेज़ों के बीच दुश्मनी अभी भी बहुत तीव्र थी; अगर हम गृहयुद्ध भड़का देते तो श्वेत और अश्वेतों के बीच नस्लीय संबंध कैसे होते? तोड़फोड़ का एक और फायदा यह था कि इसमें सबसे कम जनशक्ति की आवश्यकता होती थी।
हमारी रणनीति सैन्य प्रतिष्ठानों, बिजली संयंत्रों, टेलीफोन लाइनों और परिवहन मार्गों पर चुनिंदा हमले करना था; ऐसे लक्ष्य जो न केवल राज्य की सैन्य क्षमता को कमज़ोर करें, बल्कि नेशनल पार्टी के समर्थकों को डराएँ, विदेशी पूंजी को दूर भगाएँ और अर्थव्यवस्था को कमज़ोर करें। हमें उम्मीद थी कि इससे सरकार बातचीत की मेज़ पर आएगी। एमके के सदस्यों को सख्त निर्देश दिए गए थे कि हम किसी भी जानमाल के नुकसान को बर्दाश्त नहीं करेंगे। लेकिन अगर तोड़फोड़ से हमें मनचाहा परिणाम नहीं मिला, तो हम अगले चरण की ओर बढ़ने के लिए तैयार थे: गुरिल्ला युद्ध और आतंकवाद।
एमके की संरचना मूल संगठन के समान ही थी। शीर्ष पर राष्ट्रीय उच्च कमान थी; उसके नीचे प्रत्येक प्रांत में क्षेत्रीय कमानें थीं, और उसके नीचे

स्थानीय कमानें और इकाइयाँ थीं। क्षेत्रीय कमानें पूरे देश में स्थापित थीं, और पूर्वी केप जैसे क्षेत्र में पचास से अधिक इकाइयाँ थीं। उच्च कमान रणनीति और सामान्य लक्ष्यों का निर्धारण करती थी और प्रशिक्षण एवं वित्त का प्रभारी थी। उच्च कमान द्वारा निर्धारित ढांचे के भीतर, क्षेत्रीय कमानों को आक्रमण के लिए स्थानीय लक्ष्यों का चयन करने का अधिकार था। एमके के सभी सदस्यों को किसी भी अभियान में हथियार लेकर जाने की मनाही थी और उन्हें किसी भी तरह से जीवन को खतरे में नहीं डालना था।
शुरुआत में हमें जिन समस्याओं का सामना करना पड़ा, उनमें से एक थी एमके और एएनसी के बीच बंटी हुई निष्ठा का सवाल। हमारे ज़्यादातर नए सदस्य एएनसी के सदस्य थे जो स्थानीय शाखाओं में सक्रिय थे, लेकिन हमने पाया कि एमके के लिए काम शुरू करने के बाद वे पहले की तरह स्थानीय स्तर पर काम करना बंद कर देते थे। स्थानीय शाखा के सचिव को पता चलता कि कुछ लोग अब बैठकों में नहीं आ रहे हैं। वे किसी एक से पूछते, “यार, तुम कल रात की बैठक में क्यों नहीं आए?” और वह कहता, “अरे, मैं दूसरी बैठक में था।”
“किस तरह की बैठक?” सचिव पूछता।
"ओह, मैं नहीं कह सकता।"
“क्या आप मुझे, अपने ही सचिव को, यह नहीं बता सकते?” लेकिन सचिव को जल्द ही सदस्य की दूसरी वफादारी का पता चल गया। कुछ शुरुआती गलतफहमियों के बाद, हमने तय किया कि अगर हम किसी शाखा से सदस्यों की भर्ती करते हैं, तो सचिव को यह सूचित किया जाना चाहिए कि उनका एक सदस्य अब एमके के साथ है।

दिसंबर की एक गर्म दोपहर, जब मैं लिलीज़लीफ फार्म की रसोई में बैठा था, रेडियो पर यह घोषणा सुनी कि चीफ लुथुली को ओस्लो में आयोजित एक समारोह में नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया है। सरकार ने उन्हें पुरस्कार स्वीकार करने के लिए देश छोड़ने हेतु दस दिन का वीज़ा जारी किया था। मैं— हम सभी—बेहद प्रसन्न थे। सबसे पहले, यह हमारे संघर्ष की स्वीकृति थी, और उस संघर्ष के नेता और एक व्यक्ति के रूप में चीफ की उपलब्धियों की भी। यह पश्चिम में इस बात की मान्यता थी कि हमारा संघर्ष नैतिक था, जिसे महाशक्तियों ने बहुत लंबे समय तक अनदेखा किया था। यह पुरस्कार

राष्ट्रवादियों के लिए एक करारा जवाब था, जिनके प्रचार में लुथुली को एक कम्युनिस्ट षड्यंत्र के मुखिया के रूप में एक खतरनाक आंदोलनकारी के रूप में चित्रित किया गया था। अफ़्रीकानर स्तब्ध थे; उनके लिए यह पुरस्कार पश्चिमी उदारवादियों की विकृति और श्वेत दक्षिण अफ़्रीकियों के प्रति उनके पूर्वाग्रह का एक और उदाहरण था। जब पुरस्कार की घोषणा हुई, तब चीफ नेटाल के स्टेंजर जिले तक सीमित पाँच साल के प्रतिबंध के तीसरे वर्ष में थे। वे अस्वस्थ भी थे; उनका दिल तनावग्रस्त था और उनकी याददाश्त कमजोर थी। लेकिन इस पुरस्कार ने उन्हें और हम सभी को भी खुश कर दिया।
यह सम्मान एक अजीब समय पर मिला, क्योंकि इसके साथ ही एक ऐसी घोषणा भी हुई जिससे पुरस्कार पर ही सवाल उठने लगे। लुथुली के ओस्लो से लौटने के अगले दिन, एमके ने नाटकीय ढंग से अपने उदय की घोषणा की। एमके हाई कमांड के आदेश पर, 16 दिसंबर की सुबह - जिस दिन श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोग डिंगाने दिवस मनाते थे - जोहान्सबर्ग, पोर्ट एलिजाबेथ और डरबन में बिजली संयंत्रों और सरकारी कार्यालयों पर देसी बम विस्फोट किए गए। हमारे एक जवान, पेट्रस मोलिफ़, अनजाने में मारे गए, जो एमके सैनिक की पहली मृत्यु थी। युद्ध में मृत्यु दुर्भाग्यपूर्ण है, लेकिन अपरिहार्य है। एमके में शामिल होने वाला हर व्यक्ति जानता था कि उसे सर्वोच्च बलिदान देना पड़ सकता है। विस्फोटों के समय, उमखोंटो वे सिज़वे के जन्म की घोषणा करते हुए, नए एमके घोषणापत्र वाले हजारों पर्चे पूरे देश में वितरित किए गए थे।

आज उमखोंटो वे सिज़वे की इकाइयों ने सरकारी प्रतिष्ठानों, विशेषकर रंगभेद और नस्लीय भेदभाव की नीति से जुड़े प्रतिष्ठानों पर सुनियोजित हमले किए। उमखोंटो वे सिज़वे अफ्रीकियों द्वारा गठित एक नया, स्वतंत्र संगठन है। इसमें सभी नस्लों के दक्षिण अफ्रीकी शामिल हैं…। उमखोंटो वे सिज़वे स्वतंत्रता और लोकतंत्र के लिए संघर्ष को नए तरीकों से जारी रखेगा, जो स्थापित राष्ट्रीय मुक्ति आंदोलन की गतिविधियों के पूरक के रूप में आवश्यक हैं…।
किसी भी राष्ट्र के जीवन में एक ऐसा समय आता है जब केवल दो ही शेष रह जाते हैं।
विकल्प: आत्मसमर्पण या संघर्ष। दक्षिण अफ्रीका के लिए अब वह समय आ गया है।
हम आत्मसमर्पण नहीं करेंगे और हमारे पास अपने लोगों, अपने भविष्य और अपनी

स्वतंत्रता की रक्षा के लिए अपनी शक्ति के भीतर हर संभव प्रयास करने के अलावा कोई विकल्प नहीं है...
हम उमखोंटो निवासी हमेशा से यही चाहते आए हैं—जैसा कि मुक्ति आंदोलन ने चाहा है
हमारा उद्देश्य रक्तपात और गृहयुद्ध के बिना मुक्ति प्राप्त करना था। हम आशा करते हैं, भले ही यह अंतिम समय हो, कि हमारी पहली कार्रवाई सभी को उस भयावह स्थिति का एहसास कराएगी जिसकी ओर राष्ट्रवादी नीति ले जा रही है। हम आशा करते हैं कि हम सरकार और उसके समर्थकों को समय रहते ही सचेत कर देंगे, ताकि गृहयुद्ध जैसी भयावह स्थिति तक पहुँचने से पहले सरकार और उसकी नीतियों में बदलाव किया जा सके…। हमने 16 दिसंबर, डिंगाने दिवस, को एक खास वजह से चुना है। इस दिन, श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी 1838 में ब्लड रिवर की लड़ाई में महान ज़ुलू नेता डिंगाने की हार का जश्न मनाते हैं। शाका के सौतेले भाई डिंगाने ने उस समय लिम्पोपो नदी के दक्षिण में अब तक के सबसे शक्तिशाली अफ़्रीकी राज्य पर शासन किया था। उस दिन, बोअर्स की गोलियां ज़ुलू सैनिकों के भाले पर भारी पड़ीं और पास की नदी का पानी उनके खून से लाल हो गया था। अफ़्रीकानर 16 दिसंबर को अफ़्रीकानरों की अफ़्रीकी लोगों पर विजय और इस बात के प्रमाण के रूप में मनाते हैं कि ईश्वर उनके साथ था; जबकि अफ़्रीकी लोग अपने लोगों के नरसंहार के इस दिन शोक मनाते हैं। हमने 16 दिसंबर को यह दिखाने के लिए चुना कि अफ़्रीकी लोगों ने अभी लड़ाई शुरू ही की थी, और हमारे पास सच्चाई और बारूद दोनों थे।
विस्फोटों ने सरकार को चौंका दिया। उन्होंने तोड़फोड़ की निंदा करते हुए इसे जघन्य अपराध बताया, वहीं साथ ही इसे नासमझ नौसिखियों का काम कहकर उपहास भी उड़ाया। विस्फोटों ने श्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों को यह एहसास दिलाया कि वे एक ज्वालामुखी के शिखर पर बैठे हैं। अश्वेत दक्षिण अफ़्रीकी लोगों को समझ आ गया कि एएनसी अब निष्क्रिय प्रतिरोध का संगठन नहीं रहा, बल्कि एक शक्तिशाली भाला बन गया है जो संघर्ष को श्वेत सत्ता के केंद्र तक ले जाएगा। हमने दो सप्ताह बाद, नए साल की पूर्व संध्या पर, विस्फोटों की एक और श्रृंखला की योजना बनाई और उसे अंजाम दिया। घंटियों और सायरनों की मिली-जुली आवाज़ न केवल नए साल का स्वागत करने का एक कर्कश तरीका थी, बल्कि एक ऐसी ध्वनि थी जो हमारे स्वतंत्रता संघर्ष में एक नए युग का प्रतीक थी।

उमखोंटो की घोषणा ने सरकार की ओर से अभूतपूर्व पैमाने पर एक क्रूर और अथक जवाबी कार्रवाई को जन्म दिया। पुलिस की विशेष शाखा ने एमके के सदस्यों को पकड़ना अपना सर्वोपरि लक्ष्य बना लिया और इसके लिए उन्होंने कोई कसर नहीं छोड़ी। हमने उन्हें दिखा दिया था कि हम अब चुप नहीं बैठेंगे; उन्होंने हमें यह भी दिखा दिया कि जो उनके अस्तित्व के लिए सबसे बड़ा खतरा है, उसे जड़ से उखाड़ फेंकने से उन्हें कोई नहीं रोक सकता।

46

जब विनी आती थी, तो मुझे कुछ पल के लिए ही सही, यह भ्रम होता था कि परिवार अब भी एकजुट है। पुलिस की सतर्कता बढ़ने के कारण उसका आना-जाना कम होता जा रहा था। विनी ज़िंदज़ी और ज़ेनानी को रिवोनिया लाती थी, लेकिन वे इतनी छोटी थीं कि उन्हें पता नहीं था कि मैं छिप रही हूँ। ग्यारह साल का मकागाथो इतना बड़ा हो चुका था कि उसे पता था और उसे हिदायत दी गई थी कि वह किसी के भी सामने मेरा असली नाम न बताए। मैं समझ सकती थी कि वह अपने छोटे से प्रयास से मेरी पहचान को गुप्त रखने के लिए दृढ़ संकल्पित था।
लेकिन एक दिन, उस साल के अंत में, वह खेत में आर्थर के ग्यारह वर्षीय बेटे निकोलस गोल्डरिच के साथ खेल रहा था। विनी मेरे लिए ड्रम पत्रिका की एक प्रति लाई थी, और खेलते-खेलते माकगाथो और निकोलस की नज़र उस पर पड़ गई। वे उसे पलटने लगे, तभी अचानक माकगाथो मेरी उस तस्वीर पर रुक गया जो मेरे भूमिगत होने से पहले ली गई थी। "यह मेरे पिता हैं!" उसने कहा। निकोलस को विश्वास नहीं हुआ, और उसके संदेह ने माकगाथो को इसे सच साबित करने के लिए और भी उत्सुक कर दिया। माकगाथो ने अपने दोस्त को बताया कि मेरा असली नाम नेल्सन मंडेला है। "नहीं, तुम्हारे पिता का नाम डेविड है," निकोलस ने जवाब दिया। लड़का दौड़कर अपनी माँ के पास गया और उससे पूछा कि क्या मेरा नाम डेविड है या नहीं। उसने जवाब दिया कि हाँ, मेरा नाम डेविड है। निकोलस ने अपनी माँ को समझाया कि माकगाथो ने उसे बताया था कि उसके पिता का असली नाम नेल्सन है। इससे हेज़ल चिंतित हो गई और मुझे जल्द ही इस भूल के बारे में पता चल गया। एक बार फिर मुझे लगा कि मैं एक ही जगह पर बहुत लंबे समय तक रुका रहा हूँ। लेकिन मैं वहीं रुका रहा, क्योंकि एक हफ्ते से कुछ ज़्यादा समय

में मुझे एक ऐसे मिशन पर निकलना था जो मुझे उन जगहों पर ले जाएगा जिनके बारे में मैंने सिर्फ़ सपने ही देखे थे। अब, यह संघर्ष पहली बार मुझे मेरे देश की सीमाओं से बाहर ले जाएगा।

दिसंबर में, एएनसी को पूर्वी, मध्य और दक्षिणी अफ्रीका के लिए अखिल अफ्रीकी स्वतंत्रता आंदोलन (पीएएफएमईसीएसए) से फरवरी 1962 में अदीस अबाबा में आयोजित होने वाले सम्मेलन में भाग लेने का निमंत्रण मिला। पीएएफएमईसीएसए, जो बाद में अफ्रीकी एकता संगठन बन गया, का उद्देश्य अफ्रीका के स्वतंत्र राज्यों को एकजुट करना और महाद्वीप पर मुक्ति आंदोलनों को बढ़ावा देना था। यह सम्मेलन एएनसी के लिए महत्वपूर्ण संपर्क स्थापित करने का अवसर प्रदान करेगा और एमके के लिए समर्थन, धन और प्रशिक्षण जुटाने का पहला और सबसे अच्छा मौका होगा।
भूमिगत कार्यकारी समिति ने मुझे सम्मेलन में एएनसी प्रतिनिधिमंडल का नेतृत्व करने के लिए कहा। हालांकि मैं अफ्रीका के बाकी हिस्सों को देखने और अपने महाद्वीप के स्वतंत्रता सेनानियों से मिलने के लिए उत्सुक था, लेकिन मुझे इस बात की गहरी चिंता थी कि मैं अपने उस वादे का उल्लंघन कर रहा हूँ जिसमें मैंने देश न छोड़ने और भूमिगत रहकर काम करने का वादा किया था। मेरे सहयोगियों, जिनमें चीफ लुथुली भी शामिल थे, ने मुझे जाने के लिए कहा, लेकिन साथ ही यह भी ज़िद की कि मैं तुरंत बाद लौट आऊँ। मैंने यात्रा करने का फैसला किया।
अफ्रीका में मेरा मिशन सिर्फ सम्मेलन में भाग लेने तक सीमित नहीं था; मुझे हमारी नई सैन्य शक्ति के लिए राजनीतिक और आर्थिक सहायता की व्यवस्था करनी थी और उससे भी महत्वपूर्ण, महाद्वीप के अधिक से अधिक स्थानों पर हमारे सैनिकों के लिए सैन्य प्रशिक्षण की व्यवस्था करनी थी। मैं अफ्रीका के उन शेष हिस्सों में भी अपनी प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए दृढ़ संकल्पित था जहाँ हम अभी भी अपेक्षाकृत अज्ञात थे। पीएसी ने अपना प्रचार अभियान शुरू कर दिया था और मुझे जहाँ भी संभव हो, हमारी बात रखने का दायित्व सौंपा गया था। जाने से पहले, मैं चुपके से ग्राउटविले गया ताकि मुखिया से बात कर सकूँ। शहर के एक सुरक्षित ठिकाने पर हुई हमारी मुलाकात चिंताजनक थी। जैसा कि

मैंने बताया है, मुखिया एमके के गठन के समय मौजूद थे और राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के किसी भी सदस्य की तरह इसके विकास के बारे में पूरी तरह से अवगत थे। लेकिन मुखिया की तबीयत ठीक नहीं थी और उनकी याददाश्त पहले जैसी नहीं रही थी। उन्होंने एमके के गठन के बारे में उनसे सलाह न लेने के लिए मुझे फटकारा। मैंने मुखिया को डरबन में हिंसा का रास्ता अपनाने के बारे में हुई हमारी चर्चाओं की याद दिलाने की कोशिश की, लेकिन उन्हें कुछ याद नहीं था। इसी वजह से यह कहानी प्रचलित हो गई है कि मुखिया लुथुली को एमके के गठन के बारे में जानकारी नहीं थी और वे एएनसी द्वारा हिंसा का रास्ता अपनाने के घोर विरोधी थे। सच्चाई इससे कोसों दूर है।

मैंने अपने प्रस्थान से पहले वाली रात विनी के साथ उत्तरी उपनगरों में अपने श्वेत मित्रों के घर पर बिताई थी और वह मेरे लिए एक नया सूटकेस लाई थी जिसे उसने पैक किया था। वह मेरे देश छोड़ने को लेकर चिंतित थी, लेकिन एक बार फिर उसने अपना धैर्य बनाए रखा। उसने एक पत्नी के साथ-साथ एक सैनिक की तरह भी व्यवहार किया।

एएनसी को मेरे लिए तंजानिया के दार एस सलाम की यात्रा की व्यवस्था करनी पड़ी। अदीस अबाबा के लिए उड़ान दार एस सलाम से ही शुरू होनी थी। योजना यह थी कि वाल्टर, कथराडा और डूमा नोकवे सोवेटो में एक गुप्त स्थान पर मुझसे मिलेंगे और मुझे यात्रा के लिए मेरे पहचान पत्र देंगे। देश छोड़ने से पहले यह अंतिम समय की सलाह-मशविरा करने का भी मौका था।
अहमद कथराडा तय समय पर पहुँच गए, लेकिन वाल्टर और डूमा बहुत देर से आए। आखिरकार मुझे वैकल्पिक व्यवस्था करनी पड़ी और कैथी ने किसी को मेरे लिए बेचुआनालैंड तक गाड़ी चलाने के लिए राजी कर लिया, जहाँ से मैं एक विमान किराए पर लूँगा। बाद में मुझे पता चला कि वाल्टर और डूमा को रास्ते में गिरफ्तार कर लिया गया था।
बेचुआनालैंड की यात्रा काफी कठिन रही, क्योंकि मैं पुलिस को लेकर और इस तथ्य को लेकर भी घबराया हुआ था कि मैंने इससे पहले कभी अपने देश की सीमा पार नहीं की थी। हमारा गंतव्य दक्षिण अफ्रीका की सीमा के पास स्थित लोबत्से था। हमने बिना किसी परेशानी के सीमा पार कर ली और दोपहर बाद

लोबत्से पहुँच गए, जहाँ दार एस सलाम से मेरे लिए एक टेलीग्राम आया था जिसमें मेरी यात्रा को दो सप्ताह के लिए स्थगित करने की सूचना थी। मैंने अपने साथी राजद्रोह मुकदमे के आरोपी फिश कीट्सिंग के साथ कुछ समय बिताया, जो तब तक लोबत्से में ही बस गए थे।
उस दोपहर मेरी मुलाकात बेचुआनालैंड पीपुल्स पार्टी के अध्यक्ष प्रोफेसर के. टी. मोत्सेते से हुई, जिसका गठन मुख्य रूप से पूर्व एएनसी सदस्यों द्वारा किया गया था। अब मेरे पास अप्रत्याशित रूप से कुछ खाली समय था, जिसका उपयोग मैंने पढ़ने, सम्मेलन के लिए अपना भाषण तैयार करने और शहर के ऊपर की जंगली और खूबसूरत पहाड़ियों पर ट्रेकिंग करने में किया। हालांकि मैं अपने देश की सीमाओं से ज्यादा दूर नहीं था, फिर भी मुझे ऐसा लग रहा था जैसे मैं किसी विदेशी भूमि में हूँ। मेरे साथ अक्सर मैक्स मलोनीनी होता था, जो ट्रांसकेई के एक मित्र का बेटा और पीएसी का एक युवा सदस्य था। ऐसा लग रहा था जैसे हम सफारी पर हों, क्योंकि हमें हर तरह के जानवर देखने को मिले, जिनमें फुर्तीले बबूनों का एक झुंड भी शामिल था, जिनका मैंने कुछ देर तक पीछा किया और उनकी सैन्य जैसी संगठन और गतिविधियों की प्रशंसा की। कुछ ही देर में जो मैथ्यूज, जो बसुटोलैंड से आए थे, मुझसे आकर मिल गए और मैंने उनसे दार एस सलाम के लिए जल्दी निकलने को कहा। लोबत्से में एएनसी के एक साथी को हाल ही में दक्षिण अफ्रीकी पुलिस ने अगवा कर लिया था और मुझे लगा कि हम जितनी जल्दी निकल सकें, उतना ही अच्छा होगा। एक विमान का इंतजाम किया गया और हमारा पहला गंतव्य उत्तरी बेचुआनालैंड का एक कसने शहर था, जो रणनीतिक रूप से उस बिंदु के पास स्थित था जहाँ चार देशों की सीमाएँ मिलती थीं - बेचुआनालैंड, उत्तरी और दक्षिणी रोडेशिया और दक्षिण पश्चिम अफ्रीका, जैसा कि उस समय इन उपनिवेशों को जाना जाता था। कसने की लैंडिंग स्ट्रिप पानी से भरी हुई थी और हम कई मील दूर झाड़ियों के बीच एक सूखी स्ट्रिप पर उतरे। एक स्थानीय होटल का मैनेजर हमें लेने राइफलों से लैस होकर आया और उसने बताया कि हाथियों के एक झुंड के कारण उसे देरी हो गई थी। वह एक खुली वैन में था और जो और मैं पीछे बैठे थे, और मैंने एक शेरनी को झाड़ियों से धीरे-धीरे निकलते देखा। मैं अपने घर जोहान्सबर्ग की गलियों से बहुत दूर महसूस कर रहा था; मैं पहली बार मिथकों और किंवदंतियों के अफ्रीका में था। अगली सुबह हम उत्तरी रोडेशिया सीमा के पास स्थित तंजानिया के एक कस्बे म्बेया के लिए रवाना हुए। हम विक्टोरिया फॉल्स के पास से गुजरे और फिर एक

पर्वत श्रृंखला से होते हुए उत्तर की ओर बढ़े। पहाड़ों के ऊपर से गुजरते हुए पायलट ने म्बेया से संपर्क करने की कोशिश की, लेकिन कोई जवाब नहीं मिला। वह माइक्रोफोन में बार-बार "म्बेया, म्बेया!" कहता रहा। मौसम बदल गया था और पहाड़ों में हवा के इतने झोंके थे कि विमान उबड़-खाबड़ समुद्र में कॉर्क की तरह उछल रहा था। हम अब बादलों और कोहरे के बीच से उड़ रहे थे और हताशा में पायलट ने विमान को नीचे उतारा और पहाड़ों के बीच से घुमावदार सड़क पर आगे बढ़ा। तब तक कोहरा इतना घना हो गया था कि हमें सड़क दिखाई नहीं दे रही थी और जब पायलट ने अचानक विमान को मोड़ा, तब मुझे एहसास हुआ कि हम एक ऐसे पहाड़ से बाल-बाल बचे जो मानो कहीं से अचानक प्रकट हो गया हो। आपातकालीन अलार्म बज उठा, और मुझे याद है कि मैंने मन ही मन कहा, "अब तो हमारा अंत हो गया।" हमेशा बातूनी रहने वाला जो भी एकदम चुप हो गया था। लेकिन तभी, जब बादलों में हमें आगे कुछ दिखाई नहीं दे रहा था और मुझे लगा कि हम किसी पहाड़ से टकराने वाले हैं, तभी हम खराब मौसम से निकलकर एकदम साफ आसमान में आ गए। मुझे हवाई यात्रा कभी पसंद नहीं आई, और हालांकि यह हवाई जहाज में मेरा अब तक का सबसे डरावना अनुभव था, मैं कभी-कभी बहादुर दिखने में माहिर हूं और मैंने ऐसा दिखाया जैसे मुझे कोई चिंता नहीं है।
हमने एक स्थानीय होटल में कमरा बुक किया और वहाँ बरामदे में काले और गोरे लोगों की भीड़ को शिष्टाचारपूर्वक बातचीत करते हुए पाया। इससे पहले मैंने कभी किसी सार्वजनिक स्थान या होटल में ऐसा माहौल नहीं देखा था जहाँ रंगभेद न हो। हम तंजानिका अफ्रीकन नेशनल यूनियन के सांसद श्री मवाकांगले का इंतज़ार कर रहे थे, और हमें पता भी नहीं था कि उन्होंने हमें फ़ोन कर दिया था। एक अफ्रीकी मेहमान ने श्वेत रिसेप्शनिस्ट से संपर्क किया। उसने हमारी ओर इशारा करते हुए पूछा, “महोदया, क्या श्री मवाकांगले ने इन दोनों सज्जनों के बारे में पूछताछ की थी?” रिसेप्शनिस्ट ने जवाब दिया, “माफ़ कीजिए, महोदय। उन्होंने की थी, लेकिन मैं उन्हें बताना भूल गई।”
“कृपया सावधान रहें, महोदया,” उन्होंने विनम्र लेकिन दृढ़ स्वर में कहा। “ये पुरुष हमारे मेहमान हैं और हम चाहते हैं कि उन्हें उचित सम्मान मिले।” तब मुझे सचमुच एहसास हुआ कि मैं अफ़्रीकी शासकों के देश में हूँ। अपने जीवन में पहली बार, मैं एक स्वतंत्र व्यक्ति था। हालाँकि मैं एक भगोड़ा था और अपने ही देश में वांछित था, फिर भी मुझे लगा जैसे मेरे कंधों से उत्पीड़न का बोझ उतर गया हो। तंजानिका में मैं जहाँ भी गया, मेरी त्वचा के

कागज़ आव्रजन काउंटर के पीछे खड़े एक बूढ़े सूडानी व्यक्ति को दिया और उन्होंने मुस्कुराते हुए ऊपर देखा और कहा, "मेरे बेटे, सूडान में आपका स्वागत है।" फिर उन्होंने मुझसे हाथ मिलाया और मेरे दस्तावेज़ पर मुहर लगा दी। बासनर मेरे पीछे थे और उन्होंने भी उसी तरह का दस्तावेज़ उस बूढ़े व्यक्ति को दे दिया। बूढ़े व्यक्ति ने उसे कुछ देर देखा और फिर घबराए हुए लहजे में कहा: "यह क्या है? यह कागज़ का टुकड़ा क्या है? यह आधिकारिक नहीं है!"
बास्नर ने शांत भाव से समझाया कि यह दस्तावेज़ उन्हें तंजानिका में दिया गया था क्योंकि उनके पास पासपोर्ट नहीं था। आव्रजन अधिकारी ने तिरस्कार से कहा, "पासपोर्ट नहीं? पासपोर्ट कैसे हो सकता है - आप तो गोरे हैं!" बास्नर ने जवाब दिया कि उन्हें अपने देश में सताया गया क्योंकि उन्होंने अश्वेतों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी। सूडानी अधिकारी ने संदेह भरी नज़र से देखा: "लेकिन आप तो गोरे हैं!" जो ने मेरी ओर देखा और समझ गया कि मैं क्या सोच रहा हूँ: उसने मुझे दखल न देने के लिए फुसफुसाया, क्योंकि हम सूडान में मेहमान थे और अपने मेज़बान की मेहमाननवाज़ी को ठेस नहीं पहुँचाना चाहते थे। लेकिन मेरे मालिक होने के अलावा, बास्नर उन गोरों में से एक थे जिन्होंने वास्तव में अश्वेतों की मुक्ति के लिए जोखिम उठाए थे, और मैं उन्हें छोड़ नहीं सकता था। जो के साथ जाने के बजाय, मैं वहीं रुका रहा और अधिकारी के पास खड़ा रहा और जब भी बास्नर कुछ कहते, मैं बस झुककर और सिर हिलाकर अधिकारी को उनकी बात की पुष्टि करता। उस बूढ़े व्यक्ति को मेरी हरकत का एहसास हुआ, उसका व्यवहार नरम पड़ा, और अंत में उसने अपने दस्तावेज़ पर मुहर लगाई और धीरे से कहा, "सूडान में आपका स्वागत है।"

मैंने ओलिवर को लगभग दो साल से नहीं देखा था, और जब वह अकरा हवाई अड्डे पर मुझसे मिले तो मैं उन्हें मुश्किल से पहचान पाया। पहले वह क्लीन शेव्ड और सलीके से तैयार रहते थे, लेकिन अब उनकी दाढ़ी और लंबे बाल थे और उन्होंने महाद्वीप के स्वतंत्रता सेनानियों की तरह फौजी शैली के कपड़े पहन रखे थे। (शायद उनकी भी मेरे प्रति यही प्रतिक्रिया रही होगी।) यह एक सुखद मिलन था, और मैंने विदेशों में उनके द्वारा किए गए शानदार काम की सराहना की।

उन्होंने घाना, इंग्लैंड, मिस्र और तंजानिका में एएनसी कार्यालय स्थापित कर दिए थे, और कई अन्य देशों में हमारे लिए महत्वपूर्ण संपर्क स्थापित किए थे। इसके बाद मैंने जहाँ भी यात्रा की, मैंने पाया कि ओलिवर ने राजनयिकों और राजनेताओं पर कितना सकारात्मक प्रभाव डाला था। वह संगठन के लिए सबसे उपयुक्त राजदूत थे।
स्वतंत्र राज्यों के लागोस सम्मेलन का उद्देश्य सभी अफ्रीकी राज्यों को एकजुट करना था, लेकिन अंततः यह इस बात पर कलह में उलझ गया कि किन राज्यों को शामिल किया जाए और किन राज्यों को बाहर रखा जाए। मैंने चुपचाप रहकर सम्मेलन में भाग नहीं लिया, क्योंकि हम नहीं चाहते थे कि दक्षिण अफ्रीकी सरकार को पता चले कि मैं विदेश में हूँ, जब तक कि मैं अदीस में PAFMECSA सम्मेलन में उपस्थित नहीं हो गया।

अकरा से अदीस जाने वाली फ्लाइट में हमें गौर रादेबे, पीटर मोलोत्सी और पीएसी के अन्य सदस्य मिले, जो पीएएफएमईसीएसए में भाग लेने जा रहे थे। वे सभी मुझे देखकर आश्चर्यचकित रह गए और हम तुरंत दक्षिण अफ्रीका से संबंधित चर्चाओं में मशगूल हो गए। माहौल खुशनुमा और तनावमुक्त था। हालांकि गौर के एएनसी छोड़ने की खबर सुनकर मुझे निराशा हुई थी, लेकिन उनसे मिलकर मुझे जो खुशी हुई, वह कम नहीं हुई। इतनी ऊंचाई पर और घर से दूर, हमारे बीच ऐसी कई बातें थीं जो हमें जोड़ती थीं, न कि अलग करती थीं।
हम खार्तूम में थोड़ी देर के लिए रुके, जहाँ से हमने इथियोपियन एयरवेज की फ्लाइट से अदीस अबाबा के लिए उड़ान भरी। यहाँ मुझे एक अजीब सा एहसास हुआ। जैसे ही मैं विमान में चढ़ा, मैंने देखा कि पायलट अश्वेत था। मैंने इससे पहले कभी किसी अश्वेत पायलट को नहीं देखा था, और देखते ही मेरी घबराहट बढ़ गई। भला एक अश्वेत व्यक्ति विमान कैसे उड़ा सकता है? लेकिन कुछ ही देर में मुझे अपनी गलती का एहसास हुआ: मैं रंगभेद वाली मानसिकता में फँस गया था, यह सोचता था कि अफ्रीकी लोग हीन हैं और विमान उड़ाना केवल श्वेत पुरुषों का काम है। मैं अपनी सीट पर वापस बैठ गया और ऐसे विचारों के लिए खुद को फटकारा। एक बार जब विमान हवा में था, तो मेरी घबराहट दूर हो गई और मैंने

इथियोपिया के भूगोल का अध्ययन किया, यह सोचते हुए कि कैसे गुरिल्ला सेनाएँ इन्हीं जंगलों में छिपकर इतालवी साम्राज्यवादियों से लड़ती थीं।

47

पूर्व में अबिसीनिया के नाम से जाना जाने वाला इथियोपिया, परंपरा के अनुसार, ईसा मसीह के जन्म से बहुत पहले स्थापित हुआ था, माना जाता है कि इसकी स्थापना सुलैमान के पुत्र और शीबा की रानी ने की थी। हालाँकि इस पर दर्जनों बार विजय प्राप्त की गई, इथियोपिया अफ्रीकी राष्ट्रवाद का जन्मस्थान था। कई अन्य अफ्रीकी राज्यों के विपरीत, इसने हर मोड़ पर उपनिवेशवाद का मुकाबला किया। मेनेलिक ने पिछली शताब्दी में इटालियंस को खदेड़ दिया था, हालाँकि इस शताब्दी में इथियोपिया उन्हें रोकने में विफल रहा। 1930 में, हैले सेलासी सम्राट बने और समकालीन इथियोपियाई इतिहास को आकार देने वाली शक्ति बने। जब मुसोलिनी ने इथियोपिया पर आक्रमण किया, तब मैं सत्रह वर्ष का था, इस आक्रमण ने न केवल उस निरंकुश शासक के प्रति, बल्कि सामान्य रूप से फासीवाद के प्रति भी मेरी घृणा को और बढ़ा दिया। हालाँकि 1936 में इटालियंस द्वारा इथियोपिया पर विजय प्राप्त करने पर सेलासी को भागने के लिए मजबूर होना पड़ा, लेकिन 1941 में मित्र देशों की सेनाओं द्वारा इटालियंस को खदेड़ने के बाद वे वापस लौट आए।
इथियोपिया का मेरे मन में हमेशा से एक विशेष स्थान रहा है और इथियोपिया की यात्रा की संभावना ने मुझे फ्रांस, इंग्लैंड और अमेरिका की यात्राओं से कहीं अधिक आकर्षित किया। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं अपनी उत्पत्ति का अनुभव कर रहा हूँ, उन जड़ों को खोज रहा हूँ जिन्होंने मुझे अफ्रीकी बनाया। स्वयं सम्राट से मिलना इतिहास से हाथ मिलाने जैसा होगा।
हमारा पहला पड़ाव अदीस अबाबा था, जिसे शाही शहर कहा जाता था। यह अपने नाम के अनुरूप बिल्कुल नहीं था, क्योंकि यह भव्यता से बिल्कुल उलट था। यहाँ कुछ ही पक्की सड़कें थीं और कारों से कहीं ज़्यादा बकरियाँ और भेड़ें थीं। शाही महल, विश्वविद्यालय और रास होटल (जहाँ हम ठहरे थे) के अलावा, ऐसी बहुत कम इमारतें थीं जो जोहान्सबर्ग की सबसे साधारण इमारतों से भी तुलना करने लायक थीं। समकालीन इथियोपिया लोकतंत्र के मामले में भी आदर्श नहीं था। यहाँ न तो कोई राजनीतिक दल थे, न ही सरकार के कोई जन-संस्थागत अंग, न ही शक्तियों का पृथक्करण; केवल सम्राट ही सर्वोच्च थे।

राष्ट्राध्यक्ष को अपने पद की औपचारिकताओं को निभाते देखा और मैं मंत्रमुग्ध हो गया। वे एकदम सीधे खड़े थे और सुनने का संकेत देने के लिए उन्होंने अपना सिर थोड़ा सा झुकाया। गरिमा उनके सभी कार्यों की पहचान थी। मुझे सम्राट के बाद बोलने का कार्यक्रम था, जो उस सुबह बोलने वाले एकमात्र अन्य वक्ता थे। कई महीनों में पहली बार, मैंने डेविड मोत्सामयी की पहचान को त्याग दिया और नेल्सन मंडेला बन गया। अपने भाषण में, मैंने दक्षिण अफ्रीका के स्वतंत्रता संग्राम के इतिहास की समीक्षा की और 1921 में बुलहोक में हुए क्रूर नरसंहारों का उल्लेख किया, जब सेना और पुलिस ने एक सौ तिरानवे निहत्थे किसानों की हत्या कर दी थी, और चालीस साल बाद शार्पविले में हुए नरसंहार का भी जिक्र किया। मैंने दक्षिण अफ्रीका पर दबाव डालने के लिए उपस्थित राष्ट्रों को धन्यवाद दिया, विशेष रूप से घाना, नाइजीरिया और तंजानिका का उल्लेख किया, जिन्होंने दक्षिण अफ्रीका को ब्रिटिश राष्ट्रमंडल से बाहर निकालने के सफल अभियान का नेतृत्व किया था। मैंने उमखोंटो वे सिज़वे के जन्म की कहानी सुनाई और समझाया कि शांतिपूर्ण संघर्ष के सभी अवसर हमारे लिए बंद कर दिए गए थे। “कोई भी नेतृत्व अपने ही लोगों के खिलाफ अपराध करता है यदि वह उन क्षेत्रों में अपने राजनीतिक हथियारों को तेज करने में संकोच करता है जहां वे कम प्रभावी हो गए हैं…। पिछले साल 16 दिसंबर की रात को, पूरा दक्षिण अफ्रीका उमखोंटो वे सिज़वे के जोरदार प्रहारों से कांप उठा था।” मेरे यह कहते ही युगांडा के मुख्यमंत्री चिल्ला उठे: “उन्हें फिर से सबक सिखाओ!”
फिर मैंने अपना खुद का अनुभव बताया:

मैं अभी-अभी दक्षिण अफ्रीका से निकला हूँ, जहाँ पिछले दस महीनों से मैं अपने ही देश में परिवार और दोस्तों से दूर एक भगोड़े के रूप में रह रहा था। जब मुझे इस तरह का जीवन जीने के लिए मजबूर होना पड़ा, तो मैंने एक सार्वजनिक बयान जारी किया था जिसमें मैंने घोषणा की थी कि मैं देश नहीं छोड़ूंगा बल्कि भूमिगत रूप से काम करना जारी रखूंगा। मैंने जो कहा था, मैं उस वादे को निभाऊंगा।

दक्षिण अफ्रीका लौटने की मेरी घोषणा का जोरदार स्वागत हुआ। हमें पहले बोलने के लिए प्रोत्साहित किया गया था ताकि PAFMECSA हमारे उद्देश्य का

मिस्र हमारे लिए एक महत्वपूर्ण आदर्श था, क्योंकि हमने राष्ट्रपति नासिर द्वारा शुरू किए गए समाजवादी आर्थिक सुधारों के कार्यक्रम को प्रत्यक्ष रूप से देखा था। उन्होंने भूमि के निजी स्वामित्व को कम किया, अर्थव्यवस्था के कुछ क्षेत्रों का राष्ट्रीयकरण किया, तीव्र औद्योगीकरण की शुरुआत की, शिक्षा का लोकतंत्रीकरण किया और एक आधुनिक सेना का निर्माण किया। इनमें से कई सुधार ठीक उसी प्रकार के थे जिन्हें हम एएनसी में भविष्य में लागू करने की आशा रखते थे। हालांकि, उस समय हमारे लिए यह अधिक महत्वपूर्ण था कि मिस्र एकमात्र अफ्रीकी राज्य था जिसकी सेना, नौसेना और वायु सेना किसी भी तरह से दक्षिण अफ्रीका की सेनाओं, नौसेना और वायु सेना से तुलना करने योग्य थी।

एक दिन बाद, ओलिवर लंदन के लिए रवाना हो गया और उसने वादा किया कि वह घाना में रॉबी और मुझसे मिलेगा। रॉबी और मैंने अपने दौरे पर जाने से पहले, हर देश में दिए जाने वाले अपने प्रेजेंटेशन पर चर्चा की। मेरी इच्छा थी कि मैं राजनीतिक स्थिति को यथासंभव सच्चाई और निष्पक्षता से समझाऊं और पीएसी की उपलब्धियों को न छिपाऊं। हर नए देश में, मैं पहले अपने होटल में ही रहता और उस देश की नीतियों, इतिहास और नेतृत्व के बारे में जानकारी जुटाता। रॉबी ने इसके विपरीत किया। स्वभाव से बहिर्मुखी होने के कारण, वह पहुंचते ही होटल से निकल जाता और सड़कों पर निकलकर लोगों से बातचीत और देखकर सीखता। हम दोनों एक अजीब जोड़ी थे, क्योंकि मैं भूमिगत रहते हुए पहने जाने वाले अनौपचारिक कपड़ों को अपनाता था और खाकी पैंट और मिलिट्री वर्दी पहनता था, जबकि रॉबी हमेशा सूट में सज-धज कर रहता था।

ट्यूनिस में, जो हमारा पहला पड़ाव था, हमारी मुलाकात रक्षा मंत्री से हुई, जो चीफ लुथुली से काफी मिलते-जुलते थे। लेकिन मुझे अफसोस है कि समानता यहीं खत्म हो गई, क्योंकि जब मैं उन्हें रॉबर्ट सोबुकवे जैसे पीएसी नेताओं के जेल में होने की स्थिति के बारे में बता रहा था, तो उन्होंने मुझे बीच में ही रोककर कहा, "जब वह आदमी वापस आएगा, तो वह तुम्हें खत्म कर देगा!" रॉबी ने इस पर अपनी भौंहें चढ़ा लीं (बाद में उन्होंने कहा, "यार, तुम पीएसी का पक्ष उनसे बेहतर तरीके से रख रहे थे!"), लेकिन मैंने मंत्री को पूरी बात

समझाने पर जोर दिया। अगले दिन जब हमारी मुलाकात राष्ट्रपति हबीब बोरगुइबा से हुई, तो उनकी प्रतिक्रिया पूरी तरह से सकारात्मक और तत्काल थी: उन्होंने हमारे सैनिकों के लिए प्रशिक्षण और हथियारों के लिए पांच हजार पाउंड देने की पेशकश की।
मोरक्को में स्थित रबात, हमारा अगला पड़ाव, अपनी प्राचीन और रहस्यमयी दीवारों, फैशनेबल दुकानों और मध्ययुगीन मस्जिदों के साथ, अफ्रीका, यूरोप और मध्य पूर्व का एक आकर्षक मिश्रण प्रतीत होता था। जाहिर तौर पर स्वतंत्रता सेनानी भी ऐसा ही सोचते थे, क्योंकि रबात महाद्वीप के लगभग हर मुक्ति आंदोलन का केंद्र था। वहाँ रहते हुए, हम मोज़ाम्बिक, अंगोला, अल्जीरिया और केप वर्डे के स्वतंत्रता सेनानियों से मिले। यह अल्जीरियाई क्रांतिकारी सेना का मुख्यालय भी था, और हमने मोरक्को में अल्जीरियाई मिशन के प्रमुख डॉ. मुस्तफा के साथ कई दिन बिताए, जिन्होंने हमें फ्रांसीसियों के खिलाफ अल्जीरियाई प्रतिरोध के इतिहास के बारे में जानकारी दी।
अल्जीरिया की स्थिति हमारे देश की स्थिति से सबसे मिलती-जुलती थी, क्योंकि वहां विद्रोहियों का सामना एक विशाल श्वेत उपनिवेशवादी समुदाय से हुआ था जो मूल निवासियों के बहुमत पर शासन करता था। उन्होंने बताया कि कैसे 1954 में वियतनाम के डिएन बिएन फू में फ्रांसीसियों की पराजय से उत्साहित होकर एफएलएन ने मुट्ठी भर गुरिल्ला हमलों से अपना संघर्ष शुरू किया था। डॉ. मुस्तफा ने कहा कि पहले तो एफएलएन को विश्वास था कि वे फ्रांसीसियों को सैन्य रूप से हरा सकते हैं, लेकिन बाद में उन्हें एहसास हुआ कि विशुद्ध सैन्य विजय असंभव है।
इसके बजाय, उन्होंने गुरिल्ला युद्ध का सहारा लिया। उन्होंने समझाया कि गुरिल्ला युद्ध का उद्देश्य सैन्य विजय प्राप्त करना नहीं था, बल्कि ऐसी राजनीतिक और आर्थिक शक्तियों को सक्रिय करना था जो दुश्मन को पराजित कर सकें। डॉ. मुस्तफा ने हमें सैन्य रणनीति बनाते समय युद्ध के राजनीतिक पहलू को नज़रअंदाज़ न करने की सलाह दी। उन्होंने कहा कि अंतरराष्ट्रीय जनमत कभी-कभी लड़ाकू विमानों के बेड़े से भी अधिक महत्वपूर्ण होता है।
तीन दिन बीतने के बाद, उन्होंने हमें औजदा भेजा, जो अल्जीरिया की सीमा के ठीक पार एक धूल भरा छोटा सा कस्बा था और मोरक्को में अल्जीरियाई सेना का मुख्यालय था। हमने मोर्चे पर एक सैन्य इकाई का दौरा किया, और एक समय मैंने

दूरबीन से देखा तो सीमा पार फ्रांसीसी सैनिक दिखाई दिए। मैं स्वीकार करता हूँ कि मुझे लगा कि मैं दक्षिण अफ्रीकी रक्षा बल की वर्दी देख रहा हूँ। एक-दो दिन बाद मैं अहमद बेन बेला के सम्मान में आयोजित सैन्य परेड में अतिथि के रूप में उपस्थित था। अहमद बेन बेला स्वतंत्र अल्जीरिया के पहले प्रधानमंत्री बनने वाले थे और हाल ही में फ्रांस की जेल से रिहा हुए थे। अदीस अबाबा में देखी गई सैन्य परेड से यह बिल्कुल अलग थी। यह परेड इथियोपिया की तरह चुस्त-दुरुस्त, प्रशिक्षित और शानदार वर्दीधारी सेना की परेड नहीं थी, बल्कि अल्जीरिया में हुए गुरिल्ला आंदोलन का एक जीवंत इतिहास थी।
सबसे आगे पगड़ी, लंबी कुर्तियाँ और चप्पल पहने, युद्ध में माहिर, गौरवशाली सैनिक इतराते हुए चल रहे थे, जिन्होंने कई साल पहले संघर्ष शुरू किया था। उनके पास वही हथियार थे जिनका उन्होंने इस्तेमाल किया था: कृपाण, पुरानी फ्लिंटलॉक राइफलें, कुल्हाड़ियाँ और भाले। उनके पीछे युवा सैनिक थे, सभी आधुनिक हथियारों से लैस और उतने ही गौरवशाली। कुछ सैनिकों के पास भारी टैंक-रोधी और विमान-रोधी बंदूकें थीं। लेकिन ये सैनिक भी इथियोपियाई सैनिकों की तरह चुस्ती और सटीकता से नहीं चल रहे थे। यह एक गुरिल्ला सेना थी, और ये वे सैनिक थे जिन्होंने युद्ध की आग में अपनी वीरता साबित की थी, जो वर्दी और परेड से ज़्यादा लड़ाई और रणनीति को महत्व देते थे। अदीस में सैनिकों से मैं जितना प्रेरित था, उतना ही मुझे पता था कि हमारी अपनी सेना ओउज्दा में इन सैनिकों जैसी ही होगी, और मैं बस यही आशा कर सकता था कि वे भी उतनी ही बहादुरी से लड़ेंगे।
पीछे की ओर एक साधारण-सी सैन्य टुकड़ी थी जिसका नेतृत्व सुदानी नाम का एक व्यक्ति कर रहा था। लंबा, हट्टा-कट्टा और आत्मविश्वासी, वह रात की तरह काला था। वह एक औपचारिक गदा लहरा रहा था, और जब हमने उसे देखा, तो हमारा पूरा दल खड़ा हो गया और ताली बजाने और जयकारे लगाने लगा। मैंने चारों ओर देखा और पाया कि दूसरे लोग हमें घूर रहे थे, और मुझे एहसास हुआ कि हम केवल इसलिए जयकारे लगा रहे थे क्योंकि यह व्यक्ति काला था और मोरक्को में काले चेहरे बहुत कम देखने को मिलते हैं। एक बार फिर मैं राष्ट्रवाद और जातीयता की अपार शक्ति से चकित रह गया। हमने तुरंत प्रतिक्रिया दी, क्योंकि हमें ऐसा लगा जैसे हम अपने किसी अफ्रीकी भाई को देख रहे हों। बाद में, हमारे मेज़बानों ने हमें बताया कि सुदानी एक महान सैनिक था, और यहाँ तक कि उसने

अकेले ही एक पूरी फ्रांसीसी टुकड़ी को बंदी बना लिया था। लेकिन हम उसके रंग के कारण जयकारे लगा रहे थे, न कि उसके कारनामों के कारण।
मोरक्को से, मैं सहारा रेगिस्तान पार करते हुए माली की राजधानी बामाको पहुँचा और फिर वहाँ से गिनी के लिए रवाना हुआ। माली से गिनी की उड़ान हवाई जहाज की बजाय एक स्थानीय बस जैसी थी। गलियारों में मुर्गियाँ घूम रही थीं; महिलाएँ अपने सिर पर सामान रखकर इधर-उधर घूम रही थीं और मूंगफली और सूखी सब्जियाँ बेच रही थीं। यह लोकतांत्रिक शैली की उड़ान थी और मुझे यह बहुत पसंद आई।
मेरी अगली मंज़िल सिएरा लियोन थी, और जब मैं वहाँ पहुँचा, तो मुझे पता चला कि संसद का सत्र चल रहा है और मैंने कार्यवाही में शामिल होने का फैसला किया। मैं एक आम पर्यटक की तरह अंदर गया और मुझे स्पीकर से कुछ ही दूरी पर एक सीट दी गई। सदन के क्लर्क मेरे पास आए और मुझसे अपनी पहचान बताने को कहा। मैंने धीरे से उनसे कहा, "मैं दक्षिण अफ्रीका के चीफ लुथुली का प्रतिनिधि हूँ।" उन्होंने गर्मजोशी से मेरा हाथ मिलाया और स्पीकर को रिपोर्ट देने चले गए। क्लर्क ने फिर समझाया कि मुझे अनजाने में एक ऐसी सीट दे दी गई थी जो आम तौर पर पर्यटकों को नहीं दी जाती, लेकिन इस मामले में यह उनके लिए सम्मान की बात थी कि उन्होंने अपवाद बनाया।
एक घंटे के भीतर ही कार्यवाही स्थगित हो गई, और जब मैं सदस्यों और गणमान्य व्यक्तियों के बीच चाय पी रहा था, तो मेरे सामने एक कतार लग गई और मैंने आश्चर्य से देखा कि पूरी संसद मुझसे हाथ मिलाने के लिए कतार में खड़ी थी। मैं बहुत प्रसन्न हुआ, लेकिन तभी कतार में तीसरे या चौथे व्यक्ति ने कुछ बुदबुदाते हुए कहा, "नोबेल शांति पुरस्कार विजेता आदरणीय चीफ लुथुली से हाथ मिलाना मेरे लिए बहुत सम्मान की बात है।" मैं तो ढोंगी निकला! क्लर्क को गलतफहमी हो गई थी। फिर प्रधानमंत्री सर मिल्टन मार्गाई को मुझसे मिलवाने के लिए लाया गया, और क्लर्क ने मुझे चीफ के रूप में पेश किया। मैंने तुरंत क्लर्क को यह बताने की कोशिश की कि मैं चीफ लुथुली नहीं हूँ, लेकिन वह मेरी बात मानने को तैयार नहीं था, और मैंने आतिथ्य सत्कार के लिए नाटक जारी रखने का फैसला किया। बाद में मैं अध्यक्ष से मिला, उन्हें गलत पहचान का मामला समझाया, और उन्होंने उदारतापूर्वक आर्थिक सहायता की पेशकश की।

लाइबेरिया में मेरी मुलाकात राष्ट्रपति टबमैन से हुई, जिन्होंने न केवल मुझे हथियार और प्रशिक्षण के लिए पाँच हज़ार डॉलर दिए, बल्कि शांत स्वर में पूछा, "क्या आपके पास जेब खर्च के लिए पैसे हैं?" मैंने स्वीकार किया कि मेरे पास थोड़े पैसे कम हैं, और तुरंत ही एक सहायक चार सौ डॉलर नकद से भरा एक लिफाफा लेकर वापस आया। लाइबेरिया से मैं घाना गया, जहाँ मेरी मुलाकात ओलिवर से हुई और गिनी के निवासी मंत्री अब्दौले डियालो ने हमारा स्वागत किया। जब मैंने उन्हें बताया कि गिनी में रहते हुए मेरी मुलाकात सेकोउ टूरे से नहीं हुई थी, तो उन्होंने तुरंत उस शुष्क भूमि पर लौटने की व्यवस्था की। ओलिवर और मैं टूरे से बहुत प्रभावित हुए। वे एक साधारण बंगले में रहते थे और एक पुराना, फीका सूट पहने हुए थे जिसे ड्राई क्लीनर की ज़रूरत थी। हमने उनके सामने अपनी बात रखी, एएनसी और एमके का इतिहास समझाया और एमके के समर्थन के लिए पाँच हज़ार डॉलर मांगे। उन्होंने बहुत ध्यान से सुना और औपचारिक ढंग से जवाब दिया। “गिनी की सरकार और वहां की जनता,” उन्होंने भाषण देते हुए कहा, “दक्षिण अफ्रीका में हमारे भाइयों के संघर्ष का पूरी तरह से समर्थन करती है, और हमने संयुक्त राष्ट्र में भी इस संबंध में बयान दिए हैं।” वे किताबों की अलमारी के पास गए और वहां से अपनी दो किताबें निकालीं, जिन पर उन्होंने ओलिवर और मेरे लिए हस्ताक्षर किए। फिर उन्होंने धन्यवाद कहा और हमें जाने की अनुमति मिल गई।
ओलिवर और मैं नाराज़ थे: हमें दूसरे देश से वापस बुलाया गया था, और उन्होंने हमें अपनी किताब की हस्ताक्षरित प्रतियाँ ही दीं? हमारा समय व्यर्थ गया। कुछ देर बाद, हम अपने होटल के कमरे में थे, तभी विदेश मामलों के विभाग के एक अधिकारी ने हमारे दरवाजे पर दस्तक दी और हमें एक सूटकेस दिया। हमने उसे खोला तो वह नोटों से भरा हुआ था; ओलिवर और मैंने खुशी से एक-दूसरे को देखा। लेकिन फिर ओलिवर का चेहरा बदल गया। "नेल्सन, यह गिनी की मुद्रा है," उसने कहा। "यहाँ के बाहर इसकी कोई कीमत नहीं है; यह सिर्फ कागज है।" लेकिन ओलिवर के पास एक उपाय था: हम पैसे लेकर चेक दूतावास गए, जहाँ उसका एक दोस्त था जिसने इसे परिवर्तनीय मुद्रा में बदल दिया।

डकार बंदरगाह में प्रवेश करती पतली-पतली मछली पकड़ने वाली नावों की सुंदरता का मुकाबला केवल बहते हुए वस्त्रों और सिर पर पगड़ी बांधे शहर में घूमती सेनेगल की महिलाओं की भव्यता से ही किया जा सकता था। मैं पास के बाज़ार में घूमता रहा, विदेशी मसालों और इत्रों की खुशबू से मंत्रमुग्ध हो गया। सेनेगल के लोग बेहद खूबसूरत हैं और ओलिवर और मैंने उनके देश में जो थोड़ा समय बिताया, उसका मैंने भरपूर आनंद लिया। उनके समाज ने दिखाया कि कैसे भिन्न-भिन्न तत्व - फ्रांसीसी, इस्लामी और अफ्रीकी - मिलकर एक अनूठी और विशिष्ट संस्कृति का निर्माण कर सकते हैं।
राष्ट्रपति लियोपोल्ड सेन्गोर से मुलाकात के लिए जाते समय, ओलिवर को अस्थमा का गंभीर दौरा पड़ा। उन्होंने होटल लौटने से इनकार कर दिया, और मैं उन्हें अपनी पीठ पर उठाकर सीढ़ियों से राष्ट्रपति कार्यालय तक ले गया। सेन्गोर ओलिवर की हालत को लेकर बहुत चिंतित थे और उन्होंने जोर देकर कहा कि उनका निजी चिकित्सक ही उनकी जांच करे।
मुझे सेन्घोर से सावधान रहने को कहा गया था, क्योंकि ऐसी खबरें थीं कि सेनेगल के सैनिक अल्जीरिया में फ्रांसीसियों के साथ काम कर रहे थे, और राष्ट्रपति सेन्घोर पुराने शासन की रीति-रिवाजों और आकर्षणों से कुछ ज़्यादा ही प्रभावित थे। उभरते हुए राष्ट्रों में उपनिवेशवादियों के तौर-तरीकों के प्रति हमेशा एक अटूट आकर्षण रहता है - मैं स्वयं भी इससे अछूता नहीं था। राष्ट्रपति सेन्घोर एक विद्वान और कवि थे, और उन्होंने हमें बताया कि वे शाका पर शोध सामग्री एकत्र कर रहे हैं, और उस महान दक्षिण अफ्रीकी योद्धा के बारे में कई सवाल पूछकर हमारी प्रशंसा की। हमने दक्षिण अफ्रीका की स्थिति का सारांश बताया और सैन्य प्रशिक्षण और धन के लिए अपना अनुरोध किया। सेन्घोर ने जवाब दिया कि संसद की बैठक होने तक वे कुछ नहीं कर सकते।
इसी बीच, वह चाहते थे कि हम न्याय मंत्री श्री डबौसियर से सैन्य प्रशिक्षण के बारे में बात करें, और राष्ट्रपति ने मुझे एक खूबसूरत गोरी फ्रांसीसी लड़की से मिलवाया, जिसके बारे में उन्होंने बताया कि वह मेरी उनसे मुलाकात में मेरे लिए अनुवादक का काम करेगी। मैंने कुछ नहीं कहा, लेकिन मैं परेशान था। मुझे एक ऐसी युवती के सामने सैन्य प्रशिक्षण जैसे बेहद संवेदनशील मुद्दों पर चर्चा करने में असहजता महसूस हो रही थी जिसे मैं नहीं जानता था और जिस पर मुझे पूरा भरोसा नहीं था। सेन्गोर ने मेरी बेचैनी भांप ली, और

उन्होंने कहा, "मंडेला, चिंता मत करो, यहाँ के फ्रांसीसी लोग हमारी अफ्रीकी आकांक्षाओं के साथ पूरी तरह से जुड़े हुए हैं।"
जब हम मंत्री के कार्यालय पहुँचे, तो हमें स्वागत कक्ष में कुछ अफ्रीकी सचिव मिले। एक अश्वेत सचिव ने फ्रांसीसी महिला से पूछा कि वह यहाँ क्या कर रही है। उसने बताया कि उसे राष्ट्रपति ने अनुवादक के रूप में भेजा है। इस पर बहस छिड़ गई और इसी बीच एक अफ्रीकी सचिव ने मेरी ओर मुड़कर कहा, "महोदय, क्या आप अंग्रेजी बोल सकते हैं?" मैंने कहा कि मैं बोल सकता हूँ, और उसने जवाब दिया, "मंत्री जी अंग्रेजी बोलते हैं और आप उनसे सीधे बात कर सकते हैं। आपको अनुवादक की आवश्यकता नहीं है।" फ्रांसीसी लड़की, जो अब काफी नाराज़ थी, एक तरफ खड़ी हो गई और मैं मंत्री जी से बात करने के लिए अंदर चला गया, जिन्होंने हमारी मांगों को पूरा करने का वादा किया। अंत में, हालांकि सेन्घोर ने तब हमें वह नहीं दिया जो हमने माँगा था, उन्होंने मुझे एक राजनयिक पासपोर्ट दिया और डकार से हमारे अगले गंतव्य: लंदन तक के हवाई जहाज के किराए का भुगतान किया।

48

मैं स्वीकार करता हूँ कि मैं कुछ हद तक अंग्रेज़ों का प्रशंसक हूँ। जब मैं पश्चिमी लोकतंत्र और स्वतंत्रता के बारे में सोचता था, तो मेरे मन में ब्रिटिश संसदीय प्रणाली का ख्याल आता था। कई मायनों में, मेरे लिए आदर्श सज्जन व्यक्ति एक अंग्रेज ही था। हालाँकि ब्रिटेन संसदीय लोकतंत्र का जन्मस्थान है, लेकिन इसी लोकतंत्र ने मेरे लोगों पर अन्याय की एक घातक व्यवस्था थोपने में मदद की थी। हालाँकि मैं ब्रिटिश साम्राज्यवाद की धारणा से घृणा करता था, लेकिन मैंने ब्रिटिश शैली और शिष्टाचार को कभी अस्वीकार नहीं किया।
इंग्लैंड जाने की मेरी इच्छा के कई कारण थे, जिनमें से एक यह भी था कि मैं उस देश को देखना चाहता था जिसके बारे में मैंने लंबे समय से पढ़ा और सुना था। मुझे ओलिवर के स्वास्थ्य की चिंता थी और मैं उन्हें इलाज कराने के लिए मनाना चाहता था। मैं उनकी पत्नी एडिलेड और उनके बच्चों से मिलना चाहता था, साथ ही यूसुफ दादू से भी, जो अब वहीं रह रहे थे और कांग्रेस आंदोलन का प्रतिनिधित्व कर रहे थे। मुझे यह भी पता था कि लंदन में मुझे गुरिल्ला युद्ध पर वह साहित्य मिल जाएगा जो मुझे कहीं और नहीं मिल पाया था।
लंदन में मैंने अपने पुराने भूमिगत जीवन में वापसी कर ली, क्योंकि मैं नहीं चाहता था कि दक्षिण अफ्रीका को पता चले कि मैं वहाँ हूँ। दक्षिण अफ़्रीकी सुरक्षा बलों का जाल लंदन तक फैला हुआ था। लेकिन मैं एकांतवासी नहीं था; वहाँ मेरे दस दिन एएनसी के काम, पुराने दोस्तों से मिलने और कभी- कभार एक आम पर्यटक की तरह घूमने-फिरने में बँटे हुए थे। प्रिटोरिया में जन्मी मेरी एक मित्र मैरी बेन्सन, जिन्होंने हमारे संघर्ष के बारे में लिखा था, के साथ ओलिवर और मैंने उस शहर के दर्शनीय स्थलों को देखा, जिसने कभी दुनिया के लगभग दो-तिहाई हिस्से पर राज किया था: वेस्टमिंस्टर एब्बे, बिग बेन, संसद भवन। इन इमारतों की सुंदरता से मैं मंत्रमुग्ध था, लेकिन इनके महत्व को लेकर मेरे मन में दुविधा थी। जब हमने वेस्टमिंस्टर एब्बे के पास जनरल स्मट्स की मूर्ति देखी, तो ओलिवर और मैंने मज़ाक में कहा कि शायद किसी दिन इसकी जगह हमारी मूर्ति हो।

बयान जारी करते थे। इसे बदलना होगा। यूसुफ इससे नाखुश था। "नीति का क्या?" वह बार-बार पूछता रहा। मैंने उसे बताया कि मैं नीति की बात नहीं कर रहा था, मैं छवि की बात कर रहा था। हम अभी भी साथ मिलकर काम करेंगे, बस एएनसी को समानों में अग्रणी के रूप में दिखना होगा।

लंदन में अपने दोस्तों को छोड़कर जाने का मुझे दुख तो था, लेकिन अब मैं अपनी यात्रा के सबसे अपरिचित हिस्से की ओर बढ़ रहा था: सैन्य प्रशिक्षण। मैंने अदीस अबाबा में छह महीने के प्रशिक्षण की व्यवस्था की थी। वहाँ विदेश मंत्री येफू ने मेरा स्वागत किया और मुझे कोल्फे नामक एक उपनगर में ले गए, जो इथियोपियाई दंगा बटालियन का मुख्यालय था। वहाँ मुझे सैनिक बनने की कला और विज्ञान सीखना था। हालाँकि मैं एक अच्छा शौकिया मुक्केबाज था, लेकिन मुझे युद्ध कला की बुनियादी बातों का भी बहुत कम ज्ञान था। मेरे प्रशिक्षक लेफ्टिनेंट वोंडोनी बेफिकडू थे, जो एक अनुभवी सैनिक थे और इटालियंस के खिलाफ भूमिगत आंदोलन में लड़ चुके थे। हमारा कार्यक्रम बहुत कठिन था: हम सुबह 8 बजे से दोपहर 1 बजे तक प्रशिक्षण लेते, फिर स्नान और दोपहर के भोजन के लिए आराम करते, और फिर दोपहर 2 बजे से शाम 4 बजे तक प्रशिक्षण जारी रखते। शाम 4 बजे से लेकर रात तक, कर्नल तादेसे मुझे सैन्य विज्ञान पर व्याख्यान देते थे, जो पुलिस के सहायक आयुक्त भी थे और सम्राट के खिलाफ हाल ही में हुए तख्तापलट के प्रयास को विफल करने में उनकी महत्वपूर्ण भूमिका थी।
मैंने स्वचालित राइफल और पिस्तौल चलाना सीखा और कोल्फ़े में सम्राट के रक्षक दल के साथ तथा लगभग पचास मील दूर एक शूटिंग रेंज में पूरी बटालियन के साथ निशानेबाजी का अभ्यास किया। मुझे विध्वंस और मोर्टार दागने की शिक्षा दी गई और मैंने छोटे बम और बारूदी सुरंगें बनाना और उनसे बचना सीखा। मैंने खुद को एक सैनिक के रूप में ढलते हुए महसूस किया और एक सैनिक की तरह सोचना शुरू किया - जो एक राजनेता के सोचने के तरीके से बिलकुल अलग था।
मुझे सबसे ज़्यादा मज़ा उन कठिन पैदल यात्राओं में आया जिनमें आपके पास सिर्फ़ एक बंदूक, गोलियाँ और थोड़ा पानी होता था और आपको एक निश्चित समय में किसी दूर के स्थान तक पहुँचना होता था। इन यात्राओं के दौरान मुझे वहाँ के नज़ारों का बहुत अच्छा अनुभव हुआ, जो घने जंगलों और विरल पहाड़ी

इलाकों से भरपूर थे। देश बेहद पिछड़ा हुआ था: लोग लकड़ी के हल चलाते थे और घर में बनी बीयर के साथ सादा भोजन करते थे। उनका जीवन दक्षिण अफ्रीका के ग्रामीण इलाकों के जीवन जैसा ही था; हर जगह गरीब लोग एक-दूसरे से ज़्यादा मिलते-जुलते हैं, बजाय इसके कि वे अलग हों।
मेरे अध्ययन सत्रों में, कर्नल तादेसे ने गुरिल्ला सेना बनाने, सेना का नेतृत्व करने और अनुशासन लागू करने जैसे विषयों पर चर्चा की। एक शाम, भोजन के दौरान, कर्नल तादेसे ने मुझसे कहा, “मंडेला, आप एक मुक्ति सेना बना रहे हैं, कोई पारंपरिक पूंजीवादी सेना नहीं। मुक्ति सेना एक समतावादी सेना होती है। आपको अपने सैनिकों के साथ पूंजीवादी सेना से बिल्कुल अलग व्यवहार करना होगा। जब आप ड्यूटी पर हों, तो आपको अपने अधिकार का प्रयोग आत्मविश्वास और नियंत्रण के साथ करना होगा। यह पूंजीवादी कमान से अलग नहीं है। लेकिन जब आप ड्यूटी पर न हों, तो आपको सबसे निचले स्तर के सैनिक के साथ भी पूर्ण समानता के आधार पर व्यवहार करना होगा। आपको वही खाना होगा जो वे खाते हैं; आपको अपना भोजन अपने कार्यालय में नहीं करना चाहिए, बल्कि उनके साथ खाना-पीना चाहिए, खुद को अलग-थलग नहीं करना चाहिए।”
यह सब प्रशंसनीय और तर्कसंगत लग रहा था, लेकिन जब वह मुझसे बात कर रहे थे, तभी एक सार्जेंट हॉल में आया और कर्नल से पूछा कि वह एक लेफ्टिनेंट को कहाँ पा सकता है। कर्नल ने उसे बड़ी घृणा से देखा और कहा, “क्या तुम्हें नहीं दिख रहा कि मैं यहाँ एक महत्वपूर्ण व्यक्ति से बात कर रहा हूँ? क्या तुम्हें नहीं पता कि जब मैं खाना खा रहा हूँ तो मुझे परेशान नहीं करना चाहिए? अब, मेरी नज़रों से दूर हो जाओ!” फिर उन्होंने पहले की तरह ही उपदेशात्मक लहजे में अपनी बात जारी रखी।
प्रशिक्षण पाठ्यक्रम छह महीने का होना था, लेकिन आठ सप्ताह बाद मुझे एएनसी से एक टेलीग्राम मिला जिसमें मुझसे तत्काल घर लौटने का अनुरोध किया गया था। आंतरिक सशस्त्र संघर्ष बढ़ रहा था और वे एमके के कमांडर को मौके पर चाहते थे।
कर्नल तादेसे ने तुरंत मेरे लिए इथियोपियाई विमान से खार्तूम जाने का इंतज़ाम किया। रवाना होने से पहले उन्होंने मुझे एक उपहार दिया: एक स्वचालित पिस्तौल और दो सौ गोलियां। मैं पिस्तौल और उनके निर्देशों दोनों के लिए उनका आभारी था। थकान भरी पैदल यात्राओं के बावजूद, मुझे इतनी सारी

राष्ट्रपति न्येरेरे ने मुझे म्बेया के लिए एक निजी विमान दिया, और फिर मैं सीधे लोबत्से के लिए उड़ान भरी। पायलट ने मुझे बताया कि हम कान्ये में उतरेंगे। इससे मैं चिंतित हो गया: योजना क्यों बदली गई? कान्ये में, मेरी मुलाकात स्थानीय मजिस्ट्रेट और एक सुरक्षाकर्मी से हुई, दोनों ही श्वेत थे। मजिस्ट्रेट मेरे पास आए और मेरा नाम पूछा। मैंने जवाब दिया, डेविड मोत्समायी। उन्होंने कहा, नहीं, कृपया मुझे अपना असली नाम बताएं। मैंने फिर से डेविड मोत्समायी कहा। मजिस्ट्रेट ने कहा, “कृपया मुझे अपना असली नाम बताएं क्योंकि मुझे श्री मंडेला से यहां मिलने और उनकी मदद और परिवहन प्रदान करने के निर्देश दिए गए थे। यदि आप श्री नेल्सन मंडेला नहीं हैं, तो मुझे डर है कि मुझे आपको गिरफ्तार करना पड़ेगा क्योंकि आपके पास देश में प्रवेश करने का परमिट नहीं है। क्या आप नेल्सन मंडेला हैं?”
यह एक दुविधा थी; दोनों ही स्थितियों में मेरी गिरफ्तारी हो सकती थी। मैंने कहा, "अगर आप इस बात पर अड़े हैं कि मैं नेल्सन मंडेला हूँ, डेविड मोत्सामयी नहीं, तो मैं आपको चुनौती नहीं दूँगा।" वह मुस्कुराए और सरल शब्दों में बोले, "हमें कल ही आपका इंतज़ार था।" फिर उन्होंने मुझे वहाँ तक लिफ्ट देने की पेशकश की जहाँ मेरे साथी मेरा इंतज़ार कर रहे होंगे। हम लोबत्से गए, जहाँ मेरी मुलाकात जो मोडिसे और जोनास मैटलू नाम के एक एएनसी समर्थक से हुई, जो उस समय वहीं रह रहे थे। मजिस्ट्रेट ने मुझे बताया कि दक्षिण अफ़्रीकी पुलिस को मेरे लौटने की जानकारी है, और उन्होंने सुझाव दिया कि मैं कल निकल जाऊँ। मैंने उनकी मदद और सलाह के लिए उन्हें धन्यवाद दिया, लेकिन जब मैं मैटलू के घर पहुँचा, तो मैंने कहा कि मैं आज रात ही निकल जाऊँगा। मुझे एमके के सदस्य और श्वेत थिएटर निर्देशक सेसिल विलियम्स के साथ दक्षिण अफ़्रीका वापस जाना था। उनके ड्राइवर बनकर, मैं गाड़ी में बैठ गया और हम उसी रात जोहान्सबर्ग के लिए रवाना हो गए।

भाग सात

रिवोनिया

49

सीमा पार करने के बाद मैंने गहरी साँस ली। घर से दूर रहने के बाद घर की हवा हमेशा मीठी लगती है। यह एक साफ़ सर्द रात थी और पता नहीं क्यों, महाद्वीप के अन्य हिस्सों की तुलना में यहाँ तारे भी ज़्यादा स्वागतयोग्य लग रहे थे। हालाँकि मैं उस दुनिया को छोड़कर जा रहा था जहाँ मैंने पहली बार आज़ादी का अनुभव किया था और उस दुनिया में लौट रहा था जहाँ मैं एक भगोड़ा था, फिर भी अपनी जन्मभूमि और नियति की भूमि पर वापस आकर मुझे गहरी राहत मिली।
बेचुआनालैंड और उत्तर-पश्चिमी ट्रांसवाल के बीच, दर्जनों बिना निशान वाली सड़कें सीमा को पार करती हैं, और सेसिल को पता था कि कौन सी सड़क लेनी है। ड्राइव के दौरान, उसने मुझे उन कई घटनाओं के बारे में बताया जो मुझसे छूट गई थीं। हमने पूरी रात गाड़ी चलाई, आधी रात के ठीक बाद सीमा पार की और भोर होते ही लिलीज़लीफ फार्म पहुँच गए। मैंने अभी भी अपनी पुरानी खाकी ट्रेनिंग वर्दी पहनी हुई थी।
फार्म पर पहुँचने के बाद मुझे आराम और चिंतन का समय नहीं मिला क्योंकि अगली रात एक गुप्त बैठक हुई जिसमें मुझे कार्य समिति को अपनी यात्रा के बारे में जानकारी देनी थी। वाल्टर, मोसेस कोटाने, गोवन म्बेकी, डैन ट्लोम, जे. बी. मार्क्स और डूमा नोकवे सभी फार्म पर पहुँचे, जो एक दुर्लभ मिलन था। मैंने सबसे पहले अपनी यात्रा का संक्षिप्त विवरण दिया, जिसमें हमें प्राप्त धन और प्रशिक्षण के प्रस्तावों का ब्यौरा शामिल था। साथ ही, मैंने एएनसी के गोरों, भारतीयों, विशेष रूप से कम्युनिस्टों के साथ सहयोग को लेकर मुझे मिली आपत्तियों के बारे में विस्तार से बताया। ज़ाम्बिया के नेताओं के साथ हुई मेरी आखिरी मुलाकात की बातें अभी भी मेरे कानों में गूँज रही थीं, जिन्होंने मुझसे कहा था कि वे जानते हैं कि एएनसी पीएसी से अधिक मजबूत और लोकप्रिय है, लेकिन वे पीएसी के विशुद्ध अफ्रीकी राष्ट्रवाद को समझते हैं, जबकि एएनसी के गैर-नस्लीय रवैये और कम्युनिस्ट संबंधों से वे अचंभित थे। मैंने उन्हें बताया कि ओलिवर और मैं मानते हैं कि एएनसी को महाद्वीप पर अपने नए सहयोगियों को आश्वस्त करने के लिए अधिक स्वतंत्र दिखना होगा, क्योंकि वही लोग उमखोंटो वे सिज़वे को वित्तपोषण और

प्रशिक्षण प्रदान करेंगे। मैंने कांग्रेस गठबंधन को इस प्रकार पुनर्गठित करने का प्रस्ताव रखा कि एएनसी स्पष्ट रूप से नेता के रूप में दिखाई दे, विशेष रूप से उन मुद्दों पर जो सीधे अफ्रीकियों को प्रभावित करते हैं। यह एक गंभीर मामला था और पूरे नेतृत्व से परामर्श करना आवश्यक था। कार्य समिति ने मुझे डरबन जाकर प्रमुख को जानकारी देने के लिए कहा। सभी सहमत थे, सिवाय गोवन म्बेकी के, जो उस समय लिलीज़लीफ फार्म में नहीं रह रहे थे, लेकिन एमके के उच्च कमान के सदस्य के रूप में उपस्थित थे। उन्होंने मुझे किसी और को भेजने का आग्रह किया। उन्होंने कहा कि यह बहुत जोखिम भरा था और संगठन को मेरी सुरक्षा को खतरे में नहीं डालना चाहिए, खासकर तब जब मैं हाल ही में लौटा था और एमके के काम को आगे बढ़ाने के लिए तैयार था। इस समझदारी भरी सलाह को सभी ने, यहाँ तक कि मैंने भी, खारिज कर दिया।

अगली रात मैं रिवोनिया से सेसिल के साथ रवाना हुआ, फिर से उसके ड्राइवर के रूप में। मैंने डरबन में कई गुप्त बैठकें तय की थीं, जिनमें से पहली मोंटी नायकर और इस्माइल मीर के साथ थी, ताकि उन्हें अपनी यात्रा के बारे में जानकारी दे सकूँ और नए प्रस्ताव पर चर्चा कर सकूँ। मोंटी और इस्माइल मुखिया के बेहद करीबी थे और मुखिया उनके विचारों पर भरोसा करते थे। मैं लुथुली को बताना चाहता था कि मैंने उनके दोस्तों से बात की है और उनकी प्रतिक्रिया उनसे साझा करना चाहता था। हालाँकि, इस्माइल और मोंटी मेरी इस धारणा से परेशान थे कि एएनसी को कांग्रेस गठबंधन में नेतृत्व करना चाहिए और अफ्रीकियों को प्रभावित करने वाले मामलों पर अपने दम पर बयान देना चाहिए। वे गठबंधन को तोड़ने वाली किसी भी चीज़ के खिलाफ थे।
मुझे ग्राउटविले ले जाया गया, जहाँ मुखिया रहते थे, और हम शहर में एक भारतीय महिला के घर पर मिले। मैंने मुखिया को विस्तार से स्थिति समझाई, और उन्होंने बिना कुछ बोले सुना। जब मेरी बात समाप्त हुई, तो उन्होंने कहा कि उन्हें विदेशी राजनेताओं द्वारा एएनसी को नीति निर्देश देने का विचार पसंद नहीं है। उन्होंने कहा कि हमने गैर-नस्लवाद की नीति अच्छे कारणों से विकसित की है और उन्हें नहीं लगता कि हमें अपनी नीति को केवल इसलिए बदलना चाहिए क्योंकि यह कुछ विदेशी नेताओं को पसंद नहीं है।

मैंने प्रमुख से कहा कि ये विदेशी राजनेता हमारी नीति तय नहीं कर रहे हैं, बल्कि वे केवल यह कह रहे हैं कि वे इसे समझ नहीं पा रहे हैं। मैंने उनसे कहा कि मेरी योजना केवल दिखावटी बदलाव करने की है ताकि एएनसी हमारे सहयोगियों के लिए अधिक समझने योग्य और स्वीकार्य बन सके। मैं इसे एक रक्षात्मक रणनीति के रूप में देखता था, क्योंकि यदि अफ्रीकी राज्य पीएसी का समर्थन करने का निर्णय लेते हैं, तो एक छोटा और कमजोर संगठन अचानक एक बड़ा और शक्तिशाली संगठन बन सकता है।
प्रमुख ने जल्दबाजी में फैसले नहीं लिए। मैं समझ गया था कि वे मेरी कही बातों पर विचार करना चाहते थे और अपने कुछ मित्रों से इस बारे में बात करना चाहते थे। मैंने उनसे विदा ली और उन्होंने मुझे सावधान रहने की सलाह दी। उस शाम शहर और कस्बों में मेरी कई गुप्त बैठकें थीं। उस शाम मेरी आखिरी बैठक डरबन में एमके क्षेत्रीय कमान के साथ थी।
डरबन कमांड का नेतृत्व ब्रूनो मटोलो नामक एक विध्वंस विशेषज्ञ कर रहे थे, जिनसे मेरी पहले कभी मुलाकात नहीं हुई थी, लेकिन बाद में बिल्कुल अलग परिस्थितियों में उनसे फिर मुलाकात हुई। मैंने उन्हें अफ्रीका की अपनी यात्रा, हमें मिले समर्थन और प्रशिक्षण के प्रस्तावों के बारे में जानकारी दी। मैंने समझाया कि फिलहाल एमके (एमके) का काम केवल विध्वंस तक सीमित है, लेकिन अगर विध्वंस से मनचाहा परिणाम नहीं मिला तो हम संभवतः गुरिल्ला युद्ध की ओर बढ़ेंगे।
उसी शाम, फ़ोटो पत्रकार जी. आर. नायडू के घर पर, जहाँ मैं ठहरा हुआ था, इस्माइल और फ़ातिमा मीर, मोंटी नायकर और जे. एन. सिंह भी वहाँ मौजूद थे। यह एक तरह से मेरा स्वागत और विदाई समारोह था, क्योंकि मुझे अगले दिन जोहान्सबर्ग के लिए रवाना होना था। वह एक खुशनुमा शाम थी और लंबे समय बाद मुझे पहली बार सुकून मिला। मैं अच्छी तरह सोया और रविवार दोपहर - 5 अगस्त - को सेसिल से मिला और उनकी भरोसेमंद ऑस्टिन कार में बैठकर जोहान्सबर्ग के लिए लंबी यात्रा पर निकल पड़ा।
मैंने अपने ड्राइवर का सफ़ेद कोट पहना और सेसिल के बगल में बैठ गया, जब वह गाड़ी चला रहा था। हम अक्सर बारी-बारी से एक-दूसरे की जगह गाड़ी चलाते थे। मौसम साफ़ और सुहावना था और मैं नेटाल के ग्रामीण इलाकों की सुंदरता में खो गया; सर्दियों में भी नेटाल हरा-भरा रहता है। अब जब मैं जोहान्सबर्ग लौट रहा था, तो मुझे विनी और बच्चों से मिलने का समय मिल जाएगा। मेरी अक्सर

इच्छा होती थी कि विनी मुझे अफ्रीका के अजूबों के बारे में बताए, लेकिन मैं बस उसे वही बता सकता था जो मैंने देखा और किया था।
डरबन के औद्योगिक क्षेत्र से निकलते ही हम पहाड़ियों से गुज़रे, जहाँ से आसपास की घाटियों और हिंद महासागर के नीले-काले पानी का मनमोहक दृश्य दिखाई देता था। डरबन देश के मुख्य औद्योगिक क्षेत्र का प्रमुख बंदरगाह है, और जोहान्सबर्ग जाने वाला राजमार्ग काफी दूर तक रेलवे लाइन के समानांतर चलता है। मैं प्राकृतिक सुंदरता का आनंद लेते-लेते इस बात पर सोचने लगा कि रेलवे लाइन राजमार्ग के इतने करीब होने के कारण तोड़फोड़ के लिए एक सुविधाजनक जगह हो सकती है। मैंने इस बात को अपनी छोटी नोटबुक में लिख लिया, जिसे मैं हमेशा अपने साथ रखता था।
पीटरमैरिट्जबर्ग से बीस मील उत्तर-पश्चिम में स्थित हॉविक से गुज़रते हुए, सेसिल और मैं तोड़फोड़ की योजनाओं पर चर्चा में मग्न थे। हॉविक से कुछ आगे स्थित एक छोटे से कस्बे सेडारा में, मैंने देखा कि सफेद पुरुषों से भरी एक फोर्ड वी-8 कार दाईं ओर से तेज़ी से हमारे पास से गुज़री। मैंने सहज ही पीछे मुड़कर देखा और मुझे सफेद पुरुषों से भरी दो और कारें दिखाई दीं। अचानक, हमारे सामने, फोर्ड कार हमें रुकने का इशारा कर रही थी। उसी क्षण मुझे एहसास हुआ कि भाग-दौड़ भरी मेरी ज़िंदगी खत्म हो गई है; सत्रह महीनों की मेरी "आज़ादी" का अंत होने वाला था।
जैसे ही सेसिल ने गाड़ी धीमी की, वह मेरी ओर मुड़ा और बोला, "ये लोग कौन हैं?" मैंने कोई जवाब नहीं दिया क्योंकि हम दोनों अच्छी तरह जानते थे कि वे कौन थे। उन्होंने छिपने की जगह अच्छी तरह चुनी थी; हमारे बाईं ओर एक खड़ी ढलान थी जहाँ घने जंगल थे और अगर हमने उनसे बचने की कोशिश की होती तो वे हमें वहाँ धकेल सकते थे। मैं बाईं ओर की यात्री सीट पर बैठा था, और एक पल के लिए मैंने गाड़ी से कूदकर जंगल में भागने के बारे में सोचा, लेकिन कुछ ही सेकंड में मुझे गोली मार दी जाती।
जब हमारी कार रुकी, तो चेहरे पर गंभीर भाव लिए एक लंबा, दुबला-पतला आदमी सीधे यात्री की तरफ वाली खिड़की के पास आया। उसकी दाढ़ी बढ़ी हुई थी और ऐसा लग रहा था कि वह काफी समय से सोया नहीं था। मैंने तुरंत समझ लिया कि वह कई दिनों से हमारा इंतज़ार कर रहा था। शांत स्वर में उसने अपना परिचय पीटरमैरिट्जबर्ग पुलिस के सार्जेंट वॉर्स्टर के रूप में दिया और एक गिरफ्तारी वारंट दिखाया। उसने मुझसे अपनी पहचान बताने को कहा। मैंने उसे

बताया कि मेरा नाम डेविड मोत्समायी है। उसने सिर हिलाया और फिर, बहुत ही सलीके से, मुझसे कुछ सवाल पूछे कि मैं कहाँ था और कहाँ जा रहा था। मैंने उसे ज़्यादा जानकारी दिए बिना ही इन सवालों का जवाब देने से बचता रहा। वह थोड़ा चिढ़ गया और फिर बोला, "अरे, आप नेल्सन मंडेला हैं, और यह सेसिल विलियम्स है, और आप गिरफ्तार हैं!"
उन्होंने हमें बताया कि दूसरी गाड़ी का एक पुलिस मेजर हमें पीटरमैरिट्जबर्ग वापस ले जाएगा। उन दिनों पुलिस इतनी सतर्क नहीं थी, और सार्जेंट वॉर्स्टर ने मेरी तलाशी नहीं ली। मेरे पास मेरी भरी हुई रिवॉल्वर थी, और मैंने फिर से भागने का सोचा, लेकिन तब मैं संख्या में बहुत कम होता। मैंने चुपके से रिवॉल्वर और अपनी नोटबुक को अपनी सीट और सेसिल की सीट के बीच की गद्दी में रख दिया। किसी कारणवश, पुलिस को न तो बंदूक मिली और न ही छोटी नोटबुक, जो सौभाग्य की बात थी, क्योंकि अगर मिल जाती तो और भी कई लोग गिरफ्तार हो जाते।
पुलिस स्टेशन में मुझे सार्जेंट वॉर्स्टर के दफ्तर में ले जाया गया, जहाँ मैंने कई अधिकारियों को देखा, जिनमें से एक वारंट ऑफिसर ट्रुटर थे, जिन्होंने राजद्रोह के मुकदमे में गवाही दी थी। ट्रुटर ने आरोपी पर अच्छा प्रभाव डाला था क्योंकि उन्होंने एएनसी की नीति को सटीक रूप से समझाया था और कोई अतिशयोक्ति या झूठ नहीं बोला था। हमने एक-दूसरे का दोस्ताना अंदाज में अभिवादन किया।
मैंने डेविड मोत्समयी नाम के अलावा और कुछ भी स्वीकार नहीं किया था, और ट्रुटर ने मुझसे कहा, “नेल्सन, तुम यह नाटक क्यों कर रहे हो? तुम जानते हो कि मैं तुम्हें जानता हूँ। हम सब जानते हैं कि तुम कौन हो।” मैंने उसे बस इतना कहा कि मैंने एक नाम बताया है और मैं उसी नाम पर कायम हूँ। मैंने वकील की मांग की, लेकिन मुझे साफ मना कर दिया गया। फिर मैंने बयान देने से इनकार कर दिया।
सेसिल और मुझे अलग-अलग कोठरियों में बंद कर दिया गया था। अब मेरे पास अपनी स्थिति पर विचार करने का समय था। मुझे हमेशा से पता था कि गिरफ़्तारी हो सकती है, लेकिन स्वतंत्रता सेनानी भी सच्चाई को नकारने का अभ्यास करते हैं, और उस रात अपनी कोठरी में मुझे एहसास हुआ कि मैं गिरफ़्तारी और कैद की वास्तविकता के लिए तैयार नहीं था। मैं परेशान और बेचैन था। किसी ने पुलिस को मेरे ठिकाने के बारे में सूचना दे दी थी; उन्हें पता था कि मैं डरबन में

हूँ और जोहान्सबर्ग लौट रहा हूँ। मेरे लौटने से हफ़्तों पहले तक पुलिस को लगता रहा कि मैं देश में वापस आ चुका हूँ। जून में, जब मैं अभी भी अदीस अबाबा में था, अखबारों की सुर्खियों में "ब्लैक पिम्परनेल की वापसी" की खबर छाई हुई थी। शायद यह एक धोखा था?
अधिकारियों को लगता था कि विनी को पता होगा कि मैं वापस आया हूँ या नहीं, इसलिए वे उसे परेशान कर रहे थे। मुझे पता था कि उन्होंने विनी का पीछा किया था और कई बार उसके घर की तलाशी ली थी। मेरा अनुमान था कि उन्होंने सोचा होगा कि मैं वापस आते ही सीधे चीफ लुथुली से मिलूंगा, और उनका अनुमान सही था। लेकिन मुझे यह भी शक था कि उन्हें यह जानकारी थी कि मैं उस समय डरबन में था। आंदोलन में मुखबिर घुसपैठ कर चुके थे, और भले ही नेक इरादे वाले लोग हों, वे भी आम तौर पर उतने चुप नहीं रहते थे जितना उन्हें रहना चाहिए था। मैं भी लापरवाह हो गया था। बहुत से लोगों को पता चल गया था कि मैं डरबन में हूँ। मैंने तो जाने से एक रात पहले पार्टी भी की थी, और मैंने अपनी लापरवाही के लिए खुद को खूब खरी-खोटी सुनाई। मेरा दिमाग तरह-तरह के सवालों से भरा हुआ था। क्या डरबन में कोई मुखबिर था? जोहान्सबर्ग से कोई? आंदोलन से कोई? या फिर कोई दोस्त या परिवार का सदस्य? लेकिन अज्ञात लोगों के बारे में इस तरह की अटकलें लगाना व्यर्थ है, और मानसिक और शारीरिक थकावट के कारण मैं जल्द ही गहरी नींद में सो गया। कम से कम इस रात को - 5 अगस्त, 1962 को - मुझे इस बात की चिंता नहीं करनी पड़ी कि पुलिस मुझे ढूंढ पाएगी या नहीं। वे मुझे पहले ही ढूंढ चुके थे।

सुबह उठकर मैंने खुद को तरोताज़ा महसूस किया और आगे आने वाली नई चुनौती के लिए खुद को तैयार किया। मैं किसी भी हालत में अपने अपहरणकर्ताओं के सामने निराश या हताश नहीं दिखना चाहता था। सुबह 8:30 बजे मैं स्थानीय मजिस्ट्रेट के सामने पेश हुआ और मुझे औपचारिक रूप से जोहान्सबर्ग भेज दिया गया। सब कुछ सादे ढंग से हुआ और मजिस्ट्रेट को ऐसा लगा जैसे वह किसी यातायात चालान को ही देख रहे हों। पुलिस ने जोहान्सबर्ग वापस जाने के सफर या मेरी सुरक्षा के लिए कोई खास इंतज़ाम नहीं किए थे और मैं बस एक सेडान कार की पिछली सीट पर बिना हथकड़ी के बैठा था, आगे दो पुलिस अधिकारी बैठे

थे। मेरी गिरफ्तारी की खबर मेरे दोस्तों को मिल गई थी; फातिमा मीर मेरे लिए जेल में कुछ खाना लाईं और मैंने उसे कार में बैठे दोनों अधिकारियों के साथ बाँटा। रास्ते में हम वोल्क्रस्ट कस्बे में रुके और उन्होंने मुझे थोड़ी देर टहलने और पैर फैलाने की इजाज़त दी। जब लोग मेरे प्रति इतने दयालु थे, तब मैंने भागने के बारे में नहीं सोचा; मैं उनके मुझ पर रखे भरोसे का फायदा नहीं उठाना चाहता था।
लेकिन जैसे ही हम जोहान्सबर्ग के पास पहुँचे, माहौल बदल गया। मैंने पुलिस रेडियो पर अपनी गिरफ्तारी की घोषणा सुनी और नेटाल आने-जाने वाले सभी बैरिकेड्स हटाने का आदेश सुना। सूर्यास्त के समय, जोहान्सबर्ग के बाहरी इलाके में, हमें एक बड़ी पुलिस टुकड़ी मिली। मुझे अचानक हथकड़ी पहनाई गई, कार से बाहर निकाला गया और तार की जाली से मजबूत की गई छोटी अपारदर्शी खिड़कियों वाली एक सीलबंद पुलिस वैन में बिठा दिया गया। फिर काफिला मार्शल स्क्वायर की ओर एक घुमावदार और अपरिचित रास्ते से मुड़ा, मानो उन्हें डर था कि हम पर हमला हो सकता है।
मैं एक कोठरी में अकेला बंद था। कोठरी की खामोशी में मैं अगले दिन की रणनीति बना रहा था, तभी मुझे पास की कोठरी से खांसी की आवाज सुनाई दी। मुझे पता नहीं था कि कोई कैदी पास में है, लेकिन उससे भी ज्यादा, उस खांसी में कुछ ऐसा था, जो मुझे अजीब तरह से जाना-पहचाना लगा। अचानक पहचानते ही मैं उठ बैठा और पुकारा, "वाल्टर?"
“नेल्सन, क्या तुम हो?” उसने कहा, और हम राहत, आश्चर्य, निराशा और खुशी के मिले-जुले भावों के साथ हँस पड़े। मुझे पता चला कि वाल्टर को मेरी गिरफ्तारी के कुछ ही समय बाद गिरफ्तार कर लिया गया था। हमें नहीं लगा कि हमारी गिरफ्तारियाँ आपस में जुड़ी हुई नहीं थीं। हालाँकि राष्ट्रीय कार्य समिति की बैठक के लिए यह सबसे उपयुक्त जगह नहीं थी, लेकिन यह सुविधाजनक ज़रूर थी और रात जल्दी ही बीत गई क्योंकि मैंने उसे अपनी गिरफ्तारी और डरबन में हुई अपनी बैठकों के बारे में पूरी जानकारी दी। अगले दिन मैं औपचारिक रिमांड के लिए एक वरिष्ठ मजिस्ट्रेट के सामने अदालत में पेश हुआ। हेरोल्ड वोल्पे और जो स्लोवो मेरी गिरफ्तारी की खबर सुनकर अदालत आए थे और हमने तहखाने में बातचीत की। मैं अपने पेशेवर हैसियत से कई बार इस मजिस्ट्रेट के सामने पेश हो चुका था और हम एक-दूसरे का सम्मान करने लगे थे। कई वकील भी मौजूद थे, जिनमें से कुछ को मैं अच्छी तरह जानता था। यह

अजीब बात है कि कुछ खास परिस्थितियों में मामूली घटनाओं से भी इंसान आसानी से प्रभावित हो जाता है। मैं आम तौर पर भी प्रशंसा से अप्रभावित नहीं रहता, लेकिन वहां मैं एक भगोड़ा था, राज्य की सबसे वांछित अपराधियों की सूची में पहले नंबर पर, एक हथकड़ी पहना हुआ अपराधी जो एक साल से अधिक समय से भूमिगत था, और फिर भी न्यायाधीश, अन्य वकील और दर्शक सभी ने मेरा सम्मानपूर्वक और पेशेवर शिष्टाचार से स्वागत किया। वे मुझे नेल्सन मंडेला के वकील के रूप में जानते थे, न कि नेल्सन मंडेला के अपराधी के रूप में। इससे मेरा मनोबल बहुत बढ़ गया।
कार्यवाही के दौरान, मजिस्ट्रेट संकोची और असहज थे, और मेरी ओर सीधे नहीं देख रहे थे। अन्य वकील भी शर्मिंदा लग रहे थे, और उसी क्षण मुझे एक अहसास हुआ। ये लोग न केवल इसलिए असहज थे कि मैं उनका एक साथी था जिसे अपमानित किया गया था, बल्कि इसलिए भी कि मैं एक साधारण व्यक्ति था जिसे अपने विश्वासों के लिए दंडित किया जा रहा था। एक ऐसे तरीके से जिसे मैंने पहले कभी पूरी तरह से नहीं समझा था, मुझे अदालत में अपनी भूमिका और एक प्रतिवादी के रूप में अपने सामने मौजूद संभावनाओं का एहसास हुआ। मैं उत्पीड़क की अदालत में न्याय का प्रतीक था, एक ऐसे समाज में स्वतंत्रता, निष्पक्षता और लोकतंत्र के महान आदर्शों का प्रतिनिधि था जो इन गुणों का अपमान करता था। मुझे उसी क्षण यह एहसास हुआ कि मैं दुश्मन के किले के भीतर भी लड़ाई जारी रख सकता हूँ।
जब मुझसे मेरे वकील का नाम पूछा गया, तो मैंने घोषणा की कि मैं अपना केस खुद लड़ूंगा और जो स्लोवो मेरे कानूनी सलाहकार होंगे। खुद अपना केस लड़कर मैं अपनी भूमिका के प्रतीकात्मक महत्व को और बढ़ाऊंगा। मैं अपने मुकदमे को नस्लवाद के प्रति एएनसी के नैतिक विरोध के प्रदर्शन के रूप में इस्तेमाल करूंगा। मैं खुद का बचाव करने की कोशिश नहीं करूंगा, बल्कि राज्य को ही कटघरे में खड़ा करूंगा। उस दिन, मैंने सिर्फ अपने नाम और वकील के चुनाव से संबंधित सवालों के जवाब दिए। मैंने चुपचाप आरोपों को सुना: अफ्रीकी श्रमिकों को हड़ताल के लिए उकसाना और वैध यात्रा दस्तावेजों के बिना देश छोड़ना। रंगभेद वाले दक्षिण अफ्रीका में, इन "अपराधों" के लिए दस साल तक की जेल हो सकती थी। फिर भी, ये आरोप कुछ हद तक राहत देने वाले थे: राज्य के पास मुझे उमखोंटो वे सिज़वे से जोड़ने के लिए पर्याप्त सबूत नहीं

थे, अन्यथा मुझ पर राजद्रोह या तोड़फोड़ जैसे कहीं अधिक गंभीर अपराधों का आरोप लगाया जाता।
अदालत कक्ष से निकलते समय ही मेरी नज़र दर्शक दीर्घा में विनी पर पड़ी। वह व्याकुल और उदास लग रही थी; निस्संदेह वह आने वाले कठिन महीनों और वर्षों के बारे में सोच रही थी, अकेले जीवन बिताने, दो छोटे बच्चों की परवरिश करने और अक्सर कठोर और डरावने शहर में रहने के बारे में। आगे आने वाली संभावित कठिनाइयों के बारे में बताया जाना एक बात है, और वास्तव में उनका सामना करना बिल्कुल अलग बात है। तहखाने की सीढ़ियों से उतरते समय मैं बस इतना ही कर सका कि उसे एक बड़ी सी मुस्कान दी, मानो उसे यह दिखाना चाहता था कि मैं चिंतित नहीं हूँ और उसे भी नहीं होना चाहिए। मुझे नहीं लगता कि इससे उसे कोई खास मदद मिली होगी।
अदालत से मुझे जोहान्सबर्ग किले ले जाया गया। जब मैं सीलबंद वैन में चढ़ने के लिए अदालत से बाहर निकला, तो सैकड़ों लोगों की भीड़ जयकारे लगा रही थी और "अमांदला!" के नारे लगा रही थी, जिसके बाद "न्गावेथु" के नारे लग रहे थे, जो एएनसी का एक लोकप्रिय नारा है जिसका अर्थ है "सत्ता!" और "सत्ता हमारी है!" लोग चिल्ला रहे थे, गा रहे थे और वैन के किनारों पर मुट्ठियाँ पटक रहे थे, जैसे ही वाहन अदालत के निकास द्वार से धीरे-धीरे बाहर निकला। मेरी गिरफ्तारी और मामला हर अखबार की सुर्खियाँ बन गया था: "पुलिस की छापेमारी से दो साल का फरार चल खत्म" एक खबर थी; "नेल्सन मंडेला गिरफ्तार" दूसरी खबर थी। तथाकथित ब्लैक पिम्परनेल अब फरार नहीं था।
कुछ दिनों बाद विनी को मुझसे मिलने की अनुमति मिल गई। वह सज-धज कर आई थी और अब, कम से कम देखने में, पहले से कम उदास लग रही थी। वह मेरे लिए एक नया महंगा पजामा और एक सुंदर रेशमी गाउन लाई, जो जेल की बजाय किसी सैलून के लिए ज़्यादा उपयुक्त था। मेरा उसे यह कहने का मन नहीं हुआ कि जेल में ऐसे कपड़े पहनना मेरे लिए बिलकुल भी उचित नहीं है। हालाँकि, मैं जानती थी कि यह पार्सल उसके प्यार को ज़ाहिर करने और एकजुटता का वादा करने का एक तरीका था। मैंने उसे धन्यवाद दिया, और हालाँकि हमारे पास ज़्यादा समय नहीं था, हमने जल्दी से पारिवारिक मामलों पर चर्चा की, खासकर कि वह अपना और बच्चों का भरण-पोषण कैसे करेगी। मैंने उन दोस्तों के नाम बताए जो उसकी मदद करेंगे और मेरे उन ग्राहकों के भी, जिन पर अभी भी मेरा पैसा बकाया था। मैंने उससे कहा कि वह बच्चों को मेरी गिरफ्तारी की सच्चाई बताए और यह भी कि मैं लंबे

समय तक दूर रहूँगी। मैंने कहा कि हम इस स्थिति में फँसने वाले पहले परिवार नहीं हैं, और जो लोग ऐसी कठिनाइयों से गुज़रते हैं, वे और भी मज़बूत होकर निकलते हैं। मैंने उसे हमारे उद्देश्य की शक्ति, हमारे दोस्तों की वफ़ादारी का आश्वासन दिया, और यह भी कि उसका प्यार और समर्पण ही मुझे हर हाल में सहारा देगा। यात्रा की निगरानी कर रहे अधिकारी ने अनसुना कर दिया, और हम दोनों ने एक-दूसरे को गले लगाया और अपने भीतर दबी भावनाओं और ताकत से एक-दूसरे से लिपट गए, मानो यह हमारी आखिरी विदाई हो। एक तरह से, यह आखिरी ही थी, क्योंकि हम दोनों को उस समय की कल्पना से कहीं अधिक समय तक अलग रहना था। वारंट अधिकारी ने मुझे विनी के साथ मुख्य द्वार तक जाने की अनुमति दी, जहाँ से मैं उसे अकेले और गर्व से कोने में गायब होते हुए देख सका।

50

किले में मेरी निगरानी कर्नल मिन्नार कर रहे थे, जो एक शिष्ट अफ्रीकी थे और अपने कट्टरपंथी साथियों के बीच उदारवादी माने जाते थे। उन्होंने बताया कि मुझे जेल के अस्पताल में इसलिए रखा जा रहा है क्योंकि वह सबसे आरामदायक जगह है और वहाँ मुझे एक कुर्सी-मेज मिलेगी जिस पर मैं अपना पक्ष रख सकूँ। अस्पताल वाकई आरामदायक था - मैं एक अच्छे बिस्तर पर सो सका, जो मैंने जेल में पहले कभी नहीं किया था - लेकिन उनकी उदारता का असली कारण यह था कि अस्पताल मुझे रखने के लिए सबसे सुरक्षित जगह थी। वहाँ पहुँचने के लिए दो अभेद्य दीवारों को पार करना पड़ता था, जिनमें से प्रत्येक पर सशस्त्र गार्ड तैनात थे; और अंदर पहुँचने के बाद, मुझे जिस जगह रखा गया था, वहाँ पहुँचने से पहले चार विशाल द्वार खोलने पड़ते थे। प्रेस में यह अटकलें लगाई जा रही थीं कि आंदोलन मुझे छुड़ाने का प्रयास करेगा, और अधिकारी इसे रोकने के लिए हर संभव प्रयास कर रहे थे।
प्रेस और एएनसी के भीतर भी ये बेबुनियाद अटकलें लगाई जा रही थीं कि आंदोलन में किसी ने मुझे धोखा दिया है। मुझे पता था कि कुछ लोग मेरे डरबन के मेज़बान जी. आर. नायडू को दोषी ठहरा रहे थे, जो मेरे विचार से निराधार था। प्रेस ने इस बात को खूब उछाला कि मुझे श्वेत और भारतीय कम्युनिस्टों ने धोखा दिया है, जो एएनसी को अधिक अफ्रीकीवादी बनाने के मेरे सुझाव से नाराज़ थे। लेकिन मेरा मानना था कि ये कहानियां सरकार द्वारा कांग्रेस आंदोलन को विभाजित करने के लिए फैलाई गई थीं, और मैंने इसे दुर्भावनापूर्ण शरारत समझा। बाद में मैंने इस मामले पर न केवल वाल्टर, डूमा, जो स्लोवो और अहमद कथराडा से, बल्कि विनी से भी चर्चा की, और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि वे भी मेरे विचारों से सहमत थे। विनी को ट्रांसवाल इंडियन यूथ कांग्रेस के वार्षिक सम्मेलन का उद्घाटन करने के लिए आमंत्रित किया गया था, और मेरे कहने पर उन्होंने इन अफवाहों का स्पष्ट रूप से खंडन किया। अखबार उनकी सुंदरता और वाक्पटुता की कहानियों से भरे हुए थे। उन्होंने श्रोताओं से कहा, "हम इस बात के सबूत खोजने में समय बर्बाद नहीं करेंगे कि मंडेला को किसने धोखा दिया।" "इस तरह का दुष्प्रचार हमें राष्ट्रवादी उत्पीड़न से लड़ने के लिए एकजुट होने के बजाय आपस में लड़ते रहने के लिए किया जाता है।"

सबसे ज़्यादा सुनाई जाने वाली कहानी यह थी कि सीआईए से संबंध रखने वाले एक अमेरिकी कांसुलर अधिकारी ने अधिकारियों को सूचना दे दी थी। इस कहानी की कभी पुष्टि नहीं हुई और मुझे इसकी सच्चाई का कोई विश्वसनीय सबूत भी नहीं मिला। हालाँकि सीआईए अमेरिकी साम्राज्यवाद के समर्थन में कई घृणित गतिविधियों के लिए ज़िम्मेदार रही है, लेकिन मैं अपनी गिरफ़्तारी का दोष उन पर नहीं डाल सकता। सच तो यह है कि मैंने अपनी गतिविधियों की गोपनीयता बनाए रखने में लापरवाही बरती थी। अब पीछे मुड़कर देखने पर मुझे एहसास होता है कि डरबन की मेरी यात्रा के दौरान अधिकारियों के पास मुझे ढूंढने के अनगिनत तरीके हो सकते थे। वास्तव में यह आश्चर्य की बात है कि मुझे पहले ही गिरफ्तार नहीं किया गया।

मुझे फोर्ट के अस्पताल में कुछ ही दिन बिताने के बाद प्रिटोरिया भेज दिया गया। जोहान्सबर्ग में मुलाकातों पर कोई प्रतिबंध नहीं था, और मुझसे मिलने के लिए लगातार लोगों का तांता लगा रहता था। जेल में मुलाकातों से हौसला बना रहता है, और उनकी अनुपस्थिति निराशाजनक हो सकती है। मुझे प्रिटोरिया भेजकर अधिकारी मुझे मेरे गृह क्षेत्र से दूर एक ऐसी जगह ले जाना चाहते थे जहाँ मुझसे मिलने आने वाले दोस्तों की संख्या कम हो।
मुझे हथकड़ी पहनाकर एक पुरानी वैन में एक अन्य कैदी के साथ प्रिटोरिया ले जाया गया। वैन अंदर से बेहद गंदी थी और हम एक चिकने स्पेयर टायर पर बैठे थे, जो वैन के प्रिटोरिया की ओर बढ़ते हुए इधर-उधर फिसल रहा था। साथी का चुनाव अजीब था: उसका नाम नकदामेंग था और वह सोवेटो के सबसे खतरनाक गिरोहों में से एक का सदस्य था। आम तौर पर, अधिकारी किसी राजनीतिक कैदी को आम अपराधी के साथ एक ही वाहन में यात्रा करने की अनुमति नहीं देते, लेकिन मुझे लगता है कि वे उम्मीद कर रहे थे कि नकदामेंग से मैं डर जाऊँगा, जिसे मैंने पुलिस मुखबिर समझा था। जेल पहुँचते-पहुँचते मैं गंदा और चिड़चिड़ा हो चुका था, और मेरी झुंझलाहट इस बात से और बढ़ गई कि मुझे इस साथी के साथ एक ही कोठरी में रखा गया था। मैंने अलग कमरा मांगा और आखिरकार मुझे मिल गया ताकि मैं अपना पक्ष रख सकूँ।

अब मुझे हफ्ते में सिर्फ दो बार ही मिलने की इजाज़त थी। दूरी के बावजूद, विनी नियमित रूप से आती और हमेशा साफ कपड़े और स्वादिष्ट खाना लाती। यह उसका समर्थन दिखाने का एक और तरीका था, और हर बार जब मैं नई कमीज़ पहनती, तो मुझे उसका प्यार और स्नेह महसूस होता। मैं समझ सकती थी कि हफ्ते के बीचोंबीच, दिन के समय, घर पर दो छोटे बच्चों के साथ प्रिटोरिया जाना कितना मुश्किल रहा होगा। कई और लोग भी मुझसे मिलने आते थे और खाना लाते थे, जिनमें हमेशा साथ देने वाली श्रीमती पिल्ले भी शामिल थीं, जो मुझे हर दिन मसालेदार दोपहर का खाना देती थीं।
मेरे आगंतुकों की उदारता के कारण मेरे पास भोजन की प्रचुरता हो गई थी और मैं अपने कमरे के अन्य कैदियों के साथ अपना भोजन बाँटना चाहता था। यह सख्त मना था। प्रतिबंधों से बचने के लिए, मैंने वार्डरों को भोजन देने की पेशकश की, शायद वे मान जाएँ। इसी सोच के साथ मैंने एक अफ्रीकी वार्डर को एक चमकदार लाल सेब दिया, जिसने उसे देखा और कठोर स्वर में "अंगियिफुनी" (मुझे यह नहीं चाहिए) कहकर मुझे मना कर दिया। अफ्रीकी वार्डर आमतौर पर श्वेत वार्डरों की तुलना में कहीं अधिक सहानुभूतिशील होते हैं, या फिर अपने आकाओं से भी अधिक कठोर। लेकिन, कुछ ही समय बाद, उस अश्वेत वार्डर ने देखा कि एक श्वेत वार्डर ने वही सेब ले लिया जिसे उसने अस्वीकार कर दिया था, और उसका मन बदल गया। जल्द ही मैं अपने सभी साथी कैदियों को भोजन देने लगा। जेल के अंदरूनी सूत्रों से मुझे पता चला कि वाल्टर को भी प्रिटोरिया लाया गया है, और हालांकि हम एक-दूसरे से अलग-थलग थे, फिर भी हम किसी तरह संपर्क में रहे। वाल्टर ने जमानत के लिए आवेदन किया था - एक ऐसा निर्णय जिसका मैंने पूरी तरह समर्थन किया। एएनसी के भीतर जमानत हमेशा से एक संवेदनशील मुद्दा रहा है। कुछ लोगों का मानना था कि हमें हमेशा जमानत को अस्वीकार कर देना चाहिए, क्योंकि इसे इस रूप में देखा जा सकता है कि हम कायर विद्रोही हैं जो कानूनी व्यवस्था के नस्लवादी नियमों को स्वीकार करते हैं। मुझे नहीं लगता था कि इस विचार को सर्वत्र लागू किया जाना चाहिए और मेरा मानना था कि हमें इस मुद्दे की जांच प्रत्येक मामले के आधार पर करनी चाहिए। जब से वाल्टर एएनसी के महासचिव बने थे, मुझे लगता था कि उन्हें जमानत पर जेल से बाहर निकालने के लिए हर संभव प्रयास किया जाना चाहिए। वे संगठन के लिए इतने महत्वपूर्ण थे कि उन्हें जेल में सड़ने देना संभव नहीं था। उनके मामले में, जमानत एक व्यावहारिक मुद्दा था, सैद्धांतिक नहीं। मेरा मामला

अलग था। मैं भूमिगत था; वाल्टर नहीं थे। मैं विद्रोह और संघर्ष का सार्वजनिक प्रतीक बन गया था; वाल्टर पर्दे के पीछे से काम करते थे। वे इस बात से सहमत थे कि मेरे मामले में जमानत के लिए कोई आवेदन नहीं किया जाना चाहिए। एक तो यह कि इसकी अनुमति नहीं मिलती और मैं ऐसा कुछ भी नहीं करना चाहता था जिससे यह लगे कि मैं अपने द्वारा चुने गए भूमिगत जीवन के परिणामों के लिए तैयार नहीं था।
वॉल्टर और मेरे इस फैसले के कुछ ही समय बाद मुझे फिर से फोर्ट स्थित अस्पताल में स्थानांतरित कर दिया गया। अक्टूबर में सुनवाई तय की गई थी। जेल के पक्ष में कुछ खास नहीं कहा जा सकता, लेकिन जबरन एकांतवास पढ़ाई के लिए अनुकूल होता है। मैंने अपने एलएलबी. (कानून में स्नातक की डिग्री, जो वकील के रूप में प्रैक्टिस करने की अनुमति देती है) के लिए पत्राचार अध्ययन शुरू कर दिया था। प्रिटोरिया लोकल पहुंचने के बाद मैंने सबसे पहले अधिकारियों को पत्र लिखकर अपनी पढ़ाई की मंशा बताई और अपने पाठ्यक्रम के हिस्से के रूप में शामिल 'कानून ऑफ टॉर्ट्स' की एक प्रति खरीदने की अनुमति मांगी।
कुछ दिनों बाद, प्रिटोरिया लोकल के कमांडिंग ऑफिसर और कुख्यात जेल अधिकारियों में से एक कर्नल ऑकैंप मेरी कोठरी में घुस आए और घमंड भरे लहजे में बोले, “मंडेला, अब हमने तुम्हें पकड़ लिया!” फिर उन्होंने कहा, “तुम्हें मशालों पर किताब क्यों चाहिए, यार, कहीं तुम इसका इस्तेमाल अपने उस घिनौने तोड़फोड़ के लिए तो नहीं करोगे?” मुझे समझ नहीं आया कि वे क्या कह रहे थे, जब तक कि उन्होंने मेरा वह पत्र नहीं दिखाया जिसमें मैंने “मशालों का कानून” नामक किताब मांगी थी। मैं इस पर मुस्कुराया और वे इस बात पर नाराज़ हो गए कि मैं उन्हें गंभीरता से नहीं ले रहा था। “मशाल” के लिए अफ़्रीकी शब्द टॉर्ट्स है, जो टॉर्ट से बहुत मिलता-जुलता है, और मैंने उन्हें समझाया कि अंग्रेज़ी में टॉर्ट कानून की एक शाखा है, न कि जलती हुई लकड़ी जिसे बम फोड़ने के लिए इस्तेमाल किया जा सकता है। वे गुस्से में चले गए।

एक दिन मैं किले के जेल प्रांगण में अपनी दैनिक कसरत कर रहा था, जिसमें जॉगिंग, एक ही जगह पर दौड़ना, पुश-अप्स और सिट-अप्स शामिल थे। तभी मूसा दिनाथ नाम का एक लंबा-चौड़ा, आकर्षक भारतीय मेरे पास आया, जिसे मैं एक समृद्ध, बल्कि दिखावटी व्यवसायी के रूप में थोड़ा-बहुत जानता था। वह धोखाधड़ी के आरोप में दो साल की सजा काट रहा था। बाहर हम सिर्फ परिचित ही रह जाते, लेकिन जेल दोस्ती का गढ़ होती है। दिनाथ अक्सर मेरे साथ प्रांगण में जॉगिंग करने जाता था। एक दिन उसने मुझसे पूछा कि क्या मुझे कोई आपत्ति है अगर वह कमांडिंग ऑफिसर से जेल अस्पताल में मेरे पास आने की अनुमति ले ले। मैंने उससे कहा कि मुझे इसकी खुशी होगी, लेकिन मैंने मन ही मन सोचा कि अधिकारी कभी इसकी अनुमति नहीं देंगे। मैं गलत था।
यह बेहद अजीब बात थी कि दीनाथ जैसे दोषी कैदी को मुकदमे की प्रतीक्षा कर रहे एक राजनीतिक कैदी के साथ रहने की अनुमति दी गई थी। लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा, क्योंकि मुझे साथ पाकर खुशी हुई। दीनाथ धनी था और जेल अधिकारियों के लिए निजी वेतन देता था। अपने पैसे के बदले में उसे कई विशेषाधिकार प्राप्त थे: वह श्वेत कैदियों के लिए बने कपड़े पहनता था, उनका खाना खाता था और जेल का कोई काम नहीं करता था।
एक रात, मुझे आश्चर्य हुआ जब मैंने जेल प्रमुख कर्नल मिन्नार और एक जाने- माने अफ़्रीकानर वकील को उसे लेने आते देखा। दिनाथ रात के लिए जेल से चला गया और सुबह तक वापस नहीं आया। अगर मैंने यह अपनी आँखों से न देखा होता तो मुझे विश्वास ही नहीं होता।
दीनाथ ने मुझे मंत्रिमंडल के मंत्रियों के बीच वित्तीय गड़बड़ियों और भ्रष्टाचार की कहानियाँ सुनाईं, जो मुझे बेहद दिलचस्प लगीं। इससे मुझे यह बात और भी स्पष्ट हो गई कि रंगभेद एक ऐसा ज़हर था जिसने हर क्षेत्र में नैतिक पतन को जन्म दिया। मैंने उनसे राजनीतिक या संवेदनशील मामलों पर चर्चा करने से पूरी तरह परहेज किया, क्योंकि मुझे डर था कि कहीं वे भी मुखबिर न हों। एक बार उन्होंने मुझसे मेरी अफ़्रीका यात्रा के बारे में पूछा, लेकिन मैंने बस उसे सरसरी तौर पर बता दिया। अंत में, दीनाथ ने अपने प्रभाव का इस्तेमाल करके अपनी रिहाई में तेजी ला दी और दो साल की सज़ा में से केवल चार महीने ही काटकर रिहा हो गए।

भागने से दोहरे उद्देश्य पूरे होते हैं: यह एक स्वतंत्रता सेनानी को जेल से मुक्त करता है ताकि वह अपना संघर्ष जारी रख सके, साथ ही संघर्ष को जबरदस्त मनोवैज्ञानिक बल प्रदान करता है और दुश्मन के खिलाफ एक बड़ा प्रचार प्रहार भी करता है। एक कैदी के रूप में, मैं हमेशा भागने के बारे में सोचता रहता था, और कमांडिंग ऑफिसर के कार्यालय में अपनी कई यात्राओं के दौरान, मैंने दीवारों, पहरेदारों की गतिविधियों, दरवाजों में इस्तेमाल होने वाली चाबियों और तालों के प्रकारों का ध्यानपूर्वक अवलोकन किया। मैंने जेल परिसर का एक विस्तृत नक्शा बनाया, जिसमें जेल अस्पताल और उससे बाहर निकलने वाले द्वारों के सटीक स्थान पर विशेष ध्यान दिया गया था। इस नक्शे को चुपके से आंदोलन में भेजा गया था और निर्देश दिया गया था कि इसे देखने के तुरंत बाद नष्ट कर दिया जाए।
दो योजनाएँ थीं, एक मूसा दिनाथ द्वारा बनाई गई थी, जिसे मैंने नज़रअंदाज़ कर दिया; दूसरी एएनसी द्वारा बनाई गई थी और जो स्लोवो ने मुझे बताई थी। इसमें रिश्वत, चाबियों की नकल और यहाँ तक कि एक नकली दाढ़ी भी शामिल थी, जिसे जेल में मुझे दी गई मेरी एक जैकेट के कंधे के पैड में सिलना था। विचार यह था कि भागने के बाद मैं वह दाढ़ी लगा लूँगा। मैंने भागने की योजना पर ध्यानपूर्वक विचार किया और निष्कर्ष निकाला कि यह समय से पहले की गई थी, और इसके विफल होने की संभावना बहुत अधिक थी। ऐसी विफलता संगठन के लिए घातक होगी। जो के साथ एक बैठक के दौरान, मैंने उसे अपने विचार बताते हुए एक नोट दिया। मैंने लिखा कि एमके इस तरह के ऑपरेशन के लिए तैयार नहीं है; यहाँ तक कि एक विशिष्ट और प्रशिक्षित बल भी शायद इस मिशन को पूरा नहीं कर पाएगा। मैंने सुझाव दिया कि इस तरह के दांव को तब तक के लिए टाल दिया जाए जब तक मैं दोषी कैदी न बन जाऊँ और अधिकारी कम सतर्क हों। अंत में, मैंने लिखा, "कृपया इसे पढ़ने के बाद नष्ट कर दें।" जो और बाकी लोगों ने भागने की कोशिश न करने के बारे में मेरी सलाह मान ली, लेकिन उसने फैसला किया कि उस नोट को एक ऐतिहासिक दस्तावेज के रूप में सहेज कर रखा जाना चाहिए, और बाद में वह एक बहुत ही दुर्भाग्यपूर्ण समय पर सामने आया।

51

प्रारंभिक सुनवाई सोमवार, 15 अक्टूबर, 1962 को निर्धारित की गई थी। संगठन ने एक मुक्त मंडेला समिति का गठन किया और "मंडेला को मुक्त करो" नारे के साथ एक जोरदार अभियान शुरू किया। पूरे देश में विरोध प्रदर्शन हुए और इमारतों की दीवारों पर भी यह नारा लिखा हुआ दिखाई देने लगा। सरकार ने मेरी कैद से संबंधित सभी सभाओं पर प्रतिबंध लगाकर जवाबी कार्रवाई की, लेकिन मुक्ति आंदोलन ने इस प्रतिबंध को नजरअंदाज कर दिया।
सोमवार की सुनवाई की तैयारी में, फ्री मंडेला कमेटी ने अदालत भवन के सामने एक जन प्रदर्शन का आयोजन किया था। योजना यह थी कि लोग उस रास्ते के दोनों ओर कतार बनाकर खड़े होंगे जिस पर मेरी वैन गुजरेगी। प्रेस रिपोर्टों, आगंतुकों से बातचीत और यहां तक कि जेल गार्डों की टिप्पणियों से मुझे पता चला कि बड़ी संख्या में और जोरदार जनसमूह के आने की उम्मीद थी।
शनिवार को, जब मैं सोमवार की सुनवाई के लिए खुद को तैयार कर रहा था, मुझे तुरंत अपना सामान पैक करने का आदेश दिया गया: सुनवाई प्रिटोरिया में स्थानांतरित कर दी गई थी। अधिकारियों ने कोई घोषणा नहीं की थी, और अगर मैं एक हमदर्द जेलर के माध्यम से सूचना न पहुँचा पाता, तो किसी को पता ही नहीं चलता कि मैंने जोहान्सबर्ग छोड़ दिया है।
लेकिन आंदोलन ने तुरंत प्रतिक्रिया दी, और सोमवार सुबह जब मेरा मुकदमा शुरू हुआ, तब तक ओल्ड सिनेगॉग समर्थकों से खचाखच भरा हुआ था। राजद्रोह मुकदमे के चार साल बाद यह सिनेगॉग मेरे लिए दूसरे घर जैसा था। मेरे कानूनी सलाहकार, जो स्लोवो, प्रतिबंधों के कारण जोहान्सबर्ग में ही सीमित होने की वजह से उपस्थित नहीं हो सके और उनकी जगह बॉब हेपल ने मेरी सहायता की।

उस सोमवार की सुबह मैं सूट और टाई के बजाय पारंपरिक ज़ोसा तेंदुए की खाल से बनी करोस पहनकर अदालत में दाखिल हुआ। समर्थकों की भीड़ एक साथ खड़ी हो गई और मुट्ठी बांधकर "अमांदला!" और "न्गावेथु!" के नारे लगाने लगी। करोस ने दर्शकों में जोश भर दिया, जिनमें से कई मेरे दोस्त और परिवार के सदस्य थे, और कुछ तो ट्रांसकेई से चलकर आए थे। विनी ने भी पारंपरिक मोतियों से बना सिर का आभूषण और टखने तक लंबी ज़ोसा स्कर्ट पहनी हुई थी।

मैंने पारंपरिक पोशाक इसलिए चुनी थी ताकि यह प्रतीक स्पष्ट हो सके कि मैं एक अश्वेत अफ्रीकी हूँ और एक श्वेत व्यक्ति के न्यायालय में प्रवेश कर रही हूँ। सचमुच, मैं अपने कंधों पर अपने लोगों का इतिहास, संस्कृति और विरासत ढो रही थी। उस दिन, मैंने स्वयं को अफ्रीकी राष्ट्रवाद का प्रतीक, अफ्रीका के कठिन लेकिन गौरवशाली अतीत और उसके अनिश्चित भविष्य की उत्तराधिकारी महसूस किया। कैरोस श्वेत न्याय व्यवस्था के प्रति अवमानना का भी प्रतीक था। मैं भली-भांति जानती थी कि अधिकारी मेरे कैरोस से भयभीत होंगे, ठीक वैसे ही जैसे कई श्वेत लोग अफ्रीका की सच्ची संस्कृति से भयभीत होते हैं। जब भीड़ शांत हो गई और सुनवाई शुरू हुई, तो मैंने अभियोक्ता श्री बॉश का औपचारिक रूप से अभिवादन किया, जिन्हें मैं अपने वकीली के दिनों से जानता था, और मजिस्ट्रेट श्री वैन हीर्डन का भी, जिनसे मैं परिचित था। इसके बाद मैंने तुरंत दो सप्ताह की हिरासत के लिए आवेदन किया, इस आधार पर कि मुझे अपने वकीलों को सूचित करने का अवसर दिए बिना प्रिटोरिया स्थानांतरित कर दिया गया था। मुझे एक सप्ताह की मोहलत मिल गई।
जब मैं अपनी कोठरी में वापस जा रहा था, तो एक बहुत घबराए हुए श्वेत वार्डर ने कहा कि कमांडिंग ऑफिसर, कर्नल जैकब्स ने मुझे करोस सौंपने का आदेश दिया है। मैंने कहा, "आप उन्हें बता दीजिए कि उन्हें यह नहीं मिलेगा।" वह वार्डर कमज़ोर था और कांपने लगा। उसने मुझसे लगभग गिड़गिड़ाते हुए कहा कि अगर वह इसे वापस नहीं लाया तो उसे नौकरी से निकाल दिया जाएगा। मुझे उस पर दया आई और मैंने कहा, "देखिए, बस अपने कमांडिंग ऑफिसर को बता दीजिए कि यह मंडेला बोल रहे हैं, आप नहीं।" थोड़ी देर बाद कर्नल जैकब्स खुद आए और मुझे वह चीज़ सौंपने का आदेश दिया जिसे वे मेरा "कंबल" कह रहे थे। मैंने उनसे कहा कि अदालत में पहनने के लिए मेरे कपड़ों पर उनका कोई अधिकार नहीं है और अगर उन्होंने मेरा करोस ज़ब्त करने की कोशिश की तो मैं इस मामले को सुप्रीम कोर्ट तक ले जाऊंगा। कर्नल ने फिर कभी मेरा "कंबल" लेने की कोशिश नहीं की, लेकिन अधिकारियों ने मुझे इसे केवल अदालत में पहनने की अनुमति दी, अदालत जाते या आते समय नहीं, इस डर से कि इससे अन्य कैदी "भड़क" सकते हैं।

एक सप्ताह बाद जब मामला दोबारा शुरू हुआ तो मुझे अपना पक्ष रखने से पहले अदालत को संबोधित करने की अनुमति दी गई। मैंने समझाया, “मैं यह स्पष्ट

करना चाहता हूँ कि यह मामला अफ्रीकी जनता की आकांक्षाओं का संघर्ष है, और इसी कारण मैंने अपना बचाव स्वयं करना उचित समझा।” मैं न्यायाधीश, उपस्थित लोगों और प्रेस को यह स्पष्ट करना चाहता था कि मैं राज्य को कटघरे में खड़ा करने का इरादा रखता हूँ। फिर मैंने इस आधार पर मजिस्ट्रेट को मामले से हटाने के लिए आवेदन किया कि मैं खुद को उस संसद द्वारा बनाए गए कानूनों का पालन करने के लिए नैतिक रूप से बाध्य नहीं मानता जिसमें मेरा कोई प्रतिनिधित्व नहीं है। और न ही किसी श्वेत न्यायाधीश से निष्पक्ष सुनवाई प्राप्त करना संभव था।

इस न्यायालय में मेरा सामना एक श्वेत मजिस्ट्रेट, एक श्वेत अभियोजक और श्वेत सहायक कर्मचारियों से क्यों हो रहा है? क्या कोई ईमानदारी और गंभीरता से यह कह सकता है कि इस प्रकार के वातावरण में न्याय का तराजू संतुलित है? इस देश के इतिहास में किसी भी अफ्रीकी को अपने सगे-संबंधियों, अपने खून के लोगों द्वारा मुकदमा चलाए जाने का सम्मान क्यों नहीं मिला? मैं आपको इसका कारण बताता हूँ: इस कठोर रंगभेद का असली उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि न्यायालयों द्वारा दिया गया न्याय देश की नीति के अनुरूप हो, चाहे वह नीति दुनिया भर की न्यायपालिका में स्वीकृत न्याय के मानदंडों से कितनी भी विरोधाभासी क्यों न हो...। माननीय न्यायाधीश, मैं नस्लीय भेदभाव से घोर घृणा करता हूँ और इसके सभी रूपों से नफरत करता हूँ। मैंने जीवन भर इसके खिलाफ लड़ाई लड़ी है। मैं अब भी लड़ रहा हूँ, और अपने जीवन के अंत तक लड़ता रहूँगा। मुझे यहाँ का यह माहौल घोर नापसंद है। यह मुझे ऐसा महसूस कराता है कि मैं एक श्वेत व्यक्ति की अदालत में एक अश्वेत व्यक्ति हूँ। ऐसा नहीं होना चाहिए।

मुकदमे की सुनवाई के दौरान अभियोजक ने ट्रांसकेई और दक्षिण पश्चिम अफ्रीका सहित पूरे देश से सौ से अधिक गवाहों को पेश किया। इनमें पुलिसकर्मी, पत्रकार, नगर निगम अधीक्षक और प्रिंटर शामिल थे। इनमें से अधिकांश ने तकनीकी साक्ष्य प्रस्तुत करके यह साबित किया कि मैंने अवैध रूप से देश छोड़ा था और मई 1961 में तीन दिवसीय हड़ताल के दौरान मैंने अफ्रीकी श्रमिकों को हड़ताल के लिए उकसाया था। यह निर्विवाद था - और

वास्तव में मैंने भी इस बात का खंडन नहीं किया - कि मैं तकनीकी रूप से दोनों आरोपों का दोषी था।
अभियोजक ने प्रधानमंत्री के निजी सचिव श्री बर्नार्ड को गवाही देने के लिए बुलाया था, ताकि वे उस पत्र के बारे में बता सकें जो मैंने प्रधानमंत्री को भेजा था, जिसमें मैंने उनसे राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने की मांग की थी और उन्हें सूचित किया था कि यदि वे ऐसा नहीं करते हैं, तो हम तीन दिवसीय हड़ताल का आयोजन करेंगे। श्री बर्नार्ड से जिरह करते हुए, मैंने सबसे पहले अदालत को वह पत्र पढ़कर सुनाया जो मैंने प्रधानमंत्री को भेजा था, जिसमें उनसे सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने का अनुरोध किया गया था ताकि एक नया गैर-नस्लीय संविधान लिखा जा सके।

एनएम: क्या आपने यह पत्र अपने प्रधानमंत्री के समक्ष रखा था?
गवाह: हाँ।
एनएम: क्या प्रधानमंत्री ने इस पत्र का कोई जवाब दिया? गवाह: उन्होंने लेखक को कोई जवाब नहीं दिया।
एनएम: उन्होंने पत्र का जवाब नहीं दिया। अब, क्या आप इस बात से सहमत होंगे कि यह पत्र निम्नलिखित प्रश्न उठाता है:
इस देश के अधिकांश नागरिकों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मुद्दे?
गवाह: मैं सहमत नहीं हूँ।
एनएम: आप सहमत नहीं हैं? आप इस बात से सहमत नहीं हैं कि मानवाधिकारों का प्रश्न,
क्या नागरिक स्वतंत्रताएं अफ्रीकी लोगों के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण विषय हैं?
गवाह: जी हाँ, बिल्कुल सही।
एनएम: क्या इन बातों का यहाँ उल्लेख किया गया है?
गवाह: हां, मुझे ऐसा ही लगता है।
एनएम: … आप पहले ही इस बात से सहमत हो चुके हैं कि यह पत्र इस तरह के प्रश्न उठाता है:
स्वतंत्रता के अधिकार, नागरिक स्वतंत्रताएँ, इत्यादि?
गवाह: जी हां, पत्र में इस मुद्दे का जिक्र है।

एनएम: अब, आप तो जानते ही हैं कि अफ़्रीकी लोगों को वे अधिकार प्राप्त नहीं हैं।
इस पत्र में क्या मांग की गई है? उन्हें सरकार के इन अधिकारों से वंचित रखा गया है।
गवाह: कुछ अधिकार।
एनएम: क्या कोई भी अफ्रीकी संसद सदस्य नहीं है?
गवाह: यह सही है।
एनएम: कोई भी अफ्रीकी व्यक्ति प्रांतीय परिषद या नगरपालिका परिषद का सदस्य नहीं हो सकता।
परिषदें।
गवाह: हाँ।
एनएम: क्या इस देश में अफ्रीकियों को वोट देने का अधिकार नहीं है?
गवाह: संसद के मामले में उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है। एनएम: जी हाँ, मैं इसी की बात कर रहा हूँ, मैं संसद की बात कर रहा हूँ।
देश के अन्य सरकारी निकाय, प्रांतीय परिषदें, नगर परिषदें। क्या उन्हें वोट देने का अधिकार नहीं है?
गवाह: यह सही है।
एनएम: क्या आप मुझसे सहमत होंगे कि दुनिया के किसी भी सभ्य देश में ऐसा होता है?
किसी प्रधानमंत्री के लिए किसी प्रश्न पर लिखे गए पत्र का उत्तर न देना शर्मनाक होगा।
ये उस देश के अधिकांश नागरिकों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दे हैं। क्या आप इससे सहमत हैं?
गवाह: मैं इससे सहमत नहीं हूँ।
एनएम: आप इस बात से सहमत नहीं हैं कि प्रधानमंत्री द्वारा अनदेखी करना अनियमित होगा।
क्या यह पत्र उस देश के अधिकांश नागरिकों को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाता है?
गवाह: प्रधानमंत्री ने इस पत्र को अनदेखा नहीं किया है। एनएम: सीधे सवाल का जवाब दीजिए। क्या आप इसे प्रधानमंत्री के लिए उचित समझते हैं?

क्या देश के अधिकांश नागरिकों द्वारा महत्वपूर्ण मुद्दों के संबंध में की गई अपीलों का जवाब न देना गलत है? क्या आप कहते हैं कि यह गलत है?
गवाह: प्रधानमंत्री ने पत्र का जवाब दिया था।
एनएम: श्रीमान बर्नार्ड, मैं आपसे असभ्य व्यवहार नहीं करना चाहता। क्या आप कृपया चुप रहेंगे?
मेरे सवालों का जवाब देने के लिए। मेरा सवाल यह है कि क्या आप इस बात से सहमत हैं कि किसी प्रधानमंत्री के लिए देश की अधिकांश जनता को प्रभावित करने वाले महत्वपूर्ण मुद्दों को उठाने वाले संदेश का जवाब न देना घोर अनुचित है?

श्री बर्नार्ड और मैं कभी सहमत नहीं हुए। अंत में, उन्होंने बस इतना कहा कि पत्र का लहजा आक्रामक और असभ्य था और इसी कारण प्रधानमंत्री ने उसका जवाब नहीं दिया।

* * *

पूरी कार्यवाही के दौरान अभियोजक और मजिस्ट्रेट ने बार-बार मुझसे पूछा कि मैं कितने गवाह पेश करने वाला हूँ। मैं हमेशा जवाब देता, "मैं उतने ही गवाह पेश करने की योजना बना रहा हूँ जितने राज्य की ओर से हैं, या उससे भी ज़्यादा।" जब राज्य ने अंततः अपना पक्ष समाप्त किया, तो मेरे बचाव की शुरुआत की प्रतीक्षा में न्यायालय में सन्नाटा छा गया। मैं उठा और अपने पहले गवाह को बुलाने के बजाय, मैंने बड़े ही सहज भाव से घोषणा कर दी कि मैं कोई गवाह नहीं बुला रहा हूँ, और इस तरह मैंने अचानक अपना पक्ष समाप्त कर दिया। न्यायालय में हल्की फुसफुसाहट हुई और अभियोजक स्वयं को यह कहने से रोक नहीं पाया, "हे भगवान!"
मैंने शुरू से ही अदालत को गुमराह किया था क्योंकि मुझे पता था कि आरोप सही है और राज्य का मामला मजबूत है, और मुझे गवाहों को बुलाकर अपना बचाव करने में कोई फायदा नहीं दिख रहा था। अपनी जिरह और जज को मामले से अलग होने के लिए मजबूर करने की कोशिशों के जरिए, मैंने अदालत की नाइंसाफी के बारे में वो बयान दे दिए थे जो मैं देना चाहता था। मुझे गवाहों को बुलाकर किसी ऐसी

बात को गलत साबित करने की कोशिश करने में कोई लाभ नहीं दिख रहा था जो निर्विवाद थी।
मेरे इस कृत्य से मजिस्ट्रेट आश्चर्यचकित रह गए और उन्होंने कुछ अविश्वास के साथ मुझसे पूछा, "क्या आपको कुछ और कहना है?"
“माननीय न्यायाधीश महोदय, मैं निवेदन करता हूँ कि मैं किसी अपराध का दोषी नहीं हूँ।”
क्या आपको बस इतना ही कहना है?
"माननीय महोदय, आदरपूर्वक कहना चाहता हूँ कि यदि मुझे कुछ और कहना होता तो मैं कह देता।"
इसके बाद अभियोजक अपने कागजात पलटने लगा, मानो वह उस संबोधन के लिए तैयार हो रहा हो जिसकी उसे उम्मीद नहीं थी। उसने संक्षेप में अदालत को संबोधित किया और मजिस्ट्रेट से मुझे दोनों मामलों में दोषी ठहराने का अनुरोध किया। इसके बाद अदालत की कार्यवाही अगले दिन तक के लिए स्थगित कर दी गई, जब मुझे मजिस्ट्रेट द्वारा फैसला सुनाए जाने से पहले, जिसे दोषमुक्ति निवेदन कहा जाता है, अदालत को संबोधित करने का मौका मिलेगा।

अगली सुबह, अदालत का सत्र शुरू होने से पहले, मैं अदालत कक्ष से कुछ दूर एक कार्यालय में बॉब हेपल से बात कर रहा था, जो मुझे इस मामले में सलाह दे रहे थे। हम इस बात की खुशी मना रहे थे कि एक दिन पहले संयुक्त राष्ट्र महासभा ने पहली बार दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ प्रतिबंध लगाने के पक्ष में मतदान किया था। बॉब ने मुझे यह भी बताया कि पोर्ट एलिजाबेथ और डरबन में तोड़फोड़ की घटनाएं हुई थीं, जो संयुक्त राष्ट्र के मतदान का जश्न मनाने और मेरे मुकदमे का विरोध करने के लिए की गई थीं। हम इसी चर्चा के बीच में थे कि अभियोजक, श्री बॉश, कमरे में आए और बॉब से कुछ देर के लिए बाहर जाने को कहा। बॉब के जाने के बाद उन्होंने कहा, “मंडेला, मैं आज अदालत में नहीं आना चाहता था। अपने करियर में पहली बार, मुझे अपने इस काम से घृणा हो रही है। मुझे बहुत दुख हो रहा है कि मुझे अदालत से आपको जेल भेजने की गुहार लगानी पड़ रही है।” फिर उन्होंने हाथ बढ़ाकर मुझसे हाथ मिलाया और मेरे लिए सब कुछ अच्छा होने की उम्मीद जताई। मैंने उनकी भावनाओं के लिए उन्हें

धन्यवाद दिया और उन्हें आश्वासन दिया कि मैं उनकी कही बातें कभी नहीं भूलूंगा।
उस दिन अधिकारी सतर्क थे। अदालत कक्ष में मौजूद भीड़ पहले दिन की तुलना में कहीं अधिक लग रही थी। सभी एक सौ पचास "गैर-यूरोपीय" सीटें भरी हुई थीं। विनी भी ज़ोसा पोशाक में मौजूद थी, साथ ही ट्रांसकेई से मेरे कई रिश्तेदार भी आए थे। सैकड़ों प्रदर्शनकारी अदालत से एक ब्लॉक दूर खड़े थे, और ऐसा लग रहा था कि जितने दर्शक थे उतने ही पुलिसकर्मी भी मौजूद थे।
जब मैं अदालत में दाखिल हुआ, तो मैंने अपनी दाहिनी मुट्ठी उठाई और ज़ोर से "अमांदला!" चिल्लाया, जिसका जवाब ज़ोरदार "न्गावेथु!" से मिला। मजिस्ट्रेट ने हथौड़ा पटका और शांति बनाए रखने का आदेश दिया। जब अदालत शांत हुई, तो उन्होंने आरोपों का सारांश प्रस्तुत किया, जिसके बाद मुझे बोलने का मौका मिला। मेरी बचाव याचिका एक घंटे से अधिक चली। यह कोई न्यायिक अपील नहीं थी, बल्कि एक राजनीतिक बयान था। मैं अदालत को समझाना चाहता था कि मैं कैसे और क्यों ऐसा इंसान बन गया, मैंने जो किया वह क्यों किया, और अगर मुझे मौका दिया जाए, तो मैं इसे दोबारा क्यों करूँगा।

कई साल पहले, जब मैं ट्रांसकेई के अपने गाँव में पला-बढ़ा एक लड़का था, तब मैं अपने कबीले के बुजुर्गों से श्वेत लोगों के आगमन से पहले के सुनहरे दिनों की कहानियाँ सुनता था। तब हमारे लोग अपने राजाओं और उनके अमापाकाती (शाब्दिक रूप से "अंदरूनी", लेकिन जिसका अर्थ राजा के सबसे करीबी लोग होते हैं) के लोकतांत्रिक शासन के अधीन शांतिपूर्वक रहते थे और बिना किसी रोक-टोक के देश भर में स्वतंत्र रूप से और आत्मविश्वास से घूमते थे। यह देश नाम और अधिकार दोनों से हमारा था। हमने ज़मीन, जंगलों, नदियों पर अधिकार कर रखा था; हमने मिट्टी के नीचे छिपी खनिज संपदा और इस खूबसूरत देश की सारी दौलत का दोहन किया। हमने अपनी सरकार बनाई और चलाई, हमने अपने हथियारों पर नियंत्रण रखा और हमने अपना व्यापार और वाणिज्य संगठित किया। बुजुर्ग हमें मातृभूमि की रक्षा में हमारे पूर्वजों द्वारा लड़े गए युद्धों की कहानियाँ सुनाते थे, साथ ही उन गौरवशाली दिनों में जनरलों और सैनिकों द्वारा दिखाए गए वीरतापूर्ण कार्यों की भी।
इस देश में प्रारंभिक अफ्रीकी समाजों की संरचना और संगठन

इसने मुझे बहुत आकर्षित किया और मेरे राजनीतिक दृष्टिकोण के विकास को काफी प्रभावित किया। उस समय भूमि, जो उत्पादन का मुख्य साधन थी, पूरे कबीले की थी और उस पर किसी का कोई स्वामित्व नहीं था। कोई वर्ग नहीं था, कोई अमीर या गरीब नहीं था और न ही किसी का किसी का शोषण होता था। सभी मनुष्य स्वतंत्र और समान थे और यही शासन का आधार था। इस सामान्य सिद्धांत की मान्यता परिषद के संविधान में व्यक्त की गई थी, जिसे विभिन्न नामों से पुकारा जाता था, जैसे "इम्बिज़ो", "पिट्सो" या "कोटला", जो कबीले के मामलों का संचालन करती थी। परिषद इतनी पूर्णतः लोकतांत्रिक थी कि कबीले के सभी सदस्य इसकी चर्चाओं में भाग ले सकते थे। मुखिया और प्रजा, योद्धा और वैद्य, सभी इसमें भाग लेते थे और इसके निर्णयों को प्रभावित करने का प्रयास करते थे। यह इतनी महत्वपूर्ण और प्रभावशाली संस्था थी कि कबीले द्वारा कोई भी महत्वपूर्ण कदम इसके परामर्श के बिना नहीं उठाया जा सकता था।
ऐसे समाज में बहुत कुछ आदिम और असुरक्षित था और
यह समाज निश्चित रूप से वर्तमान युग की मांगों को पूरा नहीं कर सकता। लेकिन ऐसे समाज में क्रांतिकारी लोकतंत्र के बीज निहित हैं, जिसमें कोई भी गुलामी या दासता में नहीं रहेगा, और जिसमें गरीबी, अभाव और असुरक्षा का कोई अस्तित्व नहीं रहेगा। यही वह इतिहास है जो आज भी मुझे और मेरे साथियों को हमारे राजनीतिक संघर्ष में प्रेरित करता है।

मैंने अदालत को बताया कि मैं अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस में कैसे शामिल हुआ और कैसे लोकतंत्र और गैर-नस्लवाद की उसकी नीति मेरे अपने गहरे विश्वासों को दर्शाती है। मैंने समझाया कि एक वकील के रूप में मुझे अक्सर कानून का पालन करने और अपनी अंतरात्मा की आवाज सुनने के बीच चुनाव करने के लिए मजबूर होना पड़ता था।

मैं कहना चाहूंगा कि इस देश में रहने वाले किसी भी विचारशील अफ्रीकी का पूरा जीवन उसे लगातार एक संघर्ष में उलझाए रखता है - एक ओर उसकी अंतरात्मा और दूसरी ओर कानून। यह संघर्ष केवल इसी देश तक सीमित नहीं है। यह संघर्ष हर देश में उन लोगों के लिए उत्पन्न होता है जो अंतरात्मा से प्रेरित होते हैं, जो गहराई से सोचते और महसूस करते हैं। हाल ही में ब्रिटेन में, एक प्रतिष्ठित दार्शनिक, अर्ल [बर्ट्रेंड] रसेल, जो संभवतः पश्चिमी जगत के

सबसे सम्मानित दार्शनिक हैं, को ठीक उसी प्रकार के कार्यों के लिए दोषी ठहराया गया और सज़ा सुनाई गई, जिसके लिए मैं आज आपके समक्ष खड़ा हूं - अपने ही सरकार द्वारा अपनाई जा रही परमाणु हथियार नीति के विरोध में कानून की अवहेलना करते हुए अपनी अंतरात्मा का अनुसरण करने के लिए। उनके पास कानून का विरोध करने और उसके परिणामों को भुगतने के अलावा कोई चारा नहीं था। न ही मेरे पास है। न ही इस देश के कई अफ्रीकियों के पास। कानून जैसा कि लागू किया जाता है, कानून जैसा कि इतिहास के लंबे कालखंड में विकसित हुआ है, और विशेष रूप से राष्ट्रवादी सरकार द्वारा लिखित और निर्मित कानून, हमारी राय में, अनैतिक, अन्यायपूर्ण और असहनीय है। हमारी अंतरात्मा हमें इसके विरुद्ध विरोध करने, इसका मुकाबला करने और इसे बदलने का प्रयास करने के लिए प्रेरित करती है...। मेरा मानना है कि मनुष्य निष्क्रिय रहने, चुप रहने, अन्याय पर प्रतिक्रिया न करने, उत्पीड़न के विरुद्ध विरोध न करने और अपने दृष्टिकोण से एक अच्छे समाज और अच्छे जीवन के लिए प्रयास न करने में सक्षम नहीं हैं।

मैंने विस्तार से बताया कि सरकार ने प्रतिबंधों, सीमाओं और मुकदमों के माध्यम से मेरे जीवन, करियर और राजनीतिक कार्यों में बाधा डालने के लिए कितनी बार कानून का इस्तेमाल किया था।

मुझे कानून द्वारा अपराधी बनाया गया, इसलिए नहीं कि मैंने क्या किया था, बल्कि इसलिए कि मैं किस बात पर अड़ा था, मेरी सोच क्या थी, मेरा विवेक क्या कहता था। क्या किसी को आश्चर्य हो सकता है कि ऐसी परिस्थितियाँ किसी व्यक्ति को समाज का बहिष्कृत बना देती हैं? क्या यह आश्चर्य की बात है कि सरकार द्वारा बहिष्कृत किया गया ऐसा व्यक्ति, जैसा कि मैंने इस अदालत के सामने मौजूद सबूतों के अनुसार कुछ महीनों से किया है, एक बहिष्कृत व्यक्ति का जीवन जीने के लिए तैयार हो जाए?
बीते समय में मेरे लिए खुद को इससे अलग करना आसान नहीं रहा है।
मेरी पत्नी और बच्चों को, उन अच्छे पुराने दिनों को अलविदा कहने के लिए, जब अंत में
दफ्तर में थका देने वाले दिन के बाद, मैं परिवार के साथ भोजन करने की उम्मीद कर सकता था, लेकिन इसके बजाय मुझे पुलिस द्वारा लगातार पीछा किए

जाने वाले व्यक्ति का जीवन जीना पड़ रहा है, अपने ही देश में अपने सबसे करीबी लोगों से अलग रहना पड़ रहा है, और पकड़े जाने और गिरफ्तारी के निरंतर खतरों का सामना करना पड़ रहा है। यह जीवन जेल की सजा काटने से कहीं अधिक कठिन रहा है। कोई भी समझदार व्यक्ति स्वेच्छा से ऐसा जीवन नहीं चुनेगा, जबकि हर सभ्य समाज में सामान्य, पारिवारिक और सामाजिक जीवन मौजूद होता है। लेकिन एक समय ऐसा आता है, जैसा कि मेरे जीवन में आया, जब एक व्यक्ति को इससे वंचित कर दिया जाता है
एक सामान्य जीवन जीने का अधिकार, जबकि उसे केवल एक अपराधी का जीवन जीना पड़ रहा है क्योंकि सरकार ने कानून का इस्तेमाल करके उसे अपराधी घोषित कर दिया है। मुझे इस स्थिति में धकेल दिया गया था, और मुझे अपने द्वारा लिए गए निर्णयों पर कोई पछतावा नहीं है। मुझे पूरा विश्वास है कि इस देश में अन्य लोग भी पुलिस उत्पीड़न और सरकार की प्रशासनिक कार्रवाई के इसी दबाव में आकर मेरा ही रास्ता अपनाएंगे।

मैंने उन अनेक अवसरों का वर्णन किया जब हमने अपनी शिकायतें सरकार के समक्ष रखीं और उतनी ही बार हमारी अनदेखी की गई या हमें दरकिनार कर दिया गया। मैंने 1961 के अपने हड़ताल को अंतिम उपाय बताया, क्योंकि सरकार ने न तो हमसे बातचीत करने का कोई संकेत दिया और न ही हमारी मांगों को पूरा करने का। सरकार ने ही हमारी अहिंसक मांगों को पूरा करने के लिए हिंसा का प्रयोग करके हिंसा को भड़काया था। मैंने समझाया कि सरकार की इस कार्रवाई के कारण ही हमने अधिक उग्र रुख अपनाया था। मैंने कहा कि मुझे अपने पूरे राजनीतिक जीवन में उन सहयोगियों के साथ संघर्ष करने का सौभाग्य प्राप्त हुआ है जिनकी क्षमताएं और योगदान मुझसे कहीं अधिक थे। मुझसे पहले भी कई लोगों ने अपने विश्वासों की कीमत चुकाई है, और मेरे बाद भी कई और लोग ऐसा करेंगे। सजा सुनाए जाने से पहले, मैंने अदालत को सूचित किया कि राज्य द्वारा दी जाने वाली सजा से संघर्ष के प्रति मेरी निष्ठा में कोई बदलाव नहीं आएगा।

माननीय न्यायाधीश महोदय, मेरा यह मानना नहीं है कि जिन अपराधों के लिए मुझे दोषी ठहराया गया है, उनके लिए दंड देते समय न्यायालय को यह सोचना चाहिए कि दंड देने से लोग अपने सही मार्ग से विमुख हो जाएंगे। इतिहास गवाह है कि जब लोगों का विवेक जागृत होता है, तो दंड देने से वे विचलित नहीं

होते, और न ही मेरे लोग या वे सहकर्मी जिनके साथ मैंने पहले काम किया है, विचलित होंगे।
मैं जुर्माना भरने के लिए तैयार हूं, भले ही मुझे पता हो कि यह कितना कड़वा और
इस देश की जेलों में अफ्रीकी लोगों की स्थिति बेहद दयनीय है। मैं खुद इन जेलों में रह चुका हूँ और जानता हूँ कि जेल की दीवारों के पीछे भी अफ्रीकियों के साथ कितना घिनौना भेदभाव होता है…। फिर भी, ये बातें मुझे मेरे चुने हुए रास्ते से विचलित नहीं करतीं और न ही करेंगी।
मुझ जैसे अन्य लोगों को भी प्रभावित करो। क्योंकि मनुष्यों के लिए, अपने देश में स्वतंत्रता उनकी महत्वाकांक्षाओं का शिखर है, जिससे दृढ़ निश्चयी व्यक्ति विचलित नहीं हो सकते। जेल में जिन भयानक परिस्थितियों का मुझे सामना करना पड़ सकता है, उनके भय से कहीं अधिक शक्तिशाली मेरे लोगों के प्रति घृणा है, जिनका सामना उन्हें इस देश भर में जेल के बाहर करना पड़ता है...।
जो भी सजा आप मेरे ऊपर लगाना उचित समझें,
जिस अपराध के लिए मुझे इस न्यायालय के समक्ष दोषी ठहराया गया है, यह निश्चिंत रहे कि मेरी सजा पूरी होने के बाद भी, जैसा कि मनुष्य हमेशा प्रेरित होते हैं, मैं अपने अंतरात्मा से प्रेरित रहूंगा; सजा पूरी करने के बाद भी, मैं अपने लोगों के विरुद्ध नस्लीय भेदभाव के प्रति अपनी घृणा से प्रेरित रहूंगा, और अपनी पूरी क्षमता से, उन अन्यायों को दूर करने के लिए संघर्ष करूंगा जब तक कि वे अंततः हमेशा के लिए समाप्त न हो जाएं...।
मैंने अपने लोगों और दक्षिण अफ्रीका के प्रति अपना कर्तव्य निभाया है। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं है।
ताकि आने वाली पीढ़ियां यह फैसला सुनाएं कि मैं निर्दोष था और जिन अपराधियों को इस अदालत के सामने लाया जाना चाहिए था, वे सरकार के सदस्य हैं।

जब मैंने अपनी बात समाप्त की, तो मजिस्ट्रेट ने सज़ा पर विचार करने के लिए दस मिनट का अवकाश दिया। अदालत से बाहर निकलने से पहले मैंने मुड़कर भीड़ की ओर देखा। मुझे मिलने वाली सज़ा के बारे में मुझे कोई भ्रम नहीं था। ठीक दस मिनट बाद, तनाव से भरे अदालत कक्ष में, मजिस्ट्रेट ने सज़ा सुनाई: लोगों

को हड़ताल के लिए उकसाने के लिए तीन साल और बिना पासपोर्ट के देश छोड़ने के लिए दो साल; कुल मिलाकर पाँच साल, बिना पैरोल की संभावना के। यह एक कठोर सज़ा थी और दर्शकों में विलाप की आवाज़ गूंज उठी। जैसे ही अदालत की कार्यवाही समाप्त हुई, मैं गैलरी की ओर मुड़ा और फिर से मुट्ठी बांधकर तीन बार "अमांदला!" चिल्लाया। फिर, भीड़ अपने आप ही हमारा सुंदर राष्ट्रगान, "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" गाने लगी। लोग गाते-नाचते रहे और जब मुझे ले जाया जा रहा था तो महिलाएं खुशी से चिल्ला रही थीं। गैलरी में मचे शोर ने मुझे एक पल के लिए यह भुला दिया कि मैं जेल जा रहा हूँ, जहाँ मुझे दक्षिण अफ्रीका में राजनीतिक अपराध के लिए अब तक की सबसे कठोर सज़ा काटनी थी। नीचे जाकर मुझे विनी से थोड़ी देर के लिए अलविदा कहने का मौका मिला, और इस बार वो बिलकुल भी उदास नहीं थीं: वो बहुत खुश थीं और उनकी आँखों में आँसू नहीं थे। वो आत्मविश्वास से भरी हुई लग रही थीं, एक साथी होने के साथ-साथ एक पत्नी भी। वो मुझे हिम्मत देने के लिए दृढ़ थीं। जब मुझे पुलिस वैन में ले जाया जा रहा था, तब भी मुझे बाहर लोगों के "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" गाते हुए सुनाई दे रहे थे।

52

जेल न केवल आपकी स्वतंत्रता छीनती है, बल्कि आपकी पहचान भी नष्ट करने का प्रयास करती है। हर कोई एक जैसी वर्दी पहनता है, एक जैसा खाना खाता है, एक ही दिनचर्या का पालन करता है। परिभाषा के अनुसार, यह एक पूर्णतः सत्तावादी राज्य है जो किसी भी प्रकार की स्वतंत्रता या व्यक्तित्व को बर्दाश्त नहीं करता। एक स्वतंत्रता सेनानी और एक इंसान के रूप में, व्यक्ति को जेल द्वारा इन गुणों को छीनने के प्रयास के विरुद्ध लड़ना चाहिए।
अदालत से मुझे सीधे प्रिटोरिया लोकल ले जाया गया, वही उदास लाल ईंटों वाली विशाल इमारत जिसे मैं अच्छी तरह जानता था। लेकिन अब मैं एक दोषी कैदी था, न कि विचाराधीन कैदी, और मेरे साथ वह मामूली सम्मान भी नहीं दिखाया गया जो विचाराधीन कैदियों को दिया जाता है। मेरे कपड़े उतार दिए गए और कर्नल जैकब्स आखिरकार मेरी करोस (एक प्रकार की टोपी) जब्त करने में सफल रहे। मुझे अफ्रीकियों के लिए मानक जेल वर्दी दी गई: एक छोटी पतलून, एक खुरदरी

खाकी कमीज, एक कैनवास जैकेट, मोजे, सैंडल और एक कपड़े की टोपी। केवल अफ्रीकियों को ही छोटी पतलून दी जाती है, क्योंकि अधिकारियों द्वारा केवल अफ्रीकी पुरुषों को ही "लड़के" माना जाता है।
मैंने अधिकारियों को सूचित किया कि मैं किसी भी परिस्थिति में शॉर्ट्स नहीं पहनूंगा और उन्हें बताया कि मैं विरोध करने के लिए अदालत जाने को तैयार हूं। बाद में, जब मुझे रात का खाना परोसा गया, जो आधा चम्मच चीनी के साथ ठंडा और कड़ा दलिया था, तो मैंने उसे खाने से इनकार कर दिया। कर्नल जैकब्स ने इस पर विचार किया और एक समाधान निकाला: यदि मैं एकांतवास में रहने के लिए सहमत हो जाऊं, तो मैं लंबी पतलून पहन सकता हूं और अपना खाना खुद खा सकता हूं। उन्होंने कहा, "हम आपको अन्य राजनीतिक लोगों के साथ रखने वाले थे, लेकिन अब आप अकेले रहेंगे, दोस्त। मुझे उम्मीद है कि आपको यह अच्छा लगेगा।" मैंने उन्हें आश्वासन दिया कि एकांतवास ठीक रहेगा, बशर्ते मैं अपनी पसंद के कपड़े पहन सकूं और जो चाहूं खा सकूं।

अगले कुछ हफ्तों तक मैं पूरी तरह से अलग-थलग रहा। मैंने किसी दूसरे कैदी का चेहरा नहीं देखा और न ही उसकी आवाज़ सुनी। मुझे दिन में तेईस घंटे बंद रखा जाता था, सुबह और दोपहर में तीस-तीस मिनट की कसरत मिलती थी। मैं पहले कभी एकांत में नहीं रहा था, और हर घंटा एक साल जैसा लगता था। मेरी कोठरी में कोई प्राकृतिक रोशनी नहीं थी; ऊपर एक बल्ब चौबीसों घंटे जलता रहता था। मेरे पास घड़ी नहीं थी और अक्सर मुझे लगता था कि आधी रात हो गई है जबकि असल में दोपहर ढल चुकी होती थी। मेरे पास पढ़ने के लिए कुछ नहीं था, लिखने के लिए कुछ नहीं था, बात करने के लिए कोई नहीं था। मन अंतर्मुखी होने लगता है, और इंसान को अपने से बाहर किसी ऐसी चीज़ की सख्त ज़रूरत महसूस होती है जिस पर वह अपना ध्यान केंद्रित कर सके। मैंने ऐसे लोगों को भी देखा है जिन्होंने अकेले बंद रहने के बजाय आधा दर्जन कोड़े खाना पसंद किया। एकांतवास में कुछ समय बिताने के बाद, मुझे अपनी कोठरी में मौजूद कीड़ों का साथ भी अच्छा लगने लगा, और मैं एक तिलचट्टे से भी बातचीत शुरू करने के लिए लगभग तैयार था।

मेरे पास एक अधेड़ उम्र का अफ्रीकी वार्डर था, जिससे मेरी कभी-कभार मुलाकात हो पाती थी। एक दिन मैंने उसे सेब का लालच देकर बात करवाने की कोशिश की। मैंने कहा, "बाबा," जिसका अर्थ है पिता, और यह सम्मान का शब्द है, "क्या मैं आपको एक सेब दे सकता हूँ?" वह मुँह फेरकर चला गया, और मेरी हर बात पर चुप्पी साधे रहा। आखिर में उसने कहा, "यार, तुम्हें लंबी पैंट और अच्छा खाना चाहिए था, अब तुम्हारे पास वो सब है, फिर भी तुम खुश नहीं हो।" वह सही था। मानवीय संगति की कमी से ज्यादा अमानवीय कुछ नहीं होता। कुछ हफ्तों बाद, मैं अपना स्वाभिमान निगलकर कर्नल जैकब्स से यह कहने को तैयार हो गया कि मैं अपनी लंबी पैंट के बदले किसी की संगति चाहता हूँ।
उन हफ्तों के दौरान मुझे अपने भविष्य पर विचार करने का भरपूर समय मिला। एक स्वतंत्रता सेनानी का स्थान अपने लोगों के बीच होता है, सलाखों के पीछे नहीं। अफ्रीका में मैंने जो ज्ञान और संपर्क बनाए थे, वे संघर्ष में उपयोग होने के बजाय कैद में ही रह जाएंगे। मुझे इस बात का बहुत दुख हुआ कि मेरी विशेषज्ञता का उपयोग स्वतंत्रता सेना बनाने में नहीं किया जाएगा।
मैंने जल्द ही अपनी परिस्थितियों के खिलाफ ज़ोरदार विरोध करना शुरू कर दिया और मांग की कि मुझे प्रिटोरिया लोकल जेल में अन्य राजनीतिक कैदियों के साथ रखा जाए। उनमें रॉबर्ट सोबुकवे भी शामिल थे। मेरी विनती आखिरकार मान ली गई, लेकिन कर्नल जैकब्स ने मुझे कड़ी चेतावनी दी कि अगर मैं अपनी मनमानी पर वापस लौटा तो इसके गंभीर परिणाम होंगे। मुझे नहीं लगता कि मैंने अपने जीवन में कभी ठंडे मक्के के दलिया को खाने का इतना बेसब्री से इंतज़ार किया होगा।

साथ रहने की इच्छा के अलावा, मैं सोबुकवे और अन्य लोगों से बात करने के लिए उत्सुक था, जिनमें से अधिकांश पीएसी के सदस्य थे, क्योंकि मुझे लगा कि जेल में हम एक ऐसी एकता बना सकते हैं जो बाहर संभव नहीं है। जेल की परिस्थितियाँ विवादों को कम कर देती हैं और व्यक्तियों को उन चीजों को अधिक समझने में मदद करती हैं जो उन्हें विभाजित करने के बजाय एकजुट करती हैं।

जब मुझे बाकी लोगों के साथ आंगन में ले जाया गया, तो हमने एक-दूसरे का गर्मजोशी से अभिवादन किया। सोबुकवे के अलावा, वहाँ दक्षिण अफ्रीकी ट्रेड यूनियन कांग्रेस के एक प्रमुख सदस्य जॉन गेट्सवे, न्यू एज के लिए काम करने वाले एएनसी सदस्य आरोन मोलेट और एक प्रमुख कम्युनिस्ट, ट्रेड यूनियन नेता और पीएसी सदस्य स्टीफन टेफू भी मौजूद थे। रॉबर्ट ने मुझसे अपने अफ्रीकी दौरे का ब्यौरा देने को कहा, जो मैंने सहर्ष दिया। मैंने अफ्रीका के बाकी हिस्सों में पीएसी और एएनसी दोनों की छवि के बारे में खुलकर बताया। अपने ब्यौरा के अंत में मैंने कहा कि कुछ मुद्दे हैं जिन पर मैं चाहता हूँ कि हम चर्चा करें। लेकिन शुरू में सोबुकवे और मुझे कुछ समय के लिए एक-दूसरे के करीब रहने की अनुमति देने के बाद, अधिकारियों ने हमें अलग रखने के लिए हर संभव प्रयास किया। हम एक गलियारे के किनारे अलग-अलग कोठरियों में रहते थे और हमें विपरीत छोरों पर कोठरियाँ दी गई थीं।
कभी-कभार हमें जेल के प्रांगण में एक-दूसरे के बगल में बैठकर, पुराने खस्ताहाल डाक थैलों की सिलाई और मरम्मत करते हुए बात करने का मौका मिल जाता था। मैंने हमेशा सोबुकवे का सम्मान किया है और उन्हें एक संतुलित और समझदार व्यक्ति पाया है। लेकिन हमारे बीच मुख्य विषय, यानी जेल की स्थितियों पर, स्पष्ट मतभेद थे। सोबुकवे का मानना था कि खराब स्थितियों के खिलाफ लड़ना, राज्य के उन्हें जेल में डालने के अधिकार को स्वीकार करना होगा। मैंने जवाब दिया कि अपमानजनक परिस्थितियों में रहना हमेशा से अस्वीकार्य रहा है और इतिहास में राजनीतिक कैदियों ने जेल की स्थितियों में सुधार के लिए लड़ना अपना कर्तव्य माना है। सोबुकवे ने जवाब दिया कि जब तक देश नहीं बदलेगा, जेल की स्थितियाँ नहीं बदलेंगी। मैं इससे पूरी तरह सहमत था, लेकिन मुझे समझ नहीं आया कि यह हमें उस एकमात्र क्षेत्र में लड़ने से क्यों रोके जिसमें हम अब लड़ सकते हैं। हम इस मुद्दे को कभी सुलझा नहीं पाए, लेकिन जब हमने कमांडिंग ऑफिसर को जेल की स्थितियों के बारे में अपनी शिकायतें बताते हुए एक संयुक्त पत्र सौंपा, तो हमने कुछ प्रगति की। सोबुकवे ने जेल में कभी भी अपना आपा नहीं खोया। लेकिन प्रिटोरिया में वह थोड़ा संवेदनशील और चिड़चिड़ा हो गया था, और इसका कारण मैं स्टीफन टेफू को मानता हूँ। टेफू सोबुकवे के लिए एक तरह से उकसाने वाला बन गया था, उसे चिढ़ाता, ताना मारता और चुनौती देता रहता था। अच्छे समय में भी, टेफू एक मुश्किल इंसान था: चिड़चिड़ा, झगड़ालू और दबंग। वह वाक्पटु, ज्ञानी और

रूसी इतिहास का विशेषज्ञ भी था। सबसे बढ़कर, वह एक लड़ाकू था, लेकिन वह हर किसी से लड़ता था, यहाँ तक कि अपने दोस्तों से भी। टेफू और सोबुकवे का हर दिन झगड़ा होता था।
मैं सोबुकवे के साथ नीतिगत मुद्दों पर चर्चा करने के लिए उत्सुक था, और जिन मुद्दों पर मैंने उनसे बात की उनमें से एक पीएसी का नारा "1963 में स्वतंत्रता" था। 1963 बीत चुका था और स्वतंत्रता का कोई नामोनिशान नहीं था। मैंने सोबुकवे से कहा, "मेरे भाई, किसी नेता द्वारा ऐसी मांग करना, जिसे वह जानता है कि पूरा नहीं किया जा सकता, इससे ज्यादा खतरनाक कुछ नहीं होता। यह लोगों में झूठी उम्मीदें पैदा करता है।"
मैंने ये बात अत्यंत सम्मानपूर्वक कही, लेकिन टेफू बीच में कूद पड़ा और सोबुकवे को भला-बुरा कहने लगा। “बॉब,” उसने कहा, “मंडेला के सामने तुम्हारी टक्कर का कोई नहीं है। तुम जानते हो कि वो सही है।” टेफू इसी लहजे में बोलता रहा, जिससे सोबुकवे इतना चिढ़ गया कि उसने टेफू से कहा, “मुझे अकेला छोड़ दो।” लेकिन टेफू रुका नहीं। “बॉब, जनता तुम्हारा इंतज़ार कर रही है। वे तुम्हें मार डालेंगे क्योंकि तुमने उन्हें धोखा दिया है। तुम तो बस एक नौसिखिए हो, बॉब। तुम असली राजनेता नहीं हो।”
तेफू ने मुझे भी अलग-थलग करने की पूरी कोशिश की। हर सुबह जब भी वार्डर आते, वह उनसे किसी न किसी बात की शिकायत करता—खाने की, हालात की, गर्मी की या सर्दी की। एक दिन एक अधिकारी ने तेफू से कहा: “देखो, भाई, तुम हर सुबह शिकायत क्यों करते हो?”
स्टीव ने कहा, "मैं शिकायत इसलिए करता हूं क्योंकि शिकायत करना मेरा कर्तव्य है।"
“लेकिन, मंडेला को देखिए,” अधिकारी ने कहा, “वह हर दिन शिकायत नहीं करते।” “आह,” टेफू ने घृणा से कहा, “मंडेला तो एक छोटा बच्चा है जो गोरे आदमी से डरता है। मैं तो उसे जानता भी नहीं। एक सुबह जब मैं उठा तो देखा कि हर अखबार में ‘मंडेला, मंडेला, मंडेला’ लिखा था। मैंने मन ही मन सोचा, ‘ये मंडेला कौन है?’ मैं तुम्हें बताता हूँ कि मंडेला कौन है। ये एक ऐसा आदमी है जिसे तुम लोगों ने किसी अनजान वजह से इतना मशहूर कर दिया है। यही है मंडेला!”

* * *

दो सप्ताह के लिए वाल्टर हमारे साथ रहे, जिन पर हड़ताल भड़काने के आरोप में मुकदमा चल रहा था, जबकि मैं प्रिटोरिया में था। उन्हें छह साल की सजा सुनाई गई। जेल में हमें कई बार बात करने का मौका मिला और हमने वाल्टर की जमानत याचिका पर चर्चा की, जब तक उनकी अपील लंबित थी, जिसका मैंने तहे दिल से समर्थन किया। दो सप्ताह बाद उन्हें जमानत पर रिहा कर दिया गया और आंदोलन ने उन्हें भूमिगत होने का निर्देश दिया, जहाँ से उन्हें संघर्ष का नेतृत्व जारी रखना था, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया।
वॉल्टर के जाने के कुछ ही समय बाद, मैं सोबुकवे के साथ जेल अस्पताल जा रहा था, तभी मेरी नज़र लगभग पच्चीस गज की दूरी पर प्रांगण में नाना सीता पर पड़ी। सीता, जो 1952 में बोक्सबर्ग में हमारे विद्रोह का नेतृत्व करने वाले एक प्रतिष्ठित भारतीय कार्यकर्ता थे, को प्रिटोरिया के एक मजिस्ट्रेट ने उनके घर को खाली करने से इनकार करने के लिए दोषी ठहराया था। वह घर चालीस वर्षों से अधिक समय से उसी घर में रह रहे थे और उनका निवास स्थान समूह क्षेत्र अधिनियम के तहत "श्वेत" घोषित क्षेत्र में था। वे झुके हुए थे और गठिया की गंभीर बीमारी के बावजूद नंगे पैर होने के कारण मुझे अपनी चप्पलों में असहज महसूस हो रहा था। मैं उनसे मिलने जाना चाहता था, लेकिन हम छह वार्डरों की निगरानी में चल रहे थे।
अचानक और बिना किसी चेतावनी के, मुझे बेहोशी छा गई। मैं कंक्रीट पर गिर पड़ा और मेरी बाईं आंख के ऊपर गहरा घाव हो गया, जिसमें तीन टांके लगे। किले में मुझे उच्च रक्तचाप की बीमारी का पता चला था और कुछ गोलियां दी गई थीं। बेहोशी का कारण स्पष्ट रूप से इन गोलियों की अधिक मात्रा थी; मुझे वे गोलियां बंद कर दी गईं और कम नमक वाला आहार दिया गया, जिससे समस्या हल हो गई।
उस दोपहर विनी से मेरी पहली मुलाकात तय थी, जब से मुझे सज़ा सुनाई गई थी। टांके लगे हों या न लगे हों, मैं यह मुलाकात किसी भी कीमत पर छोड़ना नहीं चाहता था। मुझे देखकर वह बहुत चिंतित हुई, लेकिन मैंने उसे भरोसा दिलाया कि मैं ठीक हूँ और सारी बात समझा दी। फिर भी, अफवाहें फैल रही थीं कि मेरी तबीयत बिगड़ गई है।

53

अक्टूबर 1962 में, मेरे मुकदमे के दौरान, एएनसी ने 1959 के बाद अपना पहला वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया। चूंकि संगठन अवैध था, इसलिए सम्मेलन लोबत्से में हुआ, जो सीमा के ठीक पार बेचुआनालैंड में स्थित था। यह सम्मेलन एक मील का पत्थर था, क्योंकि इसने एएनसी और एमके को स्पष्ट रूप से जोड़ा। हालांकि राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने कहा, "हमारा जोर अभी भी जन राजनीतिक कार्रवाई पर है," उमखोंटो को "हमारे संघर्ष की सैन्य शाखा" के रूप में संदर्भित किया गया। ऐसा आंशिक रूप से पोको द्वारा किए जा रहे आतंकवाद के अधिक गैर-जिम्मेदार कृत्यों को दबाने के प्रयास में किया गया था। पोको, जिसका खोसा भाषा में अर्थ "स्वतंत्र" या "अकेला खड़ा" है, पीएसी से अप्रत्यक्ष रूप से जुड़ा हुआ था, और उनके आतंकवादी कृत्यों ने अफ्रीकी सहयोगियों और गोरों दोनों को निशाना बनाया। एएनसी चाहती थी कि लोग उसकी नई उग्रता को देखें, लेकिन यह भी देखें कि यह नियंत्रित और जिम्मेदार है। सरकार ने दुनिया को यह दिखाने के लिए "अलग विकास" कार्यक्रम को गति देने का फैसला किया था कि रंगभेद ने विभिन्न नस्लों को उनकी व्यक्तिगत "स्वतंत्रता" प्रदान की थी। इसका आदर्श उदाहरण ट्रांसकेई था। जनवरी 1962 में, वेरवोर्ड ने घोषणा की कि दक्षिण अफ्रीका ट्रांसकेई को "स्वशासन" प्रदान करने का इरादा रखता है। 1963 में, ट्रांसकेई एक "स्वशासी" मातृभूमि बन गया। नवंबर 1963 में, ट्रांसकेई विधान सभा के लिए चुनाव हुए। लेकिन तीन-तिहाई से एक से अधिक मतों के अंतर से, ट्रांसकेई के मतदाताओं ने मातृभूमि नीति के विरोधियों को चुना।
फिर भी बंटुस्तान प्रणाली लागू कर दी गई; मतदाताओं ने इसका विरोध किया था, लेकिन मतदान के माध्यम से उन्होंने इसमें भाग लिया। हालांकि मैं बंटुस्तान प्रणाली से घृणा करता था, मुझे लगा कि एएनसी को इस प्रणाली और इसमें शामिल लोगों को अपनी नीतियों के लिए एक मंच के रूप में इस्तेमाल करना चाहिए, खासकर इसलिए क्योंकि हमारे कई नेता अब कारावास, प्रतिबंध या निर्वासन के कारण अपनी बात कहने में असमर्थ थे।
बंटू अधिकारियों के खिलाफ आतंकवाद बढ़ गया। तोड़फोड़ की घटनाओं में वृद्धि के साथ-साथ सरकार की सतर्कता भी बढ़ गई। नए न्याय मंत्री जॉन

वॉर्स्टर, जिन्हें द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों को सरकार के समर्थन का विरोध करने के कारण स्वयं हिरासत में लिया गया था, एक अत्यंत भावहीन व्यक्ति थे। उनके लिए, विध्वंस का सबसे अच्छा और एकमात्र जवाब कठोर कार्रवाई ही थी।
1 मई, 1963 को सरकार ने उमखोंटो की कमर तोड़ने के उद्देश्य से एक कानून बनाया, जैसा कि वोर्स्टर ने कहा था। सामान्य कानून संशोधन अधिनियम, जिसे नब्बे-दिवसीय हिरासत कानून के नाम से जाना जाता है, ने बंदी प्रत्यक्षीकरण के अधिकार को समाप्त कर दिया और किसी भी पुलिस अधिकारी को राजनीतिक अपराध के संदेह के आधार पर बिना वारंट के किसी भी व्यक्ति को हिरासत में लेने का अधिकार दे दिया। गिरफ्तार किए गए लोगों को बिना मुकदमे, आरोप, वकील से परामर्श या आत्म-अपराध स्वीकारोक्ति से सुरक्षा के बिना नब्बे दिनों तक हिरासत में रखा जा सकता था। वोर्स्टर के भयावह शब्दों में कहें तो, नब्बे दिनों की हिरासत को "अनंत काल तक" बढ़ाया जा सकता था। इस कानून ने देश को एक पुलिस राज्य में बदलने में मदद की; कोई भी तानाशाह नब्बे-दिवसीय हिरासत कानून द्वारा अधिकारियों को दी गई शक्ति से अधिक शक्ति की लालसा नहीं कर सकता था। परिणामस्वरूप, पुलिस और भी क्रूर हो गई: कैदियों को नियमित रूप से पीटा जाता था और जल्द ही हमें बिजली के झटके, दम घोंटने और यातना के अन्य रूपों की खबरें सुनने को मिलीं। संसद में, उदारवादी प्रगतिशील पार्टी की प्रतिनिधि हेलेन सुज़मैन ने इस अधिनियम के विरुद्ध एकमात्र मत दिया। अवैध संगठनों की सदस्यता के लिए दंड बढ़ा दिए गए; साम्यवाद या अन्य प्रतिबंधित संगठनों के उद्देश्यों को आगे बढ़ाने के लिए पाँच वर्ष से लेकर मृत्युदंड तक की सजा का प्रावधान किया गया। जैसा कि मुझे मई 1963 में पता चला, जब सोबुकवे की तीन साल की सजा पूरी हुई, तो राजनीतिक कैदियों को फिर से हिरासत में ले लिया गया; सरकार ने उसे रिहा करने के बजाय बिना आरोप लगाए ही फिर से हिरासत में ले लिया और फिर उसे रॉबेन द्वीप भेज दिया। वोर्स्टर ने जून 1962 के तोड़फोड़ अधिनियम का भी समर्थन किया, जिसने नज़रबंदी और अदालत में चुनौती न दिए जा सकने वाले अधिक कठोर प्रतिबंधों की अनुमति दी, जिससे नागरिकों की स्वतंत्रताएँ केवल चरम फासीवादी तानाशाही में रहने वालों तक ही सीमित हो गईं। तोड़फोड़ के लिए न्यूनतम पाँच वर्ष की बिना पैरोल की सज़ा और अधिकतम मृत्युदंड का प्रावधान था। अधिनियम की भाषा इतनी व्यापक थी कि अतिक्रमण या अवैध रूप से हथियार रखना जैसी गतिविधियाँ

भी तोड़फोड़ की श्रेणी में आ सकती थीं। संसद के एक अन्य अधिनियम ने प्रतिबंधित व्यक्ति द्वारा दिए गए किसी भी बयान के पुनरुत्पादन पर रोक लगा दी। मैंने जो कुछ भी कहा या कभी कहा था, उसे समाचार पत्रों में प्रकाशित नहीं किया जा सकता था। 1962 के अंत में न्यू एज पर प्रतिबंध लगा दिया गया, और प्रतिबंधित प्रकाशन रखना एक आपराधिक अपराध बन गया, जिसके लिए दो साल तक की कैद की सज़ा हो सकती थी। नज़रबंदी का भी प्रावधान किया गया था, जिसका सबसे प्रसिद्ध उदाहरण श्वेत राजनीतिक कार्यकर्ता हेलेन जोसेफ पर लागू किया गया था।

54

मई के अंत में एक रात, एक वार्डर मेरी कोठरी में आया और मुझे अपना सामान पैक करने का आदेश दिया। मैंने उससे पूछा क्यों, लेकिन उसने कोई जवाब नहीं दिया। दस मिनट से भी कम समय में, मुझे रिसेप्शन ऑफिस ले जाया गया जहाँ मुझे तीन अन्य राजनीतिक कैदी मिले: टेफू, जॉन गेट्सेवे और आरोन मोलेट। कर्नल ऑकैम्प ने हमें संक्षिप्त रूप से बताया कि हमें स्थानांतरित किया जा रहा है। कहाँ? टेफू ने पूछा। एक बहुत ही सुंदर जगह, ऑकैम्प ने कहा। कहाँ? टेफू ने फिर पूछा। “डाई ईलैंड,” ऑकैम्प ने कहा। द्वीप। केवल एक ही द्वीप था। रॉबेन द्वीप।
हम चारों को एक साथ जंजीरों से बांधकर एक बिना खिड़की वाली वैन में डाल दिया गया, जिसमें सिर्फ एक सैनिटरी बाल्टी थी। हम पूरी रात केप टाउन के लिए सफर करते रहे और देर दोपहर शहर के बंदरगाह पर पहुंचे। चलती वैन में जंजीरों से बंधे पुरुषों के लिए सैनिटरी बाल्टी का इस्तेमाल करना आसान या सुखद काम नहीं होता।
केप टाउन के बंदरगाह सशस्त्र पुलिसकर्मियों और घबराए हुए सादे कपड़ों वाले अधिकारियों से भरे हुए थे। हमें जंजीरों में जकड़े हुए, पुरानी लकड़ी की नौका के निचले हिस्से में खड़ा रहना पड़ा, जो तट के पास लहरों में जहाज के हिलने के कारण मुश्किल था। ऊपर एक छोटा सा पोर्टहोल ही रोशनी और हवा का एकमात्र स्रोत था। उस पोर्टहोल का एक और उद्देश्य भी था: ऊपर से पहरेदार हम पर पेशाब करने का आनंद लेते थे। जब हमें डेक पर ले जाया गया तब भी उजाला था और हमने पहली बार द्वीप देखा। हरा-भरा और सुंदर, यह पहली नज़र में जेल से ज़्यादा एक रिसॉर्ट जैसा लग रहा था।
एसिक्विथिनी। द्वीप पर। केप टाउन के तट से आठ मील दूर स्थित चट्टान के संकरे, हवादार हिस्से को खोसा लोग इसी नाम से पुकारते हैं। हर कोई जानता है कि आप किस द्वीप की बात कर रहे हैं। मैंने इस द्वीप के बारे में पहली बार बचपन में सुना था। रॉबेन द्वीप खोसा लोगों के बीच तब प्रसिद्ध हुआ जब चौथे खोसा युद्ध में खोसा सेना के छह फुट छह इंच लंबे कमांडर मकाना (जिन्हें नेक्सेले के नाम से भी जाना जाता है) को 1819 में ग्राहमस्टाउन के खिलाफ दस हजार योद्धाओं का नेतृत्व करने के बाद अंग्रेजों ने वहाँ निर्वासित कर

दिया था। उन्होंने नाव से रॉबेन द्वीप से भागने की कोशिश की, लेकिन तट पर पहुँचने से पहले ही डूब गए। उस क्षति की स्मृति मेरे लोगों की भाषा में रची-बसी है, जो "उकुज़ा कुका नेक्सेले" वाक्यांश से "निराशाजनक आशा" की बात करते हैं।
मकाना द्वीप पर कैद होने वाले पहले अफ्रीकी नायक नहीं थे। 1658 में, ऑटशुमाओ, जिन्हें यूरोपीय इतिहासकार हैरी द स्ट्रैंडलोपर के नाम से जानते हैं, को खोई खोई और डचों के बीच युद्ध के दौरान जान वैन रीबीक द्वारा निर्वासित कर दिया गया था। मुझे ऑटशुमाओ की स्मृति से सांत्वना मिली, क्योंकि वे रॉबेन द्वीप से भागने वाले पहले और एकमात्र व्यक्ति माने जाते हैं, और उन्होंने एक छोटी नाव में बैठकर मुख्य भूमि तक पहुंचकर ऐसा किया था।
इस द्वीप का नाम सील के लिए इस्तेमाल होने वाले डच शब्द से लिया गया है, जिनमें से सैकड़ों सीलें कभी बर्फीली बेंग्वेला धाराओं में उछल-कूद करती थीं, जो इसके तटों से टकराती हैं। बाद में इस द्वीप को कुष्ठ रोगियों की बस्ती, पागलखाने और नौसैनिक अड्डे में बदल दिया गया। सरकार ने हाल ही में इस द्वीप को फिर से जेल में परिवर्तित किया है।

* * *

हमारा सामना हट्टे-कट्टे गोरे पहरेदारों के एक समूह से हुआ जो चिल्ला रहे थे: “यह द्वीप है! यहीं तुम्हारी मौत होगी!” (यही द्वीप है। यहीं तुम्हारी मौत होगी!) हमारे सामने कई पहरेदारों से घिरा एक परिसर था। परिसर तक जाने वाले रास्ते पर सशस्त्र पहरेदार तैनात थे। माहौल बेहद तनावपूर्ण था। एक लंबे, लाल चेहरे वाले पहरेदार ने हम पर चिल्लाते हुए कहा: “मैं ही तुम्हारा बॉस हूँ!” (यही मैं हूँ!) वह कुख्यात क्लेन्हांस भाइयों में से एक था, जो कैदियों के प्रति अपनी क्रूरता के लिए जाने जाते थे। पहरेदार हमेशा अफ़्रीकी भाषा में बात करते थे। अगर आप अंग्रेज़ी में जवाब देते तो वे कहते, “मुझे उस काफ़िर-प्रेमी की भाषा समझ नहीं आती।” (मुझे उस काफ़िर-प्रेमी की भाषा समझ नहीं आती।)
जैसे ही हम जेल की ओर बढ़े, पहरेदार चिल्लाने लगे, “दो-दो! दो-दो!” — यानी हमें दो-दो करके चलना था, दो आगे, दो पीछे। मैं टेफू के साथ हो लिया।

पहरेदार चिल्लाने लगे, “हास! … हास?” हास शब्द का अर्थ अफ़्रीकी भाषा में “चलना” होता है, लेकिन आमतौर पर यह मवेशियों के लिए इस्तेमाल होता है। वार्डर हमसे दौड़ने की मांग कर रहे थे, और मैंने तेफू की ओर मुड़कर धीरे से कहा कि हमें एक उदाहरण पेश करना होगा; अगर हम अभी हार मान लेते हैं तो हम उनकी दया पर निर्भर हो जाएंगे। तेफू ने सहमति में सिर हिलाया। हमें उन्हें दिखाना था कि हम आम अपराधी नहीं बल्कि राजनीतिक कैदी हैं जिन्हें अपने विश्वासों के लिए सज़ा दी जा रही है।
मैंने टेफू को इशारा किया कि हम दोनों आगे चलें, और हम आगे चल दिए। आगे पहुँचने पर हमने अपनी चाल धीमी कर दी, धीरे-धीरे और सधे हुए चलने लगे। पहरेदार हैरान थे। क्लेन्हांस ने कहा, “सुनो, यह जोहान्सबर्ग नहीं है, यह प्रिटोरिया नहीं है, यह रॉबेन द्वीप है, और यहाँ हम किसी भी तरह की अवज्ञा बर्दाश्त नहीं करेंगे। हास! हास!” लेकिन हम अपनी शान से चलते रहे। क्लेन्हांस ने हमें रुकने का आदेश दिया और हमारे सामने खड़े होकर बोले, “देखो, हम तुम्हें मार डालेंगे, हम मज़ाक नहीं कर रहे हैं, तुम्हारी पत्नियों, बच्चों, माताओं और पिताओं को कभी पता नहीं चलेगा कि तुम्हारा क्या हुआ। यह आखिरी चेतावनी है। हास! हास!”
इस पर मैंने कहा: “तुम्हारा अपना कर्तव्य है और हमारा अपना।” मैंने ठान लिया था कि हम हार नहीं मानेंगे, और हमने हार नहीं मानी, क्योंकि हम पहले ही कोठरियों में पहुँच चुके थे। हमें एक आयताकार पत्थर की इमारत में ले जाया गया और एक बड़े खुले कमरे में पहुँचा दिया गया। फर्श पर कुछ इंच गहरा पानी भरा हुआ था। पहरेदार चिल्ला रहे थे: “कपड़े उतारो! कपड़े उतारो!” (कपड़े उतारो!) जैसे ही हम अपने कपड़े उतारते, पहरेदार उसे पकड़ लेते, जल्दी से तलाशी लेते और फिर पानी में फेंक देते। जैकेट उतारो, तलाशी लो, पानी में फेंक दो। फिर पहरेदारों ने हमें कपड़े पहनने का आदेश दिया, जिसका मतलब था कि हम अपने भीगे हुए कपड़े पहन लें।
दो अधिकारी कमरे में दाखिल हुए। उनमें से कम वरिष्ठ अधिकारी कप्तान थे, जिनका नाम गेरिक था। शुरू से ही हम समझ गए थे कि उनका इरादा हमें पीटने का था। कप्तान ने हम चारों में सबसे छोटे और बेहद शांत स्वभाव के आरोन मोलेट की ओर इशारा करते हुए कहा, "तुम्हारे बाल इतने लंबे क्यों हैं?" आरोन ने कुछ नहीं कहा। कप्तान चिल्लाए, "मैं तुमसे बात कर रहा हूँ! तुम्हारे बाल इतने लंबे क्यों हैं? यह नियमों के विरुद्ध है। तुम्हारे बाल कटवा लेने

चाहिए थे। ये इतने लंबे क्यों हैं..." फिर वे रुके और मेरी ओर मुड़कर बोले, "...इस लड़के जैसे!" मेरी ओर इशारा करते हुए। मैंने बोलना शुरू किया, "देखो, हमारे बालों की लंबाई नियमों के अनुसार तय होती है..."
मेरी बात पूरी होने से पहले ही, वह अविश्वास से चिल्लाया: "मुझसे कभी इस तरह बात मत करना, लड़के!" और आगे बढ़ने लगा। मैं डर गया था; यह जानकर अच्छा नहीं लगता कि कोई आप पर हमला करने वाला है और आप अपना बचाव करने में असमर्थ हैं।
जब वह मुझसे कुछ ही कदम दूर था, तो मैंने पूरी दृढ़ता से कहा, “अगर तुमने मुझ पर हाथ भी उठाया, तो मैं तुम्हें देश की सबसे बड़ी अदालत में ले जाऊँगा और जब मेरा हिसाब चुकता हो जाएगा, तो तुम बिल्कुल कंगाल हो जाओगे।” जैसे ही मैंने बोलना शुरू किया, वह रुक गया, और मेरी बात खत्म होते-होते वह हैरानी से मुझे घूर रहा था। मैं खुद भी थोड़ा हैरान था। मैं डरा हुआ था, और मैंने साहस से नहीं, बल्कि दिखावे के लिए ऐसा कहा था। ऐसे समय में, अंदर की भावनाओं के बावजूद, इंसान को हिम्मत दिखानी पड़ती है।
“तुम्हारा टिकट कहाँ है?” उसने पूछा, और मैंने उसे टिकट दे दिया। मैं देख सकता था कि वह घबराया हुआ था। “तुम्हारा नाम क्या है?” उसने कहा। मैंने टिकट की ओर इशारा करते हुए कहा, “यहाँ लिखा है।” उसने पूछा, “तुम्हें कितने समय के लिए जेल में रहना है?” मैंने फिर से टिकट की ओर इशारा करते हुए कहा, “यहाँ लिखा है।” उसने नीचे देखा और कहा, “पाँच साल! तुम्हें पाँच साल की सज़ा मिली है और तुम इतने घमंडी हो! क्या तुम्हें पता है कि पाँच साल जेल में बिताने का क्या मतलब होता है?” मैंने कहा, “यह मेरा निजी मामला है। मैं पाँच साल जेल में बिताने के लिए तैयार हूँ, लेकिन मैं किसी के दबाव में नहीं आऊँगा। आपको कानून के दायरे में रहकर काम करना होगा।”
किसी ने भी उन्हें यह नहीं बताया था कि हम कौन हैं, या हम राजनीतिक कैदी हैं, या मैं एक वकील हूँ। मैंने खुद इस बात पर ध्यान नहीं दिया था, लेकिन दूसरा अधिकारी, एक लंबा, शांत स्वभाव का आदमी, हमारी बहस के दौरान गायब हो गया था; बाद में मुझे पता चला कि वह कर्नल स्टेन थे, रॉबेन द्वीप के कमांडिंग ऑफिसर। फिर कप्तान चले गए, पहले की तुलना में कहीं अधिक शांत होकर।

हम तब अकेले थे और स्टीव, जो बहुत घबराया हुआ था, लगातार बोलता जा रहा था। उसने कहा, "हमने बोअर लोगों को उकसा दिया है। अब हमारा बुरा समय आने वाला है।" वह बोल ही रहा था कि लेफ्टिनेंट प्रेटोरियस नाम का एक हट्टा-कट्टा आदमी अंदर आया। हमें आश्चर्य हुआ कि प्रेटोरियस ने हमसे ज़ोसा भाषा में बात की, जिसे वह अच्छी तरह जानता था। उसने स्टीव की ओर इशारा करते हुए कहा, "हमने आपके रिकॉर्ड देखे हैं और वे इतने बुरे नहीं हैं। सिवाय इस एक के। आपका रिकॉर्ड बहुत खराब है।"
स्टीव भड़क उठा। “तुम कौन होते हो मुझसे इस तरह बात करने वाले? तुम कहते हो मेरा रिकॉर्ड खराब है। तुमने मेरी फाइलें पढ़ी हैं, है ना? खैर, तुम्हें पता चलेगा कि ये सभी दोषसिद्धि उन मामलों में थीं जिनमें मैंने अपने लोगों के अधिकारों के लिए लड़ाई लड़ी थी। मैं अपराधी नहीं हूँ; अपराधी तुम हो।” फिर लेफ्टिनेंट ने स्टीव को चेतावनी दी कि अगर उसने दोबारा उससे इस तरह बात की तो वह उस पर मुकदमा चलाएगा। जाने से पहले, लेफ्टिनेंट ने कहा कि वह हमें बाहर की ओर खुलने वाली खिड़कियों वाली एक बड़ी कोठरी में रख रहा है और फिर बड़े ही डरावने लहजे में कहा, “लेकिन मैं नहीं चाहता कि तुम उन खिड़कियों से किसी से बात करो, खासकर तुम, मंडेला।”
फिर हमें हमारी कोठरी में ले जाया गया, जो मैंने अब तक देखी सबसे अच्छी कोठरियों में से एक थी। खिड़कियाँ बड़ी थीं और आसानी से पहुँच में थीं। एक खिड़की से हम दूसरे कैदियों और वार्डरों को आते-जाते देख सकते थे। कोठरी काफी विशाल थी, हम चारों के लिए पर्याप्त थी, और उसमें अपने शौचालय और शॉवर भी थे।
दिन बहुत थका देने वाला था और थोड़ी देर बाद, ठंडे दलिया का रात का खाना खाने के बाद, बाकी लोग सो गए। मैं फर्श पर अपने कंबल पर लेटा हुआ था, तभी मुझे खिड़की पर दस्तक सुनाई दी। मैंने ऊपर देखा तो एक गोरा आदमी मुझे शीशे के पास आने का इशारा कर रहा था। मुझे लेफ्टिनेंट की चेतावनी याद आ गई और मैं वहीं रुका रहा।
तभी मैंने उस आदमी को फुसफुसाते हुए सुना: “नेल्सन, इधर आओ।” यह जानकर कि वह मेरा नाम जानता था, मुझे जिज्ञासा हुई और मैंने जोखिम उठाने का फैसला किया। मैं खिड़की के पास गया और उसे देखा। उसे शायद एहसास हो गया था कि मैं उसे गोरा समझ रहा हूँ, क्योंकि उसने सबसे पहले फुसफुसाते हुए कहा, “मैं

ब्लोमफोंटेन का एक अश्वेत वार्डर हूँ।” फिर उसने मुझे मेरी पत्नी के बारे में खबर दी। जोहान्सबर्ग के अखबारों में खबर आई थी कि मेरी पत्नी मुझसे प्रिटोरिया लोकल में मिलने आई थी, लेकिन उन्होंने उसे यह नहीं बताया था कि मुझे रॉबेन द्वीप ले जाया गया है। मैंने जानकारी के लिए उसका धन्यवाद किया।
“क्या तुम सिगरेट पीते हो?” उसने पूछा। मैंने कहा कि मैं नहीं पीता, और वह थोड़ा निराश हुआ। तभी मुझे एक विचार आया: “हाँ, लेकिन मेरे साथी पीते हैं।” यह सुनकर वह खुश हो गया और बोला कि कुछ ही मिनटों में तंबाकू और सैंडविच लेकर वापस आएगा। अब सब जाग चुके थे। तेफू और जॉन गेट्सेवे ने सिगरेट पी, मैंने तंबाकू की थैली उन दोनों में बाँट दी, और हम सबने सैंडविच आपस में बाँट लिए।
अगले कुछ हफ्तों तक, अश्वेत वार्डर लगभग हर रात तंबाकू और सैंडविच लेकर आता था। और हर रात मैं तंबाकू को तेफू और गेट्सेवे के बीच बराबर बाँट देता था। वार्डर बड़ा जोखिम उठा रहा था, और उसने मुझे चेतावनी दी थी कि वह केवल मुझसे सीधे बात करने को तैयार है, अन्यथा यह समझौता रद्द हो जाएगा।

जब हम द्वीप पर पहुँचे तो हमें इस बात का कोई अंदाज़ा नहीं था कि वहाँ कितने और कैदी हैं। कुछ ही दिनों में हमें पता चला कि वहाँ लगभग एक हज़ार लोग थे, सभी अफ़्रीकी, सभी हाल ही में आए हुए। इनमें से ज़्यादातर लोग सामान्य कानून के तहत कैदी थे, लेकिन मुझे पता था कि उनमें कुछ राजनीतिक कैदी भी होंगे। मैं उनसे संपर्क करना चाहता था, लेकिन हम पूरी तरह से अलग-थलग थे। पहले कुछ दिनों तक हमें अपनी कोठरी में बंद रखा गया और बाहर जाने की भी अनुमति नहीं थी। हमने अन्य कैदियों की तरह काम पर ले जाने की मांग की, और यह मांग जल्द ही मान ली गई, लेकिन हमें क्लेन्हांस की निगरानी में अकेले ही बाहर ले जाया जाता था। हमारा पहला काम कुछ नई बिछाई गई पाइपलाइन को ढकना था और हम एक छोटी पहाड़ी पर थे जहाँ से द्वीप का कुछ हिस्सा दिखाई देता था, जो जंगली और सुंदर था।
पहले दिन हमने खूब मेहनत की, लेकिन अगले हर दिन क्लेन्हांस ने हमें और भी ज़्यादा काम करने के लिए प्रेरित किया। वह यह काम बड़े ही बेरुखे ढंग से

करता था, जैसे कोई घोड़े या गाय को आगे बढ़ने के लिए उकसाता है। “नहीं, यार। चलो! आगे बढ़ो!” (नहीं, यार। चलो। आगे बढ़ो!) एक बार स्टीव, जो हम सब से उम्र में बड़ा था, ने अपना फावड़ा नीचे रख दिया और क्लेन्हांस ने तुरंत उसे धमकाया। लेकिन स्टीव ने अफ़्रीकी भाषा में जवाब दिया: “अज्ञानी, जो अपनी भाषा भी ठीक से नहीं बोल सकता – तुम मुझे यह नहीं बता सकते कि मुझे क्या करना है। मैं अपनी गति से काम करूँगा, मैं यही करने को तैयार हूँ, और मैं बस इतना ही कर सकता हूँ।” फिर, बड़े ही सम्मान के साथ, उसने अपना फावड़ा उठाया और काम पर लग गया। स्टीव अफ़्रीकी भाषा का शिक्षक था, और वह न केवल एकदम सही अफ़्रीकी भाषा बोलता था, बल्कि उसकी मूल भाषा, उच्च डच भी बोलता था। स्टीव वार्डरों से ऐसे घमंडी और आडंबरपूर्ण अंदाज़ में बात करता था जिसे शायद वे समझ नहीं पाते थे। लेकिन वे जानते थे कि उससे ज़बानी बहस करना ठीक नहीं है।
द्वीप पर क्लेन्हांस परिवार के दो भाई थे, दोनों ही कैदियों पर बेरहमी से हमला करने के लिए बदनाम थे। हमारी देखभाल बड़ा भाई करता था, जिसे शायद संयम बरतने की चेतावनी दी गई थी, क्योंकि उसने हमें कभी छुआ तक नहीं। छोटा भाई ऐसी किसी पाबंदी में नहीं था। एक दिन, हम काम से लौट रहे थे और एक सड़क पर चल रहे थे, तभी हमने देखा कि सैकड़ों कैदी ठेले में रेत ढो रहे थे। वे गैर-राजनीतिक कैदी थे और हमारे दोनों समूहों को रुकने का आदेश दिया गया, जबकि दोनों भाई आपस में बातचीत कर रहे थे; छोटा भाई बात करते हुए अपने एक आदमी को अपने जूते पॉलिश करने का आदेश दे रहा था। मैंने दूसरे समूह के कुछ लोगों को पहचान लिया, वे वही थे जिन्हें 1958 के सेखुखुनेलैंड किसान विद्रोह में मौत की सजा सुनाई गई थी, और मैंने उन्हें बेहतर ढंग से देखने के लिए पीछे मुड़कर देखा। छोटे भाई ने मुझे अशिष्टता से दूसरी तरफ देखने का आदेश दिया। मुझे नहीं पता कि अगर मैं दूसरे कैदियों के सामने न होता तो मैं क्या प्रतिक्रिया देता, लेकिन अब मेरी इज्जत दांव पर लगी थी। मैंने पीछे मुड़ने से इनकार कर दिया। छोटा क्लेन्हांस मुझ पर हमला करने के स्पष्ट इरादे से आगे बढ़ा, लेकिन जब वह कुछ कदम दूर था, तो उसका भाई दौड़कर आया, उसे पकड़ लिया, कुछ शब्द फुसफुसाए, और घटना समाप्त हो गई।
एक दिन हमसे मिलने जेल प्रमुख आए, जो रॉबेन द्वीप के सभी जेलों का संचालन करते थे और हमारी शिकायतें सुनने आए थे। थेरॉन एक चिड़चिड़े स्वभाव के व्यक्ति थे, जिन्हें कैदियों से आमने-सामने बात करना पसंद नहीं था। मैं

उन्हें नाराज़ नहीं करना चाहता था, लेकिन मैं उनके सामने झुकने को भी तैयार नहीं था। मैंने समूह की ओर से कहा, "हम आभारी हैं कि आप हमसे मिलने आए हैं, क्योंकि हमें कई समस्याएँ हैं, जिन्हें आप हल कर सकते हैं।" मैंने अपनी समस्याएँ गिनाईं और जब मैंने अपनी बात समाप्त की, तो उन्होंने कहा, "मैं देखता हूँ कि मैं क्या कर सकता हूँ।"
शायद उसे लगा कि उसने आसानी से हार मान ली है, क्योंकि बाहर निकलते समय वह बड़े पेट वाले टेफू की ओर मुड़ा और बोला, "Jou groot pens sal in die plek verdwyn," जिसका अफ़्रीकी भाषा में अर्थ है, "तुम्हारा यह बड़ा पेट यहाँ जेल में गायब हो जाएगा।" 'पेंस' का अर्थ पेट होता है, लेकिन इसका प्रयोग भेड़ या गाय जैसे जानवरों के पेट के लिए किया जाता है। मनुष्य के पेट के लिए शब्द 'maag' है।
स्टीव को जेल प्रमुख का ताना बिल्कुल पसंद नहीं आया, और वह अपमान को चुप नहीं रहने दे सकता था। उसने कहा, "कैप्टन, आप जानते हैं, आप मेरे साथ ऐसा कुछ नहीं कर सकते जिससे मुझ पर कोई असर पड़े, क्योंकि मैं दुनिया के सबसे क्रांतिकारी राजनीतिक संगठन, कम्युनिस्ट पार्टी का सदस्य हूँ, जिसका दुनिया भर में शोषित लोगों की सेवा का गौरवशाली इतिहास है। आप और आपकी तुच्छ नेशनल पार्टी इतिहास के कूड़ेदान में पड़े होंगे, जबकि हम दुनिया पर राज करेंगे। मैं आपके मूर्ख राष्ट्रपति से कहीं अधिक अंतरराष्ट्रीय स्तर पर प्रसिद्ध हूँ। आप कौन हैं? एक मामूली पदाधिकारी, जिस पर ध्यान देने की भी ज़रूरत नहीं है। जब तक मैं जेल से बाहर निकलूंगा, तब तक मैं आपका नाम भी नहीं जान पाऊंगा।" थेरॉन मुड़ा और चला गया।

हमारे अश्वेत वार्डर की रात की नियमित मुलाक़ातें द्वीप की कठोरता को काफी हद तक कम कर देती थीं। लेकिन इस सुविधा के बावजूद भी स्टीव संतुष्ट नहीं था। टेफू बहुत ज़्यादा धूम्रपान करता था; वह कभी-कभी पूरी रात सिगरेट पीता रहता था, जिससे अगले दिन के लिए उसके पास तंबाकू नहीं बचता था। वहीं, गेट्सेवे तंबाकू बचाकर रखता था और कभी खत्म नहीं होता था। एक शाम, बहुत चिड़चिड़े मूड में, टेफू ने मुझसे कहा, “नेल्सन, तुम मुझे धोखा दे रहे हो। तुम गेट्सेवे को मुझसे ज़्यादा तंबाकू दे रहे हो।”

मैंने अपने लोगों के प्रति अपनी निष्ठा के लिए बहुत कष्ट सहा है। तुम यहाँ जेल के नेता हो, और तुम मुझे इस तरह सज़ा दे रहे हो। यह उचित नहीं है, नेल्सन।”
उसने मेरी कमज़ोरी पर वार किया था। मुझे ऐसा लगा जैसे मैंने अपनी शक्ति का दुरुपयोग किया हो। वास्तव में, उसे मुझसे कहीं ज़्यादा तकलीफ़ हुई थी। मैंने अपना आधा सैंडविच भी नहीं खाया था, और मैंने तुरंत उसे दे दिया। मैंने गेट्सेवे को जगाया—मैंने सारा तंबाकू उसे दे दिया था—और उससे पूछा कि क्या वह इसे टेफू के साथ बाँटेगा। टेफू हमेशा से ही मुश्किल था, लेकिन उस घटना के बाद से उसका व्यवहार काफ़ी बेहतर हो गया।

काम शुरू करने के बाद, मुझे द्वीप पर अन्य कैदियों के जीवन के बारे में कुछ जानकारी मिली। अधिकारियों ने पीएसी के कुछ युवा राजनीतिक कैदियों को हमारी कोठरियों के सामने वाली कोठरियों में स्थानांतरित कर दिया था। रात में, हम सलाखों वाले दरवाजे के माध्यम से उनसे बात कर पाते थे। मुझे पता चला कि इन युवकों में नक़ाबेनी मेन्ये भी था, जो मक़हेकेज़वेनी का रहने वाला मेरा भतीजा था, जिसे मैंने आखिरी बार 1941 में देखा था, जब वह एक शिशु था।
हमने ट्रांसकेई के बारे में बातचीत की और पारिवारिक इतिहास के बारे में जानकारी साझा की। एक रात, जब उसके दोस्त उसके आसपास जमा थे, उसने पूछा, "चाचा जी, आप किस संगठन से जुड़े हैं?" मैंने कहा, "एएनसी से, बिल्कुल।" मेरे जवाब से उन युवकों में खलबली मच गई और अचानक खिड़की से उनके चेहरे गायब हो गए। कुछ देर बाद, मेरा भतीजा फिर प्रकट हुआ और मुझसे पूछा कि क्या मैं कभी पीएसी का सदस्य रहा हूँ। मैंने जवाब दिया कि नहीं। फिर उसने कहा कि उसने सुना था कि मैंने अफ्रीका दौरे के दौरान पीएसी ज्वाइन किया था। मैंने उसे बताया कि ऐसा नहीं है, मैं हमेशा से एएनसी का सदस्य रहा हूँ और हमेशा रहूँगा। इससे उनमें फिर से निराशा फैल गई और वे गायब हो गए।
बाद में मुझे पता चला कि पीएसी के प्रचार में दावा किया गया था कि जब मैं महाद्वीप के किसी अन्य हिस्से में यात्रा कर रहा था, तब मैं संगठन में शामिल हो गया था। यह सुनकर मुझे खुशी तो नहीं हुई, लेकिन आश्चर्य भी नहीं

हुआ। राजनीति में, इस बात को कभी कम नहीं आंका जा सकता कि लोग किसी स्थिति के बारे में कितना कम जानते हैं। कुछ देर बाद मेरा भतीजा वापस आया और उसने मुझसे पूछा कि क्या मैं प्रिटोरिया लोकल में सोबुकवे से मिला और बात की थी। मैंने कहा कि हाँ, और हमारी बहुत अच्छी बातचीत हुई थी। इससे वे खुश हुए और उन्होंने शुभ रात्रि कहा, और उसके बाद मैंने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।

कुछ घंटों बाद उसी शाम एक कप्तान हमारी कोठरी में आया और हम चारों को अपना सामान समेटने का आदेश दिया। कुछ ही मिनटों में मेरे साथियों को ले जाया गया, और मैं कोठरी में अकेला रह गया। जेल में, अपने साथियों को अलविदा कहने का मौका मिलना भी सौभाग्य की बात होती है। महीनों तक किसी के साथ बेहद करीबी रिश्ता बना रहता है, और फिर कभी उस व्यक्ति को देख नहीं पाते। यह अमानवीय है, क्योंकि इससे व्यक्ति को अधिक आत्म-नियंत्रित और अलग-थलग होकर खुद को ढालना पड़ता है।
अब जब मैं अकेला था, तो मुझे थोड़ी घबराहट भी हो रही थी। कभी-कभी भीड़ में सुरक्षा होती है; अकेले होने पर कोई गवाह नहीं होता। मुझे एहसास हुआ कि मुझे खाना नहीं दिया गया था, और मैंने दरवाज़ा पीटते हुए कहा: "वार्डर, मुझे मेरा खाना नहीं मिला है।"
“तुम्हें मुझे बॉस कहना होगा,” वह चिल्लाया। उस रात मुझे भूखा रहना पड़ा। अगली सुबह तड़के मुझे प्रिटोरिया वापस ले जाया गया। जेल विभाग ने प्रेस को एक बयान जारी किया कि मुझे मेरी सुरक्षा के लिए द्वीप से हटाया गया था क्योंकि पीएसी के कैदी मुझ पर हमला करने की योजना बना रहे थे। यह सरासर झूठ था; वे मुझे अपने निजी मकसद से प्रिटोरिया वापस लाए थे, जो जल्द ही स्पष्ट हो गया।
मुझे प्रिटोरिया लोकल जेल में एकांत कारावास में रखा गया था। लेकिन कैदी बहुत समझदार होते हैं और जल्द ही मुझे वहां मौजूद एएनसी के कुछ लोगों से गुप्त संदेश और अन्य सूचनाएँ मिलने लगीं। मुझे हेनरी फाज़ी का संदेश मिला, जो एमके कार्यकर्ताओं में से एक थे और जिन्होंने इथियोपिया में सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था और दक्षिण अफ्रीका लौटने की कोशिश करते समय

गिरफ्तार किए गए थे। वे तोड़फोड़ अधिनियम के तहत मुकदमा चलाए जाने वाले पहले एएनसी सदस्यों में से थे।
जेल के अंदरूनी सूत्रों के ज़रिए मैंने उनकी बचाव में मदद करने की कोशिश की और उन्हें हेरोल्ड वोल्पे से संपर्क करने का सुझाव दिया। बाद में मुझे पता चला कि वोल्पे पुलिस हिरासत में है। यह मेरा पहला संकेत था कि कुछ गंभीर गड़बड़ हो गई है। एक दिन, अभ्यास के बाद जब मुझे आंगन से बाहर ले जाया जा रहा था, तो मैंने एंड्रयू म्लांगेनी को देखा। मैंने उसे आखिरी बार सितंबर 1961 में देखा था जब वह सैन्य प्रशिक्षण के लिए देश छोड़ रहा था। वोल्पे, म्लांगेनी - और कौन गिरफ्तार था?
1961 की शुरुआत में विनी पर दो साल का प्रतिबंध लगा दिया गया था। मुझे एक अन्य कैदी से पता चला कि विनी पर हाल ही में प्रतिबंध का उल्लंघन करने का आरोप लगा है, जिसके कारण उसे कारावास या नज़रबंदी हो सकती है। विनी जिद्दी थी; प्रतिबंध का आदेश ठीक उसी तरह की बात थी जिससे वह क्रोधित हो जाती। मुझे इसमें कोई संदेह नहीं था कि उसने अपने आदेशों का उल्लंघन किया था, और मैं उसे ऐसा न करने की सलाह कभी नहीं देता, लेकिन मुझे इस बात की बहुत चिंता थी कि उसे जेल जाना पड़ सकता है।
जुलाई 1963 की एक सुबह, जब मैं अपनी कोठरी की ओर गलियारे से जा रहा था, तो मैंने थॉमस माशिफेन को देखा, जो लिलीज़लीफ फार्म में फोरमैन थे। मैंने उनका गर्मजोशी से अभिवादन किया, हालाँकि मुझे एहसास था कि अधिकारियों ने निश्चित रूप से उन्हें मेरे गलियारे तक इसलिए भेजा था ताकि वे देख सकें कि मैं उन्हें पहचानता हूँ या नहीं। मैं ऐसा करने के अलावा कुछ और नहीं कर सका। उनकी उपस्थिति का वहाँ होना केवल एक ही बात का संकेत हो सकता था: अधिकारियों को रिवोनिया का पता चल गया था।
एक-दो दिन बाद मुझे जेल कार्यालय में बुलाया गया, जहाँ मुझे वाल्टर; गोवन म्बेकी; अहमद कथराडा; एंड्रयू म्लांगेनी; बॉब हेपल; रेमंड म्हाबा, जो एमके हाई कमांड के सदस्य थे और हाल ही में चीन में प्रशिक्षण से लौटे थे; एलियास मोत्सोलेदी, जो एमके के ही सदस्य थे; डेनिस गोल्डबर्ग, जो एक इंजीनियर और कांग्रेस ऑफ डेमोक्रेट्स के सदस्य थे; रस्टी बर्नस्टीन, जो एक आर्किटेक्ट और सीओडी के सदस्य थे; और जिमी कांटोर, जो एक वकील थे और हेरोल्ड वोल्पे के बहनोई थे, मिले। हम सभी पर तोड़फोड़ का आरोप लगाया गया था और अगले दिन

अदालत में पेश होने का आदेश दिया गया था। मैंने अपनी पाँच साल की सज़ा में से केवल नौ महीने ही काटे थे।

धीरे-धीरे मुझे पता चला कि क्या हुआ था। 11 जुलाई की दोपहर को, एक ड्राई क्लीनर की वैन फार्म के लंबे रास्ते में दाखिल हुई। लिलीज़लीफ में किसी ने भी डिलीवरी का ऑर्डर नहीं दिया था। एक युवा अफ्रीकी गार्ड ने गाड़ी को रोका, लेकिन जब दर्जनों हथियारबंद पुलिसकर्मी और कई पुलिस कुत्ते गाड़ी से बाहर निकले तो वह घबरा गया। उन्होंने संपत्ति को घेर लिया और कुछ अधिकारी मुख्य भवन और मुख्य बाहरी भवन में घुस गए। बाहरी भवन में उन्हें एक मेज के चारों ओर बैठे एक दर्जन लोग एक दस्तावेज़ पर चर्चा करते हुए मिले। वाल्टर खिड़की से कूद गया लेकिन एक गुर्राते हुए पुलिस कुत्ते ने उसे रोक लिया। गिरफ्तारियों में आर्थर गोल्डरिच भी शामिल था, जो पुलिस की छापेमारी के दौरान फार्म में गाड़ी चलाकर आया था।
पुलिस ने पूरे फार्म की तलाशी ली और सैकड़ों दस्तावेज़ और कागज़ात ज़ब्त कर लिए, हालाँकि उन्हें कोई हथियार नहीं मिला। सबसे महत्वपूर्ण दस्तावेज़ों में से एक मेज़ पर ही पड़ा रहा: ऑपरेशन मायिबुये, दक्षिण अफ्रीका में गुरिल्ला युद्ध की एक योजना। एक ही झटके में पुलिस ने उमखोंटो वे सिज़वे के पूरे उच्च कमान को पकड़ लिया। सभी को नए नब्बे दिन के नज़रबंदी कानून के तहत हिरासत में लिया गया।
सौभाग्य से, जब छापा मारा गया, तब जो स्लोवो और ब्रैम फिशर वहाँ मौजूद नहीं थे। लेकिन जो और ब्रैम अक्सर दिन में दो-तीन बार फार्म पर जाया करते थे।
बाद में पता चला कि लिलीज़लीफ का इतनी जल्दी पता न चलना आश्चर्यजनक था।
शासन व्यवस्था और भी सख्त और उन्नत हो गई थी। चौबीसों घंटे निगरानी के साथ-साथ फोन टैपिंग भी आम हो गई थी। यह छापा राज्य के लिए एक बड़ी जीत थी।

अदालत में पहले दिन हमें वकील नियुक्त करने का अवसर नहीं दिया गया। हमें मजिस्ट्रेट के सामने पेश किया गया और तोड़फोड़ का आरोप लगाया गया। कुछ दिनों बाद हमें ब्रैम, वर्नोन बेरेंज, जोएल जॉफ, जॉर्ज बिज़ोस और आर्थर चास्कलसन से मिलने की अनुमति दी गई, ये सभी हमारे वकील थे। मुझे अभी भी अलग रखा जा रहा था क्योंकि मैं एक दोषी कैदी था, और ये मुलाकातें मेरे लिए अपने सहयोगियों से बात करने का पहला अवसर थीं।
ब्रैम बहुत गंभीर था। उसने धीमी आवाज़ में हमें बताया कि हम एक बेहद गंभीर मुकदमे का सामना कर रहे हैं और राज्य ने उसे औपचारिक रूप से सूचित कर दिया है कि वे कानून द्वारा अनुमत सर्वोच्च दंड, यानी मृत्युदंड की मांग करेंगे। ब्रैम ने कहा कि उस समय के माहौल को देखते हुए, यह परिणाम एक बहुत बड़ी संभावना थी। उस क्षण से हम फांसी के साये में जी रहे थे। मृत्युदंड की मात्र संभावना ही सब कुछ बदल देती है। शुरू से ही, हमने इसे मुकदमे का सबसे संभावित परिणाम माना था। हमसे कहीं कम अपराधों के लिए हाल ही में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई थी।
जेल अधिकारी आपको कभी यह भूलने नहीं देते कि आपको फांसी हो सकती है। उस रात, सोने के समय एक वार्डर ने मेरी कोठरी का दरवाजा खटखटाया। उसने कहा, "मंडेला, आपको नींद की चिंता करने की ज़रूरत नहीं है। आप बहुत देर तक सोएंगे।" मैंने एक पल रुककर कहा, "हम सब, आप भी, बहुत देर तक सोएंगे।" यह कोई खास तसल्ली नहीं थी।

55

9 अक्टूबर, 1963 को हमें एक कड़ी सुरक्षा वाली पुलिस वैन में बिठाया गया। वैन के बीचोंबीच एक स्टील की पट्टी लगी थी, जो श्वेत कैदियों को अफ़्रीकी कैदियों से अलग करती थी। हमें प्रिटोरिया स्थित न्याय भवन ले जाया गया, जहाँ सर्वोच्च न्यायालय स्थित है। वहाँ राज्य बनाम राष्ट्रीय उच्च कमान और अन्य लोगों का मुकदमा शुरू होना था, जिसे बाद में राज्य बनाम नेल्सन मंडेला और अन्य लोगों के नाम से जाना गया, और आज भी इसे रिवोनिया मुकदमे के नाम से जाना जाता है। न्यायालय के पास पॉल क्रूगर की प्रतिमा है, जो उन्नीसवीं शताब्दी में ब्रिटिश साम्राज्यवाद के विरुद्ध लड़ने वाले ट्रांसवाल गणराज्य के राष्ट्रपति थे। इस अफ़्रीकी नायक की प्रतिमा के

नीचे उनके एक भाषण का उद्धरण लिखा है। शिलालेख में लिखा है, “विश्वास के साथ हम अपना पक्ष पूरी दुनिया के सामने रखते हैं। चाहे हम जीतें या मरें, अफ़्रीका में स्वतंत्रता सुबह के बादलों से सूर्य की तरह उदय होगी।” हमारी वैन पुलिस ट्रकों के काफिले के बीचोंबीच थी। इस काफिले के आगे उच्च पुलिस अधिकारियों को ले जाने वाली लिमोजिन गाड़ियाँ थीं। न्याय भवन सशस्त्र पुलिसकर्मियों से भरा हुआ था। भवन के सामने जमा हुए हमारे समर्थकों की भारी भीड़ से बचने के लिए, हमें भवन के पिछले हिस्से में ले जाया गया और लोहे के बड़े-बड़े फाटकों से अंदर ले जाया गया। भवन के चारों ओर मशीनगन लिए पुलिसकर्मी चौकस खड़े थे। जैसे ही हम वैन से उतरे, हमें भारी भीड़ के गाने और नारे लगाने की आवाज़ सुनाई दी। अंदर पहुँचने पर, हमें अदालत कक्ष के नीचे बनी कोठरियों में रखा गया, इससे पहले कि उस मुकदमे की सुनवाई शुरू होती जिसे देश और दुनिया भर के अखबारों में दक्षिण अफ्रीका के इतिहास का सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक मुकदमा बताया गया था।

जैसे ही हम कोठरियों से बाहर निकले, प्रत्येक आरोपी के साथ दो सशस्त्र सुरक्षाकर्मी थे। जब हम भव्य, ऊँची छत वाले न्यायालय कक्ष में दाखिल हुए, तो हममें से प्रत्येक ने भीड़ की ओर मुड़कर मुट्ठी बांधकर एएनसी का अभिवादन किया। दर्शक दीर्घा में हमारे समर्थकों ने "अमांदला! नगावेथु!" और "मयिबुये अफ़्रीका!" के नारे लगाए। यह उत्साहवर्धक था, लेकिन खतरनाक भी: पुलिस ने दीर्घा में बैठे सभी दर्शकों के नाम और पते नोट कर लिए और न्यायालय से निकलते समय उनकी तस्वीरें खींचीं। न्यायालय कक्ष घरेलू और अंतरराष्ट्रीय पत्रकारों और विदेशी सरकारों के दर्जनों प्रतिनिधियों से भरा हुआ था।
हमारे अंदर दाखिल होते ही, पुलिस अधिकारियों के एक समूह ने हमारे और दर्शकों के बीच एक सख्त घेरा बना लिया। खाकी शॉर्ट्स और घटिया सैंडल पहने, जेल के कपड़ों में अदालत में पेश होना मुझे बेहद बुरा लग रहा था। एक दोषी कैदी होने के नाते, मेरे पास अच्छे कपड़े पहनने का विकल्प नहीं था। बाद में कई लोगों ने मेरी खराब हालत पर टिप्पणी की, और यह सिर्फ मेरे कपड़ों की वजह से नहीं था। मैं महीनों से एकांत कारावास में रहा था और मेरा वजन पच्चीस

पाउंड से भी ज्यादा कम हो गया था। अदालत में दाखिल होते समय मैंने दर्शकों की ओर मुस्कुराने की पूरी कोशिश की, और अपने समर्थकों को देखना मेरे लिए सबसे बड़ी राहत थी।
सुरक्षा व्यवस्था बेहद कड़ी कर दी गई थी क्योंकि कुछ ही सप्ताह पहले आर्थर गोल्डरिच, हेरोल्ड वोल्पे, मोसी मूला और अब्दुलहे जस्सात ने एक युवा गार्ड को रिश्वत देकर जेल से भाग निकले थे। आर्थर और हेरोल्ड पादरी के वेश में स्वाजीलैंड पहुंचे और फिर तंजानिका के लिए उड़ान भरी। उनका भागना ऐसे समय हुआ जब भूमिगत आंदोलन को लेकर चारों ओर दहशत फैली हुई थी और अखबारों की सुर्खियों में इस घटना को बड़े-बड़े अक्षरों में छापा गया था। यह सरकार के लिए शर्मिंदगी का कारण बना और हमारे मनोबल को बढ़ाने वाला साबित हुआ। रिवोनिया मुकदमे में हमारे न्यायाधीश श्री क्वार्टस डी वेट थे, जो ट्रांसवाल के न्यायाधीश-अध्यक्ष थे और लकड़ी के चंदवा के नीचे अपने लाल वस्त्रों में बैठे थे। डी वेट उन अंतिम न्यायाधीशों में से एक थे जिन्हें राष्ट्रवादियों के सत्ता में आने से पहले यूनाइटेड पार्टी द्वारा नियुक्त किया गया था और उन्हें सरकार का चमचा नहीं माना जाता था। वे गंभीर चेहरे वाले न्यायाधीश थे जो मूर्खों को आसानी से बर्दाश्त नहीं करते थे। अभियोजक डॉ. पर्सी युतार थे, जो ट्रांसवाल के उप अटॉर्नी जनरल थे और दक्षिण अफ्रीका के अटॉर्नी जनरल बनने की महत्वाकांक्षा रखते थे। वे कद में छोटे, गंजे और सलीके से सजे-धजे व्यक्ति थे, जिनकी आवाज गुस्से या भावुक होने पर कांपने लगती थी। उन्हें नाटकीयता और अलंकारिक, हालांकि अस्पष्ट, भाषा का शौक था।
युतार उठे और अदालत को संबोधित करते हुए बोले, “महोदया, मैं राष्ट्रीय उच्च कमान और अन्य के विरुद्ध राज्य का मामला पेश करता हूँ।” मुझ पर पहला आरोप लगाया गया था। युतार ने अभियोग पत्र प्रस्तुत किया और आदेश दिया कि हम पर तुरंत आरोप लगाया जाए और संक्षिप्त सुनवाई की जाए। यह पहली बार था जब हमें अभियोग पत्र की प्रति दी गई थी। अभियोजन पक्ष ने इसे हमसे छिपाकर रखा था, हालाँकि उन्होंने इसे रैंड डेली मेल को दे दिया था, जिसने इसे उस दिन के अखबार में प्रमुखता से प्रकाशित किया था। अभियोग पत्र में हम ग्यारह लोगों पर हिंसक क्रांति और देश पर सशस्त्र आक्रमण को बढ़ावा देने के उद्देश्य से की गई दो सौ से अधिक तोड़फोड़ की घटनाओं में संलिप्तता का

आरोप लगाया गया था। राज्य का दावा था कि हम सरकार को उखाड़ फेंकने की साजिश में शामिल थे।
हम पर राजद्रोह के बजाय तोड़फोड़ और षड्यंत्र का आरोप लगाया गया, क्योंकि राजद्रोह के मामले में कानून के अनुसार लंबी प्रारंभिक जांच (जो बचाव पक्ष के लिए बेहद उपयोगी होती है) की आवश्यकता नहीं होती। फिर भी, सर्वोच्च दंड - फांसी - समान है। राजद्रोह के मामले में, राज्य को अपने मामले को संदेह से परे साबित करना होता है और प्रत्येक आरोप के लिए दो गवाहों की गवाही आवश्यक होती है। तोड़फोड़ कानून के तहत, आरोपी को निर्दोष साबित करने का भार बचाव पक्ष पर था।
ब्रैम फिशर खड़े हुए और बचाव पक्ष को अपना पक्ष तैयार करने का समय न मिलने के आधार पर अदालत से पुनर्विचार याचिका दायर की। उन्होंने बताया कि कई आरोपियों को अमानवीय रूप से लंबे समय तक एकांत कारावास में रखा गया था। राज्य तीन महीने से तैयारी कर रहा था, लेकिन हमें अभियोग पत्र उसी दिन प्राप्त हुआ था। न्यायमूर्ति डी वेट ने हमें 29 अक्टूबर तक तीन सप्ताह का स्थगन दिया।
पहले दिन यह जानकर मुझे बहुत दुख हुआ कि विनी उपस्थित नहीं हो सकीं। उन पर लगे प्रतिबंध और जोहान्सबर्ग तक सीमित रहने के कारण उन्हें अदालत में आने के लिए पुलिस की अनुमति की आवश्यकता थी। उन्होंने आवेदन किया था, लेकिन अनुमति नहीं मिली। मुझे यह भी पता चला कि हमारे घर पर छापा मारा गया था और पुलिस ने विनी के एक युवा रिश्तेदार को हिरासत में ले लिया था। विनी अकेली ऐसी पत्नी नहीं थीं जिन्हें परेशान किया जा रहा था। अल्बर्टिना सिसुलु और कैरोलिन मोत्सोलेदी को नब्बे दिन के नजरबंदी अधिनियम के तहत हिरासत में लिया गया था, और वाल्टर के युवा बेटे मैक्स को भी गिरफ्तार कर लिया गया था। यह दबाव डालने के लिए राज्य की सबसे क्रूर तकनीकों में से एक थी: स्वतंत्रता सेनानियों की पत्नियों और बच्चों को कैद करना। जेल में बंद कई पुरुष अधिकारियों द्वारा किए गए किसी भी व्यवहार को सहन कर सकते थे, लेकिन राज्य द्वारा उनके परिवारों के साथ ऐसा ही करने का विचार लगभग असहनीय था। विनी ने बाद में न्याय मंत्री से अपील की, जिन्होंने इस शर्त पर उन्हें मुकदमे में शामिल होने की अनुमति दी कि वे पारंपरिक पोशाक न पहनें। विडंबना यह है कि वही सरकार जो हमें मातृभूमि में अपनी संस्कृति को अपनाने

के लिए कह रही थी, उसने विनी को अदालत में ज़ोसा गाउन पहनने से मना कर दिया।

अगले तीन हफ्तों के दौरान, हमें अपना समय एक साथ अपने मामले की तैयारी में बिताने की अनुमति दी गई। मैं अब अपने साथी आरोपियों के बीच था, और अपने साथियों का साथ मेरे लिए एक वरदान था। विचाराधीन कैदियों के रूप में, हमें सप्ताह में दो बार आधे घंटे की मुलाकात का अधिकार था, और बाहर से एक बार भोजन भेजा जा सकता था। श्रीमती पिल्ले के स्वादिष्ट भोजन से मैंने जल्द ही अपना खोया हुआ वजन वापस पा लिया।
जब हम अपनी बचाव की तैयारी कर रहे थे, तब सरकार अखबारों में हमारा मामला चला रही थी। आम तौर पर, विचाराधीन मामले पर सार्वजनिक रूप से या प्रेस में टिप्पणी नहीं की जा सकती। लेकिन रिवोनिया में गिरफ्तार किए गए लोग नब्बे दिन की हिरासत में थे, और इसलिए तकनीकी रूप से उन पर कोई अपराध का आरोप नहीं लगाया गया था, इस न्यायिक सिद्धांत को दरकिनार कर दिया गया। न्याय मंत्री से लेकर नीचे तक, सभी ने हमें सार्वजनिक रूप से हिंसक क्रांतिकारी करार दिया। अखबारों में नियमित रूप से "सैन्य आधार पर क्रांति" जैसी सुर्खियाँ छपती थीं।
29 अक्टूबर को हम फिर से न्याय महल में दाखिल हुए; भीड़ फिर से भारी और उत्तेजित थी; सुरक्षा फिर से बेहद कड़ी थी; अदालत फिर से कई विदेशी दूतावासों के गणमान्य व्यक्तियों से भरी हुई थी। अपने साथियों के साथ तीन सप्ताह बिताने के बाद मैं तरोताज़ा महसूस कर रहा था, और इस बार सूट पहने अदालत में मैं कहीं अधिक सहज था। हमारे वकीलों ने हमें जेल के कपड़ों में अदालत में आने पर आपत्ति जताई थी और हमने अपने कपड़े पहनने का अधिकार जीत लिया था। हमने फिर से मुट्ठी बांधकर दर्शकों की ओर इशारा किया, और हमें चेतावनी दी गई कि अगर हमने ऐसा दोबारा किया, तो हमें जेल की खाकी वर्दी में अदालत में आने के लिए मजबूर किया जाएगा। ऐसे हिंसक प्रदर्शनों को रोकने के लिए, अधिकारियों ने अदालत कक्ष में न्यायाधीश से पहले कैदियों के प्रवेश करने के सामान्य क्रम को उलट दिया। उस पहले दिन के बाद, न्यायाधीश पहले

प्रवेश करते थे ताकि जब हम प्रवेश करें तब तक अदालत का सत्र पहले से ही चल रहा हो।
हमने तुरंत हमला बोल दिया — ब्रैम फिशर ने राज्य के अभियोग की आलोचना करते हुए उसे घटिया, बेढंगा और बेतुके तथ्यों से भरा बताया, जैसे कि यह आरोप कि मैंने प्रिटोरिया लोकल में रहते हुए कुछ तोड़फोड़ की घटनाओं में भाग लिया था। युतार स्तब्ध रह गया। न्यायाधीश डी वेट ने ब्रैम के तर्क का जवाब देने के लिए उसकी ओर देखा, और विवरण देने के बजाय उसने वह देना शुरू कर दिया जिसे न्यायाधीश ने "राजनीतिक भाषण" कहकर उपहास किया। डी वेट युतार की इस अड़चन से चिढ़ गए और उन्होंने उसे यही कहा। "श्री युतार, जैसा कि मैं समझता हूँ, आपके तर्क का पूरा आधार यह है कि आप संतुष्ट हैं कि आरोपी दोषी हैं।" इसके बाद डी वेट ने अभियोग को रद्द कर दिया और सत्र समाप्त कर दिया। उस क्षण के लिए हम तकनीकी रूप से स्वतंत्र थे, और अदालत में अफरा-तफरी मच गई थी। लेकिन जज डी वेट के अपनी सीट छोड़ने से पहले ही हमें दोबारा गिरफ्तार कर लिया गया। लेफ्टिनेंट स्वानपोल ने हममें से प्रत्येक के कंधे पर हाथ रखकर कहा, "मैं आपको तोड़फोड़ के आरोप में गिरफ्तार कर रहा हूँ," और हमें वापस हमारी कोठरियों में ले जाया गया। फिर भी, यह सरकार के लिए एक बड़ा झटका था, क्योंकि अब उन्हें उस मामले में नए सिरे से योजना बनानी पड़ी जिसे वे अब तक का सबसे बड़ा मुकदमा कह रहे थे।

राज्य ने अपना अभियोग पत्र पुनः तैयार किया और हम दिसंबर की शुरुआत में फिर से अदालत में पेश हुए। हम सभी को आभास हो गया था कि इस बीच न्यायमूर्ति डी वेट का रवैया हमारे प्रति और भी शत्रुतापूर्ण हो गया था। हमें संदेह था कि उनकी पिछली स्वतंत्रता ने सरकार के क्रोध को भड़काया था और दबाव डाला गया था। नए आरोप पढ़े गए: हम पर हिंसक क्रांति शुरू करने के उद्देश्य से तोड़फोड़ और गुरिल्ला युद्ध के लिए लोगों की भर्ती करने का आरोप था; हम पर कम्युनिस्ट क्रांति का समर्थन करने के लिए गणतंत्र पर आक्रमण करने के लिए विदेशी सैन्य इकाइयों की सहायता करने की साजिश रचने का आरोप था; और हमने इस उद्देश्य के लिए विदेशी देशों से धन की याचना की और प्राप्त की थी। यूटर ने

नाटकीय लहजे में कहा कि आरोपियों द्वारा गोला-बारूद के लिए दिए गए आदेश जोहान्सबर्ग को उड़ाने के लिए पर्याप्त थे।
इसके बाद रजिस्ट्रार ने हमसे दलीलें देने को कहा। हमने पारंपरिक तरीके से दलीलें न देने का, बल्कि इस अवसर का उपयोग कार्यवाही के प्रति अपनी असहमति व्यक्त करने के लिए करने का निर्णय लिया था।
"आरोपी नंबर एक, नेल्सन मंडेला, क्या आप दोषी मानते हैं या नहीं?"
मैं उठा और बोला, “महोदया, मुझे नहीं, बल्कि सरकार को कटघरे में खड़ा होना चाहिए। मैं निर्दोष हूँ।”
“आरोपी नंबर दो, वाल्टर सिसुलु, क्या आप दोषी मानते हैं या नहीं?”
सिसुलु: “इस देश में जो कुछ भी हुआ है, उसके लिए सरकार जिम्मेदार है। मैं खुद को निर्दोष मानता हूं।”
न्यायमूर्ति डी वेट ने कहा कि उन्हें राजनीतिक भाषण सुनने में कोई दिलचस्पी नहीं है, हमें केवल दोषी या निर्दोष होने की दलील देनी चाहिए। लेकिन उनके निर्देश को अनसुना कर दिया गया। प्रत्येक आरोपी ने दोषी न होने की दलील देने से पहले यह सुझाव दिया कि सरकार ही अपराधी है।
कार्यवाही में नाटकीयता लाने के लिए, राज्य ने दक्षिण अफ्रीकी प्रसारण प्रणाली पर युतार के भाषण के सीधे प्रसारण की व्यवस्था की थी। अभियोजन पक्ष की मेज पर और न्यायाधीश के सामने माइक्रोफोन लगाए गए थे। लेकिन जैसे ही युतार ने अपना गला साफ किया, ब्रैम फिशर उठे और उन्होंने अदालत से माइक्रोफोन हटाने का अनुरोध किया। उनका तर्क था कि प्रसारण से मामले पर अनुचित प्रभाव पड़ेगा और यह अदालत की गरिमा के अनुरूप नहीं है। युतार की माइक्रोफोन न लगाने की पुरजोर अपील के बावजूद, न्यायमूर्ति डी वेट ने उन्हें हटाने का आदेश दिया।
अपने संबोधन में युतार ने तर्क दिया कि एएनसी के भूमिगत होने के बाद से ही संगठन ने हिंसा की नीति अपनाई थी, जिसका उद्देश्य तोड़फोड़ से लेकर गुरिल्ला युद्ध और अंत में देश पर सशस्त्र आक्रमण करना था। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने पूरे देश में हजारों प्रशिक्षित गुरिल्ला इकाइयों को तैनात करने की योजना बनाई थी, और ये इकाइयाँ एक ऐसे विद्रोह का नेतृत्व करने वाली थीं, जिसके बाद किसी विदेशी शक्ति की सैन्य इकाइयों द्वारा सशस्त्र आक्रमण किया जाना था। युतार ने घोषणा की, "इसके परिणामस्वरूप उत्पन्न अराजकता, उथल-पुथल और अव्यवस्था के बीच, आरोपियों ने देश के

प्रशासन और नियंत्रण को अपने हाथ में लेने के लिए एक अस्थायी क्रांतिकारी सरकार स्थापित करने की योजना बनाई थी।" इस भव्य योजना का केंद्र उमखोंटो वे सिज़वे था, जो एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी के राजनीतिक निर्देशन में था, और उमखोंटो का मुख्यालय रिवोनिया में था।
अपनी प्रभावशाली भाषा में युतार ने बताया कि हमने एमके के लिए सदस्य कैसे भर्ती किए, 1963 के राष्ट्रीय विद्रोह की योजना कैसे बनाई (यहाँ वे हमें पीएसी से भ्रमित कर रहे थे), रिवोनिया में एक शक्तिशाली रेडियो ट्रांसमीटर कैसे स्थापित किया, और हम सब मिलकर 222 तोड़फोड़ की घटनाओं के लिए कैसे जिम्मेदार थे। उन्होंने कहा कि एलियास मोत्सोलेदी और एंड्रयू म्लांगेनी सदस्यों की भर्ती के प्रभारी थे और डेनिस गोल्डबर्ग केप में रंगरूटों के लिए एक विशेष स्कूल चलाते थे। उन्होंने विभिन्न बमों के निर्माण के साथ-साथ विदेशों से धन जुटाने का भी विस्तृत वर्णन किया। अगले तीन महीनों में, राज्य ने एक सौ तिहत्तर गवाह पेश किए और रिकॉर्ड में हज़ारों दस्तावेज़ और तस्वीरें दर्ज कीं, जिनमें मार्क्सवाद पर मानक पुस्तकें, गुरिल्ला युद्ध का इतिहास, नक्शे, ब्लूप्रिंट और डेविड मोत्समायी के नाम से बना एक पासपोर्ट शामिल था। पहला गवाह एक पुलिस फोटोग्राफर था जिसने रिवोनिया की तस्वीरें ली थीं, और अगले गवाह गोल्डरिच परिवार के घरेलू नौकर थे, जिन्हें इतने समय तक हिरासत में रखा गया था, जबकि उनका घर की राजनीति से कोई संबंध नहीं था। इन नौकरों ने हममें से अधिकांश को कटघरे में हमारी ओर इशारा करके पहचान लिया, लेकिन बूढ़े श्री जेलिमन ने मेरी मदद करने के साहसी प्रयास में, जब उनसे पहले आरोपी की ओर इशारा करने को कहा गया, तो उन्होंने ऐसा दिखाया जैसे उन्होंने मुझे देखा ही नहीं। अभियोजक ने कहा, "फिर से देखो, सभी चेहरों को ध्यान से देखो।" जेलिमन ने धीरे से कहा, "मुझे नहीं लगता कि वह यहाँ है।"
हम सोच रहे थे कि राज्य के पास मेरे अपराध को साबित करने के लिए क्या सबूत हैं। रिवोनिया में योजना बनाने का अधिकांश काम जब हो रहा था, तब मैं देश से बाहर जेल में था। सजा सुनाए जाने के तुरंत बाद जब मैंने वाल्टर को प्रिटोरिया लोकल में देखा, तो मैंने उससे आग्रह किया कि वह सुनिश्चित करे कि मेरी सभी किताबें और नोट्स फार्म से हटा दिए जाएं। लेकिन मुकदमे के पहले सप्ताह के दौरान, जब रस्टी बर्नस्टीन ने जमानत के लिए आवेदन किया, तो पर्सी युतार ने नाटकीय ढंग से किले का रेखाचित्र और मेरे द्वारा वहां

हिरासत में रहते हुए बनाए गए भागने के बारे में नोट को पेश किया। युतार ने दावा किया कि यह इस बात का सबूत है कि सभी आरोपियों का इरादा भागने का था। यह इस बात का संकेत था कि रिवोनिया से मेरी कोई भी चीज नहीं हटाई गई थी। बाद में, मुझे बताया गया कि रिवोनिया में मेरे सहयोगियों ने मेरे भागने के नोट को सुरक्षित रखने का फैसला किया था क्योंकि उन्हें लगा कि यह भविष्य में ऐतिहासिक होगा। लेकिन वर्तमान में, इसकी वजह से रस्टी बर्नस्टीन की जमानत रद्द हो गई।
राज्य का प्रमुख गवाह ब्रूनो मटोलो था, जिसे अदालत में "मिस्टर एक्स" के नाम से जाना जाता था। "मिस्टर एक्स" का परिचय कराते हुए युतार ने अदालत को बताया कि पूछताछ तीन दिन चलेगी और फिर नाटकीय लहजे में कहा कि गवाह "जान से खतरे में" है। युतार ने अनुरोध किया कि गवाही बंद कमरे में दी जाए, लेकिन प्रेस को शामिल किया जाए, बशर्ते कि वे गवाह की पहचान उजागर न करें। मटोलो एक लंबा, हट्टा-कट्टा आदमी था जिसकी याददाश्त बहुत अच्छी थी। डरबन का रहने वाला वह ज़ुलू था और एमके के नेटाल क्षेत्र का नेता बन गया था। वह एक अनुभवी विध्वंसक था और रिवोनिया जा चुका था। महाद्वीप से लौटने के बाद नेटाल में एमके कार्यकर्ताओं के उसके समूह को संबोधित करते हुए मेरी उससे केवल एक बार मुलाकात हुई थी। विशेष रूप से मेरे बारे में उसके साक्ष्यों ने मुझे यह एहसास दिलाया कि राज्य निश्चित रूप से मुझे दोषी ठहराने में सक्षम होगा।
उन्होंने यह कहकर अपनी बात शुरू की कि वे एमके के विध्वंसक थे जिन्होंने एक नगरपालिका कार्यालय, एक बिजली के खंभे और एक बिजली की लाइन को उड़ा दिया था। उन्होंने बड़ी सटीकता से बमों, बारूदी सुरंगों और ग्रेनेडों के संचालन और एमके के भूमिगत रूप से काम करने के तरीके को समझाया। मटोलो ने कहा कि हालांकि उन्होंने एएनसी के आदर्शों में अपना विश्वास कभी नहीं खोया, लेकिन जब उन्हें यह एहसास हुआ कि एएनसी और एमके कम्युनिस्ट पार्टी के उपकरण हैं, तो उन्होंने संगठन में अपना विश्वास खो दिया।
उनकी गवाही सरलता और स्पष्टवादिता से दी गई प्रतीत होती थी, लेकिन मटोलो ने अपने बयान को बढ़ा-चढ़ाकर पेश करने की पूरी कोशिश की थी। यह निस्संदेह पुलिस के निर्देशों पर किया गया था। उन्होंने अदालत को बताया कि नेटाल क्षेत्रीय कमान को दिए गए अपने संबोधन में मैंने कहा था कि सभी एमके कार्यकर्ताओं को अच्छे कम्युनिस्ट होना चाहिए, लेकिन अपने विचारों को

थी, बल्कि इसके लक्ष्य और योजनाएँ पूरी तरह से अव्यावहारिक थीं। मुझे उस समय गुरिल्ला युद्ध को एक व्यवहार्य विकल्प नहीं लगता था।
यह योजना मेरी अनुपस्थिति में तैयार की गई थी, इसलिए मुझे इसके बारे में बहुत कम जानकारी थी। रिवोनिया मुकदमे के आरोपियों के बीच भी इस बात पर असहमति थी कि क्या इस योजना को एएनसी की नीति के रूप में अपनाया गया था। गोवन, जिन्होंने जो स्लोवो के साथ मिलकर दस्तावेज़ तैयार किया था, ने ज़ोर देकर कहा कि इस पर सहमति बन चुकी थी और उनका मानना था कि अदालत में यह तर्क देना गलत था कि इस पर अभी भी चर्चा चल रही है। लेकिन अन्य सभी आरोपियों का कहना था कि यह दस्तावेज़, हालांकि उच्च कमान द्वारा तैयार किया गया था, एएनसी की कार्यकारी समिति द्वारा अनुमोदित नहीं किया गया था और न ही इसे मुख्य लुथुली ने देखा था।

हालांकि मृत्युदंड का मुकदमा काफी गंभीर हो सकता है, फिर भी हमारा मनोबल आमतौर पर बुलंद था। हममें खूब हंसी-मजाक चल रहा था। आरोपी में सबसे छोटा डेनिस गोल्डबर्ग हास्यबोध से भरपूर था और अक्सर हमें तब हंसा देता था जब हमें नहीं हंसना चाहिए था। जब अभियोजन पक्ष के एक गवाह ने बताया कि रेमंड म्हालाबा ने भेष बदलने के लिए पादरी का चोला पहना था, तो डेनिस उसे रेवरेंड म्हालाबा कहकर पुकारने लगा।
नीचे स्थित हमारे परामर्श कक्ष में, हम अक्सर चिट्ठियों के ज़रिए संवाद करते थे, जिन्हें हम जलाकर कूड़ेदान में फेंक देते थे। स्पेशल ब्रांच के जिन अधिकारियों की हम देखरेख करते थे, उनमें से एक लेफ्टिनेंट स्वानपोल थे, जो हट्टे-कट्टे और लाल चेहरे वाले व्यक्ति थे और उन्हें हमेशा लगता था कि हम उन्हें बेवकूफ बना रहे हैं। एक दिन, जब स्वानपोल दरवाज़े से हमें देख रहे थे, गोवन म्बेकी ने बड़े ही गुप्त ढंग से एक चिट्ठी लिखना शुरू किया। उसी नाटकीय अंदाज़ में उन्होंने वह चिट्ठी मुझे थमा दी। मैंने उसे पढ़ा, समझदारी से सिर हिलाया और कैथी को दे दी। कैथी ने दिखावटी अंदाज़ में माचिस निकाली, मानो चिट्ठी जलाने ही वाली हो, तभी स्वानपोल कमरे में झपट्टा मारकर कैथी के हाथों से चिट्ठी छीन ली और घर के अंदर माचिस जलाने के खतरों के बारे में कुछ कहा। फिर वह अपनी चिट्ठी पढ़ने के लिए कमरे से बाहर

चले गए; कुछ ही सेकंड बाद, वह गुस्से में वापस आए और बोले, "मैं तुम सबको इसके लिए सज़ा दूंगा!" गोवन ने बड़े अक्षरों में लिखा था: "क्या स्वानपोल एक शानदार दिखने वाला आदमी नहीं है?"
हम जेल में बंद थे और हमारे जीवन के लिए मुकदमा चल रहा था, लेकिन बाहर एक नया जीवन पनप रहा था। जिमी कैंटर की पत्नी किसी भी दिन बच्चे को जन्म देने वाली थी। जिमी एक वकील था जिसे राज्य द्वारा मुकदमे में इसलिए घसीटा गया था क्योंकि वह हेरोल्ड वोल्पी का बहनोई था।
एक सुबह, जब हम कटघरे में बैठे थे, तभी दूसरी तरफ से मुझे एक संदेश मिला।

बारबरा और मैंने गॉडफादर के बारे में विस्तार से चर्चा की है और हम इस निष्कर्ष पर पहुंचे हैं कि, चाहे बच्चा लड़की हो या लड़का, अगर आप अतीत में आपके द्वारा निभाए गए अधिक बदनामी भरे पदों के अतिरिक्त इस पद को स्वीकार करने के लिए सहमत होते हैं तो हम इसे एक सम्मान की बात मानेंगे।

मैंने जवाबी पत्र के रूप में जिम्मी को एक नोट भेजा।

मुझे बेहद खुशी होगी, और यह सम्मान मेरा है, बच्चे का नहीं। अब वे मुझे फांसी देने की हिम्मत नहीं कर सकते।

56

राज्य का मुकदमा 1963 की क्रिसमस के दौरान जारी रहा और 29 फरवरी, 1964 को समाप्त हुआ। हमारे पास सबूतों की जांच करने और अपनी बचाव रणनीति तैयार करने के लिए एक महीने से थोड़ा अधिक समय था। सबूतों का हम सभी पर समान प्रभाव नहीं पड़ा। जेम्स कैंटर के खिलाफ कोई सबूत नहीं था; वह तो हमारे संगठन का सदस्य भी नहीं था और उस पर मुकदमा ही नहीं चलना चाहिए था। रस्टी बर्नस्टीन, रेमंड म्हालाबा और अहमद कथराडा के लिए साजिश में शामिल होने के सबूत बहुत कम थे और हमने फैसला किया कि उन्हें खुद को दोषी नहीं ठहराना चाहिए। रस्टी के मामले में, सबूत नगण्य थे; वह बस रिवोनिया में दूसरों के साथ पाया गया था। हम बाकी छह लोगों ने कुछ आरोपों में अपना अपराध स्वीकार किया।
ब्रैम बेहद निराशावादी थे। उनका मानना था कि भले ही हम यह साबित कर दें कि गुरिल्ला युद्ध को मंजूरी नहीं दी गई थी और हमारी तोड़फोड़ की नीति का उद्देश्य किसी की जान लेना नहीं था, फिर भी सरकार हमें मौत की सजा सुना सकती है। बचाव पक्ष इस बात पर बंटा हुआ था कि हमें गवाही देनी चाहिए या नहीं। कुछ लोगों का कहना था कि गवाही देने से हमारे मामले को नुकसान होगा। वहीं, जॉर्ज बिज़ोस का सुझाव था कि जब तक हम सबूत पेश करके जज को यह यकीन नहीं दिला देते कि हमने गुरिल्ला युद्ध का फैसला नहीं किया था, तब तक वह निश्चित रूप से हमें सबसे कड़ी सजा सुनाएंगे।
शुरू से ही हमने यह स्पष्ट कर दिया था कि हम इस मुकदमे को कानून की कसौटी के रूप में नहीं, बल्कि अपने विश्वासों को व्यक्त करने के मंच के रूप में इस्तेमाल करना चाहते हैं। उदाहरण के लिए, हम इस बात से इनकार नहीं करेंगे कि हम तोड़फोड़ की घटनाओं के लिए जिम्मेदार थे। हम इस बात से इनकार नहीं करेंगे कि हममें से कुछ लोगों ने अहिंसा का मार्ग त्याग दिया था। हमें बरी होने या अपनी सजा कम करवाने की चिंता नहीं थी, बल्कि इस बात की चिंता थी कि यह मुकदमा उस उद्देश्य को मजबूत करे जिसके लिए हम सभी संघर्ष कर रहे थे - चाहे इसके लिए हमें कितनी भी कीमत चुकानी पड़े। हम कानूनी रूप से नहीं, बल्कि नैतिक रूप से अपना बचाव करेंगे। हम इस मुकदमे को संघर्ष की निरंतरता के रूप में देखते थे। हम राज्य द्वारा ज्ञात सत्य को सहर्ष स्वीकार

करेंगे, लेकिन ऐसी कोई भी जानकारी देने से इनकार करेंगे जिससे दूसरों को फंसाया जा सके।
हम राज्य के इस मुख्य दावे का खंडन करते हैं कि हमने गुरिल्ला युद्ध छेड़ा था। हम यह स्वीकार करते हैं कि तोड़फोड़ विफल होने की स्थिति में गुरिल्ला युद्ध छेड़ने के लिए हमने आकस्मिक योजनाएँ बनाई थीं। लेकिन हम दावा करते हैं कि यह अभी तक विफल नहीं हुई थी, क्योंकि इसका पर्याप्त प्रयास ही नहीं किया गया था। हम राज्य द्वारा लगाए गए हत्या और निर्दोष लोगों को नुकसान पहुँचाने के आरोपों का खंडन करते हैं; या तो ये आरोप सरासर झूठ हैं, या ये घटनाएँ किसी और की करतूत हैं। हमने कभी भी विदेशी सैन्य बलों के हस्तक्षेप की कल्पना नहीं की थी। इन दावों को साबित करने के लिए, हमारा मानना था कि हमें ऑपरेशन मायिबुये को अदालत के सामने स्पष्ट करना होगा।
मेरे मामले में, अदालत के पास दोष सिद्ध करने के लिए पर्याप्त सबूत थे। मेरे हाथ से लिखे दस्तावेज़ों से पता चलता था कि मैंने अवैध रूप से देश छोड़ा था, अपने सैनिकों के लिए सैन्य प्रशिक्षण की व्यवस्था की थी, और उमखोंटो वे सिज़वे के गठन में मेरी भूमिका थी। मेरे हाथ से लिखा एक दस्तावेज़ "अच्छा कम्युनिस्ट कैसे बनें" भी था, जिसे सरकार ने मेरे एक सक्रिय कम्युनिस्ट होने का प्रमाण बताया था। दरअसल, दस्तावेज़ का शीर्षक चीनी विचारक लियू शाओ ची की रचना से लिया गया था, और मैंने इसे मूसा कोटाने को एक बात साबित करने के लिए लिखा था। हम दक्षिण अफ्रीका के आम लोगों के बीच साम्यवाद के आकर्षण को लेकर लगातार बहस कर रहे थे। मैं लंबे समय से यह तर्क दे रहा था कि कम्युनिस्ट साहित्य अधिकतर नीरस, गूढ़ और पश्चिमी- केंद्रित होता है, जबकि इसे सरल, स्पष्ट और अफ्रीकी जनता के लिए प्रासंगिक होना चाहिए। मूसा का कहना था कि ऐसा संभव नहीं है। अपनी बात साबित करने के लिए, मैंने लियू के निबंध को अफ्रीकी पाठकों के लिए पुनर्लिखित किया था।

मैं पहला गवाह होता और इस तरह बचाव पक्ष की दिशा तय करता। दक्षिण अफ़्रीकी अदालतों में, गवाह के कटघरे से साक्ष्य केवल प्रश्न के उत्तर के रूप में ही दिया जा सकता है। मैं उस प्रारूप तक सीमित नहीं रहना चाहता था। हमने तय

किया कि गवाही देने के बजाय, मैं कटघरे से एक बयान पढ़ूंगा, जबकि अन्य गवाह गवाही देंगे और जिरह करेंगे।
क्योंकि कटघरे से बयान देने वाले गवाह को जिरह या न्यायाधीश के सवालों का सामना नहीं करना पड़ता, इसलिए उनके बयान का कानूनी महत्व सामान्य गवाही के बराबर नहीं होता। जो लोग ऐसा बयान देना चुनते हैं, वे आमतौर पर जिरह से बचने के लिए ऐसा करते हैं। हमारे वकीलों ने मुझे चेतावनी दी थी कि इससे मेरी कानूनी स्थिति और भी नाजुक हो जाएगी; मेरे बयान में मेरी अपनी बेगुनाही के बारे में कही गई किसी भी बात को न्यायाधीश नकार देंगे। लेकिन यह हमारी सर्वोच्च प्राथमिकता नहीं थी। हमारा मानना था कि बचाव पक्ष की शुरुआत अपनी राजनीति और आदर्शों के बयान से करना महत्वपूर्ण था, जिससे आगे की सभी बातों के लिए पृष्ठभूमि तैयार हो सके। मैं पर्सी युतार से खुलकर बहस करना चाहता था, लेकिन यह अधिक महत्वपूर्ण था कि मैं इस मंच का उपयोग अपनी शिकायतों को उजागर करने के लिए करूं।
यह सब परामर्श के दौरान तय हुआ था, मुख्यतः नोट्स के माध्यम से, क्योंकि परामर्श कक्ष में जासूसी उपकरण लगे हुए थे। हमने राज्य की जासूसी का भी फायदा उठाया और उन्हें गलत जानकारी दी। हमने हर तरह से संकेत दिया कि मैं गवाही देने वाला हूँ ताकि वे अपना समय जिरह की योजना बनाने में लगाएँ। एक सुनियोजित बातचीत में, मैंने अपने वकील जोएल जॉफ को बताया कि मुझे अपनी गवाही तैयार करने के लिए राजद्रोह मुकदमे के रिकॉर्ड की आवश्यकता होगी। हम युतार के राजद्रोह मुकदमे की लगभग सौ प्रतियों को ध्यान से पढ़ने की कल्पना पर मुस्कुराए।

मैंने अपना भाषण तैयार करने में लगभग दो सप्ताह बिताए, ज़्यादातर शाम को अपनी कोठरी में बैठकर काम किया। जब यह पूरा हो गया, तो मैंने इसे सबसे पहले अपने साथियों और अन्य आरोपियों को पढ़कर सुनाया। उन्होंने इसे पसंद किया, कुछ बदलाव सुझाए, और फिर मैंने ब्रैम फिशर से इसे पढ़ने को कहा। ब्रैम इसे पढ़कर चिंतित हो गए और उन्होंने हैल हैनसन नाम के एक सम्मानित वकील से इसे पढ़वाया। हैनसन ने ब्रैम से कहा, "अगर मंडेला इसे अदालत में पढ़ते हैं, तो उन्हें सीधे अदालत भवन के पीछे ले जाकर फांसी पर लटका दिया जाएगा।" इससे

ब्रैम की आशंकाएं पुख्ता हो गईं और अगले दिन वे मेरे पास आए और मुझसे भाषण में बदलाव करने का आग्रह किया। मुझे लगा कि हम चाहे कुछ भी कहें, हमें फांसी होने की संभावना है, इसलिए बेहतर यही होगा कि हम वही कहें जो हम सच में मानते हैं। उस समय का माहौल बेहद गंभीर था, अखबारों में नियमित रूप से यह अटकलें लगाई जा रही थीं कि हमें मौत की सजा मिलेगी। ब्रैम ने मुझसे अंतिम पैराग्राफ न पढ़ने की विनती की, लेकिन मैं अपनी बात पर अड़ा रहा।

सोमवार, बीस अप्रैल को, कड़ी सुरक्षा के बीच, हमें न्याय महल ले जाया गया, इस बार अपनी पैरवी शुरू करने के लिए। विनी मेरी माँ के साथ वहाँ थी, और अदालत में प्रवेश करते समय मैंने उन्हें सिर हिलाकर अभिवादन किया, जो एक बार फिर खचाखच भरी हुई थी।
ब्रैम ने घोषणा की कि राज्य के साक्ष्यों के कुछ हिस्सों को आरोपी स्वीकार करेंगे, और अदालत में हलचल मच गई। लेकिन उन्होंने आगे कहा कि बचाव पक्ष राज्य के कई दावों का खंडन करेगा, जिसमें यह दावा भी शामिल है कि उमखोंटो वे सिज़वे एएनसी की सैन्य शाखा थी। उन्होंने कहा कि एमके और एएनसी के नेताओं ने "इन दोनों संगठनों को पूरी तरह से अलग रखने का प्रयास किया। वे इसमें हमेशा सफल नहीं हुए," उन्होंने कहा, "लेकिन... इस उद्देश्य को प्राप्त करने के लिए हर संभव प्रयास किया गया।" उन्होंने इस बात से स्पष्ट इनकार किया कि एएनसी कम्युनिस्ट पार्टी से आदेश लेती थी। उन्होंने कहा कि बचाव पक्ष इस आरोप को चुनौती देगा कि गोल्डबर्ग, कथराडा, बर्नस्टीन और म्हाबा उमखोंटो के सदस्य थे। उन्होंने कहा कि बचाव पक्ष यह साबित करेगा कि उमखोंटो ने वास्तव में ऑपरेशन मायिबुये नहीं अपनाया था, और एमके ने गुरिल्ला युद्ध की तैयारी शुरू नहीं की थी।
"क्या इसे अस्वीकार कर दिया जाएगा?" न्यायमूर्ति डी वेट ने अविश्वासपूर्वक पूछा।
“इस बात को नकार दिया जाएगा,” ब्रैम ने उत्तर दिया। “सबूतों से पता चलेगा कि गुरिल्ला युद्ध की तैयारियाँ तो की जा रही थीं, लेकिन कोई योजना कभी अपनाई नहीं गई। शुरू से ही यही उम्मीद थी कि ऐसा कदम उठाने से बचा जा सकेगा।”

फिर, अपनी कोमल आवाज में, ब्रैम ने कहा, "महोदया महोदय, बचाव पक्ष की ओर से अभियुक्त नंबर एक का बयान शुरू होगा, जिसने व्यक्तिगत रूप से उमखोंटो की स्थापना में भाग लिया था, और जो अदालत को उस संगठन की शुरुआत के बारे में जानकारी दे सकेगा।"
यह सुनकर युतार मेज से उछल पड़ा और चिल्लाया, “महोदया! प्रभु!” वह इस बात से दुखी था कि मैं गवाही नहीं दे पाऊंगा, क्योंकि उसने निस्संदेह मेरी जिरह की तैयारी कर रखी थी। उसने कुछ उदास स्वर में कहा, “महोदया, कटघरे से दिया गया बयान शपथ के तहत दिए गए साक्ष्य के बराबर महत्व नहीं रखता।” न्यायमूर्ति डी वेट ने रूखेपन से जवाब दिया, "मुझे लगता है, डॉ. युतार, कि बचाव पक्ष के वकीलों के पास आपके बिना भी अपने मुवक्किलों को सलाह देने के लिए पर्याप्त अनुभव है।" युतार बैठ गए।
“न तो हम और न ही हमारे मुवक्किल आपराधिक संहिता के प्रावधानों से अनभिज्ञ हैं,” ब्रैम ने उत्तर दिया। “मैं नेल्सन मंडेला से प्रार्थना करता हूँ।” मैं उठा और अदालत की ओर मुंह करके धीरे-धीरे पढ़ने लगा।

मैं पहला आरोपी हूं।
मैंने कला में स्नातक की डिग्री प्राप्त की है और एक वकील के रूप में काम किया है।
मैंने श्री ओलिवर टैम्बो के साथ साझेदारी में कई वर्षों तक जोहान्सबर्ग में काम किया। मैं एक दोषी कैदी हूँ, जो बिना परमिट के देश छोड़ने और मई 1961 के अंत में लोगों को हड़ताल पर जाने के लिए उकसाने के आरोप में पाँच साल की सजा काट रहा हूँ।
मैं तुरंत स्वीकार करता हूँ कि मैं उन व्यक्तियों में से एक था जिन्होंने गठन में मदद की।
उमखोंटो वे सिज़वे और मैंने अगस्त 1962 में अपनी गिरफ्तारी तक इसके मामलों में एक प्रमुख भूमिका निभाई।
सबसे पहले, मैं यह कहना चाहता हूं कि राज्य द्वारा अपने द्वारा दिए गए सुझाव में
यह कहना सरासर गलत है कि दक्षिण अफ्रीका में चल रहा संघर्ष विदेशियों या कम्युनिस्टों के प्रभाव में है। मैंने जो कुछ भी किया है, एक व्यक्ति के रूप में और अपने लोगों के नेता के रूप में, वह दक्षिण अफ्रीका में अपने

अनुभव और अपनी गर्वित अफ्रीकी पृष्ठभूमि के कारण किया है, न कि किसी बाहरी व्यक्ति के कहे अनुसार।
ट्रांसकेई में अपने बचपन के दौरान, मैंने अपने कबीले के बुजुर्गों को यह कहते हुए सुना कि
पुराने दिनों की कहानियाँ। उन्होंने मुझे जो कहानियाँ सुनाईं, उनमें हमारे पूर्वजों द्वारा मातृभूमि की रक्षा में लड़े गए युद्धों की कहानियाँ भी शामिल थीं। डिंगाने और बंबाथा, हिंटसा और मकाना, स्क्वंगथी और डालासिले, मोशोशो और सेखुखुनी के नामों को पूरे अफ्रीकी राष्ट्र का गौरव और महिमा बताया गया। तब मुझे आशा थी कि जीवन मुझे अपने लोगों की सेवा करने और उनके स्वतंत्रता संग्राम में अपना विनम्र योगदान देने का अवसर देगा। यही वह प्रेरणा है जिसने मुझे इस मामले में मेरे खिलाफ लगाए गए आरोपों के संबंध में मेरे द्वारा किए गए सभी कार्यों के लिए प्रेरित किया है।
यह सब कहने के बाद, मुझे तुरंत और विस्तार से इस विषय पर चर्चा करनी होगी। हिंसा का प्रश्न। अब तक अदालत को बताई गई कुछ बातें सच हैं और कुछ झूठ। हालाँकि, मैं इस बात से इनकार नहीं करता कि मैंने तोड़फोड़ की योजना बनाई थी। मैंने यह योजना लापरवाही से या हिंसा के प्रति प्रेम के कारण नहीं बनाई थी। मैंने यह योजना श्वेत लोगों द्वारा मेरे लोगों पर वर्षों से किए जा रहे अत्याचार, शोषण और उत्पीड़न के बाद उत्पन्न हुई राजनीतिक स्थिति का शांत और गंभीर आकलन करने के परिणामस्वरूप बनाई थी।
मैं अदालत को यह बात स्पष्ट करना चाहता था कि हमने गैरजिम्मेदाराना तरीके से या हिंसात्मक कार्रवाई के परिणामों पर विचार किए बिना कोई कदम नहीं उठाया था। मैंने मानव जीवन को कोई नुकसान न पहुंचाने के अपने संकल्प पर विशेष बल दिया।

हम एएनसी के लोग हमेशा से एक नस्ल-मुक्त लोकतंत्र के पक्षधर रहे हैं, और हमने ऐसे किसी भी कदम से परहेज किया जिससे नस्लों के बीच की दूरी और भी बढ़ जाए। लेकिन कड़वी सच्चाई यह थी कि पचास वर्षों की अहिंसा ने अफ्रीकी लोगों को दमनकारी कानूनों और घटते अधिकारों के अलावा कुछ नहीं दिया था। इस अदालत के लिए इसे समझना शायद आसान न हो, लेकिन यह एक सच्चाई है कि लंबे समय से लोग हिंसा की बात करते रहे थे - उस दिन की जब वे श्वेत व्यक्ति से लड़ेंगे और अपना देश वापस जीत लेंगे, और हम, एएनसी के नेता, फिर भी हमेशा उन्हें हिंसा

से बचने और शांतिपूर्ण तरीकों का इस्तेमाल करने के लिए मनाते रहे। हालांकि हममें से कुछ लोगों ने मई और जून 1961 में इस पर चर्चा की थी, लेकिन इस बात से इनकार नहीं किया जा सकता था कि अहिंसा के माध्यम से एक नस्ल-मुक्त राज्य प्राप्त करने की हमारी नीति ने कुछ भी हासिल नहीं किया था, और हमारे अनुयायी इस नीति में अपना विश्वास खोने लगे थे और आतंकवाद के भयावह विचार विकसित कर रहे थे…।
उमखोंटो का गठन नवंबर 1961 में हुआ था। जब हमने यह निर्णय लिया,
जब हमने अपनी योजनाएँ बनाईं, तो अहिंसा और नस्लीय सद्भाव की एएनसी की विरासत हमारे साथ पूरी तरह से जुड़ी हुई थी। हमें लगा कि देश गृहयुद्ध की ओर बढ़ रहा है जिसमें काले और गोरे आपस में लड़ेंगे। हमने इस स्थिति को चिंता के साथ देखा। गृहयुद्ध का अर्थ होगा एएनसी के आदर्शों का विनाश; गृहयुद्ध के साथ नस्लीय शांति प्राप्त करना पहले से कहीं अधिक कठिन हो जाएगा। दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में युद्ध के परिणामों के उदाहरण पहले से ही मौजूद हैं। दक्षिण अफ्रीकी [एंग्लो-बोअर] युद्ध के घावों को मिटने में पचास साल से अधिक समय लग गया है। अंतर-नस्लीय गृहयुद्ध के घावों को मिटाने में कितना समय लगेगा, जिसे दोनों पक्षों के भारी जानमाल के नुकसान के बिना लड़ा नहीं जा सकता था?

मैंने कहा, तोड़फोड़ ही भविष्य में नस्लीय संबंधों के लिए सबसे अच्छी उम्मीद की किरण है। हमारे पहले प्रयासों पर श्वेत शासकों की प्रतिक्रिया तीव्र और क्रूर थी: तोड़फोड़ को मृत्युदंड योग्य अपराध घोषित कर दिया गया। मैंने कहा, हम गृहयुद्ध नहीं चाहते थे, लेकिन हमें इसके लिए तैयार रहना आवश्यक था।

अनुभव ने हमें आश्वस्त कर दिया था कि विद्रोह सरकार को हमारे लोगों के अंधाधुंध नरसंहार के असीमित अवसर प्रदान करेगा। लेकिन दक्षिण अफ्रीका की धरती पहले से ही निर्दोष अफ्रीकियों के खून से लथपथ है, इसीलिए हमने बल प्रयोग के विरुद्ध स्वयं की रक्षा के लिए बल प्रयोग हेतु दीर्घकालिक तैयारी करना अपना कर्तव्य समझा। यदि युद्ध अपरिहार्य था, तो हम चाहते थे कि लड़ाई हमारे लोगों के हित में लड़ी जाए। हमारे लिए सर्वोत्तम संभावनाओं और दोनों पक्षों के लिए सबसे कम जान जोखिम वाला युद्ध गुरिल्ला

युद्ध था। इसलिए, हमने भविष्य की तैयारियों में गुरिल्ला युद्ध की संभावना को ध्यान में रखने का निर्णय लिया।
सभी श्वेत लोगों को अनिवार्य सैन्य प्रशिक्षण से गुजरना पड़ता है, लेकिन ऐसा कोई प्रशिक्षण नहीं।
यह जिम्मेदारी अफ्रीकियों को सौंपी गई थी। हमारे विचार में प्रशिक्षित पुरुषों का एक ऐसा समूह तैयार करना आवश्यक था जो गुरिल्ला युद्ध शुरू होने की स्थिति में आवश्यक नेतृत्व प्रदान कर सके। हमें ऐसी स्थिति के लिए समय रहते तैयारी करनी थी, इससे पहले कि उचित तैयारी करने में बहुत देर हो जाए।

मैंने समझाया कि हमारी चर्चा के इस चरण में, मैं PAFMECSA सम्मेलन में भाग लेने और सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त करने के लिए देश से बाहर चला गया था। मैंने कहा कि मैंने प्रशिक्षण इसलिए लिया क्योंकि अगर गुरिल्ला युद्ध छिड़ता है, तो मैं अपने लोगों के साथ खड़ा होकर लड़ने में सक्षम होना चाहता था। फिर भी, मेरा मानना था कि तोड़फोड़ की संभावनाएं अभी समाप्त नहीं हुई हैं और उन्हें पूरी ताकत से आगे बढ़ाया जाना चाहिए।
मैंने अदालत को एएनसी और एमके के बीच की विभाजन रेखा के बारे में बताया और यह भी बताया कि हमने दोनों को अलग रखने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास किए। यह हमारी नीति थी, लेकिन व्यवहार में यह इतना आसान नहीं था। प्रतिबंधों और कारावास के कारण, लोगों को अक्सर दोनों संगठनों में काम करना पड़ता था। हालांकि इससे कभी-कभी दोनों के बीच का अंतर धुंधला हो जाता था, लेकिन यह पूरी तरह खत्म नहीं होता था। मैंने राज्य के इस आरोप का खंडन किया कि एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी के लक्ष्य और उद्देश्य एक ही थे।

एएनसी का वैचारिक सिद्धांत अफ्रीकी राष्ट्रवाद है, और हमेशा से रहा है। यह "गोरे आदमी को समुद्र में धकेल दो" के नारे में व्यक्त अफ्रीकी राष्ट्रवाद की अवधारणा नहीं है। एएनसी जिस अफ्रीकी राष्ट्रवाद का समर्थन करती है, वह अफ्रीकी लोगों के लिए उनकी अपनी भूमि में स्वतंत्रता और पूर्णता की अवधारणा है। एएनसी द्वारा अपनाया गया सबसे महत्वपूर्ण राजनीतिक दस्तावेज स्वतंत्रता चार्टर है। यह किसी भी तरह से समाजवादी राज्य की रूपरेखा नहीं है…। एएनसी ने अपने इतिहास के किसी भी दौर में देश की आर्थिक संरचना में

मैंने अदालत को बताया कि मैं कम्युनिस्ट नहीं था और हमेशा खुद को एक अफ्रीकी देशभक्त मानता आया हूँ। मैंने इस बात से इनकार नहीं किया कि मैं वर्गहीन समाज के विचार से आकर्षित था, या मार्क्सवादी विचारधारा से प्रभावित था। यह बात अफ्रीका के नव स्वतंत्र राज्यों के कई नेताओं पर लागू होती थी, जिन्होंने अपने लोगों को पश्चिम के उन्नत देशों के बराबर लाने के लिए किसी न किसी रूप में समाजवाद की आवश्यकता को स्वीकार किया था।

मार्क्सवादी साहित्य के अध्ययन और मार्क्सवादियों के साथ हुई बातचीत से मुझे यह आभास हुआ है कि कम्युनिस्ट पश्चिमी देशों की संसदीय प्रणाली को अलोकतांत्रिक और प्रतिक्रियावादी मानते हैं। लेकिन इसके विपरीत, मैं ऐसी प्रणाली का प्रशंसक हूँ।
मैग्ना कार्टा, अधिकारों की याचिका और अधिकारों का विधेयक, ये सभी हैं
ये वे दस्तावेज़ हैं जिन्हें विश्वभर के लोकतंत्रवादी श्रद्धापूर्वक देखते हैं। मुझे ब्रिटिश राजनीतिक संस्थाओं और देश की न्याय प्रणाली के प्रति गहरा सम्मान है। मैं ब्रिटिश संसद को विश्व की सबसे लोकतांत्रिक संस्था मानता हूँ, और इसकी न्यायपालिका की स्वतंत्रता और निष्पक्षता मुझे हमेशा प्रभावित करती है। अमेरिकी कांग्रेस, देश का शक्ति पृथक्करण सिद्धांत, और साथ ही इसकी न्यायपालिका की स्वतंत्रता भी मेरे मन में इसी प्रकार की भावनाएँ जगाती हैं।

मैंने दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत और श्वेत लोगों के जीवन में मौजूद भयानक असमानताओं का विस्तार से वर्णन किया। शिक्षा, स्वास्थ्य, आय, जीवन के हर पहलू में, अश्वेत लोग मुश्किल से जीवन निर्वाह स्तर पर थे, जबकि श्वेत लोगों का जीवन स्तर विश्व में सबसे ऊँचा था और वे इसे बनाए रखने का प्रयास कर रहे थे। मैंने कहा कि श्वेत लोग अक्सर दावा करते हैं कि दक्षिण अफ्रीका में रहने वाले अफ्रीकी लोग महाद्वीप के बाकी हिस्सों में रहने वाले अफ्रीकी लोगों की तुलना में बेहतर स्थिति में हैं। मैंने कहा कि हमारी शिकायत यह नहीं थी कि हम अफ्रीका के बाकी हिस्सों के लोगों की तुलना में गरीब थे, बल्कि यह थी कि हम अपने देश के श्वेत लोगों की तुलना में गरीब थे, और कानूनों के कारण हम इस असंतुलन को दूर करने में असमर्थ थे।

अफ़्रीकी लोगों द्वारा अनुभव की जाने वाली मानवीय गरिमा की कमी श्वेत वर्चस्व की नीति का प्रत्यक्ष परिणाम है। श्वेत वर्चस्व का अर्थ है अश्वेतों की हीनता। श्वेत वर्चस्व को बनाए रखने के लिए बनाए गए कानून इस धारणा को और मजबूत करते हैं। दक्षिण अफ़्रीका में छोटे-मोटे काम भी हमेशा अफ़्रीकी ही करते हैं। जब भी कुछ उठाना या साफ़ करना होता है, तो श्वेत व्यक्ति किसी अफ़्रीकी को काम पर रखता है, चाहे वह अफ़्रीकी उसका कर्मचारी हो या नहीं...।
गरीबी और पारिवारिक जीवन के टूटने के द्वितीयक प्रभाव होते हैं।
बच्चे बस्तियों की गलियों में भटकते रहते हैं क्योंकि उनके पास जाने के लिए स्कूल नहीं हैं, या स्कूल जाने के लिए पैसे नहीं हैं, या घर पर माता- पिता नहीं हैं जो उन्हें स्कूल भेज सकें, क्योंकि परिवार चलाने के लिए दोनों माता-पिता (यदि दो हों तो) को काम करना पड़ता है। इससे नैतिक मूल्यों में गिरावट आती है, अवैध संतानों की संख्या में चिंताजनक वृद्धि होती है और हिंसा बढ़ती जाती है, जो न केवल राजनीतिक रूप से, बल्कि हर जगह फैलती है...।
अफ़्रीकी लोग पूरे दक्षिण अफ़्रीका में अपना उचित हिस्सा चाहते हैं; वे चाहते हैं
सुरक्षा और समाज में हिस्सेदारी। सबसे बढ़कर, हम समान राजनीतिक अधिकार चाहते हैं, क्योंकि इनके बिना हमारी अक्षमताएँ स्थायी हो जाएँगी। मुझे पता है कि यह बात इस देश के गोरों को क्रांतिकारी लग सकती है, क्योंकि अधिकांश मतदाता अफ्रीकी होंगे। इसी वजह से गोरे लोग लोकतंत्र से डरते हैं...।
यही वह चीज है जिसके लिए एएनसी संघर्ष कर रही है। उनका संघर्ष वास्तव में यह एक राष्ट्रीय संघर्ष है। यह अफ्रीकी जनता का संघर्ष है, जो उनके अपने दुख और अपने अनुभवों से प्रेरित है। यह जीने के अधिकार के लिए संघर्ष है।

मैं अपना भाषण पढ़ रहा था, और इस समय मैंने अपने कागज़ बचाव पक्ष की मेज़ पर रख दिए और न्यायाधीश की ओर मुड़ गया। अदालत कक्ष एकदम शांत हो गया। मैंने न्यायमूर्ति डी वेट से अपनी नज़रें हटाए बिना ही याद से अपने अंतिम शब्द बोले।

मैंने अपने जीवनकाल में अफ्रीकी जनता के इस संघर्ष के लिए स्वयं को समर्पित किया है। मैंने श्वेत वर्चस्व के विरुद्ध और अश्वेत वर्चस्व के विरुद्ध संघर्ष किया है। मैंने एक लोकतांत्रिक और स्वतंत्र समाज के आदर्श को संजोया है जिसमें सभी व्यक्ति सद्भाव और समान अवसरों के साथ मिलकर रहें। यह एक ऐसा आदर्श है जिसके लिए मैं जीना और उसे प्राप्त करना चाहता हूँ। लेकिन यदि आवश्यकता पड़ी, तो यह एक ऐसा आदर्श है जिसके लिए मैं मरने को भी तैयार हूँ।

अदालत कक्ष में अब पूरी तरह सन्नाटा छा गया था। भाषण समाप्त होते ही मैं बस बैठ गया। मैंने मुड़कर दर्शकों की ओर नहीं देखा, हालाँकि मुझे महसूस हो रहा था कि सबकी निगाहें मुझ पर टिकी हैं। सन्नाटा कई मिनटों तक खिंचता हुआ प्रतीत हुआ। लेकिन वास्तव में यह शायद तीस सेकंड से अधिक नहीं रहा, और फिर दर्शकों की ओर से मुझे एक गहरी आह सुनाई दी, एक गहरी, सामूहिक "उम्मम", जिसके बाद महिलाओं की चीखें सुनाई दीं।
मैंने चार घंटे से अधिक समय तक पढ़ा था। दोपहर के चार बज चुके थे, जो आमतौर पर अदालत के स्थगित होने का समय होता है। लेकिन न्यायमूर्ति डी वेट ने अदालत कक्ष में शांति स्थापित होते ही अगले गवाह को बुलाया। वे मेरे बयान के प्रभाव को कम करने के लिए दृढ़ थे। वे नहीं चाहते थे कि यह दिन की आखिरी और एकमात्र गवाही हो। लेकिन उनके हर प्रयास से इसका प्रभाव कम नहीं हुआ। जब मैंने अपना भाषण समाप्त किया और बैठ गया, तो वह आखिरी बार था जब न्यायमूर्ति डी वेट ने मेरी आँखों में देखा था।
इस भाषण को स्थानीय और विदेशी दोनों ही प्रेस में व्यापक प्रचार मिला और रैंड डेली मेल में इसे लगभग शब्दशः छापा गया। यह सब तब हुआ जब मेरे सभी शब्दों पर प्रतिबंध लगा हुआ था। इस भाषण ने न केवल हमारी बचाव रणनीति को स्पष्ट किया बल्कि अभियोजन पक्ष को भी कमजोर कर दिया, जिसने अपना पूरा मामला इस उम्मीद पर तैयार किया था कि मैं तोड़फोड़ की जिम्मेदारी से इनकार करते हुए सबूत दूंगा। अब यह स्पष्ट हो गया था कि हम उन कार्यों की जिम्मेदारी स्वीकार करने से बचने के लिए कानूनी दांव-पेच का सहारा नहीं लेंगे जो हमने गर्व और सोची-समझी योजना के साथ किए थे।

जिस दिन जस्टिस डी वेट को जिमी के मामले पर फैसला सुनाना था, हम अदालत के नीचे बनी कोठरियों में इंतज़ार कर रहे थे और मैंने जिमी से कहा, "चलो अच्छी किस्मत के लिए टाई बदल लेते हैं।" लेकिन जब उसने मेरी दी हुई चौड़ी, पुराने ज़माने की टाई और मेरी दी हुई खूबसूरत रेशमी टाई देखी, तो शायद उसे लगा कि मैं बस अपने कपड़ों को बेहतर बनाने की कोशिश कर रहा हूँ। जिमी को कपड़ों का बहुत शौक था, लेकिन वह टाई पहनकर अदालत गया और जब जस्टिस डी वेट ने उसके खिलाफ लगे आरोप खारिज कर दिए, तो उसने एक तरह से अभिवादन और विदाई के तौर पर टाई उठाकर मुझे दिखाई।
रेमंड म्हाबा पूर्वी केप में एएनसी और एमके के प्रमुख नेताओं में से एक थे, लेकिन चूंकि राज्य के पास उनके खिलाफ पर्याप्त सबूत नहीं थे, इसलिए उन्होंने एमके के सदस्य होने और तोड़फोड़ के बारे में कुछ भी जानने से इनकार कर दिया। हम सभी ने फैसला किया कि न तो नौवें आरोपी एलियास मोत्सोलेदी और न ही दसवें आरोपी एंड्रयू म्लांगेनी को गवाही देनी चाहिए। वे एमके के निचले स्तर के सदस्य थे और जो पहले ही कहा जा चुका था उसमें वे कुछ खास जोड़ नहीं सकते थे। एलियास मोत्सोलेदी, जेल में पिटाई और यातना झेलने के बावजूद, कभी नहीं टूटे। अंतिम आरोपी एंड्रयू म्लांगेनी ने बिना शपथ के बयान दिया कि वह एमके के लिए संदेश और निर्देश पहुंचाते थे और इस काम को आसान बनाने के लिए उन्होंने पादरी का वेश धारण किया था। उन्होंने अदालत को यह भी बताया कि जेल में उनके साथ मारपीट की गई थी और उन्हें बिजली के झटके दिए गए थे। एंड्रयू अंतिम गवाह थे। बचाव पक्ष ने अपनी बात समाप्त कर दी। अब केवल अंतिम दलीलें और फिर फैसला बाकी था।

बीस मई को, युतार ने प्रेस को अपने अंतिम भाषण की नीले चमड़े की जिल्द वाली एक दर्जन प्रतियां और बचाव पक्ष को एक प्रति सौंपी। आकर्षक पैकेजिंग के बावजूद, युतार का भाषण अभियोजन पक्ष के मामले का एक उलझा हुआ सारांश था और इसमें न तो अभियोग की व्याख्या की गई थी और न ही सबूतों का मूल्यांकन किया गया था। यह व्यक्तिगत अपमानों से भरा हुआ था। एक जगह उन्होंने कहा, "आरोपियों का छल आश्चर्यजनक है। हालांकि वे बंटू आबादी के मुश्किल से 1% का प्रतिनिधित्व करते हैं, फिर भी उन्होंने दुनिया को यह बताने का जिम्मा

उठाया कि दक्षिण अफ्रीका में अफ्रीकी लोग दमित, शोषित और दबे हुए हैं।" यहां तक कि न्यायाधीश डी वेट भी युतार के भाषण से अचंभित प्रतीत हुए और एक जगह उन्हें रोककर कहा, "श्री युतार, आप यह स्वीकार करते हैं कि आप यह साबित करने में विफल रहे कि गुरिल्ला युद्ध का कभी निर्णय लिया गया था, है ना?" युतार स्तब्ध रह गया। उसने ठीक इसके विपरीत अनुमान लगाया था। हम भी आश्चर्यचकित थे, क्योंकि न्यायाधीश के प्रश्न ने हमें आशा दी थी। युतार ने हिचकिचाते हुए अदालत को बताया कि वास्तव में गुरिल्ला युद्ध की तैयारियां की गई थीं।
“जी हाँ, मुझे पता है,” डी वेट ने अधीरता से जवाब दिया, “बचाव पक्ष यह स्वीकार करता है। लेकिन उनका कहना है कि गिरफ्तारी से पहले उन्होंने गुरिल्ला युद्ध में शामिल होने का कोई निर्णय नहीं लिया था। मेरा मानना है कि आपके पास इसका खंडन करने वाला कोई सबूत नहीं है और आप इसे स्वीकार करते हैं?”
“जैसा महाराज चाहें,” युतार ने रुंधी हुई आवाज में कहा।
युतार ने अपनी बात समाप्त करते हुए कहा कि यह मामला न केवल राजद्रोह का "सर्वोत्तम अपराध" है, बल्कि हत्या और हत्या के प्रयास का भी है - जिनमें से किसी का भी उल्लेख अभियोग पत्र में नहीं किया गया था। उग्र भाव से उसने घोषणा की, "मैं साहसपूर्वक कहता हूँ कि अभियोग पत्र में लगाए गए प्रत्येक आरोप सिद्ध हो चुके हैं।" वह जानता था, यहाँ तक कि जब उसने ये शब्द कहे, तब भी कि वे स्पष्ट रूप से झूठे थे।

बचाव पक्ष के वकील आर्थर चास्कलसन ने अभियोजन पक्ष द्वारा उठाए गए कुछ कानूनी सवालों का जवाब देने के लिए सबसे पहले अपनी बात रखी। उन्होंने युतार के इस बयान को खारिज कर दिया कि मुकदमे का हत्या से कोई संबंध है, और अदालत को याद दिलाया कि एमके की स्पष्ट नीति यह थी कि किसी की जान नहीं जानी चाहिए। जब आर्थर ने यह समझाना शुरू किया कि अन्य संगठनों ने तोड़फोड़ की थी, जिसके लिए आरोपियों को दोषी ठहराया गया था, तो डी वेट ने बीच में ही टोकते हुए कहा कि वह इसे पहले ही एक तथ्य के रूप में स्वीकार कर चुके हैं। यह एक और अप्रत्याशित जीत थी।

इसके बाद ब्रैम फिशर ने बोलना शुरू किया और वे राज्य के दो सबसे गंभीर आरोपों का जवाब देने के लिए तैयार थे: पहला यह कि हमने गुरिल्ला युद्ध शुरू कर दिया था और दूसरा यह कि एएनसी और एमके एक ही थे। हालांकि डी वेट ने कहा था कि उनका मानना है कि गुरिल्ला युद्ध अभी शुरू नहीं हुआ है, फिर भी हम कोई जोखिम नहीं लेना चाहते थे। लेकिन जैसे ही ब्रैम ने अपना पहला मुद्दा उठाना शुरू किया, डी वेट ने कुछ चिढ़कर बीच में ही कहा, "मुझे लगा था कि मैंने अपना रुख स्पष्ट कर दिया है। मैं स्वीकार करता हूं कि गुरिल्ला युद्ध के लिए कोई निर्णय या तारीख तय नहीं की गई थी।"
जब ब्रैम ने अपना दूसरा तर्क देना शुरू किया, तो डी वेट ने उन्हें फिर से रोकते हुए कहा कि वे भी इस बात को मानते हैं कि दोनों संगठन अलग-अलग हैं। ब्रैम, जो आमतौर पर हर बात के लिए तैयार रहते थे, डी वेट की प्रतिक्रिया के लिए बिल्कुल भी तैयार नहीं थे। फिर वे बैठ गए; न्यायाधीश ने उनके तर्कों को उनके कहने से पहले ही स्वीकार कर लिया था। हम सब बहुत खुश थे—मतलब, अगर मौत की सजा का सामना कर रहे लोगों को खुश होना कहा जा सकता है। डी वेट द्वारा फैसले पर विचार करने के लिए अदालत को तीन सप्ताह के लिए स्थगित कर दिया गया।

57

रिवोनिया मुकदमे पर पूरी दुनिया की नजर थी। लंदन के सेंट पॉल कैथेड्रल में हमारे लिए रात भर प्रार्थना सभाएं आयोजित की गईं। लंदन विश्वविद्यालय के छात्रों ने मेरी अनुपस्थिति में ही मुझे अपने छात्र संघ का अध्यक्ष चुन लिया। संयुक्त राष्ट्र में विशेषज्ञों के एक समूह ने दक्षिण अफ्रीका के लिए एक राष्ट्रीय सम्मेलन बुलाने का आग्रह किया, जिससे एक सही मायने में प्रतिनिधि संसद का गठन हो सके, और रंगभेद के सभी विरोधियों के लिए माफी की सिफारिश की। जज डी वेट द्वारा अपना फैसला सुनाए जाने से दो दिन पहले, संयुक्त राष्ट्र सुरक्षा परिषद (ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका सहित चार अनुपस्थित सदस्यों के साथ) ने दक्षिण अफ्रीकी सरकार से मुकदमे को समाप्त करने और आरोपियों को माफी देने का आग्रह किया।
हमारी पुनः बैठक से कुछ दिन पहले, मैंने लंदन विश्वविद्यालय की एलएलबी. की परीक्षाओं के लिए प्रश्नपत्र लिखे। शायद यह अजीब लगे कि मैं फैसले से कुछ

दिन पहले कानून की परीक्षा दे रहा था। मेरे सुरक्षाकर्मियों को तो यह और भी अजीब लगा, जिन्होंने कहा कि मुझे जहाँ जाना है वहाँ कानून की डिग्री की आवश्यकता नहीं होगी। लेकिन मैंने मुकदमे के दौरान भी अपनी पढ़ाई जारी रखी थी और मैं परीक्षा देना चाहता था। मेरा पूरा ध्यान इसी पर केंद्रित था, और बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह नकारात्मक विचारों से बचने का एक तरीका था। मैं जानता था कि मैं जल्द ही वकालत नहीं कर पाऊंगा, लेकिन मैं दूसरे विकल्प के बारे में सोचना भी नहीं चाहता था। मैंने परीक्षा पास कर ली।

गुरुवार, 11 जून को, हम फैसले के लिए न्याय भवन में फिर से एकत्रित हुए। हम जानते थे कि हममें से कम से कम छह लोगों के लिए, दोषी के अलावा कोई और फैसला नहीं हो सकता था। सवाल सजा का था।
डी वेट ने बिना समय बर्बाद किए सीधे मुद्दे पर बात शुरू कर दी। उन्होंने धीमी और तेज़ आवाज़ में कहा, “मैंने अपने निष्कर्षों के कारणों को लिख लिया है। मैं उन्हें पढ़कर सुनाना नहीं चाहता।”
“आरोपी नंबर एक को चारों मामलों में दोषी पाया गया है। आरोपी नंबर दो को चारों मामलों में दोषी पाया गया है। आरोपी नंबर तीन को चारों मामलों में दोषी पाया गया है…।”
डी वेट ने सभी मुख्य आरोपियों को सभी आरोपों में दोषी ठहराया। कैथी को चार में से केवल एक आरोप में दोषी पाया गया, जबकि रस्टी बर्नस्टीन को निर्दोष पाया गया और रिहा कर दिया गया।
“मैं आज सजा के मुद्दे पर चर्चा नहीं करना चाहता,” डी वेट ने कहा। “राज्य और बचाव पक्ष को कल सुबह दस बजे अपनी बात रखने का अवसर दिया जाएगा।” इसके बाद अदालत की कार्यवाही स्थगित कर दी गई।
हमें उम्मीद थी कि कैथी और म्हाबा शायद दोषसिद्धि से बच जाएँगे, लेकिन यह एक और संकेत था, यदि इसकी आवश्यकता थी, कि राज्य कठोर रुख अपना रहा है। यदि वह कम सबूतों के आधार पर म्हाबा को चारों मामलों में दोषी ठहरा सकता है, तो क्या हमारे जैसे लोगों के लिए, जिनके खिलाफ सबूत पुख्ता थे, मौत की सजा कितनी दूर हो सकती है?

उस रात, आपस में चर्चा करने के बाद, वाल्टर, गोवन और मैंने वकीलों को बताया कि हमें जो भी सज़ा मिले, चाहे वह मृत्युदंड ही क्यों न हो, हम अपील नहीं करेंगे। हमारे इस फैसले से हमारे वकील स्तब्ध रह गए। वाल्टर, गोवन और मुझे विश्वास था कि अपील करने से हमारा नैतिक रुख़ कमज़ोर पड़ जाएगा। हमने शुरू से ही यही कहा था कि हमने जो कुछ भी किया है, गर्व से और नैतिक कारणों से किया है। अब हम अपील में इसके विपरीत कुछ भी कहने वाले नहीं थे। अगर मृत्युदंड दिया जाता, तो हम उस जन अभियान को रोकना नहीं चाहते थे जो निश्चित रूप से शुरू होता। हमने शुरू से जो साहसी और दृढ़ रुख़ अपनाया था, उसे देखते हुए अपील करना निष्फल और निराशाजनक प्रतीत होता। हमारा संदेश यह था कि स्वतंत्रता के संघर्ष में कोई भी बलिदान बहुत बड़ा नहीं होता। हमारे वकील हमारे फैसले से नाखुश थे और अपील पर चर्चा करना चाहते थे। लेकिन वाल्टर, गोवन और मैं अगले दिन सजा सुनाने की प्रक्रिया पर चर्चा करना चाहते थे। अगर हमें मौत की सजा सुनाई जाती, तो फिर क्या होता? हमें बताया गया कि डी वेट द्वारा मौत की सजा सुनाए जाने के बाद, वे मुझसे, पहले आरोपी होने के नाते, पूछेंगे, "क्या आपके पास कोई ऐसा कारण है जिसके आधार पर मौत की सजा न दी जाए?" मैंने ब्रैम, जोएल और वर्नोन से कहा कि उस स्थिति में मेरे पास कहने के लिए बहुत कुछ होगा। मैं डी वेट से कहूंगा कि मैं इस विश्वास के साथ मरने के लिए तैयार हूं कि मेरी मृत्यु उस उद्देश्य के लिए प्रेरणा बनेगी जिसके लिए मैं अपना जीवन दे रहा हूं। मेरी मृत्यु - हमारी मृत्यु - व्यर्थ नहीं जाएगी; बल्कि हम मृत्यु में शहीद बनकर उस उद्देश्य की सेवा कर सकते हैं जो जीवन में कभी संभव नहीं था। वकील ने कहा कि ऐसा भाषण अपील के लिए बहुत मददगार नहीं होगा, और मैंने फिर से पुष्टि की कि हम अपील नहीं करेंगे।
भले ही हमें मृत्युदंड न मिले, फिर भी अपील न करने के कई व्यावहारिक कारण थे। एक तो यह कि हम हार सकते थे। अपीलीय न्यायालय यह फैसला कर सकता था कि डी वेट ने बहुत नरमी बरती थी और हम मृत्युदंड के पात्र थे। अपील करने से हमें रिहा करने के लिए अंतरराष्ट्रीय दबाव को रोका जा सकता था।

राज्य के लिए, मृत्युदंड सबसे व्यावहारिक फैसला होगा। हमने सुना था कि न्याय मंत्री जॉन वॉर्स्टर ने अपने मित्रों से कहा था कि द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान प्रधानमंत्री स्मट्स की सबसे बड़ी गलती उन्हें राजद्रोह के लिए फांसी न देना थी। उन्होंने कहा कि राष्ट्रवादी वही गलती नहीं दोहराएंगे।
मैं मृत्युदंड के लिए तैयार था। किसी चीज़ के लिए सचमुच तैयार होने के लिए, वास्तव में उसकी उम्मीद होनी चाहिए। कोई व्यक्ति किसी चीज़ के लिए तब तक तैयार नहीं हो सकता जब तक वह मन ही मन यह मानता रहे कि ऐसा नहीं होगा। हम सब तैयार थे, इसलिए नहीं कि हम बहादुर थे, बल्कि इसलिए कि हम यथार्थवादी थे। मुझे शेक्सपियर की ये पंक्तियाँ याद आईं: "मृत्यु को स्वीकार करो; क्योंकि मृत्यु या जीवन, दोनों में से कोई एक मीठा होगा।"

58

शुक्रवार, 12 जून, 1964 को हम आखिरी बार अदालत में दाखिल हुए। रिवोनिया में हुई उन दुर्भाग्यपूर्ण गिरफ्तारियों को लगभग एक साल बीत चुका था। सुरक्षा व्यवस्था असाधारण रूप से कड़ी थी। हमारा काफिला सायरन बजाते हुए सड़कों से तेज़ी से गुजरा। अदालत की ओर जाने वाली सभी सड़कें सामान्य यातायात के लिए बंद कर दी गई थीं। पुलिस न्याय भवन के पास जाने की कोशिश करने वाले किसी भी व्यक्ति की पहचान की जाँच कर रही थी। उन्होंने स्थानीय बस और रेलवे स्टेशनों पर भी चौकियाँ स्थापित कर रखी थीं। इस डर के बावजूद, लगभग दो हज़ार लोग अदालत के सामने "हम अपने नेताओं के साथ खड़े हैं" जैसे नारे लिखे बैनर और तख्तियाँ लिए जमा हुए। अंदर, दर्शक दीर्घा खचाखच भरी हुई थी, और स्थानीय और विदेशी प्रेस के लिए खड़े होने की भी जगह नहीं थी। मैंने विनी और अपनी माँ को हाथ हिलाकर अभिवादन किया। उन्हें वहाँ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई; मेरी माँ ट्रांसकेई से इतनी दूर चलकर आई थीं। अपने बेटे को मौत की सज़ा सुनाई जाएगी या नहीं, यह देखने के लिए अदालत में आना एक बहुत ही अजीब अनुभव होता होगा। हालाँकि मुझे लगता है कि मेरी माँ को सब कुछ समझ नहीं आ रहा था, फिर भी उनका समर्थन कभी कम नहीं हुआ। विनी भी उतनी ही दृढ़ थीं, और उनकी हिम्मत ने मुझे भी शक्ति दी।
रजिस्ट्रार ने मामले का नाम पुकारा: "राज्य बनाम मंडेला और अन्य।" फैसला सुनाए जाने से पहले, सजा कम करने के लिए दो दलीलें पेश की गईं। एक दलील हेरोल्ड हैनसन ने दी और दूसरी लिबरल पार्टी के राष्ट्रीय अध्यक्ष रहे लेखक एलन पैटन ने। हैनसन ने प्रभावशाली ढंग से बोलते हुए कहा कि किसी राष्ट्र की शिकायतों को दबाया नहीं जा सकता, लोग हमेशा अपनी शिकायतों को व्यक्त करने का रास्ता खोज लेंगे। हैनसन ने कहा, "उनके इरादे आपराधिक नहीं थे, बल्कि वे तरीके आपराधिक थे जिनका उन्होंने सहारा लिया।" हैनसन ने कहा कि न्यायाधीश को यह याद रखना चाहिए कि उनके अपने लोग, अफ़्रीकानर्स, अपनी स्वतंत्रता के लिए हिंसक संघर्ष कर चुके हैं।
हालांकि पैटन स्वयं हिंसा का समर्थन नहीं करते थे, लेकिन उन्होंने कहा कि आरोपियों के पास केवल दो ही विकल्प थे: "या तो वे सिर झुकाकर आत्मसमर्पण कर

दें, या बलपूर्वक प्रतिरोध करें।" उन्होंने कहा कि आरोपियों को क्षमादान मिलना चाहिए, अन्यथा दक्षिण अफ्रीका का भविष्य अंधकारमय हो जाएगा। लेकिन डी वेट दोनों में से किसी की भी बात ध्यान से नहीं सुन रहा था। बोलते समय न तो उसने ऊपर देखा और न ही कुछ नोट किया। वह अपने ही विचारों में डूबा हुआ लग रहा था। जाहिर है उसने पहले ही फैसला कर लिया था; वह बस अपने फैसले को प्रकट करने के क्षण की प्रतीक्षा कर रहा था।

उन्होंने हमें उठने का इशारा किया। मैंने उनकी नज़रें अपनी ओर खींचने की कोशिश की, लेकिन वे हमारी तरफ देख भी नहीं रहे थे। उनकी निगाहें दूर कहीं टिकी हुई थीं। उनका चेहरा पीला पड़ गया था और वे ज़ोर-ज़ोर से साँस ले रहे थे। हमने एक-दूसरे को देखा और जैसे जान गए हों: यह मृत्यु ही होगी, वरना इतना शांत स्वभाव का यह आदमी इतना घबराया हुआ क्यों था? और फिर उन्होंने बोलना शुरू किया।

इस मामले की सुनवाई के दौरान मैंने गैर-यूरोपीय आबादी की शिकायतों के बारे में बहुत कुछ सुना है। आरोपियों और उनके वकीलों ने मुझे बताया है कि गैर-यूरोपीय आबादी के सभी नेता इन शिकायतों को दूर करने की इच्छा से प्रेरित थे। मैं इस बात से बिल्कुल भी सहमत नहीं हूँ कि आरोपियों के इरादे उतने परोपकारी थे जितना वे अदालत को विश्वास दिलाना चाहते हैं। क्रांति का आयोजन करने वाले लोग आमतौर पर सरकार पर कब्जा कर लेते हैं और व्यक्तिगत महत्वाकांक्षा को एक मकसद के रूप में नकारा नहीं जा सकता।

वह एक पल के लिए रुका, मानो सांस लेने के लिए। डी वेट की आवाज़, जो पहले धीमी थी, अब मुश्किल से सुनाई दे रही थी।

इस न्यायालय का कार्य, जैसा कि अन्य देशों के न्यायालयों का होता है, कानून व्यवस्था बनाए रखना और उस राज्य के कानूनों को लागू करना है जिसके अंतर्गत यह कार्य करता है। जिस अपराध के लिए अभियुक्तों को दोषी ठहराया गया है, अर्थात् मुख्य अपराध, षड्यंत्र का अपराध, सारतः राजद्रोह का अपराध है।

राज्य ने इस अपराध के लिए इस प्रकार अभियोग न लगाने का निर्णय लिया है। इसे ध्यान में रखते हुए और मामले पर गंभीरतापूर्वक विचार करने के बाद, मैंने इस प्रकार के मामले में आमतौर पर उचित दंड मानी जाने वाली सर्वोच्च सजा न लगाने का निर्णय लिया है, लेकिन अपने कर्तव्य के अनुरूप, यही एकमात्र नरमी है जो मैं दिखा सकता हूँ। सभी अभियुक्तों को आजीवन कारावास की सजा दी जाएगी।
हमने एक-दूसरे को देखा और मुस्कुरा दिए। जब डी वेट ने घोषणा की कि वह हमें मौत की सजा नहीं सुना रहे हैं, तो अदालत में मौजूद सभी लोग सामूहिक रूप से स्तब्ध रह गए। लेकिन कुछ दर्शकों में खलबली मच गई क्योंकि वे डी वेट का फैसला नहीं सुन पाए थे। डेनिस गोल्डबर्ग की पत्नी ने उन्हें पुकारा, "डेनिस, क्या बात है!?"
“जिंदगी!” उसने मुस्कुराते हुए चिल्लाकर जवाब दिया। “जिंदगी! जीने के लिए!”
मैंने मुड़कर दर्शकों की ओर मुस्कुराते हुए विनी और अपनी माँ का चेहरा ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन अदालत में अफरा-तफरी मची हुई थी, लोग चिल्ला रहे थे, पुलिस भीड़ को इधर-उधर धकेल रही थी। मैं उन्हें देख नहीं पा रही थी। जैसे ही कई दर्शक फैसला सुनाने के लिए बाहर भागे, मैंने अंगूठा ऊपर करके एएनसी का सलाम किया। हमारे पुलिस गार्ड हमें कटघरे से बाहर निकालकर भूमिगत जाने वाले दरवाजे की ओर ले जाने लगे, और हालाँकि मैंने विनी का चेहरा फिर से ढूँढ़ने की कोशिश की, लेकिन नीचे की कोठरियों की ओर जाने वाले दरवाजे से अंदर घुसने से पहले मैं उसे देख नहीं पाई।

हमें अदालत भवन के नीचे बनी कोठरियों में हथकड़ी लगाकर रखा गया था। बाहर मौजूद भीड़ को लेकर पुलिस बेहद घबराई हुई थी। उन्होंने हमें आधे घंटे से ज़्यादा समय तक भूमिगत रखा, इस उम्मीद में कि लोग तितर-बितर हो जाएँगे। हमें इमारत के पीछे से ले जाया गया और एक काली वैन में बिठाया गया। हम अपने बगल में मोटरसाइकिल एस्कॉर्ट की तेज़ आवाज़ सुन सकते थे। भीड़ से बचने के लिए वैन ने दूसरा रास्ता ले लिया, लेकिन फिर भी हम भीड़ को "अमांदला!" चिल्लाते हुए और "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" की धीमी, सुंदर धुनें सुन

सकते थे। हमने खिड़की की सलाखों से मुट्ठी भींची, इस उम्मीद में कि भीड़ हमें देख ले, हालांकि हमें पता नहीं था कि वे देख पाएँगे या नहीं।
हम सभी अब दोषी कैदी थे। डेनिस गोल्डबर्ग से हमें अलग कर दिया गया क्योंकि वह श्वेत था और उसे एक अलग जेल में भेज दिया गया। हम बाकी सभी को प्रिटोरिया लोकल जेल की कोठरियों में अन्य सभी कैदियों से दूर बंद कर दिया गया। अब हमें चीख-पुकार और गीतों की जगह केवल दरवाजों और फाटकों की खड़खड़ाहट सुनाई देती थी।

* * *

उस रात, जब मैं अपनी कोठरी के फर्श पर बिछी चटाई पर लेटा था, तो मैंने डी वेट के फैसले के कारणों पर विचार किया। पूरे दक्षिण अफ्रीका में हुए प्रदर्शनों और अंतरराष्ट्रीय दबाव का उन पर निश्चित रूप से गहरा असर पड़ा था। अंतरराष्ट्रीय ट्रेड यूनियनों ने मुकदमे का विरोध किया था। दुनिया भर के डॉकवर्कर्स यूनियनों ने दक्षिण अफ्रीकी सामानों का कारोबार न करने की धमकी दी थी। रूसी प्रधानमंत्री लियोनिद ब्रेझनेव ने डॉ. वेरवोर्ड को पत्र लिखकर नरमी बरतने की गुहार लगाई थी। अमेरिकी कांग्रेस के सदस्यों ने विरोध प्रदर्शन किया था। ब्रिटिश संसद के पचास सदस्यों ने लंदन में मार्च निकाला था। अफवाह थी कि ब्रिटिश विदेश सचिव एलेक्स डगलस-होम पर्दे के पीछे से हमारे मकसद में मदद कर रहे थे। संयुक्त राष्ट्र में अमेरिकी प्रतिनिधि एडलाई स्टीवेन्सन ने एक पत्र लिखकर कहा था कि उनकी सरकार मौत की सजा को रोकने के लिए हर संभव प्रयास करेगी। मैंने सोचा कि एक बार जब डी वेट ने यह मान लिया होता कि हमने अभी तक गुरिल्ला युद्ध शुरू नहीं किया है और एएनसी और एमके अलग-अलग संगठन हैं, तो मौत की सजा देना मुश्किल होता; यह अत्यधिक प्रतीत होता।
वेरवोर्ड ने संसद को बताया कि यह निर्णय दुनिया भर से आए विरोध और अभ्यावेदनों के टेलीग्रामों से प्रभावित नहीं हुआ था। उन्होंने दावा किया कि उन्होंने समाजवादी देशों से आए सभी टेलीग्रामों को कूड़ेदान में फेंक दिया था।
कार्यवाही के अंत में, न्यायाधीश डी वेट ने ब्रैम फिशर से बातचीत के दौरान कहा कि बचाव पक्ष ने इस मामले में विश्वव्यापी स्तर पर व्यापक प्रचार किया

है। शायद यह दबाव को स्वीकार करने का उनका अपना तरीका था। वे जानते थे कि अगर हमें फांसी दी जाती, तो अधिकांश लोग उन्हें ही हमारा हत्यारा मानेंगे। फिर भी, उन पर अपने ही लोगों का और भी अधिक दबाव था। वे एक श्वेत अफ़्रीकानर थे, दक्षिण अफ़्रीकी व्यवस्था और मानसिकता के पात्र। जिस विश्वास प्रणाली ने उन्हें गढ़ा था, उसके विरुद्ध जाने की उनमें कोई इच्छा नहीं थी। उन्होंने हमें आजीवन कारावास की सजा देकर इन दबावों के आगे घुटने टेक दिए थे और हमें मृत्युदंड न देकर इनका विरोध किया था।
डी वेट द्वारा कथराडा, मोत्सोलेडी और म्लांगेनी को सुनाई गई सजा से मैं आश्चर्यचकित और असंतुष्ट था। मुझे उम्मीद थी कि वह कैथी को बरी कर देंगे और एलियास और एंड्रयू को हल्की सजा देंगे। ये दोनों एमके के अपेक्षाकृत कनिष्ठ सदस्य थे, और इन तीनों के संयुक्त अपराध की तुलना हममें से बाकी लोगों के अपराधों से शायद ही की जा सकती थी। लेकिन अपील न करने से हमने निस्संदेह कैथी, एंड्रयू और एलियास को नुकसान पहुंचाया: अपील अदालत उनकी सजा कम कर सकती थी।
हर शाम, प्रिटोरिया लोकल में, बत्तियाँ बुझने से पहले, जेल में अफ़्रीकी कैदियों के आज़ादी के गीत गूँजते थे। हम भी इस बुलंद आवाज़ में गाते थे। लेकिन, हर शाम, बत्तियाँ बुझने से कुछ ही पल पहले, मानो किसी मौन आदेश का पालन करते हुए, आवाज़ों का शोर थम जाता और पूरी जेल शांत हो जाती। फिर, जेल के एक दर्जन से ज़्यादा हिस्सों से, लोग "अमांदला!" चिल्लाते। इसके जवाब में सैकड़ों आवाज़ें "न्गावेथु!" कहतीं। अक्सर, हम खुद ही यह पुकार-जवाब शुरू कर देते थे, लेकिन उस रात, दूसरे गुमनाम कैदियों ने पहल की, और जेल के चारों ओर से आती आवाज़ें असाधारण रूप से तेज़ लग रही थीं, मानो हमें आगे आने वाली चुनौती के लिए तैयार कर रही हों।

भाग आठ

रोबेन द्वीप : द डार्क साल

59

आधी रात को, मैं जाग रहा था और छत को घूर रहा था—मुकदमे की तस्वीरें अभी भी मेरे दिमाग में घूम रही थीं—तभी मुझे गलियारे में कदमों की आहट सुनाई दी। मैं बाकी लोगों से अलग, अपनी कोठरी में बंद था। मेरे दरवाजे पर दस्तक हुई और मुझे सलाखों के पीछे से कर्नल ऑकैंप का चेहरा दिखाई दिया। "मंडेला," उन्होंने धीमी, भारी आवाज़ में कहा, "क्या तुम जाग रहे हो?"
मैंने उसे बताया कि मैं हूँ। उसने कहा, “आप बड़े भाग्यशाली हैं। हम आपको ऐसी जगह ले जा रहे हैं जहाँ आपको पूरी आज़ादी मिलेगी। आप खुलकर घूम सकेंगे; आप समुद्र और आकाश देख सकेंगे, सिर्फ़ धूसर दीवारें नहीं।”
उनका इरादा व्यंग्य करने का नहीं था, लेकिन मैं अच्छी तरह जानता था कि जिस जगह का वे जिक्र कर रहे थे, वहां मुझे वह आजादी नहीं मिलेगी जिसकी मुझे चाह थी। फिर उन्होंने कुछ रहस्यमय ढंग से कहा, "जब तक तुम कोई गड़बड़ नहीं करोगे, तुम्हें वह सब कुछ मिल जाएगा जो तुम चाहते हो।"
इसके बाद ऑकैम्प ने बाकी सभी को जगाया, जो एक ही कोठरी में थे, और उन्हें अपना सामान पैक करने का आदेश दिया। पंद्रह मिनट बाद हम प्रिटोरिया लोकल की लोहे की भूलभुलैया से गुजर रहे थे, जहाँ धातु के दरवाजों की लगातार बजने वाली आवाज़ें हमारे कानों में गूंज रही थीं।
बाहर निकलते ही हम सातों—वाल्टर, रेमंड, गोवन, कैथी, एंड्रयू, एलियास और मैं—को हथकड़ी पहनाकर पुलिस वैन के पीछे बिठा दिया गया। आधी रात हो चुकी थी, लेकिन हममें से कोई भी थका हुआ नहीं था और माहौल बिलकुल भी उदास नहीं था। हम धूल भरी ज़मीन पर बैठे, गाते-नाचते, मुक़दमे के आखिरी पलों को याद कर रहे थे। जेल के रखवालों ने हमें सैंडविच और ठंडे पेय दिए और लेफ्टिनेंट वैन विक भी हमारे साथ पीछे बैठे थे। वे एक मिलनसार व्यक्ति थे और गाने में थोड़ी देर की शांति के दौरान उन्होंने हमारे भविष्य के बारे में अपनी राय दी। उन्होंने कहा, “तुम लोग ज़्यादा दिन जेल में नहीं रहोगे। तुम्हारी रिहाई की मांग बहुत ज़ोरदार है। एक-दो साल में तुम बाहर आओगे और राष्ट्रीय नायक बनकर लौटोगे। भीड़ तुम्हारा जयजयकार करेगी, हर कोई तुम्हारा दोस्त बनना चाहेगा, औरतें तुम्हें चाहेंगी। वाह, तुम्हारी तो मौज है।” हमने बिना कुछ कहे उनकी बात सुनी, लेकिन मैं मानता हूँ कि उनके भाषण ने मुझे बहुत

उत्साहित किया। दुर्भाग्यवश, उनकी भविष्यवाणी लगभग तीन दशक गलत साबित हुई।

* * *

हम आधी रात को भारी पुलिस सुरक्षा में चुपचाप, गुप्त रूप से रवाना हो रहे थे, और आधे घंटे से भी कम समय में हम शहर के बाहर एक छोटे से सैन्य हवाई अड्डे पर पहुँच गए। हमें एक डकोटा नामक पुराने सैन्य परिवहन विमान में बिठाया गया, जो कभी बेहतर हालत में हुआ करता था। अंदर कोई हीटर नहीं था, और हम विमान के निचले हिस्से में काँप रहे थे। कुछ अन्य लोगों ने पहले कभी हवाई यात्रा नहीं की थी और वे अपनी मंज़िल से ज़्यादा अपनी यात्रा को लेकर चिंतित लग रहे थे; पंद्रह हज़ार फीट की ऊँचाई पर विमान में ऊपर-नीचे होना उन्हें ऊँची दीवारों वाली कोठरी में बंद होने से कहीं ज़्यादा खतरनाक लग रहा था।
लगभग एक घंटे की उड़ान के बाद, भोर की रोशनी से नीचे का इलाका जगमगा उठा। विमान में खिड़कियाँ थीं, और जैसे ही हल्की रोशनी में दिखाई देने लगा, मेरे साथियों ने शीशे से अपने चेहरे चिपका लिए। हम दक्षिण-पूर्व दिशा में, ऑरेंज फ्री स्टेट के सूखे, समतल मैदानों और हरे-भरे पहाड़ी केप प्रायद्वीप के ऊपर से उड़ रहे थे। मैं भी खिड़कियाँ खोलकर बाहर देखने लगा, नज़ारे का जायज़ा ले रहा था, एक पर्यटक की तरह नहीं बल्कि एक रणनीतिकार की तरह, उन जगहों की तलाश में जहाँ कोई गुरिल्ला सेना छिप सकती थी।
एमके के गठन के बाद से ही यह बहस चल रही थी कि क्या दक्षिण अफ्रीका का ग्रामीण इलाका गुरिल्ला सेना का समर्थन कर सकता है। उच्च कमान के अधिकांश अधिकारियों का मानना था कि ऐसा संभव नहीं है। जब हम केप में मैट्रूसबर्ग नामक एक जंगली, पहाड़ी इलाके के ऊपर से उड़ रहे थे, तो मैंने अपने साथियों से चिल्लाकर कहा कि यह वह इलाका है जहाँ हम लड़ सकते हैं। सैनिक उत्साहित हो गए और बेहतर ढंग से देखने के लिए गर्दनें झुका लीं, और वास्तव में, घने जंगलों वाला वह इलाका एक नवोदित गुरिल्ला सेना को पनाह देने के लिए उपयुक्त प्रतीत हुआ।
कुछ ही मिनटों में हम केप टाउन के बाहरी इलाके में पहुँच गए। जल्द ही, हमें केप फ्लैट्स के छोटे-छोटे, डिब्बे जैसे घर, शहर के बीचोंबीच की चमकती

इमारतें और टेबल माउंटेन की सपाट चोटी दिखाई देने लगी। फिर, टेबल बे में, अटलांटिक महासागर के गहरे नीले पानी में, हमें रॉबेन द्वीप की धुंधली सी आकृति दिखाई देने लगी।

हम द्वीप के एक छोर पर स्थित हवाई पट्टी पर उतरे। वह एक उदास, बादलों से घिरा दिन था, और जब मैं विमान से बाहर निकला, तो सर्द सर्दियों की हवा हमारी पतली जेल की वर्दी को चीरती हुई अंदर घुस गई। वहाँ स्वचालित हथियारों से लैस गार्डों ने हमारा स्वागत किया; वातावरण तनावपूर्ण लेकिन शांत था, दो साल पहले द्वीप पर मेरे आगमन पर मिले शोरगुल भरे स्वागत से बिलकुल अलग।
हमें पुरानी जेल ले जाया गया, जो एक अलग-थलग पत्थर की इमारत थी, जहाँ हमें बाहर खड़े होकर कपड़े उतारने का आदेश दिया गया। जेल जीवन की एक रस्म के तौर पर की जाने वाली अपमानजनक प्रथा यह है कि जब आपको एक जेल से दूसरी जेल में स्थानांतरित किया जाता है, तो सबसे पहले आपको पुरानी जेल के कपड़े उतारकर नई जेल के कपड़े पहनने पड़ते हैं। जब हमारे कपड़े उतर गए, तो हमें रॉबेन द्वीप की सादी खाकी वर्दी दे दी गई।
रंगभेद के नियम कपड़ों तक भी लागू थे। कैथी को छोड़कर हम सभी को छोटी पैंट, एक हल्की-सी जर्सी और एक कैनवास जैकेट मिली। कैथी, जो हम सब में अकेली भारतीय थी, उसे लंबी पैंट दी गई। आम तौर पर अफ्रीकियों को कार के टायरों से बनी चप्पलें मिलती थीं, लेकिन इस बार हमें जूते दिए गए। कैथी को अकेले मोज़े मिले। अफ्रीकियों के लिए छोटी पैंट हमें यह याद दिलाने के लिए थी कि हम "लड़के" हैं। मैंने उस दिन छोटी पैंट पहनी, लेकिन मैंने मन ही मन ठान लिया कि मैं इसे ज़्यादा देर तक नहीं पहनूंगा।
पहरेदारों ने अपनी बंदूकों से उस दिशा की ओर इशारा किया जहाँ वे हमें जाने के लिए कह रहे थे, और सरल एक-शब्द के आदेशों में चिल्लाकर अपने आदेश दिए: "आगे बढ़ो!" "चुप रहो!" "रुको!" उन्होंने हमें उस तरह से धमकाया नहीं जिस तरह से मुझे अपने पिछले प्रवास के दौरान याद था, और न ही उन्होंने कोई भावना प्रकट की।

❖

लंबाई तीन कदमों में तय कर सकता था। जब मैं लेटता था, तो मुझे अपने पैरों से दीवार का एहसास होता था और मेरा सिर दूसरी तरफ कंक्रीट से छू जाता था। कोठरी की चौड़ाई लगभग छह फीट थी और दीवारें कम से कम दो फीट मोटी थीं। प्रत्येक कोठरी के बाहर एक सफेद कार्ड लगा होता था जिस पर हमारा नाम और हमारा जेल सेवा नंबर लिखा होता था। मेरे कार्ड पर लिखा था, "एन मंडेला 466/64," जिसका मतलब था कि मैं 1964 में द्वीप पर भर्ती होने वाला 466 वां कैदी था। मैं छियालीस वर्ष का था, आजीवन कारावास की सजा काट रहा एक राजनीतिक कैदी था, और वह छोटी सी तंग जगह न जाने कब तक मेरा घर बनने वाली थी।

कुछ ही देर में कई कैदी हमारे साथ आ गए, जिन्हें जेल के सामान्य भाग में रखा गया था, जो सेक्शन बी से कुछ ही दूरी पर स्थित एक छोटी ईंटों की इमारत थी। सामान्य जेल, जिसे सेक्शन एफ और जी के नाम से जाना जाता था, में लगभग एक हजार कैदी थे, जिनमें से अधिकांश सामान्य कानून के तहत जेल में थे। उनमें से लगभग एक चौथाई राजनीतिक कैदी थे, और उनमें से कुछ को हमारे साथ सेक्शन बी में रखा गया था। हमें दो कारणों से सामान्य कैदियों से अलग रखा गया था: सुरक्षा की दृष्टि से हमें जोखिम भरा माना जाता था, लेकिन राजनीतिक दृष्टि से तो और भी ज्यादा खतरनाक। अधिकारियों को चिंता थी कि कहीं हम अपने राजनीतिक विचारों से अन्य कैदियों को प्रभावित न कर दें।
हमारे साथ रखे गए लोगों में जॉर्ज पीक भी थे, जो दक्षिण अफ्रीकी कलर्ड पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन के संस्थापकों में से एक थे, राजद्रोह के मुकदमे का सामना कर चुके थे और हाल ही में केप टाउन नगर परिषद के सदस्य थे। उन्हें केप टाउन की एक जेल के बाहर विस्फोटक लगाने के आरोप में सजा सुनाई गई थी। डेनिस ब्रूटस, एक अन्य कलर्ड राजनीतिक कार्यकर्ता, पोर्ट एलिजाबेथ के कवि और लेखक थे, जिन्हें अपने अधिकारों का उल्लंघन करने के आरोप में जेल में डाल दिया गया था। हमारे साथ बिली नायर भी शामिल हुए, जो नेटाल इंडियन कांग्रेस के लंबे समय से सदस्य थे और उमखोंटो वे सिज़वे के सदस्य के रूप में तोड़फोड़ के आरोप में सजा पाए थे।

कुछ ही दिनों में हमारे साथ और भी लोग जुड़ गए, जिनमें नेविल अलेक्जेंडर भी शामिल थे, जो एक प्रमुख अश्वेत बुद्धिजीवी और गैर-यूरोपीय एकता आंदोलन के सदस्य थे। उन्होंने केप टाउन में यु ची चान क्लब नामक एक छोटा सा कट्टरपंथी संगठन बनाया था, जो गुरिल्ला युद्ध का अध्ययन करता था। नेविल ने केप टाउन विश्वविद्यालय से बीए और जर्मनी के ट्यूबिन्गेन विश्वविद्यालय से जर्मन साहित्य में डॉक्टरेट की उपाधि प्राप्त की थी। नेविल के साथ, फिकिले बाम भी थे, जो केप टाउन विश्वविद्यालय में कानून के छात्र और यु ची चान क्लब के एक अन्य सदस्य थे; और ज़ेफानिया मोथोपेंग, जो पीएसी की राष्ट्रीय कार्यकारिणी के सदस्य थे। ज़ेफ ऑरलैंडो में एक शिक्षक थे, और बंटू शिक्षा के कट्टर विरोधी थे, और पीएसी के नेताओं में सबसे समझदार लोगों में से एक थे। ट्रांसकेई के तीन वृद्ध किसान, जिन्हें "स्वशासी" ट्रांसकेई के मुख्यमंत्री के. डी. मातानज़िमा की हत्या की साजिश रचने के आरोप में दोषी ठहराया गया था, उन्हें भी हमारे साथ जेल में डाल दिया गया था।
लगभग बीस कैदियों का यह हमारा मुख्य समूह बन गया। कुछ को मैं जानता था, कुछ के बारे में सुना था, जबकि कुछ को मैं बिलकुल नहीं जानता था। आम तौर पर, जेल में कुछ ही खुशनुमा पल होते हैं, जिनमें से एक होता है पुराने दोस्तों और नए चेहरों से मिलना, लेकिन उन शुरुआती हफ्तों का माहौल इतना दमनकारी था कि हम एक-दूसरे को नमस्कार तक नहीं कर पाते थे। हमारे पास कैदियों के बराबर ही गार्ड थे, और वे हर नियम को धमकियों और डरा-धमकाकर लागू करवाते थे।

पहले सप्ताह हमने वह काम शुरू किया जो अगले कुछ महीनों तक हमें व्यस्त रखने वाला था। हर सुबह, वॉलीबॉल के आकार के पत्थरों का एक ढेर आंगन के प्रवेश द्वार पर डाल दिया जाता था। ठेले की मदद से हम पत्थरों को आंगन के बीचोंबीच ले जाते थे। हमें बड़े पत्थरों के लिए या तो चार पाउंड के हथौड़े या चौदह पाउंड के हथौड़े दिए गए थे। हमारा काम पत्थरों को पीसकर बजरी बनाना था। हमें लगभग डेढ़ गज की दूरी पर चार पंक्तियों में बाँटा गया था और हम पालथी मारकर जमीन पर बैठते थे। हमें टायरों से बनी एक मोटी रबर की अंगूठी दी गई थी, जिसमें हमें पत्थर रखने थे। अंगूठी का उद्देश्य उड़ते

हुए पत्थर के टुकड़ों को पकड़ना था, लेकिन ऐसा शायद ही कभी होता था। हमने अपनी आँखों की सुरक्षा के लिए तार के बने अस्थायी मास्क पहन रखे थे।
हम पर पहरा देने वाले लोग चुप्पी बनाए रखने के लिए हमारे बीच घूमते रहते थे। शुरुआती कुछ हफ्तों में, दूसरे विभागों और यहाँ तक कि दूसरी जेलों के पहरेदार भी हमें ऐसे घूरते थे मानो हम पिंजरे में बंद दुर्लभ जानवरों का समूह हों। काम थकाऊ और कठिन था; इतना ज़ोरदार तो नहीं था कि हमें ठंड न लगे, लेकिन इतना कठिन ज़रूर था कि हमारी सारी मांसपेशियां दुखने लगती थीं। रॉबेन द्वीप पर जून और जुलाई सबसे उदास महीने होते थे। ठंड का मौसम छा चुका था और बारिश शुरू ही हुई थी। तापमान 40 डिग्री फ़ारेनहाइट से ऊपर कभी नहीं जाता था। धूप में भी मैं अपनी हल्की खाकी कमीज़ में कांपता रहता था। तभी मुझे समझ आया कि ठंड से हड्डियों तक कांपने का क्या मतलब होता है। दोपहर में हम लंच के लिए रुकते थे। पहले हफ्ते हमें सिर्फ़ सूप दिया जाता था, जिसकी बदबू बहुत बुरी होती थी। दोपहर बाद हमें कड़ी निगरानी में आधे घंटे के लिए व्यायाम करने की अनुमति थी। हम आंगन में एक-एक करके तेज़ी से चलते थे।
पत्थर तोड़ने के हमारे शुरुआती दिनों में से एक दिन, एक वार्डर ने कैथी को आदेश दिया कि वह बजरी से भरी एक ठेलागाड़ी को प्रवेश द्वार के पास खड़ी ट्रक तक ले जाए। कैथी दुबला-पतला था और उसे कड़ी शारीरिक मेहनत की आदत नहीं थी। वह ठेलागाड़ी को हिला भी नहीं पा रहा था। वार्डर चिल्लाए: “लात डारडी क्रुइवा लूप!” (उस ठेले को हिलाओ!) जैसे ही कैथी ने उसे थोड़ा आगे धकेला, ठेलागाड़ी पलटने ही वाली थी, और वार्डर हंसने लगे। कैथी, मैं समझ गया, उन्हें हंसने का मौका नहीं देना चाहता था। मुझे ठेले को चलाना आता था, इसलिए मैं उसकी मदद करने के लिए उठ खड़ा हुआ। बैठने का आदेश मिलने से पहले ही, मैं कैथी को धीरे-धीरे ठेले को चलाने के लिए कहने में कामयाब हो गया, कि यह संतुलन का मामला है, ताकत का नहीं। उसने सिर हिलाया और फिर सावधानी से ठेले को आंगन के पार ले गया। वार्डरों की हंसी रुक गई।
अगली सुबह, अधिकारियों ने आंगन में एक विशाल बाल्टी रख दी और घोषणा की कि सप्ताह के अंत तक इसे आधा भरना होगा। हमने कड़ी मेहनत की और सफल रहे। अगले सप्ताह, प्रभारी वार्डर ने घोषणा की कि अब हमें बाल्टी को तीन-चौथाई भरना होगा। हमने बड़ी लगन से काम किया और सफल रहे। अगले सप्ताह हमें बाल्टी को पूरा भरने का आदेश दिया गया। हम जानते थे कि हम इसे और बर्दाश्त नहीं कर

सकते, लेकिन हमने कुछ नहीं कहा। हमने बाल्टी को पूरा भर भी दिया, लेकिन वार्डरों ने हमें उकसा दिया था। दबी आवाज़ में हमने एक नीति तय की: कोई कोटा नहीं। अगले सप्ताह हमने द्वीप पर अपनी पहली धीमी गति की हड़ताल शुरू की: हम अत्यधिक और अनुचित मांगों के विरोध में पहले की तुलना में आधी से भी कम गति से काम करेंगे। गार्डों ने इसे तुरंत देख लिया और हमें धमकाया, लेकिन हमने अपनी गति नहीं बढ़ाई, और जब तक हम आंगन में काम करते रहे, हमने इस धीमी गति की रणनीति को जारी रखा।

* * *

सन् 1962 में जब मैं दो सप्ताह के लिए रॉबेन द्वीप पर रुका था, तब से यह जगह काफी बदल चुकी थी। 1962 में यहाँ बहुत कम कैदी थे; यह जगह एक पूर्ण विकसित जेल की बजाय एक प्रयोग जैसी लगती थी। दो साल बाद, रॉबेन द्वीप निःसंदेह दक्षिण अफ़्रीकी दंड प्रणाली का सबसे कठोर और अत्याचारी केंद्र बन चुका था। यह न केवल कैदियों के लिए, बल्कि जेल कर्मचारियों के लिए भी एक मुश्किल भरा ठिकाना था। सिगरेट और सहानुभूति मुहैया कराने वाले अश्वेत वार्डर अब नहीं रहे थे। वार्डर श्वेत थे और उनमें से अधिकतर अफ़्रीकान्स भाषा बोलते थे, और वे मालिक-सेवक जैसा रिश्ता चाहते थे। उन्होंने हमें उन्हें "बास" कहकर पुकारने का आदेश दिया, जिसे हमने मानने से इनकार कर दिया। रॉबेन द्वीप पर नस्लीय विभाजन पूर्ण था: यहाँ न तो कोई अश्वेत वार्डर था और न ही कोई श्वेत कैदी।
एक जेल से दूसरी जेल में जाना हमेशा समायोजन के दौर से गुजरता है। लेकिन रॉबेन द्वीप की यात्रा किसी दूसरे देश में जाने जैसी थी। इसकी एकांतता ने इसे महज़ एक और जेल नहीं, बल्कि एक अलग ही दुनिया बना दिया था, जो हमारी पिछली दुनिया से बिलकुल अलग थी। प्रिटोरिया से निकलते समय हमारा उत्साह चरम पर था, लेकिन यहाँ के कठोर वातावरण ने सब कुछ तहस-नहस कर दिया था; हमें इस सच्चाई का सामना करना पड़ा कि हमारा जीवन बेहद अंधकारमय होने वाला है। प्रिटोरिया में हम अपने समर्थकों और परिवारों से जुड़े हुए थे; द्वीप पर हम अलग-थलग पड़ गए, और सचमुच हम अलग-थलग ही थे। एक-दूसरे के साथ होने का सुकून तो था, लेकिन बस यही एक सुकून था। मेरी निराशा जल्द ही इस एहसास में बदल गई कि एक नई और अलग लड़ाई शुरू हो गई है।

पहले दिन से ही मैंने छोटे पतलून पहनने के लिए मजबूर किए जाने का विरोध किया था। मैंने जेल प्रमुख से मिलने की मांग की और शिकायतों की एक सूची बनाई। वार्डरों ने मेरे विरोध को अनसुना कर दिया, लेकिन दूसरे सप्ताह के अंत तक, मुझे अपनी कोठरी के फर्श पर बेतरतीब ढंग से फेंकी हुई एक पुरानी खाकी पतलून मिली। किसी भी पिन-स्ट्राइप वाले थ्री-पीस सूट ने मुझे इतना प्रसन्न नहीं किया था। लेकिन उन्हें पहनने से पहले मैंने यह जांच लिया कि क्या मेरे साथियों को भी पतलून दी गई हैं।
उनके पास वो नहीं थे, और मैंने वार्डर से उन्हें वापस ले जाने को कहा। मैंने ज़ोर देकर कहा कि सभी अफ़्रीकी कैदियों को लंबी पतलून मिलनी चाहिए। वार्डर बड़बड़ाया, “मंडेला, तुम कहते हो कि तुम्हें लंबी पतलून चाहिए और फिर जब हम तुम्हें देते हैं तो तुम उन्हें नहीं चाहते।” वार्डर एक अश्वेत व्यक्ति की पतलून को छूने से हिचकिचाया, और अंत में कमांडिंग ऑफिसर खुद मेरी कोठरी में उन्हें लेने आए। “बहुत खूब, मंडेला,” उन्होंने कहा, “तुम्हें भी वही कपड़े मिलेंगे जो बाकी सबको मिलते हैं।” मैंने जवाब दिया कि अगर वो मुझे लंबी पतलून देने को तैयार हैं, तो बाकी सबको क्यों नहीं मिल सकतीं? उनके पास कोई जवाब नहीं था।

60

द्वीप पर अपने पहले दो सप्ताह पूरे होने पर हमें सूचना मिली कि हमारे वकील, ब्रैम फिशर और जोएल जॉफ, अगले दिन हमसे मिलने आ रहे हैं। उनके आने पर हमें उनसे मिलने के लिए मुलाकात क्षेत्र में ले जाया गया। उनके आने का उद्देश्य दो गुना था: यह देखना कि हम कैसे बस गए हैं, और यह पुष्टि करना कि हम अभी भी अपनी सजा के खिलाफ अपील नहीं करना चाहते हैं। उन्हें देखे हुए कुछ ही सप्ताह हुए थे, लेकिन ऐसा लग रहा था जैसे सदियां बीत गई हों। वे किसी दूसरी दुनिया से आए हुए आगंतुकों की तरह लग रहे थे।
हम एक खाली कमरे में बैठे थे, बाहर एक मेजर परामर्श की निगरानी कर रहा था। मेरा मन कर रहा था कि मैं उन्हें गले लगा लूँ, लेकिन मेजर की मौजूदगी ने मुझे रोक लिया। मैंने उन्हें बताया कि हम सब ठीक हैं, और समझाया कि हम अभी भी अपील के खिलाफ हैं, उन सभी कारणों से जो हमने पहले बताए थे, जिनमें यह तथ्य भी शामिल था कि हम नहीं चाहते थे कि हमारी अपील अन्य एएनसी प्रतिवादियों के मामलों में हस्तक्षेप करे। ब्रैम और जोएल इस बात से सहमत लग रहे थे, हालाँकि मैं जानता था कि ब्रैम का मानना था कि हमें अपील करनी चाहिए।
जब हमारी बातचीत समाप्त होने वाली थी, मैंने ब्रैम से उनकी पत्नी मौली के बारे में संक्षेप में पूछा। मौली का नाम लेते ही ब्रैम खड़े हो गए, मुँह फेरा और अचानक कमरे से बाहर चले गए। कुछ मिनट बाद, वे शांत होकर लौटे और बातचीत फिर से शुरू कर दी, लेकिन मेरे सवाल का जवाब नहीं दिया।
हमारी मुलाकात कुछ ही देर बाद खत्म हो गई, और जब हम मेजर के साथ अपनी कोठरियों की ओर लौट रहे थे, तो उन्होंने मुझसे कहा, “मंडेला, क्या ब्रैम फिशर के व्यवहार से तुम प्रभावित हुए?” मैंने कहा कि मैं प्रभावित हुआ था। उन्होंने मुझे बताया कि पिछले हफ्ते एक कार दुर्घटना में मौली की मौत हो गई थी। उन्होंने बताया कि ब्रैम गाड़ी चला रहा था और सड़क पर एक जानवर से बचने के लिए उसने अचानक गाड़ी मोड़ी, जिससे गाड़ी नदी में गिर गई। मौली डूब गई थी।
हम इस खबर से स्तब्ध रह गए। मौली एक अद्भुत महिला थीं, उदार और निस्वार्थ, बिल्कुल भी भेदभाव नहीं करती थीं। उन्होंने ब्रैम को अनगिनत तरीकों से

सहारा दिया था। वह उनकी पत्नी, सहकर्मी और साथी थीं। ब्रैम अपने जीवन में पहले ही एक दुखद घटना झेल चुके थे: उनके बेटे की किशोरावस्था में ही सिस्टिक फाइब्रोसिस से मृत्यु हो गई थी।
जब मैंने मोली के बारे में पूछा तो उनका मुँह फेर लेना ब्रैम के स्वभाव का विशिष्ट उदाहरण था। वे एक संयमी व्यक्ति थे, जो कभी अपने दोस्तों पर अपना दर्द और परेशानियाँ नहीं थोपते थे। एक अफ़्रीकानर होने के नाते, जिनकी अंतरात्मा ने उन्हें अपनी विरासत को त्यागने और अपने ही लोगों द्वारा बहिष्कृत किए जाने के लिए मजबूर किया, उन्होंने जिस स्तर का साहस और बलिदान दिखाया, वह अद्वितीय था। मैंने केवल अन्याय के विरुद्ध लड़ाई लड़ी, अपने ही लोगों के विरुद्ध नहीं।
मैंने मेजर को बताया कि मैं ब्रैम को शोक पत्र लिखना चाहता हूँ, और उन्होंने मुझे इसकी अनुमति दे दी। उस समय पत्र लिखने के नियम अत्यंत सख्त थे। हमें केवल अपने करीबी परिवार वालों को ही पत्र लिखने की अनुमति थी, और वह भी हर छह महीने में केवल एक पत्र, जो पाँच सौ शब्दों का होना चाहिए। इसलिए, जब मेजर ने ब्रैम को पत्र लिखने पर कोई आपत्ति नहीं जताई, तो मुझे आश्चर्य और प्रसन्नता हुई। लेकिन उन्होंने अपने वादे का पालन नहीं किया। मैंने पत्र लिखा और मेजर को सौंप दिया, लेकिन उसे कभी डाक से भेजा ही नहीं गया।

कुछ ही महीनों में हमारा जीवन एक नियमित दिनचर्या में ढल गया। जेल का जीवन दिनचर्या पर आधारित होता है: हर दिन पिछले दिन जैसा; हर सप्ताह पिछले सप्ताह जैसा, इस प्रकार महीने और साल एक-दूसरे में घुलमिल जाते हैं। इस दिनचर्या से कोई भी विचलन अधिकारियों को परेशान कर देता है, क्योंकि नियमित दिनचर्या ही सुचारू रूप से संचालित जेल की निशानी होती है।
कैदी के लिए दिनचर्या सुकून देने वाली होती है, इसीलिए यह एक जाल भी बन सकती है। दिनचर्या एक ऐसी मोहक प्रेमिका की तरह होती है जिसका विरोध करना मुश्किल होता है, क्योंकि दिनचर्या से समय जल्दी बीत जाता है। रॉबेन द्वीप पर किसी भी प्रकार की घड़ी या टाइमर प्रतिबंधित थे, इसलिए हमें कभी भी ठीक-ठीक समय का पता नहीं चलता था। हम घंटियों, पहरेदारों की सीटियों और

[illegible]

61

हमें हर सुबह 5:30 बजे रात्रि रक्षक जगाता था, जो हमारे गलियारे के शीर्ष पर पीतल की घंटी बजाता और चिल्लाता, “उठो! उठो!” (जागो! उठो!) मैं हमेशा से जल्दी उठने वाला रहा हूँ और यह समय मेरे लिए बोझ नहीं था। हालाँकि हमें 5:30 बजे जगा दिया जाता था, लेकिन हमें 6:45 बजे तक अपनी कोठरियों से बाहर नहीं निकलने दिया जाता था, तब तक हमें अपनी कोठरियों की सफाई कर लेनी होती थी और अपने चटाई और कंबल समेट लेने होते थे। हमारी कोठरियों में बहता पानी नहीं था और शौचालयों के बजाय लोहे की बाल्टियाँ थीं जिन्हें “बाली” कहा जाता था। बाली का व्यास दस इंच होता था और ऊपर एक अवतल चीनी मिट्टी का ढक्कन होता था जिसमें पानी भरा जा सकता था। इस ढक्कन में मौजूद पानी का उपयोग शेविंग करने और अपने हाथों और चेहरों को साफ करने के लिए किया जाता था।
शाम 6:45 बजे, जब हमें अपनी कोठरियों से बाहर निकाला गया, तो सबसे पहले हमने अपने शौचालयों को खाली किया। गलियारे के अंत में बने सिंक में शौचालयों को अच्छी तरह से साफ करना ज़रूरी था, वरना उनसे बदबू आने लगती थी। शौचालय साफ करने का एकमात्र सुखद पहलू यह था कि उन शुरुआती दिनों में यही एक पल होता था जब हम अपने साथियों से दबे स्वर में बात कर सकते थे। वार्डर शौचालय साफ करते समय ज़्यादा देर रुकना पसंद नहीं करते थे, इसलिए यह धीरे से बात करने का एक मौका होता था।
शुरुआती कुछ महीनों के दौरान, नाश्ता हमें सामान्य कोठरियों के कैदियों द्वारा हमारी कोठरियों में पहुंचाया जाता था। नाश्ते में मक्के का दलिया होता था, जो मक्के से बना होता था। सामान्य कैदी इसे एक कटोरे में भरकर हमारी कोठरियों की सलाखों के बीच से घुमाकर पहुंचाते थे। यह एक चालाकी भरा तरीका था और दलिया को गिरने से बचाने के लिए कुशल हाथों की आवश्यकता होती थी।
कुछ महीनों बाद, नाश्ता हमें आँगन में पुराने धातु के तेल के ड्रमों में परोसा जाने लगा। हम साधारण धातु के कटोरे में दलिया खुद ही परोस लेते थे। हमें एक-एक मग में एक पेय दिया जाता था जिसे कॉफी बताया जाता था, लेकिन वास्तव में वह पिसा हुआ मक्का होता था, जिसे काला होने तक भूना जाता था और

फिर गर्म पानी में उबाला जाता था। बाद में, जब हम आँगन में जाकर खुद नाश्ता परोस सकते थे, तो मैं नाश्ता आने तक आँगन में जाकर चारों ओर दौड़ लगाता रहता था।
जेल में बाकी सब चीजों की तरह, खान-पान भी भेदभावपूर्ण है।
आम तौर पर, अश्वेतों और भारतीयों को अफ्रीकियों की तुलना में थोड़ा बेहतर भोजन मिलता था, लेकिन यह कोई बड़ा अंतर नहीं था। अधिकारी अक्सर कहते थे कि हमें संतुलित भोजन मिलता है; यह वास्तव में संतुलित था—बेस्वाद और न खाने योग्य चीज़ों के बीच। भोजन हमारे कई विरोध प्रदर्शनों का कारण था, लेकिन उन शुरुआती दिनों में, जेलर कहते थे, "अरे, तुम काफिर जेल में घर से भी बेहतर खाना खा रहे हो!"

नाश्ते के बीच में, पहरेदार चिल्लाते, “अंदर आओ! अंदर आओ!” (लाइन में लगो! लाइन में लगो!), और हम निरीक्षण के लिए अपनी कोठरियों के बाहर खड़े हो जाते। प्रत्येक कैदी के लिए अपनी खाकी जैकेट के तीनों बटन ठीक से बंद रखना अनिवार्य था। वार्डर के गुजरते समय हमें अपनी टोपी उतारनी पड़ती थी। यदि हमारे बटन खुले होते, टोपी न उतारी गई होती, या हमारी कोठरियाँ गंदी होतीं, तो हम पर जेल नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगता और हमें एकांत कारावास या भोजन से वंचित करने की सजा दी जाती।
निरीक्षण के बाद हम दोपहर तक आंगन में पत्थर ठोकते रहते थे। कोई आराम नहीं मिलता था; अगर हम धीमे पड़ते तो पहरेदार हमें तेज़ चलने के लिए चिल्लाते थे। दोपहर होते ही दोपहर के भोजन की घंटी बजती और भोजन से भरा एक और धातु का ड्रम आंगन में लाया जाता। अफ़्रीकी कैदियों को उबले हुए मक्के के दाने मिलते थे, यानी मक्के के मोटे दाने। भारतीय और अश्वेत कैदियों को सैम्प या मक्के का चावल मिलता था, जो सूप जैसे मिश्रण में पिसे हुए मक्के से बना होता था। सैम्प कभी-कभी सब्जियों के साथ परोसा जाता था, जबकि हमारा मक्का बिना किसी मिलावट के परोसा जाता था।
दोपहर के भोजन में हमें अक्सर फुज़ामंडला मिलता था, जिसका अर्थ है "शक्ति का पेय", यह मक्के और थोड़ी सी खमीर से बना एक पाउडर होता था। इसे पानी या दूध में मिलाकर पीना होता था और गाढ़ा होने पर यह स्वादिष्ट लगता था, लेकिन

जेल अधिकारी हमें इतना कम पाउडर देते थे कि उससे पानी में मुश्किल से ही रंग आता था। मैं आमतौर पर पाउडर को कई दिनों तक बचाकर रखता था ताकि एक अच्छा पेय बन सके, लेकिन अगर अधिकारियों को पता चल जाता कि आप भोजन जमा कर रहे हैं, तो पाउडर ज़ब्त कर लिया जाता था और आपको सज़ा दी जाती थी।
दोपहर के भोजन के बाद हम चार बजे तक काम करते रहे, जब पहरेदारों ने तेज़ सीटी बजाई और हम एक बार फिर गिनती और निरीक्षण के लिए कतार में खड़े हो गए। उसके बाद हमें साफ़-सफ़ाई के लिए आधा घंटा दिया गया। हमारे गलियारे के अंत में बने बाथरूम में दो खारे पानी के शॉवर, एक खारे पानी का नल और तीन बड़ी गैल्वनाइज्ड धातु की बाल्टियाँ थीं, जिनका इस्तेमाल हम बाथटब के रूप में करते थे। गर्म पानी नहीं था। हम इन बाल्टियों में खड़े होकर या बैठकर खारे पानी से साबुन लगाते और दिन भर की धूल धोते थे। बाहर ठंड होने पर ठंडे पानी से नहाना सुखद नहीं होता, लेकिन हमने जैसे-तैसे काम चलाया। कभी-कभी हम नहाते समय गाना भी गाते थे, जिससे पानी कम ठंडा लगता था। उन शुरुआती दिनों में, यही एक ऐसा समय था जब हम आपस में बातचीत कर पाते थे।
ठीक 4:30 बजे, हमारे गलियारे के अंत में लकड़ी के दरवाजे पर ज़ोर से दस्तक होती थी, जिसका मतलब होता था कि रात का खाना आ गया है। आम कैदी हमें खाना परोसते थे और हम उसे खाने के लिए अपनी कोठरियों में लौट जाते थे। हमें फिर से मक्के का दलिया मिलता था, कभी-कभी उसमें एक-आध गाजर, पत्तागोभी या चुकंदर का टुकड़ा भी होता था - लेकिन आमतौर पर उसे ढूंढना पड़ता था। अगर हमें कोई सब्ज़ी मिल भी जाती थी, तो हम आमतौर पर हफ़्तों तक वही एक सब्ज़ी खाते रहते थे, जब तक कि गाजर या पत्तागोभी पुरानी और सड़ी हुई न हो जाए और हम उनसे पूरी तरह ऊब न जाएँ। हर दूसरे दिन, हमें दलिया के साथ मांस का एक छोटा टुकड़ा मिलता था। मांस में आमतौर पर ज़्यादातर हड्डी ही होती थी। रात के खाने में, अश्वेत और भारतीय कैदियों को एक चौथाई रोटी (जिसे कटकोप कहा जाता था, यानी बिल्ली का सिर, रोटी के आकार के कारण) और मार्जरीन का एक टुकड़ा दिया जाता था। ऐसा माना जाता था कि अफ्रीकी लोग रोटी को पसंद नहीं करते थे क्योंकि यह एक "यूरोपीय" प्रकार का भोजन था।
आम तौर पर, हमें नियमों में निर्धारित मामूली रकम से भी कम मिलता था। इसकी वजह यह थी कि रसोई में चोरी-छिपे खाना बनाने का काम बड़े पैमाने पर होता था। रसोइये—जो सभी आम कैदी थे—सबसे अच्छा खाना अपने लिए या अपने दोस्तों

के लिए रख लेते थे। अक्सर वे सबसे स्वादिष्ट टुकड़े वार्डरों के लिए एहसान या तरजीही बर्ताव के बदले में अलग रख देते थे।
रात के 8 बजे, नाइट वार्डर हमारे साथ गलियारे में खुद को बंद कर लेता था और दरवाजे के एक छोटे से छेद से चाबी बाहर खड़े दूसरे वार्डर को दे देता था। फिर वार्डर गलियारे में इधर-उधर घूमता और हमें सोने का आदेश देता। रॉबेन द्वीप पर कभी भी "लाइट बंद करो" की आवाज नहीं आती थी क्योंकि हमारी कोठरी में लगा जालीदार बल्ब दिन-रात जलता रहता था। बाद में, उच्च शिक्षा प्राप्त करने वाले छात्रों को दस या ग्यारह बजे तक पढ़ने की अनुमति दी गई। गलियारे में आवाज़ काफी अच्छी आती थी, इसलिए सोने से पहले हम आपस में थोड़ी बातचीत करने की कोशिश करते थे। लेकिन अगर हमें फुसफुसाहट भी साफ सुनाई देती, तो वार्डर को भी सुनाई दे जाती, जो चिल्लाकर कहता, “गलियारे में चुप रहो!” (गलियारे में शांत रहो!) वार्डर यह देखने के लिए कई बार ऊपर-नीचे चक्कर लगाता कि कहीं हम पढ़ या लिख तो नहीं रहे हैं। कुछ महीनों बाद, हम गलियारे में मुट्ठी भर रेत बिखेर देते थे ताकि हमें वार्डर के कदमों की आहट सुनाई दे और हमें बात करना बंद करने या कोई भी प्रतिबंधित सामान छिपाने का समय मिल जाए। जब हम चुप हो जाते, तभी वह गलियारे के आखिर में बने छोटे से दफ्तर में जाकर बैठ जाता, जहाँ वह सुबह तक ऊंघता रहता था।

62

एक सुबह, ब्रैम और जोएल से मेरी मुलाकात के कई दिनों बाद, हमें मुख्य कार्यालय ले जाया गया। मुख्य कार्यालय लगभग एक चौथाई मील दूर था और एक साधारण पत्थर की इमारत थी जो हमारे अपने सेक्शन जैसी ही दिखती थी। वहाँ पहुँचकर, हमें उंगलियों के निशान लेने के लिए लाइन में खड़ा किया गया, जो जेल सेवा का एक नियमित काम था। लेकिन इंतज़ार करते समय, मैंने एक वार्डर को कैमरे के साथ देखा। उंगलियों के निशान लेने के बाद, मुख्य वार्डर ने हमें तस्वीरें खिंचवाने के लिए लाइन में लगने का आदेश दिया। मैंने अपने साथियों को हिलने-डुलने से मना किया और वार्डर से कहा: "मैं चाहता हूँ कि आप जेल आयुक्त का वह दस्तावेज़ दिखाएँ जिसमें हमारी तस्वीरें लेने की अनुमति दी गई हो।" कैदियों की तस्वीरें लेने के लिए ऐसी अनुमति आवश्यक थी।

नियमों से परिचित होना हमेशा फायदेमंद होता था, क्योंकि जेल के रखवाले अक्सर नियमों से अनभिज्ञ होते थे और मेरे ज्ञान से डर सकते थे। मेरी बात सुनकर रखवाला चौंक गया और न तो कोई स्पष्टीकरण दे पाया और न ही जेल आयुक्त से कोई लिखित प्रमाण पत्र पेश कर पाया। उसने धमकी दी कि अगर हम तस्वीरें खिंचवाने की अनुमति नहीं देंगे तो वह हम पर जुर्माना लगाएगा, लेकिन मैंने कहा कि अगर अनुमति नहीं होगी तो तस्वीरें भी नहीं खींची जाएंगी, और बात यहीं आकर रुक गई।
आम तौर पर, हम जेल में अपनी तस्वीरें खिंचवाने का विरोध करते थे, क्योंकि कैदी के रूप में देखा जाना अपमानजनक होता है। लेकिन एक तस्वीर ऐसी थी जिसके लिए मैंने सहमति दी थी, रॉबेन द्वीप पर रहते हुए मैंने केवल एक ही तस्वीर के लिए सहमति दी थी।

कुछ हफ़्तों बाद, एक सुबह, मुख्य वार्डर ने हमें आंगन में काम करने के लिए हथौड़े देने के बजाय, सुई-धागा और फटे-पुराने जेल के पर्दों का ढेर दे दिया। हमें उन पर्दों की मरम्मत करने का निर्देश दिया गया, लेकिन हमने पाया कि इनमें से अधिकांश पर्दों के इतने फटे हुए थे कि उनकी मरम्मत संभव नहीं थी। यह हमें एक अजीब काम लगा और हम सोचने लगे कि आखिर यह बदलाव क्यों किया गया। उसी सुबह, लगभग ग्यारह बजे, मुख्य द्वार खुला और कमांडिंग ऑफिसर सूट पहने दो आदमियों के साथ दिखाई दिए। कमांडिंग ऑफिसर ने बताया कि ये दोनों आगंतुक लंदन के डेली टेलीग्राफ के एक रिपोर्टर और एक फोटोग्राफर हैं। उन्होंने यह बात ऐसे बताई मानो अंतरराष्ट्रीय प्रेस के सदस्यों का आना हमारे लिए एक नियमित मनोरंजन हो।
हालांकि ये लोग हमारे पहले आधिकारिक आगंतुक थे, फिर भी हम उन पर संदेह की दृष्टि से देखते थे। पहली बात तो यह कि उन्हें सरकार के संरक्षण में लाया गया था, और दूसरी बात यह कि हम जानते थे कि टेलीग्राफ एक रूढ़िवादी अखबार था और हमारे प्रति सहानुभूति दिखाने की संभावना कम ही थी। हम भली-भांति जानते थे कि बाहरी दुनिया में हमारी स्थिति को लेकर काफी चिंता थी और सरकार के हित में यही था कि वह यह प्रदर्शित करे कि हमारे साथ दुर्व्यवहार नहीं किया जा रहा है।

दोनों पत्रकार आंगन में धीरे-धीरे घूमते हुए हमें देख रहे थे। हम अपना सिर नीचे करके अपने काम में लगे रहे। एक चक्कर लगाने के बाद, एक गार्ड ने मुझे कंधे से पकड़कर कहा, "मंडेला, आइए, अब आप बोलिए।" उन शुरुआती दिनों में, मैं अक्सर अपने साथी कैदियों की ओर से बोलता था। जेल सेवा के नियमों में स्पष्ट रूप से लिखा था कि प्रत्येक कैदी को केवल अपने लिए बोलने की अनुमति है। ऐसा संगठन की शक्ति को कमज़ोर करने और हमारी सामूहिक ताकत को निष्क्रिय करने के लिए किया गया था। हमने इस भूमिका का विरोध किया, लेकिन कोई खास प्रगति नहीं हुई। हमें शिकायत करते समय 'हम' शब्द का प्रयोग करने की भी अनुमति नहीं थी। लेकिन शुरुआती कुछ वर्षों में, जब अधिकारियों को दूसरों की ओर से बोलने के लिए किसी एक कैदी की आवश्यकता होती थी, तो वह व्यक्ति मैं ही होता था।
मैंने रिपोर्टर, जिनका नाम श्री न्यूमैन था, से लगभग बीस मिनट तक बात की और जेल तथा रिवोनिया मुकदमे दोनों के बारे में खुलकर चर्चा की। वे एक मिलनसार व्यक्ति थे और बातचीत के अंत में उन्होंने कहा कि वे चाहते हैं कि फोटोग्राफर मेरी तस्वीर खींचे। मैं हिचकिचा रहा था, लेकिन इस बार मान गया क्योंकि मुझे पता था कि तस्वीर केवल विदेशों में ही प्रकाशित होगी और अगर लेख थोड़ा सा भी सौहार्दपूर्ण रहा तो यह हमारे उद्देश्य में सहायक हो सकती है। मैंने उनसे कहा कि मैं तभी सहमत होऊंगा जब श्री सिसुलु मेरे साथ आ सकें। तस्वीर में हम दोनों आंगन में किसी विषय पर बात कर रहे हैं, जो मुझे अब याद नहीं है। मैंने वह लेख न तो देखा और न ही उसके बारे में कुछ सुना। रिपोर्टर अभी नज़रों से ओझल ही हुए थे कि वार्डरों ने हमारी जर्सी उतार दी और हमें हमारे हथौड़े वापस दे दिए।

टेलीग्राफ अखबार के लोग उन शुरुआती महीनों में आने वाले कुछ लोगों में से पहले थे। रिवोनिया मुकदमे की गूंज अभी भी लोगों के मन में थी, लेकिन सरकार अंतरराष्ट्रीय समुदाय को यह दिखाना चाहती थी कि हमारे साथ सही व्यवहार किया जा रहा है। प्रेस में द्वीप पर अमानवीय परिस्थितियों, हम पर हो रहे हमलों और यातनाओं के बारे में खबरें छप रही थीं। इन आरोपों से सरकार

शर्मिंदा थी, और इनसे निपटने के लिए उन्होंने कई बाहरी लोगों को बुलाया जिनका मकसद इन आलोचनात्मक खबरों का खंडन करना था।
विश्व न्यायालय में नामीबिया की स्वतंत्रता के लिए पैरवी कर चुके एक ब्रिटिश वकील ने हमसे संक्षिप्त मुलाकात की, जिसके बाद हमें सूचित किया गया कि अमेरिकी बार एसोसिएशन के प्रतिनिधि श्री हाइनिंग हमसे मिलने आ रहे हैं। उस समय दक्षिण अफ्रीका में अमेरिकी लोग एक नई हस्ती थे, और मैं इतने प्रतिष्ठित कानूनी संगठन के प्रतिनिधि से मिलने के लिए उत्सुक था।
श्री हिनिंग के आगमन के दिन हमें प्रांगण में बुलाया गया। अमेरिकी अधिकारी अपने साथ जेल आयुक्त जनरल स्टेन को लेकर आए, जो द्वीप पर बहुत कम ही दिखाई देते थे। जनरल स्टेन जेल सेवा में एक अनोखे व्यक्ति थे, एक सुसंस्कृत और परिष्कृत व्यक्तित्व वाले। उनके सूट हमेशा उत्तम गुणवत्ता और फैशनेबल कट के होते थे। वे शिष्ट थे और हमें "सज्जन" कहकर संबोधित करते थे, यहाँ तक कि हमारे सम्मान में अपनी टोपी भी उतारते थे, ऐसा जेल सेवा में कोई और कभी नहीं करता था। फिर भी जनरल स्टेन ने जानबूझकर नहीं बल्कि अनजाने में हम पर अत्याचार किया। उन्होंने द्वीप पर जो कुछ हो रहा था, उस पर एक तरह से आँखें मूंद ली थीं। उनकी लगातार अनुपस्थिति ने अधिक क्रूर जेल अधिकारियों को और अधिक साहसी बना दिया था और उन्हें मनमानी करने की खुली छूट दे दी थी। अपने अत्यंत विनम्र ढंग से, जनरल ने हमारे अतिथि का परिचय कराया और कहा, "सज्जनों, कृपया अपना प्रवक्ता चुनें।" कई कैदियों ने मेरा नाम पुकारा।
जनरल स्टेन ने मेरी ओर सिर हिलाया और मैं खड़ा हो गया। जनरल स्टेन के विपरीत, श्री हाइनिंग भारी-भरकम और अस्त-व्यस्त व्यक्ति थे। मैंने उनसे मिलने आने के लिए धन्यवाद कहा और बताया कि उनकी उपस्थिति हमारे लिए सम्मान की बात है। फिर मैंने अपनी शिकायतों का सारांश बताया, जिसकी शुरुआत सबसे महत्वपूर्ण शिकायत से हुई कि हम राजनीतिक कैदी हैं, अपराधी नहीं, और हमारे साथ वैसा ही व्यवहार किया जाना चाहिए। मैंने भोजन, रहने की स्थिति और काम के बारे में अपनी शिकायतें गिनाईं। लेकिन जब मैं बोल रहा था, श्री हाइनिंग मुझे बार-बार टोक रहे थे। जब मैंने लंबे समय तक निरर्थक काम करने के बारे में बात की, तो उन्होंने कहा कि कैदी होने के नाते हमें काम करना ही पड़ता है और शायद हम आलसी भी हैं।

जब मैंने अपनी कोठरियों की समस्याओं का ब्योरा देना शुरू किया, तो उसने बीच में ही टोकते हुए कहा कि पिछड़े अमेरिकी कारागारों की हालत रॉबेन द्वीप से कहीं बदतर थी, जो तुलनात्मक रूप से स्वर्ग जैसा था। उसने आगे कहा कि हमें न्यायसंगत रूप से दोषी ठहराया गया था और हम भाग्यशाली थे कि हमें मृत्युदंड नहीं मिला, जिसके हम शायद हकदार थे।
श्री हाइनिंग को बहुत पसीना आ रहा था और हममें से कुछ लोगों को लगा कि वे पूरी तरह से होश में नहीं हैं। उनकी बोलने की शैली मुझे दक्षिणी अमेरिकी लहजे जैसी लगी, और बोलते समय थूकने की उनकी एक अजीब आदत थी, जो हममें से किसी ने पहले कभी नहीं देखी थी।
आखिरकार, मैंने बहुत कुछ सुन लिया था, और मैंने उन्हें बीच में ही रोकते हुए कहा, "नहीं महोदय, आप मेरी बात को गलत समझ रहे हैं।" हाइनिंग को बुरा लगा कि मैं अब उनका विरोध कर रहा था, जबकि जनरल स्टेन बिना कुछ कहे देखते और सुनते रहे। इन परिस्थितियों में, गुस्से को काबू में रखना मुश्किल था। श्री हाइनिंग की बातों से सैनिक क्रोधित थे और इस बात से नाराज़ थे कि उन्हें हमसे मिलने की अनुमति ही क्यों दी गई। आम तौर पर, किसी भी तरह की मुलाकात से हमारा मनोबल बढ़ जाता था, लेकिन श्री हाइनिंग की मुलाकात मनोबल गिराने वाली थी। शायद अधिकारी यही चाहते थे। इतने प्रभावशाली संबंध रखने वाले और इतनी कम समझ रखने वाले व्यक्ति से मिलना निराशाजनक था। अंत में हाइनिंग बिना अलविदा कहे ही मुड़े और चले गए। हमें उनके जाने का कोई अफसोस नहीं था।
हमने उसके बाद कई वर्षों तक श्री हाइनिंग के बारे में चर्चा की और कई लोग हास्यप्रद ढंग से उसके बोलने के तरीके की नकल करते थे। हमने उसके बारे में फिर कभी नहीं सुना, और निश्चित रूप से उसने रॉबेन द्वीप पर अमेरिकन बार एसोसिएशन के लिए कोई मित्रता नहीं बनाई।

63

जेल में, सभी कैदियों को अधिकारियों द्वारा चार श्रेणियों में वर्गीकृत किया जाता है: ए, बी, सी या डी। ए सर्वोच्च श्रेणी है और इसमें सबसे अधिक विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं; डी सबसे निम्न श्रेणी है और इसमें सबसे कम विशेषाधिकार प्राप्त होते हैं। सभी राजनीतिक कैदियों, या जिन्हें अधिकारी "सुरक्षा कैदी" कहते थे, को प्रवेश के समय स्वतः ही डी श्रेणी में रखा जाता था। इन वर्गीकरणों से प्रभावित विशेषाधिकारों में मुलाक़ातें और पत्र-व्यवहार, अध्ययन और किराने का सामान और अन्य आवश्यक वस्तुएँ खरीदने का अवसर शामिल था - ये सभी किसी भी कैदी के जीवन के लिए आवश्यक हैं। आमतौर पर एक राजनीतिक कैदी को अपनी श्रेणी डी से सी तक बढ़ाने में वर्षों लग जाते थे।
हम वर्गीकरण प्रणाली से घृणा करते थे। यह भ्रष्ट और अपमानजनक थी, कैदियों को, विशेष रूप से राजनीतिक कैदियों को, दबाने का एक और तरीका था। हमने मांग की कि सभी राजनीतिक कैदियों को एक ही श्रेणी में रखा जाए। हालांकि हमने इसकी आलोचना की, लेकिन हम इसे अनदेखा नहीं कर सकते थे: वर्गीकरण प्रणाली जेल जीवन का एक कठोर हिस्सा थी। यदि आप विरोध करते कि डी समूह के कैदी के रूप में आपको हर छह महीने में केवल एक पत्र मिलता है, तो अधिकारी कहते, "अपना व्यवहार सुधारो, सी समूह के कैदी बन जाओ, और तुम्हें हर छह महीने में दो पत्र मिलेंगे।" यदि आप शिकायत करते कि आपको पर्याप्त भोजन नहीं मिल रहा है, तो अधिकारी आपको याद दिलाते कि यदि आप ए समूह में होते, तो आप बाहर से मनी ऑर्डर प्राप्त कर सकते थे और जेल कैंटीन से अतिरिक्त भोजन खरीद सकते थे। यहां तक कि एक स्वतंत्रता सेनानी को भी किराने का सामान और किताबें खरीदने की सुविधा से लाभ मिलता है।
वर्गीकरण आम तौर पर सजा की अवधि के समानांतर होता था। यदि आपको आठ साल की सजा सुनाई जाती थी, तो आम तौर पर पहले दो साल के लिए आपको डी, अगले दो साल के लिए सी, उसके बाद के दो साल के लिए बी और आखिरी दो साल के लिए ए श्रेणी में रखा जाता था। लेकिन जेल अधिकारियों ने इस वर्गीकरण प्रणाली का इस्तेमाल राजनीतिक कैदियों के खिलाफ एक हथियार के रूप में किया, और हमारे व्यवहार

को नियंत्रित करने के लिए हमारी मेहनत से हासिल की गई श्रेणियों को कम करने की धमकी दी।
हालांकि मुझे रॉबेन द्वीप ले जाने से पहले लगभग दो साल जेल में बिताने पड़े थे, फिर भी जब मैं वहाँ पहुँचा तो मैं डी ग्रुप में ही था। हालाँकि मुझे उच्च वर्गीकरण के साथ मिलने वाले विशेषाधिकारों की इच्छा थी, लेकिन मैंने अपने आचरण से समझौता करने से इनकार कर दिया। अपना वर्गीकरण ऊपर उठाने का सबसे तेज़ तरीका था शांत रहना और शिकायत न करना। "अग, मंडेला, तुम उपद्रवी हो," वार्डर कहते थे। "तुम्हें जीवन भर डी ग्रुप में ही रहना होगा।"
हर छह महीने में कैदियों को जेल बोर्ड के सामने पेश किया जाता था ताकि उनके वर्गीकरण का मूल्यांकन किया जा सके। बोर्ड का उद्देश्य जेल नियमों के अनुसार हमारे व्यवहार का आकलन करना था, लेकिन हमने पाया कि यह केवल व्यवहार का मूल्यांकन करने के बजाय एक राजनीतिक न्यायाधिकरण की तरह काम करना पसंद करता था। बोर्ड के साथ मेरी पहली मुलाकात में, अधिकारियों ने मुझसे एएनसी और मेरे विचारों के बारे में सवाल पूछे। हालाँकि इसका वर्गीकरण प्रणाली से कोई लेना-देना नहीं था, फिर भी मैंने घमंड में आकर जवाब दिया और सोचा कि शायद मैं उन्हें अपने विचारों में परिवर्तित कर सकूँ। यह उन कुछ मौकों में से एक था जब हमारे साथ इंसानियत का व्यवहार किया गया, और मैंने भी जवाब दिया। बाद में मुझे एहसास हुआ कि यह अधिकारियों द्वारा हमसे जानकारी निकालने की एक तरकीब मात्र थी, और मैं इसमें फँस गया था। इसके तुरंत बाद, हमने आपस में तय किया कि हम जेल बोर्ड के साथ राजनीति पर चर्चा नहीं करेंगे।

डी ग्रुप के कैदी के रूप में, मुझे केवल एक मुलाक़ाती से मिलने का अधिकार था, और हर छह महीने में केवल एक पत्र लिखने और प्राप्त करने की अनुमति थी। मुझे यह जेल व्यवस्था की सबसे अमानवीय पाबंदियों में से एक लगी। परिवार से संवाद करना एक मानवाधिकार है; इसे जेल व्यवस्था के कृत्रिम भेदभावों द्वारा प्रतिबंधित नहीं किया जाना चाहिए। लेकिन यह जेल जीवन की एक सच्चाई थी।

मुलाकातें और पत्र-व्यवहार केवल "प्रथम श्रेणी" के रिश्तेदारों तक ही सीमित थे। यह प्रतिबंध हमें न केवल कष्टदायक लगा बल्कि नस्लवादी भी। अफ़्रीकी लोगों में निकट परिवार की अवधारणा यूरोपीय या पश्चिमी लोगों से बिल्कुल भिन्न है। हमारी पारिवारिक संरचनाएँ व्यापक और अधिक समावेशी हैं; जो भी व्यक्ति एक ही पूर्वज से वंशज होने का दावा करता है, उसे एक ही परिवार का सदस्य माना जाता है।
जेल में, परिवार के बारे में बुरी खबर से भी बदतर होता है कोई खबर न मिलना। कल्पना की गई आपदाओं और त्रासदियों से निपटना वास्तविकता से कहीं अधिक कठिन होता है, चाहे वह कितनी भी भयावह या अप्रिय क्यों न हो। बुरी खबर वाला पत्र हमेशा न मिलने वाले पत्र से बेहतर होता था।
लेकिन इस दयनीय प्रतिबंध का भी अधिकारियों ने दुरुपयोग किया। चिट्ठी का इंतज़ार बहुत ज़्यादा होता था। महीने में एक बार चिट्ठी आती थी, और कभी-कभी छह महीने बिना किसी चिट्ठी के बीत जाते थे। छह महीने में एक चिट्ठी मिलना और फिर उसका न मिलना बहुत बड़ा झटका होता था। मन में सवाल उठता था: मेरी पत्नी और बच्चों, मेरी माँ और मेरी बहनों को क्या हो गया है? जब मुझे कोई चिट्ठी नहीं मिलती थी, तो मैं ग्रेट कारू रेगिस्तान की तरह सूखा और बंजर महसूस करता था। अक्सर अधिकारी जानबूझकर चिट्ठी रोक लेते थे। मुझे याद है कि वार्डर कहते थे, "मंडेला, हमें आपके लिए एक चिट्ठी मिली है, लेकिन हम इसे आपको नहीं दे सकते।" वे यह नहीं बताते थे कि क्यों, या चिट्ठी किसने भेजी है। ऐसे समय में खुद को बहुत संयमित रखना पड़ता था ताकि मैं भड़क न जाऊँ। बाद में, मैं उचित माध्यम से विरोध करता था, और कभी-कभी मुझे चिट्ठी मिल जाती थी।
जब भी चिट्ठियाँ आतीं, तो उन्हें बहुत संजोकर रखा जाता था। चिट्ठी गर्मियों की बारिश की तरह होती थी, जो रेगिस्तान को भी हरा-भरा कर देती थी। जब अधिकारियों द्वारा मुझे कोई चिट्ठी दी जाती, तो मैं तुरंत आगे बढ़कर उसे झटपट नहीं पकड़ता, बल्कि आराम से उसे लेता था। हालाँकि मेरा मन करता था कि उसे फाड़कर तुरंत पढ़ लूँ, लेकिन मैं अधिकारियों को अपनी इस जल्दबाजी का एहसास नहीं होने देता था, और धीरे-धीरे अपनी कोठरी में लौट जाता था, मानो परिवार की चिट्ठी खोलने से पहले मुझे कई काम निपटाने हों।
शुरुआती कुछ महीनों में मुझे विनी का एक पत्र मिला, लेकिन वह इतना ज़्यादा सेंसर किया हुआ था कि अभिवादन के अलावा कुछ बचा ही नहीं था। द्वीप के सेंसर

आपत्तिजनक अंशों को स्याही से काला कर देते थे, लेकिन बाद में उन्होंने यह तरीका बदल दिया जब उन्हें एहसास हुआ कि हम स्याही को धोकर नीचे लिखी बातें देख सकते हैं। वे पूरे पैराग्राफ काटने के लिए रेज़र का इस्तेमाल करने लगे। चूंकि ज़्यादातर पत्र एक ही कागज़ के दोनों तरफ लिखे जाते थे, इसलिए दूसरी तरफ की सामग्री भी काट दी जाती थी। ऐसा लगता था जैसे उन्हें फटे- पुराने पत्रों को पहुँचाने में मज़ा आता हो। सेंसरशिप के कारण डाक वितरण में देरी होती थी क्योंकि वार्डर, जिनमें से कुछ अंग्रेज़ी में कुशल नहीं थे, एक पत्र को सेंसर करने में एक महीने तक का समय लगा देते थे। हमारे लिखे पत्रों को भी सेंसर किया जाता था; वे अक्सर हमारे प्राप्त पत्रों की तरह ही कटे-फटे होते थे।

अगस्त के अंत में, द्वीप पर आए हुए मुझे तीन महीने भी पूरे नहीं हुए थे कि अधिकारियों ने मुझे सूचित किया कि अगले दिन मुझसे मिलने कोई आएगा। उन्होंने मुझे यह नहीं बताया कि कौन आएगा। वाल्टर को भी यही सूचना दी गई थी कि उससे भी कोई मिलने आएगा, और मुझे शक था, मेरी आशा थी, मेरी इच्छा थी - मुझे पूरा विश्वास था - कि विनी और अल्बर्टिना मुझसे मिलने आएंगी।
जिस क्षण विनी को पता चला कि हमें द्वीप पर लाया गया है, तभी से वह मुझसे मिलने की कोशिश कर रही थी। प्रतिबंधित व्यक्ति होने के नाते, विनी को न्याय मंत्री से विशेष अनुमति लेनी पड़ी, क्योंकि तकनीकी रूप से उसे मुझसे बात करने की अनुमति नहीं थी।
अधिकारियों की मदद के बावजूद, रॉबेन द्वीप की यात्रा करना आसान नहीं था। मुलाक़ातें अधिकतम तीस मिनट की होती थीं, और राजनीतिक कैदियों को आमने- सामने की मुलाक़ात की अनुमति नहीं थी, जिसमें आगंतुक और कैदी एक ही कमरे में होते हैं।
ऐसा लगता था कि अधिकारियों द्वारा मुलाकातों की कोई पूर्व-योजना नहीं बनाई जाती थी। एक दिन वे आपकी पत्नी से संपर्क करते और कहते, "आपको कल अपने पति से मिलने की अनुमति है।" यह बेहद असुविधाजनक था, और अक्सर इसके कारण मुलाकातें असंभव हो जाती थीं। यदि परिवार का कोई सदस्य पहले से मुलाकात की योजना बना भी लेता, तो अधिकारी कभी-कभी जानबूझकर विमान के उड़ान भरने के बाद तक परमिट जारी करने में देरी करते थे। चूंकि अधिकांश पुरुषों के

परिवार केप द्वीप से बहुत दूर रहते थे और उनके पास बहुत कम पैसा था, इसलिए परिवार के सदस्यों की मुलाकातें अक्सर उनकी सामर्थ्य से परे होती थीं। कुछ गरीब परिवारों से आए पुरुष कई वर्षों तक अपनी पत्नियों से नहीं मिल पाते थे, या कभी-कभी तो बिल्कुल भी नहीं। मैं ऐसे पुरुषों को जानता था जिन्होंने रॉबेन द्वीप पर एक दशक या उससे अधिक समय बिना एक बार भी अपनी पत्नी से मिले बिताया।

आमने-सामने की मुलाकातों के लिए बना कमरा तंग और बिना खिड़की वाला था। कैदी की तरफ पाँच छोटे-छोटे चौकोर शीशे वाले कक्षों की एक कतार थी, जिनमें से हर एक से दूसरी तरफ बने ऐसे ही कक्ष दिखाई देते थे। व्यक्ति कुर्सी पर बैठकर मोटे, धुंधले शीशे से बाहर देखता था, जिसमें बातचीत करने के लिए कुछ छोटे छेद किए गए थे। अपनी बात सुनाने के लिए बहुत ज़ोर से बोलना पड़ता था। बाद में अधिकारियों ने शीशे के सामने माइक्रोफ़ोन और स्पीकर लगा दिए, जिससे थोड़ा सुधार हुआ।
वॉल्टर और मुझे सुबह देर से मुलाक़ात कार्यालय में बुलाया गया और हम कमरे के आखिरी छोर पर बैठ गए। मैं कुछ बेचैनी के साथ इंतज़ार कर रहा था, और अचानक खिड़की के दूसरी तरफ़ लगे शीशे में विनी का प्यारा चेहरा दिखाई दिया। विनी हमेशा जेल मुलाक़ातों के लिए सज-धज कर आती थी और हर बार कुछ नया और सुंदर पहनने की कोशिश करती थी। अपनी पत्नी को छू न पाना, उससे प्यार से बात न कर पाना, उसके साथ कुछ निजी पल न बिता पाना बेहद निराशाजनक था। हमें अपना रिश्ता उन लोगों की नज़रों के सामने, जिनसे हम नफ़रत करते थे, दूर रहकर निभाना पड़ रहा था।
मैं तुरंत समझ गया कि विनी बहुत तनाव में थी। मुझे ऐसी हालत में देखना उसके लिए बहुत कष्टदायक रहा होगा। द्वीप तक पहुँचना ही मुश्किल था, और ऊपर से जेल के कठोर रीति-रिवाज, वार्डरों का निश्चित रूप से अपमानजनक व्यवहार और संपर्क की नीरसता भी थी।
मुझे बाद में पता चला कि विनी को हाल ही में दूसरी बार प्रतिबंधित कर दिया गया था और परिणामस्वरूप उसे बाल कल्याण कार्यालय से निकाल दिया गया था। उसे नौकरी से निकाले जाने से कुछ समय पहले ही पुलिस ने उसके कार्यालय की

तलाशी ली थी। अधिकारियों को पूरा यकीन था कि विनी मुझसे गुप्त रूप से संपर्क में थी। विनी को सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपना काम बहुत पसंद था। यह संघर्ष का जमीनी स्तर का काम था: बच्चों को गोद लेने वाले माता-पिता के पास भेजना, बेरोजगारों के लिए रोजगार ढूंढना और बीमा रहित लोगों को चिकित्सा सहायता प्रदान करना। मेरी पत्नी पर प्रतिबंध और उत्पीड़न ने मुझे बहुत परेशान किया: मैं उसकी और बच्चों की देखभाल नहीं कर पा रहा था, और सरकार उसके लिए खुद की देखभाल करना मुश्किल बना रही थी। मेरी बेबसी मुझे अंदर ही अंदर खा रही थी।
हमारी बातचीत शुरू में थोड़ी अटपटी थी, और उसके ठीक पीछे खड़े दो वार्डरों और मेरे पीछे खड़े तीन वार्डरों की मौजूदगी ने इसे और भी मुश्किल बना दिया। उनका काम सिर्फ निगरानी करना ही नहीं, बल्कि डराना-धमकाना भी था। नियमों के अनुसार बातचीत या तो अंग्रेज़ी में या अफ़्रीकान्स में ही होनी थी—अफ़्रीकी भाषाएँ वर्जित थीं—और उसमें केवल पारिवारिक मामलों पर ही चर्चा हो सकती थी। अगर कोई पारिवारिक मामलों से हटकर राजनीतिक मुद्दों की ओर मुड़ता, तो मुलाक़ात अचानक समाप्त हो सकती थी। अगर कोई वार्डरों के लिए अपरिचित नाम लेता, तो वे बातचीत रोककर पूछते कि वह व्यक्ति कौन है और उससे क्या रिश्ता है। ऐसा अक्सर होता था, क्योंकि वार्डर आम तौर पर अफ़्रीकी नामों की विविधता और प्रकृति से परिचित नहीं थे। मुलाक़ात के कीमती मिनट वार्डर को अपने परिवार के विभिन्न वंश वृक्ष के बारे में समझाने में बर्बाद करना निराशाजनक था। लेकिन उनकी अज्ञानता हमारे लिए फ़ायदेमंद भी साबित हुई: इससे हमें उन लोगों के लिए सांकेतिक नाम गढ़ने की छूट मिली जिनके बारे में हम बात करना चाहते थे और यह दिखावा करने की कि हम परिवार के सदस्यों की बात कर रहे हैं।
वह पहली मुलाकात महत्वपूर्ण थी, क्योंकि मैं जानती थी कि विनी मेरी सेहत को लेकर चिंतित थी: उसने सुना था कि हमारे साथ शारीरिक दुर्व्यवहार हो रहा था। मैंने उसे तुरंत बताया कि मैं ठीक हूँ और वह देख सकती थी कि मैं स्वस्थ हूँ, हालाँकि पहले से थोड़ी दुबली हो गई हूँ। वह भी दुबली हो गई थी, जिसका कारण मैं हमेशा तनाव को मानती थी। जब भी विनी का चेहरा उदास या तनावग्रस्त दिखता, मैं उसे थोड़ा वजन बढ़ाने के लिए कहती। वह हमेशा वजन कम करने की कोशिश करती रहती थी, और मैं हमेशा उसे ऐसा न करने के लिए कहती थी। मैंने एक-

एक करके सभी बच्चों के बारे में, मेरी माँ और बहनों के बारे में, और विनी के अपने परिवार के बारे में पूछताछ की।
अचानक, मैंने अपने पीछे वार्डर को कहते सुना, “समय समाप्त! समय समाप्त!” मैं मुड़ा और अविश्वास से उसकी ओर देखा। यह असंभव था कि आधा घंटा बीत गया हो। लेकिन, वास्तव में, वह सही था; मुलाक़ातें हमेशा पलक झपकते ही बीत जाती थीं। जितने साल मैं जेल में रहा, वार्डर के “समय समाप्त!” कहने पर मुझे हमेशा हैरानी होती थी। विनी और मुझे, दोनों को अपनी कुर्सियों से जल्दी से उठाया जाता था और हम जल्दी से हाथ हिलाकर विदा लेते थे। विनी के जाने के बाद मुझे हमेशा उसकी मौजूदगी का एहसास बनाए रखने के लिए थोड़ी देर रुकने का मन करता था, लेकिन मैं वार्डरों को अपनी ये भावनाएँ नहीं दिखाना चाहता था। जब मैं वापस अपनी कोठरी में जा रहा था, तो मैंने मन ही मन उन बातों को दोहराया जो हमने की थीं। अगले दिनों, हफ़्तों और महीनों में, मैं उस एक मुलाक़ात को बार-बार याद करता रहा। मुझे पता था कि मैं कम से कम छह महीने तक अपनी पत्नी को दोबारा नहीं देख पाऊँगा। जैसा कि बाद में पता चला, विनी भी दो साल तक मुझसे मिलने नहीं आ सकी।

64

जनवरी की शुरुआत में एक सुबह, जब हम आंगन में काम शुरू करने से पहले गिनती के लिए कतार में खड़े थे, तो हमें बाहर ले जाया गया और एक ढकी हुई गाड़ी में बैठने का आदेश दिया गया। यह पहली बार था जब हम अपने परिसर से बाहर निकले थे। हमारे गंतव्य के बारे में कोई घोषणा नहीं की गई थी, लेकिन मुझे अंदाजा था कि हम कहाँ जा रहे हैं। कुछ मिनट बाद हम गाड़ी से उस जगह पर निकले जिसे मैंने पहली बार 1962 में द्वीप पर देखा था: चूने की खदान।
चूने की खदान एक चट्टानी पहाड़ी पर बने विशाल सफेद गड्ढे जैसी दिखती थी। चट्टानें और पहाड़ी का निचला हिस्सा चकाचौंध कर देने वाला सफेद था। खदान के ऊपरी हिस्से में घास और ताड़ के पेड़ थे, और निचले हिस्से में कुछ पुराने धातु के शेड वाला एक खुला मैदान था।
हमारा स्वागत कमांडिंग ऑफिसर कर्नल वेसेल्स ने किया, जो एक नीरस व्यक्ति थे और जेल के नियमों का कड़ाई से पालन करने के अलावा और कुछ नहीं जानते थे। हम सब सावधान मुद्रा में खड़े हो गए जब उन्होंने हमें बताया कि हमारा काम छह महीने तक चलेगा और उसके बाद हमें अपनी सजा की अवधि के दौरान हल्के- फुल्के काम दिए जाएंगे। उनका अनुमान बिल्कुल गलत निकला। हम अगले तेरह वर्षों तक खदान में ही रहे।
कमांडिंग ऑफिसर के भाषण के बाद, हमें कुल्हाड़ी और फावड़े दिए गए और चूना खनन के बारे में बुनियादी निर्देश दिए गए। चूना खनन आसान काम नहीं है। पहले दिन, हम अपने नए औजारों के साथ अनाड़ीपन दिखा रहे थे और बहुत कम चूना निकाल पाए। चूना, जो कि सीपियों और मूंगे का नरम, कैल्शियमयुक्त अवशेष होता है, चट्टानों की परतों में दबा होता है, और इसे निकालने के लिए कुल्हाड़ी से चट्टानों को तोड़ना पड़ता था, और फिर फावड़े से चूने की परत को निकालना पड़ता था। यह आंगन के काम से कहीं अधिक कठिन था, और खदान में अपने पहले कुछ दिनों के बाद, हम दोपहर 4:30 बजे खाना खाने के तुरंत बाद सो गए। अगली सुबह हम दर्द से कराहते हुए और थके हुए उठे।
अधिकारियों ने कभी यह नहीं बताया कि हमें आंगन से पत्थर की खदान में क्यों ले जाया गया था। हो सकता है कि उन्हें द्वीप की सड़कों के लिए अतिरिक्त चूने की आवश्यकता रही हो। लेकिन जब हमने बाद में इस स्थानांतरण पर चर्चा

की, तो हमने अनुमान लगाया कि यह अनुशासन लागू करने का एक और तरीका था, हमें यह दिखाने का कि हम आम कैदियों से अलग नहीं हैं - जो द्वीप की पत्थर की खदान में काम करते थे - और हमें भी अपने अपराधों की सज़ा भुगतनी होगी, ठीक वैसे ही जैसे वे भुगतते थे। यह हमारे मनोबल को कुचलने का एक प्रयास था।
लेकिन खदान में बिताए उन शुरुआती कुछ हफ्तों का हम पर बिल्कुल उल्टा असर हुआ। हाथों में छाले और खून बहने के बावजूद, हममें नई ऊर्जा भर गई थी। मुझे प्रकृति के बीच बाहर रहना, घास और पेड़ देखना, ऊपर उड़ते पक्षियों को निहारना, समुद्र से आती हवा को महसूस करना बहुत अच्छा लगता था। पीठ पर सूरज की रोशनी में अपनी सारी मांसपेशियों का इस्तेमाल करना अच्छा लगता था, और पत्थर और चूने के ढेर बनाने में एक अलग ही संतुष्टि मिलती थी।
कुछ ही दिनों में, हम ट्रक से जाने के बजाय पैदल ही खदान तक जाने लगे, और यह भी हमारे लिए एक वरदान साबित हुआ। खदान तक बीस मिनट की पैदल यात्रा के दौरान, हमें द्वीप का बेहतर अनुभव हुआ, हम अपने घर को ढकने वाली घनी झाड़ियों और ऊंचे पेड़ों को देख सकते थे, यूकेलिप्टस के फूलों की खुशबू महसूस कर सकते थे, और कभी-कभार दूर चरते हुए स्प्रिंगबोक या कुडू को देख सकते थे। हालांकि कुछ पुरुषों को यह पैदल यात्रा थकाऊ लगती थी, लेकिन मुझे कभी नहीं लगी।

हालांकि खदान में हमारा काम हमें यह दिखाने के लिए था कि हम अन्य कैदियों से अलग नहीं हैं, फिर भी अधिकारी हमारे साथ वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा कि कभी इस द्वीप पर रहने वाले कोढ़ी करते थे। कभी-कभी हम सड़क के किनारे काम करते हुए आम कैदियों के एक समूह को देखते थे, और उनके वार्डर उन्हें झाड़ियों में छिपने का आदेश देते थे ताकि जब हम उनके पास से गुजरें तो वे हमें न देख सकें। ऐसा लगता था मानो हमें देखने मात्र से ही उनके अनुशासन पर असर पड़ सकता है। कभी-कभी हम तिरछी नज़रों से किसी कैदी को एएनसी की सलामी में मुट्ठी उठाते हुए देख लेते थे।
पत्थर की खदान के पास, कच्ची सड़क दो भागों में बँट जाती थी, और दाईं ओर आम कैदी पत्थर की खदान की ओर चल पड़ते थे। यह चौराहा बाद में उनसे संपर्क का एक महत्वपूर्ण केंद्र बन गया। जहाँ सड़क दो भागों में बँटती थी, वहाँ

झाड़ियों में रॉबर्ट सोबुकवे की छोटी सी सफेद कुटिया दिखाई देती थी। यह घर कई साल पहले एक अश्वेत वार्डर के लिए बनाया गया था, और अब सोबुकवे इसमें अकेले रहते थे। यह एक छोटा सा, अव्यवस्थित और झाड़ियों से भरा हुआ भूखंड था, और सामने खड़े गार्ड के अलावा किसी को पता भी नहीं चलता था कि वहाँ कोई रहता है।
सोबुकवे की सज़ा 1963 में समाप्त हो गई थी, लेकिन 1963 के सामान्य कानून संशोधन अधिनियम के सोबुकवे खंड के नाम से जाने जाने वाले प्रावधान के तहत, न्याय मंत्री राजनीतिक कैदियों को बिना किसी आरोप के अनिश्चित काल तक हिरासत में रख सकते थे। बॉब के साथ भी उन्होंने ठीक यही किया। छह साल तक सोबुकवे द्वीप पर एक तरह का आधा-अधूरा जीवन जीते रहे; वे एक स्वतंत्र व्यक्ति थे जिन्हें उनकी स्वतंत्रता से वंचित रखा गया था। कभी-कभी हमें उनके बगीचे में उनकी एक झलक देखने को मिल जाती थी, बस इतना ही।

सुबह पहुँचने के बाद, हम खदान के ऊपरी हिस्से में बने जस्ता के शेड से अपने औजार, फावड़े, हथौड़े और ठेले लाते थे। फिर हम खदान के किनारे तीन-चार के समूहों में खड़े हो जाते थे। स्वचालित हथियारों से लैस पहरेदार ऊँचे चबूतरों पर खड़े होकर हमें देखते रहते थे। निहत्थे पहरेदार हमारे बीच घूमते हुए हमें और मेहनत करने के लिए प्रेरित करते थे। “गाँव आँ! गाँव आँ!” (आगे बढ़ो! आगे बढ़ो!), वे ऐसे चिल्लाते थे मानो हम बैल हों।
ग्यारह बजे तक, जब सूरज आसमान में काफी ऊपर होता, हम थकने लगते। तब तक मैं पसीने से भीग चुका होता। फिर वार्डर हमें और भी ज़्यादा काम करवाते। “अरे यार! चलो! चलो!” वे चिल्लाते। दोपहर से ठीक पहले, जब हम लंच के लिए रुकते, तो हम चूने को ठेले में भरकर ट्रक तक ले जाते, जो उसे ले जाता।
दोपहर होते ही सीटी बजती और हम पहाड़ी की तलहटी की ओर चल पड़ते। धूप से बचने के लिए हम एक साधारण जस्ता की छत के नीचे बनी अस्थायी कुर्सियों पर बैठते। पहरेदार मेजों और बेंचों वाले एक बड़े शेड में खाना खाते थे। उबले हुए मक्के के ड्रम हमारे लिए लाए जाते थे। सैकड़ों समुद्री पक्षी चीखते- चिल्लाते और झपट्टा मारते हुए हमारे ऊपर मंडराते रहते थे, और कभी-कभी उनका बीट किसी का खाना बिगाड़ देता था।

❖

❖

खदान में काम शुरू करने के कुछ ही समय बाद, सेक्शन बी में कई अन्य प्रमुख राजनीतिक कैदी हमारे साथ शामिल हो गए। इनमें से कई एमके के सदस्य थे जिन्हें जुलाई 1964 में गिरफ्तार किया गया था और पचास से अधिक तोड़फोड़ की घटनाओं में दोषी ठहराया गया था, जिसे बाद में "छोटा रिवोनिया मुकदमा" के नाम से जाना गया। इनमें एसएसीपी के सदस्य और संघर्ष के सबसे तेज दिमाग वाले लोगों में से एक मैक महाराज; एमके हाई कमांड के सदस्य और एक निष्ठावान सहयोगी लालू चिबा, जिन्होंने जेल में बहुत बड़ा योगदान दिया; और विल्टन म्कवेई, राजद्रोह मुकदमे के आरोपी, जिन्हें 1960 में आपातकाल की घोषणा के दौरान भ्रम की स्थिति में गलती से रिहा कर दिया गया था। उन्होंने गुप्त रूप से दक्षिण अफ्रीका छोड़ दिया था, सैन्य प्रशिक्षण प्राप्त किया था और रिवोनिया मुकदमे के बाद एमके के कमांडर-इन-चीफ बन गए थे। हमारे साथ एडी डेनियल भी शामिल हुए, जो लिबरल पार्टी के एक अश्वेत सदस्य थे और जिन्हें अफ्रीकी प्रतिरोध आंदोलन द्वारा की गई तोड़फोड़ की घटनाओं में दोषी ठहराया गया था, जो लिबरल पार्टी के सदस्यों से बना एक छोटा तोड़फोड़ समूह था। एडी जेल में मेरे सबसे अच्छे दोस्तों में से एक बन गया।

इन नए राजनीतिक सहयोगियों के प्रभाव को संतुलित करने के लिए, अधिकारियों ने हमारे हिस्से में कुछ आम कैदियों को भी रख दिया। ये लोग शातिर अपराधी थे, जिन पर हत्या, बलात्कार और सशस्त्र डकैती के आरोप थे। वे द्वीप के कुख्यात आपराधिक गिरोहों, या तो बिग फाइव या ट्वेंटी-एट्स के सदस्य थे, जो अन्य कैदियों को आतंकित करते थे। वे हट्टे-कट्टे और चिड़चिड़े स्वभाव के थे, और उनके चेहरे पर गिरोह के सदस्यों के बीच आम तौर पर होने वाली चाकूबाजी की लड़ाइयों के निशान थे। उनकी भूमिका उकसाने वाले एजेंटों के रूप में काम करने की थी, और वे हमें धक्का देने, हमारा खाना छीनने और हमारे द्वारा की जाने वाली किसी भी राजनीतिक चर्चा को रोकने की कोशिश करते थे। इनमें से एक को अमेरिकी फिल्म अभिनेता बोगार्ट के नाम से जाना जाता था। उसकी कोठरी वाल्टर की कोठरी के ठीक सामने थी और वाल्टर शिकायत करता था कि वह हर सुबह उससे नाश्ता मांगता था, और वह मना करने से बहुत डरता था।
हमारे अलावा, ये गिरोह के सदस्य खदान में अपने ही एक गुट में काम करते थे।
एक दिन, वे एक गाना गाने लगे जो किसी काम के गीत जैसा लग रहा था। दरअसल, यह एक मशहूर काम का गीत था जिसके बोल उन्होंने अपने हिसाब से बदल दिए थे:

“बेनिफुनानी एरिवोनिया?”, जिसका मतलब है “रिवोनिया में तुम क्या चाहते थे?” अगली पंक्ति कुछ इस तरह थी, “क्या तुम्हें लगा था कि तुम सरकार बन जाओगे?” वे जोश और व्यंग्य भरे लहजे में गा रहे थे। जाहिर है, उन्हें पहरेदारों ने उकसाया था, जो उम्मीद कर रहे थे कि यह गाना हमें भड़काएगा। हालांकि हममें से कुछ उग्र स्वभाव के लोग उनसे भिड़ना चाहते थे, लेकिन हमने आग से आग बुझाने का फैसला किया। हमारे पास उनसे कहीं अधिक और बेहतर गायक थे, और हम सब एक साथ मिलकर अपनी प्रतिक्रिया की योजना बनाने लगे। कुछ ही मिनटों में, हम सब "स्टिमेला" गीत गाने लगे, जो दक्षिणी रोडेशिया से आ रही एक ट्रेन के बारे में एक जोशीला राष्ट्रगान था। "स्टिमेला" एक राजनीतिक गीत नहीं है, लेकिन उस संदर्भ में यह राजनीतिक गीत बन गया, क्योंकि इसका तात्पर्य यह था कि ट्रेन में गुरिल्ला सैनिक थे जो दक्षिण अफ्रीकी सेना से लड़ने आ रहे थे।
कई हफ्तों तक हमारे दोनों समूह काम करते हुए गाते रहे, नए गाने जोड़ते रहे और उनके बोल बदलते रहे। हमारा गायन भंडार बढ़ता गया और जल्द ही हम खुले तौर पर राजनीतिक गीत गाने लगे, जैसे कि "अमाजोनी", जो गुरिल्ला सैनिकों के बारे में एक गीत था, जिसका शीर्षक सैनिक के लिए अंग्रेजी बोलचाल के शब्द जॉनी का बिगड़ा हुआ रूप था; और "त्शोत्शोलोज़ा", एक ऐसा गीत जो संघर्ष की तुलना आती हुई ट्रेन की गति से करता है। (यदि आप शीर्षक को बार-बार दोहराते हैं, तो यह ट्रेन की आवाज़ की नकल करता है।) हमने स्वतंत्रता चार्टर के बारे में एक गीत गाया, और एक और गीत ट्रांसकेई के बारे में था, जिसके बोल थे, "दो रास्ते हैं, एक रास्ता मतांज़ीमा का रास्ता है, और एक रास्ता मंडेला का रास्ता है, आप कौन सा रास्ता चुनेंगे?"
गायन से काम आसान हो गया। कुछ साथियों की आवाज़ बहुत ही अद्भुत थी, और मुझे अक्सर मन करता था कि मैं अपना फावड़ा नीचे रख दूं और बस उन्हें सुनूं। गिरोह के सदस्य हमारे सामने कुछ भी नहीं थे; वे जल्द ही चुप हो गए जबकि हम गाते रहे। लेकिन एक वार्डर खोसा भाषा में माहिर था और हमारे गीतों का अर्थ समझ गया, और हमें जल्द ही गाना बंद करने का आदेश दिया गया। (सीटी बजाना भी प्रतिबंधित था।) उस दिन से हमने चुपचाप काम किया।

मैंने गिरोह के सदस्यों को प्रतिद्वंद्वी नहीं, बल्कि परिवर्तित किए जाने वाले कच्चे माल के रूप में देखा। हमारे बीच एक गैर-राजनीतिक कैदी था, जिसका उपनाम जो माई बेबी था, जो बाद में एएनसी में शामिल हो गया और जेल के अंदर और बाहर सामग्री की तस्करी में हमारी मदद करने में अमूल्य साबित हुआ।
एक दिन हमें पता चला कि बोगार्ट को खदान में एक वार्डर ने बेरहमी से पीटा था। मैंने हमला तो नहीं देखा, लेकिन उसके परिणाम अवश्य देखे। उसका चेहरा बुरी तरह से कटा हुआ और चोटिल था। बोगार्ट हमारे गलियारे में मेरे पास आया और मदद मांगी। मैंने तुरंत उसका मामला अपने हाथ में लेने की सहमति दे दी। हम हमेशा अधिकारियों के खिलाफ खड़े होने के तरीके खोजते रहते थे, और मारपीट की घटना एक ऐसा मुद्दा था जिसे हम मुख्यालय के समक्ष उठा सकते थे। इससे कुछ समय पहले ही हमें पता चला था कि गन्या नाम के एक पीएसी कार्यकर्ता को एक वार्डर ने पीटा था। एक वकील के तौर पर मैंने गन्या की ओर से विरोध जताते हुए जेल आयुक्त को पत्र लिखा। मुझे मुख्यालय बुलाया गया, जहाँ जेल अधिकारियों ने मुझसे पूछताछ की। उन्होंने एक ही बात में मारपीट की घटना से इनकार किया और जानना चाहा कि मुझे इसके बारे में कैसे पता चला। मैंने जोर देकर कहा कि गन्या को पीटने वाले वार्डर को द्वीप से हटा दिया जाए। उन्होंने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि उसके खिलाफ कोई सबूत नहीं है। लेकिन कुछ ही समय बाद उस वार्डर का तबादला द्वीप से कर दिया गया।
इस मामले से मुझे हौसला मिला था, इसलिए जब बोगार्ट ने मदद मांगी तो मैंने तुरंत कमांडिंग ऑफिसर से मिलने की मांग की। अगले दिन मुझे मुख्यालय बुलाया गया, जहां कमांडर ने मुझे बेपरवाही से बताया कि मामले की जांच हो चुकी है और उसे खारिज कर दिया गया है। मैंने कहा, "यह नियमों का उल्लंघन है। इस मामले की सुनवाई होनी चाहिए।"
उन्होंने कहा, "नहीं, हमने तथाकथित शिकायतकर्ता का साक्षात्कार करने का प्रयास किया है और वह इस बात से इनकार करता है कि उस पर कभी हमला किया गया था।"
“यह असंभव है,” मैंने कहा। “मैंने उनसे कल ही बात की थी।” कमांडर ने एक लेफ्टिनेंट की ओर इशारा करते हुए कहा, “तो खुद देख लीजिए।” लेफ्टिनेंट बोगार्ट को कमरे में ले आया। उसका चेहरा पट्टियों से ढका हुआ था। कमांडर ने उससे पूछा कि क्या उसकी पिटाई हुई थी। “नहीं, साहब,” उसने मेरी आँखों

में देखे बिना धीरे से कहा, “मुझ पर कभी हमला नहीं हुआ।” इसके बाद उसे जाने दिया गया।
“अच्छा, मंडेला,” कमांडर ने कहा। “मामला बंद हो गया।” कमांडर मुझे अपमानित करने में सफल हो गया था। उसने स्पष्ट रूप से बोगार्ट को अतिरिक्त भोजन और तंबाकू देकर रिश्वत दी थी ताकि वह अपने आरोप वापस ले ले। उस घटना के बाद से, मैं किसी भी कैदी का मामला लेने से पहले उससे हस्ताक्षरित और लिखित बयान की मांग करता था।

65

1965 की गर्मियों में एक दिन, नाश्ते में हमने अपने दलिया पर कुछ चर्बी चमकती हुई देखी और रात के खाने में अपने दलिया के साथ ताज़े मांस के टुकड़े देखे। अगले दिन कुछ लोगों को नई कमीज़ें मिलीं। खदान के गार्ड और हमारे सेक्शन के वार्डर थोड़े ज़्यादा विनम्र लग रहे थे। हम सभी को शक हुआ; जेल में बिना किसी कारण के कोई सुधार नहीं होता। एक दिन बाद हमें सूचना मिली कि अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस अगले दिन आ रहा है।
यह एक बेहद अहम अवसर था, हमारे पिछले सभी आगंतुकों से कहीं अधिक महत्वपूर्ण। रेड क्रॉस एक ज़िम्मेदार और स्वतंत्र संस्था थी, एक अंतरराष्ट्रीय संगठन जिस पर पश्चिमी शक्तियां और संयुक्त राष्ट्र ध्यान देते थे। जेल अधिकारी रेड क्रॉस का सम्मान करते थे - और सम्मान से मेरा मतलब है कि वे उससे डरते थे, क्योंकि अधिकारी केवल उसी का सम्मान करते थे जिससे वे डरते थे। जेल प्रशासन उन सभी संगठनों पर अविश्वास करता था जो विश्व जनमत को प्रभावित कर सकते थे, और उन्हें ईमानदारी से जांच करने वाले वैध जांचकर्ताओं के रूप में नहीं, बल्कि हस्तक्षेप करने वाले घुसपैठियों के रूप में देखता था जिन्हें संभव हो तो धोखा दिया जा सके। अंतरराष्ट्रीय निंदा से बचना ही अधिकारियों का मुख्य लक्ष्य था।
शुरुआती वर्षों में, अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस ही एकमात्र ऐसा संगठन था जो हमारी शिकायतों को सुनता और उन पर कार्रवाई करता था। यह बहुत ज़रूरी था, क्योंकि अधिकारी हमारी अनदेखी करते थे। नियमों के अनुसार अधिकारियों को हमारी शिकायतों को स्वीकार करने के लिए कोई आधिकारिक प्रक्रिया अपनानी चाहिए थी। उन्होंने ऐसा किया भी, लेकिन केवल खानापूर्ति के लिए। हर शनिवार सुबह, मुख्य वार्डर हमारे क्षेत्र में आता और पुकारता, “शिकायतें और निवेदन! शिकायतें और निवेदन!” (शिकायतें और निवेदन! शिकायतें और निवेदन!) हममें से लगभग सभी लोग, जिनके पास शिकायतें और निवेदन थे, मुख्य वार्डर से मिलने के लिए कतार में लग जाते। एक-एक करके, हम भोजन, कपड़े या मुलाकातों के बारे में औपचारिक शिकायतें करते। हर शिकायत पर मुख्य वार्डर सिर हिलाकर बस इतना कहता, “हाँ, हाँ,” और फिर, “अगला!” वह हमारी कही हुई बातें

लिखता तक नहीं था। अगर हम अपने संगठनों की ओर से बोलने की कोशिश करते, तो वार्डर चिल्लाते, “यहाँ कोई एएनसी या पीएसी नहीं! समझे?” (समझे?)

रेड क्रॉस के दौरे से कुछ समय पहले हमने जेल आयुक्त को शिकायतों की एक औपचारिक सूची सौंपी थी। उस समय हमें पत्र लिखने के लिए केवल कागज और पेंसिल की अनुमति थी। हमने खदान और शौचालय में आपस में गुप्त रूप से परामर्श किया और एक सूची तैयार की। हमने इसे अपने मुख्य वार्डर को सौंप दिया, जिसने इसे लेने से इनकार कर दिया और हम पर ऐसी सूची बनाने के लिए नियमों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया। रेड क्रॉस को हमारी शिकायतों में से एक यह भी थी कि अधिकारी हमारी शिकायतों पर ध्यान नहीं देते।
उनके दौरे के दिन मुझे रेड क्रॉस के प्रतिनिधि से मिलने के लिए मुख्यालय बुलाया गया। उस वर्ष और अगले कुछ वर्षों तक प्रतिनिधि श्री सेन थे, जो अपने मूल देश स्वीडन में जेलों के पूर्व निदेशक थे और रोडेशिया में आकर बस गए थे। सेन लगभग पचास वर्ष के एक शांत, कुछ घबराए हुए व्यक्ति थे, जो अपने परिवेश में बिल्कुल भी सहज नहीं लग रहे थे।
यह मुलाकात निगरानी में नहीं हुई, जो हमारे लगभग सभी अन्य आगंतुकों से एक महत्वपूर्ण अंतर था। उन्होंने हमारी सभी शिकायतें और परेशानियां सुनने का अनुरोध किया और बहुत ध्यान से सुना, साथ ही विस्तृत नोट्स भी बनाए। वे बहुत विनम्र थे और मैंने उन्हें जो कुछ भी बताया, उसके लिए उन्होंने मुझे धन्यवाद दिया। फिर भी, वह पहली मुलाकात काफी तनावपूर्ण रही। हम दोनों में से किसी को भी यह नहीं पता था कि दूसरे से क्या उम्मीद करनी है।
मैंने अपने कपड़ों के बारे में ज़ोर-शोर से शिकायत की, यह कहते हुए कि हम शॉर्ट्स नहीं पहनना चाहते और हमें मोज़े और अंडरवियर समेत उचित कपड़े चाहिए, जो हमें उस समय नहीं दिए गए थे। मैंने भोजन, मुलाकातों, पत्रों, पढ़ाई, व्यायाम, कठिन श्रम और जेल प्रहरियों के व्यवहार के बारे में अपनी शिकायतें बताईं। मैंने कुछ ऐसी माँगें भी रखीं जिन्हें मैं जानता था कि अधिकारी कभी पूरा नहीं करेंगे, जैसे कि हमें हमारे घरों के नज़दीक की जेलों में स्थानांतरित करने की हमारी इच्छा।

हमारी बैठक के बाद, सेन्न ने जेल आयुक्त और उनके कर्मचारियों से मुलाकात की, जबकि मैं इंतजार करता रहा। मुझे लगा कि उन्होंने हमारी शिकायतें अधिकारियों तक पहुंचा दी होंगी, और उनमें से जो उन्हें उचित लगीं, उन्हें बता दिया होगा। सेन्न की मुलाकात के कुछ ही समय बाद हमारे कपड़ों में सुधार हुआ और हमें लंबी पतलूनें दी गईं। लेकिन सेन्न किसी भी तरह से प्रगतिशील व्यक्ति नहीं थे; रोडेशिया में बिताए उनके वर्षों ने उन्हें नस्लवाद का आदी बना दिया था। अपनी कोठरी में लौटने से पहले ही मैंने उन्हें याद दिलाया कि अफ्रीकी कैदियों को रोटी नहीं मिलती। श्री सेन्न घबराए हुए दिखे और उन्होंने जेल प्रमुख कर्नल की ओर देखा। श्री सेन्न ने कहा, "रोटी आपके दांतों के लिए बहुत खराब होती है, जानते हो, मंडेला। मक्का आपके लिए बहुत बेहतर है। यह आपके दांतों को मजबूत बनाता है।"
बाद के वर्षों में, अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस ने अधिक उदारवादी लोगों को भेजा जिन्होंने सुधारों के लिए पूरी लगन से काम किया। इस संगठन ने एक ऐसे क्षेत्र में भी महत्वपूर्ण भूमिका निभाई जो कम स्पष्ट था लेकिन हमारे लिए उतना ही महत्वपूर्ण था। वे अक्सर उन पत्नियों और रिश्तेदारों को आर्थिक सहायता प्रदान करते थे जो अन्यथा द्वीप पर हमसे मिलने नहीं आ पाते।

हमें रॉबेन द्वीप भेजे जाने के बाद, हमारे समर्थकों में यह चिंता थी कि हमें पढ़ाई करने की अनुमति नहीं दी जाएगी। हमारे आगमन के कुछ ही महीनों के भीतर, अधिकारियों ने घोषणा की कि जो लोग पढ़ाई करना चाहते हैं, वे अनुमति के लिए आवेदन कर सकते हैं। अधिकांश पुरुषों ने ऐसा ही किया और यद्यपि वे डी समूह के कैदी थे, उन्हें अनुमति दे दी गई। रिवोनिया मुकदमे के बाद, राज्य आश्वस्त था और उसने सोचा कि हमें पढ़ाई की सुविधा देना हानिरहित होगा। बाद में, उन्हें इसका पछतावा हुआ। स्नातकोत्तर अध्ययन की अनुमति नहीं थी, लेकिन मेरे मामले में एक अपवाद बनाया गया क्योंकि मैंने प्रिटोरिया में रहते हुए एक मिसाल कायम की थी।
हमारे सेक्शन में बहुत कम लोगों के पास बी.ए. की डिग्री थी और कई लोगों ने विश्वविद्यालय स्तर के पाठ्यक्रमों में दाखिला लिया। काफी लोगों के पास हाई स्कूल की डिग्री भी नहीं थी और उन्होंने उस डिग्री के लिए योग्यता

हासिल करने के लिए पाठ्यक्रम चुने। कुछ लोग पहले से ही अच्छी तरह से पढ़े- लिखे थे, जैसे गोवन म्बेकी और नेविल अलेक्जेंडर, लेकिन अन्य ने पांचवीं या छठी कक्षा से आगे पढ़ाई नहीं की थी। कुछ ही महीनों में, हममें से लगभग सभी किसी न किसी डिग्री के लिए पढ़ाई कर रहे थे। रात में, हमारा सेल ब्लॉक जेल से ज़्यादा किसी अध्ययन कक्ष जैसा लगता था।
लेकिन पढ़ाई का यह विशेषाधिकार कई शर्तों के साथ आया था। राजनीति और सैन्य इतिहास जैसे कुछ विषय वर्जित थे। कई वर्षों तक हमें अपने परिवारों के अलावा किसी और से धन प्राप्त करने की अनुमति नहीं थी, जिसके कारण गरीब कैदियों के पास किताबों या ट्यूशन के लिए शायद ही कभी पैसे होते थे। इससे पढ़ाई का अवसर इस बात पर निर्भर हो गया कि किसी के पास कितना पैसा है। हमें अन्य कैदियों को किताबें उधार देने की भी अनुमति नहीं थी, जिससे हमारे गरीब साथियों को पढ़ाई करने में मदद मिल सकती थी।
अध्ययन संबंधी विशेषाधिकार स्वीकार करने या न करने को लेकर हमेशा विवाद रहा है। एकता आंदोलन के कुछ सदस्यों को शुरू में लगा कि हम सरकार से भीख मांग रहे हैं, जिससे हमारी ईमानदारी पर आंच आ रही है। उनका तर्क था कि अध्ययन कोई सशर्त विशेषाधिकार नहीं बल्कि एक पूर्ण अधिकार होना चाहिए। हालांकि मैं उनसे सहमत था, लेकिन मैं यह स्वीकार नहीं कर सकता था कि इसलिए हम अध्ययन को त्याग दें। स्वतंत्रता सेनानियों और राजनीतिक कैदियों के रूप में, हमारा कर्तव्य था कि हम स्वयं को सुधारें और मजबूत करें, और अध्ययन ऐसा करने के कुछ गिने-चुने अवसरों में से एक था।
कैदियों को दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय (यूएनआईएसए) या रैपिड रिजल्ट्स कॉलेज में दाखिला लेने की अनुमति थी, जो हाई स्कूल की पढ़ाई करने वालों के लिए था। मेरे मामले में, लंदन विश्वविद्यालय के तत्वावधान में अध्ययन करना एक मिश्रित अनुभव था। एक ओर मुझे ऐसी ज्ञानवर्धक पुस्तकें पढ़ने को मिलीं जो दक्षिण अफ्रीका की पठन सूची में शामिल नहीं होतीं; दूसरी ओर, अधिकारियों ने उनमें से कई को अनुपयुक्त मानकर प्रतिबंधित कर दिया। किताबें प्राप्त करना ही अक्सर एक चुनौती होती थी। आप दक्षिण अफ्रीका के किसी पुस्तकालय में अनुबंध कानून पर किसी पुस्तक के लिए आवेदन कर सकते थे। वे आपके अनुरोध पर कार्रवाई करते और फिर डाक द्वारा पुस्तक आपको भेज देते। लेकिन डाक प्रणाली की अनियमितताओं, द्वीप की दूरस्थता और अक्सर जानबूझकर धीमी गति से जाँच करने वालों की वजह से, पुस्तक आपको वापसी की निर्धारित

तिथि के बाद ही मिलती। यदि तिथि बीत जाती, तो पुस्तकालय के अधिकारी आमतौर पर पुस्तक आपको दिखाए बिना ही वापस भेज देते। इस प्रणाली की प्रकृति को देखते हुए, हो सकता है कि आपको पुस्तक प्राप्त किए बिना ही विलंब शुल्क लग जाए।
किताबों के अलावा, हमें अपनी पढ़ाई के लिए ज़रूरी प्रकाशन मंगवाने की इजाज़त थी। अधिकारी इस मामले में बेहद सख्त थे, और लेखांकन की पढ़ाई कर रहे कैदी के लिए शायद बीमा विज्ञान पर एक त्रैमासिक पत्रिका ही स्वीकार्य होती थी। लेकिन एक दिन, मैक महाराज ने अर्थशास्त्र की पढ़ाई कर रहे अपने एक साथी से 'द इकोनॉमिस्ट' मंगाने को कहा। हम हँसे और बोले कि हम टाइम पत्रिका ही क्यों न मंगवा लें, क्योंकि 'द इकोनॉमिस्ट' भी एक समाचार साप्ताहिक ही थी। लेकिन मैक ने बस मुस्कुराते हुए कहा कि अधिकारियों को यह पता नहीं चलेगा; वे किताब को उसके शीर्षक से ही परखते हैं। एक महीने के भीतर, हमें 'द इकोनॉमिस्ट' मिलने लगी और हम वो खबरें पढ़ने लगे जिनकी हमें बहुत चाह थी। लेकिन अधिकारियों को जल्द ही अपनी गलती का एहसास हुआ और उन्होंने सदस्यता बंद कर दी।
जब अधिकांश पुरुष पढ़ाई करने लगे, तो हमने शिकायत की कि हमारे पास पढ़ाई के लिए आवश्यक न्यूनतम सुविधाएं, जैसे कि डेस्क और कुर्सियाँ भी नहीं हैं। मैंने यह शिकायत अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस से की। अंततः, अधिकारियों ने प्रत्येक कोठरी में एक प्रकार की स्टैंड-अप डेस्क बनवाई, जो दीवार से लगभग छाती की ऊँचाई तक निकली हुई एक साधारण लकड़ी की तख्ती थी।
यह ठीक वैसा नहीं था जैसा हमने सोचा था। खदान में थका देने वाले दिन के बाद, खड़े होकर काम करने वाली मेज पर काम करने का मन नहीं करता था। हममें से कई लोगों ने मेजों की शिकायत की, और कैथी सबसे मुखर था। उसने कमांडिंग ऑफिसर को बताया कि खड़े होकर काम करने वाली मेजें न केवल असुविधाजनक थीं, बल्कि इतनी ढलान वाली थीं कि किताबें गिर जाती थीं। कमांडिंग ऑफिसर ने कैथी के कमरे में अचानक दौरा किया, एक किताब मांगी और उसे उसकी मेज पर रख दिया। वह हिली भी नहीं। उन्होंने कैथी से एक और किताब मांगी और उसे पहली किताब के ऊपर रख दिया; फिर भी कुछ नहीं हुआ। अंत में, मेज पर चार किताबें रखने के बाद, उन्होंने शर्मिंदा कैथी की ओर मुड़कर कहा, "अरे, इन मेजों में कोई खराबी नहीं है," और बाहर चले गए। लेकिन लगभग छह महीने बाद, अधिकारियों

का दिल नरम पड़ गया और हमें तीन टांगों वाले लकड़ी के स्टूल दिए गए और खड़े होकर काम करने वाली मेजों की ऊंचाई कम कर दी गई।

अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस से मेरी एक शिकायत यह थी कि जेल के रखवालों द्वारा हम पर मनमाने ढंग से आरोप लगाए जाते थे। "आरोप" का मतलब था कि जेल का रखवाला दावा करता था कि किसी कैदी ने किसी विशेष नियम का उल्लंघन किया है, जिसके लिए उसे एकांतवास या भोजन और सुविधाओं से वंचित करके दंडित किया जा सकता था। रखवाले आमतौर पर इसे हल्के में नहीं लेते थे, क्योंकि जब किसी कैदी पर आरोप लगाया जाता था तो उसे न्यायिक सुनवाई का अधिकार दिया जाता था और अपराध की गंभीरता के आधार पर केप टाउन से मजिस्ट्रेट को बुलाया जाता था। उस समय, अधिकारी सुनवाई की अनुमति देने से इनकार कर रहे थे। जब मैंने अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस से इस बारे में शिकायत की थी, तब तक मुझे स्वयं इस समस्या का सामना नहीं करना पड़ा था। लेकिन इस स्थिति को जल्द ही सुधार लिया गया।
द्वीप पर अपने पहले साल के दौरान, सप्ताहांत में हमें आधे घंटे के व्यायाम के अलावा पूरे दिन अपनी कोठरियों में ही रखा जाता था। एक शनिवार को, आंगन में व्यायाम करके लौटने के बाद, मैंने देखा कि एक वार्डर ने गलियारे के अंत में बेंच पर एक अखबार छोड़ दिया था। वह हमारे प्रति काफी दोस्ताना हो गया था, और मैंने मान लिया कि उसने अखबार वहाँ गलती से नहीं छोड़ा होगा। राजनीतिक कैदियों के लिए अखबार सोने या हीरे से भी अधिक मूल्यवान थे, भोजन या तंबाकू से भी अधिक उनकी भूख का स्रोत थे; रॉबेन द्वीप पर वे सबसे कीमती प्रतिबंधित वस्तु थे। समाचार संघर्ष की बौद्धिक कच्ची सामग्री थे। हमें किसी भी प्रकार का समाचार पढ़ने की अनुमति नहीं थी, और हम इसके लिए तरसते थे। वाल्टर, मुझसे भी अधिक, समाचारों के बिना अकेला महसूस कर रहा था। अधिकारियों ने पूर्ण रूप से चुप्पी साधने का प्रयास किया; वे नहीं चाहते थे कि हम कुछ भी ऐसा जानें जिससे हमारा मनोबल बढ़े या हमें यह आश्वासन मिले कि बाहर के लोग अभी भी हमारे बारे में सोच रहे हैं।
देश की राजनीति से अवगत रहना हम अपना कर्तव्य समझते थे और अखबारों के अधिकार के लिए हमने लंबा और कठिन संघर्ष किया। वर्षों से हमने अखबार हासिल करने के कई तरीके ईजाद किए, लेकिन उस समय हम इतने कुशल नहीं थे। खदान में

जाने का एक फायदा यह था कि पहरेदारों के सैंडविच अखबार में लिपटे होते थे और वे अक्सर इन अखबारों के रैपर कूड़े में फेंक देते थे, जहाँ से हम चुपके से उन्हें निकाल लेते थे। हम पहरेदारों का ध्यान भटकाते, कूड़े में से अखबार निकालते और उन्हें अपनी कमीजों में छुपा लेते थे।
दस्तावेज़ हासिल करने के सबसे भरोसेमंद तरीकों में से एक रिश्वतखोरी थी, और यही एकमात्र क्षेत्र था जहाँ मैं जानकारी प्राप्त करने के अक्सर अनैतिक तरीकों को बर्दाश्त करता था। वार्डरों के पास हमेशा पैसों की कमी रहती थी, और उनकी गरीबी हमारे लिए एक अवसर थी।
जब हमें कभी कोई अखबार मिल जाता था, तो उसे बाँटना बहुत जोखिम भरा होता था। अखबार रखना एक गंभीर अपराध था। इसके बजाय, अखबार को एक ही व्यक्ति पढ़ता था, आमतौर पर कैथी या बाद में मैक महाराज। कैथी संचार विभाग का प्रभारी था, और उसने सूचना पहुँचाने के लिए कई अनोखे तरीके सोच रखे थे। कैथी अखबार में से प्रासंगिक खबरों की कटिंग निकालता था, जिन्हें फिर चुपके से हम सभी में बाँट दिया जाता था। हममें से प्रत्येक व्यक्ति दी गई खबर का सारांश लिखता था; ये सारांश फिर आपस में बाँटे जाते थे, और बाद में सामान्य अनुभाग में चुपके से पहुँचा दिए जाते थे। जब अधिकारी विशेष रूप से सतर्क होते थे, तो कैथी या मैक समाचार का अपना सारांश लिखकर अखबार को नष्ट कर देते थे, आमतौर पर उसे छोटे-छोटे टुकड़ों में फाड़कर अपनी कोठरी में रख देते थे, जिसकी वार्डर कभी जाँच नहीं करते थे।

जब मेरी नज़र बेंच पर पड़े अखबार पर पड़ी, तो मैं झटपट अपनी कोठरी से बाहर निकला, गलियारे के अंत तक गया, दोनों दिशाओं में देखा, और फिर बेंच से अखबार उठाकर अपनी कमीज़ में रख लिया। आम तौर पर, मैं अखबार को अपनी कोठरी में कहीं छिपा देता और सोने के बाद ही निकालता। लेकिन एक बच्चे की तरह जो मुख्य भोजन से पहले मिठाई खा लेता है, मैं समाचार पढ़ने के लिए इतना उत्सुक था कि मैंने तुरंत अपनी कोठरी में ही अखबार खोल लिया।
मुझे नहीं पता मैं कितनी देर से पढ़ रहा था; मैं अखबार में इतना मग्न था कि मुझे कदमों की आहट भी सुनाई नहीं दी। अचानक, एक अधिकारी और दो अन्य वार्डर आ गए और मुझे अखबार को अपने बिस्तर के नीचे सरकाने का भी समय नहीं मिला।

मैं रंगे हाथों पकड़ा गया, मानो। अधिकारी ने कहा, "मंडेला, हम आप पर प्रतिबंधित सामान रखने का आरोप लगा रहे हैं, और आपको इसकी कीमत चुकानी होगी।" इसके बाद दोनों वार्डरों ने मेरी कोठरी की पूरी तलाशी शुरू कर दी ताकि उन्हें कुछ और मिल सके।
एक-दो दिन के भीतर केप टाउन से एक मजिस्ट्रेट को बुलाया गया और मुझे मुख्यालय के उस कमरे में ले जाया गया जिसे द्वीप की अदालत के रूप में इस्तेमाल किया जाता था। इस मामले में, अधिकारी एक बाहरी मजिस्ट्रेट को बुलाने के लिए तैयार थे क्योंकि वे जानते थे कि मामला स्पष्ट रूप से सिद्ध हो चुका है। मैंने अपना बचाव नहीं किया, और मुझे तीन दिन के लिए एकांतवास और भोजन से वंचित रहने की सजा सुनाई गई।
मुझे नहीं लगता कि अखबार को बेंच पर छोड़ने वाले वार्डर ने मुझे फंसाया था, हालांकि कुछ लोगों ने ऐसा मान लिया था। सुनवाई के दौरान, अधिकारियों ने मुझसे अखबार मिलने के बारे में पूछताछ की, और मैंने जवाब देने से इनकार कर दिया। अगर मुझे फंसाया गया होता, तो अधिकारियों को पता होता कि मुझे अखबार कैसे मिला।

आइसोलेशन सेल हमारे ही परिसर में, लेकिन दूसरे विंग में थे। हालांकि वे आंगन के ठीक सामने थे, फिर भी बेहद दूर महसूस होते थे। आइसोलेशन में, व्यक्ति को साथ, व्यायाम और यहां तक कि भोजन से भी वंचित रखा गया था: उसे तीन दिनों तक दिन में तीन बार केवल चावल का पानी दिया जाता था। (चावल का पानी बस वह पानी होता है जिसमें चावल उबाले गए हों।) इसकी तुलना में, हमारा सामान्य राशन, जैसे कि एक दावत हो।
एकांतवास का पहला दिन हमेशा सबसे कष्टदायक होता था। नियमित भोजन की आदत पड़ जाती है और शरीर को भोजन की कमी सहन करने की आदत नहीं होती। मैंने पाया कि दूसरे दिन तक मैं भोजन की कमी के साथ लगभग अभ्यस्त हो गया था, और तीसरा दिन बिना किसी खास लालसा के बीत गया। अफ़्रीकी लोगों के दैनिक जीवन में इस तरह की कमी आम बात थी। मैंने खुद भी जोहान्सबर्ग में अपने शुरुआती वर्षों में कई दिनों तक बिना भोजन के गुजारा किया था।

जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, मुझे एकांत कारावास जेल जीवन का सबसे भयावह पहलू लगा। इसका न कोई अंत है, न कोई शुरुआत; बस अपना मन ही होता है, जो तरह-तरह के भ्रम पैदा कर सकता है। क्या वह सपना था या सचमुच हुआ था? इंसान हर बात पर सवाल उठाने लगता है। क्या मैंने सही फैसला लिया, क्या मेरा बलिदान सार्थक था? एकांत कारावास में इन परेशान करने वाले सवालों से ध्यान हटाने का कोई जरिया नहीं होता।
लेकिन मानव शरीर में कठिन परिस्थितियों के अनुकूल ढलने की अपार क्षमता होती है। मैंने पाया है कि यदि शरीर की परीक्षा के समय भी व्यक्ति अपने मनोबल को मजबूत बनाए रखे, तो वह असहनीय परिस्थितियों को भी सहन कर सकता है। दृढ़ विश्वास अभावों से उबरने का रहस्य है; आपका मन खाली होने पर भी परिपूर्ण हो सकता है।

शुरुआती वर्षों में, एकांतवास एक आदत बन गई थी। छोटी-छोटी गलतियों के लिए भी हम पर नियमित रूप से आरोप लगाए जाते थे और हमें एकांतवास में भेज दिया जाता था। किसी व्यक्ति को तिरछी नज़र डालने पर भी भोजन से वंचित कर दिया जाता था या वार्डर के कमरे में प्रवेश करने पर खड़े न होने पर सज़ा दी जाती थी। पीएसी के कुछ कैदी, जो अक्सर नियमों का उल्लंघन करते थे, एकांतवास में बहुत समय बिताते थे। अधिकारियों का मानना था कि एकांतवास हमारी अवज्ञा और विद्रोही प्रवृत्ति का इलाज है।
दूसरी बार जब मुझ पर आरोप लगाया गया और मुझे एकांतवास में रखा गया, वह पहली बार के कुछ ही समय बाद हुआ। जैसा कि मैंने पहले भी बताया है, हमें अपनी शिकायतें सुनाने में बहुत कठिनाई हो रही थी। जेल की दूरदराज की स्थिति के कारण अधिकारियों को लगता था कि वे हमें बिना किसी दंड के अनदेखा कर सकते हैं। उनका मानना था कि अगर वे हमारी बात अनसुनी कर देंगे, तो हम हताशा में हार मान लेंगे और बाहर के लोग हमें भूल जाएंगे।
एक दिन हम चूने की खदान में काम कर रहे थे, तभी कमांडिंग ऑफिसर हमें देखने आए। उनके साथ एक सज्जन भी थे जिन्हें हम पहले पहचान नहीं पाए। मेरे एक सहकर्मी ने मुझे फुसफुसाकर बताया कि वे हेड ऑफिस से ब्रिगेडियर ऑकैम्प थे, जो हमारे कमांडिंग ऑफिसर के भी कमांडिंग ऑफिसर थे। (उनका नाम प्रिटोरिया

लोकल के ऑकैम्प से अलग है, जिन्होंने रिवोनिया मुकदमे के दौरान हमारी देखरेख की थी।) वे दोनों व्यक्ति कुछ दूरी पर खड़े होकर हमें देख रहे थे। ऑकैम्प कद में छोटा और गठीला था, और उसने मिलिट्री यूनिफॉर्म की जगह सूट पहना हुआ था। वह आम तौर पर साल में दो बार निरीक्षण के लिए द्वीप पर आता था। उन मौकों पर, हमें अपनी कोठरियों की जाली पर सावधान मुद्रा में खड़े रहने और उसके गुजरते समय अपने जेल कार्ड ऊपर उठाने का आदेश दिया जाता था। मैंने तय किया कि ऑकैम्प का अचानक प्रकट होना हमारे लिए अपनी शिकायतें उस व्यक्ति के सामने रखने का एक अनूठा अवसर है जिसके पास उनका समाधान करने की शक्ति थी। मैंने अपना कुल्हाड़ा नीचे रख दिया और उनकी ओर चलने लगा। वार्डर तुरंत सतर्क हो गए और मेरी ओर बढ़ने लगे। मुझे पता था कि मैं नियमों का उल्लंघन कर रहा हूँ, लेकिन मुझे उम्मीद थी कि मेरे इस अनोखे काम से वार्डर इतने आश्चर्यचकित होंगे कि वे मुझे रोकने के लिए कुछ नहीं करेंगे। और ऐसा ही हुआ।
जब मैं उन दोनों आदमियों के पास पहुँचा, तो कमांडिंग ऑफिसर ने सीधे-सीधे कहा, “मंडेला, अपने स्थान पर वापस जाओ। तुम्हें किसी ने नहीं बुलाया।” मैंने उनकी बात अनसुनी कर दी और ऑकैम्प से कहा कि मैंने यह असाधारण कदम इसलिए उठाया है क्योंकि हमारी शिकायतों को अनदेखा किया जा रहा था। कमांडिंग ऑफिसर ने मुझे बीच में ही रोकते हुए कहा, “मंडेला, मैं तुम्हें अपने स्थान पर वापस जाने का आदेश देता हूँ।” मैं उनकी ओर मुड़ा और संयमित स्वर में कहा, “मैं पहले से ही यहाँ हूँ, मैं वापस नहीं जाऊँगा।” मुझे उम्मीद थी कि ऑकैम्प मेरी बात सुन लेंगे, लेकिन उन्होंने मुझे ठंडेपन से देखा और फिर वार्डरों की ओर मुड़कर शांत भाव से कहा, “इस पर आरोप लगाओ।” जब गार्ड मुझे ले जा रहे थे, तब भी मैं बोलता रहा। "इसे वापस कोठरियों में ले जाओ," कमांडिंग ऑफिसर ने कहा। मुझ पर आरोप लगाया गया और एक बार फिर मेरे पास बचाव का कोई मौका नहीं था। इस बार सज़ा चार दिन एकांतवास थी। मैंने जो किया था, उससे मुझे एक सबक मिला, एक ऐसा सबक जो मैं पहले से जानता था, लेकिन मजबूरी में मैंने उसे नज़रअंदाज़ कर दिया था। कोई भी, खासकर जेल अधिकारी, सार्वजनिक रूप से अपनी सत्ता को चुनौती दिए जाने को पसंद नहीं करता। ऑकैंप को मुझे जवाब देने के लिए अपने अधीनस्थ को अपमानित करना पड़ता। जेल अधिकारी निजी तौर पर की गई बातचीत पर ज़्यादा बेहतर प्रतिक्रिया देते थे। रॉबेन द्वीप पर बदलाव लाने का सबसे अच्छा तरीका अधिकारियों को सार्वजनिक

रूप से प्रभावित करने के बजाय निजी तौर पर प्रभावित करने की कोशिश करना था। कभी-कभी मुझे जेल अधिकारियों के प्रति बहुत नरम दिखने के लिए आलोचना का सामना करना पड़ता था, लेकिन सुधार के बदले मैं आलोचना स्वीकार करने को तैयार था।

66

किसी भी कैदी के जीवन में सबसे महत्वपूर्ण व्यक्ति न्याय मंत्री, जेल आयुक्त या जेल प्रमुख नहीं, बल्कि उसके सेक्शन का वार्डर होता है। अगर आपको ठंड लग रही है और एक अतिरिक्त कंबल चाहिए, तो आप न्याय मंत्री से गुहार लगा सकते हैं, लेकिन आपको कोई जवाब नहीं मिलेगा। अगर आप जेल आयुक्त के पास जाते हैं, तो वे कहेंगे, "क्षमा कीजिए, यह नियमों के विरुद्ध है।" जेल प्रमुख कहेंगे, "अगर मैं आपको एक अतिरिक्त कंबल देता हूँ, तो मुझे सभी को देना होगा।" लेकिन अगर आप अपने कॉरिडोर के वार्डर से संपर्क करते हैं, और आपके उससे अच्छे संबंध हैं, तो वह सीधे भंडारगृह में जाकर कंबल ले आएगा। मैंने हमेशा अपने सेक्शन के वार्डरों के साथ अच्छा व्यवहार करने की कोशिश की; शत्रुता रखना आत्मघाती था। वार्डरों के बीच स्थायी शत्रु रखने का कोई फायदा नहीं था। एएनसी की नीति सभी लोगों को शिक्षित करने की थी, यहाँ तक कि अपने दुश्मनों को भी: हमारा मानना था कि सभी इंसान, यहाँ तक कि जेल सेवा के वार्डर भी, परिवर्तन की क्षमता रखते हैं, और हमने उन्हें प्रभावित करने के लिए हर संभव प्रयास किया।
आम तौर पर हम पहरेदारों के साथ वैसा ही व्यवहार करते थे जैसा वे हमारे साथ करते थे। अगर कोई हमारे प्रति दयालु होता, तो हम भी बदले में वैसा ही व्यवहार करते थे। हमारे सभी पहरेदार क्रूर नहीं थे। हमने शुरू से ही देखा कि उनमें से कुछ न्याय में विश्वास रखते थे। फिर भी, पहरेदारों के साथ मित्रता रखना आसान नहीं था, क्योंकि वे आम तौर पर किसी अश्वेत व्यक्ति के प्रति विनम्रता दिखाने के विचार को घृणित मानते थे। चूंकि हमारे प्रति अच्छे भाव रखने वाले पहरेदारों का होना हमारे लिए उपयोगी था, इसलिए मैं अक्सर कुछ लोगों से चुने हुए पहरेदारों से मेल-जोल बढ़ाने का अनुरोध करता था। ऐसा काम करना किसी को पसंद नहीं था।
हमारी खदान में एक वार्डर था जो हमसे खास तौर पर शत्रुतापूर्ण व्यवहार करता था। यह परेशानी का सबब था, क्योंकि खदान में हम आपस में बातचीत करते थे, और जो वार्डर हमें बात करने नहीं देता था, वह हमारे लिए बहुत बड़ी बाधा था। मैंने अपने एक साथी से उस कैदी से दोस्ती करने को कहा ताकि वह हमारी बातचीत में दखल न दे। वार्डर काफी असभ्य था, लेकिन जल्द ही उस कैदी के साथ

उसका व्यवहार थोड़ा नरम पड़ने लगा। एक दिन, वार्डर ने उस साथी से उसकी जैकेट मांगी ताकि वह उसे घास पर बिछाकर उस पर बैठ सके। हालांकि मुझे पता था कि यह उस साथी के स्वभाव के खिलाफ था, फिर भी मैंने उसे ऐसा करने की इजाजत दे दी।
कुछ दिनों बाद, हम शेड के नीचे दोपहर का खाना खा रहे थे तभी एक वार्डर उधर आ गया। उसके पास एक अतिरिक्त सैंडविच था, जिसे उसने हमारे पास घास पर फेंक दिया और कहा, "लो।" दोस्ती जताने का यह उसका तरीका था।
इससे हम दुविधा में पड़ गए। एक ओर, वह हमारे साथ जानवरों जैसा व्यवहार कर रहा था, जिन्हें वह थोड़ा सा जूठा खाना फेंक सकता था, और मुझे लगा कि सैंडविच लेना हमारी गरिमा को ठेस पहुंचाएगा। दूसरी ओर, हम भूखे थे, और उस पेशकश को पूरी तरह से ठुकरा देना उस वार्डर का अपमान होता जिससे हम दोस्ती करने की कोशिश कर रहे थे। मैंने देखा कि वार्डर से दोस्ती करने वाला साथी सैंडविच चाहता था, और मैंने उसे लेने के लिए इशारा किया।
यह रणनीति कारगर साबित हुई, क्योंकि वह वार्डर हमारे प्रति कम सतर्क रहने लगा। यहाँ तक कि उसने एएनसी के बारे में सवाल पूछना भी शुरू कर दिया। स्वाभाविक रूप से, अगर कोई व्यक्ति जेल सेवा में काम करता है, तो वह संभवतः सरकार के दुष्प्रचार से प्रभावित होता है। उसे लगता होगा कि हम आतंकवादी और कम्युनिस्ट हैं जो गोरे लोगों को समुद्र में धकेलना चाहते हैं। लेकिन जब हमने चुपचाप उसे अपनी गैर-नस्लीयता, समान अधिकारों की इच्छा और धन के पुनर्वितरण की योजनाओं के बारे में बताया, तो उसने अपना सिर खुजाया और कहा, "यह तो नैशनल पार्टी से कहीं ज़्यादा तर्कसंगत है।"

हमदर्द वार्डरों की मौजूदगी ने रॉबेन द्वीप पर हमारे सबसे महत्वपूर्ण कार्यों में से एक को आसान बना दिया: संचार। हम एफ और जी में अपने साथियों के साथ संपर्क बनाए रखना अपना कर्तव्य समझते थे, जहाँ आम कैदियों को रखा जाता था। राजनेता होने के नाते, हम जेल के अंदर भी अपने संगठन को उतना ही मजबूत करने के लिए प्रतिबद्ध थे जितना कि बाहर। अपने विरोध प्रदर्शनों और शिकायतों को समन्वित करने के लिए संचार आवश्यक था। आम सेक्शन में कैदियों के आने-जाने की अधिक संख्या के कारण, एफ और जी के कैदियों के पास न केवल

मिलने आते थे, तो वार्डरों को कमरे में आने की अनुमति नहीं होती थी और हम कभी-कभी वकील को चिट्ठी देकर बाहर भेज देते थे। वकीलों की तलाशी नहीं ली जाती थी। इन मुलाकातों में, हम लिखकर भी संवाद कर सकते थे, जैसा कि हमने रिवोनिया मुकदमे के दौरान किया था। कमरे में जासूसी उपकरण लगे होने के कारण, हम कहते, "कृपया बताएँ..." और फिर रुककर कागज़ के एक टुकड़े पर "ओ.टी." लिखते, जिसका अर्थ था ओलिवर टैम्बो, "कि हम उनके... का आकार कम करने की योजना का समर्थन करते हैं..." और फिर लिखते, "राष्ट्रीय कार्यकारिणी।"

जुलाई 1966 में, हमारे खाने के ड्रमों में प्लास्टिक में लिपटे एक नोट के ज़रिए हमें पता चला कि जनरल सेक्शन के कैदियों ने खराब परिस्थितियों के विरोध में भूख हड़ताल शुरू कर दी है। नोट में सटीक जानकारी नहीं थी, और हमें ठीक से पता नहीं था कि हड़ताल कब शुरू हुई थी या किस बारे में थी। लेकिन हम कैदियों की किसी भी हड़ताल का समर्थन करते, चाहे उनका कारण कुछ भी हो। यह बात हम सब में फैल गई, और हमने अगले भोजन से ही सहानुभूतिपूर्ण हड़ताल शुरू करने का संकल्प लिया। भूख हड़ताल का मतलब सिर्फ एक ही होता है: खाना न खाना।
संचार में देरी के कारण, आम कैदियों को शायद एक-दो दिन तक हमारी भागीदारी के बारे में पता नहीं चला। लेकिन हम जानते थे कि यह खबर उन्हें खुश करेगी। अधिकारी उन्हें बता रहे होंगे कि हम हड़ताल में भाग नहीं ले रहे हैं, बल्कि बढ़िया भोजन का लुत्फ़ उठा रहे हैं। यह उनकी सामान्य कार्यप्रणाली थी; संकट के समय, अधिकारी अनिवार्य रूप से एक वर्ग को दूसरे के खिलाफ भड़काने के लिए दुष्प्रचार अभियान शुरू कर देते हैं। इस मामले में, जहाँ एएनसी ने सर्वसम्मति से हड़ताल का समर्थन किया, वहीं आम सेक्शन के कुछ पीएसी सदस्यों ने इसका विरोध किया।
हमारी हड़ताल के पहले दिन, हमें हमारा सामान्य राशन दिया गया, लेकिन हमने उसे लेने से इनकार कर दिया। दूसरे दिन, हमने देखा कि हमारा राशन पहले से ज़्यादा था और दलिया के साथ कुछ और सब्ज़ियाँ भी थीं। तीसरे दिन, रात के खाने में मांस के रसीले टुकड़े परोसे गए। चौथे दिन तक, दलिया चर्बी से चमक रहा था, और उसके ऊपर मांस के बड़े-बड़े टुकड़े और रंग-बिरंगी सब्ज़ियाँ

भाप छोड़ रही थीं। खाना सचमुच मुँह में पानी ला देने वाला था। जब हमने खाना ठुकरा दिया, तो वार्डर मुस्कुराए। लालच बहुत ज़्यादा था, लेकिन हमने खुद को रोका, हालाँकि खदान में हमसे बहुत ज़्यादा काम करवाया जा रहा था। हमने सुना कि मुख्य भाग में कैदी बेहोश हो रहे थे और उन्हें ठेले में ले जाया जा रहा था।
मुझे कर्नल वेसेल्स से मुलाकात के लिए मुख्यालय बुलाया गया। ऐसी मुलाकातें नाजुक होती थीं, क्योंकि मेरे साथी कैदी जानते थे कि अधिकारी मुझे हड़ताल खत्म करने के लिए प्रभावित करने की कोशिश करेंगे। वेसेल्स सीधे-सादे व्यक्ति थे और उन्होंने जानना चाहा कि हम भूख हड़ताल पर क्यों हैं। मैंने समझाया कि राजनीतिक कैदी होने के नाते हम जेल की स्थितियों में बदलाव के लिए किए जा रहे विरोध को रंगभेद विरोधी संघर्ष का ही एक हिस्सा मानते हैं। उन्होंने कहा, "लेकिन आपको तो यह भी नहीं पता कि एफ और जी में लोग हड़ताल क्यों कर रहे हैं।" मैंने कहा कि इससे कोई फर्क नहीं पड़ता, एफ और जी के लोग हमारे भाई हैं और हमारा संघर्ष अटूट है। उन्होंने नाक सिकोड़ी और मुझे जाने दिया।
अगले दिन हमें एक असाधारण घटनाक्रम के बारे में पता चला: वार्डरों ने स्वयं ही भोजन का बहिष्कार कर दिया था और अपनी कैंटीन में जाने से इनकार कर दिया था। वे हमारे समर्थन में हड़ताल नहीं कर रहे थे, बल्कि उन्होंने यह तय कर लिया था कि अगर हम ऐसा कर सकते हैं, तो वे क्यों नहीं? वे बेहतर भोजन और बेहतर जीवन स्थितियों की मांग कर रहे थे। दोनों हड़तालों का संयुक्त प्रभाव अधिकारियों के लिए असहनीय हो गया। उन्होंने वार्डरों के साथ समझौता कर लिया और फिर, एक-दो दिन बाद, हमें पता चला कि अधिकारी सामान्य अनुभाग में गए थे और बदलावों पर बातचीत करने के लिए तीन प्रतिनिधियों को बुलाया था। सामान्य कैदियों ने जीत की घोषणा की और भूख हड़ताल समाप्त कर दी। हमने भी एक दिन बाद ऐसा ही किया।

* * *

द्वीप पर हुई भूख हड़तालों में से यह पहली और सबसे सफल भूख हड़ताल थी। विरोध के एक रूप के तौर पर, इनकी सफलता दर बहुत कम थी और इनके पीछे का तर्क मुझे हमेशा अटपटा लगता था। भूख हड़ताल के सफल होने के लिए, बाहरी दुनिया को

इसकी जानकारी होनी ज़रूरी है। अन्यथा, कैदी खुद को भूखा रखकर मर जाएंगे और किसी को पता भी नहीं चलेगा। अगर चुपके से यह जानकारी बाहर भेजी जाती कि हम भूख हड़ताल पर हैं, तो अखबारों में खबरें छपतीं, जिससे बदले में अधिकार समूहों का दबाव बनता। समस्या, खासकर शुरुआती वर्षों में, यह थी कि बाहर के लोगों को यह बताना लगभग असंभव था कि हम अंदर भूख हड़ताल कर रहे हैं।
मेरे लिए, भूख हड़तालें पूरी तरह से निष्क्रिय थीं। हम जो पहले से ही कष्ट झेल रहे थे, अपनी सेहत को खतरे में डाल रहे थे, मानो मौत को दावत दे रहे हों। मैंने हमेशा विरोध के अधिक सक्रिय, जुझारू तरीके का समर्थन किया है, जैसे कि काम बंद करना, काम धीमा करना या सफाई करने से इनकार करना; ऐसे काम जो अधिकारियों को दंडित करें, हमें नहीं। उन्हें बजरी चाहिए थी और हम बजरी नहीं दे रहे थे। उन्हें जेल का आंगन साफ चाहिए था और वह गंदा था। इस तरह के व्यवहार से वे परेशान और चिढ़ जाते थे, जबकि मुझे लगता है कि वे हमें भूखा देखकर चुपके से आनंद लेते थे।
लेकिन जब फैसला लेने की बारी आती, तो अक्सर मेरी बात नहीं मानी जाती थी। मेरे साथी तो मज़ाक में मुझ पर खाना न छोड़ने का आरोप भी लगाते थे। भूख हड़ताल के समर्थकों का तर्क था कि यह विरोध का एक पारंपरिक रूप है, जिसे महात्मा गांधी जैसे महान नेताओं ने दुनिया भर में अपनाया था। लेकिन एक बार फैसला हो जाने पर, मैं भी इसके समर्थकों की तरह पूरे दिल से इसका समर्थन करता था। दरअसल, हड़तालों के दौरान मुझे अक्सर अपने कुछ अड़ियल साथियों से बहस करनी पड़ती थी, जो हमारे समझौते का पालन नहीं करना चाहते थे। मुझे याद है एक आदमी ने कहा था, “मदीबा, मुझे खाना चाहिए। मुझे समझ नहीं आता कि मुझे भूखा क्यों रहना चाहिए। मैंने कई सालों तक संघर्ष में अपना योगदान दिया है।”
साथी कभी-कभी छुपकर खाना खा लेते थे। हमें इसका सीधा सा कारण पता था: भूख हड़ताल के दूसरे दिन तक किसी को शौचालय जाने की ज़रूरत नहीं पड़ती। फिर भी, एक दिन सुबह आप किसी साथी को शौचालय जाते हुए देख सकते थे। हमारी अपनी एक गुप्त सूचना प्रणाली थी क्योंकि हम जानते थे कि कुछ लोग इस मामले में कमज़ोर थे।

67

जुलाई 1966 की भूख हड़ताल के दौरान मेरी पत्नी मुझसे दूसरी बार मिलने आई। यह पहली मुलाकात के लगभग ठीक दो साल बाद हुई थी, और ऐसा लग रहा था कि यह मुलाकात होगी ही नहीं। विनी 1964 में अपनी पहली मुलाकात के बाद से लगातार उत्पीड़न का शिकार थी। उसके भाई-बहनों को पुलिस द्वारा सताया जा रहा था, और अधिकारियों ने उसके परिवार के किसी भी सदस्य को उसके साथ रहने से रोकने की कोशिश की थी। इनमें से कुछ बातें मुझे उसी समय पता चलीं, और बहुत सी बातें मुझे बाद में पता चलीं। कुछ सबसे घिनौनी बातें मुझे इसलिए पता चलीं क्योंकि जब मैं खदान से लौटता था, तो अक्सर मुझे विनी के बारे में करीने से काटे गए समाचार पत्रों के टुकड़े मिलते थे, जिन्हें वार्डर गुमनाम रूप से मेरे बिस्तर पर रख देते थे।
अधिकारियों ने छोटे-छोटे और द्वेषपूर्ण तरीकों से विनी की यात्राओं को यथासंभव कष्टदायी बनाने की पूरी कोशिश की। पिछले दो वर्षों से, स्थानीय मजिस्ट्रेटों और बार-बार लगाए गए प्रतिबंधों के कारण उसकी यात्राएँ बाधित होती रही थीं। मुझे हाल ही में वकील के माध्यम से पता चला कि पुलिस ने विनी को सूचित किया था कि वह मुझसे तभी मिल सकती है जब उसके पास एक पास हो। विनी, जो 1950 के दशक से ही महिलाओं के पास संबंधी सरकारी नीति का विरोध कर रही थी, ने उस घृणित दस्तावेज़ को ले जाने से सही ही इनकार कर दिया। अधिकारी स्पष्ट रूप से उसे और मुझे अपमानित करने का प्रयास कर रहे थे। लेकिन मुझे लगा कि अधिकारियों की तुच्छ चालों का विरोध करने से कहीं अधिक महत्वपूर्ण है कि हम एक-दूसरे से मिलें, और विनी पास ले जाने के लिए सहमत हो गई। मुझे उसकी बहुत याद आ रही थी और उसे देखकर मुझे तसल्ली मिली, साथ ही हमें परिवार से जुड़े कुछ महत्वपूर्ण मामलों पर भी चर्चा करनी थी।
विनी की हर यात्रा से जुड़े नियम लंबे और जटिल थे। उसे ट्रेन या कार से यात्रा करने की मनाही थी और उसे हवाई जहाज से ही यात्रा करनी पड़ती थी, जिससे यात्रा काफी महंगी हो जाती थी। उसे हवाई अड्डे से केप टाउन पुलिस स्टेशन, कैलेडन स्क्वायर तक सबसे छोटा रास्ता अपनाना पड़ता था, जहाँ उसे कई दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करने होते थे। वापसी में भी उसे उसी स्टेशन पर जाकर और दस्तावेज़ों पर हस्ताक्षर करने पड़ते थे।

मैंने अखबार की एक कटिंग से यह भी जाना था कि स्पेशल ब्रांच का एक अधिकारी हमारे ऑरलैंडो स्थित घर में तब घुस आया जब विनी कपड़े पहन रही थी और विनी ने गुस्से में आकर अधिकारी को धक्का देकर बेडरूम से बाहर निकाल दिया। लेफ्टिनेंट ने विनी पर मारपीट का आरोप लगाया और मैंने अपने दोस्त और सहकर्मी जॉर्ज बिज़ोस से विनी का बचाव करने को कहा, जिसे उन्होंने बखूबी निभाया। हमने अखबारों में इसके बारे में खबरें पढ़ी थीं और कुछ लोग विनी के लड़ाकू स्वभाव पर मुझसे मजाक भी करते थे। उन्होंने कहा, "मदीबा, तुम परिवार में अकेले मुक्केबाज नहीं हो।"
यह दूसरी मुलाकात मात्र आधे घंटे की थी, और हमें बहुत कुछ बात करनी थी। केपटाउन में हुए बुरे बर्ताव और हमेशा की तरह फेरी के निचले हिस्से में सफर करने की वजह से विनी थोड़ी परेशान थी, जहाँ इंजन से निकलने वाले धुएं से उसकी तबीयत खराब हो जाती थी। उसने मेरे लिए अच्छे से तैयार होने की कोशिश की थी, लेकिन वह दुबली-पतली और मुरझाई हुई लग रही थी।
हमने बच्चों की शिक्षा, मेरी माँ के स्वास्थ्य (जो बहुत अच्छा नहीं था) और अपनी आर्थिक स्थिति की समीक्षा की। ज़ेनी और ज़िंदज़ी की शिक्षा एक अहम मुद्दा था। विनी ने दोनों बच्चियों को एक ऐसे स्कूल में दाखिला दिलाया था जिसे भारतीय स्कूल के रूप में नामित किया गया था, और अधिकारी प्रधानाचार्य को इस आधार पर परेशान कर रहे थे कि अफ्रीकी विद्यार्थियों को प्रवेश देना कानून का उल्लंघन है। हमने ज़ेनी और ज़िंदज़ी को स्वाज़ीलैंड के बोर्डिंग स्कूल में भेजने का कठिन निर्णय लिया। यह विनी के लिए बहुत मुश्किल था, क्योंकि उसे अपनी दोनों बच्चियों से ही सबसे ज़्यादा सहारा मिलता था। मुझे इस बात से तसल्ली मिली कि वहाँ उनकी शिक्षा शायद बेहतर होगी, लेकिन मुझे विनी की चिंता सता रही थी। वह अकेली पड़ जाएगी और ऐसे लोगों का शिकार बन जाएगी जो दोस्त होने का दिखावा करके उसे नीचा दिखाने की कोशिश करेंगे। विनी लोगों के इरादों पर बहुत आसानी से भरोसा कर लेती थी।
परिवार से इतर मामलों पर चर्चा करने पर लगी पाबंदियों से बचने के लिए, हम ऐसे नामों का इस्तेमाल करते थे जिनका मतलब हमें तो साफ पता होता था, लेकिन सुरक्षाकर्मियों को नहीं। अगर मुझे विनी का हालचाल जानना होता, तो मैं कहता, “क्या आपने हाल ही में न्गुत्याना के बारे में सुना है? क्या वो ठीक है?” न्गुत्याना विनी के खानदान का नाम है, लेकिन अधिकारियों को इसकी जानकारी नहीं थी। तब विनी न्गुत्याना के बारे में बता पाती कि वो कैसी है

और क्या कर रही है। अगर सुरक्षाकर्मी पूछता कि न्गुत्याना कौन है, तो हम कहते कि वो हमारी चचेरी बहन है। अगर मुझे एएनसी के विदेश मिशन के बारे में जानना होता, तो मैं पूछता, “चर्च कैसा चल रहा है?” विनी चर्च के बारे में उचित शब्दों में बात करती, और फिर मैं पूछता, “पुजारी कैसे हैं? क्या कोई नए उपदेश हुए हैं?” हमने इस तरह से बातचीत करके बहुत सारी जानकारी का आदान-प्रदान कर लिया।
हमेशा की तरह, जब वार्डर ने "समय समाप्त!" चिल्लाया, तो मुझे लगा कि बस कुछ ही मिनट बीते हैं। मैं शीशे को चूमकर अलविदा कहना चाहती थी, लेकिन खुद को रोक लिया। मैं हमेशा यही चाहती थी कि विनी पहले चली जाए ताकि उसे मुझे वार्डरों द्वारा ले जाते हुए न देखना पड़े, और मैंने देखा कि वह धीरे से अलविदा कह रही थी, वार्डरों से अपना दर्द छुपा रही थी।
मुलाकात के बाद, मैंने अपने मन में सारी बातें दोहराईं - विनी ने क्या पहना था, उसने क्या कहा था, मैंने क्या कहा था। फिर मैंने उसे एक पत्र लिखा जिसमें मैंने हमारी कुछ बातचीत का जिक्र किया और उसे याद दिलाया कि मैं उसकी कितनी परवाह करती हूँ, हमारा रिश्ता कितना अटूट है और वह कितनी साहसी है। मैंने अपने पत्रों को उसके लिए प्रेम पत्र के रूप में भी देखा और उसे भावनात्मक सहारा देने के एकमात्र तरीके के रूप में भी, जिसकी उसे ज़रूरत थी।
यात्रा के कुछ ही समय बाद, मुझे पता चला कि विनी पर केप टाउन पहुंचने पर पुलिस को सूचना न देने और वहां से जाते समय पुलिस को अपना पता देने से इनकार करने का आरोप लगाया गया था। फेरी पर अपना पता पहले ही दे देने के कारण, लौटने पर उससे दोबारा पूछा गया, लेकिन उसने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि वह पहले ही दे चुकी है।
विनी को गिरफ्तार किया गया और जमानत पर रिहा कर दिया गया। उन पर मुकदमा चला और उन्हें एक साल की कैद की सजा सुनाई गई, जिसे चार दिनों को छोड़कर निलंबित कर दिया गया। इस घटना के कारण विनी को सामाजिक कार्यकर्ता के रूप में अपनी दूसरी नौकरी से बर्खास्त कर दिया गया और उनकी आय का मुख्य स्रोत छिन गया।

राज्य ने मुझे परेशान करने के लिए हर संभव प्रयास किया, ऐसे तरीकों से जिनका विरोध करना मेरे लिए असंभव था। 1966 के अंत में, न्याय मंत्री के उकसावे पर, ट्रांसवाल लॉ सोसाइटी ने रिवोनिया मुकदमे में मेरी दोषसिद्धि के परिणामस्वरूप मुझे वकीलों की सूची से हटाने का प्रस्ताव रखा। जाहिर तौर पर, अवज्ञा अभियान में मेरी दोषसिद्धि के कारण मेरा नाम सूची से हटाने के पहले के असफल प्रयास से वे हतोत्साहित नहीं हुए थे।
मुझे लॉ सोसाइटी की कार्रवाई के बारे में तब पता चला जब वह शुरू हो चुकी थी। ट्रांसवाल लॉ सोसाइटी एक बेहद रूढ़िवादी संगठन था, और वे मुझे ऐसे समय में दंडित करना चाहते थे जब उन्हें लगता था कि मैं अपना बचाव करने में असमर्थ रहूंगा। रॉबेन द्वीप पर कैदी के लिए अदालत में अपना बचाव करना आसान नहीं होता, लेकिन मेरा इरादा ठीक यही करने का था।
मैंने अधिकारियों को सूचित किया कि मैं इस कार्रवाई का विरोध करने की योजना बना रहा हूँ और अपना बचाव स्वयं तैयार करूँगा। मैंने जेल अधिकारियों से कहा कि पर्याप्त तैयारी के लिए मुझे खदान में जाने से छूट चाहिए और साथ ही मुझे अपने बचाव पर काम करने के लिए एक उचित मेज, कुर्सी और पढ़ने की रोशनी भी चाहिए। मैंने कहा कि मुझे विधि पुस्तकालय तक पहुँच चाहिए और मुझे प्रिटोरिया ले जाने की मांग की।
मेरी रणनीति यह थी कि मैं जेल अधिकारियों और अदालतों को वैध अनुरोधों से भर दूं, जिन्हें पूरा करना उनके लिए मुश्किल होगा, यह मैं जानता था। जब भी मैं अदालत में अपना बचाव करना चाहता था, अधिकारियों को हमेशा बुरा लगता था क्योंकि इससे होने वाली पब्लिसिटी से यह पता चलता कि मैं अभी भी उन्हीं मूल्यों के लिए लड़ रहा हूं जिनके लिए मैं हमेशा से लड़ता आया हूं।
उनकी पहली प्रतिक्रिया थी, “मंडेला, आप अपना बचाव करने के लिए एक वकील क्यों नहीं रख लेते? वह मामले को ठीक से संभाल लेंगे। आप खुद को क्यों परेशान कर रहे हैं?” मैंने तुरंत सुप्रीम कोर्ट के रजिस्ट्रार के पास आवश्यक अभिलेखों, दस्तावेजों और पुस्तकों के लिए आवेदन किया। मैंने राज्य के गवाहों की सूची और उनकी संभावित गवाही का सारांश भी मांगा।
मुझे एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि अदालत मेरी याचिकाओं को स्वीकार करने से पहले मेरे बचाव पक्ष की प्रकृति जानना चाहेगी। यह बात बिल्कुल अजीब थी। मुकदमे से पहले किसी वकील के बचाव पक्ष की प्रकृति के बारे में पूछना? किसी भी प्रतिवादी को अदालत में पेश होने से पहले अपना बचाव पक्ष बताने के

लिए बाध्य नहीं किया जा सकता। मैंने उन्हें जवाब में लिखा कि मेरे बचाव पक्ष की प्रकृति उन्हें मेरे कागजात दाखिल करने के बाद ही स्पष्ट होगी - उससे पहले नहीं।
यह मेरे और रजिस्ट्रार के साथ-साथ लॉ सोसाइटी का प्रतिनिधित्व कर रहे राज्य के अटॉर्नी के बीच पत्राचार की एक श्रृंखला की शुरुआत थी। मैं अपनी किसी भी मांग से पीछे नहीं हटने को तैयार था। अधिकारी भी उतने ही अड़ियल थे: मुझे खदान के काम से नहीं हटाया जा सकता था, मुझे मेज और कुर्सी नहीं दी जा सकती थी, और किसी भी परिस्थिति में मुझे कानून पुस्तकालय का उपयोग करने के लिए प्रिटोरिया जाने की अनुमति नहीं थी।
मैंने लॉ सोसायटी और रजिस्ट्रार को लगातार अपनी मांगों से परेशान किया, जिन्हें वे टालते रहे। आखिरकार, कई महीनों और कई पत्रों के बाद, बिना किसी शोर-शराबे के और मुझे बस एक संक्षिप्त सूचना देकर, उन्होंने पूरा मामला ही छोड़ दिया। मामला उनकी उम्मीद से कहीं ज़्यादा जटिल होता जा रहा था। उन्होंने सोचा था कि मुझमें खुद का बचाव करने की पहल या साधन नहीं होंगे; वे गलत थे।

मुझे लॉ सोसायटी की कार्रवाइयों के प्रति मेरे विरोध पर आधिकारिक प्रतिक्रियाओं के बारे में विस्तार से पढ़ने का अवसर मिला क्योंकि हमें प्रतिदिन समाचार पत्र ठीक उसी तरह प्राप्त हो रहा था जैसे वह हमारे दरवाजे पर पहुंचाया जाता हो। वास्तव में, ऐसा ही था।
रात में हमारी निगरानी करने वाला वार्डर एक शांत, बुजुर्ग यहोवा का साक्षी था, जिससे मैक महाराज की दोस्ती हो गई थी। एक रात, वह मैक की कोठरी में आया और उससे कहा कि वह एक अखबार प्रतियोगिता में भाग लेना चाहता है जिसके लिए एक निबंध लिखना है। उसने पूछा, क्या मैक निबंध लिखने में उसकी मदद करेगा? बुजुर्ग वार्डर ने इशारा किया कि अगर मैक उसकी मदद करेगा तो उसे इनाम मिलेगा। मैक मान गया और उसने निबंध लिख दिया। दो हफ्ते बाद, बुजुर्ग मैक के पास बहुत उत्साहित होकर आया। वह अब प्रतियोगिता में फाइनलिस्ट था; क्या मैक उसके लिए एक और निबंध लिखेगा? वार्डर ने मैक को बदले में पका हुआ चिकन

देने का वादा किया। मैक ने बुजुर्ग वार्डर से कहा कि वह इस बारे में सोचेगा।
अगले दिन, मैक वाल्टर और मेरे पास आया और उसने सारी बात समझाई। वाल्टर ने मैक को खाना स्वीकार करने के लिए प्रोत्साहित किया, लेकिन मुझे उसकी अनिच्छा अच्छी लगी, क्योंकि ऐसा करने से ऐसा लगता कि उसे विशेष सुविधा मिल रही है। उस रात, उसने वार्डर से कहा कि वह सिगरेट के एक पैकेट के बदले निबंध लिख देगा। बूढ़े वार्डर ने सहमति जताई और अगली शाम मैक को सिगरेट का एक नया पैकेट दे दिया।
अगले दिन, मैक ने हमें बताया कि अब उसे बूढ़े वार्डर पर अपना दबदबा कायम करने का पूरा मौका मिल गया है। कैसे? हमने पूछा। मैक ने कहा, "क्योंकि सिगरेट के पैकेट पर उसके उंगलियों के निशान हैं, और मैं उसे ब्लैकमेल कर सकता हूँ।" वाल्टर ने कहा कि यह अनैतिक है। मैंने मैक की आलोचना नहीं की, बल्कि पूछा कि वह उसे किसलिए ब्लैकमेल करेगा। मैक ने अपनी भौंहें उठाईं: "अखबारों से," उसने कहा। वाल्टर और मैंने एक-दूसरे को देखा। मुझे लगता है कि रॉबेन द्वीप पर वाल्टर ही एकमात्र ऐसा व्यक्ति था जिसे अखबार उतने ही पसंद थे जितने मुझे। मैक ने अपनी योजना के बारे में संचार समिति से पहले ही चर्चा कर ली थी, और हालाँकि हम दोनों को मैक की तकनीक पर संदेह था, हमने उसे रोका नहीं।
उस रात मैक ने वार्डर से कहा कि सिगरेट के पैकेट पर उसके उंगलियों के निशान हैं और अगर बूढ़े ने सहयोग नहीं किया तो वह उसे कमांडिंग ऑफिसर के सामने बेनकाब कर देगा। नौकरी से निकाले जाने और पेंशन खोने के डर से वार्डर मैक की हर बात मानने को तैयार हो गया। अगले छह महीनों तक, जब तक वार्डर का तबादला नहीं हो गया, बूढ़ा उस दिन का अखबार चुपके से मैक को देता रहा। मैक फिर खबरों का सारांश बनाकर उसे एक छोटे से कागज पर छाप देता था, जिसे हम सब में बाँट दिया जाता था। बेचारा वार्डर इस प्रतियोगिता में भी नहीं जीता।

यह कहना मुश्किल है कि हम खदान में ज़्यादा क्या करते थे: चूना निकालते थे या बातें करते थे। 1966 तक, वार्डरों ने एक उदार रवैया अपना लिया था: जब तक हम काम करते थे, हम जितनी चाहें उतनी बातें कर सकते थे। हम छोटे-छोटे

❖

❖

❖

कुछ अभी भी वहाँ रहते हैं। कुछ लोगों ने दावा किया कि उन्होंने अफ्रीका के जंगलों में इस सबसे शक्तिशाली और सुंदर बिल्ली को अपनी आँखों से देखा है। मैंने तर्क दिया कि भले ही समकालीन अफ्रीका में बाघ नहीं पाए जाते, लेकिन बाघ के लिए ज़ोसा भाषा में एक शब्द है, जो तेंदुए के शब्द से अलग है, और यदि यह शब्द हमारी भाषा में मौजूद है, तो यह प्राणी कभी अफ्रीका में अवश्य ही रहा होगा। अन्यथा, इसका कोई नाम क्यों होता? यह बहस चलती रही, और मुझे याद है कि मैक ने जवाब दिया कि सैकड़ों साल पहले, हवाई जहाज के आविष्कार से बहुत पहले, हवा में उड़ने वाले किसी यंत्र के लिए हिंदी में एक शब्द था, लेकिन इसका मतलब यह नहीं है कि प्राचीन भारत में हवाई जहाज मौजूद थे।

68

हम खदान में हम सबकी देखरेख करने वाले सहनशील और मृदुभाषी वार्डर को "ज़िथुलेले" कहते थे, जिसका अर्थ था शांत स्वभाव का। काम करते समय वह हमसे काफी दूर खड़ा रहता था और जब तक हम अनुशासन में रहते थे, उसे इस बात की कोई परवाह नहीं होती थी कि हम क्या कर रहे हैं। जब वह हमें फावड़े पर झुककर बातें करते हुए पाता था, तब भी वह हमें कभी डांटता नहीं था।
हमने भी वैसा ही किया। एक दिन, 1966 में, वह हमारे पास आए और बोले, “महोदय, बारिश से सड़कों पर बनी लाइनें मिट गई हैं, हमें आज बीस किलो चूने की ज़रूरत है। क्या आप मदद कर सकते हैं?” हालाँकि उस समय हमारे पास काम बहुत कम था, फिर भी उन्होंने इंसानियत के नाते हमसे संपर्क किया था, और हम उनकी मदद करने के लिए तैयार हो गए।
उस वसंत ऋतु में, हमने अधिकारियों की ओर से कुछ नरमी महसूस की थी, द्वीप पर व्याप्त कठोर अनुशासन में कुछ ढील दी गई थी। कैदियों और जेल प्रहरियों के बीच तनाव कुछ हद तक कम हो गया था।
लेकिन यह शांति क्षणिक साबित हुई और सितंबर की एक सुबह अचानक समाप्त हो गई। हमने अभी-अभी खदान में अपने औजार और फावड़े रखे ही थे कि दोपहर के भोजन के लिए शेड की ओर चल पड़े। तभी एक कैदी ने खाने का एक ड्रम हमारी ओर लाते हुए फुसफुसाया, "वेरवोर्ड मर गया है।" बस इतना ही। खबर हम सब में तेज़ी से

फैल गई। हम अविश्वास से एक-दूसरे को देखने लगे और वार्डरों की ओर देखा, जिन्हें मानो पता ही नहीं था कि कोई महत्वपूर्ण घटना घटी है।

हमें पता नहीं था कि प्रधानमंत्री की मृत्यु कैसे हुई। बाद में, हमें उस गुमनाम श्वेत संसदीय संदेशवाहक के बारे में पता चला जिसने वेरवोर्ड की चाकू मारकर हत्या कर दी थी, और हम उसके इरादों को लेकर असमंजस में पड़ गए। हालाँकि वेरवोर्ड अफ़्रीकियों को जानवरों से भी बदतर समझते थे, फिर भी उनकी मृत्यु से हमें कोई खुशी नहीं मिली। राजनीतिक हत्या ऐसी चीज नहीं है जिसका मैंने या एएनसी ने कभी समर्थन किया हो। यह प्रतिद्वंद्वी से निपटने का एक आदिम तरीका है।
वेरवोर्ड ने भव्य रंगभेद के प्रमुख सिद्धांतकार और कुशल निर्माता के रूप में अपनी भूमिका सिद्ध की थी। उन्होंने बंटुस्तानों और बंटू शिक्षा की स्थापना का समर्थन किया था। अपनी मृत्यु से कुछ समय पहले, उन्होंने 1966 के आम चुनाव में राष्ट्रवादियों का नेतृत्व किया था, जिसमें रंगभेद समर्थक पार्टी ने अपना बहुमत बढ़ाते हुए 126 सीटें जीती थीं, जबकि यूनाइटेड पार्टी को केवल 39 सीटें और प्रोग्रेसिव पार्टी को एकमात्र सीट मिली थी।
जैसा कि द्वीप पर अक्सर होता था, हमें अपने पहरेदारों से पहले ही महत्वपूर्ण राजनीतिक खबरें पता चल गई थीं। लेकिन अगले दिन तक यह स्पष्ट हो गया कि पहरेदारों को भी पता था, क्योंकि उन्होंने अपना गुस्सा हम पर निकाला। महीनों से शांत हो रहा तनाव अचानक चरम पर पहुँच गया। अधिकारियों ने राजनीतिक कैदियों के खिलाफ कार्रवाई शुरू कर दी, मानो हमने ही वह चाकू पकड़ा हो जिससे वेरवोर्ड को मारा गया था।
अधिकारियों को हमेशा से यह लगता था कि हम गुप्त रूप से बाहरी ताकतों से जुड़े हुए हैं। नामीबिया में दक्षिण अफ़्रीकी पुलिस बलों के खिलाफ दक्षिण-पश्चिम अफ़्रीकी जन संगठन (SWAPO) - जो ANC का सहयोगी संगठन था - द्वारा किए गए सफल गुरिल्ला हमलों की श्रृंखला ने भी उन्हें चिंतित कर दिया था। मुझे लगता है कि हमें इस बात से खुश होना चाहिए था कि सरकार को लगता था कि हमारी नवजात सैन्य क्षमता उनके राष्ट्राध्यक्ष को

सफलतापूर्वक हटाने के लिए पर्याप्त रूप से उन्नत है। लेकिन उनके संदेह केवल संकीर्ण सोच वाले, अदूरदर्शी लोगों की असुरक्षाओं को दर्शाते थे, जो अपनी समस्याओं के लिए अपनी गलत नीतियों को नहीं, बल्कि ANC नामक एक विरोधी को दोषी ठहराते थे।
हमारे खिलाफ दी गई सजा को कभी आधिकारिक नीति के रूप में घोषित नहीं किया गया, लेकिन यह द्वीप पर हमारे आगमन के समय व्याप्त कठोर वातावरण का पुनरुत्पादन था। शांत स्वभाव वाले व्यक्ति की जगह एक क्रूर और निरंकुश व्यक्ति को नियुक्त किया गया था। उसका नाम वैन रेन्सबर्ग था और हत्या के ठीक चौबीस घंटे के भीतर उसे द्वीप पर लाया गया था। उसकी बदनामी पहले से ही फैली हुई थी, क्योंकि कैदियों के बीच उसका नाम क्रूरता का पर्याय बन चुका था।
वैन रेन्सबर्ग एक बड़ा, भद्दा और क्रूर आदमी था जो बोलता नहीं था, बल्कि चिल्लाता था। नौकरी के पहले ही दिन हमने देखा कि उसकी कलाई पर एक छोटा सा स्वास्तिक का टैटू बना हुआ था। लेकिन उसे अपनी क्रूरता साबित करने के लिए इस घृणित चिन्ह की ज़रूरत नहीं थी। उसका काम था हमारी ज़िंदगी को जितना हो सके उतना कष्टदायी बनाना, और वह इस लक्ष्य को बड़े उत्साह से पूरा करता था।

अगले कुछ महीनों तक, वैन रेन्सबर्ग हर दिन हममें से किसी एक पर अवज्ञा या बहानेबाजी का आरोप लगाता था। हर सुबह, वह और अन्य वार्डर इस बात पर चर्चा करते थे कि उस दोपहर किस पर आरोप लगाया जाएगा। यह चुनिंदा डराने-धमकाने की नीति थी, और यह निर्णय इस बात की परवाह किए बिना लिया जाता था कि किस पर आरोप लगाया जाएगा, चाहे उस कैदी ने उस दिन कितनी मेहनत की हो। जब हम अपनी कोठरियों में वापस जा रहे होते थे, तो वैन रेन्सबर्ग एक सूची पढ़कर सुनाता था, "मंडेला [या सिसुलु या कथराडा], मैं तुम्हें तुरंत जेल प्रमुख के सामने पेश करना चाहता हूँ।"
द्वीप की प्रशासनिक अदालत ने ज़रूरत से ज़्यादा काम करना शुरू कर दिया। इसके जवाब में, हमने अपनी एक कानूनी समिति बनाई जिसमें मैं, फिकिले बाम और मैक महाराज शामिल थे। मैक ने कानून की पढ़ाई की थी और अधिकारियों को बचाव की मुद्रा में लाने में माहिर था। फिक्स, जो कानून की डिग्री हासिल करने की

कोशिश कर रहा था, एक होशियार और साधन संपन्न व्यक्ति था और हमारे विभाग में कैदियों की समिति का प्रमुख बन गया था। हमारी कानूनी समिति का काम द्वीप की प्रशासनिक अदालत में अपने साथियों को व्यवहार संबंधी सलाह देना था। वैन रेन्सबर्ग कोई चालाक आदमी नहीं था, और भले ही वह खदान में हम पर रौब जमाता, हम अदालत में उसे मात दे सकते थे। हमारी रणनीति उससे मैदान में बहस करने की नहीं थी, बल्कि अदालत में आरोपों का मुकाबला करने की थी, जहाँ हमें थोड़े अधिक समझदार अधिकारियों के सामने अपना पक्ष रखने का मौका मिलता। प्रशासनिक अदालत में, पीठासीन मजिस्ट्रेट द्वारा आरोप पढ़ा जाता था। वह कह सकता था, "खदान में बहानेबाजी कर रहे हो," जिस पर वैन रेन्सबर्ग आत्मसंतुष्ट दिखता था। आरोप पूरा पढ़े जाने के बाद, मैं हमेशा अपने साथियों को एक ही काम करने की सलाह देता था: अदालत से "और अधिक जानकारी" माँगना। यह एक प्रतिवादी का अधिकार था, और हालाँकि यह अनुरोध नियमित रूप से किया जाता था, वैन रेन्सबर्ग लगभग हमेशा ही असमंजस में पड़ जाता था। तब अदालत को स्थगित करना पड़ता था, जबकि वैन रेन्सबर्ग "और अधिक जानकारी" जुटाने के लिए बाहर जाता था।

वैन रेन्सबर्ग हर तरह से प्रतिशोधी स्वभाव का था। जब खदान में हमारा दोपहर का भोजन आता और हम खाने बैठते—हमारे पास अब एक साधारण लकड़ी की मेज थी—तो वैन रेन्सबर्ग हमेशा उसी क्षण हमारे खाने के पास पेशाब कर देता था। शायद हमें शुक्रगुजार होना चाहिए था कि उसने सीधे हमारे खाने पर पेशाब नहीं किया, लेकिन फिर भी हमने इस प्रथा के खिलाफ विरोध दर्ज कराया।

कैदियों के पास वार्डरों से बदला लेने के कुछ ही तरीके होते हैं, जिनमें से एक है मज़ाक। वैन रेन्सबर्ग हमारे कई चुटकुलों का निशाना बन गया। हम आपस में उसे "सूटकेस" कहते थे। वार्डरों के लंच बॉक्स को "सूटकेस" कहा जाता था और आम तौर पर एक वार्डर किसी कैदी को, आमतौर पर अपने पसंदीदा कैदी को, अपना "सूटकेस" उठाने के लिए कहता था और फिर उसे आधा सैंडविच इनाम के तौर पर देता था। लेकिन हम हमेशा वैन रेन्सबर्ग का "सूटकेस" उठाने से मना कर देते थे, इसीलिए उसका यह उपनाम पड़ गया। वार्डर के लिए अपना लंच बॉक्स खुद उठाना अपमानजनक होता था।

एक दिन, विल्टन म्कवेई ने अनजाने में वैन रेन्सबर्ग के सामने "सूटकेस" का ज़िक्र कर दिया। वैन रेन्सबर्ग ने गरजते हुए पूछा, "सूटकेस कौन है?" विल्टन एक पल के लिए रुका और फिर झट से बोला, "तुम हो!"
“तुम मुझे सूटकेस क्यों कहते हो?” वैन रेन्सबर्ग ने पूछा। विल्टन थोड़ी देर रुका। “अरे यार,” वैन रेन्सबर्ग ने कहा। “क्योंकि तुम अपना ‘सूटकेस’ खुद ढोते हो,” विल्टन ने हिचकिचाते हुए जवाब दिया। “आम कैदी अपने वार्डरों के ‘सूटकेस’ ढोते हैं, लेकिन हम तुम्हारा नहीं ढोएंगे – इसलिए हम तुम्हें सूटकेस कहते हैं।”
वैन रेन्सबर्ग ने एक पल के लिए इस पर विचार किया, और गुस्सा होने के बजाय, घोषणा की, "मेरा नाम सूटकेस नहीं, डिक नेक है।" एक पल के लिए सन्नाटा छा गया, और फिर हम सब ज़ोर से हंस पड़े। अफ़्रीकान्स में, डिक नेक का शाब्दिक अर्थ है "मोटी गर्दन"; यह किसी जिद्दी और अड़ियल व्यक्ति को दर्शाता है। मुझे लगता है कि सूटकेस इतना मोटा था कि उसे पता ही नहीं चला कि उसका अपमान हुआ है।

एक दिन खदान में, हमने इस बात पर फिर से चर्चा शुरू की कि क्या बाघ अफ्रीका का मूल निवासी है या नहीं। वैन रेन्सबर्ग के कार्यकाल के दौरान हम पहले की तरह खुलकर बात नहीं कर पाते थे, लेकिन फिर भी काम करते समय हम बात कर लेते थे।
जो लोग यह तर्क दे रहे थे कि बाघ अफ्रीका का मूल निवासी नहीं है, उनके प्रमुख समर्थक एंड्रयू मासोंडो थे, जो केप से एएनसी के नेता थे और फोर्ट हरे में लेक्चरर भी रह चुके थे। मासोंडो काफी उग्र स्वभाव के थे और उनका यह दावा था कि अफ्रीका में कभी कोई बाघ नहीं पाया गया। बहस ज़ोरों पर चल रही थी और बहस के दौरान मज़दूरों ने अपने फावड़े और कुदाल नीचे रख दिए थे। इससे वार्डरों का ध्यान हमारी ओर गया और उन्होंने हमें काम पर वापस जाने के लिए चिल्लाया। लेकिन हम बहस में इतने मशगूल थे कि हमने वार्डरों की बात अनसुनी कर दी। कुछ निचले रैंक के वार्डरों ने हमें काम पर वापस जाने का आदेश दिया, लेकिन हमने उनकी बात नहीं मानी। अंत में, सूटकेस हमारे पास आया और अंग्रेज़ी में, जिस भाषा में वह माहिर नहीं था, हम पर चिल्लाया: "तुम बहुत ज़्यादा बोलते हो, लेकिन काम बहुत कम करते हो!"

अब वे लोग हँसी से लोटपोट हो रहे थे, इसलिए उन्होंने अपने औजार नहीं उठाए।
सूटकेस की व्याकरण संबंधी गलती सबको बेहद हास्यास्पद लगी। लेकिन सूटकेस को ज़रा भी हंसी नहीं आई। उसने तुरंत कमान अधिकारी मेजर केलरमैन को बुलवाया।
कुछ मिनट बाद केलरमैन मौके पर पहुंचे और हमें पहले जैसी ही हालत में पाया। केलरमैन द्वीप पर अपेक्षाकृत नए थे और उन्होंने सख्ती से कार्रवाई करने का फैसला किया। तभी एक वार्डर ने केलरमैन को बताया कि एंड्रयू मासोंडो और मैं काम पर नहीं आए थे, और हम पर बहानेबाजी और अनुशासनहीनता का आरोप लगाया जाएगा। केलरमैन के आदेश पर हमें हथकड़ी पहनाकर एकांतवास में ले जाया गया।

उस समय से, सूटकेस मुझसे विशेष द्वेष रखने लगा। एक दिन, जब वह खदान में हमारी देखरेख कर रहा था, मैं फिकिले बाम के बगल में काम कर रहा था। हम खदान के दूसरी तरफ अकेले थे। हम लगन से काम कर रहे थे, लेकिन चूंकि हम दोनों उस समय कानून की पढ़ाई कर रहे थे, इसलिए हम पिछली रात पढ़ी हुई बातों पर चर्चा कर रहे थे। दिन के अंत में, वैन रेन्सबर्ग हमारे सामने खड़ा हुआ और बोला, "फिकिले बाम और नेल्सन मंडेला, मैं आप दोनों को जेल प्रमुख के सामने देखना चाहता हूँ।"
हमें जेल प्रमुख लेफ्टिनेंट के सामने पेश किया गया, और वैन रेन्सबर्ग ने घोषणा की, “इन लोगों ने पूरे दिन काम नहीं किया। मैं इन पर आदेशों का उल्लंघन करने का आरोप लगा रहा हूँ।” लेफ्टिनेंट ने पूछा कि क्या हमें कुछ कहना है। मैंने जवाब दिया, “लेफ्टिनेंट, हम इस आरोप का खंडन करते हैं। हम काम कर रहे थे और वास्तव में हमारे पास इस बात के सबूत हैं कि हम काम कर रहे थे, और यह हमारे बचाव के लिए आवश्यक है।” लेफ्टिनेंट ने इस पर उपहास किया। उन्होंने कहा, “तुम सभी लोग एक ही क्षेत्र में काम करते हो। सबूत कैसे संभव है?” मैंने समझाया कि फिक्स और मैं बाकी लोगों से अलग काम कर रहे थे और हम यह दिखा सकते हैं कि हमने कितना काम किया था। सूटकेस ने भोलेपन से पुष्टि की कि हम अकेले काम कर रहे थे, और लेफ्टिनेंट ने जांच करने की सहमति दी। हम वापस खदान की ओर चल दिए।

वहाँ पहुँचकर, फिक्स और मैं उस जगह गए जहाँ हम काम कर रहे थे। मैंने पत्थरों और चूने के उस बड़े ढेर की ओर इशारा करते हुए कहा, “देखो, यही है जो हमने आज किया है।” सूटकेस ने तो हमारे काम को देखने की ज़हमत भी नहीं उठाई थी और उसकी मात्रा देखकर वह दंग रह गया। उसने लेफ्टिनेंट से कहा, “नहीं, यह तो एक हफ्ते की मेहनत का नतीजा है।” लेफ्टिनेंट को शक हुआ। फिर उसने सूटकेस से कहा, “ठीक है, तो मुझे वह छोटा ढेर दिखाओ जो मंडेला और बाम ने आज इकट्ठा किया है।” सूटकेस के पास कोई जवाब नहीं था, और लेफ्टिनेंट ने कुछ ऐसा किया जो मैंने शायद ही कभी किसी वरिष्ठ अधिकारी को करते देखा हो: उसने कैदियों के सामने अपने अधीनस्थ को फटकारा। उसने कहा, “तुम झूठ बोल रहे हो,” और उसने तुरंत आरोप खारिज कर दिए।

सन् 1967 की शुरुआत में एक सुबह, सूटकेस के कार्यकाल के दौरान, हम खदान की ओर जाने की तैयारी कर रहे थे, तभी सूटकेस ने हमें बताया कि मेजर केलरमैन का एक आदेश आया है जिसमें हमें बात करने से मना किया गया है। न केवल हमारी सैर के दौरान बातचीत प्रतिबंधित थी, बल्कि अब से खदान में भी बातचीत की अनुमति नहीं होगी। "अब से, चुप रहो!" उसने चिल्लाकर कहा।
इस आदेश से गहरा असंतोष और आक्रोश फैल गया। बातचीत और मुद्दों पर चर्चा करना ही खदान में काम को सहनीय बनाने वाली एकमात्र चीज़ थी। बेशक, खदान जाते समय हम इस पर चर्चा नहीं कर सकते थे क्योंकि हमें बात न करने का आदेश दिया गया था, लेकिन दोपहर के भोजन के अवकाश के दौरान एएनसी नेतृत्व और अन्य राजनीतिक समूहों के प्रमुखों ने गुप्त रूप से एक योजना पर विचार-विमर्श किया।
जब हम चुपके से अपनी योजना बना रहे थे, तभी मेजर केलरमैन स्वयं प्रकट हुए और हमारे लंच शेड में आ गए। यह बहुत ही असामान्य था; हमारे छोटे से शेड में कभी भी इतने उच्च पदस्थ अतिथि नहीं आए थे। शर्मिंदगी से खांसते हुए उन्होंने घोषणा की कि उनका आदेश गलती से दिया गया था और हम खदान में जाकर फिर से बातचीत शुरू कर सकते हैं, बस शर्त यह है कि हम चुपचाप बात करें। फिर उन्होंने हमें अपनी बात जारी रखने को कहा और मुड़कर चले गए। हमें आदेश रद्द होने की खुशी थी, लेकिन इस बात को लेकर संदेह भी था कि ऐसा क्यों हुआ।

दिन के बाकी समय में हमें ज्यादा मेहनत नहीं करनी पड़ी। सूटकेस ने दोस्ताना व्यवहार करने की पूरी कोशिश की और सद्भावना दिखाते हुए कहा कि उसने हमारे खिलाफ लंबित सभी आरोप वापस लेने का फैसला किया है।
उस दोपहर मुझे पता चला कि मेरी कोठरी नंबर 4 से, जो गलियारे के प्रवेश द्वार के पास थी, बदलकर नंबर 18 कर दी गई थी, जो पीछे की ओर थी। मेरा सारा सामान नई कोठरी में डाल दिया गया था। हमेशा की तरह, इसका कोई स्पष्टीकरण नहीं दिया गया।
हमें लगा कि कोई मिलने आने वाला है और मुझे इसलिए दूसरी जगह बिठाया गया था क्योंकि अधिकारी नहीं चाहते थे कि आने वाले कैदी से बात करने वाला मैं पहला कैदी बनूँ। अगर हर कैदी बारी-बारी से अपनी शिकायतें बताता, तो अधिकारी किसी आगंतुक के कोठरी नंबर 18 तक पहुँचने से पहले ही "समय समाप्त!" चिल्ला सकते थे। हमने तय किया कि एकता बनाए रखने के लिए, गलियारे में मौजूद हर व्यक्ति आने वाले हर व्यक्ति को बताएगा कि हालाँकि सबकी अपनी-अपनी शिकायतें हैं, लेकिन कोठरी नंबर 18 का कैदी सबकी ओर से बोल रहा है।
अगली सुबह नाश्ते के बाद, सूटकेस ने हमें बताया कि हम खदान नहीं जा रहे हैं। तभी मेजर केलरमैन ने आकर कहा कि श्रीमती हेलेन सुज़मैन, जो संसद में उदारवादी प्रगतिशील पार्टी की इकलौती सदस्य और संसद में राष्ट्रवादियों की एकमात्र सच्ची विरोधी आवाज़ थीं, जल्द ही आने वाली हैं। पंद्रह मिनट से भी कम समय में, श्रीमती सुज़मैन - पाँच फीट दो इंच की - जेल आयुक्त जनरल स्टेन के साथ हमारे गलियारे के दरवाज़े से अंदर आईं। जैसे ही उन्होंने प्रत्येक कैदी से परिचय कराया, उन्होंने उनसे पूछा कि क्या उन्हें कोई शिकायत है। हर आदमी ने एक ही जवाब दिया: "मुझे बहुत सी शिकायतें हैं, लेकिन हमारे प्रवक्ता गलियारे के अंत में बैठे श्री नेल्सन मंडेला हैं।" जनरल स्टेन की हैरानी के बीच, श्रीमती सुज़मैन जल्द ही मेरी कोठरी में पहुँच गईं। उन्होंने मेरा हाथ मजबूती से मिलाया और सौहार्दपूर्वक अपना परिचय दिया।
न्यायाधीशों और मजिस्ट्रेटों के विपरीत, जिन्हें जेलों में स्वतः प्रवेश की अनुमति थी, संसद सदस्यों को जेल जाने के लिए अनुमति लेनी पड़ती थी। श्रीमती सुज़मैन उन गिने-चुने, या शायद एकमात्र, संसद सदस्यों में से एक थीं जिन्होंने राजनीतिक कैदियों की दुर्दशा में रुचि दिखाई। रॉबेन द्वीप

अपने सभी पिछले कार्यों के लिए माफी मांगी। लेकिन उनका पश्चाताप ज़्यादा देर तक नहीं टिका, क्योंकि अगले ही दिन उन्होंने हमें सूचित किया कि वे हमारे खिलाफ सभी आरोप फिर से लगा रहे हैं। बाद में हमें पता चला कि श्रीमती सुज़मैन ने संसद में हमारा मामला उठाया था, और उनके दौरे के कुछ ही हफ्तों के भीतर सूटकेस को द्वीप से स्थानांतरित कर दिया गया।

69

मैंने कभी कल्पना भी नहीं की थी कि यह संघर्ष छोटा या आसान होगा। द्वीप पर शुरुआती कुछ साल संगठन के लिए और हम जैसे कैदियों के लिए भी बेहद मुश्किल भरे थे। रिवोनिया की घटना के बाद, आंदोलन की भूमिगत कार्यप्रणाली का अधिकांश हिस्सा नष्ट हो चुका था। हमारे ढाँचे खोजे गए और उखाड़ फेंके गए; जो लोग पकड़े नहीं गए थे, वे दुश्मन से एक कदम आगे रहने के लिए जी-तोड़ कोशिश कर रहे थे। एएनसी के लगभग सभी वरिष्ठ नेता या तो जेल में थे या निर्वासन में।
रिवोनिया की घटना के बाद के वर्षों में, एएनसी के बाह्य मिशन ने, जो पहले धन जुटाने, कूटनीति और सैन्य प्रशिक्षण कार्यक्रम स्थापित करने के लिए जिम्मेदार था, पूरे संगठन की बागडोर संभाल ली। बाह्य मिशन को न केवल निर्वासित संगठन का निर्माण करना था, बल्कि दक्षिण अफ्रीका के भीतर भूमिगत एएनसी को पुनर्जीवित करने का कहीं अधिक चुनौतीपूर्ण कार्य भी करना था।
राज्य और अधिक शक्तिशाली हो गया था। पुलिस और अधिक ताकतवर हो गई थी, उनके तरीके और अधिक निर्मम हो गए थे, उनकी तकनीकें और अधिक परिष्कृत हो गई थीं। दक्षिण अफ्रीकी रक्षा बल का विस्तार हो रहा था। अर्थव्यवस्था स्थिर थी, श्वेत मतदाता निश्चिंत थे। दक्षिण अफ्रीकी सरकार के पास ग्रेट ब्रिटेन और संयुक्त राज्य अमेरिका में शक्तिशाली सहयोगी थे जो यथास्थिति बनाए रखने से संतुष्ट थे।
लेकिन अन्य जगहों पर साम्राज्यवाद के खिलाफ संघर्ष ज़ोरों पर था। 1960 के दशक के मध्य से अंत तक, पूरे दक्षिणी अफ्रीका में सशस्त्र संघर्ष चल रहे थे। नामीबिया (तत्कालीन दक्षिण-पश्चिम अफ्रीका) में, SWAPO ने कैप्रिवी पट्टी में अपनी पहली घुसपैठ की; मोज़ाम्बिक और अंगोला में, गुरिल्ला आंदोलन बढ़ रहा था और फैल रहा था। ज़िम्बाब्वे (तत्कालीन रोडेशिया) में, श्वेत अल्पसंख्यक शासन के खिलाफ लड़ाई आगे बढ़ रही थी। इयान स्मिथ की श्वेत सरकार को दक्षिण अफ्रीकी रक्षा बल का समर्थन प्राप्त था, और ANC ज़िम्बाब्वे में चल रही लड़ाई को अपने देश में चल रहे संघर्ष का विस्तार

मानती थी। 1967 में, हमें पता चला कि ANC ने जोशुआ नकोमो द्वारा गठित ज़िम्बाब्वे अफ्रीकन पीपुल्स यूनियन (ZAPU) के साथ गठबंधन कर लिया था। उसी वर्ष, तंजानिया और ज़ाम्बिया में प्रशिक्षण ले रहे एमके सैनिकों के एक समूह ने घर लौटने के इरादे से ज़ाम्बेज़ी नदी पार करके रोडेशिया में प्रवेश किया। एमके सैनिकों के इस पहले समूह को लुथुली टुकड़ी का नाम दिया गया और वे सशस्त्र संघर्ष के अग्रदूत थे। अगस्त में, जब लुथुली टुकड़ी, ज़ापु सैनिकों के साथ दक्षिण की ओर बढ़ रही थी, तो रोडेशियाई सेना ने उन्हें देख लिया। अगले कुछ हफ्तों तक भयंकर युद्ध हुए और दोनों पक्षों को नुकसान हुआ। अंततः, रोडेशियाई सेना की भारी संख्या के आगे हमारे सैनिक पराजित हो गए। कुछ सैनिकों को बंदी बना लिया गया, और अन्य बेचुआनालैंड में पीछे हट गए - जो स्वतंत्र बोत्सवाना बन गया था। 1968 की शुरुआत तक, एएनसी की एक और बड़ी टुकड़ी रोडेशिया में प्रवेश कर चुकी थी और उसने न केवल रोडेशियाई सेना बल्कि रोडेशिया में तैनात दक्षिण अफ्रीकी पुलिसकर्मियों से भी लड़ाई लड़ी।
हमें इस बात की जानकारी महीनों बाद अफवाहों के जरिए मिली, लेकिन पूरी कहानी तब तक पता नहीं चली जब तक कि वहां लड़ने वाले कुछ लोग हमारे साथ जेल में बंद नहीं हो गए। हालांकि हमारी सेना विजयी नहीं हुई, फिर भी हमने चुपचाप इस बात का जश्न मनाया कि हमारे एमके कार्यकर्ताओं ने दुश्मन से उनके अपने तरीके से मुकाबला किया था। यह संघर्ष में एक मील का पत्थर था। लुथुली टुकड़ी के कमांडरों में से एक, "जस्टिस" पांजा को बाद में हमारे साथ जेल में बंद कर दिया गया। उन्होंने हमें टुकड़ी के सैन्य प्रशिक्षण, राजनीतिक शिक्षा और युद्धक्षेत्र में उनके शौर्य के बारे में जानकारी दी। एमके के पूर्व कमांडर-इन-चीफ के रूप में, मुझे अपने सैनिकों पर बहुत गर्व था।

* * *

विदेश में एमके के संघर्षों की खबर मिलने से पहले, हमें जुलाई 1967 में घर पर चीफ लुथुली की मृत्यु की सूचना मिली। परिस्थितियाँ विचित्र थीं: उनके खेत के पास के एक इलाके में, जहाँ वे अक्सर टहलते थे, एक ट्रेन ने उन्हें टक्कर मार दी थी। मुझे उनकी विधवा को पत्र लिखने की अनुमति दी गई। लुथुली

की मृत्यु से संगठन में एक गहरा रिक्त स्थान आ गया; चीफ नोबेल पुरस्कार विजेता थे, एक प्रतिष्ठित, अंतरराष्ट्रीय स्तर पर ख्यातिप्राप्त व्यक्ति थे, एक ऐसे व्यक्ति थे जिनका काले और गोरे दोनों ही सम्मान करते थे। इन्हीं कारणों से, उनकी जगह कोई नहीं ले सकता था। फिर भी, एएनसी के कार्यवाहक अध्यक्ष-महानिदेशक ओलिवर टैम्बो में, संगठन को एक ऐसा व्यक्ति मिला जो चीफ की जगह ले सकता था। लुथुली की तरह, वे वाक्पटु थे लेकिन दिखावटी नहीं, आत्मविश्वासी लेकिन विनम्र। वे भी चीफ लुथुली के इस सिद्धांत का प्रतीक थे: "खतरे के साथ अपने साहस को बढ़ने दो।"
हमने सेक्शन बी में मुखिया के लिए एक छोटा सा शोक सभा आयोजित किया और बोलने की इच्छा रखने वाले सभी लोगों को बोलने की अनुमति दी। यह एक शांत और सम्मानजनक सभा थी, जिसमें केवल एक अप्रिय घटना घटी। जब यूनिटी मूवमेंट के नेविल अलेक्जेंडर बोलने के लिए खड़े हुए, तो यह स्पष्ट हो गया कि वे मुखिया की प्रशंसा करने नहीं, बल्कि उन्हें दफ़नाने आए थे। मुखिया के निधन पर औपचारिक शोक व्यक्त किए बिना ही उन्होंने लुथुली पर श्वेत पुरुषों का मोहरा होने का आरोप लगाया, मुख्य रूप से इस आधार पर कि मुखिया ने नोबेल शांति पुरस्कार स्वीकार किया था।
नेविल का भाषण न केवल भ्रामक था, बल्कि द्वीप पर हम जिन संगठनों के बीच सहयोग का माहौल बनाने की कोशिश कर रहे थे, उसके बिल्कुल विपरीत था। द्वीप पर आते ही मैंने संघर्ष में अपने प्रतिद्वंद्वियों के साथ सुलह करने को अपना लक्ष्य बना लिया था। मैंने रॉबेन द्वीप को पीएसी और एएनसी के बीच लंबे समय से चले आ रहे कड़वे मतभेदों को सुलझाने के अवसर के रूप में देखा। अगर हम द्वीप पर इन दोनों संगठनों को एकजुट कर पाते, तो यह पूरे मुक्ति संघर्ष में उन्हें एकजुट करने का एक उदाहरण बन सकता था।
लेकिन शुरुआत से ही पीएसी के साथ संबंध सहयोगात्मक से अधिक प्रतिस्पर्धी रहे थे। पीएसी के कुछ लोग पहले से ही द्वीप पर मौजूद थे और हमारे आगमन को अपने क्षेत्र पर अतिक्रमण मानते थे। हमें अपने कुछ साथियों से पता चला कि पीएसी के सबसे वरिष्ठ कैदियों ने इस बात पर खेद व्यक्त किया था कि हमें फांसी नहीं दी गई।
1962 में, जब मैं पहली बार द्वीप पर आया था, तब पीएसी की संख्या एएनसी से कहीं अधिक थी। 1967 में, स्थिति उलट गई। फिर भी, ऐसा प्रतीत हुआ कि इससे पीएसी का रुख और भी कड़ा हो गया। वे खुलेआम साम्यवाद-विरोधी और भारत-

विरोधी थे। शुरुआती वर्षों में, मेरी ज़ेफ़ मोथोपेंग से बातचीत हुई, जो पीएसी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति में थे। ज़ेफ़ का तर्क था कि पीएसी एएनसी से अधिक उग्रवादी है, और जेल में एएनसी को पीएसी का अनुसरण करना चाहिए। पीएसी का मानना था कि अधिकारियों के साथ बातचीत करना विश्वासघात है, लेकिन इससे उन्हें बातचीत से मिलने वाले लाभों का फायदा उठाने से नहीं रोका। 1967 में, मैंने सेल्बी न्गेंडेन से एकता के मुद्दे पर बातचीत की। जेल के बाहर, न्गेंडेन स्वतंत्रता चार्टर के घोर विरोधी थे, लेकिन जेल में, विशेष रूप से जब उन्हें हमारे सेक्शन में भेजा गया, तो सेल्बी का रवैया नरम पड़ गया। अंततः हमने जनरल सेक्शन में अपने-अपने संगठनों को अलग-अलग पत्र लिखकर एकता के विचार का समर्थन किया। एएनसी ने क्लेरेंस माकवेटू के साथ भी अच्छा काम किया, जो बाद में पीएसी के अध्यक्ष बने। माकवेटू, जो कभी एएनसी यूथ लीग के सदस्य थे, हमारे गुट में थे और एक संतुलित, समझदार व्यक्ति थे। हमने अपने दोनों संगठनों की एकता के बारे में कई सार्थक चर्चाएँ कीं, लेकिन माकवेटू की रिहाई और रॉबेन द्वीप पर पीएसी के नेतृत्व में जॉन पोकेला के उत्तराधिकारी बनने के बाद, बातचीत रुक गई।
पीएसी की असुरक्षा के कारण कभी-कभी हास्यास्पद परिणाम निकलते थे। एक बार प्रिटोरिया से आदेश आया कि मुझे खदान में बाकी सभी कैदियों से अलग रखा जाए। मैं अलग काम करूँगा, अलग खाना खाऊँगा और मेरा अपना गार्ड होगा। हमने देखा कि इस नए नियम से पीएसी में कुछ हलचल मच गई। कुछ दिनों बाद, पीएसी ने फैसला किया कि उनके नेता, ज़ेफ़ मोथोपेंग को भी अलग रखा जाएगा, और उन्होंने अपने खर्चे पर उन्हें भी उतने ही समय तक बाकी सभी से अलग काम करने और खाने के लिए कहा, जितने समय तक मुझे रखा गया था।
पीएसी अक्सर उन बैठकों में भाग लेने से इनकार कर देता था जिनका किसी पार्टी से सीधा संबंध नहीं होता था। जब हमने अपनी शिकायतों पर चर्चा करने के लिए बैठकें बुलाईं और बाद में अखबार से मिली जानकारियों पर चर्चा करने के लिए समाचार सत्र आयोजित किए, तो पीएसी ने इन बैठकों का बहिष्कार किया। मुझे यह बात बेहद परेशान करने वाली लगी। हमें पता चला कि पीएसी अपने ही संगठन में बाहरी बदलावों से अनभिज्ञ था। उस समय, द्वीप पर मौजूद पीएसी सदस्यों ने हमारे इस दावे पर विश्वास करने से इनकार कर दिया कि निर्वासित पीएसी ने श्वेत और भारतीय सदस्यों के लिए अपने दरवाजे खोल दिए हैं। यह एक तरह का धर्म-विरोधी विचार था। फिर भी हमने अखबार में पढ़ा था कि श्वेत

कार्यकर्ता पैट्रिक डंकन पीएसी की कार्यकारी समिति के सदस्य बन गए हैं। पीएसी सदस्यों ने उस समय इसे एएनसी का दुष्प्रचार बताकर खारिज कर दिया था।

* * *

एएनसी ने द्वीप पर अपना एक आंतरिक संगठन बनाया। इसे उच्च कमान या अधिक आधिकारिक रूप से उच्च अंग के नाम से जाना जाता था। इसमें रॉबेन द्वीप पर एएनसी के सबसे वरिष्ठ नेता शामिल थे, वे लोग जो राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के सदस्य रह चुके थे: वाल्टर सिसुलु, गोवन म्बेकी, रेमंड म्हाबा और मैं। मैंने उच्च अंग के प्रमुख के रूप में कार्य किया।
शुरुआत से ही हमने तय किया था कि उच्च निकाय एएनसी की बाहरी नीतियों को प्रभावित करने की कोशिश नहीं करेगा। हमारे पास देश की स्थिति का आकलन करने का कोई विश्वसनीय तरीका नहीं था, और हमने निष्कर्ष निकाला कि जिन मामलों के बारे में हमें जानकारी नहीं थी, उन पर मार्गदर्शन देना न तो उचित होगा और न ही बुद्धिमानी भरा। इसके बजाय, हमने कैदियों की शिकायतों, हड़तालों, डाक, भोजन जैसे मामलों पर निर्णय लिए - जेल जीवन की सभी दैनिक चिंताओं पर। हम जब भी संभव होता, सदस्यों की आम बैठक बुलाते थे, जिसे हम अपने संगठन के स्वास्थ्य के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण मानते थे। लेकिन चूंकि ये बैठकें बेहद खतरनाक और इसलिए अनियमित थीं, उच्च निकाय अक्सर ऐसे निर्णय लेता था जिन्हें बाद में अन्य सभी सदस्यों को सूचित किया जाता था। उच्च निकाय एक सेल प्रणाली भी संचालित करता था, जिसमें प्रत्येक सेल में तीन सदस्य होते थे।
द्वीप पर शुरुआती कुछ वर्षों में, उच्च निकाय हमारे क्षेत्र के सभी राजनीतिक कैदियों के लिए एक प्रतिनिधि समिति के रूप में भी कार्य करता था। 1967 में, हमने बेहतर व्यवहार की मांग करते हुए एक याचिका तैयार की, जिस पर पीएसी, यूनिटी मूवमेंट और एडी डेनियल द्वारा प्रतिनिधित्व की गई लिबरल पार्टी के सदस्यों सहित लगभग सभी ने हस्ताक्षर किए। यह व्यवस्था सभी को स्वीकार्य थी, जब तक कि नेविल अलेक्जेंडर ने शिकायत नहीं की कि उच्च निकाय न तो लोकतांत्रिक है और न ही सही मायने में प्रतिनिधि है, और इसके बजाय कोई अन्य निकाय बनाया जाना चाहिए।
नेविल के मूल सुझाव से अंततः सभी राजनीतिक दलों के सदस्यों से बनी एक कैदी समिति का गठन हुआ। अन्य संगठनों में यह आशंका थी कि एएनसी इस पर हावी होने

का प्रयास करेगी, और समिति के नियम इस प्रकार बनाए गए कि इसकी शक्तियाँ केवल परामर्श तक सीमित रहें और इसके निर्णय बाध्यकारी न हों। फिर भी, समस्याओं के समाधान के लिए एक सामान्य दृष्टिकोण पर सहमत होना कठिन था। हमने सुझाव दिया कि यु ची चान क्लब के सदस्य फिकिले बाम बैठकों की अध्यक्षता करें। बाद में, समिति का नेतृत्व बारी-बारी से होता रहा। अंततः यह समिति उलुंडी के नाम से जानी जाने लगी और सभी राजनीतिक कैदियों के लिए एक अनुशासनात्मक समिति के रूप में कार्य करने लगी।
उच्च निकाय की जातीय संरचना को लेकर कुछ विवाद हुआ: इसके चारों स्थायी सदस्य खोसा समुदाय से थे। यह संयोगवश हुआ था, न कि जानबूझकर; द्वीप पर एएनसी के वरिष्ठ नेतृत्व में, जो राष्ट्रीय कार्यकारी समिति में सेवा देने वाले एकमात्र चार सदस्य थे, सभी खोसा समुदाय से थे। किसी कम वरिष्ठ सदस्य को केवल इसलिए उच्च निकाय में रखना उचित नहीं होता क्योंकि वह खोसा समुदाय से नहीं था। लेकिन उच्च निकाय में खोसा समुदाय के प्रभुत्व ने मुझे चिंतित किया क्योंकि इससे यह गलत धारणा मजबूत होती प्रतीत हुई कि हम एक खोसा संगठन हैं।
मुझे यह आलोचना हमेशा से ही परेशान करने वाली और एएनसी के इतिहास की अज्ञानता और दुर्भावना पर आधारित लगती रही है। मैं इसका खंडन करते हुए कहना चाहूंगा कि एएनसी के अध्यक्ष ज़ुलू, बासोथो, पेडी और त्स्वाना समुदाय के लोग रहे हैं, और कार्यपालिका हमेशा से ही विभिन्न जनजातीय समूहों का मिश्रण रही है। मुझे याद है एक बार धूप वाली दोपहर में मैं अपने आंगन में काम कर रहा था, तभी जनरल सेक्शन के कुछ लोग मेरे ऊपर छत पर काम कर रहे थे। उन्होंने मुझ पर चिल्लाते हुए कहा, “मडाला! [बूढ़े आदमी!], तुम सिर्फ खोसा लोगों से ही क्यों बात करते हो?” इस आरोप से मुझे बहुत दुख हुआ। मैंने ऊपर देखा और कहा, “आप मुझ पर भेदभाव का आरोप कैसे लगा सकते हैं? हम सब एक ही समुदाय हैं।” वे इससे संतुष्ट तो हो गए, लेकिन उनकी सोच मेरे मन में बैठ गई। तब से, जब भी मुझे पता होता कि मैं जनरल सेक्शन के लोगों के सामने से गुजरूंगा, तो मैं कैथी या एडी डेनियल या किसी ऐसे व्यक्ति से बात करने की कोशिश करता जो खोसा न हो।
बाद में हमने निर्णय लिया कि उच्च सदन में एक पाँचवाँ, बारी-बारी से सदस्य होना चाहिए। यह सदस्य आमतौर पर खोसा समुदाय का नहीं होता था; उदाहरण के लिए, कैथी पाँच वर्षों से अधिक समय तक उच्च सदन की पाँचवीं सदस्य रहीं।

लालू चिबा ने भी कुछ समय के लिए इस पद पर कार्य किया, और अंततः आलोचना धीरे- धीरे और गुमनाम रूप से समाप्त हो गई।
मैंने उच्च सदन पर किसी भी तरह से अपना दबदबा नहीं बनाया, और वास्तव में, मेरे कई ऐसे प्रस्ताव खारिज कर दिए गए जिन पर मुझे पूरा भरोसा था। यह स्वाभाविक ही था, लेकिन कभी-कभी मुझे इससे निराशा होती थी। अधिकारियों से संबंधित दो ऐसे मुद्दे थे जिन पर मैं अपने साथियों को कभी भी राजी नहीं कर पाया। जेल नियमों के अनुसार कैदियों को वरिष्ठ अधिकारी की उपस्थिति में खड़ा होना पड़ता था। मैंने वकालत की कि हमें बैठे रहना चाहिए, क्योंकि दुश्मन को पहचानना अपमानजनक था जबकि वह हमें राजनीतिक कैदी के रूप में नहीं पहचानता था। मेरे साथियों का मानना था कि यह एक मामूली बात है और प्रतिरोध के नकारात्मक परिणाम किसी भी लाभ से कहीं अधिक होंगे।
दूसरे प्रस्ताव को भी उच्च निकाय ने इसी आधार पर अस्वीकार कर दिया। वार्डर हमें या तो हमारे उपनामों से या हमारे ईसाई नामों से पुकारते थे। मुझे लगता था कि दोनों ही अपमानजनक थे, और मैंने सोचा कि हमें "श्रीमान" उपाधि के इस्तेमाल पर ज़ोर देना चाहिए। मैंने कई वर्षों तक इसके लिए प्रयास किया, लेकिन सफलता नहीं मिली। बाद में, यह मज़ाक का विषय भी बन गया क्योंकि मेरे सहकर्मी कभी-कभी मुझे "श्रीमान मंडेला" कहकर पुकारते थे।

70

हम जैसे कैदियों के लिए समय मानो ठहर सा गया है, लेकिन बाहर वालों के लिए यह रुका नहीं था। 1968 की वसंत ऋतु में जब मेरी माँ मुझसे मिलने आईं, तो मुझे इस बात का एहसास हुआ। रिवोनिया मुकदमे के अंत के बाद से मैंने उन्हें नहीं देखा था। बदलाव धीरे-धीरे और क्रमिक रूप से होता है, और जब कोई अपने परिवार के बीच रहता है, तो उसे उनमें आए बदलावों का शायद ही कभी पता चलता है। लेकिन जब कोई कई वर्षों तक अपने परिवार से नहीं मिलता, तो बदलाव स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। मेरी माँ अचानक बहुत बूढ़ी लगने लगीं।
वह मेरे बेटे मकागाथो, बेटी मकाज़िवे और बहन मेबल के साथ ट्रांसकेई से इतनी दूर यात्रा करके आई थीं। चूंकि मेरे पास चार मेहमान थे और वे बहुत दूर से आए थे, इसलिए अधिकारियों ने मिलने का समय आधे घंटे से बढ़ाकर पैंतालीस मिनट कर दिया।
मुकदमे से पहले से ही मैंने अपने बेटे और बेटी को नहीं देखा था और इस बीच वे बड़े हो गए थे, मेरे बिना ही पले-बढ़े थे। मैंने उन्हें आश्चर्य और गर्व से देखा। लेकिन भले ही वे बड़े हो गए थे, मुझे डर है कि मैं अब भी उनके साथ लगभग वैसा ही व्यवहार करता था जैसा वे तब करते थे जब मैं जेल गया था। वे शायद बदल गए हों, लेकिन मैं नहीं बदला था।
मेरी माँ का वज़न बहुत कम हो गया था, जिससे मुझे चिंता होने लगी। उनका चेहरा मुरझाया हुआ लग रहा था। केवल मेरी बहन मेबल में कोई बदलाव नहीं दिख रहा था। उन सभी से मिलना और पारिवारिक मामलों पर चर्चा करना बहुत सुखद था, लेकिन मैं अपनी माँ के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित थी।
मैंने मकागाथो और माकी से आगे की पढ़ाई करने की अपनी इच्छा के बारे में बात की और मेबल से ट्रांसकेई में रहने वाले रिश्तेदारों के बारे में पूछा। समय बहुत जल्दी बीत गया। अधिकांश मुलाकातों की तरह, सबसे बड़ा सुख अक्सर उस मुलाकात की यादों में ही होता है, लेकिन इस बार मैं अपनी माँ के बारे में चिंता करना बंद नहीं कर पा रही थी। मुझे डर था कि शायद यह आखिरी बार होगा जब मैं उन्हें देख पाऊँगी।
कई सप्ताह बाद, खदान से लौटने पर, मुझे मुख्यालय जाकर एक टेलीग्राम लेने के लिए कहा गया। यह मकागाथो का संदेश था, जिसमें बताया गया था कि मेरी माँ का

हृदयाघात से निधन हो गया है। मैंने तुरंत कमान अधिकारी से ट्रांसकेई में उनके अंतिम संस्कार में शामिल होने की अनुमति मांगी, जिसे उन्होंने अस्वीकार कर दिया। उन्होंने कहा, “मंडेला, मैं जानता हूँ कि तुम अपने वचन के पक्के हो और भागने की कोशिश नहीं करोगे, लेकिन मुझे तुम्हारे अपने लोगों पर भरोसा नहीं है, और हमें डर है कि वे तुम्हारा अपहरण करने की कोशिश करेंगे।” इससे मेरा दुख और बढ़ गया कि मैं अपनी माँ को दफना नहीं सका, जो कि उनका सबसे बड़ा पुत्र और इकलौता बेटा होने के नाते मेरा कर्तव्य था। अगले कुछ महीनों तक मैंने उसके बारे में बहुत सोचा। उसका जीवन आसान नहीं था। जब मैं वकील के तौर पर काम कर रहा था, तब मैं उसकी मदद कर पाता था, लेकिन जेल जाने के बाद मैं उसकी मदद नहीं कर पाया। मुझे जितनी देखभाल करनी चाहिए थी, उतनी मैंने कभी नहीं की।
माँ की मृत्यु एक व्यक्ति को अपने जीवन पर पुनर्विचार करने और उसका मूल्यांकन करने के लिए प्रेरित करती है। उनकी कठिनाइयों, उनकी गरीबी ने मुझे एक बार फिर यह सोचने पर मजबूर कर दिया कि क्या मैंने सही रास्ता चुना था। यही हमेशा से एक उलझन रही है: क्या मैंने अपने परिवार के कल्याण से पहले जनता के कल्याण को प्राथमिकता देकर सही निर्णय लिया था? लंबे समय तक मेरी माँ संघर्ष के प्रति मेरी प्रतिबद्धता को नहीं समझ पाईं। मेरे परिवार ने न तो संघर्ष में शामिल होने के लिए कहा था और न ही वे इसमें शामिल होना चाहते थे, लेकिन मेरे शामिल होने से उन्हें नुकसान उठाना पड़ा। लेकिन मैं उसी निष्कर्ष पर पहुँचा। दक्षिण अफ्रीका में, किसी पुरुष के लिए जनता की ज़रूरतों को नज़रअंदाज़ करना मुश्किल है, भले ही इसके लिए उसे अपने परिवार की कीमत चुकानी पड़े। मैंने अपना फैसला कर लिया था, और अंततः उसने भी इसका समर्थन किया। लेकिन इससे उसके जीवन को और अधिक आरामदायक न बना पाने का दुख कम नहीं हुआ, और न ही उसे अंतिम विदाई न दे पाने का दर्द।

12 मई, 1969 की सुबह तड़के, सुरक्षा पुलिस ने ऑरलैंडो स्थित हमारे घर में विनी को जगाया और 1967 के आतंकवाद अधिनियम के तहत बिना किसी आरोप के उसे हिरासत में ले लिया। इस अधिनियम ने सरकार को बिना मुकदमे के गिरफ्तारी और हिरासत में लेने की अभूतपूर्व शक्तियां प्रदान की थीं। बाद में मुझे पता

चला कि यह छापा देशव्यापी कार्रवाई का हिस्सा था, जिसमें विनी की बहन समेत दर्जनों अन्य लोगों को हिरासत में लिया गया था। पुलिस विनी को घसीटकर ले गई, जबकि ज़ेनी और ज़िंदज़ी उसके आँचल से लिपटी रहीं। उसे प्रिटोरिया में एकांत कारावास में रखा गया, जहाँ उसे जमानत और मुलाक़ात से वंचित कर दिया गया; अगले कई हफ्तों और महीनों तक उससे लगातार और बेरहमी से पूछताछ की गई। जब विनी पर अंततः छह महीने बाद आरोप लगाए गए, तो मैंने किसी तरह यह निर्देश भेजा कि उनका प्रतिनिधित्व जोएल कार्लसन करें, जो रंगभेद विरोधी आंदोलन के एक अनुभवी वकील थे। विनी और बाईस अन्य लोगों पर एएनसी को पुनर्जीवित करने के प्रयास के लिए साम्यवाद दमन अधिनियम के तहत आरोप लगाए गए। बाद में, रिवोनिया टीम के सदस्य जॉर्ज बिज़ोस और आर्थर चास्कलसन बचाव पक्ष में शामिल हो गए। अक्टूबर में, उनकी गिरफ्तारी के सत्रह महीने बाद, राज्य ने बिना किसी स्पष्टीकरण के अपना मामला वापस ले लिया और विनी को रिहा कर दिया गया। दो सप्ताह के भीतर, उन पर फिर से प्रतिबंध लगा दिया गया और उन्हें घर में नजरबंद कर दिया गया। उन्होंने तुरंत मुझसे मिलने की अनुमति के लिए आवेदन किया, लेकिन उनकी अनुमति ठुकरा दी गई।
जेल में मुझे सबसे ज्यादा तकलीफ इस बात से होती थी कि विनी भी जेल में है। मैंने ऊपर से तो हिम्मत दिखाई, लेकिन अंदर ही अंदर मैं बहुत परेशान और चिंतित था। विनी के एकांत कारावास में रहने के समय ने मेरे मानसिक संतुलन को सबसे ज्यादा झकझोर दिया। हालांकि मैं अक्सर दूसरों को सलाह देता था कि वे उन चीजों की चिंता न करें जिन पर उनका कोई नियंत्रण नहीं है, लेकिन मैं खुद अपनी सलाह नहीं मान पाया। मैंने कई रातें बिना सोए बिताईं। अधिकारी मेरी पत्नी के साथ क्या कर रहे थे? वह कैसे सहन करेगी? हमारी बेटियों की देखभाल कौन करेगा? बिल कौन भरेगा? ऐसे सवालों से लगातार घिरे रहना और उनका जवाब न मिल पाना एक तरह की मानसिक यातना है।
ब्रिगेडियर ऑकैम्प ने मुझे विनी को पत्र भेजने की अनुमति दी और विनी के एक-दो पत्र मुझे पहुँचा दिए। आम तौर पर, मुकदमे की प्रतीक्षा कर रहे कैदियों को पत्र भेजने की अनुमति नहीं होती, लेकिन ऑकैम्प ने मुझ पर एहसान करते हुए इसकी अनुमति दी। मैं आभारी था, लेकिन जानता था कि अधिकारियों ने परोपकार के कारण यह अनुमति नहीं दी थी: वे हमारे पत्र पढ़ रहे थे, इस उम्मीद में कि उन्हें विनी के खिलाफ अपने मामले में सहायक जानकारी मिल जाए।

इस दौरान मुझे एक और गहरा दुख झेलना पड़ा। जुलाई 1969 की एक ठंडी सुबह, विनी के कारावास की खबर मिलने के तीन महीने बाद, मुझे रॉबेन द्वीप स्थित मुख्य कार्यालय में बुलाया गया और एक टेलीग्राम दिया गया। यह मेरे सबसे छोटे बेटे, मकागाथो का था और इसमें सिर्फ एक वाक्य लिखा था। उसने मुझे बताया कि उसका बड़ा भाई, मेरा सबसे बड़ा बेटा, मदीबा थेम्बेकिले, जिसे हम थेम्बी कहते थे, ट्रांसकेई में एक कार दुर्घटना में मारा गया था। थेम्बी उस समय पच्चीस वर्ष का था और दो छोटे बच्चों का पिता था।
ऐसी त्रासदी के बारे में क्या कहा जा सकता है? मैं पहले से ही अपनी पत्नी के गम में डूबा हुआ था, अपनी माँ के निधन का शोक मना रहा था, और फिर ऐसी खबर सुनकर... मेरे पास अपने दुख और हानि को व्यक्त करने के लिए शब्द नहीं हैं। इसने मेरे दिल में एक ऐसा खालीपन छोड़ दिया है जो कभी नहीं भर सकता।
मैं अपनी कोठरी में लौट आया और बिस्तर पर लेट गया। मुझे नहीं पता कि मैं वहाँ कितनी देर रहा, लेकिन मैं रात के खाने के लिए बाहर नहीं निकला। कुछ लोग अंदर झाँक रहे थे, लेकिन मैंने कुछ नहीं कहा। अंत में, वाल्टर मेरे पास आया और मेरे बिस्तर के पास घुटनों के बल बैठ गया, और मैंने उसे टेलीग्राम दे दिया। उसने कुछ नहीं कहा, बस मेरा हाथ थामे रखा। मुझे नहीं पता कि वह कितनी देर मेरे साथ रहा। ऐसे समय में एक आदमी दूसरे से क्या कह सकता है, यह समझ से परे है।
मैंने अधिकारियों से अपने बेटे के अंतिम संस्कार में शामिल होने की अनुमति मांगी। एक पिता होने के नाते, यह मेरा कर्तव्य था कि मेरे बेटे की आत्मा को शांति मिले। मैंने उनसे कहा कि वे मेरे साथ सुरक्षा घेरा भेज सकते हैं, और मैं वचन देता हूं कि मैं वापस आऊंगा। अनुमति नहीं दी गई। मुझे केवल थेम्बी की मां, एवलिन को एक पत्र लिखने की अनुमति दी गई, जिसमें मैंने उन्हें सांत्वना देने और उनके दुख में अपना योगदान बताने की पूरी कोशिश की।
मुझे एक दोपहर की याद आई जब थेम्बी छोटा लड़का था और वह मुझसे मिलने सिरिल्डेन में एक सुरक्षित ठिकाने पर आया था, जिसका इस्तेमाल मैं गुप्त रूप से एएनसी के काम के लिए करता था। अपने भूमिगत राजनीतिक काम और कानूनी मामलों के बीच, मैं उससे कुछ समय से मिल नहीं पाया था। मैंने उसे घर पर अचानक देखा और पाया कि उसने मेरी एक पुरानी जैकेट पहनी हुई थी जो उसके घुटनों तक आती थी। उसे अपने पिता के कपड़े पहनकर कुछ सुकून और गर्व महसूस

[illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible] [illegible] [illegible] [illegible], [illegible], "[illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible] [illegible]"

भाग नौ

सील द्वीप: शुरुआत
आशा करना

71

जेल की स्थिति में सुधार का ग्राफ कभी स्थिर नहीं रहा। प्रगति रुक-रुक कर होती थी और अक्सर असफलताओं के साथ आती थी। कोई उपलब्धि हासिल करने में सालों लग जाते थे और फिर एक ही दिन में उसे रद्द कर दिया जाता था। हम पत्थर को पहाड़ पर धकेलते, वह फिर नीचे लुढ़क जाता। लेकिन हालात सुधरे। हमने कई छोटी-छोटी लड़ाइयाँ जीतीं, जिनसे द्वीप के माहौल में बदलाव आया। हालाँकि हम द्वीप का संचालन नहीं करते थे, लेकिन अधिकारी हमारे बिना इसे चला नहीं सकते थे, और वैन रेन्सबर्ग के जाने के बाद हमारा जीवन अधिक सहनीय हो गया। द्वीप पर अपने पहले तीन वर्षों के भीतर हम सभी को लंबी पतलूनें दी गईं। 1969 तक, हमें हर सप्ताह अलग-अलग वर्दी दिए जाने के बजाय, अपनी-अपनी व्यक्तिगत जेल वर्दी मिलने लगी। ये वर्दी हमें ठीक से फिट आती थीं और हमें इन्हें खुद धोने की अनुमति थी। सप्ताहांत में हमें हर समय आंगन में जाने की अनुमति थी। हालाँकि हमारा भोजन अभी तक समान नहीं था, फिर भी अफ्रीकी कैदियों को कभी-कभी सुबह रोटी मिल जाती थी। हमें अपना भोजन आपस में बाँटने की अनुमति थी, इसलिए अंतर मायने नहीं रखता था। हमें बोर्ड गेम और ताश दिए गए थे, जिन्हें हम अक्सर शनिवार और रविवार को खेलते थे। खदान में हमारी बातचीत में शायद ही कभी कोई बाधा आती थी। यदि कमांडिंग ऑफिसर आ रहे होते, तो ड्यूटी पर तैनात वार्डर हमें अपने औजार उठाने की चेतावनी देने के लिए सीटी बजाते थे। हमने सबसे बुरे वार्डरों को शांत कर दिया था और समझदार वार्डरों से दोस्ती कर ली थी, हालाँकि अधिकारियों को इसका एहसास था और वे हर कुछ महीनों में वार्डरों को बदलते रहते थे।
हम जब चाहें आपस में वर्चुअल रूप से मिल सकते थे। उच्च निकाय की बैठकें, आम सदस्यों की बैठकें और उलुंडी की बैठकें आमतौर पर तब तक बाधित नहीं होती

थीं जब तक कि वे बहुत अधिक ध्यान आकर्षित करने वाली न हों। ऐसा लगता था कि जेल का संचालन कैदियों द्वारा किया जा रहा था, न कि अधिकारियों द्वारा।

कठोर और ईश्वर से डरने वाले अफ़्रीकानर अपने धर्म को गंभीरता से लेते हैं। हमारे साप्ताहिक कार्यक्रम में एकमात्र अटल घटना रविवार सुबह की धार्मिक प्रार्थना सभा थी। यह एक ऐसा अनुष्ठान था जिसे अधिकारी अनिवार्य मानते थे। ऐसा लगता था मानो उन्हें विश्वास हो कि यदि वे हमें रविवार को पूजा- अर्चना का लाभ नहीं देंगे तो उनकी अपनी आत्मा खतरे में पड़ जाएगी।
हर रविवार सुबह, अलग-अलग संप्रदायों के पादरी हमें उपदेश देते थे। कभी एंग्लिकन पादरी, कभी डच रिफॉर्म धर्म के पादरी, तो कभी मेथोडिस्ट पादरी। इन पादरियों की भर्ती जेल सेवा द्वारा की जाती थी, जिसका एकमात्र आदेश था कि वे केवल धार्मिक विषयों पर ही उपदेश दें। सभी प्रार्थना सभाओं में वार्डर मौजूद रहते थे और यदि पादरी धर्म से भटक जाते, तो उन्हें दोबारा आमंत्रित नहीं किया जाता था।
द्वीप पर पहले दो वर्षों के दौरान, हमें रविवार की प्रार्थना सभाओं के लिए भी अपनी कोठरियों से बाहर निकलने की अनुमति नहीं थी। पादरी हमारे गलियारे के शीर्ष पर उपदेश देते थे। तीसरे वर्ष तक, प्रार्थना सभाएँ प्रांगण में होने लगीं, जो हमें ज़्यादा पसंद था। उन वर्षों में, व्यायाम के आधे घंटे के अलावा, रविवार को प्रांगण में जाने का यही एकमात्र समय था। हमारे कुछ ही लोग धार्मिक थे, लेकिन किसी को भी लंबे उपदेशों से कोई आपत्ति नहीं थी; हमें बाहर रहना अच्छा लगता था।
जब प्रार्थना सभाएं बाहर आयोजित होने लगीं, तो हमें उनमें शामिल होने का विकल्प दिया गया। कुछ पुरुष केवल अपने संप्रदाय की प्रार्थना सभाओं में ही शामिल होते थे। हालांकि मैं मेथोडिस्ट हूं, फिर भी मैं हर अलग धार्मिक सभा में शामिल होता था।

हमारे पहले पादरियों में से एक फादर ह्यूजेस नाम के एक एंग्लिकन पादरी थे, जो एक सख्त, हट्टे-कट्टे वेल्शमैन थे और द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान पनडुब्बी कोर में चैपलिन के रूप में सेवा कर चुके थे। जब वे पहली बार आए, तो उन्हें गलियारे में उपदेश देना असहज लगा, क्योंकि उन्हें वह गलियारे में ईश्वर के ध्यान के लिए उपयुक्त नहीं लगा। अपनी पहली यात्रा में, उन्होंने हमें उपदेश देने के बजाय, अपनी सुरीली आवाज़ में विंस्टन चर्चिल के युद्धकालीन रेडियो भाषणों के अंश सुनाए: "हम समुद्र तटों पर लड़ेंगे, हम लैंडिंग ग्राउंड पर लड़ेंगे, हम खेतों और सड़कों पर लड़ेंगे, हम पहाड़ियों पर लड़ेंगे; हम कभी आत्मसमर्पण नहीं करेंगे।"
फादर ह्यूजेस ने जल्द ही आंगन में हमें उपदेश दिया और हमें उनके उपदेश बहुत ही शानदार लगे। वे अपने उपदेशों में बड़ी चतुराई से समाचारों के अंश शामिल करते थे, जिसकी हम सराहना करते थे। उदाहरण के लिए, वे कह सकते थे कि प्राचीन मिस्र के फिरौन की तरह, दक्षिण अफ्रीका के प्रधानमंत्री एक सेना खड़ी कर रहे हैं।
हम हमेशा प्रार्थना सभा के अंत में भजन गाते थे, और मुझे लगता है कि फादर ह्यूजेस अक्सर हमसे मिलने सिर्फ हमारा गायन सुनने के लिए आते थे। वे अपने साथ एक पोर्टेबल ऑर्गन लाते थे और हमारे लिए बजाते थे। वे हमारे गायन की प्रशंसा करते हुए कहते थे कि यह एकमात्र ऐसा गायन है जो उनके मूल वेल्स के गायन के बराबर है।
मेथोडिस्ट पादरी रेवरेंड जोन्स थे, जो एक घबराए हुए और उदास स्वभाव के व्यक्ति थे और कांगो में क्रांति के दौरान वहीं तैनात थे। वहाँ के उनके अनुभव ही उनकी उदासी का कारण प्रतीत होते थे। वे बार-बार सुलह के महत्व पर उपदेश देते थे - यह जताते हुए कि हमें ही गोरों से सुलह करनी होगी।
एक रविवार को, पादरी के एकतरफा उपदेश के दौरान, मैंने देखा कि एडी डेनियल बेचैन हो रहे थे। आखिरकार, एडी का सहनशक्ति क्षीण हो गया। एडी चिल्लाए, "आप गलत लोगों को मेल-मिलाप का उपदेश दे रहे हैं। हम पिछले पचहत्तर वर्षों से मेल-मिलाप की तलाश में हैं।" यह सुनकर पादरी जोन्स को बहुत दुख हुआ और उसके बाद हमने उन्हें फिर कभी नहीं देखा।
रेवरेंड जोन्स इकलौते पादरी नहीं थे जिन्हें एडी ने डरा कर भगा दिया था। हमारे यहाँ ब्रदर सितंबर नाम के एक अश्वेत पादरी भी आए थे। एक रविवार को, हेनी फेरिस नाम के एक कैदी, जो एक कुशल वक्ता थे, ने प्रार्थना का नेतृत्व

करने की पेशकश की। ब्रदर सितंबर उनकी इस भक्ति को देखकर प्रसन्न हुए। हेनी ने उच्च कोटि के शब्दों में बोलना शुरू किया और एक समय उन्होंने सभा में उपस्थित लोगों से आँखें बंद करके प्रार्थना करने को कहा। ब्रदर सितंबर समेत सभी ने उनकी बात मानी। फिर एडी दबे पांव आगे गए, ब्रदर सितंबर का ब्रीफकेस खोला और उसमें से उस दिन का संडे टाइम्स अखबार निकाल लिया। उस समय किसी को कुछ शक नहीं हुआ, लेकिन ब्रदर सितंबर ने उसके बाद फिर कभी अखबार नहीं लाए।

रेवरेंड आंद्रे शेफ़लर अफ़्रीका में डच रिफॉर्म्ड मिशन चर्च के पादरी थे, जो डच रिफॉर्म्ड चर्च की सहयोगी संस्था थी, जिस पर लगभग सभी अफ़्रीकी लोगों का विश्वास था। मिशन चर्च केवल अफ़्रीकी लोगों के लिए ही था। रेवरेंड शेफ़लर एक रूढ़िवादी और कठोर स्वभाव के व्यक्ति थे जो आमतौर पर आम कैदियों को उपदेश देते थे। एक रविवार को, वे हमारे हिस्से में आए और हमने उनसे पूछा कि वे हमें उपदेश क्यों नहीं देते। उन्होंने तिरस्कारपूर्वक कहा, "तुम लोग खुद को स्वतंत्रता सेनानी समझते हो। जब तुम्हें गिरफ़्तार किया गया होगा, तब तुम शराब के नशे में या गांजे के नशे में धुत रहे होगे। स्वतंत्रता सेनानी, धिक्कार है!" लेकिन हमने उन्हें चुनौती दी कि वे आकर हमें उपदेश दें, और अंततः, 1960 के दशक के अंत में, उन्होंने स्वीकार किया। रेवरेंड शेफ़लर एक मामले में अपरंपरागत थे: उन्होंने धर्म के प्रति वैज्ञानिक दृष्टिकोण अपनाया। मुझे यह बहुत आकर्षक लगा। कई लोग धर्म को गलत साबित करने के लिए विज्ञान का सहारा लेते हैं, लेकिन रेवरेंड शेफ़लर ने अपने विश्वासों को पुष्ट करने के लिए विज्ञान का इस्तेमाल किया। मुझे उनका एक प्रवचन याद है जिसमें उन्होंने पूर्व से आए तीन ज्ञानी पुरुषों के बारे में बताया, जिन्होंने एक तारे का पीछा किया और वह तारा उन्हें बेथलहम ले गया। उन्होंने कहा, "यह महज़ अंधविश्वास या मिथक नहीं है," और फिर खगोलविदों के प्रमाणों का हवाला देते हुए बताया कि इतिहास के उस दौर में एक धूमकेतु था जिसने बाइबिल में वर्णित मार्ग का अनुसरण किया था। जैसे-जैसे रेवरेंड शेफ़लर हमसे परिचित होते गए, उनकी सहानुभूति बढ़ती गई। उनका हास्यबोध थोड़ा व्यंग्यात्मक था और वे हम पर कटाक्ष करना पसंद करते थे। वे कहते, “जानते हो, इस देश में श्वेत व्यक्ति का काम अश्वेत व्यक्ति

से कहीं अधिक कठिन है। जब भी कोई समस्या आती है, हमें उसका समाधान ढूंढना पड़ता है। लेकिन जब भी तुम अश्वेतों को कोई समस्या होती है, तुम्हारे पास बहाना होता है। तुम बस कह देते हो, ‘इंगबिलुंगु’।” हम ज़ोर से हंस पड़े, न केवल इसलिए कि उनका उच्चारण अनजाने में हास्यास्पद था, बल्कि इसलिए भी कि हमें यह विचार मज़ेदार लगा। “नगबिलुंगु” ज़ोसा भाषा का एक मुहावरा है जिसका अर्थ है, “यह श्वेतों की गलती है।” उनका कहना था कि हम अपनी सभी परेशानियों के लिए हमेशा श्वेत व्यक्ति को दोष दे सकते हैं। उनका संदेश यह था कि हमें अपने भीतर भी झांकना चाहिए और अपने कार्यों के लिए ज़िम्मेदार बनना चाहिए — एक ऐसा विचार जिससे मैं पूरी तरह सहमत था।

जिस तरह सप्ताह के बाकी दिनों में रविवार का महत्व होता था, उसी तरह साल भर में क्रिसमस का महत्व होता था। यह एकमात्र ऐसा दिन था जब अधिकारी इंसानों के प्रति कुछ सद्भावना दिखाते थे। क्रिसमस के दिन हमें पत्थर की खदान में नहीं जाना पड़ता था, और हमें थोड़ी मात्रा में मिठाई खरीदने की अनुमति थी। हमें पारंपरिक क्रिसमस का भोजन तो नहीं मिलता था, लेकिन रात के खाने में हमें एक अतिरिक्त मग कॉफी दी जाती थी।

अधिकारियों ने हमें संगीत कार्यक्रम आयोजित करने, प्रतियोगिताएं करवाने और नाटक मंचित करने की अनुमति दी। संगीत कार्यक्रम मुख्य आकर्षण था। हमारे गायन मंडली प्रमुख पीएसी के सेल्बी न्गेंडाने थे। पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस में शामिल होने से पहले सेल्बी एएनसी यूथ लीग के सदस्य थे। वे एक स्वाभाविक कलाकार थे, जिनकी आवाज़ सुरीली थी और संगीत की समझ भी उत्कृष्ट थी।
सेल्बी ने गाने चुने, सुरों को व्यवस्थित किया, एकल गायकों का चयन किया और प्रस्तुति का संचालन किया। यह संगीत कार्यक्रम क्रिसमस की सुबह आंगन में हुआ। हम पारंपरिक अंग्रेज़ी क्रिसमस गीतों को अफ्रीकी गीतों के साथ मिलाकर गाते थे, और कुछ विरोध गीत भी शामिल करते थे - अधिकारियों को शायद कोई आपत्ति नहीं थी या वे अंतर जानते ही नहीं थे। वार्डर हमारे श्रोता थे, और उन्होंने हमारे गायन का उतना ही आनंद लिया जितना हमने।

जेल आने से पहले, न्गेंडेन को राजनीति में कुछ हद तक कमज़ोर समझा जाता था। लेकिन जेल में सेल्बी ने अपनी काबिलियत साबित कर दी। जेल में, ऐसे लोगों के साथ रहना अच्छा लगता है जिनका स्वभाव हंसमुख हो, और सेल्बी का स्वभाव ऐसा ही था।
जेल एक ऐसी अग्निपरीक्षा थी जो मनुष्य के चरित्र की परीक्षा लेती थी। कुछ लोग कारावास के दबाव में अपना असली साहस दिखाते थे, जबकि अन्य अपनी असलियत से कहीं कमतर साबित होते थे।

संगीत कार्यक्रमों के अलावा, हम शतरंज और चेकर प्रतियोगिता आयोजित करते थे, और स्क्रैबल और ब्रिज भी खेलते थे। हर साल, मैं चेकर प्रतियोगिता में भाग लेता था, और कुछ वर्षों में, मैं ग्रैंड प्राइज जीतता था, जो आमतौर पर एक कैंडी बार होता था। मेरा खेलने का तरीका धीमा और सोच-समझकर होता था; मेरी रणनीति रूढ़िवादी थी। मैं हर विकल्प के परिणामों पर सावधानीपूर्वक विचार करता था और हर चाल के बीच लंबा समय लेता था। मैं इस तरह की तुलनाओं से बचना चाहता हूँ, लेकिन यह न केवल चेकर में बल्कि राजनीति में भी मेरा पसंदीदा तरीका है।
मेरे अधिकांश प्रतिद्वंद्वी तेज़ी से खेलते थे और अक्सर मेरे खेलने के तरीके से चिढ़ जाते थे। मेरे सबसे नियमित प्रतिद्वंद्वियों में से एक डॉन डेविस थे। गैर-यूरोपीय एकता आंदोलन के सदस्य, डॉन किम्बरली के हीरा खनन क्षेत्र में पले-बढ़े थे और एक दृढ़, निडर और साथ ही बेहद संवेदनशील व्यक्ति थे। डॉन एक उत्कृष्ट शतरंज खिलाड़ी थे, लेकिन उनकी शैली मुझसे बिल्कुल अलग थी। डॉन जब खेलते थे, तो उनके चेहरे से पसीना बहता था। खेलते समय वे तनावग्रस्त और उत्तेजित हो जाते थे और इतनी तेज़ी से चाल चलते थे मानो अंक गति के लिए ही मिलते हों। कई बार डॉन और मैं वार्षिक टूर्नामेंट के फाइनल में पहुँच गए।
डॉन मुझे क़िपु कहकर बुलाता था क्योंकि शतरंज खेलते समय मेरी एक आदत थी। मैं हर संभावना पर विचार करता था, और फिर जब मेरी चाल चलने वाली होती थी, तो मैं ज़ोर से कहता था, "क़िपु!" — जिसका अर्थ है "मैं चलता हूँ!" — और फिर

अपनी चाल चलता था। डॉन को यह बात परेशान करती थी और वह मुझे दोस्ती से ज़्यादा चिढ़कर क़िपु कहता था।
डॉन और मैंने कई टूर्नामेंट खेले, और अगर वो जीत भी जाता, तो कुछ ही मिनटों में वापस आकर मुझे एक और मैच के लिए चुनौती दे देता। डॉन हमेशा शतरंज खेलना चाहता था, और जब तक मैं उसकी इच्छा पूरी नहीं करता, तब तक उसे चैन नहीं मिलता था। देखते-देखते मैं डॉन के साथ शतरंज खेलने में इतना समय बिताने लगा कि मेरी बाकी रुचियां पीछे छूट गईं। एक बार जब मैं अपनी पढ़ाई में एक परीक्षा में फेल हो गया, तो कुछ सहकर्मियों ने मुझसे पूछा कि क्यों, और मैंने सबकी हंसी के बीच जवाब दिया, "डॉन डेविस!"

हमारी शौकिया नाट्य मंडली क्रिसमस पर अपना वार्षिक कार्यक्रम प्रस्तुत करती थी। फोर्ट हरे में जॉन विल्क्स बूथ की भूमिका निभाने के बाद से मेरा अभिनय करियर सुप्त अवस्था में था, लेकिन रॉबेन द्वीप पर इसे एक मामूली पुनरुद्धार मिला। हमारे नाटक ऐसे थे जिन्हें अब न्यूनतम कहा जा सकता है: न कोई मंच, न कोई सजावट, न कोई वेशभूषा। हमारे पास केवल नाटक के शब्द ही होते थे।
मैंने कुछ ही नाटकों में अभिनय किया, लेकिन मेरी एक भूमिका यादगार रही: सोफोक्लीज के नाटक 'एंटीगोन' में थेब्स के राजा क्रेओन की। मैंने जेल में रहते हुए कुछ क्लासिक ग्रीक नाटक पढ़े थे और वे मुझे बेहद प्रेरणादायक लगे। उनसे मैंने यह सीखा कि चरित्र का मापन कठिन परिस्थितियों का सामना करने से होता है और नायक वह होता है जो सबसे कठिन परिस्थितियों में भी नहीं टूटता।
जब एंटिगोन को नाटक के रूप में चुना गया, तो मैंने स्वेच्छा से अपनी सेवाएं दीं और मुझे क्रेओन की भूमिका निभाने के लिए कहा गया, जो एक वृद्ध राजा है और अपने प्रिय नगर-राज्य के सिंहासन के लिए गृहयुद्ध लड़ रहा है। नाटक की शुरुआत में, क्रेओन ईमानदार और देशभक्त है, और उसके शुरुआती भाषणों में बुद्धिमत्ता झलकती है जब वह कहता है कि अनुभव नेतृत्व की नींव है और जनता के प्रति दायित्व किसी व्यक्ति के प्रति वफादारी से अधिक महत्वपूर्ण हैं।

बेशक, आप किसी व्यक्ति को पूरी तरह से नहीं जान सकते।
उसका चरित्र, उसके सिद्धांत, उसकी निर्णय क्षमता,
जब तक वह जनता पर शासन करते हुए अपना असली रंग नहीं दिखा देता, तब तक नहीं। कानून बनाना। अनुभव ही असली परीक्षा है।

लेकिन क्रेओन अपने शत्रुओं के साथ निर्दयता से पेश आता है। उसने फरमान जारी किया है कि एंटीगोन के भाई पॉलीनीस, जिसने नगर के विरुद्ध विद्रोह किया था, के शव को उचित दफ़न का भी हकदार नहीं माना गया। एंटीगोन ने इस आधार पर विद्रोह किया कि राज्य के कानून से भी ऊपर एक कानून है। क्रेओन एंटीगोन की बात नहीं सुनता, और न ही वह अपने अंतर्मन के अलावा किसी और की सुनता है। उसकी यह कठोरता और अंधापन एक नेता को शोभा नहीं देता, क्योंकि एक नेता को न्याय के साथ दया का भाव भी रखना चाहिए। एंटीगोन ही हमारे संघर्ष का प्रतीक थी; वह अपने तरीके से एक स्वतंत्रता सेनानी थी, क्योंकि उसने अन्यायपूर्ण कानून का विरोध किया था।

72

कुछ वार्डर हमसे बातचीत करने लगे। मैं कभी वार्डरों से बातचीत शुरू नहीं करता था, लेकिन अगर वे मुझसे कोई सवाल पूछते, तो मैं जवाब देने की कोशिश करता। किसी को शिक्षित करना तब आसान होता है जब वह सीखना चाहता हो। आमतौर पर, ये सवाल झुंझलाहट भरे लहजे में पूछे जाते थे: "ठीक है, मंडेला, आप असल में क्या चाहते हैं?" या, "देखिए, आपके पास रहने के लिए छत और पर्याप्त भोजन है, आप इतनी परेशानी क्यों खड़ी कर रहे हैं?" तब मैं शांति से वार्डरों को अपनी नीतियों के बारे में समझाता। मैं उनके लिए एएनसी के बारे में गलतफहमियों को दूर करना चाहता था, उनके पूर्वाग्रहों को मिटाना चाहता था। 1969 में एक युवा वार्डर आया जो मुझसे जान-पहचान करने के लिए विशेष रूप से उत्सुक प्रतीत होता था। मैंने अफवाहें सुनी थीं कि बाहर हमारे लोग मेरे भागने की योजना बना रहे हैं और उन्होंने द्वीप पर एक वार्डर को भेजा है जो मेरी सहायता करेगा। धीरे-धीरे, इस व्यक्ति ने मुझे बताया कि वह मेरे भागने की योजना बना रहा है।
उसने टुकड़ों-टुकड़ों में योजना समझाई: एक रात, वह लाइटहाउस पर तैनात सुरक्षाकर्मियों को नशीली दवा देगा ताकि एक नाव किनारे पर उतर सके। वह मुझे हमारे क्षेत्र से बाहर निकलने के लिए एक चाबी देगा ताकि मैं नाव से मिल सकूँ। नाव पर मुझे पानी के भीतर गोता लगाने का उपकरण दिया जाएगा, जिसका उपयोग करके मैं केप टाउन के बंदरगाह में तैरकर पहुँचूँगा। केप टाउन से मुझे एक स्थानीय हवाई अड्डे पर ले जाया जाएगा और वहाँ से मुझे देश से बाहर भेज दिया जाएगा।
मैंने पूरी योजना सुनी और उसे यह नहीं बताया कि यह कितनी बेतुकी और अविश्वसनीय लग रही थी। मैंने वाल्टर से सलाह ली और हम दोनों इस बात पर सहमत हुए कि इस व्यक्ति पर भरोसा नहीं किया जा सकता। मैंने उसे कभी नहीं कहा कि मैं यह काम नहीं करूँगा, लेकिन मैंने योजना को लागू करने के लिए आवश्यक कोई भी कदम नहीं उठाया। उसे यह बात समझ आ गई होगी, क्योंकि उसे जल्द ही द्वीप से स्थानांतरित कर दिया गया।
बाद में पता चला कि मेरा शक सही था, क्योंकि हमें बाद में पता चला कि वह सुरक्षाकर्मी दक्षिण अफ्रीका की गुप्त खुफिया एजेंसी ब्यूरो ऑफ स्टेट

सिक्योरिटी (बीओएसएस) का एजेंट था। साजिश यह थी कि मुझे द्वीप से सफलतापूर्वक निकाल लिया जाए, लेकिन देश छोड़ने की कोशिश करते समय हवाई अड्डे पर सुरक्षा बलों के साथ एक नाटकीय गोलीबारी में मार दिया जाए। पूरी योजना बीओएसएस ने बनाई थी, यहां तक कि एएनसी के भागने की योजना के बारे में मुझ तक पहुंची अफवाहें भी। यह मुझे खत्म करने की उनकी आखिरी कोशिश नहीं थी।

एक कमांडिंग ऑफिसर का कार्यकाल आमतौर पर तीन साल से अधिक नहीं होता था, और 1970 तक हम कई कमांडिंग ऑफिसर बदल चुके थे। उस वर्ष, रॉबेन द्वीप के कमांडिंग ऑफिसर कर्नल वैन आर्डे थे, जो एक मिलनसार और सीधे-सादे व्यक्ति थे और उन्होंने हमें पूरी छूट दी थी। लेकिन वर्ष के अंत में, अधिकारियों ने यह निष्कर्ष निकाला कि वे द्वीप पर एक अलग माहौल चाहते हैं, और कर्नल पीट बैडेनहॉर्स्ट को रॉबेन द्वीप का नया कमांडिंग ऑफिसर नियुक्त किया गया। यह एक अशुभ संकेत था। बैडेनहॉर्स्ट पूरे जेल प्रशासन में सबसे क्रूर और निरंकुश अधिकारियों में से एक माना जाता था। उसकी नियुक्ति से एक ही बात स्पष्ट होती थी: सरकार का मानना था कि द्वीप पर अनुशासन बहुत ढीला है, और हमें नियंत्रण में रखने के लिए एक सख्त कार्रवाई की आवश्यकता है। कहा जाता था कि बैडेनहॉर्स्ट हमें सूटकेस के दिनों की याद दिलाएगा।
जब भी कोई नया कमांडिंग ऑफिसर नियुक्त होता था, मैं उससे मिलने का अनुरोध करता था। मैं ऐसा इसलिए करता था ताकि उसे हमारे उद्देश्य की गंभीरता का एहसास करा सकूँ और उसके चरित्र का भी मूल्यांकन कर सकूँ। मैंने कर्नल बैडेनहॉर्स्ट से भी मिलने का अनुरोध किया, लेकिन उन्होंने मना कर दिया। वह ऐसे पहले कमांडिंग ऑफिसर थे जिन्होंने इस तरह की मुलाकात को ठुकरा दिया। हमने उसे देखने से पहले ही उसके शासन का प्रभाव महसूस करना शुरू कर दिया था। पढ़ाई और अवकाश से संबंधित कई नए नियम तुरंत रद्द कर दिए गए। यह स्पष्ट था कि वह वर्षों से अर्जित हमारे सभी विशेषाधिकारों को वापस लेना चाहता था। हमारे पुराने पहरेदारों को द्वीप से स्थानांतरित कर दिया गया और उनकी जगह बैडेनहॉर्स्ट द्वारा चुने गए पहरेदारों को नियुक्त कर दिया गया। वे युवा, अधिक कठोर व्यक्ति थे जो हर छोटे-मोटे नियम को सख्ती से लागू करते

थे, जिनका काम हमें परेशान करना और हमारा मनोबल तोड़ना था। बैडेनहॉर्स्ट की नियुक्ति के कुछ ही दिनों के भीतर, हमारी कोठरियों पर छापे मारे गए और तलाशी ली गई; किताबें और कागज़ ज़ब्त कर लिए गए; बिना किसी चेतावनी के भोजन बंद कर दिया गया; और खदान की ओर जाते समय लोगों को धक्का-मुक्की की गई। बैडेनहॉर्स्ट ने द्वीप को 1960 के दशक के आरंभिक काल जैसा बनाने का प्रयास किया। हर सवाल का जवाब हमेशा 'नहीं' होता था। अपने वकीलों से मिलने का अनुरोध करने वाले कैदियों को एकांत कारावास में डाल दिया जाता था। शिकायतों को पूरी तरह से नजरअंदाज कर दिया जाता था। बिना किसी स्पष्टीकरण के मुलाकातों को रद्द कर दिया जाता था। भोजन की गुणवत्ता बिगड़ती गई। सेंसरशिप बढ़ गई।
बैडेनहॉर्स्ट के आने के लगभग एक सप्ताह बाद, एक सुबह हम खदान में काम कर रहे थे, तभी बिना किसी परिचय या धूमधाम के, बैडेनहॉर्स्ट और उनका ड्राइवर कमांडर की कार में वहाँ पहुँचे। वे कार से उतरे और दूर से ही हमें देखने लगे। हम अपने नए कमांडर को देखने के लिए रुक गए। बैडेनहॉर्स्ट ने मेरी ओर देखा और कहा, "मंडेला, Jy moet jou vinger uit jou gat trek" (तुम्हें अपनी अक्ल ठिकाने लगानी होगी)। मुझे यह बात बिल्कुल पसंद नहीं आई और बिना सोचे समझे मैं बैडेनहॉर्स्ट की ओर बढ़ने लगा। वे अभी भी दूर थे, और मेरे पास पहुँचने से पहले ही वे अपनी कार में वापस बैठ गए और चले गए।
अपनी कार से बैडेनहॉर्स्ट ने अपने कर्मचारियों को रेडियो पर आदेश दिया, और कुछ ही मिनटों में हमें वापस सेक्शन बी ले जाने के लिए एक ट्रक आ गया। हमें ट्रक में चुप रहने का आदेश दिया गया, और जब हम आंगन में पहुँचे, तो हमें सावधान मुद्रा में खड़े होने का आदेश दिया गया। बैडेनहॉर्स्ट हमारे सामने प्रकट हुए और इधर-उधर टहलने लगे। ऐसा लगता था कि वे बिना किसी अपशब्द या गाली के एक वाक्य भी नहीं बोल सकते। "जो मा से मोएर," उनका पसंदीदा मुहावरा था। "तेरी माँ एक मोएर है" - मोएर एक स्त्री के अंतरंग अंग के लिए इस्तेमाल होने वाला एक अश्लील शब्द है।
अपनी कर्कश आवाज़ में उन्होंने हमें बताया कि खदान में हमारी सुस्ती देखकर उन्हें बहुत घृणा हुई। उन्होंने कहा कि परिणामस्वरूप, वे मनमाने ढंग से हमारी सभी श्रेणियों को एक पायदान नीचे कर रहे हैं। हालाँकि हमें यह वर्गीकरण प्रणाली बिल्कुल पसंद नहीं थी, फिर भी उस समय तक अधिकांश लोग कम से कम 'सी' स्तर तक पहुँच चुके थे, जहाँ उन्हें अध्ययन करने की अनुमति

थी। 'डी' स्तर के कैदियों को अध्ययन करने की अनुमति नहीं थी। अधिकारियों को इस बात का पछतावा था कि उन्होंने हमें अध्ययन की सुविधा दी थी, और बैडेनहॉर्स्ट उस गलती को सुधारने के लिए दृढ़ संकल्पित थे।
बाद में, जब मेरा गुस्सा शांत हुआ, तो मुझे एहसास हुआ कि खदान में बैडेनहॉर्स्ट की मेरे प्रति की गई अभद्र टिप्पणी सोची-समझी साजिश थी। उसे रॉबेन द्वीप में व्यवस्था बहाल करने के लिए लाया गया था, और उसने उस व्यक्ति को निशाना बनाया था जिसे वह अव्यवस्था का मूल कारण मानता था। एक शिक्षक की तरह जो किसी उपद्रवी कक्षा को संभालता है, वह उस छात्र को अनुशासित करना चाहता था जिसे वह मुख्य उपद्रवी मानता था।

73

मई 1971 के अंत में, नामीबिया में स्वतंत्रता के लिए लड़ रही एएनसी की सहयोगी संस्था स्वापो (दक्षिण-पश्चिम अफ्रीकी जन संगठन) के कई सदस्यों को एकांतवास में लाया गया। उनका नेतृत्व स्वापो के संस्थापक और एक प्रखर स्वतंत्रता सेनानी अंदिम्बा तोइवो जा तोइवो कर रहे थे। हमें पता चला कि उन्होंने अपने एकांतवास के विरोध में भूख हड़ताल शुरू कर दी है, और हमने तुरंत उसमें शामिल होने का फैसला किया। इससे बैडेनहॉर्स्ट और अधिकारियों को गुस्सा आया, जिन्होंने इसे अस्वीकार्य अवज्ञा माना।
28 मई की देर रात, हमें चीख-पुकार और हमारी कोठरियों के दरवाजों पर ज़ोरदार दस्तक से नींद से जगाया गया। "उठो! उठो!" वार्डर चिल्ला रहे थे। हमें कपड़े उतारने और फिर आंगन की दीवार के सामने लाइन में खड़े होने का आदेश दिया गया। वार्डर स्पष्ट रूप से नशे में थे और हम पर चिल्ला रहे थे और हमें ताने मार रहे थे। उनका नेतृत्व फौरी नाम का एक क्रूर व्यक्ति कर रहा था, जिसे हम चुपके से गैंगस्टर कहते थे।
वह बेहद ठंडी रात थी, और अगले एक घंटे तक, जब हम नग्न अवस्था में कांपते हुए सावधान मुद्रा में खड़े रहे, हमारी कोठरियों की एक-एक करके तलाशी ली गई। वार्डर पूरे समय दुर्व्यवहार करते रहे। घंटे के अंत में, गोवन को सीने में तेज दर्द हुआ और वह गिर पड़ा। इससे फौरी घबरा गया और उसने हमें अपनी कोठरियों में लौटने का आदेश दिया।
वार्डरों ने हर जगह तलाशी ली, लेकिन कुछ नहीं मिला। लेकिन तलाशी शायद फौरी की क्रूर प्रवृत्ति का बहाना मात्र थी। बाद में हमें पता चला कि फौरी पर आम कैदियों के साथ दुर्व्यवहार करने का आरोप था। अगले दिन हमें पता चला कि वार्डरों ने हमारे पास आने से पहले कुछ आम कैदियों को बेरहमी से पीटा था, और उसके बाद तोइवो जा तोइवो पर हमला किया, जिसने पलटवार करते हुए उसे पीटने वाले वार्डर को गिरा दिया। तोइवो को इसके लिए कड़ी सजा दी गई।
हमने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के बारे में औपचारिक शिकायत दर्ज कराई, लेकिन उस पर ध्यान नहीं दिया गया। यह घटना मुझे आज भी अच्छी तरह याद है, लेकिन यह कोई अनोखी घटना नहीं थी; बैडेनहॉर्स्ट के शासनकाल में इस तरह की घटनाएं अपवाद नहीं बल्कि आम बात थीं।

❖

जनरल स्टेन ने मुझे जजों से मिलवाया और बताया कि मुझे अन्य कैदियों का प्रतिनिधित्व करने के लिए चुना गया है। जजों ने कहा कि वे मुझसे निजी तौर पर बात करेंगे। मैंने जवाब दिया कि मुझे कुछ भी छिपाना नहीं है और वास्तव में मैं जनरल स्टेन और कर्नल की उपस्थिति का स्वागत करता हूँ। मैंने देखा कि वे मेरे इस कथन से चौंक गए, और मैंने कहा कि उन्हें मेरे आरोपों का जवाब देने का अवसर मिलना ही उचित होगा। जज अनिच्छा से मान गए।
मैंने जनरल सेक्शन में हुई हालिया मारपीट की घटना का ब्योरा देते हुए अपनी बात शुरू की। मैंने उन्हें सारी जानकारी दी, मारपीट की क्रूरता और अपराध को छिपाने की कोशिश के बारे में बताया। मैंने बोलना शुरू ही किया था कि मैंने देखा कि बैडेनहॉर्स्ट असहज महसूस कर रहा है। जब मैंने घटना का वर्णन समाप्त किया, तो बैडेनहॉर्स्ट ने कठोर और आक्रामक लहजे में बीच में ही टोकते हुए पूछा, "क्या तुमने सचमुच इस मारपीट को अपनी आँखों से देखा था?" मैंने शांत भाव से उत्तर दिया कि मैंने तो नहीं देखा था, लेकिन मुझे उन लोगों पर भरोसा था जिन्होंने मुझे इसके बारे में बताया था। उसने नाक सिकोड़ी और मेरी ओर उंगली हिलाते हुए कहा, "सावधान रहो, मंडेला। अगर तुम बिना देखे किसी बात का बखान करोगे, तो मुसीबत में पड़ जाओगे। तुम समझ रहे हो ना मेरा मतलब?"
मैंने बैडेनहॉर्स्ट की टिप्पणियों को अनसुना कर दिया और न्यायाधीशों की ओर मुड़कर कहा, “सज्जनों, आप स्वयं देख सकते हैं कि हम किस प्रकार के व्यक्ति से निपट रहे हैं, क्योंकि वह एक कमांडिंग ऑफिसर है। यदि वह यहाँ, आपकी उपस्थिति में, मुझे धमकी दे सकता है, तो आप कल्पना कर सकते हैं कि जब आप यहाँ नहीं होंगे तो वह क्या करेगा।” न्यायाधीश कॉर्बेट ने तब अन्य न्यायाधीशों की ओर मुड़कर कहा, “कैदी बिल्कुल सही कह रहा है।”
मैंने बैठक के शेष समय में हमारे खान-पान, काम और पढ़ाई से जुड़ी शिकायतों को गिनाया। मन ही मन बैडेनहॉर्स्ट ज़रूर गुस्से से उबल रहे होंगे, लेकिन बाहर से वे शांत लग रहे थे। सत्र के अंत में, न्यायाधीशों ने मुझे धन्यवाद दिया और मैंने उन्हें अलविदा कहा।
मुझे नहीं पता कि बैठक के बाद जजों ने क्या कहा या क्या किया, लेकिन अगले कुछ महीनों में बैडेनहॉर्स्ट के हाथ बंधे हुए से लग रहे थे। सख्ती कम हुई, और जजों के दौरे के तीन महीने के भीतर ही हमें खबर मिली कि बैडेनहॉर्स्ट का तबादला किया जा रहा है।

बैडेनहॉर्स्ट के जाने से कुछ दिन पहले मुझे मुख्य कार्यालय में बुलाया गया। जनरल स्टेन द्वीप पर आए हुए थे और जानना चाहते थे कि क्या हमें कोई शिकायत है। जब मैं अपनी मांगों की सूची पढ़ रहा था, तब बैडेनहॉर्स्ट भी वहीं मौजूद थे। जब मैंने अपनी बात पूरी कर ली, तो बैडेनहॉर्स्ट ने मुझसे सीधे बात की। उन्होंने मुझे बताया कि वे द्वीप छोड़ रहे हैं और कहा, "मैं आप लोगों को शुभकामनाएं देना चाहता हूं।" मुझे नहीं पता कि मैं अवाक रह गया था या नहीं, लेकिन मैं सचमुच चकित था। उन्होंने ये शब्द एक इंसान की तरह कहे और अपना एक ऐसा रूप दिखाया जो हमने पहले कभी नहीं देखा था। मैंने उनकी शुभकामनाओं के लिए उन्हें धन्यवाद दिया और उनके प्रयासों में सफलता की कामना की।
मैंने उस पल के बारे में बहुत देर तक सोचा। बैडेनहॉर्स्ट शायद रॉबेन द्वीप पर हमारे सबसे निर्दयी और बर्बर कमांडिंग ऑफिसर थे। लेकिन उस दिन ऑफिस में उन्होंने अपने स्वभाव का एक दूसरा पहलू उजागर किया, एक ऐसा पहलू जो छिपा हुआ था लेकिन फिर भी मौजूद था। यह एक उपयोगी याद दिलाता है कि सभी मनुष्यों में, यहाँ तक कि सबसे निर्मम दिखने वाले लोगों में भी, अच्छाई का एक मूल तत्व होता है, और यदि उनका हृदय पिघल जाए, तो वे बदल सकते हैं। अंततः, बैडेनहॉर्स्ट दुष्ट नहीं थे; उनकी अमानवीयता एक अमानवीय व्यवस्था द्वारा उन पर थोपी गई थी। उन्होंने एक दरिंदे की तरह व्यवहार किया क्योंकि उन्हें उस दरिंदे के व्यवहार के लिए पुरस्कृत किया जाता था।

74

यह घोषणा की गई कि कर्नल विलेमसे, कर्नल बैडेनहॉर्स्ट के स्थान पर कमान अधिकारी बनेंगे। उनकी नियुक्ति के बाद मैंने कर्नल से मिलने का अनुरोध किया और उनके आगमन के कुछ समय बाद ही उनसे मुलाकात की। हालांकि वे स्पष्ट रूप से प्रगतिशील व्यक्ति नहीं थे, फिर भी वे अपने पूर्ववर्ती के बिल्कुल विपरीत, विनम्र और तर्कसंगत थे। हमें उम्मीद थी कि बैडेनहॉर्स्ट का कार्यकाल हमारी परिस्थितियों में लगातार हो रहे सुधार के ग्राफ में बस एक छोटी सी गिरावट होगी।
आक्रामक स्वभाव वाले युवा वार्डर भी बैडेनहॉर्स्ट के साथ चले गए, और हमने खदान और अपने क्षेत्र में अपना सामान्य व्यवहार फिर से शुरू कर दिया। विलेमसे शायद एक समझदार आदमी था, लेकिन जब उसने देखा कि हम खदान में काम करने से ज्यादा समय बातें करने में बिता रहे हैं, तो वह हैरान रह गया। द्वीप पर आए उन्हें आए अभी कुछ ही सप्ताह हुए थे कि मुझे उनके कार्यालय में एक बैठक के लिए बुलाया गया। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा, “मंडेला, आपको मेरी मदद करनी होगी।” मैंने उनसे पूछा कैसे? उन्होंने जवाब दिया, “आपके आदमी काम नहीं कर रहे हैं। वे आदेश नहीं मानते। वे सिर्फ अपनी मर्जी से काम करते हैं। यह एक जेल है। यहाँ कुछ अनुशासन होना चाहिए। यह न केवल हमारे लिए बल्कि आपके लिए भी अच्छा है। हमें कुछ व्यवस्था रखनी होगी, नहीं तो वे जेल के पूर्व प्रमुख जैसे किसी को वापस ले आएंगे।”
कर्नल की बात समझ में आई। मैंने उनकी बात सुनी और उनसे कहा कि उनका अनुरोध जायज़ है, लेकिन जवाब देने से पहले मुझे अपने सभी साथियों से मिलना होगा। उस समय, अलग-अलग कोठरियों में बंद सभी कैदियों की बैठक करना सख्त मना था। उनसे ऐसी बैठक की अनुमति मांगकर मैं नियमों में काफी ढील देने की गुजारिश कर रहा था। वे भी यह बात मुझसे बेहतर जानते थे और उन्होंने इस पर विचार करने के लिए कुछ समय मांगा।
कुछ ही दिनों में मुझे विलेमसे का संदेश मिला कि वह इसकी अनुमति दे देंगे। एक दोपहर हम सब आँगन में मिले, जहाँ कोई पहरेदार नहीं था। मैंने सभी को विलेमसे की बात बताई और कहा कि अभी थोड़ा समझौता करने से लंबे समय में हमारी स्थिति बेहतर हो जाएगी। हमने तय किया कि हम कम से कम काम करते हुए

दिखेंगे, लेकिन जो भी काम करेंगे, वह अपनी सुविधा के अनुसार करेंगे। उसके बाद से हमने यही किया और हमें कमांडिंग ऑफिसर से कोई शिकायत नहीं मिली।

विलेमसे के कार्यकाल के शुरुआती दौर में, 1971-72 के दौरान, पकड़े गए एमके सैनिकों का लगातार आगमन होता रहा। ये लोग युद्ध में शामिल रहे थे और निर्वासित आंदोलन की स्थिति से भली-भांति परिचित थे। हालांकि मैं एएनसी के लोगों को कैद में देखकर कभी खुश नहीं होता था, फिर भी उनके आने के बाद उनसे पूछताछ करने के लिए उत्सुक था। मैं ओलिवर के बारे में, प्रशिक्षण शिविरों के बारे में, एमके की सफलताओं और असफलताओं के बारे में जानने के लिए बेहद उत्सुक था।
ये लोग बेहद उग्र थे और उन्होंने जेल का जीवन आसानी से स्वीकार नहीं किया। इनमें से एक प्रमुख व्यक्ति जिमी अप्रैल था, जो एमके का एक अधिकारी था और जिसने जो स्लोवो के अधीन प्रशिक्षण प्राप्त किया था और रोडेशिया में दुश्मन के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी। एमके जाली पहचान पत्रों के साथ धीरे-धीरे लोगों को वापस देश में भेज रहा था। जिमी भी उनमें से एक था और उसे दक्षिण अफ्रीका में गिरफ्तार कर लिया गया।
जिमी ने हमें युद्ध की कहानियाँ सुनाईं, लेकिन मैंने उसे एक तरफ ले जाकर एमके की समस्याओं के बारे में भी पूछा। चूंकि मैं एमके का संस्थापक और पहला कमांडर-इन-चीफ था, इसलिए जिमी और बाकी लोग मुझसे दूसरों की तुलना में अधिक खुलकर बात करते थे। उसने मुझे शिविरों में असंतोष और एमके अधिकारियों द्वारा किए गए दुर्व्यवहारों की कहानियाँ सुनाईं। मैंने उससे कहा कि वह इस मामले को अपने तक ही सीमित रखे, और मैंने ओलिवर को एक पत्र चुपके से भेज दिया जिसमें शिविरों में कुछ सुधार करने का सुझाव दिया गया था।
एक दिन, मैं कर्नल विलेमसे के साथ मुख्यालय में एक बैठक में था, तभी मैंने जिम्मी को एक अन्य अधिकारी के कार्यालय के बाहर देखा। वह मेरी ओर मुड़ा और कुछ घबराहट में बोला, "वे मुझे मेरा पत्र देने से इनकार कर रहे हैं।" मैंने उत्तर दिया, “किस आधार पर?”

“उनका दावा है कि इसमें ऐसी सामग्री है जिसे मुझे देखने की अनुमति नहीं है,” उन्होंने कहा। मैं इस मामले पर चर्चा करने के लिए कार्यालय में दाखिल हुआ, लेकिन इससे पहले कि मैं कुछ बोल पाता, जिमी अंदर घुस आया और अधिकारी से ज़ोर से बोला, “मुझे मेरा पत्र दो!” जिमी मुझे धक्का देकर अधिकारी की मेज तक पहुँचने और खुद पत्र लेने के लिए आगे बढ़ने लगा। इस पर अधिकारी ने पत्र लिया और जिमी से सुरक्षा के लिए मेरे पीछे खड़ा हो गया। यह किसी फिल्म का हास्यास्पद दृश्य हो सकता था, लेकिन उस समय यह बहुत तनावपूर्ण था। मैंने जिमी की ओर मुड़कर धीरे से लेकिन सख्ती से कहा, “कृपया ऐसा मत करो। शांत हो जाओ। मैं इस मामले को सुलझा लूँगा और यह सुनिश्चित करूँगा कि तुम्हें तुम्हारा पत्र मिल जाए। अब, कृपया चले जाओ।”
मेरी बात का असर हुआ और जिमी दफ्तर से चला गया। फिर मैंने उस अधिकारी की ओर देखा, जो बेहद घबराया हुआ था। मेरे लिए यह एक अजीब स्थिति थी। मैं अधिकारियों का विरोध नहीं कर रहा था, बल्कि अपने लोगों और उन लोगों के बीच मध्यस्थता कर रहा था जिनके खिलाफ मैंने इतने लंबे समय तक संघर्ष किया था। द्वीप पर आने वाले उग्रवादियों ने मुझे बार-बार इस स्थिति में डाल दिया था। हालांकि उनकी कट्टरता से हमें प्रोत्साहन मिलता था, लेकिन ये लोग कभी- कभी हमारे रोज़मर्रा के जीवन को और भी बोझिल बना देते थे।
एक सप्ताह के भीतर ही अधिकारी ने मुझे जिमी का पत्र सौंप दिया।

75

एक सुबह, खदान तक पैदल जाने के बजाय, हमें एक ट्रक के पीछे बैठने का आदेश दिया गया। ट्रक एक नई दिशा में चल पड़ा, और पंद्रह मिनट बाद हमें ट्रक से कूदने का आदेश दिया गया। हमारे सामने, सुबह की रोशनी में चमकता हुआ, हमने समुद्र, पथरीला किनारा और दूर, धूप में झिलमिलाती हुई, केप टाउन की कांच की इमारतें देखीं। हालाँकि यह निश्चित रूप से एक भ्रम था, लेकिन टेबल माउंटेन के पीछे स्थित वह शहर इतना करीब लग रहा था मानो कोई हाथ बढ़ाकर उसे पकड़ सकता हो।
वरिष्ठ अधिकारी ने हमें समझाया कि हमें समुद्री शैवाल इकट्ठा करने के लिए तट पर लाया गया था। हमें निर्देश दिया गया कि समुद्र तट पर बहकर आए बड़े- बड़े शैवालों को उठाएँ और चट्टानों या मूंगे से चिपके शैवालों को इकट्ठा करने के लिए पानी में उतरें। शैवाल लंबे, चिपचिपे और भूरे-हरे रंग के थे। कभी-कभी इनके टुकड़े छह से आठ फीट लंबे और तीस पाउंड वजनी होते थे। उथले पानी से शैवाल निकालने के बाद, हमने उन्हें समुद्र तट पर पंक्तियों में लगाया। सूखने के बाद, हमने उन्हें ट्रक के पीछे लाद दिया। हमें बताया गया कि फिर इसे जापान भेजा जाता है, जहाँ इसका उपयोग उर्वरक के रूप में किया जाता है।
उस दिन तो काम हमें ज़्यादा थकाने वाला नहीं लगा, लेकिन आने वाले हफ़्तों और महीनों में हमने पाया कि यह काफ़ी कठिन हो सकता है। पर इससे कोई फ़र्क नहीं पड़ा क्योंकि हमारे पास उस मनोरम दृश्य के सुख और आनंद थे: हमने मछली पकड़ने वाले जहाज़ों को जाल बिछाते देखा, विशाल तेल टैंकरों को क्षितिज पर धीरे-धीरे चलते देखा; हमने समुद्री पक्षियों को समुद्र से मछलियाँ पकड़ते और सीलों को लहरों पर खेलते देखा; हम पेंगुइनों के झुंड पर हँसे, जो बेढंगे, सपाट पैरों वाले सैनिकों की एक टुकड़ी की तरह लग रहे थे; और हम टेबल माउंटेन के ऊपर मौसम के दैनिक नाटक पर चकित हुए, जहाँ बादलों और सूरज की चादर बदलती रहती थी।
गर्मी के मौसम में पानी बहुत अच्छा लगता था, लेकिन सर्दियों में बर्फीली बेंग्वेला धाराओं के कारण लहरों में उतरना किसी यातना से कम नहीं था। किनारे पर और उसके आसपास की चट्टानें नुकीली थीं, और काम करते समय अक्सर

हमारे पैरों में कट लग जाते थे। फिर भी हमें खदान की तुलना में समुद्र ज़्यादा पसंद था, हालाँकि हम वहाँ एक बार में कुछ दिनों से ज़्यादा नहीं रुकते थे।

* * *

समुद्र मेरे लिए खजाने की पेटी साबित हुआ। मुझे मूंगे के सुंदर टुकड़े और अलंकृत सीपियाँ मिलीं, जिन्हें मैं कभी-कभी अपनी कोठरी में ले आता था। एक बार किसी ने रेत में फंसी शराब की एक बोतल खोजी, जिसका ढक्कन अभी भी लगा हुआ था। मुझे बताया गया कि उसका स्वाद सिरके जैसा था। पीएसी के जेफ मासेमोला एक बेहद प्रतिभाशाली कलाकार और मूर्तिकार थे, और अधिकारियों ने उन्हें बहकर आई लकड़ी के टुकड़े इकट्ठा करने की अनुमति दी थी, जिन्हें वे अद्भुत आकृतियों में तराशते थे, जिनमें से कुछ को वार्डरों ने खरीदने की पेशकश की। उन्होंने मेरे लिए एक किताबों की अलमारी बनाई, जिसका मैंने कई वर्षों तक उपयोग किया। अधिकारी आगंतुकों को बताते थे कि उन्होंने ही मुझे यह अलमारी दी है।
समुद्र तट का वातावरण खदान की तुलना में अधिक शांत था। हमें समुद्र तट बहुत पसंद आया क्योंकि वहाँ हमने बहुत अच्छा खाना खाया। हर सुबह जब हम समुद्र तट पर जाते थे, तो अपने साथ ताजे पानी का एक बड़ा ड्रम ले जाते थे। बाद में, हम एक दूसरा ड्रम भी ले जाते थे, जिसका उपयोग हम रॉबेन द्वीप के समुद्री भोजन का एक विशेष स्टू बनाने के लिए करते थे। अपने स्टू के लिए हम क्लैम और मसल्स इकट्ठा करते थे। हमने क्रेफ़िश भी पकड़ीं, जो चट्टानों की दरारों में छिपी रहती थीं। क्रेफ़िश को पकड़ना थोड़ा मुश्किल था; उसे सिर और पूंछ के बीच से मजबूती से पकड़ना पड़ता था, नहीं तो वह छूट जाती थी। अबालोन, जिसे हम पार्लेमोएन कहते हैं, मेरा पसंदीदा व्यंजन था। अबालोन एक प्रकार का घोंघा है जो चट्टानों से मजबूती से चिपका रहता है और इसे निकालने के लिए काफी मशक्कत करनी पड़ती है। ये बहुत जिद्दी जीव होते हैं, इन्हें खोलना मुश्किल होता है और अगर ये जरा सा भी ज्यादा पक जाएं तो खाने में बहुत सख्त हो जाते हैं।
हम अपनी पकड़ी हुई मछलियों को दूसरे ड्रम में भर देते थे। विल्टन म्कवेई हम सब में रसोइया था और वही स्टू बनाता था। जब स्टू तैयार हो जाता, तो

□□□□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□ □□ □□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□□ 1973 □□□, □□□□-□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□□ □□□ □□ □□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□, □□□□□□ □□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□ □□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□□□□□□□□ □□□□□□□□ □□ □□□□□□□ □□□□□ □□□ □□□□ □□□ □□□□□, □□□□□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□ □□, □□□□ □□□□□ □□□□ □□□□ □ □□; □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□
□□ □□□□□ □□ □□□□□□ □□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□, □□□ □□□□□□□□□□ □□□□□□□□□□, □□ □□ □□□ □□□ □□□□□□ □□, □□□□□ □ □□□ □□□□ □□□□□ □□ □□□ □□□□ □□ □□□□□ □□□□□, □□□□□ □□ □□□□□□ □□□□□□ □□□□ □□□ □□□□ □□□□□□□□ □□□□ □□ □□ □□ □□□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□□□□□□□□ □□ □□□□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□ □□□ □□□□□□□□ □□ □□□ □□ □□□□ □□ □□□□□, □□□ □□□□ □□ □□□□ □□□□□□□□ "□□□□□□□□□□" □□□□, □□ □□□□□□□□ □□□□ □□□ "□□□□□□□□□□" □□ □□□□ □□□

76

संघर्ष के दौरान, रॉबेन द्वीप को विश्वविद्यालय के रूप में जाना जाता था। ऐसा केवल इसलिए नहीं था कि हमने किताबों से ज्ञान प्राप्त किया, या कैदियों ने अंग्रेजी, अफ़्रीकान्स, कला, भूगोल और गणित का अध्ययन किया, या बिली नायर, अहमद कथराडा, माइक डिंगाके और एडी डेनियल जैसे कई लोगों ने अनेक डिग्रियाँ प्राप्त कीं। रॉबेन द्वीप को विश्वविद्यालय इसलिए कहा जाता था क्योंकि हमने एक-दूसरे से बहुत कुछ सीखा। हम स्वयं अपने शिक्षक, अपने प्रोफेसर, अपने पाठ्यक्रम और अपने कोर्स के साथ अपनी शिक्षा प्रणाली विकसित कर चुके थे। हमने औपचारिक अकादमिक अध्ययन और अनौपचारिक राजनीतिक अध्ययन में अंतर किया।
हमारे विश्वविद्यालय का विकास आंशिक रूप से आवश्यकता के कारण हुआ। जब युवा इस द्वीप पर आए, तो हमने महसूस किया कि उन्हें एएनसी के इतिहास के बारे में बहुत कम जानकारी थी। वाल्टर, जो शायद एएनसी के सबसे महान जीवित इतिहासकार हैं, ने उन्हें संगठन की उत्पत्ति और उसके शुरुआती दिनों के बारे में बताना शुरू किया। उनका शिक्षण ज्ञानवर्धक और गहन समझ से भरपूर था। धीरे-धीरे, यह अनौपचारिक इतिहास उच्च निकाय द्वारा निर्मित एक पाठ्यक्रम में विकसित हुआ, जिसे पाठ्यक्रम 'ए' के नाम से जाना जाने लगा। इसमें एएनसी और मुक्ति संघर्ष पर दो वर्षों के व्याख्यान शामिल थे। पाठ्यक्रम 'ए' में कैथी द्वारा पढ़ाया जाने वाला एक पाठ्यक्रम, "भारतीय संघर्ष का इतिहास" भी शामिल था। एक अन्य साथी ने इसमें रंगीन लोगों का इतिहास जोड़ा। मैक, जिन्होंने जर्मन लोकतांत्रिक गणराज्य में अध्ययन किया था, ने मार्क्सवाद पर एक पाठ्यक्रम पढ़ाया।
शिक्षण की परिस्थितियाँ आदर्श नहीं थीं। अध्ययन समूह खदान में एक साथ काम करते थे और संगोष्ठी के नेता के चारों ओर एक घेरे में बैठ जाते थे। शिक्षण शैली सुकरात की पद्धति पर आधारित थी; नेताओं द्वारा प्रश्न पूछने और उत्तर देने के माध्यम से विचारों और सिद्धांतों को स्पष्ट किया जाता था।
द्वीप पर दी जाने वाली शिक्षा का केंद्र वॉल्टर का पाठ्यक्रम ही था। द्वीप पर आने वाले कई युवा एएनसी सदस्यों को यह जानकारी ही नहीं थी कि 1920 और 1930 के दशक में भी यह संगठन अस्तित्व में था। वॉल्टर ने 1912 में एएनसी

की स्थापना से लेकर आज तक उनका मार्गदर्शन किया। इन युवाओं में से कई के लिए, यह एकमात्र राजनीतिक शिक्षा थी जो उन्हें कभी मिली थी।
जब इन पाठ्यक्रमों के बारे में आम लोगों को पता चला, तो हमें दूसरी तरफ के अपने लोगों से पूछताछ मिलने लगी। यहीं से आम कैदियों के साथ एक तरह का पत्राचार पाठ्यक्रम शुरू हुआ। शिक्षक चुपके से उन्हें व्याख्यान भेजते थे और वे प्रश्न और टिप्पणियाँ भेजकर जवाब देते थे।
यह हमारे साथ-साथ उनके लिए भी लाभदायक था। इन लोगों की औपचारिक शिक्षा बहुत कम थी, लेकिन दुनिया की कठिनाइयों का उन्हें गहरा ज्ञान था। उनकी चिंताएँ दार्शनिक विचारों की बजाय व्यावहारिक विचारों पर अधिक केंद्रित थीं। यदि किसी व्याख्यान में समाजवाद के एक सिद्धांत का उल्लेख होता, "प्रत्येक से उसकी क्षमता के अनुसार और प्रत्येक को उसकी आवश्यकता के अनुसार", तो हमें अक्सर यह प्रश्न सुनने को मिलता, "हाँ, लेकिन व्यवहार में इसका क्या अर्थ है? यदि मेरे पास भूमि है और धन नहीं, और मेरे मित्र के पास धन है लेकिन भूमि नहीं, तो हम दोनों में से किसकी आवश्यकता अधिक है?" ऐसे प्रश्न अत्यंत मूल्यवान थे और हमें अपने विचारों पर गहराई से चिंतन करने के लिए प्रेरित करते थे।
कई वर्षों तक मैंने राजनीतिक अर्थशास्त्र का पाठ्यक्रम पढ़ाया। इसमें मैंने प्राचीन काल से लेकर वर्तमान तक मानव आर्थिक विकास का पता लगाने का प्रयास किया, जिसमें प्राचीन सामुदायिक समाजों से सामंतवाद, पूंजीवाद और समाजवाद तक के मार्ग को रेखांकित किया। मैं न तो विद्वान हूँ और न ही शिक्षक, और मैं आमतौर पर व्याख्यान देने की बजाय प्रश्नों के उत्तर देना पसंद करता हूँ। मेरा दृष्टिकोण वैचारिक नहीं था, लेकिन समाजवाद के पक्ष में झुकाव था, जिसे मैं उस समय मानव द्वारा विकसित आर्थिक जीवन का सबसे उन्नत चरण मानता था।

अनौपचारिक पढ़ाई के साथ-साथ मेरा कानूनी काम भी जारी रहा। मैं कभी-कभी अपनी कोठरी के बाहर एक बोर्ड लगाने के बारे में सोचता था, क्योंकि मैं हर हफ्ते कई घंटे दूसरे कैदियों के लिए न्यायिक अपील तैयार करने में बिताता

था, हालांकि जेल सेवा नियमों के तहत यह मना था। अलग-अलग राजनीतिक विचारधाराओं वाले कैदी मुझसे मदद मांगते थे।
दक्षिण अफ़्रीकी कानून किसी भी अभियुक्त को कानूनी प्रतिनिधित्व का अधिकार नहीं देता, और हर साल हज़ारों गरीब पुरुष और महिलाएं कानूनी प्रतिनिधित्व न मिलने के कारण जेल जाते हैं। कुछ ही अफ़्रीकी वकील का खर्च उठा सकते थे, और अधिकांश के पास अदालत द्वारा दिए गए फैसले को स्वीकार करने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। सामान्य श्रेणी के कई लोगों को बिना वकील की सहायता के सज़ा सुनाई गई थी, और उनमें से कई ने अपील करने के लिए मुझसे संपर्क किया। इनमें से अधिकांश लोगों के लिए, यह पहली बार था जब वे किसी वकील से मिले थे।
मुझे एफ या जी जेल में बंद किसी कैदी से चोरी-छिपे भेजा गया एक पत्र मिलता था जिसमें मदद मांगी जाती थी। फिर मैं उनसे मामले की जानकारी, आरोप, सबूत और गवाही मांगता था। इन गुप्त आदान-प्रदानों के कारण, जानकारी टुकड़ों- टुकड़ों में धीरे-धीरे आती थी। मेरे पुराने मंडेला और टैम्बो कार्यालय में आधे घंटे से ज़्यादा न चलने वाली सलाह-मशविरा प्रक्रिया द्वीप पर एक साल या उससे भी ज़्यादा समय ले सकती थी।
मैंने अपने "मुवक्किलों" को सर्वोच्च न्यायालय के रजिस्ट्रार को पत्र लिखकर अपने मामले का रिकॉर्ड मांगने की सलाह दी। मैंने कैदी से कहा कि वह रजिस्ट्रार को सूचित करे कि उसके पास सीमित धन है और वह रिकॉर्ड नि:शुल्क प्राप्त करना चाहता है। कभी-कभी रजिस्ट्रार इतनी दयालुता दिखाते थे कि वे यह सामग्री नि:शुल्क उपलब्ध करा देते थे।
एक बार जब मेरे पास मामले का रिकॉर्ड आ जाता था, तो मैं अपील तैयार कर सकता था, जो आमतौर पर न्यायिक अनियमितता जैसे पक्षपात, गलत प्रक्रिया या अपर्याप्त सबूतों पर आधारित होती थी। मैं न्यायाधीश या मजिस्ट्रेट को अपने हाथ से एक पत्र लिखता था और फिर उसे दूसरे पक्ष को भेज देता था। चूंकि किसी व्यक्ति का मामला तैयार करना नियमों का उल्लंघन था, इसलिए मैं कैदी को निर्देश देता था कि वह दस्तावेज़ की अपने हाथ से प्रतिलिपि बना ले। यदि वह लिख नहीं सकता था, और कई कैदी लिख नहीं सकते थे, तो मैं उसे किसी ऐसे व्यक्ति को ढूंढने के लिए कहता था जो लिख सकता हो।
मुझे अपनी कानूनी कुशलता को निखारने में आनंद आता था, और कुछ मामलों में फैसले पलट दिए गए और सजा कम कर दी गई। ये संतोषजनक जीतें थीं; जेल का माहौल

ही ऐसा होता है कि इंसान बेबस महसूस करे, और यह व्यवस्था को बदलने के कुछ गिने-चुने तरीकों में से एक था। अक्सर मैं उन लोगों से कभी नहीं मिलता था जिनके लिए मैं काम करता था, और कभी-कभी अचानक, दोपहर के भोजन में हमें पापड़ परोस रहा कोई व्यक्ति मेरे द्वारा उसके लिए किए गए काम के लिए धीरे से धन्यवाद कह देता था।

77

मेरी पत्नी पर अत्याचार कम नहीं हुआ। 1972 में, सुरक्षा पुलिसकर्मियों ने 8115 ऑरलैंडो वेस्ट स्थित घर का दरवाजा तोड़ दिया। खिड़की पर ईंटें फेंकी गईं। सामने के दरवाजे पर गोलियां चलाई गईं। 1974 में, विनी पर अपने प्रतिबंध आदेशों का उल्लंघन करने का आरोप लगाया गया, जिसके तहत उसे अपने बच्चों और डॉक्टर के अलावा किसी और से मिलने की अनुमति नहीं थी। उस समय वह एक वकील के कार्यालय में काम कर रही थी, और एक दोस्त दोपहर के भोजन के समय ज़ेनी और ज़िंदज़ी को उससे मिलने ले आया। इसके लिए विनी पर मुकदमा चलाया गया और उसे छह महीने की कैद की सजा सुनाई गई। उसे ऑरेंज फ्री स्टेट के क्रूनस्टैड जेल में रखा गया, लेकिन वहां का उसका अनुभव प्रिटोरिया में बिताए गए पिछले समय जितना भयानक नहीं था। विनी ने मुझे लिखा कि इस बार जेल में उसे आजादी का एहसास हुआ, और इससे संघर्ष के प्रति उसकी प्रतिबद्धता और मजबूत हुई। अधिकारियों ने ज़िंदज़ी और ज़ेनी को रविवार को उससे मिलने की अनुमति दी।
जब विनी 1975 में रिहा हुई, तो हमने अपने वकीलों के साथ पत्रों और बातचीत के ज़रिए ज़िंदज़ी से मिलने की योजना बनाई। जेल के नियमों के अनुसार, दो से सोलह वर्ष की आयु के किसी भी बच्चे को कैदी से मिलने की अनुमति नहीं थी। जब मैं रॉबेन द्वीप गया, तो मेरे सभी बच्चे उम्र संबंधी इस कानूनी पाबंदी में फँसे हुए थे। इस नियम के पीछे का तर्क दुर्भावनापूर्ण नहीं था: कानून बनाने वालों का मानना था कि जेल में मुलाक़ात बच्चों की संवेदनशील मनोदशा पर नकारात्मक प्रभाव डालेगी। लेकिन कैदियों पर इसका प्रभाव शायद उतना ही हानिकारक था। अपने बच्चों को न देख पाना गहरे दुख का कारण होता है।
1975 में ज़िंदज़ी पंद्रह साल की हो गई। योजना यह थी कि उसकी माँ ज़िंदज़ी के जन्म दस्तावेजों में बदलाव करके यह दिखाए कि वह पंद्रह की नहीं बल्कि

सोलह साल की हो रही है, ताकि वह मुझसे मिल सके। अफ़्रीकी लोगों के जन्म रिकॉर्ड व्यवस्थित और एकसमान तरीके से नहीं रखे जाते, और विनी को अपने दस्तावेजों में यह बदलाव करना आसान लगा कि ज़िंदज़ी का जन्म एक साल पहले हुआ था। उसने परमिट के लिए आवेदन किया और उसे मंज़ूरी मिल गई।

दिसंबर में ज़िंदज़ी के निर्धारित दौरे से कुछ सप्ताह पहले, विनी की माँ के साथ मेरी पहले से तय मुलाकात थी। जब मैं मुलाकात के लिए बने कमरे में उनके सामने बैठी, तो मैंने उनसे कहा, "माँ, मैं बहुत उत्साहित हूँ क्योंकि मैं ज़िंदज़ी से मिलने जा रही हूँ।" मेरी सास, जो पहले एक शिक्षिका थीं, ने मुझे कुछ हैरानी से देखा और फिर चिड़चिड़ेपन से कहा, "नहीं, ज़िंदज़ी तुमसे मिलने नहीं आ सकती क्योंकि वह अभी सोलह साल की नहीं हुई है।"
मुझे तुरंत एहसास हो गया कि किसी ने भी उसे हमारी चाल के बारे में नहीं बताया था। हम दोनों के पीछे एक-एक वार्डर था, और मैंने तय किया कि मैं उसकी कही हुई बातों को नज़रअंदाज़ कर दूँगी, और धीरे से बोली, "अरे, माँ, कोई बात नहीं।"
लेकिन मेरी सास बहुत जिद्दी हैं और उन्होंने इसे जाने नहीं दिया। “खैर, मकोन्यानीसी”—जोसा भाषा में दामाद के लिए एक स्नेहपूर्ण शब्द है, और वह हमेशा मुझे इसी नाम से पुकारती थीं—“तुमने बहुत बड़ी गलती की है क्योंकि ज़िंदज़ी अभी सिर्फ पंद्रह साल की है।”
मैंने घबराहट के भाव से अपनी आँखें चौड़ी कर लीं और उसे शायद मेरा संदेश मिल गया होगा क्योंकि उसने फिर कभी ज़िंदज़ी का ज़िक्र नहीं किया।

ज़िंदज़ी को मैंने उसके तीन साल की उम्र से नहीं देखा था। वह एक ऐसी बेटी थी जो अपने पिता को यादों से नहीं, बल्कि पुरानी तस्वीरों से पहचानती थी। उस सुबह मैंने एक नई कमीज़ पहनी और अपने पहनावे पर सामान्य से ज़्यादा ध्यान दिया: यह मेरी अपनी शान है, लेकिन मैं अपनी सबसे छोटी बेटी के सामने बूढ़ा नहीं दिखना चाहता था।

मैंने विनी को एक साल से ज़्यादा समय से नहीं देखा था, और उसे स्वस्थ देखकर मुझे बहुत खुशी हुई। लेकिन मुझे अपनी सबसे छोटी बेटी को इतनी खूबसूरत महिला बनते देखकर और उसकी अपनी ही जैसी खूबसूरत माँ को देखकर बहुत प्रसन्नता हुई।
ज़िंदज़ी पहले तो शर्मीली और झिझकती रही। मुझे यकीन है कि उसके लिए अपने उस पिता को देखना आसान नहीं था, जिसे वह कभी ठीक से जान नहीं पाई थी, एक ऐसा पिता जो उसे केवल दूर से ही प्यार कर सकता था, जो मानो उसका नहीं बल्कि लोगों का था। कहीं न कहीं उसके मन में उस पिता के लिए नाराज़गी और गुस्सा ज़रूर रहा होगा जो उसके बचपन और किशोरावस्था में अनुपस्थित रहा। मैं तुरंत समझ गई कि वह अपनी माँ की तरह ही एक मज़बूत और जोशीली युवती थी, जैसी उसकी माँ ज़िंदज़ी की उम्र में थी।
मुझे पता था कि वह असहज महसूस कर रही होगी, इसलिए मैंने माहौल को खुशनुमा बनाने की पूरी कोशिश की। जब वह आई तो मैंने उससे पूछा, "क्या तुम मेरे गार्ड ऑफ ऑनर से मिली हो?", और मैंने उन सुरक्षाकर्मियों की ओर इशारा किया जो हर जगह मेरे साथ चलते थे। मैंने उससे उसके जीवन, उसकी पढ़ाई और उसके दोस्तों के बारे में सवाल पूछे, और फिर उसे उन पुराने दिनों में ले जाने की कोशिश की जिन्हें वह मुश्किल से ही याद कर पाती थी। मैंने उसे बताया कि कैसे मुझे अक्सर घर पर रविवार की सुबहें याद आती हैं जब मैं उसे अपनी गोद में झुलाता था जबकि माँ रसोई में रोस्ट बना रही होती थी। मैंने ऑरलैंडो में उसके बचपन की छोटी-छोटी घटनाओं और रोमांच को याद किया, और बताया कि कैसे वह छोटी उम्र में भी शायद ही कभी रोती थी। शीशे के पार से मैं देख सकता था कि मेरी बातें सुनते समय वह अपने आँसू रोकने की कोशिश कर रही थी।

इस यात्रा का एक दुखद पहलू तब सामने आया जब विनी से मुझे पता चला कि ब्रैम फिशर की जेल से रिहा होने के कुछ ही समय बाद कैंसर से मृत्यु हो गई थी। ब्रैम की मृत्यु ने मुझे बहुत प्रभावित किया। हालाँकि सरकार ने ब्रैम के शरीर पर कोई निशान नहीं छोड़ा, लेकिन राज्य द्वारा उन पर किए गए निरंतर उत्पीड़न के कारण ही उन्हें वह अंतिम बीमारी हुई जिसने उनकी असमय मृत्यु

का कारण बन गई। मृत्यु के बाद भी उनका पीछा किया गया - राज्य ने उनके अंतिम संस्कार के बाद उनकी राख जब्त कर ली।
ब्रैम एक कट्टरपंथी थे, और रिवोनिया मुकदमे के बाद, उन्होंने फैसला किया कि वे भूमिगत होकर और भगोड़े का जीवन जीकर ही संघर्ष में सबसे बेहतर योगदान दे सकते हैं। उन्हें इस बात का बहुत दुख था कि जिन लोगों का वे अदालत में प्रतिनिधित्व कर रहे थे, वे जेल जा रहे थे जबकि वे खुद आज़ाद घूम रहे थे। मुकदमे के दौरान, मैंने ब्रैम को यह रास्ता न अपनाने की सलाह दी, और इस बात पर ज़ोर दिया कि वे अदालत में ही संघर्ष में सबसे बेहतर योगदान दे सकते हैं, जहाँ लोग एक न्यायाधीश अध्यक्ष के अफ्रीकी मूल के बेटे को शक्तिहीनों के अधिकारों के लिए लड़ते हुए देख सकते हैं। लेकिन वे दूसरों को कष्ट सहते हुए खुद आज़ाद नहीं रह सकते थे। उस सेनापति की तरह जो मोर्चे पर अपनी सेना के साथ कंधे से कंधा मिलाकर लड़ता है, ब्रैम दूसरों से वह बलिदान नहीं मांगना चाहते थे जो वे स्वयं करने को तैयार नहीं थे।
जमानत पर रिहा होने के दौरान ब्रैम भूमिगत हो गया और 1965 में पकड़ा गया, जहाँ उसे तोड़फोड़ की साजिश रचने के आरोप में आजीवन कारावास की सजा सुनाई गई। मैंने जेल में उससे पत्र लिखने की कोशिश की थी, लेकिन नियमों के अनुसार कैदियों को आपस में पत्र-व्यवहार करने की मनाही थी। कैंसर का पता चलने के बाद, मानवीय आधार पर उसकी रिहाई की मांग करने वाले एक अखबार अभियान ने सरकार को प्रभावित किया। अधिकारियों द्वारा उसे घर में नजरबंद रखते हुए ब्लोमफोंटेन में उसके भाई के घर रिहा किए जाने के कुछ ही हफ्तों बाद उसकी मृत्यु हो गई।
कई मायनों में, ऑरेंज रिवर कॉलोनी के प्रधानमंत्री के पोते ब्रैम फिशर ने सबसे बड़ा बलिदान दिया था। स्वतंत्रता की लड़ाई में मैंने चाहे जो भी कष्ट सहे हों, मुझे हमेशा इस बात से शक्ति मिलती थी कि मैं अपने लोगों के साथ और उनके लिए लड़ रहा था। ब्रैम एक स्वतंत्र व्यक्ति थे जिन्होंने दूसरों की स्वतंत्रता सुनिश्चित करने के लिए अपने ही लोगों के खिलाफ लड़ाई लड़ी।

इस मुलाकात के एक महीने बाद विनी से मुझे खबर मिली कि अधिकारियों ने उससे मिलने की उसकी नवीनतम विनती को इस बेतुके कारण से अस्वीकार कर दिया है कि

मैं उससे मिलना नहीं चाहता था। मैंने तुरंत लेफ्टिनेंट प्रिंस से मुलाकात का समय तय किया, जो उस समय जेल प्रमुख थे, ताकि मैं अपना विरोध दर्ज करा सकूं।
प्रिंस को कोई परिष्कृत व्यक्ति नहीं कह सकता था। जब मैं उनसे मिलने गया, तो मैंने उन्हें सारी स्थिति शांत भाव से और बिना किसी द्वेष के समझाई। लेकिन मैंने कहा कि मौजूदा स्थिति अस्वीकार्य है और मेरी पत्नी को उनसे मिलने की अनुमति दी जानी चाहिए।
प्रिंस मेरी बात सुन ही नहीं रहे थे, और जब मैंने अपनी बात खत्म की तो उन्होंने कहा, "अग, मंडेला, आपकी पत्नी सिर्फ पब्लिसिटी के लिए ऐसा कर रही हैं।" मैंने उन्हें बताया कि मुझे उनकी यह टिप्पणी बुरी लगी, और मेरे बोलने से पहले ही उन्होंने मेरी पत्नी के बारे में कुछ ऐसा अपमानजनक और निंदनीय कह दिया कि मुझे तुरंत गुस्सा आ गया।
मैं अपनी कुर्सी से उठा और लेफ्टिनेंट की ओर डेस्क के चारों ओर बढ़ने लगा। प्रिंस पीछे हटने लगा, लेकिन मैंने तुरंत खुद को रोक लिया। मुक्कों से उस पर हमला करने के बजाय, जैसा कि मेरा मन कर रहा था, मैंने उसे शब्दों से करारा जवाब दिया। मैं गाली-गलौज या अपशब्दों का समर्थक नहीं हूँ, लेकिन उस दिन मैंने अपने ही सिद्धांत का उल्लंघन किया। मैंने उससे कहा कि वह एक नीच और सम्मानहीन व्यक्ति है, और अगर उसने कभी भी वही शब्द दोहराए तो मैं उस दिन की तरह खुद को नहीं रोकूंगा।
जब मेरा काम खत्म हो गया, तो मैं मुड़ी और गुस्से में उसके दफ्तर से बाहर निकल गई। जाते समय मैंने कैथी और एडी डेनियल को बाहर देखा, लेकिन मैंने उन्हें नमस्कार तक नहीं किया और वापस अपनी कोठरी की ओर चल पड़ी। भले ही मैंने प्रिंस को चुप करा दिया था, लेकिन उसने मुझे अपने आत्म-नियंत्रण का उल्लंघन करने पर मजबूर कर दिया था और मैं इसे अपने प्रतिद्वंदी के हाथों हार मानती हूँ।

अगली सुबह नाश्ते के बाद, दो वार्डर मेरी कोठरी में आए और कहा कि मुझे मुख्यालय में बुलाया गया है। जब मैं कार्यालय पहुँचा, तो मुझे लगभग आधा दर्जन सशस्त्र वार्डरों ने घेर लिया। एक तरफ लेफ्टिनेंट प्रिंस थे और इस घेरे के बीच में एक वारंट अधिकारी था जो जेल का अभियोजक था। माहौल तनावपूर्ण था।

“अच्छा, मंडेला,” अभियोक्ता ने कहा, “मैंने सुना है कि कल आपने खूब मौज-मस्ती की, लेकिन आज का दिन इतना सुखद नहीं होगा। मैं आप पर जेल प्रमुख का अपमान करने और उन्हें धमकी देने का आरोप लगा रहा हूँ। यह एक गंभीर आरोप है।” फिर उन्होंने मुझे समन थमा दिया।
“क्या आपको कुछ कहना है?” उसने पूछा।
“नहीं,” मैंने जवाब दिया। “आप मेरे वकील से बात कर सकते हैं।” फिर मैंने वापस अपनी कोठरी में ले जाने का अनुरोध किया। प्रिंस ने एक शब्द भी नहीं कहा।

मुझे तुरंत पता चल गया कि मैं क्या करूँगा: लेफ्टिनेंट से लेकर न्याय मंत्री तक सभी पर कदाचार का आरोप लगाते हुए एक जवाबी मुकदमा तैयार करूँगा। मैं पूरी जेल प्रणाली को एक नस्लवादी संस्था के रूप में अभियोजित करूँगा जो श्वेत वर्चस्व को कायम रखने का प्रयास करती है। मैं इस मामले को चर्चित मुद्दा बनाऊँगा और उन्हें इस बात का पछतावा करवाऊँगा कि उन्होंने मुझ पर आरोप क्यों लगाया।
मैंने जॉर्ज बिज़ोस से मेरा प्रतिनिधित्व करने का अनुरोध किया और जल्द ही एक बैठक तय हो गई। जॉर्ज के आने से पहले मैंने अधिकारियों को सूचित किया कि मैं उन्हें लिखित निर्देश दूंगा। उन्होंने मुझसे पूछा कि क्यों, तो मैंने स्पष्ट रूप से उत्तर दिया कि मुझे लगता है कि परामर्श कक्ष में जासूसी उपकरण लगे हुए हैं। इसके बाद अधिकारियों ने मुझे लिखित बयान देने की अनुमति देने से इनकार कर दिया; मुझे मौखिक बयान देना होगा। मैंने उनसे कहा कि उन्हें अनुमति रोकने का कोई अधिकार नहीं है, और ऐसा करने से मेरे संदेह की पुष्टि ही हुई है।
असलियत यह थी कि अधिकारियों को डर था कि जॉर्ज लिखित बयान को प्रेस में लीक कर देगा। यह वास्तव में हमारी रणनीति का हिस्सा था। उन्हें इस बात की भी चिंता थी कि मैं लुसाका में ओलिवर से संवाद करने के लिए जॉर्ज का इस्तेमाल कर रहा था, और उन्हें लगा कि लिखित बयान में संवेदनशील जानकारी होगी। मैंने पहले भी जॉर्ज का इस्तेमाल ऐसे उद्देश्यों के लिए किया था, लेकिन उस दस्तावेज़ में ऐसी कोई सामग्री नहीं थी।

द्वीप की अनुशासनात्मक अदालत के लिए एक तारीख तय की गई और केप टाउन से एक मजिस्ट्रेट को नियुक्त किया गया। सुनवाई से एक दिन पहले, मुझे बताया गया कि मेरे वकील अगले दिन आ जाएँगे और मैं उन्हें अपना लिखित बयान देने के लिए स्वतंत्र रहूँगा। मैं सुबह मुख्यालय में जॉर्ज से मिला और अदालत की कार्यवाही शुरू होने से पहले हमने संक्षेप में परामर्श किया। लेकिन सुनवाई शुरू होते ही अभियोजक ने घोषणा कर दी कि जेल अपना मामला वापस ले रही है। न्यायाधीश ने कार्यवाही समाप्त करने की घोषणा की और अचानक कमरे से बाहर चले गए। जॉर्ज और मैंने आश्चर्य से एक-दूसरे को देखा और एक स्पष्ट जीत पर बधाई दी। मैं अपने कागजात समेट रहा था कि तभी एक और वारंट अधिकारी आया और मेरे लिखित बयान की ओर इशारा करते हुए बोला, "मुझे वह फाइल दो।"
मैंने यह कहते हुए इनकार कर दिया कि यह मेरे और मेरे वकील के बीच का गोपनीय मामला है। मैंने अभियोक्ता को बुलाया और कहा: “इस व्यक्ति को बता दीजिए कि ये दस्तावेज़ वकील-मुवक्किल विशेषाधिकार के अंतर्गत आते हैं, और मुझे इन्हें सौंपने की कोई आवश्यकता नहीं है।” अभियोक्ता ने उत्तर दिया कि वे विशेषाधिकार के अंतर्गत तो आते हैं, लेकिन मामला समाप्त हो चुका है, अदालत का सत्र समाप्त हो चुका है, और कमरे में केवल वारंट अधिकारी का ही अधिकार है। अधिकारी ने मेज से दस्तावेज़ उठा लिया। मैं उसे रोकने के लिए कुछ नहीं कर सका। मेरा मानना है कि अधिकारियों ने केवल उस दस्तावेज़ को हासिल करने के लिए मामला रद्द कर दिया — और जैसा कि उन्हें बाद में पता चला, उस दस्तावेज़ में ऐसा कुछ भी नहीं था जो उन्हें पहले से पता न हो।

यह कितना भी असंभव क्यों न लग रहा हो, द्वीप पर रहने के दौरान मैं लगातार भागने के बारे में सोचता रहा। मैक महाराज और एडी डेनियल, दोनों ही बहादुर और साधन संपन्न व्यक्ति थे, वे हमेशा योजनाएँ बनाते और संभावनाओं पर चर्चा करते रहते थे। उनमें से अधिकांश बहुत खतरनाक थीं, लेकिन इससे हमें उन पर विचार करने से नहीं रोका।
हमने कुछ तरक्की की थी। हमारे कुशल कारीगर जेफ मासेमोला ने एक ऐसी चाबी बना ली थी जिससे हमारे इलाके के ज़्यादातर दरवाज़े खुल जाते थे। एक दिन, एक वार्डर अपनी चाबी हमारे गलियारे के आखिर में स्थित दफ्तर की मेज़ पर छोड़

गया था। जेफ ने साबुन का एक टुकड़ा लेकर उस चाबी का निशान बनाया। उस निशान का इस्तेमाल करते हुए, उसने धातु का एक टुकड़ा लिया और उसे घिसकर चाबी का आकार दे दिया। इस चाबी से हमें अपनी कोठरियों के पीछे बने कुछ भंडारगृहों के साथ-साथ एकांतवास वाले हिस्से में भी जाने की सुविधा मिल गई। लेकिन हमने कभी भी उस चाबी का इस्तेमाल अपने इलाके से बाहर निकलने के लिए नहीं किया। आख़िरकार, रॉबेन द्वीप के चारों ओर समुद्र ही वह अभेद्य खाई थी जिसे पार करना नामुमकिन था।
1974 में, मैक को उस बाधा को पार करने का एक उपाय सूझा। हाल ही में उन्हें केप टाउन के एक दंत चिकित्सक के पास ले जाया गया था और उन्हें पता चला कि दंत चिकित्सक का एक जाने-माने राजनीतिक कैदी से वैवाहिक संबंध था। दंत चिकित्सक सहानुभूतिपूर्ण थे; उन्होंने मैक का इलाज तब तक करने से इनकार कर दिया जब तक कि उनके पैरों से हथकड़ियां नहीं हटा दी गईं। मैक ने यह भी देखा कि दंत चिकित्सक के दूसरी मंजिल पर स्थित प्रतीक्षालय की खिड़की से बस थोड़ी ही दूरी पर एक छोटी सी गली थी जहाँ से वे भाग सकते थे।
जब मैक लौटा, तो उसने हममें से कुछ लोगों से मुलाकात की और हमें दंत चिकित्सक से अपॉइंटमेंट लेने के लिए कहा। हमने ऐसा किया और पता चला कि मैक, विल्टन म्कवेई, मैं और एक अन्य कैदी के केप टाउन जाने का दिन तय हो चुका है। हम तीनों जाने के लिए तैयार थे, लेकिन जब मैक ने चौथे व्यक्ति से संपर्क किया, तो उसने मना कर दिया। हमें उस व्यक्ति की वफादारी पर संदेह था, और मुझे इस बात की चिंता थी कि उसे हमारी योजना के बारे में पता चल गया था।
हम तीनों को नाव से केप टाउन ले जाया गया और फिर कड़ी सुरक्षा के बीच दंत चिकित्सक के कार्यालय में ले जाया गया। हम तीनों ने सैनिक के रूप में प्रशिक्षण लिया था और शायद हमारे पास ही भागने का सबसे अच्छा मौका था। मैक के पास एक चाकू भी था और वह उसका इस्तेमाल करने के लिए तैयार था। दंत चिकित्सक के कार्यालय में, गार्डों ने पहले सभी अन्य मरीजों को बाहर निकाल दिया। हमने अपने पैरों में बंधी बेड़ियाँ हटाने की मांग की, और दंत चिकित्सक के सहयोग से, हमारे गार्डों ने उन्हें हटा दिया।
मैक हमें खिड़की के पास ले गया और उस गली की ओर इशारा किया जो हमारा भागने का रास्ता था। लेकिन गली को देखते ही मैक को कुछ अजीब लगा: हम केपटाउन के बीचोंबीच दिन के समय थे, फिर भी गली खाली थी। जब वह पहले यहाँ आया था, तब

गली गाड़ियों से भरी रहती थी। "यह सब साजिश है," मैक ने धीरे से कहा। मुझे भी लगा कि कुछ गड़बड़ है, और मैं मैक से सहमत हो गया। विल्टन, जिसका उत्साह चरम पर था, ने कहा कि मैक बकवास कर रहा है। "मदीबा, तुम घबरा रहे हो," उसने कहा। लेकिन मैं मैक से सहमत था, और हम तीनों ने बस अपने दांतों की जांच करवा ली। दंत चिकित्सक को यह जानने की उत्सुकता थी कि मैं क्यों आया हूँ, क्योंकि मेरे दांत तो बिल्कुल ठीक थे।

मैक ने जहां सबसे व्यावहारिक भागने की योजनाओं पर विचार किया, वहीं एडी डेनियल ने सबसे कल्पनाशील योजनाएँ बनाईं। शुरुआती वर्षों में, द्वीप के ऊपर से हवाई जहाज़ों को उड़ने की अनुमति नहीं थी। लेकिन 1970 के दशक के मध्य तक, हमने देखा कि न केवल हवाई जहाज़ हमारे सिर के ऊपर से उड़ रहे थे, बल्कि तट से दूर जाने वाले टैंकरों से आने-जाने वाले हेलीकॉप्टर भी दिखाई दे रहे थे। एडी मेरे पास एक योजना लेकर आया जिसमें संगठन द्वारा दक्षिण अफ़्रीकी सैन्य रंगों से रंगे एक हेलीकॉप्टर का उपयोग करके मुझे द्वीप से लेने और फिर केप टाउन में एक मित्रवत विदेशी दूतावास की छत पर छोड़ने की बात थी, जहाँ मैं शरण मांगूंगा। यह एक बुरी योजना नहीं थी, और मैंने एडी से कहा कि वह इस सुझाव को चुपके से लुसाका में ओलिवर तक पहुंचा दे। एडी अपना विचार लुसाका तक पहुंचाने में कामयाब तो हो गया, लेकिन हमें कभी कोई जवाब नहीं मिला।

78

रॉबेन द्वीप पर जन्मदिन समारोह बहुत ही सादे ढंग से मनाए जाते थे। केक और उपहारों के बजाय, हम अपना बचा हुआ खाना इकट्ठा करते थे और जन्मदिन मनाने वाले व्यक्ति को ब्रेड का एक अतिरिक्त टुकड़ा या एक कप कॉफी भेंट करते थे। फिकिले बाम और मेरा जन्म एक ही तारीख, 18 जुलाई को हुआ था, और मैं क्रिसमस पर खरीदी गई कुछ मिठाइयाँ हम दोनों के लिए बचाकर रखती थी ताकि हम अपनी सालगिरह पर उन्हें आपस में बाँट सकें। 1968 में मेरा पचासवाँ जन्मदिन बिना किसी खास धूमधाम के बीत गया, लेकिन 1975 में, जब मैं सत्तावन वर्ष की हुई, तो वाल्टर और कैथी मेरे पास एक दीर्घकालिक योजना लेकर आए जिससे मेरा साठवाँ जन्मदिन और भी यादगार बन सके।
हमारे लिए हमेशा से एक चिंता का विषय रहा है कि संघर्ष के विचार को जनता के सामने कैसे रखा जाए। पिछले दशक में सरकार ने अधिकांश क्रांतिकारी प्रेस को चुप करा दिया था, और प्रतिबंधित या जेल में बंद व्यक्तियों के शब्दों या चित्रों को प्रकाशित करने पर रोक लगी हुई थी। मेरे या मेरे सहयोगियों की एक तस्वीर भी प्रकाशित करने पर संपादक को जेल हो सकती थी और उसका अखबार बंद किया जा सकता था।
एक दिन, कैथी, वाल्टर और मैं आंगन में बातें कर रहे थे, तभी उन्होंने सुझाव दिया कि मुझे अपनी आत्मकथा लिखनी चाहिए। कैथी ने कहा कि ऐसी किताब प्रकाशित करने का सबसे सही समय मेरा साठवाँ जन्मदिन होगा। वाल्टर ने कहा कि अगर ऐसी कहानी सच्चाई और निष्पक्षता से बताई जाए, तो यह लोगों को याद दिलाएगी कि हमने किस लिए लड़ाई लड़ी थी और अभी भी लड़ रहे हैं। उन्होंने आगे कहा कि यह युवा स्वतंत्रता सेनानियों के लिए प्रेरणा का स्रोत बन सकती है। यह विचार मुझे अच्छा लगा, और बाद में हुई चर्चा में मैंने इस पर सहमति जताई।
जब मैं कुछ करने का फैसला करता हूँ, तो मैं तुरंत शुरू करना पसंद करता हूँ, और मैंने इस नए प्रोजेक्ट में भी खुद को पूरी तरह झोंक दिया। मैंने एक असामान्य कार्य योजना अपनाई: मैं रात भर लिखता और दिन में सोता। पहले एक-दो हफ़्ते, मैं रात के खाने के बाद झपकी लेता, सुबह दस बजे उठता और फिर नाश्ते के समय तक लिखता रहता। खदान में काम करने के बाद, मैं रात के खाने

तक सोता और फिर यही प्रक्रिया दोहराता। कुछ हफ़्तों बाद, मैंने अधिकारियों को सूचित किया कि मेरी तबीयत ठीक नहीं है और मैं खदान नहीं जा पाऊँगा। उन्हें कोई परवाह नहीं थी, और उसके बाद से मैं दिन भर आराम से सो पाता था।
हमने पांडुलिपि को संसाधित करने के लिए एक व्यवस्थित प्रक्रिया बनाई। हर दिन मैं अपना लिखा हुआ कैथी को देता था, जो पांडुलिपि की समीक्षा करती थी और फिर उसे वाल्टर को पढ़कर सुनाती थी। कैथी फिर हाशिये में अपनी टिप्पणियाँ लिखती थी। वाल्टर और कैथी ने मेरी आलोचना करने में कभी संकोच नहीं किया, और मैंने उनके सुझावों को गंभीरता से लिया, अक्सर उनके बदलावों को शामिल भी किया। फिर इस संशोधित पांडुलिपि को लालू चिबा को दिया गया, जिन्होंने अगली रात मेरी लिखावट को अपनी लगभग सूक्ष्म लिखावट में बदलने में बिताई, जिससे दस पन्नों के बड़े कागज को एक छोटे से कागज में समेट दिया गया। पांडुलिपि को बाहरी दुनिया तक पहुँचाने का काम मैक का था।
वार्डरों को शक हुआ। वे मैक के पास गए और बोले, “मंडेला क्या कर रहे हैं? वो इतनी रात को क्यों जाग रहे हैं?” लेकिन मैक ने बस कंधे उचका दिए और कहा कि उन्हें कोई जानकारी नहीं है। मैंने तेज़ी से लिखना शुरू किया और चार महीनों में मसौदा पूरा कर लिया। मैंने एक भी शब्द या वाक्यांश चुनने में संकोच नहीं किया। मैंने अपने जन्म से लेकर रिवोनिया मुकदमे तक की अवधि को शामिल किया और रॉबेन द्वीप के बारे में कुछ टिप्पणियों के साथ इसे समाप्त किया।
लिखते समय मैंने अपने अनुभवों को फिर से जी लिया। उन रातों में, जब मैं चुपचाप लिख रहा था, मैं कुनु और म्केकेज़वेनी में अपने बचपन के दृश्यों और ध्वनियों को फिर से महसूस कर सकता था; जोहान्सबर्ग आने का उत्साह और भय; यूथ लीग के तूफान; राजद्रोह मुकदमे की अंतहीन देरी; रिवोनिया का नाटकीय घटनाक्रम। यह एक जागते हुए सपने जैसा था और मैंने इसे यथासंभव सरलता और सच्चाई से कागज पर उतारने का प्रयास किया।

मैक ने बड़ी चतुराई से पांडुलिपि की प्रतिलिपि को अपनी पढ़ाई के लिए इस्तेमाल होने वाली कई नोटबुकों की जिल्दों के भीतर छिपा दिया। इस तरह, वह

पूरे पाठ को अधिकारियों से सुरक्षित रखने और 1976 में रिहा होने पर उसे चुपके से बाहर निकालने में कामयाब रहा। समझौता यह था कि पांडुलिपि के देश से सुरक्षित बाहर पहुँचने पर मैक गुप्त रूप से सूचना देगा; तभी हम मूल प्रति को नष्ट करेंगे। इस बीच, हमें पाँच सौ पृष्ठों की पांडुलिपि का निपटान करना था। हमने वही किया जो हम कर सकते थे: हमने उसे आंगन के बगीचे में दफना दिया। आंगन में निगरानी लापरवाह और अनियमित हो गई थी। वार्डर आमतौर पर उत्तरी छोर पर एक कार्यालय में बैठकर आपस में बातें करते थे। उस कार्यालय से, वे एकांत क्षेत्र के बगल में स्थित दक्षिणी छोर को नहीं देख सकते थे जहाँ एक छोटा सा बगीचा था। मैंने अपनी सुबह की सैर के दौरान इस क्षेत्र का निरीक्षण किया था, और यहीं मैंने पांडुलिपि को दफनाने का निर्णय लिया।
बहुत बड़ा गड्ढा खोदने से बचने के लिए, हमने पांडुलिपि को तीन अलग-अलग जगहों पर दफनाने का फैसला किया। हमने इसे दो छोटे और एक बड़े हिस्से में बाँटा, हर हिस्से को प्लास्टिक में लपेटा और खाली कोको के डिब्बों में रख दिया। काम जल्दी करना था, इसलिए मैंने जेफ मासेमोला से खुदाई के औजार बनाने को कहा। कुछ ही दिनों में मेरे पास कई नुकीले लोहे के खंभे तैयार हो गए।
एक सुबह नाश्ते के बाद, कैथी, वाल्टर, एडी डेनियल और मैं आंगन के दक्षिणी छोर पर स्थित बगीचे में चले गए, जहाँ हम सब राजनीतिक चर्चा करते हुए प्रतीत हो रहे थे। हममें से हर किसी ने पांडुलिपि के कुछ हिस्से अपनी कमीज़ों में छिपा रखे थे। मेरे इशारे पर हम नीचे बैठ गए और खुदाई शुरू कर दी। मैंने बीच में, नाली के पाइप से जुड़े एक मैनहोल के ढक्कन के पास खुदाई शुरू की। पाइप तक पहुँचकर मैंने उसके नीचे एक जगह बनाई और वहीं मैंने तीनों डिब्बों में से सबसे बड़ा डिब्बा रख दिया। बाकी लोगों ने अपने-अपने हिस्से रखने के लिए दो कम गहरे गड्ढे खोदे।
हम ठीक समय पर काम खत्म करके खदान की ओर जाने वाली अपनी यात्रा के लिए कतार में लग गए। उस सुबह चलते हुए मुझे इस बात की राहत महसूस हुई कि पांडुलिपि सुरक्षित रूप से छिपा दी गई है। फिर मैंने इसके बारे में और नहीं सोचा।

डिब्बे बचा लिए थे, और मैंने उस दिन काम करते समय पांडुलिपि के बचे हुए हिस्से के बारे में ज्यादा न सोचने की कोशिश की।

उस दोपहर जब हम पत्थर की खदान से लौटे, तो मैंने हमेशा की तरह हाथ-मुँह धोने के बजाय, आँगन के दूसरे छोर की ओर टहलते हुए जाने का फैसला किया। मैंने यथासंभव सहज दिखने की कोशिश की, लेकिन जो मैंने देखा उससे मैं भयभीत हो गया। कैदियों ने एकांतवास कक्ष की दीवार के समानांतर एक खाई खोदी थी और पाइप को पूरी तरह से निकाल दिया था। वे पांडुलिपि को उजागर किए बिना नहीं रह सकते थे।
मैं शायद सहम गया था या किसी तरह से प्रतिक्रिया दी होगी जो किसी को भी नज़र आ गई होगी। मुझे पता नहीं था कि कई सुरक्षाकर्मी मुझे देख रहे थे, जिन्होंने बाद में बताया कि मेरी प्रतिक्रिया से यह पुष्टि हो गई कि मुझे पता था कि वहाँ एक पांडुलिपि थी। मैं हाथ-मुँह धोने के लिए गलियारे में लौटा और वाल्टर और कैथी को बताया कि मुझे शक है कि पांडुलिपि मिल गई है। इस बीच एडी ने बाकी दो टुकड़ों को सफलतापूर्वक ठिकाने लगा दिया था।
अगली सुबह तड़के मुझे कमांडिंग ऑफिसर से मिलने के लिए कार्यालय बुलाया गया। उनके बगल में एक उच्च पदस्थ जेल अधिकारी खड़े थे जो अभी-अभी प्रिटोरिया से आए थे। बिना किसी अभिवादन के, कमांडिंग ऑफिसर ने घोषणा की: "मंडेला, हमें आपकी पांडुलिपि मिल गई है।"
मैंने कोई जवाब नहीं दिया। तभी कमांडिंग ऑफिसर ने अपनी डेस्क के पीछे हाथ बढ़ाया और कागजों का एक बंडल निकाला।
“यह तुम्हारी लिखावट है ना?” उसने पूछा। मैं फिर चुप रहा।
कमांडर ने कुछ झुंझलाहट के साथ कहा, "मंडेला, हम जानते हैं कि यह तुम्हारा काम है।"
“ठीक है,” मैंने उत्तर दिया, “आपको इसका कोई प्रमाण प्रस्तुत करना होगा।” उन्होंने इस पर उपहास किया और कहा कि वे जानते हैं कि हाशिये में लिखे गए ये संकेत वाल्टर सिसुलु और अहमद कथराडा ने लिखे थे। मैंने फिर कहा कि यदि वे कोई दंड लगाने जा रहे हैं तो उन्हें प्रमाण प्रस्तुत करना ही होगा। कमांडर ने कहा, "हमें सबूत की जरूरत नहीं है। हमारे पास सबूत हैं।"

हालांकि उस दिन उन्होंने कोई जुर्माना नहीं लगाया, लेकिन कुछ ही समय बाद वाल्टर, कैथी और मुझे जेलों के उप आयुक्त जनरल रू के सामने पेश किया गया, जिन्होंने हमें बताया कि हमने पांडुलिपि को अवैध रूप से लिखने के लिए अपने अध्ययन विशेषाधिकारों का दुरुपयोग किया था। उस अपराध के लिए, हमारे अध्ययन विशेषाधिकार अनिश्चित काल के लिए निलंबित किए जा रहे थे। अंततः, हमने चार साल के लिए अध्ययन विशेषाधिकार खो दिए।

दिसंबर में रिहा होने के बाद मैक ने नोटबुक इंग्लैंड भेज दीं। अगले छह महीने उन्होंने दक्षिण अफ्रीका में नजरबंद रहकर बिताए, फिर चुपके से देश से निकलकर पहले ओलिवर से मिलने लुसाका गए और उसके बाद लंदन चले गए। वहां वे छह महीने तक रहे; एक टाइपिस्ट की मदद से उन्होंने पांडुलिपि को फिर से तैयार किया और उसकी एक प्रति बनाई। इसके बाद वे लुसाका लौट आए और ओलिवर को उसकी एक प्रति भेंट की।
उसके बाद मामला ठंडा पड़ गया। लुसाका से पांडुलिपि के बारे में मुझे कोई सूचना नहीं मिली और मुझे अभी भी ठीक से नहीं पता कि ओलिवर ने उसका क्या किया। हालाँकि यह मेरे जेल में रहने के दौरान प्रकाशित नहीं हुई, लेकिन यह मेरी आत्मकथा का मुख्य आधार है।

79

1976 ███, ████ ██ ████████ ████████ ██ ████ ████: ███ ██████ ██ ████████████ ██ ████████████ ██ ██ ██████ ████ ████ ██████ ████ ████ ███ ██████ ▯ ████ ███ ████ ██ ████ ███ ████████████ ██, ████ ██████ ██████ ██ ██████ ██ ████ ██ ████ ██ ██ ██ ████ ███ ████ ███-███ ███ ▯ ███ ██ ██ ██ ████ ███ ███ ██ ███ ████ ████ ███ ████ ████ ██ "████-████████" ████████████ ██ ███ ████ ██ ███ ████ ██████ ██ ██████ ██ ███ ███ ███ ████ ██ ████ ██████ ██████ ██████████ ██, ████ ███████ ████ ████ ██ ███ ████ ██████ ███ ██. ██. ████████████ ██ ███ ██, ██████████ ████ ████ ██ ████ ███ ███ ███████ ██ ████████████ ███ ████ ███ ████ ███ ███ ██ ████ ███████ ██ ███ ██ ███ ████ ████ ███ ███ ██, "███████, ████ ██████████ ████ ████ ████ ██████"
███ ███ ██ ████ ██████ ██ ███ ███ ████████ ██ ███ ███ ██ ██ ████-████, ████ ████ ██, ███████ ██████ ██ ████ ████ ██████ ██, ████ ████ ███████ ████ ███ ████ ██ ████ ██ ████ ████████ ███ ████ ██ ██ ██ ████ ██ ███ ███ ████, ██ ████ ███ ██ ████ ██ ███ ████ ████ ████ ██████ 1969 ███ ████ ██ ██ ████ ██ ███ ██████ ███ ████ ██, ████ ███ ████ ████ ███ ███ ████████ ██ ████ ████ ████ ███ ████ ████ ██ ████ ██████ ██ ███████ ██ ████ ████, ██ ██ ███ ███ ███████ ██ ██ ████████ ████ ███, ██████ ████, ██ ██████ ████ ███ ██ ████ ███ ████ ██ ███████ ████ ████ ████ ██████ ██ ██ ██ ████ ██████ ███ ███, "████, ███ ██ ████ ██████████ ██!"
███ ████ ██████ ████ ████ ██ ██████ ██ ████ ██ ██████ ██████ ██ ██████ ██ ████ ███ ████-████ ████ ████ ████ ██ ██████ ██ ██ ██████ ████ ██ ████ ███ ████ ███ ██ ████ ███ ██, ██ ██ ███ ██ ██████ ███ ██ ██ ██████████ ████ ██ ██████████ ██ ██ ████ ███ ██ ████ ██████ ████ ██ ████ ████ ████ ██████ ██ ████ ████ ██████ ██, ██ ██ ████ ██ ███ ████ ██████ ███ ██████ ██████ ██ ██████ ████ ██████ ████████ ████ ████ ███████ ██ ████ ████████

फ्रीडम चार्टर के बारे में कभी सुना ही नहीं था। मुझे यह बात बहुत अजीब लगी कि एक कैबिनेट मंत्री इतना अनभिज्ञ हो सकता है। फिर भी मुझे आश्चर्य नहीं होना चाहिए था; राष्ट्रवादी राजनेता अक्सर उन चीजों की निंदा करते हैं जिन्हें वे समझते नहीं हैं।
मैंने अपनी रिहाई का मुद्दा उठाया और उन्हें 1914 के अफ़्रीकानर विद्रोहियों का मामला याद दिलाया, जिन्होंने संसद में प्रतिनिधित्व होने, बैठकें करने और मतदान करने के बावजूद हिंसा का सहारा लिया था। जनरल डी वेट और जनरल केम्प ने बारह हज़ार सैनिकों की सेना का नेतृत्व किया था, कई शहरों पर कब्ज़ा किया था और कई लोगों की जान ली थी, फिर भी राजद्रोह के आरोप में दोषी ठहराए जाने के तुरंत बाद उन्हें रिहा कर दिया गया था। मैंने रोबे लीब्रैंड्ट का भी ज़िक्र किया, जिन्होंने द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान मित्र देशों को दक्षिण अफ्रीका के समर्थन का विरोध करने के लिए एक भूमिगत संगठन बनाया था; उन्हें आजीवन कारावास की सज़ा सुनाई गई थी, लेकिन जल्द ही माफ़ कर दिया गया। क्रूगर अपने लोगों के इतिहास की इन घटनाओं से उतने ही अनभिज्ञ प्रतीत हुए, जितने कि स्वतंत्रता चार्टर से। उन लोगों से बातचीत करना मुश्किल है जो एक ही संदर्भ को साझा नहीं करते।
क्रूगर ने इन सब बातों को सिरे से खारिज कर दिया। उन्होंने कहा, "यह तो पुरानी बात हो गई।" वे एक स्पष्ट प्रस्ताव लेकर आए थे। अपने रूखे स्वभाव के बावजूद, उन्होंने विनम्रतापूर्वक अपना प्रस्ताव रखा। उन्होंने सीधे- सीधे कहा: यदि मैं ट्रांसकेई सरकार की वैधता को स्वीकार कर लूँ और वहाँ जाने को तैयार हो जाऊँ, तो मेरी सज़ा में भारी कमी कर दी जाएगी।
मैंने सम्मानपूर्वक उनकी बात सुनी जब तक कि उन्होंने अपनी बात पूरी नहीं कर ली। मैंने पहले कहा कि मैं बंटुस्तान नीति को पूरी तरह से अस्वीकार करता हूँ और इसका समर्थन करने के लिए कुछ भी नहीं करूँगा, और दूसरा, मैं जोहान्सबर्ग का निवासी हूँ और जोहान्सबर्ग ही लौटूँगा। क्रूगर ने मुझे समझाने की कोशिश की, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ। एक महीने बाद वह उसी प्रस्ताव के साथ वापस आए, और मैंने फिर से उन्हें ठुकरा दिया। यह एक ऐसा प्रस्ताव था जिसे केवल दलबदलू ही स्वीकार कर सकता था।

80

समाचार और जानकारी जुटाने में हम चाहे जितने भी सजग थे, समसामयिक घटनाओं के बारे में हमारा ज्ञान हमेशा अधूरा ही रहता था। बाहरी दुनिया की घटनाओं की जानकारी हमें सबसे पहले अफवाहों के माध्यम से ही मिलती थी; बाद में ही किसी समाचार पत्र या किसी बाहरी आगंतुक द्वारा इसकी पुष्टि हो पाती थी। जून 1976 में, हमें देश में एक बड़े विद्रोह की अस्पष्ट खबरें मिलने लगीं। ये अफवाहें मनगढ़ंत और अविश्वसनीय थीं: सोवेटो के युवाओं ने सेना को उखाड़ फेंका था और सैनिकों ने अपने हथियार डाल दिए थे और भाग गए थे। असली सच्चाई तब पता चली जब 16 जून के विद्रोह में शामिल पहले युवा कैदी अगस्त में रॉबेन द्वीप पर पहुंचने लगे।
16 जून 1976 को, पंद्रह हज़ार स्कूली बच्चे सोवेटो में इकट्ठा हुए और सरकार के उस आदेश का विरोध किया जिसमें माध्यमिक विद्यालयों की आधी कक्षाओं को अफ़्रीकान्स भाषा में पढ़ाने का निर्देश दिया गया था। छात्र उस भाषा में पढ़ना नहीं चाहते थे और शिक्षक उस भाषा में पढ़ाना नहीं चाहते थे जो उत्पीड़क की भाषा थी। माता-पिता और शिक्षकों की गुहार और याचिकाएँ अनसुनी कर दी गईं। पुलिस की एक टुकड़ी ने उत्साही स्कूली बच्चों की इस भीड़ का सामना किया और बिना किसी चेतावनी के गोलियाँ चला दीं, जिसमें तेरह वर्षीय हेक्टर पीटरसन और कई अन्य लोग मारे गए। बच्चों ने लाठियों और पत्थरों से मुकाबला किया और बड़े पैमाने पर अराजकता फैल गई, जिसमें सैकड़ों बच्चे घायल हो गए और दो श्वेत पुरुषों को पत्थर मारकर मौत के घाट उतार दिया गया।
उस दिन की घटनाओं की गूंज दक्षिण अफ्रीका के हर कस्बे और बस्ती में सुनाई दी। इस विद्रोह ने पूरे देश में दंगे और हिंसा को जन्म दिया। राज्य हिंसा के पीड़ितों के सामूहिक अंत्येष्टि समारोह राष्ट्रीय एकजुटता का केंद्र बन गए। अचानक दक्षिण अफ्रीका के युवा विरोध और विद्रोह की भावना से भर उठे। छात्रों ने पूरे देश में स्कूलों का बहिष्कार किया। एएनसी के आयोजकों ने छात्रों के साथ मिलकर विरोध प्रदर्शन में सक्रिय रूप से भाग लिया। बंटू शिक्षा अपने रचनाकारों के लिए ही मुसीबत बन गई थी, क्योंकि ये क्रोधित और साहसी युवा उसी की संतान थे।

सितंबर में, एकांतवास कक्ष उन युवकों से भरा हुआ था जिन्हें विद्रोह के बाद गिरफ्तार किया गया था। पास के गलियारे में दबी आवाज़ में हुई बातचीत से हमें प्रत्यक्ष रूप से पता चला कि क्या हुआ था। मेरे साथियों और मुझे बहुत उत्साह मिला; 1960 के दशक में सुप्त प्रतीत होने वाली जन विरोध की भावना 1970 के दशक में फूट पड़ी थी। इनमें से कई युवक हमारे सैन्य आंदोलन में शामिल होने के लिए देश छोड़कर चले गए थे, और फिर चुपके से वापस घर आ गए थे। उनमें से हजारों को तंजानिया, अंगोला और मोज़ाम्बिक में हमारे शिविरों में प्रशिक्षित किया गया था। जेल में रहते हुए इससे ज्यादा उत्साहवर्धक कुछ नहीं होता कि बाहर के लोग उस उद्देश्य का समर्थन कर रहे हैं जिसके लिए आप अंदर हैं।
ये नौजवान कैदी उन कैदियों से बिल्कुल अलग थे जिन्हें हमने पहले कभी देखा था। वे बहादुर, विद्रोही और आक्रामक थे; वे आदेश नहीं मानते थे और हर मौके पर "अमांदला!" चिल्लाते थे। उनका स्वभाव सहयोग करने के बजाय टकराव करना था। अधिकारियों को समझ नहीं आ रहा था कि उनसे कैसे निपटा जाए और उन्होंने पूरे द्वीप में हंगामा मचा दिया। रिवोनिया मुकदमे के दौरान, मैंने एक सुरक्षा पुलिसकर्मी से कहा था कि अगर सरकार ने खुद को नहीं सुधारा, तो हमारे बाद आने वाले स्वतंत्रता सेनानी एक दिन अधिकारियों को हमारे लिए तरसा देंगे। रॉबेन द्वीप पर वह दिन सचमुच आ गया था।
इन नौजवानों में हमें उस दौर की उग्र क्रांतिकारी भावना दिखाई दी। मुझे कुछ हद तक पहले से ही आगाह हो गया था। कुछ महीने पहले विनी से मुलाकात के दौरान, उसने सांकेतिक भाषा में बातचीत के ज़रिए मुझे बताया था कि असंतुष्ट युवाओं का एक उभरता हुआ वर्ग है जो उग्रवादी और अफ्रीकी विचारधारा से प्रेरित है। उसने कहा था कि वे संघर्ष की प्रकृति को बदल रहे हैं और मुझे उनके बारे में जागरूक रहना चाहिए।
नए कैदी द्वीप की बर्बर परिस्थितियों को देखकर स्तब्ध रह गए और कहने लगे कि वे समझ नहीं पा रहे हैं कि हम इस तरह कैसे रह सकते हैं। हमने उनसे कहा कि उन्हें 1964 में द्वीप देखना चाहिए था। लेकिन वे अधिकारियों की तरह ही हम पर भी संदेह कर रहे थे। उन्होंने अनुशासन बनाए रखने की हमारी अपील को अनसुना कर दिया और हमारी सलाह को कमजोर और बेअसर समझा।

यह स्पष्ट था कि वे हमें, रिवोनिया मुकदमे के प्रतिभागियों को, उदारवादी समझते थे। इतने वर्षों तक कट्टरपंथी क्रांतिकारी कहलाने के बाद, उदारवादी कहलाना एक नया और कुछ हद तक अप्रिय अनुभव था। मैं जानता था कि मैं दो तरीकों से प्रतिक्रिया दे सकता था: या तो मैं उनकी धृष्टता के लिए उन्हें फटकार लगा सकता था या मैं उनकी बातें सुन सकता था। मैंने दूसरा विकल्प चुना।
जब दक्षिण अफ्रीकी छात्र संगठन के स्ट्रिनी मूडली और ब्लैक पीपुल्स कन्वेंशन के साथ्स कूपर जैसे कुछ लोग हमारे समूह में आए, तो मैंने उनसे उनके आंदोलन और दर्शन पर शोधपत्र प्रस्तुत करने को कहा। मैं जानना चाहता था कि किस बात ने उन्हें संघर्ष की ओर प्रेरित किया, किस बात ने उन्हें आगे बढ़ाया और भविष्य के लिए उनके क्या विचार थे।
द्वीप पर उनके पहुँचने के कुछ ही समय बाद, कमान अधिकारी मेरे पास आए और मुझसे निवेदन किया कि मैं उन युवकों को संबोधित करूँ। वे चाहते थे कि मैं उनसे कहूँ कि वे संयम बरतें, यह समझें कि वे जेल में हैं और जेल जीवन के अनुशासन को स्वीकार करें। मैंने उनसे कहा कि मैं ऐसा करने के लिए तैयार नहीं हूँ। इन परिस्थितियों में, वे मुझे उत्पीड़क का सहयोगी समझते।

ये लोग जेल के बुनियादी नियमों का भी पालन करने से इनकार कर रहे थे। एक दिन मैं हेड ऑफिस में कमांडिंग ऑफिसर से बात कर रहा था। जब मैं मेजर के साथ बाहर निकल रहा था, तो हमने एक युवा कैदी को जेल अधिकारी द्वारा पूछताछ करते हुए देखा। अठारह वर्ष से अधिक आयु का वह युवक वरिष्ठ अधिकारियों की उपस्थिति में जेल की टोपी पहने हुए था, जो नियमों का उल्लंघन था। मेजर के कमरे में प्रवेश करने पर भी वह खड़ा नहीं हुआ, यह भी एक उल्लंघन था।
मेजर ने उसकी ओर देखा और कहा, "कृपया अपनी टोपी उतार दो।" कैदी ने उसकी बात अनसुनी कर दी। फिर चिड़चिड़े स्वर में मेजर ने फिर कहा, "अपनी टोपी उतारो।" कैदी ने मेजर की ओर मुड़कर देखा और पूछा, "किसलिए?"
मुझे यकीन ही नहीं हो रहा था कि मैंने अभी क्या सुना। यह एक क्रांतिकारी सवाल था: किसलिए? मेजर भी अचंभित लग रहे थे, लेकिन उन्होंने किसी तरह जवाब दिया। उन्होंने कहा, "यह नियमों के खिलाफ है।" युवा कैदी ने पूछा, "यह नियम

क्यों है? इसका उद्देश्य क्या है?" कैदी के इस सवाल से मेजर तंग आ गए और गुस्से में कमरे से बाहर निकल गए, यह कहते हुए, "मंडेला, तुम उससे बात करो।" लेकिन मैंने उनकी तरफ से हस्तक्षेप नहीं किया और कैदी की ओर झुककर उन्हें यह जता दिया कि मैं उनके साथ हूँ।

* * *

यह अश्वेत चेतना आंदोलन से हमारा पहला परिचय था। एएनसी, पीएसी और कम्युनिस्ट पार्टी पर प्रतिबंध लगने के बाद, अश्वेत चेतना आंदोलन ने युवाओं के बीच पैदा हुए खालीपन को भरने में मदद की। अश्वेत चेतना एक आंदोलन से कहीं अधिक एक दर्शन था और इसका विकास इस विचार से हुआ कि अश्वेतों को सबसे पहले तीन शताब्दियों के श्वेत शासन द्वारा पैदा की गई मनोवैज्ञानिक हीनता की भावना से खुद को मुक्त करना होगा। तभी लोग आत्मविश्वास से उठ खड़े हो सकते थे और वास्तव में दमन से खुद को मुक्त कर सकते थे। हालांकि अश्वेत चेतना आंदोलन ने एक गैर-नस्लीय समाज की वकालत की, लेकिन उन्होंने उस समाज को प्राप्त करने में श्वेतों की भूमिका को पूरी तरह से नकार दिया।
ये अवधारणाएँ मेरे लिए अपरिचित नहीं थीं: ये उन विचारों से काफी मिलती- जुलती थीं जो मैंने स्वयं पच्चीस वर्ष पहले एएनसी यूथ लीग की स्थापना के समय रखे थे। हम भी अफ्रीकीवादी थे; हम भी जातीय गौरव और नस्लीय आत्मविश्वास पर बल देते थे; हम भी संघर्ष में श्वेतों की सहायता को अस्वीकार करते थे। अनेक मायनों में, अश्वेत चेतना उसी समस्या के प्रति उसी प्रतिक्रिया का प्रतिनिधित्व करती थी जो कभी समाप्त नहीं हुई थी।
लेकिन जिस तरह हम यूथ लीग के अपने दृष्टिकोण से आगे बढ़ चुके थे, मुझे पूरा विश्वास था कि ये युवा अश्वेत चेतना की कुछ रूढ़ियों को तोड़ देंगे। उनकी जुझारू भावना से मैं उत्साहित तो था, लेकिन मुझे लगता था कि अश्वेतता पर केंद्रित उनका दर्शन संकीर्ण था और एक अपरिपक्व मध्यवर्ती दृष्टिकोण को दर्शाता था। मैंने अपनी भूमिका एक ऐसे अनुभवी नेता के रूप में देखी जो उन्हें कांग्रेस आंदोलन के अधिक समावेशी विचारों की ओर बढ़ने में मदद कर सकता था। मैं यह भी जानता था कि ये युवा अंततः निराश हो जाएंगे क्योंकि

अश्वेत चेतना ने उन्हें कोई कार्ययोजना या विरोध का कोई रास्ता नहीं दिया था।
हालांकि हमने बीसीएम के सदस्यों को एएनसी के लिए एक उपजाऊ ज़मीन के रूप में देखा, फिर भी हमने इन लोगों को भर्ती करने का प्रयास नहीं किया। हम जानते थे कि इससे वे और द्वीप पर मौजूद अन्य पार्टियां दोनों हमसे दूर हो जाएंगी। हमारी नीति मित्रतापूर्ण व्यवहार करने, रुचि दिखाने, उनकी उपलब्धियों की सराहना करने की थी, लेकिन उन्हें अपने दल में शामिल करने का प्रयास नहीं करना था। यदि वे हमारे पास आकर प्रश्न पूछते — “बंटुस्टान पर एएनसी की नीति क्या है?” “स्वतंत्रता चार्टर राष्ट्रीयकरण के बारे में क्या कहता है?” — तो हम उन्हें उत्तर देते — और उनमें से बहुत से लोग प्रश्न लेकर हमारे पास आए भी।
मैंने खुद भी कुछ लोगों से गुप्त रूप से चिट्ठियाँ भेजकर संपर्क किया। मैंने ट्रांसकेई के कुछ लोगों से बात की और अपने पुराने घर के बारे में सवाल पूछे। वहाँ पहुँचने वाले कुछ लोग संघर्ष में पहले से ही जाने-माने थे। मैंने दक्षिण अफ्रीकी छात्र संगठन के नेता पैट्रिक "टेरर" लेकोटा की बहादुरी के बारे में सुना था और उन्हें रॉबेन द्वीप पर स्वागत का पत्र भेजा।
टेरर का उपनाम फुटबॉल के मैदान में उनकी महारत से पड़ा था, लेकिन वे बहस में भी उतने ही प्रभावशाली थे। नस्लीय अलगाव के मुद्दे पर वे अपने कुछ साथियों से असहमत थे और एएनसी के विचारों के करीब पहुँचते जा रहे थे। द्वीप पर पहुँचने के बाद, टेरर ने हमारे साथ जुड़ने का फैसला किया, लेकिन हमने उन्हें मना कर दिया - इसलिए नहीं कि हम उन्हें नहीं चाहते थे, बल्कि इसलिए कि हमें लगा कि ऐसा करने से आम सभा में तनाव पैदा हो जाएगा।
लेकिन टेरर ने हार नहीं मानी और सार्वजनिक रूप से एएनसी के प्रति अपनी निष्ठा बदल ली। कुछ ही समय बाद, एक दिन असंतुष्ट बीसी सदस्यों ने उन पर बगीचे के कांटे से हमला कर दिया। उनके इलाज के बाद, अधिकारियों ने हमलावरों पर आरोप लगाया और उन्हें मुकदमे में पेश करने की योजना बनाई। लेकिन सद्भाव बनाए रखने के लिए, हमने टेरर को शिकायत दर्ज न करने की सलाह दी। वह मान गए और उन्होंने अपने साथ हुए दुर्व्यवहार के खिलाफ गवाही देने से इनकार कर दिया। मामला खारिज कर दिया गया। मुझे लगा कि ऐसा मुकदमा केवल अधिकारियों के हित में ही होगा। मैं चाहता था कि ये युवा देखें कि एएनसी एक

विशाल मंच है जो अनेक विभिन्न विचारों और संबद्धताओं को समाहित कर सकता है।
उस घटना के बाद मानो मानो सारे द्वार खुल गए और दर्जनों बीसी पुरुषों ने एएनसी में शामिल होने का फैसला किया, जिनमें वे लोग भी शामिल थे जिन्होंने टेरर पर हमले की योजना बनाई थी। टेरर एएनसी के जनरल सेक्शन में शीर्ष पद तक पहुँच गया और जल्द ही अन्य कैदियों को एएनसी की नीतियाँ सिखाने लगा। लेकोटा जैसे लोगों के साहस और दूरदर्शिता ने हमें यह विश्वास दिलाया कि हमारे विचार अभी भी सशक्त हैं और मुक्ति संघर्ष को एकजुट करने की सबसे अच्छी उम्मीद का प्रतिनिधित्व करते हैं।

एफ और जी में राजनीतिक कलह जारी रही। हमें पता चला कि जनरल सेक्शन में एएनसी, पीएसी और बीसीएम के बीच झड़प हुई थी। कई एएनसी सदस्यों की पिटाई हुई थी। अधिकारियों ने बड़ी संख्या में एएनसी सदस्यों पर आरोप लगाए और द्वीप की प्रशासनिक अदालत में मुकदमा चलाने की तारीख तय की गई। एएनसी के लोगों ने मामले को संभालने के लिए एक बाहरी वकील नियुक्त किया। हालांकि मैंने लड़ाई नहीं देखी थी, फिर भी मुझे चरित्र गवाह बनने के लिए कहा गया। यह एक चिंताजनक स्थिति थी। हालांकि मैं अपने साथियों के लिए गवाही देने को तैयार था, लेकिन मैं ऐसा कोई कदम नहीं उठाना चाहता था जिससे एएनसी, पीएसी और बीसीएम के बीच कटुता और बढ़ जाए।
मैंने जेल में अपनी भूमिका को केवल एएनसी के नेता के रूप में ही नहीं, बल्कि एकता के समर्थक, एक ईमानदार मध्यस्थ और शांतिदूत के रूप में भी देखा, और मैं इस विवाद में किसी का पक्ष लेने से हिचकिचा रहा था, भले ही वह मेरे अपने संगठन का पक्ष ही क्यों न हो। यदि मैं एएनसी के पक्ष में गवाही देता, तो विभिन्न समूहों के बीच सुलह कराने की मेरी संभावनाएं खतरे में पड़ जातीं। यदि मैं एकता का उपदेश देता, तो मुझे एक एकजुटकर्ता की तरह कार्य करना पड़ता, भले ही इससे मेरे कुछ सहकर्मी मुझसे अलग हो जाएं।
मैंने गवाही न देने का फैसला किया। इससे मेरे कुछ सहकर्मी निराश हुए, लेकिन मुझे लगा कि यह मुद्दा इतना गंभीर है कि उनकी नाराज़गी का जोखिम

उठाना उचित है। युवा अश्वेत चेतना आंदोलन के सदस्यों को यह दिखाना अधिक महत्वपूर्ण था कि संघर्ष अविभाज्य है और हम सभी का शत्रु एक ही है।

81

इन युवा शेरों से निपटने की हड़बड़ी में, अधिकारियों ने हमें लगभग अपने हाल पर छोड़ दिया था। हम खदान में धीमी गति से काम कर रहे थे और हमारी मांग थी कि सभी प्रकार के शारीरिक श्रम को पूरी तरह समाप्त कर दिया जाए। हमारी मांग थी कि हमें अपने दिनों का सदुपयोग करने का अधिकार मिले, जैसे कि पढ़ाई करना या कोई हुनर सीखना। हमने खदान में काम करने का दिखावा भी छोड़ दिया था; हम बस आपस में बातें करते थे। 1977 की शुरुआत में, अधिकारियों ने शारीरिक श्रम समाप्त करने की घोषणा कर दी। इसके बजाय, हम अपने हिस्से में दिन बिता सकते थे। उन्होंने हमारे लिए आंगन में किसी प्रकार का काम तय किया, लेकिन यह उनकी हार को छिपाने का मात्र एक बहाना था।
यह जीत हमारे निरंतर विरोध प्रदर्शनों और साधारण व्यवस्था का संयुक्त परिणाम थी। अधिकारी आमतौर पर हर तीन कैदियों पर एक वार्डर रखना पसंद करते थे। सोवेटो कांड के बाद आए कैदियों के आने से पहले ही वार्डरों की कमी थी, और विद्रोही युवकों को और भी अधिक निगरानी की आवश्यकता थी। वे इतने साहसी थे कि ऐसा लगता था मानो हर किसी को अपना वार्डर चाहिए हो। अगर हम अपने क्षेत्र में रहते, तो हमें कम निगरानी की आवश्यकता होती।

शारीरिक श्रम का अंत मेरे लिए मुक्तिदायक था। अब मैं दिनभर पढ़ने, पत्र लिखने, अपने साथियों के साथ मुद्दों पर चर्चा करने या कानूनी दस्तावेज तैयार करने में बिता सकता था। इस खाली समय ने मुझे रॉबेन द्वीप पर अपने दो पसंदीदा शौक - बागवानी और टेनिस - को आगे बढ़ाने का अवसर दिया।
जेल में जीवित रहने के लिए, व्यक्ति को अपने दैनिक जीवन में संतुष्टि पाने के तरीके विकसित करने चाहिए। अपने कपड़ों को अच्छी तरह से धोकर, गलियारे को धूल-मुक्त करके, और अपनी कोठरी को यथासंभव व्यवस्थित करके व्यक्ति संतुष्टि का अनुभव कर सकता है। जेल के बाहर महत्वपूर्ण कार्यों में जो

गर्व महसूस होता है, वही गर्व जेल के अंदर छोटे-छोटे कामों में भी पाया जा सकता है।
रॉबेन द्वीप पर अपनी सजा के लगभग शुरू से ही, मैंने अधिकारियों से आंगन में बगीचा लगाने की अनुमति मांगी थी। कई वर्षों तक उन्होंने बिना कोई कारण बताए अनुमति देने से इनकार कर दिया। लेकिन अंततः वे मान गए, और हम दूर की दीवार से सटी एक संकरी जगह पर एक छोटा सा बगीचा बनाने में सफल रहे।
आंगन की मिट्टी सूखी और पथरीली थी। आंगन को एक कूड़े के ढेर के ऊपर बनाया गया था, और अपना बगीचा शुरू करने के लिए मुझे पौधों को बढ़ने के लिए जगह देने के लिए बहुत सारे पत्थर खोदने पड़े। उस समय, मेरे कुछ साथी मज़ाक में कहते थे कि मैं दिल से एक खनिक हूँ, क्योंकि मैं अपना दिन खदान में और खाली समय आंगन में खुदाई करते हुए बिताता था।
अधिकारियों ने मुझे बीज उपलब्ध कराए। मैंने शुरुआत में टमाटर, मिर्च और प्याज बोए - ये ऐसे पौधे थे जिन्हें उपजाऊ मिट्टी या लगातार देखभाल की आवश्यकता नहीं थी। शुरुआती फसलें अच्छी नहीं हुईं, लेकिन जल्द ही उनमें सुधार हो गया। अधिकारियों को अनुमति देने का कोई पछतावा नहीं था, क्योंकि एक बार जब बगीचा फलने-फूलने लगा, तो मैं अक्सर पहरेदारों को अपने कुछ बेहतरीन टमाटर और प्याज देता था।
मुझे बागवानी हमेशा से पसंद रही है, लेकिन जेल में रहने के दौरान ही मुझे अपना बगीचा संभालने का मौका मिला। बागवानी का मेरा पहला अनुभव फोर्ट हरे में हुआ, जहाँ विश्वविद्यालय के शारीरिक श्रम की अनिवार्यता के तहत मैंने अपने एक प्रोफेसर के बगीचे में काम किया और मिट्टी से जुड़ाव का आनंद लिया, जो मेरे बौद्धिक परिश्रम का एक उपचार था। जोहान्सबर्ग में पढ़ाई और फिर काम शुरू करने के बाद, मेरे पास बगीचा लगाने के लिए न तो समय था और न ही जगह।

मैंने बागवानी और उद्यान विज्ञान पर किताबें मंगवाना शुरू किया। मैंने बागवानी की विभिन्न तकनीकों और खाद के प्रकारों का अध्ययन किया। मेरे पास किताबों में वर्णित कई सामग्रियां नहीं थीं, लेकिन मैंने प्रयोग और गलतियों से सीखा। कुछ समय तक मैंने मूंगफली उगाने का प्रयास किया और

विभिन्न प्रकार की मिट्टी और खाद का प्रयोग किया, लेकिन अंततः मैंने हार मान ली। यह मेरी एकमात्र असफलता थी।
जेल में बाग-बगीचा उन कुछ चीजों में से एक था जिन पर किसी का नियंत्रण होता था। बीज बोना, उसे बढ़ते देखना, उसकी देखभाल करना और फिर फसल काटना एक सरल लेकिन स्थायी संतोष प्रदान करता था। धरती के इस छोटे से टुकड़े का संरक्षक होने का अहसास आजादी का एक छोटा सा अनुभव कराता था।
कुछ मायनों में, मैंने बगीचे को अपने जीवन के कुछ पहलुओं के प्रतीक के रूप में देखा। एक नेता को भी अपने बगीचे की देखभाल करनी पड़ती है; वह भी बीज बोता है, फिर उसकी देखभाल करता है, उसे सींचता है और फसल काटता है। माली की तरह, एक नेता को भी अपनी फसल की ज़िम्मेदारी लेनी चाहिए; उसे अपने काम पर ध्यान देना चाहिए, दुश्मनों को दूर भगाने की कोशिश करनी चाहिए, जो बचाया जा सकता है उसे बचाना चाहिए और जो सफल नहीं हो सकता उसे हटा देना चाहिए। मैंने विनी को एक बेहद खूबसूरत टमाटर के पौधे के बारे में दो पत्र लिखे, जिसमें मैंने बताया कि कैसे मैंने उसे एक नन्हे से पौधे से बड़े प्यार से एक मजबूत और गहरे लाल रंग के फल देने वाले पौधे में बदला। लेकिन फिर, शायद किसी गलती या देखभाल की कमी के कारण, पौधा मुरझाने लगा और मेरी हर कोशिश उसे हरा-भरा कर रही थी। जब वह आखिरकार मर गया, तो मैंने उसकी जड़ों को मिट्टी से निकाला, धोया और बगीचे के एक कोने में दबा दिया।
मैंने इस छोटी सी कहानी को बहुत विस्तार से सुनाया। मुझे नहीं पता उसने उस पत्र का क्या अर्थ निकाला, लेकिन जब मैंने इसे लिखा था तब मेरे मन में कई तरह की भावनाएँ थीं: मैं नहीं चाहती थी कि हमारा रिश्ता उस पौधे की तरह खत्म हो जाए, और फिर भी मुझे यह महसूस हो रहा था कि मैं अपने जीवन के कई सबसे महत्वपूर्ण रिश्तों को पोषित करने में असमर्थ रही हूँ। कभी-कभी जो चीज़ मरनी ही होती है उसे बचाने के लिए कुछ नहीं किया जा सकता।

शारीरिक श्रम छोड़ने का एक अप्रत्याशित परिणाम यह हुआ कि मेरा वजन बढ़ने लगा। हालांकि खदान में हम इतना ही काम करते थे कि पसीना आ जाए, लेकिन वहां तक पैदल जाना और वापस आना ही मुझे चुस्त-दुरुस्त रखने के लिए काफी था।

मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि व्यायाम न केवल शारीरिक स्वास्थ्य की कुंजी है, बल्कि मन की शांति के लिए भी आवश्यक है। पुराने दिनों में कई बार मैं अपना गुस्सा और निराशा किसी साथी या पुलिसकर्मी पर निकालने के बजाय पंचिंग बैग पर निकालता था। व्यायाम तनाव को कम करता है, और तनाव शांति का शत्रु है। मैंने पाया कि जब मैं शारीरिक रूप से स्वस्थ होता था, तो मैं बेहतर काम करता था और अधिक स्पष्ट रूप से सोचता था, इसलिए व्यायाम मेरे जीवन के अभिन्न अंग बन गया। जेल में, अपनी निराशाओं को व्यक्त करने का कोई न कोई तरीका होना अत्यंत आवश्यक था।
द्वीप पर भी, मैंने सोमवार से गुरुवार तक व्यायाम और मांसपेशियों को मजबूत करने की अपनी पुरानी बॉक्सिंग दिनचर्या का पालन करने की कोशिश की और फिर अगले तीन दिन आराम किया। सोमवार से गुरुवार तक, मैं सुबह अपनी कोठरी में पैंतालीस मिनट तक स्थिर दौड़ लगाता था। मैं सौ फिंगरटिप पुश-अप्स, दो सौ सिट-अप्स, पचास डीप नी बेंड्स और कई अन्य कसरत भी करता था।
अपने बच्चों को लिखे पत्रों में, मैं नियमित रूप से उन्हें व्यायाम करने, बास्केटबॉल, फ़ुटबॉल या टेनिस जैसे तेज़ गति वाले खेल खेलने के लिए प्रोत्साहित करता था, ताकि उनका ध्यान उन चीज़ों से हट जाए जो उन्हें परेशान कर रही हों। हालाँकि मैं अपने बच्चों को व्यायाम कराने में हमेशा सफल नहीं रहा, लेकिन मैं अपने कुछ सुस्त साथियों को प्रभावित करने में कामयाब रहा। मेरी उम्र और पीढ़ी के अफ़्रीकी पुरुषों के लिए व्यायाम करना असामान्य था। कुछ समय बाद, वाल्टर भी सुबह आंगन में कुछ चक्कर लगाने लगा। मुझे पता है कि मेरे कुछ युवा साथियों ने मुझे देखकर मन ही मन कहा होगा, "अगर वह बूढ़ा आदमी कर सकता है, तो मैं क्यों नहीं?" वे भी व्यायाम करने लगे।

बाहरी आगंतुकों और अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस के साथ अपनी शुरुआती मुलाकातों से ही मैंने उचित व्यायाम के लिए समय और सुविधाओं के महत्व पर जोर दिया था। 1970 के दशक के मध्य में ही, अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस के तत्वावधान में, हमें वॉलीबॉल उपकरण और पिंग-पोंग टेबल जैसी चीजें मिलनी शुरू हुईं।

लगभग उसी समय जब हमने पत्थर की खदान में काम खत्म किया, एक वार्डर को हमारे आंगन को टेनिस कोर्ट में बदलने का विचार आया। इसका आकार बिल्कुल सही था। सामान्य सेक्शन के कैदियों ने सीमेंट की सतह को हरे रंग से रंग दिया और फिर सफेद रेखाओं की पारंपरिक आकृति बनाई। कुछ दिनों बाद नेट लगा दिया गया और अचानक हमारे सामने वाले आंगन में हमारा अपना विंबलडन बन गया।
मैंने फोर्ट हरे में रहते हुए थोड़ा-बहुत टेनिस खेला था, लेकिन मैं किसी भी तरह से माहिर खिलाड़ी नहीं था। मेरा फोरहैंड अपेक्षाकृत मजबूत था, लेकिन मेरा बैकहैंड दुर्भाग्यवश कमजोर था। लेकिन मैं खेल को व्यायाम के लिए खेलता था, स्टाइल के लिए नहीं; यह खदान तक आने-जाने की पैदल यात्रा का सबसे अच्छा और एकमात्र विकल्प था। मैं अपने सेक्शन में नियमित रूप से खेलने वाले पहले खिलाड़ियों में से एक था। मैं बैक-कोर्ट खिलाड़ी था, केवल तभी नेट की ओर दौड़ता था जब मुझे एक शानदार स्लैम मिलता था।

शारीरिक श्रम समाप्त होने के बाद, मेरे पास पढ़ने के लिए बहुत अधिक समय था, लेकिन जिन पुस्तकों का मैं उपयोग कर रहा था, वे अब मेरे लिए वर्जित थीं। जब मेरी पढ़ाई रद्द हुई, तब मैं लंदन विश्वविद्यालय में एलएलबी. की पढ़ाई कर रहा था। मैंने रिवोनिया मुकदमे के दौरान एलएलबी. की पढ़ाई शुरू की थी और चार साल के लिए पढ़ाई के विशेषाधिकारों का निलंबन निस्संदेह मुझे उस डिग्री को सबसे अधिक वर्षों तक हासिल करने का विश्वविद्यालय रिकॉर्ड दिलाएगा।
लेकिन पढ़ाई की सुविधाओं पर रोक लगने का एक अनपेक्षित लाभ भी हुआ, और वह यह था कि मैंने ऐसी किताबें पढ़ना शुरू कर दिया जो मैं अन्यथा कभी नहीं पढ़ता। अनुबंध कानून पर भारी-भरकम ग्रंथों को पढ़ने के बजाय, अब मैं उपन्यासों में मग्न रहने लगा था।
रॉबेन द्वीप पर मेरे पास चुनने के लिए असीमित पुस्तकालय नहीं था। हमारे पास कई भूली-बिसरी रहस्यमयी और जासूसी उपन्यास और डैफ्ने डू मौरियर की सभी रचनाएँ तो थीं, लेकिन इससे ज़्यादा कुछ नहीं। राजनीतिक पुस्तकें वर्जित थीं। समाजवाद या साम्यवाद पर कोई भी किताब तो बिल्कुल ही नहीं। शीर्षक में 'लाल' शब्द वाली किसी भी किताब का अनुरोध, चाहे वह 'लिटिल रेड राइडिंग हुड'

ही क्यों न हो, सेंसर द्वारा अस्वीकार कर दिया जाता था। एच. जी. वेल्स की 'वॉर ऑफ़ द वर्ल्ड्स', हालाँकि यह एक विज्ञान कथा है, फिर भी शीर्षक में 'युद्ध' शब्द होने के कारण अस्वीकार कर दी जाती थी।
शुरू से ही मैंने दक्षिण अफ्रीका के बारे में या दक्षिण अफ्रीकी लेखकों द्वारा लिखी गई किताबें पढ़ने की कोशिश की। मैंने नादिन गॉर्डिमर के सभी प्रतिबंधित उपन्यास पढ़े और श्वेत उदारवादी सोच के बारे में बहुत कुछ सीखा। मैंने कई अमेरिकी उपन्यास भी पढ़े, और मुझे विशेष रूप से जॉन स्टाइनबेक का उपन्यास 'द ग्रेप्स ऑफ रैथ' याद है, जिसमें मुझे प्रवासी श्रमिकों की दुर्दशा और हमारे अपने मजदूरों और खेतिहर मजदूरों की दुर्दशा में कई समानताएं मिलीं।
टॉलस्टॉय की महान कृति, 'वॉर एंड पीस', जिसे मैंने बार-बार पढ़ा, उनमें से एक थी। (यद्यपि शीर्षक में 'युद्ध' शब्द था, फिर भी इस पुस्तक को पढ़ने की अनुमति थी।) मुझे जनरल कुतुज़ोव का चित्रण विशेष रूप से पसंद आया, जिन्हें रूसी दरबार में हर कोई कम आंकता था। कुतुज़ोव ने नेपोलियन को इसलिए हराया क्योंकि वे दरबार के क्षणिक और सतही मूल्यों से प्रभावित नहीं हुए और उन्होंने अपने सैनिकों और जनता की गहरी समझ के आधार पर निर्णय लिए। इसने मुझे एक बार फिर याद दिलाया कि अपनी जनता का सही मायने में नेतृत्व करने के लिए उन्हें सही मायने में जानना भी आवश्यक है।

82

सोवेटो छात्र विद्रोह के बाद, मुझे पता चला कि विनी, मेरे पुराने दोस्त और चिकित्सक डॉ. न्थाटो मोटलाना के साथ, ब्लैक पेरेंट्स एसोसिएशन से जुड़ गई थीं। यह स्थानीय पेशेवरों और चर्च के नेताओं का एक संगठन था, जो छात्रों के लिए मार्गदर्शक और मध्यस्थ की भूमिका निभा रहा था। ऐसा प्रतीत होता था कि अधिकारी युवा विद्रोहियों की तरह ही पेरेंट्स एसोसिएशन से भी सावधान थे। अगस्त में, छात्र विद्रोह के दो महीने से भी कम समय बाद, विनी को आंतरिक सुरक्षा अधिनियम के तहत हिरासत में लिया गया और जोहान्सबर्ग के फोर्ट में बिना किसी आरोप के कैद कर लिया गया, जहाँ उन्हें पाँच महीने तक रखा गया। उस दौरान, मैं उन्हें और अपनी बेटियों को, जो स्वाज़ीलैंड के बोर्डिंग स्कूल में थीं, पत्र लिखकर अपना समर्थन और एकजुटता व्यक्त कर सका। मैं उनकी कैद से बहुत दुखी था, हालाँकि इस बार उनके साथ दुर्व्यवहार नहीं किया गया और दिसंबर में जेल से रिहा होने पर उनका संघर्ष के प्रति संकल्प और भी दृढ़ हो गया।
प्रतिबंधित होने के बावजूद, विनी ने वहीं से शुरुआत की जहाँ उसने छोड़ा था, और सोवेटो के युवा कट्टरपंथियों के बीच उसकी लोकप्रियता देखकर अधिकारी परेशान हो गए। वे उसके प्रभाव को कम करने के लिए दृढ़ थे और उन्होंने एक निर्भीक और बेशर्म हरकत से ऐसा किया: उन्होंने उसे आंतरिक निर्वासन में भेज दिया। 16 मई, 1977 की रात को, ऑरलैंडो वेस्ट स्थित घर के बाहर पुलिस की गाड़ियाँ और एक ट्रक आकर रुके और ट्रक के पिछले हिस्से में फर्नीचर और कपड़े लादने लगे। इस बार विनी को गिरफ्तार नहीं किया जा रहा था, न ही हिरासत में लिया जा रहा था, न ही उससे पूछताछ की जा रही थी; उसे फ्री स्टेट के ब्रैंडफोर्ट नामक एक दूरस्थ कस्बे में निर्वासित किया जा रहा था। मुझे ये सारी जानकारी कैथी से मिली, जिसे एक हिंदू पुजारी ने दी थी। ब्रैंडफोर्ट, जोहान्सबर्ग से लगभग ढाई सौ मील दक्षिण-पश्चिम में, ब्लोमफोंटेन के ठीक उत्तर में, फ्री स्टेट में स्थित है। एक लंबी और कष्टदायक यात्रा के बाद, विनी, ज़िंदज़ी और उनके सभी सामान को ब्रैंडफोर्ट की सुनसान अफ्रीकी बस्ती में एक तीन कमरों वाली टिन की छत वाली झोपड़ी के सामने छोड़ दिया गया। यह एक बेहद गरीब और पिछड़ा इलाका था जहाँ के लोग

स्थानीय श्वेत किसानों के अधीन थे। विनी को संदेह और भय की दृष्टि से देखा जाता था। स्थानीय भाषा सेसोथो थी, जो विनी को नहीं आती थी।
उसकी नई परिस्थितियों ने मुझे दुखी और क्रोधित कर दिया। कम से कम जब वह सोवेटो में अपने घर पर थी, तो मैं उसे रसोई में खाना बनाते या बैठक में पढ़ते हुए देख सकती थी, मैं कल्पना कर सकती थी कि वह उस घर में जाग रही है जिसे मैं अच्छी तरह जानती थी। यह मेरे लिए सुकून का स्रोत था। सोवेटो में, भले ही उस पर प्रतिबंध लगा दिया गया हो, उसके दोस्त और परिवार आस-पास थे। ब्रैंडफोर्ट में वह और ज़िंदज़ी अकेली होंगी।
मैं ब्लोमफोंटेन जाते समय एक बार इस कस्बे से गुज़रा था, लेकिन मैंने इस पर ध्यान नहीं दिया था। इसकी आम गरीबी और वीरानगी में कुछ भी यादगार नहीं था।
उस समय मुझे नहीं पता था कि यह पता - मकान नंबर 802, ब्रांडफोर्ट - एक दिन मेरे लिए कितना जाना-पहचाना हो जाएगा। एक बार फिर, मुझे ऐसा लगा जैसे विनी और मैं एक ही समय में जेल में हों।

विनी के पत्रों से मुझे पता चला कि ब्रैंडफोर्ट में जीवन बहुत कठिन था। वहाँ न तो हीटर था, न शौचालय, न ही नल का पानी। कस्बे में कोई दुकानें नहीं थीं और शहर के दुकानदार अफ्रीकी ग्राहकों के प्रति शत्रुतापूर्ण व्यवहार करते थे। अधिकांश श्वेत लोग अफ़्रीकान्स भाषा बोलते थे और बेहद रूढ़िवादी थे।
विनी और ज़िंदज़ी लगातार पुलिस की निगरानी में थीं और उन्हें बीच-बीच में परेशान किया जाता था। कुछ ही महीनों में ज़िंदज़ी (जिस पर कोई प्रतिबंध नहीं था) सुरक्षा पुलिस की धमकियों से तंग आ गई। सितंबर में, विनी के वकीलों की मदद से, मैंने ब्रैंडफोर्ट की स्थानीय सुरक्षा पुलिस के खिलाफ़ निषेधाज्ञा के लिए एक तत्काल आवेदन दायर किया ताकि उन्हें मेरी बेटी को परेशान करने से रोका जा सके। न्यायाधीश के समक्ष दायर हलफनामों में पुलिसकर्मियों द्वारा घर में घुसकर ज़िंदज़ी को धमकाने का वर्णन किया गया था। न्यायाधीश ने फैसला सुनाया कि ज़िंदज़ी शांतिपूर्वक आगंतुकों से मिल सकती है।

विनी एक दृढ़ निश्चयी महिला हैं और अपेक्षाकृत कम समय में ही उन्होंने बस्ती के लोगों का दिल जीत लिया, जिनमें आस-पास के कुछ हमदर्द श्वेत लोग भी शामिल थे। उन्होंने ऑपरेशन हंगर की मदद से बस्ती के लोगों को भोजन मुहैया कराया, बस्ती के बच्चों के लिए एक शिशुगृह या नर्सरी स्कूल शुरू किया और एक ऐसी जगह पर चिकित्सा क्लिनिक बनाने के लिए धन जुटाया जहाँ बहुत कम लोगों ने कभी डॉक्टर को देखा था।

1978 में, ज़ेनी, मेरी दूसरी सबसे छोटी बेटी और विनी से मेरी पहली संतान, का विवाह स्वाज़ीलैंड के राजा सोभुज़ा के पुत्र राजकुमार थंबुमुज़ी से हुआ। उनकी मुलाकात ज़ेनी के स्कूल में पढ़ाई के दौरान हुई थी। जेल में होने के कारण, मैं पिता के पारंपरिक कर्तव्यों का निर्वहन नहीं कर सका। हमारी संस्कृति में, दुल्हन के पिता को भावी दूल्हे का साक्षात्कार लेना होता है और उसकी योग्यताओं का आकलन करना होता है। उन्हें लोबोला (दुल्हन का मूल्य) भी निर्धारित करना होता है, जो दूल्हा दुल्हन के परिवार को देता है। विवाह के दिन, पिता अपनी पुत्री का कन्यादान करता है। हालाँकि मुझे उस युवक पर कोई संदेह नहीं था, फिर भी मैंने अपने मित्र और कानूनी सलाहकार जॉर्ज बिज़ोस से मेरी जगह विवाह करने का अनुरोध किया। मैंने जॉर्ज को निर्देश दिया कि वह राजकुमार से मेरी पुत्री की देखभाल के बारे में पूछताछ करें।
जॉर्ज ने राजकुमार से उनके कार्यालय में मुलाकात की और फिर रॉबेन द्वीप पर मुझसे परामर्श करने की व्यवस्था की। ज़ेनी की उम्र इक्कीस वर्ष से कम होने के कारण, उसके विवाह के लिए मेरी कानूनी सहमति आवश्यक थी। मैं परामर्श कक्ष में जॉर्ज से मिला और वह हमारे साथ एक सुरक्षाकर्मी को देखकर आश्चर्यचकित रह गया। मैंने समझाया कि यह नियमों के अनुसार था क्योंकि इसे पारिवारिक मुलाकात माना जाता था, न कि कानूनी मुलाकात। मैंने मजाक में जॉर्ज को आश्वस्त करते हुए कहा कि मेरे गार्डों से मेरा कोई रहस्य नहीं है।
जॉर्ज ने बताया कि दोनों बच्चे एक-दूसरे से कितना प्यार करते थे और मेरे होने वाले दामाद का भविष्य कितना उज्ज्वल है। उनके पिता, राजा सोभुज़ा, एक

प्रबुद्ध पारंपरिक नेता और एएनसी के सदस्य भी थे। जॉर्ज ने मुझे उस युवक के परिवार की कुछ शर्तें बताते हुए इस बात पर विशेष जोर दिया कि वह लड़का स्वाज़ी राजकुमार है। मैंने जॉर्ज से कहा कि वह उस युवक को बताए कि उसे एक थेम्बू राजकुमारी मिल रही है।

ज़ेनी के स्वाज़ी शाही परिवार की सदस्य बनने का एक बहुत बड़ा लाभ यह था कि उन्हें तुरंत राजनयिक विशेषाधिकार मिल गए और वे लगभग जब चाहें मुझसे मिलने आ सकती थीं। उस सर्दी में, ज़ेनी और थुम्बुमुज़ी की शादी के बाद, वे अपनी नवजात बेटी के साथ मुझसे मिलने आए। राजकुमार के रुतबे के कारण, हमें परामर्श कक्ष में मिलने की अनुमति दी गई, न कि सामान्य मुलाकात कक्ष में जहाँ मोटी दीवारों और कांच से परिवार से अलग रहना पड़ता है। मैं कुछ घबराहट के साथ उनका इंतज़ार कर रहा था।
जब वे कमरे में आए तो वह सचमुच एक अद्भुत क्षण था। मैं खड़ी हो गई, और जब ज़ेनी ने मुझे देखा, तो उसने अपनी नन्ही बेटी को लगभग अपने पति को सौंप दिया और दौड़कर मुझे गले लगाने के लिए कमरे के उस पार आ गई। मैंने अपनी अब बड़ी हो चुकी बेटी को तब से लगभग कभी गोद में नहीं लिया था जब वह लगभग उसकी अपनी बेटी की उम्र की थी। यह एक अचंभित कर देने वाला अनुभव था, मानो किसी विज्ञान कथा उपन्यास में समय बहुत तेज़ी से आगे बढ़ गया हो, अचानक अपने बड़े हो चुके बच्चे को गले लगाना। फिर मैंने अपने नए बेटे को गले लगाया और उसने मुझे मेरी नन्ही पोती सौंप दी जिसे मैंने पूरी मुलाकात के दौरान अपने से अलग नहीं किया। एक नवजात शिशु को, जो इतना कोमल और नाजुक था, अपने खुरदुरे हाथों में, उन हाथों में जिन्होंने बहुत लंबे समय तक केवल कुल्हाड़ी और फावड़े पकड़े थे, गोद में लेना एक गहरा आनंद था। मुझे नहीं लगता कि उस दिन मुझसे ज़्यादा खुश कोई पुरुष कभी किसी बच्चे को गोद में लेकर हुआ होगा।
इस यात्रा का एक औपचारिक उद्देश्य था और वह था बच्चे के लिए नाम चुनना। दादा द्वारा नाम चुनने की परंपरा है, और मैंने ज़ाज़िवे नाम चुना था - जिसका अर्थ है "आशा"। इस नाम का मेरे लिए विशेष महत्व था, क्योंकि जेल में बिताए अपने सभी वर्षों के दौरान आशा ने कभी मेरा साथ नहीं छोड़ा - और अब भी कभी नहीं छोड़ेगी। मुझे पूरा विश्वास था कि यह बच्चा दक्षिण अफ़्रीकी

लोगों की उस नई पीढ़ी का हिस्सा बनेगा जिनके लिए रंगभेद एक दूर की याद बनकर रह जाएगा - यही मेरा सपना था।

83

मुझे नहीं पता कि यह सोवेटो विद्रोह के बाद जेल के अंदर की उथल-पुथल थी या जेल के बाहर मेरे परिवार के जीवन में आई उथल-पुथल, लेकिन 1976 के बाद के एक-दो वर्षों में मैं एक स्वप्निल, भावुक मनोदशा में डूबा रहा। जेल में अतीत पर विचार करने का समय मिलता है, और स्मृति मित्र और शत्रु दोनों बन जाती है। मेरी स्मृति मुझे अत्यधिक आनंद और दुःख दोनों के क्षणों में ले जाती थी। मेरा स्वप्नलोक बहुत समृद्ध हो गया था, और ऐसा लगता था कि मैं पूरी रातें बीते दिनों के उतार-चढ़ाव को याद करते हुए गुजारता था।
मुझे एक ही बुरा सपना बार-बार आता था। सपने में, मैं जेल से रिहा हुआ होता था—लेकिन यह रॉबेन द्वीप नहीं, बल्कि जोहान्सबर्ग की एक जेल होती थी। मैं जेल के गेट से बाहर शहर में निकला, लेकिन वहाँ मुझे लेने कोई नहीं था। वास्तव में, वहाँ कोई भी नहीं था, न लोग, न गाड़ियाँ, न टैक्सियाँ। फिर मैं पैदल सोवेटो की ओर चल पड़ा। मैं कई घंटों तक चलता रहा, फिर ऑरलैंडो वेस्ट पहुँचा और 8115 की ओर मुड़ गया। अंत में, मुझे अपना घर दिखाई दिया, लेकिन वह खाली था, एक भूतिया घर, जिसके सभी दरवाजे और खिड़कियाँ खुली थीं, लेकिन वहाँ कोई भी नहीं था।
लेकिन रिहाई के मेरे सभी सपने इतने निराशाजनक नहीं थे। 1976 में मैंने विनी को एक अधिक सुखद सपने के बारे में लिखा था।

24 फरवरी की रात, मैंने सपना देखा कि मैं 8115 नंबर के घर पहुँचा और घर युवाओं से भरा हुआ था जो जाइव और इन्फिबा संगीत की धुन पर नाच रहे थे। अचानक अंदर आते ही मैंने उन सबको चौंका दिया। कुछ ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया, जबकि कुछ शरमाते हुए चुपचाप चले गए। मैंने देखा कि शयनकक्ष भी परिवार के सदस्यों और करीबी दोस्तों से भरा हुआ था। आप बिस्तर पर आराम कर रहे थे, आपके साथ कगाथो [मेरा बेटा मकागाथो] था, जो युवा दिख रहा था और सामने वाली दीवार से सटकर सो रहा था। शायद उस सपने में मैं दिसंबर 1956 के उन दो हफ्तों को याद कर रहा था।
जब वह छह साल का था और मैं मखुलू (एवलिन की माँ) को घर में अकेला छोड़कर गई थी। तब वह अपनी माँ के साथ ओ.ई. (ऑरलैंडो ईस्ट) में रह रहा था, लेकिन मेरे

वापस आने से कुछ दिन पहले वह मखुलू के पास आ गया और मेरे बिस्तर पर सोया। वह मुझे बहुत याद कर रहा था और बिस्तर का इस्तेमाल करने से उसकी तड़प कुछ हद तक कम हो गई होगी।
खुशी के पलों को याद करके मुझे आनंद मिलता था, लेकिन अपनी अनुपस्थिति से परिवार को पहुँचाए गए दर्द का मुझे अफसोस भी होता था। यह 1976 का एक और पत्र है।

25 फरवरी की सुबह जब मैं उठी, तो हमेशा की तरह मुझे आपकी और बच्चों की बहुत याद आ रही थी। इन दिनों मैं आप दोनों को दादेवेथु [बहन], माँ, सहेली और मार्गदर्शक के रूप में याद करते हुए काफी समय बिताती हूँ। शायद आप नहीं जानतीं कि मैं कितनी बार सोचती हूँ और अपने मन में आपकी शारीरिक और आध्यात्मिक खूबियों की छवि संजोती हूँ - आपके रोज़ाना के प्यार भरे शब्द और उन अनगिनत छोटी-छोटी बातों को हमेशा नज़रअंदाज़ करना जो किसी और औरत को परेशान कर देतीं...। मुझे वो दिन भी याद है जब आप ज़िंदज़ी के गर्भ में पल रही थीं और नाखून काटने में भी मुश्किल हो रही थी। अब मुझे उन घटनाओं को याद करके शर्म आती है। मैं आपके लिए ये कर सकती थी। चाहे मुझे इसका एहसास हो या न हो, मेरा रवैया यही था: मैंने अपना फर्ज निभा दिया है, दूसरा बच्चा आने वाला है, आपकी शारीरिक स्थिति के कारण अब आपको जो भी परेशानियाँ झेलनी पड़ रही हैं, वे सब आपकी हैं। मेरा एकमात्र सहारा ये है कि उस समय मैं ऐसी जिंदगी जी रही थी जहाँ मेरे पास सोचने का भी समय नहीं था। बस सोचती हूँ कि जब मैं वापस लौटूँगी तो क्या होगा...।
आपकी खूबसूरत तस्वीर अभी भी मेरे बाएं कंधे से लगभग दो फीट ऊपर लगी हुई है। मैं ये चिट्ठी लिख रहा हूँ। मैं हर सुबह इसे बड़े ध्यान से साफ़ करता हूँ, क्योंकि ऐसा करने से मुझे वही सुखद एहसास होता है जैसे मैं तुम्हें पुराने दिनों की तरह प्यार से सहला रहा हूँ। मैं तुम्हारी नाक को भी अपनी नाक से छूता हूँ, ताकि वो बिजली का झटका फिर से महसूस कर सकूँ जो ऐसा करने पर मेरे खून में दौड़ता था। नोलीथा मेरे ठीक सामने मेज पर खड़ी है। ऐसी प्यारी महिलाओं का स्नेहपूर्ण स्पर्श पाकर मेरा मन भला उदास कैसे हो सकता है?

नोलीथा उन कुछ लोगों में से एक थी जिनकी तस्वीर मैंने अपने परिवार के सदस्यों के अलावा किसी और के पास रखी थी। मैंने 1976 के एक अन्य पत्र में अपनी बेटी ज़िंदज़ी को उसकी पहचान का रहस्य बताया था।

वैसे, क्या माँ ने तुम्हें नोलीथा के बारे में बताया है? वो अंडमान द्वीप समूह से आई हुई है और मेरी कोठरी में रहती है। वो तुम्हें, ज़ेनी, नदिंदी, नंदी, मंडला (ये तीनों पोते-पोतियाँ हैं), माकी और माँ को कंपनी देती है। इस बारे में माँ की टिप्पणियाँ आश्चर्यजनक रूप से संक्षिप्त हैं। वो उस बौनी सुंदरी को एक तरह की प्रतिद्वंदी मानती हैं और उन्हें शायद ही शक है कि मैंने उसकी तस्वीर नेशनल ज्योग्राफिक से ली थी।

मैं लगातार उस दिन के बारे में सोचता रहता था जब मैं आज़ाद हो जाऊंगा। बार-बार, मैं कल्पना करता रहता था कि मैं क्या करना चाहूंगा। समय बिताने के ये सबसे सुखद तरीकों में से एक था। मैंने 1976 में फिर से अपने दिवास्वप्नों को कागज़ पर उतारा।
काश, मैं तुम्हें 12/6/58 की तरह ही एक लंबी यात्रा पर ले जा पाता, बस फर्क इतना होगा कि इस बार हम अकेले हों। मैं तुमसे इतने लंबे समय से दूर हूँ कि लौटते ही सबसे पहले मैं तुम्हें उस घुटन भरे माहौल से दूर ले जाना चाहूँगा, तुम्हें आराम से गाड़ी में ले जाना चाहूँगा, ताकि तुम्हें ताजी और स्वच्छ हवा में सांस लेने, दक्षिण अफ्रीका के खूबसूरत नज़ारों, हरी घास और पेड़ों, रंग-बिरंगे जंगली फूलों, चमचमाती धाराओं, मैदानों में चरते जानवरों को देखने और रास्ते में मिलने वाले सीधे-सादे लोगों से बात करने का मौका मिले। हमारा पहला पड़ाव वह जगह होगी जहाँ मा रादेबे और सीके [विनी के माता- पिता] सोते हैं। मुझे उम्मीद है कि वे एक-दूसरे के बगल में लेटे होंगे। फिर मैं उन लोगों को श्रद्धांजलि अर्पित कर पाऊँगा जिनकी वजह से मैं आज इतना खुश और स्वतंत्र हूँ। शायद वे कहानियाँ जो मैं तुम्हें इतने सालों से सुनाना चाहता था, वहीं से शुरू हों। यह माहौल शायद आपके कानों को सतर्क कर देगा और मुझे उन पहलुओं पर ध्यान केंद्रित करने के लिए प्रेरित करेगा जो रुचिकर, ज्ञानवर्धक और रचनात्मक हैं। इसके बाद, हम प्रस्थान करेंगे और म्फाकान्यिस्वा और नोसेकेनी [मेरे माता-पिता] के यहाँ फिर मिलेंगे, जहाँ

का वातावरण समान होगा। मुझे विश्वास है कि तब हम तरोताज़ा और ऊर्जावान होकर 8115 की ओर वापस जाएँगे।

जब 1970 के दशक की शुरुआत में अधिकारियों ने हमें परिवार के करीबी सदस्यों की तस्वीरें प्राप्त करने की अनुमति दी, तो विनी ने मुझे एक एल्बम भेजा। जब भी मुझे विनी, बच्चों या पोते-पोतियों की कोई तस्वीर मिलती, मैं उसे बड़े ध्यान से उसमें चिपका देता था। मैं इस एल्बम को बहुत संजोकर रखता था; यही एक तरीका था जिससे मैं अपने प्रियजनों को जब चाहूँ देख सकता था। लेकिन जेल में कोई भी सुविधा बिना किसी बाधा के नहीं मिलती। हालाँकि मुझे तस्वीरें लेने और एल्बम रखने की अनुमति थी, लेकिन वार्डर अक्सर मेरी कोठरी की तलाशी लेते और विनी की तस्वीरें ज़ब्त कर लेते थे। हालाँकि, अंततः तस्वीरें ज़ब्त करने का सिलसिला बंद हो गया, और मैंने अपने एल्बम को इतना भर लिया कि वह मेरे पूरे परिवार की तस्वीरों से भर गया।
मुझे याद नहीं कि सबसे पहले किसने मेरा फोटो एल्बम उधार मांगा था, लेकिन यकीनन वह मेरे ही सेक्शन का कोई व्यक्ति था। मैंने खुशी-खुशी उसे दे दिया, फिर किसी और ने मांगा, और फिर किसी और ने। देखते ही देखते यह बात इतनी मशहूर हो गई कि मेरे पास एक फोटो एल्बम है कि मुझे F और G सेक्शन के पुरुषों से भी अनुरोध आने लगे।
एफ और जी जेल के कैदियों से शायद ही कभी कोई मिलने आता था या उन्हें चिट्ठियाँ मिलती थीं, और उन्हें दुनिया से रूबरू होने का यह मौका न देना अन्याय ही होता। लेकिन जल्द ही मैंने देखा कि मेरा कीमती फोटो एल्बम बुरी तरह से क्षतिग्रस्त हो चुका था, और मेरी कई अनमोल तस्वीरें गायब हो गई थीं। ये कैदी अपनी कोठरियों में कुछ निजी रखने के लिए बेताब थे और मजबूरी में कुछ नहीं कर पाए। हर बार ऐसा होने पर, मैंने ठान लिया कि मैं अपना एल्बम फिर से बनाऊँगी।
कभी-कभी पुरुष मुझसे एल्बम के बजाय सीधे तस्वीर मांग लेते थे। मुझे याद है एक दिन जनरल सेक्शन का एक युवा बीसी फेलो, जो हमारे लिए खाना ला रहा था, मुझे एक तरफ ले गया और बोला, "मदीबा, मुझे एक तस्वीर चाहिए।" मैंने कहा, ठीक है, मैं उसे भेज दूंगी। "कब?" उसने कुछ रूखेपन से पूछा। मैंने जवाब दिया कि मैं उस सप्ताहांत भेजने की कोशिश करूंगी। इससे वह संतुष्ट हो गया और जाने लगा, लेकिन अचानक वह मुड़ा और बोला, "देखो, मुझे उस बूढ़ी औरत की तस्वीर मत

भेजना। मुझे उन जवान लड़कियों की तस्वीर भेजना, ज़िंदज़ी या ज़ेनी की - याद रखना, उस बूढ़ी औरत की नहीं!"

84

1978 में, समाचार प्राप्त करने के अधिकार के लिए लगभग पंद्रह वर्षों तक आंदोलन करने के बाद, अधिकारियों ने हमें एक समझौता प्रस्ताव दिया। हमें समाचार पत्र प्राप्त करने या रेडियो सुनने की अनुमति देने के बजाय, उन्होंने अपनी स्वयं की रेडियो समाचार सेवा शुरू की, जिसमें जेल के इंटरकॉम सिस्टम पर समाचारों का एक संक्षिप्त सारांश प्रतिदिन पढ़ा जाता था।
ये प्रसारण निष्पक्ष या व्यापक नहीं थे। द्वीप के कई सेंसर अन्य दैनिक रेडियो बुलेटिनों से समाचारों का संक्षिप्त सारांश तैयार करते थे। इन प्रसारणों में सरकार के लिए अच्छी खबरें और उसके सभी विरोधियों के लिए बुरी खबरें होती थीं।
पहले प्रसारण की शुरुआत रॉबर्ट सोबुकवे की मृत्यु की खबर से हुई। अन्य शुरुआती रिपोर्टों में रोडेशिया में इयान स्मिथ की सेना की जीत और दक्षिण अफ्रीका में सरकार के विरोधियों की गिरफ्तारी की खबरें थीं। खबरों के पक्षपातपूर्ण होने के बावजूद, हमें उन्हें पाकर खुशी हुई और हमें इस बात पर गर्व था कि हम छिपी हुई बातों को समझ सकते थे और स्पष्ट चूक के आधार पर अनुमान लगा सकते थे।
उस साल, हमें इंटरकॉम के ज़रिए पता चला कि पी. डब्ल्यू. बोथा ने जॉन वॉर्स्टर के बाद प्रधानमंत्री का पद संभाला है। लेकिन वार्डरों ने हमें यह नहीं बताया कि वॉर्स्टर ने सूचना विभाग द्वारा सरकारी धन के दुरुपयोग के बारे में प्रेस में हुए खुलासों के परिणामस्वरूप इस्तीफा दिया था। बोथा के बारे में मुझे बस इतना ही पता था कि वे एक आक्रामक रक्षा मंत्री थे और उन्होंने 1975 में अंगोला पर सैन्य हमले का समर्थन किया था। हमें ज़रा भी अंदाज़ा नहीं था कि वे किसी भी तरह से सुधारवादी होंगे।
मैंने हाल ही में वॉर्स्टर की एक आधिकारिक जीवनी पढ़ी थी (यह उन किताबों में से एक थी जो जेल पुस्तकालय में उपलब्ध थीं) और पाया कि वह अपने विचारों के लिए कीमत चुकाने को तैयार व्यक्ति थे; द्वितीय विश्व युद्ध के दौरान जर्मनी का समर्थन करने के कारण उन्हें जेल जाना पड़ा। वॉर्स्टर के जाने पर

हमें कोई दुख नहीं हुआ। उन्होंने स्वतंत्रता के विरुद्ध लड़ाई को दमन के नए स्तर तक पहुंचा दिया था।
लेकिन हमारे संपादित रेडियो प्रसारण के बिना भी, हमें वह सब पता चल गया था जो अधिकारी हमें बताना नहीं चाहते थे। हमें 1975 में मोज़ाम्बिक और अंगोला में हुए सफल मुक्ति संघर्षों और क्रांतिकारी सरकारों के साथ स्वतंत्र राज्यों के रूप में उनके उदय के बारे में पता चला। परिस्थितियाँ हमारे पक्ष में बदल रही थीं।

द्वीप पर बढ़ती खुली छूट के अनुरूप, अब हमारे पास अपना सिनेमाघर था। लगभग हर हफ्ते, हम अपने गलियारे से सटे एक बड़े कमरे में एक चादर पर फिल्में देखते थे। बाद में, हमारे पास एक उचित स्क्रीन आ गई। फिल्में एक अद्भुत मनोरंजन थीं, जेल के नीरस जीवन से एक जीवंत पलायन।
हमने जो पहली फिल्में देखीं, वे मूक, ब्लैक एंड व्हाइट हॉलीवुड एक्शन फिल्में और वेस्टर्न फिल्में थीं, जो मेरे समय से भी पहले की थीं। मुझे याद है कि उनमें से एक फिल्म थी 'द मार्क ऑफ ज़ोरो', जिसमें दमदार अभिनेता डगलस फेयरबैंक्स थे, जो 1920 में बनी थी। अधिकारियों को ऐतिहासिक फिल्मों, विशेष रूप से नैतिक संदेश देने वाली फिल्मों से विशेष लगाव था। हमने जो शुरुआती फिल्में देखीं - जो अब रंगीन और संवादों के साथ थीं - उनमें 'द टेन कमांडमेंट्स' थी, जिसमें चार्लटन हेस्टन ने मूसा का किरदार निभाया था, 'द किंग एंड आई', जिसमें यूल ब्रायनर थे, और 'क्लियोपेट्रा', जिसमें रिचर्ड बर्टन और एलिजाबेथ टेलर थे।
हमें 'द किंग एंड आई' फिल्म बहुत दिलचस्प लगी, क्योंकि इसमें पूरब और पश्चिम के मूल्यों के बीच टकराव दिखाया गया था और ऐसा लगता था कि पश्चिम को पूरब से बहुत कुछ सीखना है। क्लियोपेट्रा विवादित साबित हुई; मेरे कई साथियों को यह बात पसंद नहीं आई कि मिस्र की रानी का किरदार एक काली बालों वाली, बैंगनी आंखों वाली अमेरिकी अभिनेत्री ने निभाया था, चाहे वह कितनी भी खूबसूरत क्यों न हो। आलोचकों का कहना था कि यह फिल्म पश्चिमी प्रचार का एक उदाहरण है जो इस तथ्य को मिटाना चाहती है कि क्लियोपेट्रा एक अफ्रीकी

महिला थी। मैंने बताया कि मिस्र की अपनी यात्रा के दौरान मैंने युवा, सांवली त्वचा वाली क्लियोपेट्रा की एक शानदार मूर्ति देखी थी।
बाद में, हमने दक्षिण अफ्रीका की स्थानीय फिल्में भी देखीं जिनमें काले सितारे थे जिन्हें हम सब पुराने दिनों से जानते थे। उन रातों में, हमारा छोटा सा अस्थायी रंगमंच स्क्रीन पर किसी पुराने दोस्त के आने पर होने वाली चीखों, सीटियों और जयकारों से गूंज उठता था। बाद में, हमें वृत्तचित्र चुनने की अनुमति दी गई - एक ऐसा रूप जो मुझे ज़्यादा पसंद था - और मैंने पारंपरिक फिल्मों को छोड़ना शुरू कर दिया। (हालांकि सोफिया लॉरेन वाली कोई भी फिल्म मैं कभी नहीं छोड़ता था।) वृत्तचित्र राज्य पुस्तकालय से मंगवाए जाते थे और आमतौर पर हमारे अनुभाग के लाइब्रेरियन अहमद कथराडा द्वारा चुने जाते थे। द्वितीय विश्व युद्ध की महान नौसैनिक लड़ाइयों पर बने एक वृत्तचित्र ने मुझे विशेष रूप से प्रभावित किया, जिसमें जापानियों द्वारा एच.एम.एस. प्रिंस ऑफ वेल्स को डुबोए जाने का न्यूज़रील फुटेज दिखाया गया था। मुझे सबसे ज़्यादा भावुक कर देने वाला दृश्य था जब ब्रिटिश जहाज के डूबने की खबर सुनकर विंस्टन चर्चिल रो पड़े। वह दृश्य लंबे समय तक मेरी स्मृति में रहा, और इसने मुझे दिखाया कि ऐसे भी समय होते हैं जब एक नेता सार्वजनिक रूप से दुख व्यक्त कर सकता है, और इससे उसकी जनता की नज़रों में उसकी प्रतिष्ठा कम नहीं होती।

हमने जो वृत्तचित्र देखे उनमें से एक विवादास्पद अमेरिकी मोटरसाइकिल समूह, हेल्स एंजल्स के बारे में था। फिल्म में हेल्स एंजल्स को लापरवाह, हिंसक और असामाजिक दिखाया गया था, जबकि पुलिस को सभ्य, ईमानदार और भरोसेमंद बताया गया था। फिल्म खत्म होते ही हम सबने इसके अर्थ पर चर्चा शुरू कर दी। लगभग सभी लोगों ने हेल्स एंजल्स के कानूनविहीन तरीकों की आलोचना की। तभी स्ट्रिनी मूडली, जो ब्लैक कॉन्शियसनेस आंदोलन के एक होनहार युवा सदस्य थे, खड़े हुए और उपस्थित लोगों पर समय से कटे होने का आरोप लगाया, क्योंकि बाइकर 1976 के सोवेटो के उन छात्रों का प्रतिनिधित्व कर रहे थे जिन्होंने अधिकारियों के खिलाफ विद्रोह किया था। उन्होंने हमें

फटकार लगाई कि हम जैसे बुजुर्ग मध्यमवर्गीय बुद्धिजीवी बाइकरों के बजाय फिल्म के दक्षिणपंथी अधिकारियों के साथ खड़े हैं।
स्ट्रिनी के आरोपों से हंगामा मच गया और कई लोग उनके खिलाफ बोलने के लिए खड़े हो गए। उन्होंने कहा कि हेल एंजल्स का बचाव करना असंभव है और हमारे संघर्ष की तुलना इस अनैतिक और समाजविरोधी गिरोह से करना अपमानजनक है। लेकिन मैंने स्ट्रिनी की बातों पर विचार किया और यद्यपि मैं उनसे सहमत नहीं था, फिर भी मैंने उनका समर्थन किया। भले ही हेल एंजल्स सहानुभूतिहीन थे, वे सत्ता के विरुद्ध विद्रोही थे, भले ही वे कितने भी अप्रिय विद्रोही क्यों न हों।
मुझे हेल्स एंजल्स में कोई दिलचस्पी नहीं थी, लेकिन मेरे लिए सबसे बड़ा सवाल यह था कि क्या हम, जैसा कि स्ट्रिनी ने सुझाव दिया था, एक ऐसी मानसिकता में फंस गए थे जो अब क्रांतिकारी नहीं रही थी। हम पंद्रह साल से अधिक समय से जेल में थे; मैं लगभग अठारह साल से जेल में था। जिस दुनिया को हमने पीछे छोड़ा था, वह बहुत पहले ही बदल चुकी थी। खतरा यह था कि हमारे विचार समय के साथ जम गए थे। जेल एक गतिशील दुनिया में एक ठहराव बिंदु है, और जेल में एक ही जगह पर अटके रहना बहुत आसान है जबकि दुनिया आगे बढ़ती रहती है।
मैंने हमेशा नए विचारों के प्रति खुला रहने का प्रयास किया है, किसी भी विचार को सिर्फ इसलिए खारिज नहीं किया क्योंकि वह नया या अलग था। द्वीप पर बिताए वर्षों के दौरान हमने अपने विश्वासों और विचारों पर निरंतर संवाद बनाए रखा; हमने उन पर बहस की, सवाल उठाए और इस तरह उन्हें परिष्कृत किया। मुझे नहीं लगता कि हम एक ही जगह पर रुके रहे; मेरा मानना है कि हम विकसित हुए।
हालांकि रॉबेन द्वीप पहले से अधिक खुला हो रहा था, फिर भी राज्य के अपने दृष्टिकोण में सुधार का कोई संकेत नहीं था। फिर भी, मुझे इस बात में कोई संदेह नहीं था कि मैं एक दिन स्वतंत्र हो जाऊंगा। हम भले ही एक ही जगह अटके हुए थे, लेकिन मुझे विश्वास था कि दुनिया हमारी स्थिति की ओर बढ़ रही है, उससे दूर नहीं। फिल्म ने मुझे एक बार फिर याद दिलाया कि जिस दिन मैं जेल से बाहर निकलूंगा, मैं किसी पुराने जमाने के राजनीतिक व्यक्ति के रूप में नहीं दिखना चाहता।

पंद्रह साल बीत गए, लेकिन 1979 में अधिकारियों ने इंटरकॉम प्रणाली के माध्यम से घोषणा की कि अफ्रीकी, अश्वेत और भारतीय कैदियों का भोजन अब से एक समान होगा। लेकिन न्याय में देरी न्याय से इनकार के समान है, इसलिए इतने लंबे समय तक स्थगित और अनिच्छा से लागू किया गया यह सुधार जश्न मनाने लायक नहीं था।
सभी कैदियों को सुबह बराबर मात्रा में चीनी मिलनी थी: डेढ़ चम्मच। लेकिन अधिकारियों ने अफ्रीकी कैदियों के लिए चीनी की मात्रा बढ़ाने के बजाय, अश्वेत और भारतीय कैदियों को मिलने वाली चीनी की मात्रा आधा चम्मच कम कर दी, जबकि अफ्रीकी कैदियों को उतनी ही मात्रा में चीनी दी जाने लगी। कुछ समय पहले ही अफ्रीकी कैदियों को सुबह रोटी मिलनी शुरू हो गई थी, लेकिन उससे कोई खास फर्क नहीं पड़ा। हम कई सालों से रोटी आपस में बाँटकर खा रहे थे। पिछले दो वर्षों में हमारे भोजन की गुणवत्ता में सुधार हुआ था, लेकिन अधिकारियों के कारण नहीं। सोवेटो विद्रोह के बाद, अधिकारियों ने फैसला किया था कि यह द्वीप दक्षिण अफ्रीका के "सुरक्षा कैदियों" का एकमात्र ठिकाना होगा। आम कैदियों की संख्या में भारी कमी कर दी गई थी। परिणामस्वरूप, पहली बार राजनीतिक कैदियों को रसोई में काम पर लगाया गया। राजनीतिक कैदियों के रसोई में आने के बाद, हमारे भोजन में ज़बरदस्त सुधार हुआ। ऐसा इसलिए नहीं हुआ कि वे बेहतर रसोइये थे, बल्कि इसलिए हुआ क्योंकि भोजन की तस्करी तुरंत बंद हो गई। भोजन को अपने लिए निकालने या जेलर को रिश्वत देने के बजाय, नए रसोइयों ने हमें आवंटित सारा भोजन इस्तेमाल किया। सब्ज़ियाँ अधिक मात्रा में मिलने लगीं और हमारे सूप और स्टू में मांस के टुकड़े दिखाई देने लगे। तभी हमें एहसास हुआ कि हमें वर्षों से ऐसा भोजन खाना चाहिए था।

85

1979 की गर्मियों में, मैं आंगन में टेनिस खेल रहा था, तभी मेरे प्रतिद्वंदी ने एक क्रॉस-कोर्ट शॉट मारा जिसे पकड़ने के लिए मुझे काफी मशक्कत करनी पड़ी। कोर्ट के उस पार दौड़ते हुए, मुझे अपनी दाहिनी एड़ी में इतना तेज दर्द महसूस हुआ कि मुझे खेलना बंद करना पड़ा। अगले कुछ दिनों तक मैं लंगड़ाकर चलता रहा।
द्वीप पर एक डॉक्टर ने मेरी जांच की और उन्होंने सलाह दी कि मुझे विशेषज्ञ से मिलने के लिए केप टाउन जाना चाहिए। अधिकारी हमारे स्वास्थ्य को लेकर अधिक सतर्क हो गए थे, क्योंकि उन्हें डर था कि अगर हमारी जेल में मृत्यु हो गई तो अंतरराष्ट्रीय समुदाय द्वारा उनकी निंदा की जाएगी।
वैसे तो सामान्य परिस्थितियों में मुझे और बाकी लोगों को केप टाउन जाना बहुत अच्छा लगता, लेकिन कैदी बनकर जाना बिल्कुल अलग अनुभव था। मुझे हथकड़ी पहनाकर नाव के एक कोने में पाँच हथियारबंद पहरेदारों से घेर कर रखा गया था। उस दिन समुद्र बहुत उबड़-खाबड़ था और हर लहर पर नाव काँप रही थी। द्वीप और केप टाउन के बीच लगभग आधे रास्ते में मुझे लगा कि नाव पलटने वाली है। तभी मेरी नज़र दो जवान पहरेदारों पर पड़ी जो मेरे पोते जैसे लग रहे थे। मैंने मन ही मन सोचा, "अगर यह नाव डूब गई, तो मैं धरती पर अपना आखिरी पाप करूँगा और उन दोनों लड़कों को कुचलकर वह लाइफजैकेट ले लूँगा।" लेकिन अंत में इसकी ज़रूरत ही नहीं पड़ी।
बंदरगाह पर हमारा सामना और अधिक सशस्त्र गार्डों और एक छोटी भीड़ से हुआ। किसी अपराधी को जाते हुए देखकर आम नागरिकों के चेहरों पर व्याप्त भय और घृणा को देखना एक अपमानजनक अनुभव था। मेरा मन तो नीचे झुककर छिपने का कर रहा था, लेकिन ऐसा करना संभव नहीं था।
एक युवा सर्जन ने मेरी जांच की और मुझसे पूछा कि क्या मुझे पहले कभी एड़ी में चोट लगी है। दरअसल, फोर्ट हरे में रहते हुए मुझे चोट लगी थी। एक दोपहर, मैं फुटबॉल खेल रहा था जब मैंने गेंद छीनने की कोशिश की और मेरी एड़ी में तेज दर्द हुआ। मुझे स्थानीय अस्पताल ले जाया गया, यह मेरे जीवन में पहली बार था जब मैं किसी अस्पताल गया था या किसी डॉक्टर को देखा था। जहां मैं

पला-बढ़ा था, वहां अफ्रीकी डॉक्टर जैसी कोई चीज नहीं थी, और किसी श्वेत डॉक्टर को दिखाना तो बिल्कुल अनसुना था।
फोर्ट हेयर के डॉक्टर ने मेरी एड़ी की जांच की और कहा कि ऑपरेशन करना पड़ेगा। यह सुनकर मैं घबरा गया और मैंने उनसे साफ मना कर दिया कि वे मुझे न छुएं। उस समय मुझे डॉक्टर के पास जाना मर्दानगी के खिलाफ लगता था और कोई इलाज करवाना तो उससे भी बुरा। डॉक्टर ने कहा, "ठीक है, लेकिन जब तुम बूढ़े हो जाओगे तो यह बात तुम्हें परेशान करेगी।"
केप टाउन के सर्जन ने मेरी एड़ी का एक्स-रे किया और उसमें हड्डी के कुछ टुकड़े पाए जो शायद फोर्ट हरे की लड़ाई के समय से ही वहाँ मौजूद थे। उन्होंने कहा कि वे स्थानीय एनेस्थेटिक देकर अपने क्लिनिक में ही उन्हें निकाल सकते हैं। मैंने तुरंत सहमति दे दी।
सर्जरी सफल रही और सर्जरी समाप्त होने के बाद डॉक्टर मुझे एड़ी की देखभाल के बारे में समझा रहे थे। तभी वार्डर के प्रमुख ने बीच में ही आकर कहा कि मुझे तुरंत रॉबेन द्वीप लौटना होगा। सर्जन इस बात से बेहद क्रोधित हुए और उन्होंने अपने सख्त लहजे में कहा कि श्री मंडेला का रात भर अस्पताल में रहना आवश्यक है और वे मुझे किसी भी हालत में रिहा नहीं करेंगे। वार्डर डर गया और उनकी बात मान ली।
अस्पताल में मेरी पहली रात काफी सुखद रही। नर्सों ने मेरा खूब ख्याल रखा। मैं बहुत अच्छी नींद सोया, और सुबह नर्सों का एक समूह आया और उन्होंने कहा कि मुझे जो पजामा और ड्रेसिंग गाउन दिया गया है, उसे मैं रख लूँ। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और कहा कि मेरे सभी साथी मुझसे ईर्ष्या करेंगे। मुझे यह यात्रा एक और मायने में ज्ञानवर्धक लगी, क्योंकि उस अस्पताल में मैंने काले और गोरे लोगों के बीच संबंधों में नरमी आते हुए महसूस की। डॉक्टर और नर्सों ने मेरे साथ इतना सहज व्यवहार किया मानो वे जीवन भर काले लोगों के साथ समानता का व्यवहार करते रहे हों। यह मेरे लिए कुछ नया और अलग था, और एक उत्साहवर्धक संकेत था। इसने मेरे इस पुराने विश्वास को और मजबूत किया कि शिक्षा पूर्वाग्रह की दुश्मन है। ये विज्ञान के क्षेत्र के लोग थे, और विज्ञान में नस्लवाद के लिए कोई जगह नहीं थी।
मुझे बस इस बात का अफसोस था कि अस्पताल जाने से पहले मुझे विनी से संपर्क करने का मौका नहीं मिला। अखबारों में अफवाहें छपी थीं कि मैं मौत के करीब

हूँ और वह काफी चिंतित हो गई थी। लेकिन जब मैं वापस लौटी, तो मैंने उसे पत्र लिखकर उसकी चिंताओं को दूर किया।

* * *

1980 में हमें अखबार खरीदने का अधिकार मिला। यह एक जीत थी, लेकिन हमेशा की तरह, हर नए विशेषाधिकार में कोई न कोई शर्त छिपी होती है। नए नियम के अनुसार, 'ए ग्रुप' के कैदियों को प्रतिदिन एक अंग्रेज़ी और एक अफ़्रीकी भाषा का अखबार खरीदने का अधिकार दिया गया था। लेकिन परेशान करने वाली बात यह थी कि यदि कोई 'ए ग्रुप' का कैदी किसी गैर-ए ग्रुप के कैदी के साथ अपना अखबार साझा करता पाया जाता, तो उससे अखबार खरीदने का अधिकार छीन लिया जाता। हमने इस प्रतिबंध का विरोध किया, लेकिन कोई फायदा नहीं हुआ।
हमें दो दैनिक समाचार पत्र मिलते थे: केप टाइम्स और डाई बर्गर। दोनों ही रूढ़िवादी समाचार पत्र थे, विशेष रूप से डाई बर्गर। फिर भी, जेल के सेंसर रोज़ाना कैंची से उन दोनों समाचार पत्रों की छानबीन करते थे और उनमें से उन लेखों को काट देते थे जिन्हें वे हमारे लिए देखना असुरक्षित समझते थे। जब तक वे हमें मिलते, तब तक उनमें छेद हो चुके होते थे। जल्द ही हमें स्टार, रैंड डेली मेल और संडे टाइम्स की प्रतियां भी मिल गईं, लेकिन इन समाचार पत्रों पर सेंसरशिप और भी कड़ी थी।

मार्च 1980 में जोहान्सबर्ग संडे पोस्ट में छपी एक खबर ऐसी थी जिसे मैं बिल्कुल भी नहीं पढ़ पाया था। शीर्षक था, "मंडेला को रिहा करो!" अंदर एक याचिका थी जिस पर लोग हस्ताक्षर करके मेरी और मेरे साथी राजनीतिक कैदियों की रिहाई की मांग कर सकते थे। हालांकि अखबारों को मेरी तस्वीर या मेरे द्वारा कहे या लिखे गए किसी भी शब्द को छापने की मनाही थी, लेकिन पोस्ट के इस अभियान ने हमारी रिहाई पर सार्वजनिक चर्चा को जन्म दिया।
यह विचार ओलिवर और एएनसी द्वारा लुसाका में तैयार किया गया था, और यह अभियान एक नई रणनीति की आधारशिला था जिसका उद्देश्य हमारे उद्देश्य को लोगों के मन में सबसे आगे रखना था। एएनसी ने अभियान को एक ही व्यक्ति पर

केंद्रित करके हमारी रिहाई की मांग को व्यक्तिगत रूप देने का निर्णय लिया था। इसमें कोई संदेह नहीं है कि बाद में इस अभियान के समर्थक बने लाखों लोगों को नेल्सन मंडेला के बारे में ठीक-ठीक जानकारी नहीं थी। (मुझे बताया गया है कि जब लंदन में "फ्री मंडेला" के पोस्टर लगे, तो अधिकांश युवा सोचते थे कि मेरा ईसाई नाम फ्री है।) द्वीप पर कुछ असहमति जताने वाले भी थे, जिनका मानना था कि अभियान को व्यक्तिगत रूप देना संगठन की सामूहिक भावना के साथ विश्वासघात था, लेकिन अधिकांश लोगों ने महसूस किया कि यह जनता को जागरूक करने की एक तकनीक थी।
पिछले साल मुझे भारत में जवाहरलाल नेहरू मानवाधिकार पुरस्कार से सम्मानित किया गया था, जो संघर्ष के पुनरुत्थान का एक और प्रमाण था। मुझे और विनी को समारोह में शामिल होने की अनुमति नहीं दी गई थी, लेकिन ओलिवर ने मेरी अनुपस्थिति में पुरस्कार स्वीकार किया। हमें एएनसी के पुनर्जीवित होने का आभास हो रहा था। उमखोंटो वे सिज़वे अपने तोड़फोड़ अभियान को तेज कर रहा था, जो पहले से कहीं अधिक परिष्कृत हो चुका था। जून में, एमके ने जोहान्सबर्ग के ठीक दक्षिण में स्थित विशाल सासोलबर्ग रिफाइनरी में बम विस्फोट किए। एमके हर हफ्ते किसी न किसी रणनीतिक स्थल पर विस्फोट करवा रहा था। पूर्वी ट्रांसवाल के बिजली स्टेशनों, जर्मिस्टन, डेवीटन, न्यू ब्राइटन और अन्य जगहों के पुलिस स्टेशनों और प्रिटोरिया के बाहर वूरट्रेकरहुग्टे सैन्य अड्डे पर बम विस्फोट हुए। ये सभी रणनीतिक रूप से महत्वपूर्ण स्थान थे, ऐसी जगहें जो ध्यान आकर्षित करतीं और सरकार को चिंतित करतीं। रक्षा मंत्री जनरल मैग्नस मालन ने पी. डब्ल्यू. बोथा के समर्थन से "पूर्ण आक्रमण" के नाम से जानी जाने वाली एक नीति शुरू की, जो मुक्ति संघर्ष का मुकाबला करने के लिए देश का सैन्यीकरण था।
फ्री मंडेला अभियान का एक हल्का-फुल्का पहलू भी था। 1981 में, मुझे पता चला कि लंदन विश्वविद्यालय के छात्रों ने मुझे विश्वविद्यालय के चांसलर के मानद पद के लिए उम्मीदवार बनाया है। यह निस्संदेह एक बड़ा सम्मान था, और मेरे प्रतिद्वंद्वी राजकुमारी ऐनी और ट्रेड यूनियन नेता जैक जोन्स थे। अंत में, मुझे 7,199 वोट मिले और मैं महारानी की बेटी से हार गया। मैंने ब्रांडफोर्ट में विनी को लिखा कि मुझे उम्मीद है कि मतदान ने शायद एक पल के लिए उसकी साधारण सी झोपड़ी को महल में बदल दिया होगा, और उसके छोटे-छोटे कमरों को विंडसर के बॉलरूम जितना भव्य बना दिया होगा।

हमारी रिहाई के अभियान ने हमारी उम्मीदों को फिर से जगा दिया। 1970 के दशक के शुरुआती कठिन दिनों में, जब एएनसी लगभग गुमनामी में डूबती जा रही थी, हमें खुद को निराशा में डूबने से रोकने के लिए बहुत संघर्ष करना पड़ा। कई मायनों में, हमने गलत अनुमान लगाया था; हमने सोचा था कि 1970 के दशक तक हम एक लोकतांत्रिक, नस्ल-मुक्त दक्षिण अफ्रीका में रह रहे होंगे। फिर भी, जैसे ही हमने नए दशक में कदम रखा, उस दक्षिण अफ्रीका के लिए मेरी उम्मीदें एक बार फिर जाग उठीं। कुछ सुबह मैं आंगन में टहलने जाता और वहाँ की हर जीवित चीज़, समुद्री चिड़िया और वेगटेल, छोटे पेड़ और यहाँ तक कि घास की तिनके भी, सूरज की रोशनी में मुस्कुराते और चमकते हुए प्रतीत होते। ऐसे ही क्षणों में, जब मैंने दुनिया के इस छोटे से, एकांत कोने की सुंदरता को महसूस किया, तब मुझे एहसास हुआ कि एक दिन मेरे लोग और मैं आज़ाद होंगे।

86

मेरे पिता की तरह, मुझे भी थेम्बू के राजा के सलाहकार के रूप में प्रशिक्षित किया गया था। हालाँकि मैंने एक अलग रास्ता चुना था, फिर भी मैंने अपने तरीके से उस भूमिका की जिम्मेदारियों को निभाने की पूरी कोशिश की जिसके लिए मुझे प्रशिक्षित किया गया था। जेल से ही मैंने राजा के साथ संपर्क बनाए रखने और उन्हें यथासंभव सलाह देने का भरसक प्रयास किया। जैसे- जैसे मैं बड़ा होता गया, मेरे विचार ट्रांसकेई की हरी-भरी पहाड़ियों की ओर अधिकाधिक जाने लगे। हालाँकि मैं सरकार के संरक्षण में कभी वहाँ नहीं जा सका, फिर भी मैंने एक दिन स्वतंत्र ट्रांसकेई लौटने का सपना देखा। इसलिए, 1980 में मुझे यह जानकर बहुत दुख हुआ कि थेम्बू के सर्वोच्च प्रमुख राजा सबाता डालिंड्येबो को मेरे भतीजे, ट्रांसकेई के प्रधानमंत्री के. डी. मातांज़िमा ने पद से हटा दिया था।
थेम्बू सरदारों के एक समूह ने मुझसे तत्काल मुलाकात का अनुरोध किया, जिसे अधिकारियों ने मंजूरी दे दी, जो आमतौर पर पारंपरिक नेताओं की यात्राओं का स्वागत करने के लिए तैयार रहते थे - उनका मानना था कि मैं जितना अधिक जनजातीय और ट्रांसकेई मामलों में शामिल होऊंगा, संघर्ष के प्रति मेरी प्रतिबद्धता उतनी ही कम होगी।
सरकार ने एएनसी के प्रतिवाद के रूप में पारंपरिक नेताओं की शक्ति को बढ़ावा दिया। हालांकि मेरे कई साथियों का मानना था कि हमें उन नेताओं से नाता तोड़ लेना चाहिए, लेकिन मेरा झुकाव उनसे संपर्क साधने की ओर था। पारंपरिक नेता होने और एएनसी का सदस्य होने में कोई विरोधाभास नहीं है। इससे द्वीप पर हमारी सबसे लंबी और संवेदनशील बहस छिड़ गई: क्या एएनसी को सरकार द्वारा प्रायोजित संस्थानों में भाग लेना चाहिए या नहीं। कई लोगों ने इसे मिलीभगत माना। एक बार फिर, मुझे सिद्धांत और रणनीति के बीच अंतर करना आवश्यक लगा। मेरे लिए, महत्वपूर्ण प्रश्न एक रणनीतिक प्रश्न था: क्या हमारा संगठन इन संगठनों में भाग लेकर या इनका बहिष्कार करके अधिक मजबूत बनेगा? इस मामले में, मेरा मानना था कि हम भाग लेकर अधिक मजबूत बनेंगे।

मैंने मुलाकात के लिए बने एक बड़े कमरे में सरदारों से मुलाकात की और उन्होंने अपनी दुविधा बताई। हालांकि उनका दिल सबाता के साथ था, लेकिन वे मातांज़ीमा से डरते थे। उनकी बात सुनने के बाद, मैंने उन्हें सलाह दी कि वे मातांज़ीमा के खिलाफ सबाता का समर्थन करें, जो राजा से अवैध और शर्मनाक तरीके से सत्ता छीन रहा था। मैं उनकी स्थिति से सहानुभूति रखता था, लेकिन मैं मातांज़ीमा के कार्यों को माफ नहीं कर सकता था। मैंने उनसे कहा कि वे सबाता को मेरा समर्थन और मातांज़ीमा को मेरी असहमति बता दें।
मातांज़ीमा ने सबाता और पारिवारिक मामलों पर चर्चा करने के लिए भी मुलाकात का प्रस्ताव रखा था। मेरे भतीजे होने के नाते, वे वास्तव में कई वर्षों से ऐसी मुलाकात की गुहार लगा रहे थे। हालांकि मातांज़ीमा ने पारिवारिक मामलों पर चर्चा करने का दावा किया, लेकिन ऐसी मुलाकात के राजनीतिक परिणाम हो सकते थे। मातांज़ीमा के पहले अनुरोध के क्षण से ही, मैंने इस मामले को उच्च निकाय और हमारे क्षेत्र के एएनसी सदस्यों के समक्ष उठाया। कुछ ने बस कंधे उचका दिए और कहा, "वह आपका भतीजा है; उसे आने का अधिकार है।" हालांकि, रेमंड, गोवन और कैथी ने जोर देकर कहा कि हालांकि ऐसी मुलाकात को पारिवारिक मामला बताकर टाला जा सकता है, लेकिन इसे अंदर और बाहर के कई लोग उस व्यक्ति और उसकी नीतियों के प्रति मेरे समर्थन के संकेत के रूप में समझेंगे। यही कारण था कि मातांज़ीमा आना चाहते थे, और यही कारण था कि ऐसी मुलाकात अस्वीकार्य थी।
मैं उनकी बातों को समझ गया था और काफी हद तक उनसे सहमत भी था, लेकिन मैं अपने भतीजे से मिलना चाहता था। आमने-सामने की मुलाकातों के महत्व और ऐसी मुलाकातों में लोगों को अपना विचार बदलने के लिए राजी करने की अपनी क्षमता के बारे में मेरी सोच शायद कुछ ज़्यादा ही रही है। मुझे उम्मीद थी कि मैं मातांज़िमा को अपनी नीतियों में बदलाव करने के लिए मना लूँगा।
अंततः, हमारे अनुभाग के एएनसी सदस्यों ने इस यात्रा पर आपत्ति न करने का निर्णय लिया। लोकतंत्र के हित में, हमने इस मामले पर एफ और जी अनुभाग के अपने सदस्यों से परामर्श किया, और वे इसके घोर विरोधी थे। स्टीव त्शवेते, जो सामान्य अनुभाग में एएनसी के प्रमुख नेताओं में से एक थे, ने कहा कि ऐसी यात्रा मातांज़ीमा को राजनीतिक रूप से लाभ पहुँचाएगी और इसलिए यह संभव नहीं है। उनमें से कई ने बताया कि मातांज़ीमा ने विनी के पिता, कोलंबस मडिकेज़ेला को अपनी सरकार में कृषि मंत्री बनाकर पहले ही मेरी सहमति

प्राप्त करने का प्रयास किया था। उन्होंने कहा कि यह अपने आप में काफी बुरा था, ऊपर से मडीबा का उनसे मिलने के लिए सहमत होना और भी बुरा था। मैंने सामान्य अनुभाग के सदस्यों के विचारों का सम्मान किया और खेद के साथ अधिकारियों को सूचित किया कि मैं अपने भतीजे की यात्रा स्वीकार नहीं करूँगा।

मार्च 1982 में, जेल अधिकारियों ने मुझे बताया कि मेरी पत्नी का कार एक्सीडेंट हो गया है और वह अस्पताल में भर्ती है। उनके पास बहुत कम जानकारी थी और मुझे उसकी हालत या हालात के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। मैंने अधिकारियों पर जानकारी छिपाने का आरोप लगाया और अपने वकील से मिलने के लिए तत्काल आवेदन किया। अधिकारियों ने जानकारी को हथियार के रूप में इस्तेमाल किया और वे इसमें सफल रहे। मैं अपनी पत्नी के स्वास्थ्य को लेकर चिंतित था, जब तक कि 31 मार्च को विनी के वकील और मेरे दोस्त दुल्लाह उमर मुझसे मिलने नहीं आए।
दुल्लाह ने विनी के बारे में मेरी चिंता तुरंत दूर कर दी। वह एक कार में थी जो पलट गई थी, लेकिन वह ठीक थी। हमारी मुलाकात संक्षिप्त थी, और जब मुझे सेक्शन बी में वापस ले जाया जा रहा था, तब भी मेरा मन विनी के बारे में ही सोच रहा था, और मैं अपनी बेबसी और उसकी मदद न कर पाने की भावना से व्याकुल था।
मुझे अपनी कोठरी में आए अभी ज्यादा देर नहीं हुई थी कि कमांडिंग ऑफिसर और कई अन्य जेल अधिकारी मुझसे मिलने आ गए। यह बहुत ही असामान्य था; कमांडिंग ऑफिसर आमतौर पर कैदियों से मिलने उनकी कोठरी में नहीं आते थे। उनके आने पर मैं खड़ा हो गया, और कमांडर खुद मेरी कोठरी में घुस आए। हम दोनों के लिए मुश्किल से ही जगह थी।
उन्होंने कहा, "मंडेला, मैं चाहता हूं कि तुम अपना सामान पैक कर लो।" मैंने उससे पूछा क्यों?
उन्होंने सरल शब्दों में कहा, "हम आपका तबादला कर रहे हैं।"
कहाँ?
उन्होंने जवाब दिया, "मैं कुछ नहीं कह सकता।"

मैंने उनसे कारण पूछा। उन्होंने मुझे केवल इतना बताया कि उन्हें प्रिटोरिया से निर्देश मिले थे कि मुझे तुरंत द्वीप से स्थानांतरित किया जाए। कमांडिंग ऑफिसर वहां से चले गए और बारी-बारी से वाल्टर, रेमंड म्हाबा और एंड्रयू म्लांगेनी की कोठरियों में गए और उन्हें भी यही आदेश दिया।

मैं परेशान और बेचैन था। इसका क्या मतलब था? हम कहाँ जा रहे थे? जेल में, कोई व्यक्ति एक सीमा तक ही किसी आदेश पर सवाल उठा सकता है और उसका विरोध कर सकता है, उसके बाद उसे झुकना ही पड़ता है। हमें कोई चेतावनी नहीं दी गई थी, कोई तैयारी नहीं थी। मैं अठारह साल से अधिक समय से इस द्वीप पर था, और इतनी अचानक छुट्टी?
हमें अपना सामान पैक करने के लिए कई बड़े गत्ते के डिब्बे दिए गए थे। लगभग दो दशकों में मैंने जो कुछ भी इकट्ठा किया था, वह इन कुछ डिब्बों में समा गया। हमने आधे घंटे से भी कम समय में अपना सामान पैक कर लिया।
जब बाकी कैदियों को पता चला कि हम जा रहे हैं तो गलियारे में हलचल मच गई, लेकिन हमें अपने कई सालों के साथियों को ठीक से विदाई देने का समय नहीं मिला। यह जेल की एक और बेइज्जती है। दूसरे कैदियों के साथ दोस्ती और वफादारी के बंधन अधिकारियों के सामने कोई मायने नहीं रखते।
कुछ ही मिनटों में हम केपटाउन जाने वाली फेरी में सवार हो गए। ढलती रोशनी में मैंने द्वीप की ओर पीछे मुड़कर देखा, मुझे नहीं पता था कि मैं इसे फिर कभी देख पाऊँगा या नहीं। इंसान किसी भी चीज़ का आदी हो सकता है, और मैं रॉबेन द्वीप का आदी हो चुका था। मैं लगभग दो दशकों से वहाँ रह रहा था और हालाँकि यह कभी मेरा घर नहीं था - मेरा घर तो जोहान्सबर्ग में था - फिर भी यह एक ऐसी जगह बन गई थी जहाँ मैं सहज महसूस करता था। मुझे हमेशा बदलाव मुश्किल लगता है, और रॉबेन द्वीप को छोड़ना, चाहे वह कभी-कभी कितना भी कठिन क्यों न रहा हो, कोई अपवाद नहीं था। मुझे नहीं पता था कि आगे क्या होगा। बंदरगाह पर, सशस्त्र गार्डों से घिरे हुए, हमें एक बिना खिड़की वाले ट्रक में धकेल दिया गया। हम चारों अंधेरे में खड़े रहे जबकि ट्रक लगभग एक घंटे से कहीं अधिक समय तक चलता रहा। हम कई चौकियों से गुज़रे और अंत में रुक गए। पीछे के दरवाजे खुल गए, और अंधेरे में हमें कंक्रीट की सीढ़ियों से ऊपर ले

जाया गया और धातु के दरवाजों से होते हुए एक अन्य सुरक्षा केंद्र में पहुँचा दिया गया। मैंने किसी तरह एक गार्ड से पूछा कि हम कहाँ हैं।
"पोल्समूर जेल," उन्होंने कहा।

भाग दस

दुश्मन से बात करना

87

पोल्समूर अधिकतम सुरक्षा जेल केप टाउन से कुछ मील दक्षिण-पूर्व में स्थित टोकाई नामक एक समृद्ध श्वेत उपनगर के किनारे पर है, जहाँ हरे-भरे लॉन और साफ-सुथरे घर हैं। यह जेल केप के बेहद खूबसूरत नज़ारों के बीच बसी है, जिसके उत्तर में कॉन्स्टेंटियाबर्ग पर्वत श्रृंखला और दक्षिण में सैकड़ों एकड़ में फैले अंगूर के बाग हैं। लेकिन पोल्समूर की ऊंची कंक्रीट की दीवारों के पीछे यह प्राकृतिक सुंदरता हमें दिखाई नहीं दे रही थी। पोल्समूर में ही मुझे पहली बार ऑस्कर वाइल्ड की उस मार्मिक पंक्ति की सच्चाई समझ आई, जिसमें कैदियों द्वारा आकाश कहे जाने वाले नीले रंग के तंबू का ज़िक्र है।
पोल्समूर का बाहरी रूप तो आधुनिक था, लेकिन उसकी सोच आदिम थी। इमारतें, विशेषकर जेल कर्मचारियों की इमारतें, साफ-सुथरी और आधुनिक थीं; लेकिन कैदियों के रहने की जगह पुरानी और गंदी थी। हमारे अलावा, पोल्समूर में सभी पुरुष सामान्य कानून के तहत कैदी थे, और उनके साथ पिछड़ा व्यवहार किया जाता था। हमें उनसे अलग रखा जाता था और हमारे साथ अलग तरह से व्यवहार किया जाता था।
अगली सुबह ही हमें अपने आस-पास के माहौल का सही-सही अंदाज़ा हो पाया। हम चारों को जेल की सबसे ऊपरी मंज़िल पर एक बड़ा कमरा दिया गया था, जो मानो जेल का सबसे आलीशान कमरा था। उस पूरी मंज़िल पर हम ही अकेले कैदी थे। मुख्य कमरा साफ़-सुथरा, आधुनिक और आयताकार था, लगभग पचास फीट लंबा और तीस फीट चौड़ा। इसमें एक अलग हिस्सा था जिसमें शौचालय, मूत्रालय, दो सिंक और दो शॉवर थे। चार आरामदायक बिस्तर थे, जिन पर चादरें और तौलिए थे। उन लोगों के लिए यह बहुत बड़ी विलासिता थी जिन्होंने पिछले अठारह साल पत्थर के फर्श पर पतली चटाइयों पर सोकर बिताए थे। रॉबेन द्वीप की तुलना में, हम किसी पाँच सितारा होटल में थे।
हमारे पास अपना एक एल-आकार का चबूतरा भी था, जो एक खुला, बाहरी हिस्सा था और आधे फुटबॉल मैदान जितना लंबा था, जहाँ हमें दिन के समय जाने की अनुमति थी। इसकी दीवारें लगभग बारह फीट ऊँची सफेद कंक्रीट की थीं, जिससे हमें केवल आकाश ही दिखाई देता था, सिवाय एक कोने के जहाँ से हमें कॉन्स्टेंटियाबर्ग

स्थानांतरित कर दिया गया था, जहाँ उसने कैदियों को संगठित करके हलचल मचा दी थी।
शुरू में हमें इस नए व्यक्ति पर संदेह हुआ और हमने सोचा कि कहीं वह अधिकारियों द्वारा भेजा गया कोई गुप्त एजेंट तो नहीं है। लेकिन जल्द ही हमें पता चल गया कि ऐसा नहीं था। पैट्रिक एक होशियार, मिलनसार और निडर व्यक्ति था, जिसके साथ हमारी अच्छी बनती थी। उसके लिए उन बूढ़े लोगों के समूह के साथ रहना आसान नहीं रहा होगा जो पिछले दो दशकों से एक साथ रह रहे थे और अपनी आदतों में पक्के थे।

* * *

अब हम कंक्रीट की दुनिया में थे। मुझे रॉबेन द्वीप की प्राकृतिक सुंदरता की बहुत याद आती थी। लेकिन हमारे नए घर में कई सुख-सुविधाएँ भी थीं। एक तो, पोल्समूर का खाना कहीं बेहतर था; सालों तक दिन में तीन बार दलिया खाने के बाद, पोल्समूर का बढ़िया मांस और सब्जियों से भरा भोजन किसी दावत जैसा लगता था। हमें कई तरह के अखबार और पत्रिकाएँ पढ़ने की अनुमति थी, और हम टाइम पत्रिका और लंदन से आने वाले द गार्जियन साप्ताहिक जैसे पहले प्रतिबंधित प्रकाशन भी प्राप्त कर सकते थे। इससे हमें बाहरी दुनिया की झलक मिलती थी। हमारे पास एक रेडियो भी था, लेकिन उस पर केवल स्थानीय चैनल ही आते थे, जो हम वास्तव में चाहते थे: बीबीसी वर्ल्ड सर्विस। हमें बारह बजे से दोपहर दो बजे के बीच को छोड़कर, जब वार्डर दोपहर का भोजन करते थे, बाकी समय अपनी छत पर रहने की अनुमति थी। काम करने का कोई नामोनिशान भी नहीं था। हमारे बड़े कमरे के पास ही मेरा एक छोटा सा कमरा था, जो अध्ययन कक्ष के रूप में काम करता था, जिसमें एक कुर्सी, मेज और किताबों की अलमारियाँ थीं, जहाँ मैं दिन में पढ़ और लिख सकता था।
रॉबेन द्वीप पर मैं अपनी तंग कोठरी में ही व्यायाम करता था, लेकिन अब मेरे पास आराम से व्यायाम करने की जगह थी। पोल्समूर में, मैं सुबह पाँच बजे उठता और अपनी साझा कोठरी में डेढ़ घंटे व्यायाम करता था। मैं नियमित रूप से स्थिर दौड़, रस्सी कूदना, सिट-अप्स और उंगलियों के बल पुश-अप्स करता था। मेरे साथी सुबह जल्दी नहीं उठते थे और मेरे इस नियमित व्यायाम के कारण मैं जल्द ही अपनी कोठरी में अलोकप्रिय हो गया।

पोल्समूर पहुँचने के कुछ ही समय बाद विनी मुझसे मिलने आई और मुझे यह देखकर खुशी हुई कि मुलाकात का क्षेत्र रॉबेन द्वीप के मुकाबले कहीं बेहतर और आधुनिक था। वहाँ एक बड़ी कांच की दीवार थी जिसके पार से आगंतुक को कमर से ऊपर तक देखा जा सकता था और कहीं अधिक उन्नत माइक्रोफोन लगे थे ताकि हमें सुनने के लिए जोर न लगाना पड़े। खिड़की से कम से कम अधिक आत्मीयता का भ्रम तो होता ही था, और जेल में भ्रम से कुछ राहत मिल सकती है।
मेरी पत्नी और परिवार के लिए रॉबेन द्वीप की तुलना में पोल्समूर पहुँचना कहीं अधिक आसान था, और इससे बहुत फर्क पड़ा। मुलाकातों की निगरानी भी अधिक मानवीय हो गई। अक्सर, विनी की मुलाकातों की देखरेख वारंट ऑफिसर जेम्स ग्रेगरी करते थे, जो रॉबेन द्वीप पर सेंसर रह चुके थे। मैं उन्हें बहुत अच्छी तरह से नहीं जानता था, लेकिन वे हमें जानते थे, क्योंकि वे हमारे आने-जाने वाले पत्रों की समीक्षा करने के लिए जिम्मेदार थे।
पोल्समूर में मुझे ग्रेगरी को बेहतर तरीके से जानने का मौका मिला और मैंने पाया कि वह आम वार्डर से बिल्कुल अलग थे। वह शिष्ट और मृदुभाषी थे, और विनी के साथ विनम्रता और सम्मान से पेश आते थे। "समय समाप्त!" चिल्लाने के बजाय, वह कहते थे, "श्रीमती मंडेला, आपके पास पाँच मिनट और हैं।"

बाइबल कहती है कि बाग-बगीचे माली से पहले से मौजूद थे, लेकिन पोल्समूर में ऐसा नहीं था, जहाँ मैंने एक बाग लगाया जो मेरे सबसे सुखद शौक में से एक बन गया। यह हमारे चारों ओर फैली विशाल कंक्रीट की दुनिया से बचने का मेरा तरीका था। इमारत की छत पर मौजूद खाली जगह का जायजा लेने और दिन भर धूप से नहाए रहने के बाद, कुछ ही हफ्तों में मैंने एक बाग लगाने का फैसला किया और कमांडिंग ऑफिसर से इसकी अनुमति प्राप्त कर ली। मैंने जेल सेवा से सोलह 44-गैलन के तेल के ड्रम उपलब्ध कराने का अनुरोध किया, जिन्हें मैंने बीच से कटवा दिया। अधिकारियों ने फिर प्रत्येक आधे हिस्से को उपजाऊ, नम मिट्टी से भर दिया, जिससे बत्तीस विशाल गमले बन गए।
मैंने प्याज, बैंगन, पत्ता गोभी, फूलगोभी, बीन्स, पालक, गाजर, खीरा, ब्रोकली, चुकंदर, लेट्यूस, टमाटर, मिर्च, स्ट्रॉबेरी और भी बहुत कुछ उगाया।

अपने चरम पर, मेरे पास लगभग नौ सौ पौधों वाला एक छोटा सा खेत था; रॉबेन द्वीप पर मेरे बगीचे से कहीं अधिक विशाल।
मैंने कुछ बीज खरीदे थे और कुछ बीज—जैसे ब्रोकोली और गाजर—मुझे कमांडिंग ऑफिसर, ब्रिगेडियर मुनरो ने दिए थे, जिन्हें ये सब्जियां बहुत पसंद थीं। वार्डरों ने भी मुझे अपनी पसंद की सब्जियों के बीज दिए और मुझे खाद के रूप में इस्तेमाल करने के लिए बेहतरीन गोबर भी उपलब्ध कराया गया। हर सुबह, मैं भूसे की टोपी और मोटे दस्ताने पहनकर दो घंटे बगीचे में काम करता था। हर रविवार को, मैं रसोई में सब्ज़ियाँ पहुँचाता था ताकि वे आम कैदियों के लिए विशेष भोजन बना सकें। मैं अपनी फसल का काफी हिस्सा वार्डरों को भी देता था, जो ताज़ी सब्ज़ियाँ ले जाने के लिए थैले लेकर आते थे।

पोल्समूर में हमारी समस्याएं रॉबेन द्वीप पर हुई समस्याओं की तुलना में कम गंभीर होती थीं। ब्रिगेडियर मुनरो एक भले और मददगार इंसान थे, जो हमारी हर ज़रूरत का ख्याल रखते थे। फिर भी, छोटी-छोटी समस्याएं कभी-कभी बहुत बड़ी बन जाती थीं। 1983 में, विनी और ज़िंदज़ी से मिलने के दौरान, मैंने अपनी पत्नी को बताया कि मुझे जो जूते दिए गए हैं वे एक साइज़ छोटे हैं और मेरे अंगूठे में चुभ रहे हैं। विनी चिंतित हो गई, और मुझे जल्द ही पता चला कि प्रेस में खबरें छपी थीं कि मेरे अंगूठे को काटना पड़ेगा। संचार की कठिनाई के कारण, जेल से मिली जानकारी अक्सर बाहर की दुनिया में बढ़ा- चढ़ाकर पेश की जाती है। अगर मैं अपनी पत्नी को फोन करके बता पाता कि मेरा पैर ठीक है, तो यह भ्रम नहीं होता। कुछ समय बाद, हेलेन सुज़मैन को मिलने की अनुमति मिली, और उन्होंने मेरे अंगूठे के बारे में पूछा। मुझे लगा कि सबसे अच्छा जवाब प्रदर्शन करना होगा: मैंने अपने मोज़े उतारे, अपना नंगा पैर शीशे के सामने रखा, और अपने अंगूठे हिलाए।
हमने अपनी कोठरी में फैली नमी की शिकायत की, जिसकी वजह से हमें सर्दी-जुकाम हो रहा था। बाद में, मुझे खबरें मिलीं कि दक्षिण अफ़्रीकी अख़बारों में छप रहा था कि हमारी कोठरी में बाढ़ आ गई थी। हमने अन्य कैदियों से संपर्क करने

का अनुरोध किया, और आम तौर पर वही बुनियादी शिकायत दोहराई जो हम हमेशा से करते आए थे: हमारे साथ राजनीतिक कैदियों जैसा व्यवहार किया जाना।
मई 1984 में, मुझे कुछ ऐसी तसल्ली मिली जिससे सारी असुविधाएँ कुछ हद तक दूर हो गईं। विनी, ज़ेनी और उनकी सबसे छोटी बेटी के तय समय पर आने के लिए सार्जेंट ग्रेगरी मुझे मुलाक़ात क्षेत्र तक ले गए। उन्होंने मुझे सामान्य मुलाक़ात क्षेत्र में ले जाने के बजाय एक अलग कमरे में पहुँचाया जहाँ केवल एक छोटी सी मेज़ थी और कोई विभाजक नहीं था। उन्होंने बहुत ही धीमी आवाज़ में मुझसे कहा कि अधिकारियों ने एक बदलाव किया है। उस दिन से "संपर्क" मुलाक़ातों की शुरुआत हुई।
फिर वह मेरी पत्नी और बेटी से मिलने बाहर गए और विनी से अकेले में बात करने को कहा। विनी को तो सच में डर लग गया जब ग्रेगरी उसे एक तरफ ले गए, उन्हें लगा कि शायद मैं बीमार हूँ। लेकिन ग्रेगरी उसे दरवाजे के पीछे से अंदर ले गए और देखते ही देखते हम दोनों एक ही कमरे में थे और एक-दूसरे की बाहों में थे। इतने सालों में पहली बार मैंने अपनी पत्नी को चूमा और गले लगाया। यह एक ऐसा पल था जिसका मैंने हज़ारों बार सपना देखा था। ऐसा लग रहा था जैसे मैं अभी भी सपना देख रहा हूँ। मैंने उसे इतनी देर तक थामे रखा जैसे अनंत काल बीत गया हो। हमारे दिलों की धड़कन के अलावा हम बिल्कुल शांत थे। मैं उसे बिल्कुल भी छोड़ना नहीं चाहता था, लेकिन मैंने खुद को छुड़ाया और अपनी बेटी को गले लगाया और फिर उसके बच्चे को अपनी गोद में ले लिया। इक्कीस साल हो गए थे जब मैंने अपनी पत्नी का हाथ छुआ था।

88

पोल्समूर में, हम बाहरी घटनाओं से अधिक जुड़े हुए थे। हम जानते थे कि संघर्ष तीव्र हो रहा था और दुश्मन के प्रयास भी उसी अनुपात में बढ़ रहे थे। 1981 में, दक्षिण अफ़्रीकी रक्षा बल ने मोज़ाम्बिक के मापुटो में एएनसी कार्यालयों पर छापा मारा, जिसमें महिलाओं और बच्चों सहित हमारे तेरह लोग मारे गए। दिसंबर 1982 में, एमके ने केप टाउन के बाहर अधूरे कोएबर्ग परमाणु ऊर्जा संयंत्र में विस्फोट किए और देश भर में कई अन्य सैन्य और रंगभेद विरोधी ठिकानों पर बम रखे। उसी महीने, दक्षिण अफ़्रीकी सेना ने लेसोथो के मासेरू में एएनसी की एक चौकी पर फिर से हमला किया, जिसमें एक दर्जन महिलाओं और बच्चों सहित बयालीस लोग मारे गए।
अगस्त 1982 में, कार्यकर्ता रूथ फर्स्ट मापुटो में, जहाँ वह निर्वासन में रह रही थीं, अपना पत्र खोल रही थीं, तभी एक बम से उनकी हत्या कर दी गई। जो स्लोवो की पत्नी रूथ, एक बहादुर रंगभेद-विरोधी कार्यकर्ता थीं, जिन्होंने कई महीने जेल में बिताए थे। वह एक सशक्त और प्रभावशाली महिला थीं, जिनसे मेरी पहली मुलाकात विट्स विश्वविद्यालय में पढ़ाई के दौरान हुई थी, और उनकी मृत्यु ने हमारे संघर्ष को दबाने में राज्य की क्रूरता की भयावहता को उजागर किया।
एमके का पहला कार बम हमला मई 1983 में हुआ था, जिसका निशाना प्रिटोरिया के मध्य में स्थित वायु सेना और सैन्य खुफिया कार्यालय था। यह मासेरू और अन्य जगहों पर एएनसी पर सेना द्वारा किए गए बिना उकसावे वाले हमलों का प्रतिशोध था और सशस्त्र संघर्ष का स्पष्ट विस्तार था। इस हमले में उन्नीस लोग मारे गए और दो सौ से अधिक घायल हुए।
नागरिकों की हत्या एक दुखद दुर्घटना थी, और मृतकों की संख्या देखकर मुझे गहरा सदमा लगा। इन मौतों से मैं जितना विचलित था, उतना ही यह भी जानता था कि सैन्य संघर्ष शुरू करने के निर्णय का अपरिहार्य परिणाम ऐसी दुर्घटनाएँ ही होती हैं। मानवीय त्रुटियाँ युद्ध का एक अभिन्न अंग होती हैं, और उनकी कीमत हमेशा भारी होती है। हमने हथियार उठाने का निर्णय इतना गंभीर और अनिच्छा से लिया था, क्योंकि हम जानते थे कि ऐसी घटनाएँ घटित होंगी। लेकिन

जैसा कि ओलिवर ने बमबारी के समय कहा था, सशस्त्र संघर्ष हम पर रंगभेद शासन की हिंसा द्वारा थोपा गया था।
सरकार और एएनसी दोनों ही दो मोर्चों पर काम कर रहे थे: सैन्य और राजनीतिक। राजनीतिक मोर्चे पर, सरकार अफ्रीकियों को रंगीन लोगों और भारतीयों से अलग करने के लिए अपनी पुरानी फूट डालो और राज करो की रणनीति अपना रही थी। नवंबर 1983 के जनमत संग्रह में, श्वेत मतदाताओं ने पी. डब्ल्यू. बोथा की तथाकथित त्रिसदनीय संसद बनाने की योजना का समर्थन किया, जिसमें श्वेत संसद के अलावा भारतीय और रंगीन लोगों के लिए भी सदन थे। यह भारतीयों और रंगीन लोगों को व्यवस्था में शामिल करने और उन्हें अफ्रीकियों से अलग करने का एक प्रयास था। लेकिन यह प्रस्ताव महज़ एक छला था, क्योंकि भारतीयों और रंगीन लोगों द्वारा की जाने वाली सभी संसदीय कार्रवाइयों पर श्वेतों का वीटो अधिकार था। यह बाहरी दुनिया को यह सोचने पर मजबूर करने का भी एक तरीका था कि सरकार रंगभेद में सुधार कर रही है। बोथा की यह चाल जनता को मूर्ख नहीं बना सकी, क्योंकि 1984 में संसद के नए सदनों के चुनाव में 80 प्रतिशत से अधिक योग्य भारतीय और रंगीन मतदाताओं ने बहिष्कार किया।
देश के भीतर शक्तिशाली जमीनी स्तर के राजनीतिक आंदोलन बन रहे थे जिनका एएनसी से गहरा संबंध था, जिनमें प्रमुख था यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ), जिसका मैं संरक्षक नियुक्त किया गया था। यूडीएफ का गठन 1983 में नए रंगभेद संविधान और 1984 में पृथक त्रिसदनीय संसद के पहले चुनावों के खिलाफ विरोध प्रदर्शनों को समन्वित करने के लिए किया गया था। यूडीएफ जल्द ही एक शक्तिशाली संगठन के रूप में विकसित हुआ जिसने छह सौ से अधिक रंगभेद विरोधी संगठनों - ट्रेड यूनियन, सामुदायिक समूह, चर्च समूह, छात्र संघों - को एकजुट किया।
एएनसी की लोकप्रियता में एक नया उछाल आ रहा था। जनमत सर्वेक्षणों से पता चला कि कांग्रेस अफ़्रीकी लोगों के बीच सबसे लोकप्रिय राजनीतिक संगठन थी, भले ही उस पर पच्चीस वर्षों से प्रतिबंध लगा हुआ था। रंगभेद विरोधी संघर्ष ने पूरी दुनिया का ध्यान आकर्षित कर लिया था; 1984 में बिशप डेसमंड टूटू को नोबेल शांति पुरस्कार से सम्मानित किया गया। (अधिकारियों ने बिशप टूटू को मेरा बधाई पत्र भेजने से इनकार कर दिया।) दक्षिण अफ़्रीकी सरकार पर अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता जा रहा था, क्योंकि दुनिया भर के देशों ने प्रिटोरिया पर आर्थिक प्रतिबंध लगाने शुरू कर दिए थे।

सरकार ने वर्षों से मुझसे संपर्क साधने के प्रयास किए, जिसकी शुरुआत मंत्री क्रूगर के मुझे ट्रांसकेई में स्थानांतरित करने के प्रयासों से हुई। ये प्रयास बातचीत के नहीं, बल्कि मुझे मेरे संगठन से अलग-थलग करने की कोशिशें थीं। कई अन्य मौकों पर क्रूगर ने मुझसे कहा: “मंडेला, हम आपके साथ काम कर सकते हैं, लेकिन आपके सहयोगियों के साथ नहीं। समझदारी से काम लें।” हालांकि मैंने इन प्रस्तावों का जवाब नहीं दिया, लेकिन केवल बातचीत करना, न कि हमला करना, वास्तविक बातचीत की शुरुआत का संकेत माना जा सकता है।

सरकार स्थिति का जायजा ले रही थी। 1984 के अंत और 1985 की शुरुआत में, मुझे दो प्रमुख पश्चिमी राजनेताओं, ब्रिटिश हाउस ऑफ लॉर्ड्स और यूरोपीय संसद के सदस्य लॉर्ड निकोलस बेथेल और जॉर्जटाउन विश्वविद्यालय में कानून के प्रोफेसर और अमेरिकी सीनेट की वाटरगेट समिति के पूर्व वकील सैमुअल डैश से मिलने का अवसर मिला। दोनों मुलाकातों को नए न्याय मंत्री कोबी कोएत्सी ने अधिकृत किया था, जो एक नए प्रकार के अफ़्रीकानर नेता प्रतीत होते थे। मेरी मुलाकात लॉर्ड बेथेल से जेल कमांडर के दफ्तर में हुई, जहाँ राष्ट्रपति बोथा की एक बड़ी सी तस्वीर लगी थी, जिसमें वे बेहद गुस्से में दिख रहे थे। बेथेल हंसमुख और थोड़े मोटे थे, और जब मैं उनसे पहली बार मिला, तो मैंने उनके मोटेपन को लेकर उन्हें चिढ़ाया। हाथ मिलाते हुए मैंने कहा, "आप विंस्टन चर्चिल के रिश्तेदार लगते हैं," और वे हंस पड़े।
लॉर्ड बेथेल पोल्समोर में हमारी स्थिति के बारे में जानना चाहते थे और मैंने उन्हें बताया। हमने सशस्त्र संघर्ष पर चर्चा की और मैंने उन्हें समझाया कि हिंसा का त्याग करना हमारा काम नहीं है, बल्कि सरकार का है। मैंने फिर से कहा कि हमारा लक्ष्य ठोस सैन्य लक्ष्य हैं, न कि इंसान। मैंने मेजर फ्रिट्ज़ वैन सिटरट की ओर इशारा करते हुए कहा, "मैं नहीं चाहूंगा कि हमारे सैनिक, उदाहरण के लिए, यहां मौजूद मेजर की हत्या करें।" वैन सिटरट वार्ता की निगरानी कर रहे थे। वैन सिटरट एक सौम्य स्वभाव के व्यक्ति थे जो ज्यादा नहीं बोलते थे, लेकिन मेरी टिप्पणी सुनकर वे चौंक गए।
लॉर्ड बेथेल से मुलाकात के तुरंत बाद प्रोफेसर डैश से हुई मेरी मुलाकात में, मैंने भविष्य के गैर-नस्लीय दक्षिण अफ्रीका के लिए न्यूनतम

आवश्यकताओं को सामने रखा: बिना होमलैंड्स वाला एकात्मक राज्य; केंद्रीय संसद के लिए गैर-नस्लीय चुनाव; और एक व्यक्ति-एक वोट। प्रोफेसर डैश ने मुझसे पूछा कि क्या सरकार द्वारा मिश्रित विवाह कानूनों और कुछ अन्य रंगभेद कानूनों को रद्द करने के घोषित इरादे से मुझे कोई प्रोत्साहन मिला है। मैंने कहा, "यह तो बस एक छोटी सी बात है। मेरा किसी श्वेत महिला से शादी करने या श्वेत पूल में तैरने का कोई इरादा नहीं है। हम तो राजनीतिक समानता चाहते हैं।" मैंने डैश को स्पष्ट रूप से बताया कि फिलहाल हम सरकार को जमीनी स्तर पर तो नहीं हरा सकते, लेकिन उनके लिए शासन करना मुश्किल जरूर बना सकते हैं।
मुझे वाशिंगटन टाइम्स नामक रूढ़िवादी अखबार के दो अमेरिकी संपादकों से एक अप्रिय मुलाकात का सामना करना पड़ा। वे मेरे विचारों को जानने से ज़्यादा मुझे कम्युनिस्ट और आतंकवादी साबित करने में लगे थे। उनके सभी प्रश्न इसी दिशा में निर्देशित थे, और जब मैंने दोहराया कि मैं न तो कम्युनिस्ट हूँ और न ही आतंकवादी, तो उन्होंने यह साबित करने का प्रयास किया कि मैं ईसाई भी नहीं हूँ, यह कहकर कि रेवरेंड मार्टिन लूथर किंग ने कभी हिंसा का सहारा नहीं लिया। मैंने उनसे कहा कि मार्टिन लूथर किंग के संघर्ष के हालात मेरे हालात से बिल्कुल अलग थे: संयुक्त राज्य अमेरिका एक लोकतंत्र था जहाँ संविधान में समान अधिकारों की गारंटी थी और अहिंसक विरोध की रक्षा की जाती थी (हालाँकि अश्वेतों के प्रति अभी भी भेदभाव था); दक्षिण अफ्रीका एक पुलिस राज्य था जिसका संविधान असमानता को बढ़ावा देता था और जिसकी सेना अहिंसा का जवाब बलपूर्वक देती थी। मैंने उनसे कहा कि मैं ईसाई हूँ और हमेशा से ईसाई रहा हूँ। मैंने कहा, यहाँ तक कि ईसा मसीह ने भी, जब उनके पास कोई विकल्प नहीं बचा था, तो मंदिर से साहूकारों को निकालने के लिए बल का प्रयोग किया था। वे हिंसा के देवता नहीं थे, लेकिन बुराई के विरुद्ध बल प्रयोग करने के अलावा उनके पास कोई विकल्प नहीं था। मुझे नहीं लगता कि मैं उन्हें मना पाया।

घरेलू समस्याओं और विदेशी दबाव का सामना करते हुए, पी. डब्ल्यू. बोथा ने एक नरम, बीच का रास्ता निकाला। 31 जनवरी, 1985 को संसद में एक बहस के दौरान,

थे, और जब हम राष्ट्रपति को दिए जाने वाले अपने जवाब पर चर्चा करने लगे, तो एक अपेक्षाकृत युवा वार्डर ने बीच में दखल देते हुए कहा कि केवल पारिवारिक मामलों पर ही चर्चा की जा सकती है। मैंने उसकी बात अनसुनी कर दी, और कुछ मिनट बाद वह एक वरिष्ठ वार्डर के साथ लौटा, जिसे मैं मुश्किल से जानता था। इस वार्डर ने कहा कि मुझे राजनीति पर चर्चा बंद करनी चाहिए, और मैंने उसे बताया कि मैं राष्ट्रपति के प्रस्ताव से जुड़े राष्ट्रीय महत्व के मामले पर बात कर रहा हूँ। मैंने उसे चेतावनी दी कि अगर वह चर्चा रोकना चाहता है तो उसे स्वयं राष्ट्रपति से आदेश लेना होगा। मैंने ठंडे लहजे में कहा, "अगर आप राष्ट्रपति को फोन करके ये आदेश लेने को तैयार नहीं हैं, तो कृपया हमें फिर से परेशान न करें।" उसने ऐसा नहीं किया।
मैंने इस्माइल और विनी को अपना तैयार किया हुआ भाषण दिया। सरकार को जवाब देने के अलावा, मैं यूडीएफ को उसके उत्कृष्ट कार्य के लिए सार्वजनिक रूप से धन्यवाद देना चाहता था और बिशप टूटू को उनके पुरस्कार के लिए बधाई देना चाहता था, साथ ही यह भी कहना चाहता था कि उनका पुरस्कार सभी जनता का है। रविवार, 10 फरवरी, 1985 को, मेरी बेटी ज़िंदज़ी ने मेरा जवाब उन लोगों की भीड़ के सामने पढ़ा, जो बीस वर्षों से अधिक समय से दक्षिण अफ्रीका में कहीं भी कानूनी रूप से मेरे शब्दों को सुनने में असमर्थ थे।
ज़िंदज़ी अपनी माँ की तरह ही एक प्रभावशाली वक्ता थीं और उन्होंने कहा कि उनके पिता को स्टेडियम में आकर स्वयं ये शब्द बोलने चाहिए। मुझे यह जानकर गर्व हुआ कि उन्हीं ने मेरे शब्दों को बोला।

मैं अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस का सदस्य हूँ। मैं हमेशा से अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस का सदस्य रहा हूँ और अपनी मृत्यु तक इसका सदस्य रहूँगा। ओलिवर टैम्बो मेरे लिए भाई से भी बढ़कर हैं। वे लगभग पचास वर्षों से मेरे सबसे अच्छे मित्र और साथी हैं। यदि आप में से कोई मेरी स्वतंत्रता को सबसे अधिक महत्व देता है, तो ओलिवर टैम्बो इसे मुझसे भी अधिक महत्व देते हैं, और मैं जानता हूँ कि वे मुझे स्वतंत्र देखने के लिए अपना प्राण भी दे देंगे…। सरकार द्वारा लगाई जाने वाली शर्तों को देखकर मैं आश्चर्यचकित हूं।
मैं हिंसक व्यक्ति नहीं हूँ…। जब प्रतिरोध के सभी अन्य तरीके हमारे लिए बंद हो गए, तभी हमने सशस्त्र संघर्ष का सहारा लिया। बोथा को यह दिखाना चाहिए कि वह मालन, स्ट्रिज्डोम और वेरवोर्ड से अलग हैं। उन्हें हिंसा का

त्याग करना चाहिए। उन्हें कहना चाहिए कि वे रंगभेद को समाप्त करेंगे। उन्हें जन संगठन, अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस पर लगे प्रतिबंध को हटाना चाहिए। उन्हें उन सभी को रिहा करना चाहिए जिन्हें रंगभेद के विरोध के कारण जेल में डाला गया, देश निकाला दिया गया या निर्वासित किया गया। उन्हें स्वतंत्र राजनीतिक गतिविधियों की गारंटी देनी चाहिए ताकि लोग यह तय कर सकें कि उन पर शासन कौन करेगा।
मुझे अपनी स्वतंत्रता बेहद प्रिय है, लेकिन आपकी स्वतंत्रता की मुझे उससे भी अधिक परवाह है।
जब से मैं जेल गया हूँ, बहुतों ने अपनी जान गंवाई है। बहुतों ने आज़ादी के लिए कष्ट सहे हैं। मैं उनकी विधवाओं, उनके अनाथों, उनकी माताओं और उनके पिताओं का ऋणी हूँ, जिन्होंने उनके लिए शोक मनाया और आँसू बहाए। इन लंबे, अकेले और व्यर्थ वर्षों में केवल मैंने ही कष्ट नहीं सहा है। मैं आपसे कम जीवन प्रेमी नहीं हूँ। लेकिन मैं अपने जन्मसिद्ध अधिकार को नहीं बेच सकता, और न ही मैं जनता के आज़ाद होने के जन्मसिद्ध अधिकार को बेचने के लिए तैयार हूँ…।
मुझे किस प्रकार की स्वतंत्रता दी जा रही है जबकि जनता का संगठन
क्या यह प्रतिबंध अभी भी लागू है? जब मुझे पासिंग अपराध के लिए गिरफ्तार किया जा सकता है तो मुझे किस प्रकार की स्वतंत्रता दी जा रही है? मुझे एक सामान्य नागरिक के रूप में अपना जीवन जीने की किस प्रकार की स्वतंत्रता दी जा रही है?
क्या मैं अपने परिवार के साथ अपनी प्यारी पत्नी को रख सकता हूँ, जो अभी भी ब्रैंडफोर्ट में निर्वासन में है? मुझे किस प्रकार की स्वतंत्रता मिल रही है जब मुझे शहरी क्षेत्र में रहने के लिए अनुमति लेनी पड़ती है? ... मुझे किस प्रकार की स्वतंत्रता मिल रही है जब मेरी दक्षिण अफ्रीकी नागरिकता का ही सम्मान नहीं किया जाता?
केवल स्वतंत्र व्यक्ति ही बातचीत कर सकते हैं। कैदी अनुबंध नहीं कर सकते…।
मैं और आप, जनता, जब तक स्वतंत्र नहीं हैं, तब तक मैं कोई वचन नहीं दे सकता और न ही दूंगा। आपकी स्वतंत्रता और मेरी स्वतंत्रता को अलग नहीं किया जा सकता। मैं वापस आऊंगा।

89

1985 ███ ███ ██ ███████ ███████ ███████ ████████ ████ ██ ███, ████ ██ ██████ ███ ████████ ██ ███ ████ ███, ██████████ ████ ███ ██████████ ███████ ██ ██████ ████ ██ ███████ ██ ████ ███ ████████ ███ ██ ██ ██████████ ███████ ███ ██████ ████ ███████ ██ ███████ ████ ██ ███████ ███████ ██ ██████ ██████

████ ████ ███████ ██ ███ ███ ████ ██ ███████ ███████ ██ ████ ████ ████ ██████ ████ ███████ ██ ███████ ██ ████ ██████ ██████ ███ ████ ██████ ██████ ██ ██ ███████ ███, ██ ████████████ ██ ███████ ████ ██: ██████ ███████ ████ ████████ ███ ███ ████ ██ ██████ ███████ ██ ████ ██████ ██████ ██ ██████ ██ ███ ███████ ██ ███ ████ ██████ ██ ██████ ████ ███ ████████ ███ ████ ████ ██████ ██████ ██ ████, ███████ ██ ████ ████ ███████ ▯ ██, ████ ████ ███████ ██████ ██ ██████ ██ ███ ██ ███ ██████ ██ ██████ ████ ███ ██ ███████ ███████ ██ ██████████████ ██, ██ ████ ████████ ███ ██ ███████ ██████ ████ ███████ ██████ ███ ███████ ████ ██ ███████ ██ ████ ███████ ███ ██, ██████ ███ ██████ ███ ██████ ████-████ ██ ██████████ ███ ██ ██ ███ ███ ██ ██ ███ ██████ ██ ███ ████ ▯ ████ ███████ ██ ███████ ██ ██████ ███████ ██ ██ ████ ████ ██ ██ ██████ ███

███████ ████ ███████ ██ ██████ ████ ██, ███ ██ ██████ ██ ██████████ ███████ ██████, ██ ██ ██ ████ ██████ ██ ███████ ██████ ███, ████ ███████ ███ ██████ ████ ██ ███ ███ ████, ████ ████ ██ ███ ██████████ ██ ████ ███████ ██████████ ██ ████ ██████ ██ ████ ███████ ██ ██████ ██ ███ ██ ████ ████ ██ ██████ ███ ██████████ ███ ████ ███, ██████████ ██████ ████ ██ ██ ████ ████ ██████ ███████ ██ ██████ ██ ██ ██ ██ ████ ███ ████ ██ ███ ████ ██ ███ ████ ██ ███ ███ ███ ████ ██, ██ ███ ███ ████ ███████ ██ ████████ ████ ██ ██████ ████████ ██████████ ███ ██ ████ ██ ██████ ██████ ███ ███████ ██ ███ ████ ███, ███ ███████ ██████ ██ ███████ ████ ██████ ██████ ████ ██ ██████████ ██████ ██ ██ ███████ ██ ██ ██ ██ ███████ ████ ██████ ██████ ██████ ████████ ███ ████ ██ ██████ ██ ██████ ██████ ███████ ██ ██████

की कि वे विनी को जोहान्सबर्ग में ही रहने दें और उन्हें ब्रैंडफोर्ट लौटने के लिए मजबूर न करें। उन्होंने कहा कि वे कोई वादा नहीं कर सकते, लेकिन वे इस मामले को देखेंगे। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया।

सर्जरी के बाद मुझे अस्पताल में कई दिन आराम करना पड़ा। जब मुझे अस्पताल से छुट्टी मिली, तो ब्रिगेडियर मुनरो मुझे लेने आए थे। आमतौर पर कमांडिंग ऑफिसर कैदियों को अस्पताल से लेने नहीं आते, इसलिए मुझे तुरंत शक हुआ।

वापसी की यात्रा में, ब्रिगेडियर मुनरो ने मुझसे सहज भाव से कहा, मानो वे बस यूं ही बातचीत कर रहे हों, “मंडेला, हम तुम्हें अभी तुम्हारे दोस्तों के पास वापस नहीं ले जा रहे हैं।” मैंने उनसे पूछा कि उनका क्या मतलब है। “अब से तुम अकेले रहोगे।” मैंने उनसे पूछा क्यों? उन्होंने सिर हिलाया। “मुझे नहीं पता। मुझे मुख्यालय से ये निर्देश मिले हैं।” एक बार फिर, कोई चेतावनी नहीं दी गई और न ही कोई स्पष्टीकरण।
पोल्समूर लौटने पर मुझे जेल की भूतल पर एक नई कोठरी में ले जाया गया, जो तीन मंजिल नीचे और एक बिल्कुल अलग विंग में थी। मुझे तीन कमरे और एक अलग शौचालय दिया गया, जिनमें से एक कमरा सोने के लिए, एक हॉल के पार पढ़ने के लिए और एक व्यायाम के लिए था। जेल के मानकों के हिसाब से यह आलीशान था, लेकिन कमरे नम और बदबूदार थे और उनमें प्राकृतिक रोशनी बहुत कम आती थी। मैंने ब्रिगेडियर से कुछ नहीं कहा, क्योंकि मैं जानता था कि यह फैसला उनका नहीं था। मैं इस कदम के परिणामों पर विचार करने के लिए समय चाहता था। राज्य ने यह कदम क्यों उठाया था?
इसे रहस्योद्घाटन कहना अतिशयोक्ति होगी, लेकिन अगले कुछ दिनों और हफ्तों में मुझे अपनी नई परिस्थितियों का अहसास हुआ। मैंने तय किया कि यह बदलाव बोझ नहीं, बल्कि एक अवसर है। मैं अपने सहकर्मियों से अलग होकर खुश नहीं था और मुझे अपने बगीचे और तीसरी मंजिल पर स्थित धूप से भरी छत की बहुत याद आ रही थी। लेकिन मेरे एकांत ने मुझे एक तरह की स्वतंत्रता दी, और मैंने इसका उपयोग उस काम को करने के लिए करने का निश्चय किया जिसके बारे में मैं लंबे समय से सोच रहा था: सरकार के साथ बातचीत शुरू करना। मैंने निष्कर्ष निकाला था कि अब वह समय आ गया है जब संघर्ष को बातचीत के माध्यम से ही सबसे बेहतर

तरीके से आगे बढ़ाया जा सकता है। अगर हमने जल्द ही बातचीत शुरू नहीं की, तो दोनों पक्ष दमन, हिंसा और युद्ध के अंधकारमय अंधकार में डूब जाएंगे। मेरा एकांत मुझे उस दिशा में पहला कदम उठाने का अवसर देगा, बिना उस तरह की जांच-पड़ताल के जो ऐसे प्रयासों को नष्ट कर सकती है।
हम लगभग तीन-चौथाई सदी से श्वेत अल्पसंख्यक शासन के विरुद्ध लड़ रहे थे। हम दो दशकों से अधिक समय से सशस्त्र संघर्ष में लगे हुए थे। दोनों पक्षों के कई लोग मारे जा चुके थे। शत्रु शक्तिशाली और दृढ़ था। फिर भी, अपने तमाम बमवर्षकों और टैंकों के बावजूद, उन्हें यह आभास अवश्य हुआ होगा कि वे इतिहास के गलत पक्ष में खड़े हैं। सच्चाई हमारे पक्ष में थी, पर अभी तक शक्ति नहीं थी। मुझे स्पष्ट था कि सैन्य विजय एक दूर का, बल्कि असंभव सा सपना था। एक अनावश्यक संघर्ष में दोनों पक्षों का हजारों, बल्कि लाखों लोगों की जान गंवाना कतई उचित नहीं था। उन्हें भी यह बात अवश्य ही ज्ञात थी। अब बातचीत का समय आ गया था।
यह बेहद संवेदनशील मामला था। दोनों पक्ष बातचीत को कमजोरी और विश्वासघात की निशानी मानते थे। जब तक दूसरा पक्ष महत्वपूर्ण रियायतें नहीं देता, तब तक कोई भी बातचीत के लिए तैयार नहीं था। सरकार बार-बार यह दावा करती रही कि हम कम्युनिस्टों का आतंकवादी संगठन हैं और वे कभी भी आतंकवादियों या कम्युनिस्टों से बात नहीं करेंगे। यह नेशनल पार्टी का सिद्धांत था। एएनसी बार-बार यह दावा करती रही कि सरकार फासीवादी और नस्लवादी है और जब तक एएनसी पर से प्रतिबंध नहीं हटाया जाता, सभी राजनीतिक कैदियों को बिना शर्त रिहा नहीं किया जाता और बस्तियों से सेना नहीं हटाई जाती, तब तक बातचीत का कोई आधार नहीं है।
सरकार से बात करने का निर्णय इतना महत्वपूर्ण था कि इसे केवल लुसाका में ही लिया जाना चाहिए था। लेकिन मुझे लगा कि प्रक्रिया शुरू करना आवश्यक है, और मेरे पास ओलिवर से पूरी तरह से बात करने के लिए न तो समय था और न ही साधन। हमारी तरफ से किसी को तो पहला कदम उठाना ही था, और मेरे नए एकांतवास ने मुझे ऐसा करने की स्वतंत्रता और कम से कम कुछ समय के लिए, मेरे प्रयासों की गोपनीयता का आश्वासन दिया।

अब मैं एक तरह के शानदार एकांत में था। हालाँकि मेरे सहकर्मी मुझसे केवल तीन मंजिल ऊपर थे, फिर भी ऐसा लगता था मानो वे जोहान्सबर्ग में हों। उनसे मिलने के लिए मुझे औपचारिक रूप से मुलाकात का अनुरोध करना पड़ता था, जिसे प्रिटोरिया स्थित मुख्यालय से मंज़ूरी मिलनी ज़रूरी थी। जवाब मिलने में अक्सर कई सप्ताह लग जाते थे। मंज़ूरी मिलने पर मैं उनसे मुलाक़ात क्षेत्र में मिलता था। यह एक नया अनुभव था: मेरे साथी और सह-कैदी अब आधिकारिक मुलाक़ाती बन गए थे। वर्षों से हम दिन में घंटों बातें कर पाते थे; अब हमें औपचारिक अनुरोध और मुलाक़ातें करनी पड़ती थीं, और हमारी बातचीत पर नज़र रखी जाती थी।
कुछ दिन अपनी नई कोठरी में रहने के बाद, मैंने कमांडिंग ऑफिसर से ऐसी बैठक आयोजित करने का अनुरोध किया। उन्होंने ऐसा किया, और हम चारों ने मेरे तबादले के मुद्दे पर चर्चा की। वाल्टर, कैथी और रे इस बात से नाराज़ थे कि हमें अलग कर दिया गया था। वे कड़ा विरोध दर्ज कराना चाहते थे और हमें फिर से मिलाने की मांग करना चाहते थे। मेरा जवाब उनकी उम्मीदों पर खरा नहीं उतरा। मैंने कहा, "देखो दोस्तों, मुझे नहीं लगता कि हमें इसका विरोध करना चाहिए।" मैंने बताया कि मेरी नई कोठरी बेहतर है, और शायद इससे सभी राजनीतिक कैदियों के लिए एक मिसाल कायम हो जाए। फिर मैंने कुछ अस्पष्ट ढंग से कहा, "शायद इससे कुछ अच्छा हो जाए। अब मैं ऐसी स्थिति में हूँ जहाँ सरकार हमसे संपर्क कर सकती है।" उन्हें मेरी यह बात कुछ खास पसंद नहीं आई, जैसा कि मुझे पता था।
मैंने अपने इस कदम के बारे में किसी को न बताने का फैसला किया। न तो अपने वरिष्ठ सहयोगियों को और न ही लुसाका में बैठे लोगों को। एएनसी एक सामूहिक संगठन है, लेकिन सरकार ने इस मामले में सामूहिकता को नामुमकिन बना दिया था। मेरे पास अपने संगठन के साथ इन मुद्दों पर चर्चा करने के लिए न तो सुरक्षा थी और न ही समय। मैं जानता था कि मेरे वरिष्ठ सहयोगी मेरे प्रस्ताव की निंदा करेंगे, और इससे मेरी पहल शुरू होने से पहले ही खत्म हो जाएगी। कई बार नेता को अपने अनुयायियों से आगे बढ़कर एक नई दिशा में जाना पड़ता है, इस विश्वास के साथ कि वह अपने लोगों का सही नेतृत्व कर रहा है। अंत में, मेरे अकेलेपन ने मेरे संगठन को एक बहाना दे दिया, अगर मामला बिगड़ जाए तो: वह बुजुर्ग व्यक्ति अकेला था और पूरी तरह से अलग-थलग था, और उसके

कदम उसने एक व्यक्ति के रूप में उठाए थे, न कि एएनसी के प्रतिनिधि के रूप में।

90

मेरे स्थानांतरण के कुछ ही हफ्तों के भीतर, मैंने कोबी कोएत्सी को पत्र लिखकर बातचीत के बारे में चर्चा का प्रस्ताव रखा। पहले की तरह, मुझे कोई जवाब नहीं मिला। मैंने एक बार फिर लिखा, और फिर भी कोई जवाब नहीं आया। मुझे यह अजीब और निराशाजनक लगा, और मुझे एहसास हुआ कि मुझे अपनी बात रखने का एक और अवसर तलाशना होगा। वह अवसर मुझे 1986 की शुरुआत में मिला।
अक्टूबर 1985 में नासाऊ में ब्रिटिश राष्ट्रमंडल की बैठक में, नेता दक्षिण अफ्रीका के खिलाफ अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों में भाग लेने के मुद्दे पर सहमति नहीं बना सके। इसका मुख्य कारण यह था कि ब्रिटिश प्रधानमंत्री मार्गरेट थैचर इसका कड़ा विरोध कर रही थीं। गतिरोध को दूर करने के लिए, बैठक में शामिल देशों ने सहमति व्यक्त की कि "प्रतिष्ठित व्यक्तियों" का एक प्रतिनिधिमंडल दक्षिण अफ्रीका का दौरा करेगा और यह रिपोर्ट देगा कि क्या रंगभेद को समाप्त करने में प्रतिबंध एक उपयुक्त साधन थे। 1986 की शुरुआत में, नाइजीरिया के पूर्व सैन्य नेता जनरल ओलुसेगुन ओबासांजो और ऑस्ट्रेलिया के पूर्व प्रधानमंत्री मैल्कम फ्रेजर के नेतृत्व में सात सदस्यीय प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह अपने तथ्य-खोज अभियान पर दक्षिण अफ्रीका पहुंचा।
फरवरी में, जनरल ओबासांजो ने प्रतिनिधिमंडल के कार्यों के बारे में चर्चा करने के लिए मुझसे मुलाकात की। वे मेरे और पूरे समूह के बीच बैठक कराने के लिए उत्सुक थे। सरकार की अनुमति से, मई में ऐसी बैठक निर्धारित की गई। मुझसे मिलने के बाद समूह मंत्रिमंडल से बात करेगा, और मैंने इसे बातचीत का मुद्दा उठाने के अवसर के रूप में देखा।
सरकार ने समूह के साथ मेरी बैठक को एक असाधारण घटना माना। बैठक से दो दिन पहले ब्रिगेडियर मुनरो मुझसे मिलने आए, जो अपने साथ एक दर्जी को लाए थे। कमांडर ने कहा, “मंडेला, हम चाहते हैं कि आप इन लोगों से बराबरी के स्तर पर मिलें। हम नहीं चाहते कि आप वे पुराने जेल के कपड़े पहनें, इसलिए यह दर्जी आपका नाप लेगा और आपके लिए एक बढ़िया सूट तैयार करेगा।” वह दर्जी ज़रूर कोई जादूगर रहा होगा, क्योंकि अगले ही दिन मैंने एक पिनस्ट्राइप सूट पहना जो मुझे एकदम फिट आया। मुझे एक कमीज़, टाई, जूते, मोज़े और अंडरवियर भी दिए

गए। कमांडर ने मेरे नए पहनावे की तारीफ़ की। उन्होंने मुस्कुराते हुए कहा, “मंडेला, अब आप किसी प्रधानमंत्री की तरह लग रहे हैं, कैदी की तरह नहीं।”

* * *

मेरी और प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समूह की बैठक में दो महत्वपूर्ण पर्यवेक्षक भी उपस्थित थे: कोबी कोएत्सी और जेल आयुक्त लेफ्टिनेंट जनरल डब्ल्यू. एच. विलेमसे। दर्जी की तरह, ये दोनों व्यक्ति मेरा आकलन करने आए थे। लेकिन, हैरानी की बात यह है कि बैठक शुरू होने के कुछ ही समय बाद वे चले गए। मैंने उनसे रुकने का आग्रह किया और कहा कि मेरे पास छिपाने के लिए कुछ नहीं है, लेकिन वे फिर भी चले गए। उनके जाने से पहले, मैंने उनसे कहा कि यह बातचीत का समय है, लड़ाई का नहीं, और सरकार और एएनसी को बैठकर बातचीत करनी चाहिए।
प्रतिष्ठित व्यक्तियों का समूह हिंसा, वार्ता और अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों से जुड़े कई सवाल लेकर आया था। शुरुआत में ही मैंने अपनी चर्चा के लिए बुनियादी नियम तय कर दिए। मैंने उनसे कहा, “मैं आंदोलन का मुखिया नहीं हूँ। आंदोलन का मुखिया लुसाका में ओलिवर टैम्बो हैं। आपको उनसे मिलना होगा। आप उन्हें मेरे विचार बता सकते हैं, लेकिन वे केवल मेरे निजी विचार हैं। वे जेल में बंद मेरे साथियों के विचारों का प्रतिनिधित्व भी नहीं करते। इन सब बातों के बावजूद, मैं एएनसी द्वारा सरकार के साथ बातचीत शुरू करने का पक्षधर हूँ।”
समूह के कई सदस्यों को मेरी राजनीतिक विचारधारा और एएनसी के नेतृत्व में दक्षिण अफ्रीका की संभावित स्थिति को लेकर चिंता थी। मैंने उन्हें बताया कि मैं दक्षिण अफ़्रीकी राष्ट्रवादी हूँ, कम्युनिस्ट नहीं, कि राष्ट्रवादी हर रंग और रूप में होते हैं, और मैं एक नस्ल-मुक्त समाज के लिए दृढ़ संकल्पित हूँ। मैंने उन्हें बताया कि मैं स्वतंत्रता चार्टर में विश्वास करता हूँ, कि चार्टर में लोकतंत्र और मानवाधिकारों के सिद्धांत समाहित हैं, और यह समाजवाद का खाका नहीं है। मैंने इस बात पर चिंता व्यक्त की कि श्वेत अल्पसंख्यक किसी भी नए दक्षिण अफ्रीका में सुरक्षा की भावना महसूस करें। मैंने उन्हें बताया कि मुझे लगता है कि हमारी कई समस्याएं

ओलिवर टैम्बो और एएनसी ने दक्षिण अफ्रीका की जनता से देश को अराजक बनाने का आह्वान किया था, और जनता ने उनका साथ दिया। अशांति और राजनीतिक हिंसा चरम पर पहुँच रही थी। जनता का गुस्सा बेकाबू था; बस्तियाँ उथल-पुथल में थीं। अंतर्राष्ट्रीय दबाव दिन-प्रतिदिन बढ़ता जा रहा था। 12 जून, 1986 को सरकार ने विरोध प्रदर्शनों को दबाने के प्रयास में आपातकाल लागू कर दिया। हर लिहाज़ से, बातचीत के लिए हालात अनुकूल नहीं लग रहे थे। लेकिन अक्सर, सबसे निराशाजनक क्षण ही किसी पहल को शुरू करने का सही समय होता है। ऐसे समय में लोग अपनी दुविधा से निकलने का रास्ता तलाश रहे होते हैं। उसी महीने मैंने जेल आयुक्त जनरल विलेमसे को एक बहुत ही सरल पत्र लिखा। उसमें मैंने बस इतना कहा, "मैं राष्ट्रीय महत्व के एक मामले पर आपसे मिलना चाहता हूँ।" मैंने बुधवार को ब्रिगेडियर मुनरो को वह पत्र सौंपा।
उस सप्ताहांत, कमांडिंग ऑफिसर ने मुझे जनरल विलेमसे से मिलने के लिए तैयार रहने को कहा, जो प्रिटोरिया से आ रहे थे। यह मुलाकात सामान्य तरीके से नहीं हुई। जनरल से मुलाकात क्षेत्र में बातचीत करने के बजाय, मुझे सीधे पोल्समूर परिसर में स्थित उनके आवास पर ले जाया गया।
विलेमसे एक स्पष्टवादी व्यक्ति हैं और हमने तुरंत काम की बात शुरू कर दी। मैंने उनसे कहा कि मैं न्याय मंत्री कोबी कोएत्सी से मिलना चाहता हूँ। उन्होंने मुझसे पूछा क्यों? मैं एक पल के लिए झिझका, क्योंकि एक जेल अधिकारी के साथ राजनीतिक मामलों पर चर्चा करना मुझे उचित नहीं लगा। लेकिन मैंने स्पष्टवादिता से जवाब दिया: "मैं मंत्री से सरकार और एएनसी के बीच बातचीत का मुद्दा उठाने के लिए मिलना चाहता हूँ।"
उन्होंने कुछ देर सोचा और फिर कहा, “मंडेला, जैसा कि आप जानते हैं, मैं राजनीतिज्ञ नहीं हूँ। मैं ऐसे मुद्दों पर स्वयं चर्चा नहीं कर सकता, क्योंकि ये मेरे अधिकार क्षेत्र से बाहर हैं।” फिर वे थोड़ी देर रुके, मानो उन्हें कोई बात याद आ गई हो। उन्होंने कहा, “संयोगवश, न्याय मंत्री केपटाउन में हैं। शायद आप उनसे मिल सकें। मैं पता लगाता हूँ।”
इसके बाद जनरल ने मंत्री जी को फोन किया और दोनों ने कुछ देर बात की। फोन रखने के बाद जनरल जी मेरी तरफ मुड़े और बोले, “मंत्री जी ने कहा, ‘उसे यहाँ ले आओ।’” कुछ ही मिनटों बाद हम जनरल जी के आवास से उनकी कार में बैठकर केपटाउन स्थित मंत्री जी के घर के लिए रवाना हो गए। सुरक्षा व्यवस्था हल्की थी; जनरल जी की गाड़ी के साथ सिर्फ एक और कार थी। इस मुलाकात की

सहजता और तेजी को देखकर मुझे शक हुआ कि सरकार ने शायद इस मुलाकात की पहले से योजना बनाई थी। चाहे उन्होंने योजना बनाई हो या नहीं, यह मायने नहीं रखता था; यह बातचीत की दिशा में पहला कदम उठाने का अवसर था।
शहर में स्थित अपने आधिकारिक आवास पर कोएत्सी ने मेरा गर्मजोशी से स्वागत किया और हम उनके लाउंज में आरामदायक कुर्सियों पर बैठ गए। उन्होंने क्षमा मांगी कि मुझे जेल के कपड़े बदलने का मौका नहीं मिला था। मैंने उनके साथ तीन घंटे बातचीत की और उनकी परिष्कृत शैली और सुनने की तत्परता से मैं बहुत प्रभावित हुआ। उन्होंने ज्ञानवर्धक और प्रासंगिक प्रश्न पूछे - ऐसे प्रश्न जो सरकार और एएनसी को विभाजित करने वाले मुद्दों से उनकी गहरी समझ को दर्शाते थे। उन्होंने मुझसे पूछा कि किन परिस्थितियों में हम सशस्त्र संघर्ष को स्थगित करेंगे; क्या मैं पूरी एएनसी की ओर से बोल रहा हूँ; क्या मैं नए दक्षिण अफ्रीका में अल्पसंख्यकों के लिए किसी संवैधानिक गारंटी की कल्पना करता हूँ। उनके प्रश्न सरकार और एएनसी को विभाजित करने वाले मुद्दों के मूल तक पहुँचे।
प्रख्यात व्यक्तियों के समूह को दिए गए मेरे जवाब की तरह ही जवाब देने के बाद, मुझे लगा कि कोएत्सी कोई हल चाहते हैं। उन्होंने पूछा, "अगला कदम क्या है?" मैंने उन्हें बताया कि मैं राष्ट्रपति और विदेश मंत्री पिक बोथा से मिलना चाहता हूँ। कोएत्सी ने इसे अपने पास रखे एक छोटे से पैड पर लिख लिया और कहा कि वे मेरे अनुरोध को उचित माध्यम से भेज देंगे। फिर हमने हाथ मिलाया और मुझे पोल्समूर जेल के भूतल पर स्थित मेरी एकांत कोठरी में वापस ले जाया गया।
मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला। मैंने महसूस किया कि सरकार देश में गतिरोध को दूर करने के लिए उत्सुक थी, कि अब उन्हें यकीन हो गया था कि उन्हें अपने पुराने रुख से पीछे हटना होगा। धुंधली सी रूपरेखा में, मुझे एक समझौते की शुरुआत दिखाई दी।
मैंने अपनी इस मुलाकात के बारे में किसी को नहीं बताया। मैं चाहता था कि किसी को सूचित करने से पहले प्रक्रिया शुरू हो जाए। कभी-कभी सहकर्मियों को ऐसी नीति बताना आवश्यक होता है जो पहले से ही लागू हो चुकी हो। मुझे पता था कि एक बार स्थिति का सावधानीपूर्वक विश्लेषण करने के बाद, पोल्समोर और लुसाका में मेरे सहकर्मी मेरा समर्थन करेंगे। लेकिन फिर, इस आशाजनक शुरुआत के बाद, कुछ नहीं हुआ। कोएत्सी की ओर से कोई खबर आए बिना ही कई

□□□□□□ □□ □□□ □□□□□ □□□ □□□ □□□ □□□□□□ □□□, □□□□□ □□□□□□ □□ □□ □□□□ □□□□□

91

कोबी कोएत्सी से मुझे कोई सीधा जवाब तो नहीं मिला, लेकिन कुछ ऐसे संकेत थे जिनसे पता चलता था कि सरकार मुझे एक अलग तरह के जीवन के लिए तैयार कर रही थी। क्रिसमस से एक दिन पहले, पोल्समूर के डिप्टी कमांडर लेफ्टिनेंट कर्नल गावी मार्क्स नाश्ते के बाद मेरी कोठरी के पास से गुजरे और बड़े ही सहज भाव से बोले, "मंडेला, क्या आप शहर देखना चाहेंगे?" मुझे ठीक से समझ नहीं आया कि उनके मन में क्या था, लेकिन मैंने सोचा कि हाँ कहने में कोई हर्ज नहीं है। उन्होंने कहा, "अच्छा, चलो।" मैं कर्नल के साथ अपनी कोठरी और प्रवेश द्वार के बीच लगे पंद्रह बंद धातु के दरवाजों से होकर गुजरा, और जब हम बाहर निकले तो मैंने देखा कि उनकी कार हमारा इंतजार कर रही थी।
हम समुद्रतट के समानांतर चलने वाली खूबसूरत सड़क से होते हुए केप टाउन पहुंचे। उनका कोई निश्चित गंतव्य नहीं था और वे बस आराम से शहर में घूम रहे थे। लोगों की रोज़मर्रा की गतिविधियों को देखना बेहद दिलचस्प था: धूप में बैठे बूढ़े लोग, खरीदारी करती महिलाएं, अपने कुत्तों को टहलाते लोग। जेल में सबसे ज़्यादा कमी इन्हीं रोज़मर्रा की गतिविधियों की महसूस होती है। मुझे ऐसा लगा जैसे मैं किसी विचित्र और अद्भुत देश में एक जिज्ञासु पर्यटक हूँ।
लगभग एक घंटे बाद, कर्नल मार्क्स ने एक शांत गली में एक छोटी सी दुकान के सामने कार रोकी। उन्होंने मुझसे पूछा, "क्या आप कोई ठंडा पेय लेना चाहेंगे?" मैंने सिर हिलाया और वे दुकान के अंदर चले गए। मैं वहाँ अकेला बैठा रहा। पहले कुछ पलों के लिए मैंने अपनी स्थिति के बारे में नहीं सोचा, लेकिन जैसे-जैसे सेकंड बीतते गए, मैं और अधिक बेचैन होता गया। बाईस वर्षों में पहली बार मैं दुनिया में था और असुरक्षित था। मेरे मन में यह ख्याल आया कि मैं दरवाजा खोलूँ, बाहर कूद जाऊँ और तब तक भागता रहूँ जब तक कि मैं नज़रों से ओझल न हो जाऊँ। मेरे अंदर कुछ मुझे ऐसा करने के लिए उकसा रहा था। मैंने सड़क के पास एक जंगल वाला इलाका देखा जहाँ मैं छिप सकता था। मैं बेहद तनाव में था और मुझे पसीना आने लगा। कर्नल कहाँ थे? लेकिन फिर मैंने खुद पर काबू पाया; ऐसा करना नासमझी और गैर-जिम्मेदाराना होगा, और खतरनाक भी। हो सकता है कि यह सारी स्थिति मुझे भागने के लिए रची गई हो, हालाँकि मुझे ऐसा

नहीं लगता। कुछ क्षण बाद जब मैंने कर्नल को कोका-कोला के दो कैन लेकर कार की ओर वापस जाते देखा तो मुझे बहुत राहत मिली।
जैसा कि बाद में पता चला, केप टाउन में वह दिन कई यात्राओं की शुरुआत थी। अगले कुछ महीनों में, मैं कर्नल के साथ न केवल केप टाउन बल्कि शहर के आसपास के कई दर्शनीय स्थलों, खूबसूरत समुद्र तटों और ठंडे पहाड़ों की सैर पर भी गया। जल्द ही, और भी कनिष्ठ अधिकारियों को मुझे घुमाने की अनुमति मिल गई। जिन जगहों पर मैं इन कनिष्ठ अधिकारियों के साथ नियमित रूप से जाता था, उनमें से एक को "बाग" के नाम से जाना जाता था, जो जेल परिसर के किनारे पर स्थित छोटे-छोटे खेतों की एक श्रृंखला थी, जहाँ जेल की रसोई के लिए फसलें उगाई जाती थीं। मुझे प्रकृति के बीच रहना, क्षितिज को देखना और अपने कंधों पर सूरज की किरणों को महसूस करना बहुत अच्छा लगता था।
एक दिन मैं एक कप्तान के साथ बागों में गया, और खेतों में घूमने के बाद हम अस्तबल की ओर चले गए। वहाँ दो श्वेत युवक ओवरऑल पहने घोड़ों की देखभाल कर रहे थे। मैं उनके पास गया, एक घोड़े की प्रशंसा की और उनमें से एक से पूछा, "इस घोड़े का नाम क्या है?" वह युवक काफी घबराया हुआ लग रहा था और उसने मेरी तरफ देखा तक नहीं। फिर उसने घोड़े का नाम धीरे से बताया, लेकिन कप्तान से, मुझसे नहीं। तब मैंने दूसरे से भी उसके घोड़े का नाम पूछा, और उसकी प्रतिक्रिया भी बिल्कुल वैसी ही थी।
जब मैं कप्तान के साथ जेल लौट रहा था, तो मैंने उन दो युवकों के अजीब व्यवहार पर टिप्पणी की। कप्तान हँस पड़ा। “मंडेला, क्या तुम नहीं जानते कि वे दोनों कौन थे?” मैंने कहा कि मैं नहीं जानता। “वे श्वेत कैदी थे। किसी श्वेत अधिकारी की उपस्थिति में किसी देशी कैदी ने उनसे पहले कभी पूछताछ नहीं की थी।”
कुछ युवा वार्डर मुझे काफी दूर ले जाते थे, और हम समुद्र तट पर टहलते थे और यहाँ तक कि किसी कैफे में रुककर चाय भी पीते थे। ऐसी जगहों पर, मैं अक्सर यह देखने की कोशिश करता था कि क्या लोग मुझे पहचानते हैं, लेकिन किसी ने कभी नहीं पहचाना; मेरी आखिरी प्रकाशित तस्वीर 1962 में ली गई थी।
ये यात्राएँ कई मायनों में ज्ञानवर्धक रहीं। मैंने देखा कि मेरे दूर रहने के दौरान जीवन कितना बदल गया था, और चूंकि हम मुख्य रूप से श्वेत क्षेत्रों में गए थे, इसलिए मैंने श्वेत लोगों की असाधारण समृद्धि और आराम को देखा। यद्यपि देश में उथल-पुथल मची हुई थी और बस्तियाँ खुले युद्ध के कगार पर

थीं, फिर भी श्वेत लोगों का जीवन शांतिपूर्ण और निर्मल रूप से चलता रहा। उनके जीवन पर कोई असर नहीं पड़ा था। एक बार, वार्डरों में से एक, वारंट ऑफिसर ब्रांड नाम के एक बहुत ही मिलनसार युवक ने मुझे अपने परिवार के फ्लैट में ले जाकर अपनी पत्नी और बच्चों से मिलवाया। तब से, मैं हर साल उनके बच्चों को क्रिसमस कार्ड भेजता हूँ।
इन छोटे-मोटे रोमांचों का मैंने जितना आनंद लिया, उतना ही मैं यह भी जानता था कि अधिकारियों का मकसद मुझे व्यस्त रखने के अलावा कुछ और भी था। मुझे आभास हुआ कि वे मुझे दक्षिण अफ्रीका के जीवन से परिचित कराना चाहते थे और शायद साथ ही साथ मुझे छोटी-छोटी आज़ादियों के सुखों का इतना आदी बना देना चाहते थे कि मैं पूर्ण स्वतंत्रता पाने के लिए समझौता करने को भी तैयार हो जाऊं।

92

1987 में, मैंने कोबी कोएत्सी से दोबारा संपर्क स्थापित किया। उनके आवास पर मेरी उनसे कई निजी बैठकें हुईं, और उसी वर्ष सरकार ने अपना पहला ठोस प्रस्ताव रखा। कोएत्सी ने कहा कि सरकार वरिष्ठ अधिकारियों की एक समिति नियुक्त करना चाहती है जो मुझसे निजी बातचीत करेगी। कोएत्सी ने बताया कि यह बातचीत राष्ट्रपति की पूरी जानकारी में होगी। समिति के प्रमुख स्वयं कोएत्सी होंगे, और इसमें जेल आयुक्त जनरल विलेमसे, जेल विभाग के महानिदेशक फैनी वैन डेर मेरवे और पूर्व शिक्षाविद डॉ. नील बर्नार्ड शामिल होंगे, जो उस समय राष्ट्रीय खुफिया सेवा के प्रमुख थे। पहले तीन व्यक्ति जेल व्यवस्था से जुड़े थे, इसलिए यदि बातचीत विफल हो जाती या प्रेस में लीक हो जाती, तो दोनों पक्ष इसे छिपा सकते थे और कह सकते थे कि हम केवल जेल की स्थितियों पर चर्चा कर रहे थे, इससे अधिक कुछ नहीं।
डॉ. बर्नार्ड की उपस्थिति ने मुझे असहज कर दिया। वे दक्षिण अफ्रीका की सीआईए के समकक्ष संस्था के प्रमुख थे और सैन्य खुफिया विभाग से भी जुड़े हुए थे। मैं अन्य अधिकारियों के साथ हुई चर्चाओं को अपने संगठन के सामने उचित ठहरा सकता था, लेकिन बर्नार्ड के साथ नहीं। उनकी उपस्थिति ने बातचीत को और अधिक जटिल बना दिया और एक बड़े एजेंडे का संकेत दिया। मैंने कोएत्सी से कहा कि मैं इस प्रस्ताव पर रात भर विचार करना चाहूंगा।
उस रात मैंने सभी संभावित परिणामों पर विचार किया। मुझे पता था कि पी. डब्ल्यू. बोथा ने राज्य सुरक्षा परिषद नामक एक गुप्त सचिवालय बनाया था, जिसमें सुरक्षा विशेषज्ञ और खुफिया अधिकारी शामिल थे। प्रेस के अनुसार, उन्होंने ऐसा मंत्रिमंडल के अधिकार को दरकिनार करने और अपनी शक्ति बढ़ाने के लिए किया था। डॉ. बर्नार्ड इस आंतरिक परिषद के प्रमुख सदस्य थे और राष्ट्रपति के करीबी माने जाते थे। मुझे लगा कि बर्नार्ड को मना करने से बोथा मुझसे नाराज़ हो जाएंगे, और मैंने फैसला किया कि ऐसा करना बहुत जोखिम भरा होगा। अगर राष्ट्रपति को साथ नहीं लिया गया, तो कुछ नहीं होगा। सुबह मैंने कोएत्सी को संदेश भेजा कि मैंने उनका प्रस्ताव स्वीकार कर लिया है। मुझे पता था कि मुझे तीन महत्वपूर्ण मामलों पर ध्यान देना था: पहला, आगे बढ़ने से पहले मैं तीसरी मंजिल पर अपने सहयोगियों से राय लेना चाहता था;

दूसरा, लुसाका में ओलिवर से मौजूदा स्थिति के बारे में बात करना आवश्यक था; और तीसरा, मैं पी. डब्ल्यू. बोथा को एक ज्ञापन का मसौदा तैयार करना चाहता था जिसमें देश के सामने मौजूद महत्वपूर्ण मुद्दों पर मेरे और एएनसी के विचार स्पष्ट हों। यह ज्ञापन भविष्य में होने वाली किसी भी चर्चा के लिए आधार तैयार करेगा।
मैंने अपने सहयोगियों से मिलने का अनुरोध किया, और मुझे आश्चर्य हुआ कि अधिकारियों ने साफ इनकार कर दिया। यह बात उल्लेखनीय थी, और मैंने अनुमान लगाया कि यह मेरे और सरकार के बीच गुप्त वार्ता की संभावना को लेकर अत्यधिक घबराहट को दर्शाती है। मैंने अपनी शिकायतें वरिष्ठ अधिकारियों के सामने रखीं। अंततः, अनुरोध को इस शर्त के साथ स्वीकार कर लिया गया कि मैं अपने सहयोगियों से एक-एक करके मिल सकता हूँ, एक साथ नहीं।
मैं उनसे मुलाकात के दौरान मिला। मैंने कुछ बातें गुप्त रखने का निश्चय किया था; मैं सरकार से बातचीत करने के विचार पर उनसे सलाह लेना चाहता था, लेकिन यह नहीं बताना चाहता था कि वास्तव में एक समिति का गठन हो चुका है। सबसे पहले वाल्टर से मिला। मैंने उन्हें जेल आयुक्त को लिखे अपने पत्र और कोएत्सी से हुई अपनी मुलाकात के बारे में बताया। मैंने कहा कि मैंने कोएत्सी से सरकार से बातचीत शुरू करने के विचार पर चर्चा की थी और सरकार इसमें रुचि दिखा रही थी। इस मामले पर उनके क्या विचार थे?
मैंने वॉल्टर के साथ सुख-दुख में साथ दिया है। वह एक समझदार और बुद्धिमान व्यक्ति थे, और मुझसे बेहतर मुझे कोई नहीं जानता था। ऐसा कोई नहीं था जिसकी राय पर मैं इतना भरोसा करता या जिसे इतना महत्व देता। वॉल्टर ने मेरी बातों पर गौर किया। मैं देख सकता था कि वह असहज थे, और कम से कम उदासीन थे। उन्होंने कहा, "सिद्धांत रूप में, मैं बातचीत के खिलाफ नहीं हूं। लेकिन मैं चाहता कि सरकार हमसे बातचीत शुरू करती, बजाय इसके कि हम उनसे बातचीत शुरू करें।"
मैंने जवाब दिया कि अगर वह सैद्धांतिक रूप से बातचीत के खिलाफ नहीं हैं, तो इससे क्या फर्क पड़ता है कि बातचीत की शुरुआत किसने की? महत्वपूर्ण यह है कि बातचीत से क्या हासिल हुआ, न कि उसकी शुरुआत कैसे हुई। मैंने वाल्टर से कहा कि मुझे लगता है कि हमें बातचीत को आगे बढ़ाना चाहिए और इस बात की चिंता नहीं करनी चाहिए कि पहले किसने दरवाजा खटखटाया। वाल्टर ने देखा कि

मैंने अपना मन बना लिया है और उन्होंने कहा कि वह मुझे नहीं रोकेंगे, लेकिन उन्हें उम्मीद है कि मुझे पता है कि मैं क्या कर रहा हूँ।
अगले नंबर पर रेमंड म्हाबा थे। मैंने उन्हें भी वही सारी स्थिति समझाई जो मैंने वाल्टर को समझाई थी। रेमंड हमेशा कम बोलने वाले व्यक्ति थे, और उन्होंने कुछ क्षणों तक मेरी बातों को समझा। फिर उन्होंने मेरी ओर देखा और कहा, “मदीबा, आप किस बात का इंतज़ार कर रहे थे? हमें यह काम तो सालों पहले ही शुरू कर देना चाहिए था।” एंड्रयू म्लांगेनी की प्रतिक्रिया भी लगभग रेमंड जैसी ही थी। आखिरी व्यक्ति कैथी थे। उनकी प्रतिक्रिया नकारात्मक थी; वे मेरे सुझाव के उतने ही दृढ़ता से खिलाफ थे जितने रेमंड और एंड्रयू उसके पक्ष में थे। वाल्टर से भी ज़्यादा, उन्हें लगा कि बातचीत शुरू करने से ऐसा लगेगा कि हम आत्मसमर्पण कर रहे हैं। वाल्टर की तरह, उन्होंने भी कहा कि वे सैद्धांतिक रूप से बातचीत के खिलाफ नहीं हैं, और मैंने उन्हें भी वही जवाब दिया जो मैंने वाल्टर को दिया था। लेकिन कैथी अपनी बात पर अड़े रहे; उन्हें लगा कि मैं गलत रास्ते पर जा रहा हूँ। लेकिन, अपनी आशंकाओं के बावजूद, उन्होंने कहा कि वे मेरे रास्ते में नहीं आएंगे।

इसके कुछ समय बाद ही मुझे ओलिवर टैम्बो का एक पत्र मिला, जिसे मेरे एक वकील ने चुपके से मुझ तक पहुँचाया था। उन्होंने सुना था कि मैं सरकार के साथ गुप्त बातचीत कर रहा हूँ और वे चिंतित थे। उन्होंने कहा कि उन्हें पता था कि मैं कुछ समय से अकेला हूँ और अपने सहयोगियों से अलग हूँ। वे ज़रूर सोच रहे होंगे: मंडेला के साथ क्या चल रहा है? ओलिवर का पत्र संक्षिप्त और सीधा था: वे जानना चाहते थे कि मैं सरकार के साथ क्या चर्चा कर रहा हूँ? ओलिवर को शायद विश्वास नहीं हुआ होगा कि मैं सरकार के साथ समझौता कर रहा हूँ, लेकिन हो सकता है कि उन्होंने सोचा हो कि मैं कोई गलत निर्णय ले रहा हूँ। वास्तव में, उनके पत्र का लहजा यही दर्शाता था।
मैंने ओलिवर को एक संक्षिप्त पत्र लिखकर जवाब दिया कि मैं सरकार से केवल एक ही बात पर चर्चा कर रहा हूँ: एएनसी की राष्ट्रीय कार्यकारी समिति और दक्षिण अफ़्रीकी सरकार के बीच एक बैठक। मैंने विवरण नहीं दिए, क्योंकि मुझे संचार की गोपनीयता पर भरोसा नहीं था। मैंने बस इतना कहा कि ऐसी

बातचीत का समय आ गया है और मैं संगठन को किसी भी तरह से खतरे में नहीं डालूंगा।
हालांकि एएनसी दशकों से सरकार के साथ बातचीत का आह्वान करती रही थी, लेकिन हमें कभी भी ऐसी बातचीत की वास्तविक संभावना का सामना नहीं करना पड़ा था। सैद्धांतिक रूप से बातचीत पर विचार करना एक बात है और उसमें शामिल होना बिल्कुल दूसरी बात। जब मैं ओलिवर को अपना जवाब लिख रहा था, उसी समय मैं पी. डब्ल्यू. बोथा को लिखे जाने वाले अपने ज्ञापन का मसौदा भी तैयार कर रहा था। मैं यह सुनिश्चित करूंगा कि ओलिवर भी इसे देखें। मुझे पता था कि जब ओलिवर और राष्ट्रीय कार्यकारिणी मेरा ज्ञापन पढ़ेंगे, तो उनके ये डर दूर हो जाएंगे कि मैं अपने रास्ते से भटक गया हूं।

93

गुप्त कार्य समूह की पहली औपचारिक बैठक मई 1988 में पोल्समूर परिसर के भीतर स्थित एक आलीशान पुलिस क्लब में हुई। मैं कोएत्सी और विलेमसे दोनों को जानता था, लेकिन वैन डेर मेरवे और डॉ. बर्नार्ड से मेरी पहले कभी मुलाकात नहीं हुई थी। वैन डेर मेरवे एक शांत, समझदार व्यक्ति थे जो तभी बोलते थे जब उन्हें कुछ महत्वपूर्ण कहना होता था। डॉ. बर्नार्ड लगभग पैंतीस वर्ष के थे और बेहद बुद्धिमान, संयमित बुद्धि और आत्म-अनुशासन वाले व्यक्ति थे।
पहली मुलाकात काफी तनावपूर्ण रही, लेकिन बाद के सत्रों में हम अधिक खुलकर और सीधे बात कर पाए। मैं कुछ महीनों तक लगभग हर हफ्ते उनसे मिलता रहा, और फिर बैठकें अनियमित अंतराल पर होने लगीं, कभी-कभी एक महीने तक नहीं, और फिर अचानक हर हफ्ते। बैठकें आमतौर पर सरकार द्वारा निर्धारित की जाती थीं, लेकिन कभी-कभी मैं भी बैठक का अनुरोध करता था।
हमारी शुरुआती मुलाकातों के दौरान, मैंने पाया कि डॉ. बर्नार्ड को छोड़कर मेरे नए सहकर्मी एएनसी के बारे में बहुत कम जानते थे। वे सभी पढ़े-लिखे अफ़्रीकानर थे और अपने लगभग सभी साथियों की तुलना में कहीं अधिक खुले विचारों वाले थे। लेकिन वे इतने दुष्प्रचार के शिकार थे कि उन्हें कुछ तथ्यों के बारे में सही जानकारी देना आवश्यक हो गया। यहां तक कि डॉ. बर्नार्ड, जिन्होंने एएनसी का गहन अध्ययन किया था, उन्हें भी अधिकांश जानकारी पुलिस और खुफिया फाइलों से मिली थी, जो मुख्य रूप से गलत थीं और उन्हें इकट्ठा करने वाले लोगों के पूर्वाग्रहों से दूषित थीं। वे भी उन्हीं पूर्वाग्रहों से प्रभावित हुए बिना नहीं रह सके।
मैंने शुरुआत में एएनसी के इतिहास की रूपरेखा तैयार करने और फिर उन प्रमुख मुद्दों पर अपने रुख को स्पष्ट करने में कुछ समय बिताया, जिनके कारण संगठन सरकार से विभाजित था। इन प्रारंभिक बातों के बाद, हमने महत्वपूर्ण मुद्दों पर ध्यान केंद्रित किया: सशस्त्र संघर्ष, एएनसी का कम्युनिस्ट पार्टी के साथ गठबंधन, बहुमत शासन का लक्ष्य और नस्लीय सुलह का विचार।

सबसे पहला मुद्दा जो उठा, वह कई मायनों में सबसे अहम था, और वह था सशस्त्र संघर्ष। हमने इस पर कई महीनों तक चर्चा की। उनका कहना था कि सरकार के बातचीत के लिए राजी होने से पहले और राष्ट्रपति बोथा से मेरी मुलाकात होने से पहले, एएनसी को हिंसा का त्याग करना होगा और सशस्त्र संघर्ष छोड़ना होगा। उनका तर्क था कि हिंसा मात्र एक आपराधिक व्यवहार है जिसे राज्य बर्दाश्त नहीं कर सकता।
मैंने जवाब दिया कि हिंसा के लिए राज्य जिम्मेदार है और संघर्ष का स्वरूप हमेशा उत्पीड़क ही तय करता है, न कि उत्पीड़ित। यदि उत्पीड़क हिंसा का प्रयोग करता है, तो उत्पीड़ितों के पास हिंसक प्रतिक्रिया के अलावा कोई विकल्प नहीं बचता। हमारे मामले में यह आत्मरक्षा का एक वैध तरीका था। मैंने कहा कि यदि राज्य शांतिपूर्ण तरीकों का प्रयोग करने का निर्णय लेता है, तो एएनसी भी शांतिपूर्ण साधनों का प्रयोग करेगी। मैंने कहा, "हिंसा का त्याग करना आपका दायित्व है, हमारा नहीं।"
मुझे लगता है कि मैंने इस मुद्दे पर उनकी समझ को बेहतर बनाया, लेकिन यह मुद्दा जल्द ही दार्शनिक प्रश्न से व्यावहारिक प्रश्न में बदल गया। जैसा कि मंत्री कोएत्सी और डॉ. बर्नार्ड ने बताया, नेशनल पार्टी ने बार-बार कहा था कि वह हिंसा का समर्थन करने वाले किसी भी संगठन के साथ बातचीत नहीं करेगी: इसलिए, वह अपनी विश्वसनीयता खोए बिना अचानक एएनसी के साथ बातचीत की घोषणा कैसे कर सकती थी? उन्होंने कहा कि बातचीत शुरू करने के लिए, एएनसी को कुछ समझौता करना होगा ताकि सरकार अपने ही लोगों के सामने शर्मिंदा न हो। यह एक वाजिब बात थी और मैं इसे अच्छी तरह समझ सकता था, लेकिन मैं उन्हें कोई रास्ता नहीं सुझाना चाहता था। मैंने कहा, “महोदय, आपकी समस्या का समाधान करना मेरा काम नहीं है।” मैंने उनसे बस इतना कहा कि उन्हें अपने लोगों को यह बताना होगा कि एएनसी के साथ बैठक किए बिना दक्षिण अफ्रीका में शांति और स्थिति का कोई समाधान संभव नहीं है। मैंने कहा, लोग समझ जाएंगे।

कम्युनिस्ट पार्टी के साथ एएनसी का गठबंधन उन्हें सशस्त्र संघर्ष जितना ही परेशान करता प्रतीत होता था। नेशनल पार्टी ने 1950 के दशक की शीत युद्ध की सबसे कट्टरपंथी विचारधारा को अपना लिया था और सोवियत संघ को बुराई का

साम्राज्य और साम्यवाद को शैतान का काम मानती थी। इस धारणा को बदलना असंभव था। उनका मानना था कि कम्युनिस्ट पार्टी एएनसी पर हावी है और उसे नियंत्रित करती है, और बातचीत शुरू करने के लिए पार्टी से संबंध तोड़ना जरूरी है।
सबसे पहले, मैंने कहा कि कोई भी स्वाभिमानी स्वतंत्रता सेनानी उस सरकार से आदेश नहीं लेगा जिसके विरुद्ध वह लड़ रहा है, या किसी विरोधी को खुश करने के लिए अपने लंबे समय के सहयोगी को नहीं छोड़ेगा। फिर मैंने विस्तार से समझाया कि पार्टी और एएनसी अलग-अलग संगठन हैं जिनके अल्पकालिक उद्देश्य एक ही हैं - नस्लीय उत्पीड़न का उन्मूलन और एक नस्ल-मुक्त दक्षिण अफ्रीका का निर्माण - लेकिन हमारे दीर्घकालिक हित एक जैसे नहीं हैं।
यह बहस महीनों तक चलती रही। अधिकांश अफ़्रीकानरों की तरह, उनका भी मानना था कि एएनसी में कई कम्युनिस्ट श्वेत या भारतीय थे, इसलिए वे एएनसी में मौजूद अश्वेतों को नियंत्रित कर रहे थे। मैंने कई ऐसे उदाहरण दिए जब एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी के बीच नीतिगत मतभेद थे और एएनसी विजयी रही, लेकिन इससे उन पर कोई असर नहीं पड़ा। अंततः, झुंझलाहट में आकर मैंने उनसे कहा, “आप लोग खुद को बुद्धिमान समझते हैं, है ना? आप खुद को शक्तिशाली और प्रभावशाली समझते हैं, है ना? खैर, आप चार हैं और मैं अकेला, और आप मुझे नियंत्रित नहीं कर सकते या मेरा मन नहीं बदल सकते। आपको क्या लगता है कि कम्युनिस्ट वहाँ सफल हो सकते हैं जहाँ आप असफल रहे हैं?”

वे राष्ट्रीयकरण के विचार को लेकर भी चिंतित थे और उनका कहना था कि एएनसी और फ्रीडम चार्टर दक्षिण अफ़्रीकी अर्थव्यवस्था के पूर्ण राष्ट्रीयकरण का समर्थन करते हैं। मैंने उन्हें समझाया कि हम कुछ उद्योगों, खासकर उन उद्योगों के लाभों के अधिक समान वितरण के पक्षधर हैं, जिनमें पहले से ही एकाधिकार था, और ऐसे कुछ क्षेत्रों में राष्ट्रीयकरण हो सकता है। लेकिन मैंने उन्हें लिबरेशन पत्रिका के लिए 1956 में लिखे अपने एक लेख का हवाला दिया, जिसमें मैंने कहा था कि फ्रीडम चार्टर समाजवाद का खाका नहीं, बल्कि अफ़्रीकी शैली के पूंजीवाद का खाका था। मैंने उन्हें बताया कि तब से मेरा विचार नहीं बदला है।

चर्चा का दूसरा मुख्य विषय बहुमत शासन का मुद्दा था। उनका मानना था कि यदि बहुमत शासन हुआ तो अल्पसंख्यकों के अधिकारों का हनन होगा। वे जानना चाहते थे कि एएनसी श्वेत अल्पसंख्यकों के अधिकारों की रक्षा कैसे करेगी? मैंने कहा कि दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में एएनसी के समान कोई संगठन नहीं है जिसने दक्षिण अफ्रीका के सभी लोगों और जातियों को एकजुट करने का प्रयास किया हो। मैंने उन्हें स्वतंत्रता चार्टर की प्रस्तावना का हवाला दिया: "दक्षिण अफ्रीका उन सभी का है जो इसमें रहते हैं, चाहे वे काले हों या श्वेत।" मैंने उनसे कहा कि श्वेत भी अफ्रीकी हैं, और भविष्य में किसी भी शासन में बहुमत को अल्पसंख्यकों की आवश्यकता होगी। मैंने कहा, हम आपको समुद्र में धकेलना नहीं चाहते।

94

इन मुलाकातों का सकारात्मक प्रभाव पड़ा: मुझे 1988 की सर्दियों में बताया गया कि राष्ट्रपति बोथा अगस्त के अंत से पहले मुझसे मिलने की योजना बना रहे हैं। देश में अभी भी उथल-पुथल मची हुई थी। सरकार ने 1987 और 1988 दोनों में आपातकाल फिर से लागू कर दिया था। अंतरराष्ट्रीय दबाव बढ़ता जा रहा था। कई और कंपनियां दक्षिण अफ्रीका छोड़कर चली गईं। अमेरिकी कांग्रेस ने व्यापक प्रतिबंध विधेयक पारित कर दिया था।
1987 में, एएनसी ने अपनी पचहत्तरवीं वर्षगांठ मनाई और साल के अंत में तंजानिया में एक सम्मेलन आयोजित किया, जिसमें पचास से अधिक देशों के प्रतिनिधियों ने भाग लिया। ओलिवर ने घोषणा की कि सशस्त्र संघर्ष तब तक तेज रहेगा जब तक सरकार रंगभेद को समाप्त करने के लिए बातचीत करने को तैयार नहीं हो जाती। दो साल पहले, स्वतंत्रता चार्टर की तीसवीं वर्षगांठ के उपलक्ष्य में ज़ाम्बिया में एएनसी के काब्वे सम्मेलन में, पहली बार अन्य नस्लों के सदस्यों को राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के लिए चुना गया था, और एनईसी ने प्रतिज्ञा की थी कि जब तक सभी एएनसी नेताओं को जेल से रिहा नहीं कर दिया जाता, तब तक सरकार के साथ कोई बातचीत नहीं की जा सकती।
हिंसा का बोलबाला होने के बावजूद, नेशनल पार्टी पहले से कहीं अधिक मजबूत हो गई थी। मई 1987 के श्वेत-बहुमत वाले आम चुनाव में, नेशनलिस्टों ने भारी बहुमत से जीत हासिल की। इससे भी बुरी बात यह थी कि उदारवादी प्रोग्रेसिव फेडरल पार्टी को आधिकारिक विपक्ष के रूप में कंज़र्वेटिव पार्टी ने प्रतिस्थापित कर दिया था, जो नेशनलिस्टों से भी अधिक दक्षिणपंथी थी और उसने इस मुद्दे पर चुनाव प्रचार किया था कि सरकार अश्वेत विपक्ष के प्रति बहुत नरम रुख अपना रही है।
गुप्त वार्ताओं को लेकर मेरी आशावादिता के बावजूद, वह समय बहुत कठिन था। विनी हाल ही में मुझसे मिलने आई थी और मुझे पता चला कि 8115 ऑरलैंडो वेस्ट, वह घर जहाँ हमारी शादी हुई थी और जिसे मैं अपना घर मानता था, उसे आगजनी करने वालों ने जला दिया था। हमने अनमोल पारिवारिक रिकॉर्ड, तस्वीरें और यादगार वस्तुएँ खो दीं - यहाँ तक कि शादी के केक का वह टुकड़ा भी जो विनी ने मेरी रिहाई के लिए बचाकर रखा था। मैंने हमेशा सोचा था कि एक दिन जब मैं जेल

से बाहर आऊँगा, तो उन तस्वीरों और पत्रों को देखकर अतीत को फिर से जी सकूँगा, और अब वे सब गायब हो गए थे। जेल ने मेरी आज़ादी छीन ली थी, लेकिन मेरी यादें नहीं, और अब मुझे लग रहा था कि संघर्ष के कुछ दुश्मनों ने मुझसे वे यादें भी छीनने की कोशिश की है।
मुझे लगातार खांसी हो रही थी जो ठीक नहीं हो रही थी, और मैं अक्सर व्यायाम करने के लिए बहुत कमजोर महसूस करता था। मैंने अपनी कोठरी में नमी की शिकायत की थी, लेकिन इस पर कोई कार्रवाई नहीं की गई। एक दिन, अपने वकील इस्माइल अयूब के साथ मुलाकात के दौरान, मुझे अचानक तबीयत खराब लगी और उल्टी हो गई। मुझे वापस मेरी कोठरी में ले जाया गया, डॉक्टर ने मेरी जांच की, और मैं जल्द ही ठीक हो गया। हालांकि, कुछ दिनों बाद, रात के खाने के बाद मैं अपनी कोठरी में था जब कई वार्डर और एक डॉक्टर आए। डॉक्टर ने मेरी सरसरी जांच की, और फिर एक वार्डर ने मुझे कपड़े पहनने को कहा। मुझे बताया गया, "हम आपको केप टाउन के अस्पताल ले जा रहे हैं।" सुरक्षा कड़ी थी; मैं कम से कम एक दर्जन वार्डरों के साथ कारों और सैन्य वाहनों के काफिले में गया।

मुझे केप के हरे-भरे और समृद्ध इलाके में स्थित स्टेलनबोश विश्वविद्यालय के परिसर में टाइगरबर्ग अस्पताल ले जाया गया। जैसा कि मुझे बाद में पता चला, उन्होंने लगभग एक अलग अस्पताल चुन लिया था क्योंकि अधिकारियों को डर था कि विश्वविद्यालय के अस्पताल में मुझे शायद सहानुभूति मिल सकती है। वार्डर पहले अंदर गए और प्रवेश क्षेत्र से सभी को बाहर निकाल दिया। फिर मुझे एक ऐसे तल पर ले जाया गया जो पूरी तरह से खाली था। उस तल के गलियारे में एक दर्जन से अधिक सशस्त्र गार्ड तैनात थे।
जांच कक्ष में मेज पर बैठे हुए, मेरी जांच एक युवा और मिलनसार डॉक्टर ने की, जो विश्वविद्यालय के मेडिकल स्कूल में प्रोफेसर भी थे। उन्होंने मेरे गले की जांच की, मेरी छाती को थपथपाया, कुछ नमूने लिए और तुरंत मुझे स्वस्थ घोषित कर दिया। मुस्कुराते हुए उन्होंने कहा, "आपको कोई बीमारी नहीं है। हम आपको कल छुट्टी दे सकते हैं।" मैं सरकार के साथ अपनी बातचीत से विचलित नहीं होना चाहता था, इसलिए उनके निदान से मुझे खुशी हुई।

जांच के बाद डॉक्टर ने मुझसे पूछा कि क्या मैं चाय पीना चाहूंगा। मैंने हां कहा और कुछ मिनट बाद एक लंबी, युवा अश्वेत नर्स ट्रे लेकर अंदर आई। वहां मौजूद सभी सशस्त्र गार्डों और वार्डरों की मौजूदगी से वह इतनी डर गई कि उसने ट्रे मेरे बिस्तर पर गिरा दी, जिससे चाय छलक गई, और फिर वह जल्दी से बाहर चली गई।

मैंने पूरी रात खाली वार्ड में कड़ी सुरक्षा के बीच बिताई। अगली सुबह, नाश्ता करने से पहले ही, अस्पताल के आंतरिक चिकित्सा विभाग के प्रमुख एक बुजुर्ग डॉक्टर मुझसे मिलने आए। वे एक सख्त मिजाज के डॉक्टर थे और पिछली रात के मिलनसार युवा डॉक्टर की तुलना में उनका व्यवहार बिल्कुल भी नरम नहीं था। बिना किसी भूमिका के, उन्होंने मेरी छाती पर हल्के से थपथपाया और फिर रूखे स्वर में कहा, "आपके फेफड़ों में पानी है।" मैंने उन्हें बताया कि पिछले डॉक्टर ने जांच की थी और कहा था कि मैं ठीक हूँ। थोड़ी झुंझलाहट के साथ उन्होंने कहा, "मंडेला, अपनी छाती देखो।" उन्होंने बताया कि मेरी छाती का एक हिस्सा दूसरे हिस्से से बड़ा है और कहा कि शायद उसमें पानी भरा हुआ है।
उन्होंने एक नर्स से सिरिंज लाने को कहा, और बिना देर किए उन्होंने उसे मेरी छाती में चुभोया और कुछ भूरा तरल पदार्थ निकाला। उन्होंने पूछा, "क्या आपने नाश्ता किया है?" मैंने जवाब दिया, "नहीं।" उन्होंने कहा, "अच्छा, हम आपको तुरंत ऑपरेशन थिएटर ले जा रहे हैं।" उन्होंने मुझे बताया कि मेरे फेफड़ों में बहुत सारा पानी जमा हो गया है और वह उसे तुरंत निकालना चाहते हैं।
ऑपरेशन कक्ष में मुझे बेहोश किया गया, और उसके बाद मुझे जो याद है वह यह है कि मैं डॉक्टर के सामने एक कमरे में जागा। मैं बेहोश सा था, लेकिन मैंने उनकी बातों पर ध्यान केंद्रित किया: उन्होंने मेरी छाती से दो लीटर पानी निकाला था और जब उस तरल पदार्थ का विश्लेषण किया गया, तो उसमें तपेदिक का रोगाणु पाया गया। उन्होंने कहा कि यह बीमारी की शुरुआती अवस्था है, और रोगाणु ने फेफड़ों को कोई नुकसान नहीं पहुंचाया है। उन्होंने कहा कि आमतौर पर पूरी तरह से विकसित तपेदिक को ठीक होने में छह महीने लगते हैं,

लेकिन मैं दो महीने में ठीक हो जाऊंगा। डॉक्टर इस बात से सहमत थे कि संभवतः नम कोशिका ही मेरी बीमारी का कारण बनी थी।

मैंने अगले छह सप्ताह टाइगरबर्ग में स्वास्थ्य लाभ और उपचार में बिताए। दिसंबर में, मुझे पोल्समूर के पास स्थित एक आलीशान क्लिनिक, कॉन्स्टेंटियाबर्ग क्लिनिक में स्थानांतरित कर दिया गया, जहाँ पहले कभी किसी अश्वेत मरीज का इलाज नहीं हुआ था। वहाँ मेरी पहली सुबह, कोबी कोएत्सी मुझसे मिलने आए, उनके साथ मेजर माराईस भी थे, जो मेरी देखभाल के लिए जिम्मेदार एक उप-कमांडर थे। हमने अभी अभिवादन भी नहीं किया था कि तभी वार्ड बॉय मेरा नाश्ता लेकर आ गया।
हाल ही में हुई मेरी बीमारी और उच्च रक्तचाप के इतिहास के कारण, मुझे सख्त कम कोलेस्ट्रॉल वाला आहार लेने के लिए कहा गया था। यह आदेश शायद क्लिनिक की रसोई तक नहीं पहुँचा था, क्योंकि नाश्ते की थाली में तले हुए अंडे, बेकन के तीन टुकड़े और मक्खन लगे टोस्ट के कई टुकड़े थे। मुझे याद नहीं था कि मैंने आखिरी बार बेकन और अंडे कब खाए थे, और मुझे बहुत भूख लगी थी। जैसे ही मैं अंडे का एक स्वादिष्ट निवाला लेने वाला था, मेजर मराइस ने कहा, "नहीं, मंडेला, यह आपके चिकित्सक के आदेश के विरुद्ध है," और उन्होंने थाली लेने के लिए हाथ बढ़ाया। मैंने थाली को कसकर पकड़ लिया और कहा, "मेजर, मुझे खेद है। अगर यह नाश्ता मुझे मार डालेगा, तो मैं आज मरने के लिए तैयार हूँ।"

कॉन्स्टेंटियाबर्ग में बसने के बाद, मैंने कोबी कोएत्सी और गुप्त समिति से दोबारा मिलना शुरू किया। जब मैं अभी भी क्लिनिक में था, कोएत्सी ने कहा कि वह मुझे कैद और आज़ादी के बीच की स्थिति में रखना चाहते हैं। हालाँकि उन्होंने स्पष्ट रूप से इसका मतलब नहीं बताया, लेकिन मुझे उनकी बात का कुछ अंदाज़ा था और मैंने बस सिर हिला दिया। मैं इतना भोला नहीं था कि उनके प्रस्ताव को आज़ादी समझ लूँ, लेकिन मैं जानता था कि यह उस दिशा में एक कदम था।

इस बीच, क्लिनिक बेहद आरामदायक था और पहली बार मुझे अस्पताल में आराम करने में सचमुच आनंद आया। नर्सें - जो श्वेत या अश्वेत थीं, अश्वेत नर्सों को अनुमति नहीं थी - मेरा बहुत ख्याल रखती थीं; वे अतिरिक्त मिठाइयाँ और तकिए लाती थीं और छुट्टी के दिनों में भी लगातार मुझसे मिलने आती रहती थीं।
एक दिन, एक नर्स मेरे पास आई और बोली, “श्रीमान मंडेला, आज रात हमारे यहाँ पार्टी है और हम चाहते हैं कि आप आएँ।” मैंने कहा कि मुझे आने में गर्व होगा, लेकिन मुझे यकीन है कि अधिकारी इस पर कुछ कहेंगे। जेल अधिकारियों ने मुझे जाने की अनुमति देने से इनकार कर दिया, जिससे नर्सें नाराज़ हो गईं और परिणामस्वरूप, उन्होंने मेरे कमरे में ही पार्टी करने का फैसला किया, यह कहते हुए कि मेरे बिना उनकी पार्टी नहीं हो सकती।
उस रात, पार्टी फ्रॉक पहने लगभग एक दर्जन युवतियाँ केक, पंच और उपहार लेकर मेरे कमरे में आ गईं। पहरेदार अचंभित लग रहे थे, लेकिन वे इन चंचल युवतियों को सुरक्षा के लिए खतरा कैसे मान सकते थे? दरअसल, जब एक पहरेदार ने कुछ नर्सों को मेरे कमरे में आने से रोकने की कोशिश की, तो मैंने मज़ाक में उस पर आरोप लगाया कि वह एक बूढ़े आदमी को इतनी खूबसूरत युवतियों से इतना ध्यान मिलते देखकर ईर्ष्या कर रहा है।

95

दिसंबर 1988 की शुरुआत में, मेरे वार्ड की सुरक्षा कड़ी कर दी गई थी और ड्यूटी पर तैनात अधिकारी सामान्य से अधिक सतर्क थे। कुछ बदलाव होने वाला था। 9 दिसंबर की शाम को, मेजर माराईस मेरे कमरे में आए और मुझे जाने की तैयारी करने को कहा। कहाँ जाना है? मैंने उनसे पूछा। वे कुछ नहीं बता सके। मैंने अपना सामान पैक किया और अपनी कुछ वफादार नर्सों को ढूंढने लगी; मुझे इस बात का दुख था कि मैं उन्हें धन्यवाद नहीं दे पाई और उन्हें विदाई नहीं दे पाई।
हम जल्दी में निकले और लगभग एक घंटे की यात्रा के बाद हम एक ऐसी जेल में पहुँचे जिसका नाम मुझे जाना-पहचाना लगा: विक्टर वर्स्टर। खूबसूरत पुराने केप डच शहर पार्ल में स्थित, विक्टर वर्स्टर केप टाउन से पैंतीस मील उत्तर-पूर्व में प्रांत के अंगूर उत्पादन क्षेत्र में है। इस जेल की प्रतिष्ठा एक आदर्श सुविधा के रूप में थी। हमने पूरी जेल के अंदर से गाड़ी चलाई और फिर संपत्ति के पीछे के हिस्से में एक जंगली, घने जंगल से होकर गुजरने वाली घुमावदार कच्ची सड़क पर आगे बढ़े। सड़क के अंत में हम एक कंक्रीट की दीवार के पीछे बने और ऊँचे देवदार के पेड़ों की छाया में स्थित एक एकांत, सफेदी से पुते एक मंजिला कॉटेज के पास पहुँचे।
मेजर माराईस मुझे घर के अंदर ले गए और मैंने एक विशाल बैठक देखी, जिसके बगल में एक बड़ी रसोई थी, और घर के पीछे एक और भी बड़ा शयनकक्ष था। घर में सादा लेकिन आरामदायक फर्नीचर था। मेरे आने से पहले इसकी सफाई या झाड़ू नहीं लगाई गई थी, और शयनकक्ष और बैठक कक्ष तरह-तरह के अजीबोगरीब कीड़ों, कनखजूरे, बंदर मकड़ियों आदि से भरे हुए थे, जिनमें से कुछ मैंने पहले कभी नहीं देखे थे। उस रात, मैंने अपने बिस्तर और खिड़की की चौखट से कीड़ों को साफ किया और अपने नए घर में बहुत अच्छी नींद सोई।
अगली सुबह मैंने अपने नए घर का जायज़ा लिया और पिछवाड़े में एक स्विमिंग पूल और दो छोटे बेडरूम देखे। मैं बाहर निकला और घर को छाया देने वाले पेड़ों की सुंदरता निहारने लगा, जिनसे घर ठंडा रहता था। पूरा घर एकांत और अलग-थलग सा लग रहा था। इस सुखद दृश्य में बस एक ही कमी थी कि दीवारों पर

❖

❖

बजे घर जाते, तो मेरे लिए रात का खाना छोड़ जाते जिसे मैं माइक्रोवेव में गर्म कर लेती थी, जो मेरे लिए बिल्कुल नया उपकरण था।
वारंट ऑफिसर स्वार्ट रोटी बनाते थे, घर में बनी अदरक की बीयर और कई अन्य स्वादिष्ट व्यंजन तैयार करते थे। जब मेरे यहाँ मेहमान आते थे, जो कि अक्सर होने लगा था, तो वे लज़ीज़ भोजन तैयार करते थे। वे हमेशा खाने की तारीफ़ करते थे और मैं कह सकता हूँ कि मेरे सभी मेहमान मेरे रसोइये से ईर्ष्या करते थे। जब अधिकारियों ने मेरे कुछ एएनसी साथियों और यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट (यूडीएफ) और मास डेमोक्रेटिक मूवमेंट (एमडीएम) के सदस्यों को मुझसे मिलने की अनुमति दी, तो मैंने उन पर आरोप लगाया कि वे केवल खाने के लिए आते हैं।
एक दिन, श्री स्वार्ट द्वारा बनाए गए स्वादिष्ट भोजन के बाद, मैं बर्तन धोने के लिए रसोई में गई। उन्होंने कहा, "नहीं, यह मेरा काम है। तुम्हें बैठक में वापस जाना चाहिए।" मैंने ज़िद की कि मुझे कुछ तो करना ही है, और अगर उन्होंने खाना बनाया है, तो बर्तन धोना मेरा फर्ज है। श्री स्वार्ट ने विरोध किया, लेकिन अंत में मान गए। उन्होंने इस बात पर भी आपत्ति जताई कि मैं सुबह अपना बिस्तर खुद लगाऊं, यह कहते हुए कि यह उनकी ज़िम्मेदारी है। लेकिन मैं इतने लंबे समय से अपना बिस्तर खुद लगा रही थी कि यह मेरी आदत बन गई थी।
हमने एक और मामले में भी समझौता किया। कई अफ़्रीकान्स भाषी वार्डरों की तरह, वह भी अपनी अंग्रेज़ी सुधारने के लिए उत्सुक थे। मैं हमेशा अपनी अफ़्रीकान्स भाषा को सुधारने के तरीके खोजता रहता था। हमने एक समझौता किया: वह मुझसे अंग्रेज़ी में बात करेंगे और मैं अफ़्रीकान्स में जवाब दूंगा, और इस तरह हम दोनों उस भाषा का अभ्यास करते रहे जिसमें हम सबसे कमज़ोर थे।
मैं कभी-कभी उनसे कुछ खास व्यंजन बनाने के लिए कहता था। कभी-कभी मैं उनसे सैंप और बीन्स बनाने का अनुरोध करता था, जो मैं बचपन में खाया करता था। एक दिन मैंने उनसे कहा, "आप जानते हैं, मैं चाहता हूँ कि आप मेरे लिए कुछ भूरे चावल पका दें।" मुझे आश्चर्य हुआ जब उन्होंने कहा, "भूरे चावल क्या होते हैं?" स्वार्ट एक युवा व्यक्ति थे, और मैंने उन्हें समझाया कि भूरे चावल बिना परिष्कृत चावल के दाने होते हैं, और हम युद्ध के दौरान इसे खाते थे जब सफेद चावल उपलब्ध नहीं होते थे। मैंने कहा कि यह सफेद चावल से कहीं अधिक

स्वास्थ्यवर्धक होता है। उन्हें थोड़ा संदेह हुआ, लेकिन उन्होंने किसी तरह मेरे लिए कुछ भूरे चावल का इंतजाम कर दिया। उन्होंने उसे पकाया और मुझे वह बहुत पसंद आया। लेकिन श्री स्वार्ट को उसका स्वाद बिल्कुल पसंद नहीं आया और उन्होंने कसम खाई कि अगर मैं कभी इसे दोबारा खाना चाहूँ, तो मुझे इसे खुद ही पकाना होगा।

हालांकि मैं शराब नहीं पीता था, फिर भी मैं एक अच्छा मेज़बान बनना चाहता था और अपने मेहमानों को शराब परोसना चाहता था। मैं कभी-कभी मेहमानों को सहज महसूस कराने के लिए शराब का एक घूंट पी लेता था, लेकिन मुझे केवल दक्षिण अफ्रीका की सेमीस्वीट वाइन ही पसंद है, जो वास्तव में बहुत मीठी होती है। मेहमानों के आने से पहले मैं श्री स्वार्ट से एक खास तरह की नेडरबर्ग वाइन लाने को कहता था, जिसे मैंने पहले चखा था और जानता था कि वह हल्की मीठी होती है। एक दिन, मेरे दोस्त और वकील, दुल्लाह उमर, जॉर्ज बिज़ोस और इस्माइल अयूब, दोपहर के भोजन के लिए आने वाले थे, और मैंने श्री स्वार्ट से कुछ नेडरबर्ग वाइन लाने को कहा, अगर जॉर्ज बिज़ोस (जो मुसलमान नहीं हैं) अपने भोजन के साथ पीना चाहें। मैंने देखा कि यह सुनकर उन्होंने मुंह बनाया, और मैंने उनसे पूछा कि क्या बात है।
“श्रीमान मंडेला,” उन्होंने कहा। “मैं हमेशा आपके कहने पर वही शराब खरीदता हूँ, लेकिन वह सस्ती होती है और स्वाद में अच्छी नहीं होती।” मैंने उन्हें याद दिलाया कि मुझे सूखी शराब पसंद नहीं है और मुझे यकीन है कि जॉर्ज को वैसे भी फर्क पता नहीं चलेगा। श्री स्वार्ट मुस्कुराए और एक समझौता सुझाया: वे बाहर जाकर दो बोतलें खरीद लाएंगे, एक सूखी शराब और मेरी नेडरबर्ग, और फिर वे मेरे मेहमान से पूछेंगे कि उन्हें कौन सी शराब पसंद है। “ठीक है,” मैंने कहा, “चलिए, आपका प्रयोग करके देखते हैं।”
जब हम चारों दोपहर के भोजन के लिए बैठ गए, तो स्वार्ट दो बोतलें लेकर बाहर आया और मेहमानों की ओर मुड़कर बोला, "सज्जनों, आप कौन सी शराब लेना चाहेंगे?" मेरी ओर देखे बिना ही, जॉर्ज ने सूखी सफेद शराब की बोतल की ओर इशारा किया। वारंट ऑफिसर स्वार्ट बस मुस्कुरा दिए।

96

समिति के साथ बैठकें जारी रहीं, और हम उन्हीं मुद्दों पर अटके रहे जिन्होंने हमेशा हमें आगे बढ़ने से रोका था: सशस्त्र संघर्ष, कम्युनिस्ट पार्टी और बहुमत शासन। मैं कोएत्सी पर पी. डब्ल्यू. बोथा से मुलाकात कराने के लिए दबाव डाल रहा था। इस समय तक, अधिकारियों ने मुझे पोल्समूर और रॉबेन द्वीप पर अपने साथियों और लुसाका में एएनसी के साथ प्रारंभिक संपर्क स्थापित करने की अनुमति दे दी थी। हालांकि मैं जानता था कि मैं अपने सहयोगियों से आगे निकल रहा हूं, मैं इतना आगे नहीं बढ़ना चाहता था कि बाद में खुद को अकेला पाऊं।
जनवरी 1989 में, पोल्समूर से मेरे चार साथी मुझसे मिलने आए और हमने उस ज्ञापन पर चर्चा की जिसे मैं राज्य अध्यक्ष को भेजने की योजना बना रहा था। ज्ञापन में मैंने अपनी गुप्त समिति की बैठकों में जो बातें कही थीं, उनमें से अधिकांश को दोहराया गया था, लेकिन मैं यह सुनिश्चित करना चाहता था कि राज्य अध्यक्ष उन्हें सीधे मुझसे सुनें। उन्हें यह पता चल जाएगा कि हम उन्मादी आतंकवादी नहीं, बल्कि समझदार लोग हैं।
मार्च में श्री बोथा को भेजे गए ज्ञापन में मैंने लिखा, “मैं बहुत चिंतित हूँ, और निस्संदेह कई अन्य दक्षिण अफ़्रीकी भी, क्योंकि दक्षिण अफ़्रीका दो शत्रुतापूर्ण गुटों में बँट सकता है — एक तरफ़ अश्वेत और दूसरी तरफ़ श्वेत, जो एक-दूसरे का नरसंहार करेंगे।” इस स्थिति से बचने और वार्ता के लिए आधार तैयार करने हेतु, मैंने सरकार द्वारा एएनसी से वार्ता की पूर्व शर्त के रूप में रखी गई तीन मांगों पर विचार करने का प्रस्ताव रखा: हिंसा का त्याग; एसएसीपी से संबंध तोड़ना; और बहुमत शासन की मांग को छोड़ना। हिंसा के मुद्दे पर मैंने लिखा था कि एएनसी द्वारा हिंसा का त्याग करने से इनकार करना समस्या नहीं है: “सच तो यह है कि सरकार अभी तक अश्वेतों के साथ राजनीतिक सत्ता साझा करने के लिए तैयार नहीं है।” मैंने एसएसीपी को दरकिनार करने की अपनी अनिच्छा स्पष्ट की और दोहराया कि हम उसके नियंत्रण में नहीं हैं। मैंने लिखा, “सम्मानित व्यक्ति कौन होगा जो एक आम विरोधी के दबाव में अपने जीवन भर के मित्र को त्याग देगा और फिर भी अपनी जनता के बीच अपनी विश्वसनीयता बनाए रखेगा?” मैंने कहा कि सरकार द्वारा बहुमत शासन को

अस्वीकार करना सत्ता को सुरक्षित रखने का एक छिपा हुआ प्रयास है। मैंने सुझाव दिया कि उसे वास्तविकता का सामना करना होगा। “बहुमत शासन और आंतरिक शांति एक ही सिक्के के दो पहलू हैं, और श्वेत दक्षिण अफ्रीका को यह स्वीकार करना ही होगा कि जब तक इस सिद्धांत को पूरी तरह से लागू नहीं किया जाता, तब तक इस देश में कभी शांति और स्थिरता नहीं आएगी।”
पत्र के अंत में, मैंने बातचीत के लिए एक बहुत ही मोटा-मोटा खाका पेश किया था।

दो राजनीतिक मुद्दों का समाधान करना होगा; पहला, एकात्मक राज्य में बहुमत शासन की मांग, दूसरा, इस मांग को लेकर श्वेत दक्षिण अफ्रीका की चिंता, साथ ही साथ श्वेतों द्वारा संरचनात्मक गारंटी की मांग कि बहुमत शासन का अर्थ श्वेत अल्पसंख्यकों पर अश्वेतों का प्रभुत्व नहीं होगा। सरकार और एएनसी के सामने सबसे महत्वपूर्ण चुनौती इन दोनों स्थितियों में सामंजस्य स्थापित करना होगा।

मैंने प्रस्ताव दिया कि यह कार्य दो चरणों में किया जाए: पहला चरण वार्ता के लिए उपयुक्त परिस्थितियाँ बनाने हेतु चर्चा करना, और दूसरा चरण वास्तविक वार्ता करना। “मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूँ कि मेरे द्वारा उठाया गया कदम आपको वर्तमान गतिरोध को दूर करने और देश की राजनीतिक स्थिति को सामान्य बनाने का अवसर प्रदान करता है। मुझे आशा है कि आप इस अवसर का शीघ्र लाभ उठाएँगे।”

लेकिन इसमें देरी हुई। जनवरी में पी. डब्ल्यू. बोथा को स्ट्रोक आया। इससे राष्ट्रपति पूरी तरह से अक्षम तो नहीं हुए, लेकिन उनकी शारीरिक शक्ति कम हो गई और उनके मंत्रिमंडल के अनुसार, उनका स्वभाव और भी चिड़चिड़ा हो गया। फरवरी में, बोथा ने अप्रत्याशित रूप से नेशनल पार्टी के प्रमुख पद से इस्तीफा दे दिया, लेकिन राष्ट्रपति का पद बरकरार रखा। यह देश के इतिहास में एक अभूतपूर्व घटना थी: दक्षिण अफ्रीका की संसदीय प्रणाली में, बहुमत दल का नेता राष्ट्राध्यक्ष बनता है। राष्ट्रपति बोथा अब राष्ट्राध्यक्ष

तो थे, लेकिन अपनी पार्टी के नहीं। कुछ लोगों ने इसे सकारात्मक घटनाक्रम के रूप में देखा: बोथा दक्षिण अफ्रीका में वास्तविक परिवर्तन लाने के लिए "दलीय राजनीति से ऊपर" रहना चाहते थे।
राजनीतिक हिंसा और अंतरराष्ट्रीय दबाव लगातार बढ़ता गया। देश भर में राजनीतिक बंदियों ने भूख हड़ताल सफलतापूर्वक संपन्न की और कानून-व्यवस्था मंत्री को नौ सौ से अधिक बंदियों को रिहा करने के लिए राजी कर लिया। 1989 में, यूडीएफ ने दक्षिण अफ्रीकी ट्रेड यूनियन कांग्रेस (सीओएसएटीयू) के साथ गठबंधन करके जन लोकतांत्रिक आंदोलन (एमडीएम) का गठन किया, जिसने रंगभेद संस्थाओं को चुनौती देने के लिए देशव्यापी सविनय अवज्ञा अभियान शुरू किया। अंतरराष्ट्रीय स्तर पर, ओलिवर ने ग्रेट ब्रिटेन और सोवियत संघ की सरकारों के साथ बातचीत की और जनवरी 1987 में वाशिंगटन में अमेरिकी विदेश मंत्री जॉर्ज शुल्ज़ से मुलाकात की। अमेरिकियों ने दक्षिण अफ्रीका में किसी भी समाधान के लिए एएनसी को एक अनिवार्य तत्व के रूप में मान्यता दी। दक्षिण अफ्रीका पर प्रतिबंध लागू रहे और यहां तक कि बढ़ भी गए।
राजनीतिक हिंसा का एक दुखद पहलू भी था। सोवेटो में हिंसा बढ़ने पर मेरी पत्नी ने कुछ युवकों को अपने अंगरक्षक के रूप में काम करने की अनुमति दी, ताकि वह बस्ती में घूमते समय उनकी सुरक्षा कर सके। ये युवक अप्रशिक्षित और अनुशासनहीन थे और मुक्ति संघर्ष के लिए अनुपयुक्त गतिविधियों में शामिल हो गए। बाद में विनी अपने एक अंगरक्षक के मुकदमे में कानूनी रूप से उलझ गईं, जिसे एक युवा साथी की हत्या का दोषी ठहराया गया था। यह स्थिति मेरे लिए अत्यंत चिंताजनक थी, क्योंकि इस तरह के घोटाले ने आंदोलन को उस समय विभाजित करने का काम किया जब एकता अत्यंत आवश्यक थी। मैंने अपनी पत्नी का पूर्ण समर्थन किया और मेरा मानना था कि यद्यपि उन्होंने गलत निर्णय लिया था, फिर भी उन पर लगे किसी भी गंभीर आरोप से वे निर्दोष थीं।
उस जुलाई में, मेरे इकहत्तरवें जन्मदिन पर, विक्टर वर्स्टर स्थित कॉटेज में मेरा लगभग पूरा परिवार मुझसे मिलने आया। यह पहली बार था जब मेरी पत्नी, बच्चे और पोते-पोतियाँ सब एक साथ एक जगह पर थे, और यह एक भव्य और खुशी का अवसर था। वारंट ऑफिसर स्वार्ट ने दावत तैयार करने में कोई कसर नहीं छोड़ी, और जब मैंने कुछ पोते-पोतियों को मुख्य भोजन से पहले मिठाई खाने की अनुमति दी, तो उन्हें ज़रा भी गुस्सा नहीं आया। भोजन के बाद, पोते-पोतियाँ मेरे

शयनकक्ष में जाकर एक डरावनी फिल्म देखने लगे, जबकि बड़े लोग बाहर लाउंज में गपशप करते रहे। अपने पूरे परिवार को अपने आस-पास पाकर मुझे बहुत गहरा आनंद मिला, और एकमात्र दुख इस बात का था कि मैंने इतने वर्षों तक ऐसे अवसरों को खो दिया था।

97

4 जुलाई को जनरल विलेमसे मुझसे मिलने आए और उन्होंने मुझे बताया कि अगले दिन मुझे राष्ट्रपति बोथा से मिलने ले जाया जा रहा है। उन्होंने इस मुलाकात को "शिष्टाचार भेंट" बताया और मुझे सुबह 5:30 बजे निकलने के लिए तैयार रहने को कहा। मैंने जनरल से कहा कि मैं उनसे मिलने के लिए उत्सुक तो हूँ, लेकिन मुझे लगता है कि श्री बोथा से मिलने के लिए सूट और टाई पहनना उचित होगा। (प्रतिष्ठित व्यक्तियों के समूह की मुलाकात वाला सूट तो बहुत पहले ही खो गया था।) जनरल मान गए और कुछ ही देर बाद एक दर्जी मेरा नाप लेने आया। उसी दोपहर मुझे नया सूट, टाई, कमीज और जूते मिल गए। जाने से पहले जनरल ने मुझसे मेरा ब्लड ग्रुप भी पूछा, ताकि अगले दिन कुछ अप्रिय घटना होने की स्थिति में काम आ सके।
मैंने बैठक के लिए यथासंभव तैयारी की। मैंने अपने ज्ञापन और उसके लिए बनाए गए विस्तृत नोट्स की समीक्षा की। मैंने यह सुनिश्चित करने के लिए कि मैं नवीनतम जानकारी से अवगत रहूँ, यथासंभव समाचार पत्रों और प्रकाशनों को पढ़ा। राष्ट्रपति बोथा के राष्ट्रीय पार्टी के प्रमुख पद से इस्तीफ़ा देने के बाद, एफ. डब्ल्यू. डी. क्लर्क उनके स्थान पर निर्वाचित हुए थे, और कहा जाता था कि दोनों नेताओं के बीच काफ़ी खींचतान चल रही थी। कुछ लोग बोथा की मुझसे मिलने की इच्छा को उनके प्रतिद्वंद्वी से बढ़त छीनने का तरीका मान सकते हैं, लेकिन इससे मुझे कोई फ़र्क नहीं पड़ता था। मैंने राष्ट्रपति द्वारा दिए जाने वाले संभावित तर्कों और उनके जवाब में दिए जाने वाले अपने तर्कों का पूर्वाभ्यास किया। किसी भी प्रतिद्वंद्वी से मुलाक़ात में, यह सुनिश्चित करना ज़रूरी होता है कि आपने अपने सामने वही प्रभाव डाला है जो आप व्यक्त करना चाहते हैं।
श्री बोथा से मिलने को लेकर मैं तनाव में था। उन्हें 'द ग्रूट क्रोकोडिल' (महान मगरमच्छ) के नाम से जाना जाता था और मैंने उनके भयंकर स्वभाव के बारे

में कई किस्से सुने थे। वे मुझे पुराने ज़माने के, अड़ियल और ज़िद्दी अफ़्रीकनर का जीता-जागता उदाहरण लगते थे, जो अश्वेत नेताओं से चर्चा करने के बजाय उन्हें हुकुम देते थे। हाल ही में हुए उनके स्ट्रोक ने शायद उनकी इस प्रवृत्ति को और बढ़ा दिया था। मैंने ठान लिया था कि अगर वे मेरे साथ भी इसी तरह उंगली उठाकर बात करेंगे, तो मुझे उन्हें बताना पड़ेगा कि मुझे उनका यह व्यवहार अस्वीकार्य है, और फिर मैं खड़ा होकर बैठक स्थगित कर दूंगा।

* * *

ठीक सुबह 5:30 बजे, विक्टर वर्स्टर के कमांडर मेजर माराईस मेरी कुटिया में पहुँचे। वे बैठक में आए जहाँ मैं उनके सामने अपने नए सूट में निरीक्षण के लिए खड़ा था। वे मेरे चारों ओर घूमे और फिर अपना सिर अगल-बगल हिलाया। “नहीं, मंडेला, आपकी टाई,” उन्होंने कहा। जेल में टाई की ज़्यादा ज़रूरत नहीं होती थी, और मुझे उस सुबह टाई पहनते समय एहसास हुआ कि मैं उसे ठीक से बांधना भूल गया था। मैंने जैसे-तैसे एक गांठ बांधी और उम्मीद की कि कोई ध्यान न दे। मेजर माराईस ने मेरे कॉलर के बटन खोले, टाई ढीली की और फिर उतार दी, और मेरे पीछे खड़े होकर उसे डबल विंडसर गांठ में बांध दिया। फिर वे अपनी कलाकारी को निहारने के लिए पीछे हट गए। “बहुत बढ़िया,” उन्होंने कहा।
हम विक्टर वर्स्टर से पोलस्मूर होते हुए जनरल विलेमसे के आवास पर पहुँचे, जहाँ जनरल की पत्नी ने हमें नाश्ता परोसा। नाश्ते के बाद, एक छोटे से काफिले में, हम आधिकारिक राष्ट्रपति कार्यालय, टुइनहुइस गए और एक भूमिगत गैरेज में गाड़ी खड़ी की जहाँ हमें कोई देख न सके। टुइनहुइस उन्नीसवीं सदी की केप डच शैली की एक सुंदर इमारत है, लेकिन उस दिन मुझे इसे ठीक से देखने का मौका नहीं मिला। मुझे चुपके से राष्ट्रपति के सुइट में ले जाया गया। हम लिफ्ट से भूतल पर गए और राष्ट्रपति कार्यालय के सामने एक भव्य, लकड़ी के पैनल वाली लॉबी में पहुँचे। वहाँ कोबी कोएत्सी और नील बर्नार्ड तथा जेल अधिकारियों का एक दल हमारा स्वागत करने के लिए मौजूद था। मैंने इस मुलाकात के बारे में कोएत्सी और डॉ. बर्नार्ड दोनों से विस्तार से बात की थी, और उन्होंने हमेशा मुझे राष्ट्रपति के साथ विवादास्पद मुद्दों से बचने की सलाह दी थी। जब हम प्रतीक्षा कर रहे थे, डॉ. बर्नार्ड ने नीचे देखा और पाया

इस पर सहमति बन गई, तो श्री बोथा उठे और मुझसे हाथ मिलाते हुए कहा कि आपसे मिलकर बहुत खुशी हुई। सचमुच, मुझे बहुत खुशी हुई थी। मैंने उन्हें धन्यवाद दिया और जिस रास्ते से हम आए थे उसी रास्ते से वापस चले गए।
हालांकि वार्ता के लिहाज से यह बैठक कोई बड़ी सफलता नहीं थी, लेकिन एक अन्य मायने में यह महत्वपूर्ण थी। श्री बोथा लंबे समय से इस निर्णायक मोड़ को पार करने की आवश्यकता की बात करते रहे थे, लेकिन उन्होंने स्वयं उस सुबह तुइनहुइस में ऐसा करने से पहले कभी ऐसा नहीं किया था। अब, मुझे लगा, पीछे हटने का कोई रास्ता नहीं था।

लगभग एक महीने बाद, अगस्त 1989 में, पी. डब्ल्यू. बोथा ने राष्ट्रीय टेलीविजन पर राज्य अध्यक्ष पद से अपने इस्तीफे की घोषणा की। अपने अटपटे और बेतरतीब विदाई भाषण में, उन्होंने मंत्रिमंडल के सदस्यों पर विश्वासघात करने, उनकी अनदेखी करने और अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस के इशारों पर चलने का आरोप लगाया। अगले दिन, एफ. डब्ल्यू. डी. क्लर्क ने कार्यवाहक राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली और परिवर्तन एवं सुधार के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दोहराई।
हमारे लिए, श्री डी क्लर्क एक रहस्य थे। जब वे नेशनल पार्टी के प्रमुख बने, तो वे एक आदर्श पार्टी कार्यकर्ता प्रतीत हुए, न इससे अधिक, न इससे कम। उनके अतीत में सुधार की भावना का कोई संकेत नहीं था। शिक्षा मंत्री के रूप में, उन्होंने अश्वेत छात्रों को श्वेत विश्वविद्यालयों से बाहर रखने का प्रयास किया था। लेकिन जैसे ही उन्होंने नेशनल पार्टी की बागडोर संभाली, मैंने उनका बारीकी से अनुसरण करना शुरू कर दिया। मैंने उनके सभी भाषण पढ़े, उनकी बातें सुनीं, और मुझे यह समझ में आने लगा कि वे अपने पूर्ववर्ती से बिल्कुल अलग थे। वे कोई कट्टरपंथी नहीं, बल्कि एक व्यावहारिक व्यक्ति थे, एक ऐसे व्यक्ति जो परिवर्तन को आवश्यक और अपरिहार्य मानते थे। जिस दिन उन्होंने शपथ ली, मैंने उन्हें एक पत्र लिखकर मुलाकात का अनुरोध किया। अपने उद्घाटन भाषण में, श्री डी क्लर्क ने कहा कि उनकी सरकार शांति के लिए प्रतिबद्ध है और शांति के लिए प्रतिबद्ध किसी भी अन्य समूह के साथ बातचीत करेगी। लेकिन एक नई व्यवस्था के प्रति उनकी प्रतिबद्धता उनके शपथ ग्रहण के बाद ही प्रदर्शित हुई, जब केप टाउन में पुलिस की बर्बरता के विरोध में

किया था और जिसके लिए संघर्ष किया था। डी क्लर्क ने अपना वादा निभाया था और उन लोगों को बिना किसी प्रतिबंध के रिहा कर दिया गया था; वे एएनसी के नाम पर बोल सकते थे। यह स्पष्ट था कि संगठन पर लगा प्रतिबंध प्रभावी रूप से समाप्त हो गया था, जो हमारे लंबे संघर्ष और सिद्धांतों के प्रति हमारी दृढ़ प्रतिबद्धता की पुष्टि थी।
डी क्लर्क ने रंगभेद की कई मूलभूत संरचनाओं को व्यवस्थित रूप से ध्वस्त करना शुरू किया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के समुद्र तटों को सभी रंगों के लोगों के लिए खोल दिया और घोषणा की कि पृथक सुविधाओं के आरक्षण अधिनियम को जल्द ही निरस्त कर दिया जाएगा। 1953 से इस अधिनियम ने "छोटे पैमाने पर रंगभेद" को लागू कर रखा था, जिसके तहत पार्क, थिएटर, रेस्तरां, बसें, पुस्तकालय, शौचालय और अन्य सार्वजनिक सुविधाओं को नस्ल के आधार पर अलग किया जाता था। नवंबर में, उन्होंने घोषणा की कि राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली, जो पी. डब्ल्यू. बोथा के नेतृत्व में रंगभेद विरोधी ताकतों से निपटने के लिए स्थापित एक गुप्त संरचना थी, को भंग कर दिया जाएगा।
दिसंबर की शुरुआत में मुझे सूचना मिली कि डी क्लर्क के साथ बैठक उसी महीने की बारह तारीख को तय की गई है। तब तक मैं अपने पुराने और नए सहयोगियों से सलाह-मशविरा कर चुका था और कॉटेज में अपने पुराने सहयोगियों, जन लोकतांत्रिक आंदोलन और यूडीएफ के नेताओं के साथ बैठकें कर चुका था। मुझे सभी क्षेत्रों से एएनसी के लोग, साथ ही यूडीएफ और सीओएसएटीयू के प्रतिनिधि मिले। इन युवाओं में से एक सिरिल रामाफोसा थे, जो राष्ट्रीय खान श्रमिक संघ के महासचिव और नई पीढ़ी के सबसे सक्षम नेताओं में से एक थे। रॉबेन द्वीप से मेरे कुछ सहयोगी भी मुझसे मिलने आए, जिनमें टेरर लेकोटा और टोक्यो सेक्सवाले शामिल थे, जो दोपहर के भोजन के लिए रुके। वे दोनों ही बड़े पेटू हैं और उनके बारे में मैंने केवल वारंट ऑफिसर स्वार्ट से ही शिकायत सुनी, जिन्होंने कहा, "ये लोग हमारा सारा खाना खा जाएंगे!"
कई सहयोगियों के मार्गदर्शन में, मैंने डी क्लर्क को एक पत्र का मसौदा तैयार किया, जो पी. डब्ल्यू. बोथा को भेजे गए पत्र से मिलता-जुलता था। विषय था सरकार और एएनसी के बीच वार्ता। मैंने राष्ट्रपति को बताया कि मौजूदा संघर्ष दक्षिण अफ्रीका की जीवनरेखा को निचोड़ रहा है और वार्ता ही एकमात्र समाधान है। मैंने कहा कि एएनसी वार्ता के लिए कोई पूर्व शर्त

स्वीकार नहीं करेगी, विशेष रूप से सरकार द्वारा चाही गई शर्त: सशस्त्र संघर्ष का निलंबन। सरकार ने "शांति के प्रति एक ईमानदार प्रतिबद्धता" मांगी और मैंने स्पष्ट किया कि वार्ता के लिए हमारी तत्परता ठीक वही थी। मैंने श्री डी क्लर्क को बताया कि उनके उद्घाटन भाषण में सुलह पर दिए गए उनके जोर से मैं कितना प्रभावित हुआ था। उनके शब्दों ने लाखों दक्षिण अफ़्रीकी लोगों और दुनिया भर के लोगों में यह आशा जगा दी थी कि एक नए दक्षिण अफ़्रीका का जन्म होने वाला है। मैंने कहा कि सुलह की राह पर पहला कदम रंगभेद और उसे लागू करने के लिए इस्तेमाल किए गए सभी उपायों को पूरी तरह से समाप्त करना था।
लेकिन मैंने कहा कि उस भाषण की भावना हाल के समय में कहीं अधिक दिखाई नहीं दी है। सरकार की नीतियों को कई लोग रंगभेद को दूसरे तरीके से जारी रखने के रूप में देखते हैं। मैंने कहा कि सरकार ने अश्वेत होमलैंड नेताओं और व्यवस्था द्वारा अपने पक्ष में किए गए अन्य लोगों से बात करने में बहुत अधिक समय व्यतीत किया है; मैंने जोर देकर कहा कि ये लोग उस दमनकारी अतीत के एजेंट थे जिसे अधिकांश अश्वेत दक्षिण अफ्रीकी अस्वीकार करते हैं।
मैंने अपने प्रस्ताव को दोहराया कि वार्ता दो चरणों में होनी चाहिए। मैंने उनसे कहा कि मैं 1989 के हरारे घोषणापत्र में एएनसी द्वारा अपनाए गए दिशा-निर्देशों का पूर्ण समर्थन करता हूँ, जिसमें सरकार पर वार्ता में स्वयं द्वारा निर्मित बाधाओं को दूर करने का दायित्व डाला गया था। इन मांगों में सभी राजनीतिक कैदियों की रिहाई, प्रतिबंधित संगठनों और व्यक्तियों पर लगे सभी प्रतिबंधों को हटाना, आपातकाल की समाप्ति और टाउनशिप से सभी सैनिकों को हटाना शामिल था। मैंने इस बात पर जोर दिया कि शत्रुता को समाप्त करने के लिए आपसी सहमति से युद्धविराम को सर्वोपरि माना जाना चाहिए, क्योंकि इसके बिना कोई भी कार्य नहीं किया जा सकता। हमारी मुलाकात से एक दिन पहले श्री डी क्लर्क को पत्र सौंप दिया गया था।

13 दिसंबर की सुबह मुझे फिर से टुइनहुइस ले जाया गया। मेरी मुलाकात डी क्लर्क से उसी कमरे में हुई जहाँ मैंने उनके पूर्ववर्ती के साथ चाय पी थी।
श्री डी क्लर्क के साथ कोबी कोएत्सी, जनरल विलेमसे, डॉ. बर्नार्ड और उनके

सहयोगी माइक लू भी थे। मैंने श्री डी क्लर्क को राष्ट्रपति बनने पर बधाई दी और आशा व्यक्त की कि हम साथ मिलकर काम कर सकेंगे। वे अत्यंत सौहार्दपूर्ण थे और उन्होंने भी मेरी भावनाओं का जवाब दिया।
शुरू से ही मैंने महसूस किया कि श्री डी क्लर्क मेरी बातें ध्यान से सुन रहे थे। यह एक अनोखा अनुभव था। नेशनल पार्टी के नेता आमतौर पर अश्वेत नेताओं के साथ चर्चा में वही सुनते थे जो वे सुनना चाहते थे, लेकिन श्री डी क्लर्क सचमुच मेरी बात समझने की कोशिश कर रहे थे।
उस दिन मैंने जिन मुद्दों पर ज़ोर दिया, उनमें से एक नेशनल पार्टी की हाल ही में पेश की गई पंचवर्षीय योजना थी, जिसमें "समूह अधिकारों" की अवधारणा शामिल थी। "समूह अधिकारों" का विचार यह था कि कोई भी नस्लीय या जातीय समूह किसी अन्य समूह से श्रेष्ठ नहीं हो सकता। हालाँकि उन्होंने "समूह अधिकारों" को नए दक्षिण अफ्रीका में अल्पसंख्यकों की स्वतंत्रता की रक्षा करने के तरीके के रूप में परिभाषित किया, वास्तव में उनका प्रस्ताव श्वेत वर्चस्व को बनाए रखने का एक साधन था। मैंने श्री डी क्लर्क से कहा कि यह एएनसी को स्वीकार्य नहीं है।
मैंने आगे कहा कि इस अवधारणा को बनाए रखना उनके हित में नहीं था, क्योंकि इससे यह आभास होता था कि वे रंगभेद को समाप्त किए बिना उसका आधुनिकीकरण करना चाहते हैं; इससे देश और दुनिया भर की प्रगतिशील ताकतों की नज़र में उनकी और नेशनल पार्टी की छवि को नुकसान पहुँच रहा था। मैंने कहा कि एक दमनकारी व्यवस्था में सुधार नहीं किया जा सकता, उसे पूरी तरह से समाप्त करना होगा। मैंने केप में नेशनल पार्टी के मुखपत्र 'डाई बर्गर' में हाल ही में पढ़े एक संपादकीय का उल्लेख किया, जिसमें यह संकेत दिया गया था कि समूह अधिकारों की अवधारणा को रंगभेद को परोक्ष रूप से वापस लाने के प्रयास के रूप में गढ़ा गया था। मैंने श्री डी क्लर्क से कहा कि यदि उनकी पार्टी का अखबार समूह अधिकारों को इस तरह देखता है, तो उन्हें क्या लगता है कि हम इसे कैसे देखते हैं? मैंने आगे कहा कि एएनसी ने पचहत्तर वर्षों तक रंगभेद के खिलाफ संघर्ष किया था, केवल इसलिए नहीं कि वह इसके एक छिपे हुए रूप के आगे झुक जाए, और यदि समूह अधिकारों के छल के माध्यम से रंगभेद को संरक्षित करना उनका वास्तविक इरादा था, तो वे वास्तव में रंगभेद को समाप्त करने में विश्वास नहीं करते थे।

श्री डी क्लर्क, मैंने उस दिन देखा, बातों पर तुरंत प्रतिक्रिया नहीं देते। यह उनकी विशेषता थी कि उन्होंने मेरी बात ध्यान से सुनी और मुझसे बहस नहीं की। उन्होंने कहा, “आप जानते हैं, मेरा उद्देश्य आपसे अलग नहीं है। पी. डब्ल्यू. बोथा को लिखे आपके ज्ञापन में कहा गया था कि एएनसी और सरकार को मिलकर श्वेत लोगों के मन में अश्वेतों के वर्चस्व के डर को दूर करना चाहिए, और ‘सामूहिक अधिकारों’ का विचार ही वह तरीका है जिससे हम इस डर को दूर करने का प्रस्ताव रखते हैं।” मैं उनकी इस प्रतिक्रिया से प्रभावित हुआ, लेकिन मैंने कहा कि ‘सामूहिक अधिकारों’ का विचार श्वेत लोगों के डर को कम करने के बजाय अश्वेतों के डर को और बढ़ा देता है। तब डी क्लर्क ने कहा, “तो हमें इसे बदलना होगा।”
फिर मैंने अपनी आज़ादी का मुद्दा उठाया और कहा कि अगर उन्हें उम्मीद है कि रिहाई के बाद मैं आराम करूंगा, तो वे बहुत बड़ी गलती कर रहे हैं। मैंने फिर से कहा कि अगर मुझे उन्हीं परिस्थितियों में रिहा किया गया जिनमें मुझे गिरफ्तार किया गया था, तो मैं वही काम फिर से शुरू कर दूंगा जिनके लिए मुझे जेल हुई थी। मैंने उनसे कहा कि आगे बढ़ने का सबसे अच्छा तरीका एएनसी और सभी अन्य राजनीतिक संगठनों पर लगे प्रतिबंध को हटाना, आपातकाल खत्म करना, राजनीतिक कैदियों को रिहा करना और निर्वासितों को वापस लौटने की अनुमति देना है। अगर सरकार ने एएनसी पर लगे प्रतिबंध को नहीं हटाया, तो जेल से निकलते ही मैं एक गैर-कानूनी संगठन के लिए काम करूंगा। “तो,” मैंने कहा, “जैसे ही मैं उन दरवाजों से बाहर निकलूंगा, आप मुझे दोबारा गिरफ्तार कर लेंगे।”
उन्होंने एक बार फिर मेरी बात ध्यान से सुनी। मेरे सुझाव उनके लिए कोई आश्चर्य की बात नहीं थे। उन्होंने कहा कि वे मेरी सभी बातों पर विचार करेंगे, लेकिन कोई वादा नहीं करेंगे। यह बैठक प्रारंभिक थी और मैं समझ गया था कि उस दिन कुछ भी तय नहीं होने वाला था। लेकिन यह बेहद उपयोगी साबित हुई, क्योंकि मैंने श्री डी क्लर्क को उसी तरह परखा जैसे मैंने रॉबेन द्वीप पर नए जेल कमांडरों को परखा था। मैं लुसाका में अपने लोगों को लिख सका कि श्री डी क्लर्क अतीत के नेशनल पार्टी के राजनेताओं से बिल्कुल अलग हैं। मैंने श्रीमती थैचर द्वारा श्री गोर्बाचेव के बारे में दिए गए प्रसिद्ध वर्णन को दोहराते हुए कहा कि श्री डी क्लर्क एक ऐसे व्यक्ति हैं जिनके साथ हम काम कर सकते हैं।

99

2 फरवरी, 1990 को, एफ. डब्ल्यू. डी. क्लर्क संसद के समक्ष पारंपरिक उद्घाटन भाषण देने के लिए खड़े हुए और उन्होंने कुछ ऐसा किया जो किसी अन्य दक्षिण अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्ष ने कभी नहीं किया था: उन्होंने वास्तव में रंगभेद प्रणाली को समाप्त करना और एक लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका की नींव रखना शुरू किया। नाटकीय अंदाज में, श्री डी. क्लर्क ने एएनसी, पीएसी, दक्षिण अफ्रीकी कम्युनिस्ट पार्टी और इकत्तीस अन्य अवैध संगठनों पर लगे प्रतिबंधों को हटाने की घोषणा की; अहिंसक गतिविधियों के लिए कैद राजनीतिक कैदियों को रिहा किया; मृत्युदंड को निलंबित किया; और आपातकाल द्वारा लगाए गए विभिन्न प्रतिबंधों को हटाया। उन्होंने कहा, "बातचीत का समय आ गया है।" यह एक विस्मयकारी क्षण था, क्योंकि एक ही झटके में उन्होंने दक्षिण अफ्रीका की स्थिति को लगभग सामान्य कर दिया था। हमारी दुनिया रातोंरात बदल गई थी। चालीस वर्षों के उत्पीड़न और निर्वासन के बाद, एएनसी अब एक कानूनी संगठन बन गया था। मुझे और मेरे सभी साथियों को अब एएनसी का सदस्य होने, उसका हरा, पीला और काला झंडा उठाने, या उसका नाम लेने के लिए गिरफ्तार नहीं किया जा सकता था। लगभग तीस वर्षों में पहली बार, मेरी तस्वीर और मेरे शब्द, और मेरे सभी प्रतिबंधित साथियों के शब्द, दक्षिण अफ्रीकी समाचार पत्रों में स्वतंत्र रूप से प्रकाशित हो सकते थे। अंतरराष्ट्रीय समुदाय ने डी क्लर्क के साहसिक कार्यों की सराहना की। हालांकि, इस सारी अच्छी खबर के बीच, एएनसी ने इस बात पर आपत्ति जताई कि श्री डी क्लर्क ने आपातकाल को पूरी तरह से समाप्त नहीं किया था और न ही सैनिकों को बस्तियों से बाहर निकलने का आदेश दिया था।
9 फरवरी को, श्री डी क्लर्क के संसद के उद्घाटन भाषण के सात दिन बाद, मुझे सूचित किया गया कि मुझे फिर से तुइनहुइस भेजा जा रहा है। मैं शाम छह बजे वहाँ पहुँचा। मैंने श्री डी क्लर्क से उनके कार्यालय में मुस्कुराते हुए मुलाकात की और हाथ मिलाते ही उन्होंने मुझे बताया कि वे मुझे अगले दिन जेल से रिहा करने वाले हैं। हालाँकि दक्षिण अफ्रीका और दुनिया भर के प्रेस में हफ्तों से यह अटकलें लगाई जा रही थीं कि मेरी रिहाई जल्द ही होने वाली है, फिर भी श्री डी क्लर्क की घोषणा मेरे लिए आश्चर्यजनक थी। मुझे यह नहीं

बताया गया था कि श्री डी क्लर्क मुझसे मिलने इसलिए आए थे ताकि मुझे यह बता सकें कि वे मुझे एक स्वतंत्र व्यक्ति बना रहे हैं।
मेरे मन और दिमाग में एक अजीब सी कशमकश चल रही थी। मैं जेल से जल्द से जल्द बाहर निकलना चाहता था, लेकिन इतने कम समय में ऐसा करना समझदारी नहीं थी। मैंने श्री डी क्लर्क को धन्यवाद दिया और फिर कहा कि भले ही यह कृतघ्नता लगे, मैं एक सप्ताह पहले सूचना चाहता हूँ ताकि मेरा परिवार और मेरा संगठन मेरी रिहाई के लिए तैयार हो सकें। मैंने कहा कि कल यूँ ही बाहर निकल जाना अराजकता पैदा कर देगा। मैंने श्री डी क्लर्क से मुझे उसी दिन से एक सप्ताह बाद रिहा करने का अनुरोध किया। सत्ताईस साल इंतजार करने के बाद, मैं निश्चित रूप से सात दिन और इंतजार कर सकता था।
मेरे जवाब से डी क्लर्क अचंभित रह गए। जवाब देने के बजाय, उन्होंने मेरी रिहाई की योजना बताना जारी रखा। उन्होंने कहा कि सरकार मुझे हवाई जहाज से जोहान्सबर्ग ले जाएगी और वहीं आधिकारिक तौर पर रिहा कर देगी। इससे पहले कि वे आगे कुछ कहते, मैंने उनसे कहा कि मुझे इस पर सख्त आपत्ति है। मैं विक्टर वर्स्टर जेल के गेट से बाहर निकलकर उन लोगों का शुक्रिया अदा करना चाहता था जिन्होंने मेरी देखभाल की और केप टाउन के लोगों से मिलना चाहता था। हालांकि मैं जोहान्सबर्ग का निवासी था, लेकिन केप टाउन लगभग तीन दशकों से मेरा घर रहा था। मैं जोहान्सबर्ग वापस जरूर जाऊंगा, लेकिन अपनी मर्जी से, न कि सरकार की मर्जी से। मैंने कहा, "एक बार जब मैं रिहा हो जाऊंगा, तो मैं अपना ख्याल खुद रखूंगा।"
डी क्लर्क एक बार फिर अचंभित रह गए। लेकिन इस बार मेरी आपत्तियों ने प्रतिक्रिया उत्पन्न कर दी। उन्होंने अनुमति मांगी और दूसरों से सलाह मशवरा करने के लिए अपने कार्यालय से चले गए। दस मिनट बाद वे काफी उदास चेहरे के साथ लौटे और बोले, "श्रीमान मंडेला, अब योजना बदलने में बहुत देर हो चुकी है।" मैंने जवाब दिया कि यह योजना अस्वीकार्य है और मैं एक सप्ताह बाद विक्टर वर्स्टर जेल में रिहा होना चाहता हूं, न कि जोहान्सबर्ग में। यह एक तनावपूर्ण क्षण था और उस समय हम दोनों को ही इस बात में कोई विडंबना नहीं दिखी कि एक कैदी रिहाई न करने का अनुरोध कर रहा है और उसका जेलर उसे रिहा करने का प्रयास कर रहा है।
डी क्लर्क ने फिर से बहाना बनाकर कमरे से बाहर चले गए। दस मिनट बाद वे एक समझौता लेकर लौटे: हाँ, मुझे विक्टर वर्स्टर में रिहा किया जा सकता था,

लेकिन नहीं, रिहाई को टाला नहीं जा सकता था। सरकार ने विदेशी प्रेस को पहले ही सूचित कर दिया था कि मुझे कल रिहा किया जाना है और उन्हें लगा कि वे इस बयान से मुकर नहीं सकते। मुझे लगा कि मैं इस बात पर बहस नहीं कर सकता। अंत में, हम समझौते पर सहमत हो गए, और श्री डी क्लर्क ने जश्न मनाने के लिए हम दोनों के लिए एक-एक गिलास व्हिस्की डाली। मैंने टोस्ट के लिए गिलास उठाया, लेकिन सिर्फ पीने का नाटक किया; ऐसी शराब मेरे लिए बहुत तेज़ होती है। मैं आधी रात से कुछ देर पहले ही अपनी कुटिया में लौटा, और पहुँचते ही मैंने केप टाउन में अपने साथियों को संदेश भेजा कि मुझे अगले दिन रिहा कर दिया जाएगा। मैं विनी को संदेश भेजने में कामयाब रहा और मैंने जोहान्सबर्ग में वाल्टर को फोन किया। वे सभी अगले दिन एक चार्टर्ड विमान से आने वाले थे। उसी शाम, राष्ट्रीय स्वागत समिति के नाम से जानी जाने वाली संस्था के कई एएनसी सदस्य मेरी कुटिया में आए और उन्होंने एक बयान तैयार किया जो मुझे अगले दिन देना था। वे सुबह तड़के चले गए, और मेरी उत्तेजना के बावजूद, मुझे सोने में कोई परेशानी नहीं हुई।

[redacted]

[redacted]

100

मेरी रिहाई के दिन, मैं सुबह 4:30 बजे कुछ ही घंटों की नींद के बाद उठा। 11 फरवरी, केप टाउन में गर्मी के मौसम के अंत का साफ आसमान था। मैंने अपने नियमित व्यायाम का संक्षिप्त रूप किया, नहाया और नाश्ता किया। फिर मैंने केप टाउन में एएनसी और यूडीएफ के कई लोगों को फोन किया और उन्हें मेरी रिहाई की तैयारी और मेरे भाषण पर काम करने के लिए कॉटेज में बुलाया। जेल के डॉक्टर ने आकर मेरा संक्षिप्त चेकअप किया। मैंने अपनी रिहाई की संभावना पर ज्यादा ध्यान नहीं दिया, बल्कि उससे पहले मुझे जो कई काम करने थे, उन पर ध्यान केंद्रित किया। जैसा कि अक्सर जीवन में होता है, किसी अवसर की महत्ता हजारों छोटी-छोटी बातों के चक्कर में खो जाती है।
कई ऐसे मामले थे जिन पर चर्चा करनी थी और बहुत कम समय में उनका समाधान निकालना था। स्वागत समिति के कई साथी, जिनमें सिरिल रामाफोसा और ट्रेवर मैनुअल शामिल थे, सुबह-सुबह ही घर पर मौजूद थे। मैं पहले पार्ल के लोगों को संबोधित करना चाहता था, जिन्होंने मेरी कैद के दौरान मेरे प्रति बहुत दयालुता दिखाई थी, लेकिन स्वागत समिति इस बात पर अड़ी थी कि यह अच्छा विचार नहीं होगा: अगर मैं अपना पहला भाषण पार्ल के समृद्ध श्वेत नागरिकों को देता तो यह अजीब लगता। इसके बजाय, योजना के अनुसार, मैं सबसे पहले केप टाउन के लोगों को केप टाउन के ग्रैंड परेड में संबोधित करूंगा।
सबसे पहले जिन सवालों का हल निकालना था, उनमें से एक यह था कि मैं अपनी आज़ादी की पहली रात कहाँ बिताऊँगा। मेरा मन तो केप टाउन के हलचल भरे अश्वेत और रंगीन बस्तियों, केप फ्लैट्स में रात बिताने का था, ताकि मैं वहाँ के लोगों के साथ अपनी एकजुटता दिखा सकूँ। लेकिन मेरे साथियों और बाद में मेरी पत्नी ने तर्क दिया कि सुरक्षा कारणों से मुझे आर्कबिशप डेसमंड टूटू के साथ बिशप्स कोर्ट में रहना चाहिए, जो एक श्वेत उपनगर में स्थित एक आलीशान निवास था। यह वह इलाका नहीं था जहाँ मुझे जेल जाने से पहले रहने की अनुमति थी, और मुझे लगा कि आज़ादी की पहली रात एक आलीशान श्वेत इलाके में बिताना गलत संदेश देगा। लेकिन समिति के सदस्यों ने समझाया कि टूटू के कार्यकाल में बिशप्स कोर्ट बहुजातीय बन गया था, और यह एक खुले, उदार गैर-नस्लीयता का प्रतीक था।

जेल प्रशासन ने मुझे सामान पैक करने के लिए बक्से और डिब्बे मुहैया कराए। जेल में अपने पहले बीस वर्षों के दौरान, मैंने बहुत कम सामान जमा किया था, लेकिन पिछले कुछ वर्षों में मैंने इतना सामान इकट्ठा कर लिया था - मुख्य रूप से किताबें और कागज़ - कि पिछले दशकों की कमी पूरी हो गई। मैंने एक दर्जन से अधिक डिब्बे और डिब्बे भर दिए।

मेरी रिहाई का तय समय दोपहर 3 बजे था, लेकिन विनी, वाल्टर और जोहान्सबर्ग से चार्टर्ड फ्लाइट से आए बाकी यात्री दो बजे के बाद ही पहुँचे। घर पर पहले से ही दर्जनों लोग मौजूद थे और पूरा माहौल किसी उत्सव जैसा लग रहा था। वारंट ऑफिसर स्वार्ट ने हम सबके लिए आखिरी भोजन तैयार किया और मैंने उन्हें न सिर्फ पिछले दो सालों में दिए गए भोजन के लिए बल्कि साथ के लिए भी धन्यवाद दिया। वारंट ऑफिसर जेम्स ग्रेगरी भी घर पर मौजूद थे और मैंने उन्हें गले लगाया। पोल्समूर से लेकर विक्टर वर्स्टर तक के उन सालों में जब उन्होंने मेरी देखभाल की, हमने कभी राजनीति पर चर्चा नहीं की, लेकिन हमारा रिश्ता बिना कहे ही बन गया था और मुझे उनकी शांत उपस्थिति की कमी खलेगी। स्वार्ट, ग्रेगरी और वारंट ऑफिसर ब्रांड जैसे लोगों ने उन लोगों में भी इंसानियत के मूल सिद्धांत में मेरे विश्वास को और मजबूत किया, जिन्होंने मुझे पिछले साढ़े सत्ताईस सालों तक सलाखों के पीछे रखा था।
लंबी विदाई के लिए ज़्यादा समय नहीं था। योजना यह थी कि विनी और मुझे कार से जेल के मुख्य द्वार तक ले जाया जाएगा। मैंने अधिकारियों को बताया था कि मैं उन गार्डों और वार्डरों को अलविदा कहना चाहता हूँ जिन्होंने मेरी देखभाल की थी, और मैंने उनसे और उनके परिवारों से अनुरोध किया था कि वे मुख्य द्वार पर मेरा इंतज़ार करें, जहाँ मैं उन्हें व्यक्तिगत रूप से धन्यवाद दे सकूँ।
तीन बजकर कुछ मिनट के अंतराल पर मुझे एसएबीसी के एक जाने-माने प्रस्तोता का फोन आया, जिन्होंने मुझसे गेट से कुछ सौ फीट पहले कार से उतरने का अनुरोध किया ताकि वे मुझे आज़ादी की ओर चलते हुए फिल्मा सकें। यह बात मुझे उचित लगी और मैं मान गया। यहीं से मुझे पहली बार यह आभास हुआ कि चीजें उतनी शांति से नहीं होंगी जितनी मैंने कल्पना की थी।

साढ़े तीन बजे तक मैं बेचैन होने लगा, क्योंकि हम पहले ही तय समय से पीछे चल रहे थे। मैंने स्वागत समिति के सदस्यों से कहा कि मेरे लोग सत्ताईस वर्षों से मेरा इंतज़ार कर रहे हैं और मैं उन्हें और इंतज़ार नहीं करवाना चाहता। चार बजने से कुछ ही देर पहले, हम एक छोटे से काफिले में कुटिया से निकले। गेट से लगभग एक चौथाई मील आगे गाड़ी रुक गई और विनी और मैं बाहर निकलकर जेल के गेट की ओर चलने लगे।
पहले तो मुझे ठीक से समझ नहीं आया कि हमारे सामने क्या हो रहा है, लेकिन जब मैं लगभग डेढ़ सौ फीट की दूरी पर पहुँचा, तो मैंने एक जबरदस्त हलचल और लोगों की भारी भीड़ देखी: सैकड़ों फोटोग्राफर, टेलीविजन कैमरे, पत्रकार और साथ ही कई हजार शुभचिंतक। मैं दंग रह गया और थोड़ा घबरा भी गया। मैंने सचमुच ऐसे दृश्य की उम्मीद नहीं की थी; ज़्यादा से ज़्यादा मैंने सोचा था कि वहाँ कुछ दर्जन लोग होंगे, जिनमें मुख्य रूप से वार्डर और उनके परिवार होंगे। लेकिन यह तो बस शुरुआत थी; मुझे एहसास हुआ कि हम आगे जो होने वाला था उसके लिए पूरी तरह से तैयार नहीं थे।
गेट से लगभग बीस फीट की दूरी पर, कैमरों की क्लिक की आवाज़ गूंजने लगी, मानो धातु के राक्षसों का कोई बड़ा झुंड हो। रिपोर्टर सवाल पूछने लगे; टेलीविजन क्रू इकट्ठा होने लगे; एएनसी समर्थक चिल्ला रहे थे और जयकारे लगा रहे थे। यह एक खुशनुमा, लेकिन थोड़ा भ्रमित करने वाला माहौल था। जब एक टेलीविजन क्रू ने मेरी ओर एक लंबी, काली, रोएंदार वस्तु बढ़ाई, तो मैं थोड़ा पीछे हट गया, यह सोचकर कि कहीं यह कोई नया हथियार तो नहीं है जो मेरे जेल में रहने के दौरान विकसित हुआ हो। विनी ने मुझे बताया कि यह एक माइक्रोफोन था।
जब मैं भीड़ के बीच था, मैंने अपनी दाहिनी मुट्ठी उठाई और ज़ोरदार जयकार हुई। मैं सत्ताईस वर्षों से ऐसा नहीं कर पाया था और इससे मुझे शक्ति और आनंद का एक नया अनुभव मिला। हम कुछ ही मिनटों के लिए भीड़ के बीच रुके और फिर केप टाउन जाने के लिए कार में बैठ गए। हालाँकि मुझे ऐसे स्वागत से खुशी हुई, लेकिन इस बात से बहुत निराशा हुई कि मुझे जेल कर्मचारियों को अलविदा कहने का मौका नहीं मिला। जब मैं आखिरकार उन फाटकों से बाहर निकलकर दूसरी तरफ कार में बैठा, तो मुझे लगा - इकहत्तर वर्ष की आयु में भी - कि मेरा जीवन नए सिरे से शुरू हो रहा है। मेरे दस हज़ार दिनों का कारावास समाप्त हो गया था।

केप टाउन दक्षिण-पश्चिम दिशा में पैंतीस मील दूर था, लेकिन गेट पर अप्रत्याशित भीड़ के कारण ड्राइवर ने शहर जाने के लिए दूसरा रास्ता चुना। हम जेल के पीछे से घूमकर गए, और हमारा काफिला छोटी सड़कों और गलियों से होते हुए शहर में पहुंचा। हम खूबसूरत हरे-भरे अंगूर के बागों और सुव्यवस्थित खेतों से गुजरे, और मैंने अपने चारों ओर के नज़ारों का भरपूर आनंद लिया।
ग्रामीण इलाका हरा-भरा और सुव्यवस्थित था, लेकिन मुझे आश्चर्य इस बात का हुआ कि कितने श्वेत परिवार हमारे काफिले की एक झलक पाने के लिए सड़क के किनारे खड़े थे। उन्होंने रेडियो पर सुना था कि हम वैकल्पिक मार्ग से जा रहे हैं। उनमें से कुछ, शायद एक दर्जन, ने तो अपनी दाहिनी मुट्ठी भींचकर ऊपर उठा ली, जो एएनसी का शक्ति-अभिनंदन चिन्ह बन गया था। यह देखकर मैं दंग रह गया; एक रूढ़िवादी कृषि क्षेत्र के इन कुछ साहसी लोगों ने जो एकजुटता दिखाई, उससे मुझे बहुत प्रोत्साहन मिला। एक जगह मैं रुका और कार से उतरकर एक श्वेत परिवार से मिला और उन्हें धन्यवाद दिया और बताया कि उनके समर्थन से मुझे कितनी प्रेरणा मिली है। इससे मुझे यह एहसास हुआ कि जिस दक्षिण अफ्रीका में मैं लौट रहा था, वह उस दक्षिण अफ्रीका से कितना अलग था जिसे मैं छोड़कर आया था।
जैसे ही हम शहर के बाहरी इलाके में पहुँचे, मैंने लोगों को केंद्र की ओर उमड़ते देखा। स्वागत समिति ने केप टाउन के ग्रैंड परेड में एक रैली का आयोजन किया था, जो पुराने सिटी हॉल के सामने फैला एक विशाल खुला चौक था। मैं उस इमारत की बालकनी से भीड़ को संबोधित करने वाला था, जहाँ से पूरा इलाका दिखाई देता था। हमें कुछ अधूरी सूचनाएँ मिली थीं कि सुबह से ही लोगों का एक विशाल जनसमूह वहाँ इंतज़ार कर रहा था। योजना यह थी कि हमारा काफिला भीड़ से बचते हुए सिटी हॉल के पीछे से होकर गुजरेगा, जहाँ से मैं चुपचाप इमारत में प्रवेश करूँगा।
केपटाउन तक का सफर पैंतालीस मिनट का था, और जैसे ही हम ग्रैंड परेड के पास पहुँचे, हमें एक विशाल भीड़ दिखाई दी। ड्राइवर को दाहिनी ओर मुड़कर उसके किनारों से निकलना था, लेकिन इसके बजाय, वह अचानक लोगों के उस विशाल समुद्र में घुस गया। तुरंत ही भीड़ आगे बढ़ी और कार को घेर लिया। हम एक-दो मिनट तक

धीरे-धीरे आगे बढ़े, लेकिन फिर लोगों के भारी दबाव के कारण रुकने को मजबूर हो गए। लोग खिड़कियों पर, फिर डिग्गी पर और बोनट पर दस्तक देने लगे। अंदर ऐसा लग रहा था जैसे ओले पड़ रहे हों। फिर लोग उत्साह में कार पर कूदने लगे। कुछ लोग कार को हिलाने लगे और उसी क्षण मुझे चिंता होने लगी। मुझे ऐसा लगा जैसे भीड़ अपने प्यार से हमें मार ही डालेगी।
ड्राइवर विनी और मुझसे भी ज़्यादा बेचैन था और गाड़ी से कूदने के लिए बेताब था। मैंने उसे शांत रहने और अंदर ही रहने को कहा, पीछे वाली गाड़ियों के लोग हमारी मदद के लिए आ जाएँगे। एलन बोएसक और अन्य लोगों ने हमारी गाड़ी के लिए रास्ता बनाने और लोगों को गाड़ी से हटाने की कोशिश शुरू की, लेकिन उन्हें ज़्यादा सफलता नहीं मिली। हम एक घंटे से ज़्यादा समय तक अंदर ही बैठे रहे—दरवाज़ा खोलने की कोशिश करना भी बेकार था, क्योंकि इतने सारे लोग उस पर दबाव डाल रहे थे—हज़ारों समर्थकों की भीड़ में फँसे हुए। भाषण शुरू होने का निर्धारित समय बहुत पहले ही बीत चुका था।
कई दर्जन मार्शल अंततः मदद के लिए पहुंचे और धीरे-धीरे निकलने का रास्ता साफ करने में कामयाब रहे। जब हम आखिरकार बाहर निकल पाए, तो ड्राइवर ने सिटी हॉल से विपरीत दिशा में बहुत तेज़ी से गाड़ी चला दी। मैंने घबराहट में उससे पूछा, "यार, तुम कहाँ जा रहे हो?" उसने चिंता से भरी आवाज़ में कहा, "मुझे नहीं पता!" उसने आगे कहा, "मैंने पहले कभी ऐसा अनुभव नहीं किया है," और फिर बिना किसी मंज़िल के गाड़ी चलाता रहा।
जब वह थोड़ा शांत हुआ तो मैंने उसे अपने दोस्त और वकील दुल्लाह उमर के घर का पता बताया, जो शहर के भारतीय इलाके में रहते थे। मैंने कहा, हम वहाँ जाकर कुछ मिनट आराम कर सकते हैं। यह बात उसे अच्छी लगी। सौभाग्य से, दुल्लाह और उनका परिवार घर पर ही थे, लेकिन हमें देखकर वे थोड़े हैरान ज़रूर हुए। मैं सत्ताईस साल में पहली बार आज़ाद था, लेकिन मेरा अभिवादन करने के बजाय, उन्होंने थोड़ी चिंता से कहा, "क्या आपको ग्रैंड परेड में नहीं होना चाहिए था?"
हम दुल्लाह के यहाँ कुछ ठंडे पेय पी पाए, लेकिन वहाँ पहुँचे अभी कुछ ही मिनट हुए थे कि आर्कबिशप टूटू का फोन आ गया। उन्हें कैसे पता चला कि हम वहाँ हैं, यह मुझे नहीं पता। वे काफी परेशान थे और बोले, “नेल्सन, तुम्हें तुरंत ग्रैंड परेड वापस आना होगा। लोग बेचैन हो रहे हैं। अगर तुम तुरंत

वापस नहीं लौटे तो मैं नहीं बता सकता कि आगे क्या होगा। मुझे लगता है कि विद्रोह हो सकता है!” मैंने कहा कि मैं तुरंत वापस आ जाऊँगा।
हमारी समस्या ड्राइवर थी: वह ग्रैंड परेड वापस जाने को बिल्कुल तैयार नहीं था। लेकिन मैंने उसे समझाया और जल्द ही हम सिटी हॉल की ओर चल पड़े। इमारत चारों ओर से लोगों से घिरी हुई थी, लेकिन पीछे की तरफ इतनी भीड़ नहीं थी, और ड्राइवर किसी तरह पीछे के प्रवेश द्वार तक पहुँचने में कामयाब हो गया। लगभग शाम ढल रही थी जब मुझे इस भव्य इमारत की सबसे ऊपरी मंजिल पर ले जाया गया, जिसके गलियारे हमेशा सफेद रंग के अधिकारियों से भरे रहते थे। मैं बालकनी पर निकला और लोगों का एक विशाल सागर देखा जो जयकारे लगा रहे थे, झंडे और बैनर पकड़े हुए थे, ताली बजा रहे थे और हंस रहे थे।
मैंने भीड़ की ओर मुट्ठी उठाई और भीड़ ने ज़ोरदार जयकारे लगाए। उन जयकारों ने मुझे संघर्ष के जज़्बे से फिर से भर दिया। “अमांदला!” मैंने पुकारा। “न्गावेथु!” उन्होंने जवाब दिया। “इअफ़्रीका!” मैंने ज़ोर से कहा; “मयिबुये!” उन्होंने उत्तर दिया। अंत में, जब भीड़ थोड़ी शांत हुई, तो मैंने अपना भाषण निकाला और फिर अपनी जेब में चश्मा ढूँढ़ा। चश्मा वहाँ नहीं था; मैंने उसे विक्टर वर्स्टर में छोड़ दिया था। मुझे पता था कि विनी का चश्मा भी लगभग उसी नंबर का है, इसलिए मैंने उसका चश्मा उधार ले लिया।

मेरे मित्रों, साथियों और दक्षिण अफ्रीका के मेरे प्रिय नागरिकों, शांति, लोकतंत्र और सर्वाधिकार सुरक्षित करने के नाम पर आप सभी को मेरा नमस्कार! मैं यहाँ आपके समक्ष किसी पैगंबर के रूप में नहीं, बल्कि आप जनता के एक विनम्र सेवक के रूप में उपस्थित हूँ। आपके अथक और वीरतापूर्ण बलिदानों ने ही मुझे आज यहाँ उपस्थित होने का अवसर दिया है। अतः मैं अपने जीवन के शेष वर्ष आपके हाथों में सौंपता हूँ।

मैंने दिल से बात की। मैं सबसे पहले लोगों को बताना चाहता था कि मैं कोई मसीहा नहीं, बल्कि एक साधारण व्यक्ति हूँ जो असाधारण परिस्थितियों के कारण नेता बन गया। मैं तुरंत उन सभी लोगों का आभार व्यक्त करना चाहता था जिन्होंने मेरी रिहाई के लिए अभियान चलाया था। मैंने केप टाउन के लोगों का धन्यवाद किया और ओलिवर टैम्बो, अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस, उमखोंटो वे सिज़वे, दक्षिण अफ्रीकी कम्युनिस्ट पार्टी, यूडीएफ, दक्षिण अफ्रीकी युवा

कांग्रेस, सीओएसएटीयू, जन लोकतांत्रिक आंदोलन, दक्षिण अफ्रीकी छात्रों के राष्ट्रीय संघ और ब्लैक सैश (महिलाओं द्वारा गठित एक समूह जो लंबे समय से अंतरात्मा की आवाज रहा है) को सलाम किया। मैंने अपनी पत्नी और परिवार के प्रति भी सार्वजनिक रूप से आभार व्यक्त करते हुए कहा, "मुझे विश्वास है कि उनका दर्द और पीड़ा मेरे दर्द और पीड़ा से कहीं अधिक थी।"
मैंने भीड़ से स्पष्ट शब्दों में कहा कि दक्षिण अफ्रीका में रंगभेद का कोई भविष्य नहीं है, और जनता को अपने जन आंदोलन को जारी रखना चाहिए। “आज़ादी की झलक देखकर हमें अपने प्रयासों को और भी तेज़ करने की प्रेरणा मिलनी चाहिए।” मुझे लगा कि सरकार के साथ हुई अपनी बातचीत को सार्वजनिक रूप से स्पष्ट करना ज़रूरी है। मैंने कहा, “आज मैं आपको यह बताना चाहता हूँ कि सरकार के साथ मेरी बातचीत का उद्देश्य देश की राजनीतिक स्थिति को सामान्य करना था। मैं इस बात पर ज़ोर देना चाहता हूँ कि मैंने स्वयं कभी भी देश के भविष्य के बारे में कोई बातचीत नहीं की, सिवाय इसके कि मैंने एएनसी और सरकार के बीच बैठक पर ज़ोर दिया।”
मैंने आशा व्यक्त की कि बातचीत के माध्यम से समझौता करने के लिए जल्द ही अनुकूल माहौल बन सकेगा और सशस्त्र संघर्ष की आवश्यकता समाप्त हो जाएगी। मैंने कहा कि ऐसा माहौल बनाने के लिए उठाए जाने वाले कदम एएनसी की 1989 की हरारे घोषणा में उल्लिखित हैं। मैंने कहा कि वास्तविक बातचीत के लिए सरकार को तत्काल आपातकाल समाप्त करना होगा और सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करना होगा।
मैंने लोगों से कहा कि डी क्लर्क ने स्थिति को सामान्य करने के लिए अन्य सभी राष्ट्रवादी नेताओं की तुलना में कहीं अधिक प्रयास किए थे, और फिर, ऐसे शब्दों में जो बाद में मेरे लिए परेशानी का सबब बन गए, मैंने श्री डी क्लर्क को "ईमानदार व्यक्ति" कहा। जब श्री डी क्लर्क अपने इन शब्दों पर खरे नहीं उतरे, तो कई बार उन्हीं शब्दों को मुझ पर ही उछाला गया।
मेरे लिए यह अत्यंत महत्वपूर्ण था कि मैं अपने लोगों और सरकार को दिखाऊं कि मैं टूटा नहीं हूं और झुका नहीं हूं, और यह कि मेरा संघर्ष समाप्त नहीं हुआ है बल्कि एक नए रूप में फिर से शुरू हो रहा है। मैंने दृढ़ता से कहा कि मैं "अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस का एक वफादार और अनुशासित सदस्य" हूं। मैंने लोगों को बैरिकेड्स पर लौटने, संघर्ष को तेज करने के लिए प्रोत्साहित किया, और कहा कि हम अंतिम पड़ाव तक साथ चलेंगे।

मेरा भाषण समाप्त होते-होते शाम हो चुकी थी, और हमें बिशप्स कोर्ट जाने के लिए जल्दी से अपनी कारों में बिठाया गया। जैसे ही हम उसके शांत और सुंदर परिसर में पहुँचे, मैंने सैकड़ों अश्वेत लोगों को मेरा स्वागत करने के लिए इंतज़ार करते देखा। हमें देखते ही लोग गीत गाने लगे। जब मैंने आर्कबिशप टूटू का अभिवादन किया, तो मैंने उन्हें गले लगा लिया; ये वो व्यक्ति थे जिन्होंने अपने शब्दों और साहस से पूरे राष्ट्र को प्रेरित किया था, जिन्होंने सबसे कठिन समय में लोगों की आशा को पुनर्जीवित किया था। हमें घर के अंदर ले जाया गया जहाँ और भी परिवार और मित्र हमसे मिले, लेकिन मेरे लिए सबसे अद्भुत क्षण तब था जब मुझे बताया गया कि स्टॉकहोम से मेरा फोन आया है। मैं तुरंत समझ गया कि कौन है। ओलिवर की आवाज़ कमज़ोर थी, लेकिन पहचान में आ रही थी, और इतने वर्षों बाद उन्हें सुनकर मुझे बहुत खुशी हुई। ओलिवर अगस्त 1989 में हुए एक गंभीर स्ट्रोक से उबरने के लिए स्वीडन में थे। हमने जल्द से जल्द मिलने का वादा किया।
जेल से निकलने के बाद मेरा सपना था कि मैं इत्मीनान से ट्रांसकेई की सैर करूं, अपने जन्मस्थान, उन पहाड़ियों और नदियों को देखूं जहां मैं बचपन में खेला करता था, और अपनी मां के कब्रिस्तान को भी देखूं, जिसे मैंने कभी नहीं देखा था। लेकिन मेरा यह सपना अधूरा रह गया, क्योंकि मुझे जल्द ही एएनसी की मेरे लिए बनाई गई व्यापक योजनाओं के बारे में पता चल गया, और उनमें से किसी में भी ट्रांसकेई की आरामदायक यात्रा शामिल नहीं थी।

101

मेरी रिहाई के बाद दोपहर में मुझे एक प्रेस कॉन्फ्रेंस करनी थी, और सुबह मैंने अपने कई सहयोगियों से कार्यक्रम और रणनीति पर चर्चा करने के लिए मुलाकात की। बधाई संदेशों और टेलीग्रामों का अंबार लग गया था, और मैंने उनमें से यथासंभव अधिक से अधिक को पढ़ने की कोशिश की। दुनिया भर से, राष्ट्रपतियों और प्रधानमंत्रियों से टेलीग्राम आए थे, लेकिन मुझे केप टाउन की एक श्वेत गृहिणी का एक टेलीग्राम विशेष रूप से याद है जिसने मुझे बहुत हंसाया। उसमें लिखा था: "मुझे बहुत खुशी है कि आप आज़ाद हैं, और अपने दोस्तों और परिवार के बीच वापस आ गए हैं, लेकिन आपका कल का भाषण बहुत उबाऊ था।"
जेल जाने से पहले मैंने कभी ऐसी प्रेस कॉन्फ्रेंस नहीं की थी जैसी मैंने उस दिन की थी। पुराने समय में टेलीविजन कैमरे नहीं होते थे और एएनसी की अधिकांश प्रेस कॉन्फ्रेंस गुप्त रूप से आयोजित की जाती थीं। उस दोपहर, इतने सारे पत्रकार, इतने अलग-अलग देशों से आए थे कि मुझे समझ नहीं आ रहा था कि किससे बात करूं। भीड़ में अश्वेत पत्रकारों की अच्छी-खासी संख्या देखकर मुझे खुशी हुई। प्रेस कॉन्फ्रेंस में मैं एक बार फिर कई बातों पर जोर देना चाहता था: पहली बात, कि मैं एएनसी का एक वफादार और अनुशासित सदस्य हूं। मुझे इस बात का एहसास था कि एएनसी के सबसे वरिष्ठ नेता विदेश से मेरी रिहाई पर नजर रख रहे होंगे और दूर से मेरी वफादारी का आकलन करने की कोशिश कर रहे होंगे। मुझे पता था कि उन्होंने अफवाहें सुनी होंगी कि मैं संगठन से भटक गया हूं, कि मेरी छवि खराब हो गई है, इसलिए मैंने हर मौके पर उन्हें आश्वस्त करने की कोशिश की। जब मुझसे पूछा गया कि संगठन में मेरी क्या भूमिका होगी, तो मैंने प्रेस को बताया कि एएनसी जो भी आदेश देगी, मैं वही भूमिका निभाऊंगा।
मैंने पत्रकारों से कहा कि सशस्त्र संघर्ष के प्रति मेरे निरंतर समर्थन और वार्ता की वकालत में कोई विरोधाभास नहीं है। सशस्त्र संघर्ष की वास्तविकता और उसके खतरे ने ही सरकार को वार्ता के कगार पर ला खड़ा किया था। मैंने आगे कहा कि जब सरकार एएनसी पर हिंसा करना बंद कर देगी, तो एएनसी शांति का मार्ग प्रशस्त करेगी। प्रतिबंधों के बारे में पूछे जाने पर

मैंने कहा कि एएनसी अभी प्रतिबंधों में ढील देने की मांग नहीं कर सकती, क्योंकि जिस स्थिति के कारण प्रतिबंध लगाए गए थे - अश्वेतों के लिए राजनीतिक अधिकारों का अभाव - वह आज भी यथास्थिति बनी हुई है। मैंने कहा कि मैं जेल से बाहर तो आ गया हूँ, लेकिन अभी तक पूरी तरह स्वतंत्र नहीं हूँ। मुझसे गोरों के डर के बारे में भी पूछा गया। मुझे पता था कि लोग मुझसे गोरों के प्रति क्रोध रखने की उम्मीद करते हैं। लेकिन मुझमें ऐसा कोई क्रोध नहीं था। जेल में गोरों के प्रति मेरा क्रोध कम हो गया, लेकिन व्यवस्था के प्रति मेरी घृणा बढ़ गई। मैं दक्षिण अफ्रीका को यह दिखाना चाहता था कि मैं अपने दुश्मनों से भी प्यार करता हूँ, जबकि उस व्यवस्था से घृणा करता हूँ जिसने हमें एक-दूसरे के खिलाफ खड़ा कर दिया।
मैं पत्रकारों को किसी भी नई व्यवस्था में गोरों की महत्वपूर्ण भूमिका के बारे में बताना चाहता था। मैंने हमेशा इस बात को ध्यान में रखा है। हम देश को आज़ाद करने से पहले उसे बर्बाद नहीं करना चाहते थे, और गोरों को भगाना राष्ट्र के लिए विनाशकारी साबित होगा। मैंने कहा कि गोरों के डर और अश्वेतों की आशाओं के बीच एक मध्य मार्ग है, और हम एएनसी में इसे खोज निकालेंगे। मैंने कहा, "गोरे भी हमारे साथी दक्षिण अफ़्रीकी हैं, और हम चाहते हैं कि वे सुरक्षित महसूस करें और यह जानें कि हम इस देश के विकास में उनके योगदान की सराहना करते हैं।" जो भी पुरुष या महिला रंगभेद का त्याग करेगा, उसे लोकतांत्रिक, गैर-नस्लीय दक्षिण अफ़्रीका के हमारे संघर्ष में शामिल किया जाएगा; हमें अपने श्वेत साथियों को यह समझाने के लिए हर संभव प्रयास करना चाहिए कि एक नया, गैर-नस्लीय दक्षिण अफ़्रीका सभी के लिए एक बेहतर जगह होगी।
अपनी पहली ही प्रेस कॉन्फ्रेंस से मैंने महसूस किया कि पत्रकार मेरे राजनीतिक विचारों के साथ-साथ मेरी निजी भावनाओं और रिश्तों के बारे में भी जानने के लिए उतने ही उत्सुक थे। यह मेरे लिए बिल्कुल नया अनुभव था; जब मैं जेल में था, तब कोई पत्रकार कभी भी मेरी पत्नी और परिवार, मेरी भावनाओं, मेरे सबसे अंतरंग पलों के बारे में सवाल पूछने की हिम्मत नहीं करता था। हालांकि यह स्वाभाविक था कि प्रेस को इन बातों में दिलचस्पी हो सकती है, फिर भी मुझे उनकी जिज्ञासा को शांत करना मुश्किल लगा। मैं न तो कभी ऐसा व्यक्ति रहा हूँ जिसे सार्वजनिक रूप से अपनी भावनाओं के बारे में बात करना आसान लगता हो। पत्रकारों ने मुझसे अक्सर पूछा कि आज़ाद महसूस करना कैसा

लगता है, और मैंने उस अवर्णनीय चीज़ का वर्णन करने की पूरी कोशिश की, लेकिन अक्सर असफल रहा।
प्रेस कॉन्फ्रेंस के बाद, आर्कबिशप टूटू की पत्नी ने हमें जोहान्सबर्ग से फोन करके कहा कि हमें तुरंत वहाँ जाना चाहिए। विनी और मैं केप टाउन में कुछ दिन आराम करने की सोच रहे थे, लेकिन हमें खबर मिली कि जोहान्सबर्ग के लोग बेचैन हो रहे हैं और अगर मैं तुरंत वापस नहीं लौटा तो अराजकता फैल सकती है। हम उसी शाम जोहान्सबर्ग के लिए रवाना हुए, लेकिन मुझे बताया गया कि हमारे पुराने घर, 8115 ऑरलैंडो वेस्ट, जिसका पुनर्निर्माण हो चुका था, के चारों ओर हजारों लोग जमा थे और वहाँ जाना बुद्धिमानी नहीं होगी। मैं अनिच्छा से मान गया; मैं अपनी आज़ादी की दूसरी रात अपने घर में बिताना चाहता था। इसके बजाय, विनी और मैं उत्तरी उपनगरों में एक एएनसी समर्थक के घर पर रुके। अगली सुबह हम हेलीकॉप्टर से सोवेटो के फर्स्ट नेशनल बैंक स्टेडियम के लिए रवाना हुए। हमें सोवेटो का हवाई दौरा करने का मौका मिला, जो माचिस की डिब्बी जैसे घरों, टिन की झोपड़ियों और कच्ची सड़कों वाला एक विशाल महानगर था, दक्षिण अफ्रीका के शहरी अश्वेतों की जन्मभूमि, जेल जाने से पहले एक आदमी के रूप में मेरा एकमात्र घर। सोवेटो का विकास हुआ था और कुछ जगहों पर समृद्धि भी आई थी, लेकिन अधिकांश लोग अब भी बेहद गरीब थे, उनके पास बिजली या पीने का पानी नहीं था, और वे किसी तरह अपना जीवन यापन कर रहे थे, जो दक्षिण अफ्रीका जैसे समृद्ध देश के लिए शर्मनाक था। कई जगहों पर गरीबी उस समय से कहीं ज्यादा बदतर थी जब मैं जेल गया था।

* * *

हम 120,000 लोगों से खचाखच भरे स्टेडियम के ऊपर चक्कर लगाते हुए बीचोंबीच उतरे। स्टेडियम इतना खचाखच भरा था कि हर इंच जगह पर लोग बैठे या खड़े थे, मानो वह फट जाएगा। मैंने उनके बीच वापस आकर अपनी खुशी ज़ाहिर की, लेकिन फिर शहरी अश्वेतों के जीवन की कुछ गंभीर समस्याओं के लिए उन्हें फटकारा। मैंने कहा, छात्रों को स्कूल लौटना चाहिए। अपराध पर लगाम लगानी होगी। मैंने उन्हें बताया कि मैंने ऐसे अपराधियों के बारे में सुना है जो स्वतंत्रता सेनानियों का वेश धारण करके निर्दोष लोगों को परेशान करते हैं और वाहनों में आग लगा देते हैं; इन बदमाशों का संघर्ष में कोई स्थान नहीं

है। शिष्टता के बिना स्वतंत्रता, शांति से जीने की क्षमता के बिना स्वतंत्रता, सच्ची स्वतंत्रता बिल्कुल नहीं है।

आज सोवेटो लौटकर मेरा दिल खुशी से भर गया है। साथ ही साथ, मैं गहरे दुख के साथ भी लौट रहा हूँ। यह जानकर दुख हुआ कि आप अभी भी
एक अमानवीय व्यवस्था के तहत लोग पीड़ा झेल रहे हैं। आवास की कमी, स्कूलों का संकट, बेरोजगारी और अपराध दर जैसी समस्याएं आज भी बनी हुई हैं…। सोवेटो समुदाय का हिस्सा होने पर मुझे गर्व तो है, लेकिन अखबारों में अपराध के जो आंकड़े मैं पढ़ता हूं, उनसे मैं बेहद परेशान हूं। हालांकि मैं अपने लोगों की कठिनाइयों को समझता हूं, लेकिन मैं यह स्पष्ट करना चाहता हूं कि बस्ती में अपराध का स्तर चिंताजनक है और इसे तत्काल समाप्त किया जाना चाहिए।

मैंने सभी नेक इरादों और सद्भावना वाले दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के लिए अपने बाहें खोलते हुए कहा कि "रंगभेद का त्याग करने वाले किसी भी पुरुष या महिला को एक ऐसे गैर-नस्लीय, एकजुट और लोकतांत्रिक दक्षिण अफ़्रीका की ओर हमारे आंदोलन से बाहर नहीं रखा जाएगा, जो एक आम मतदाता सूची पर एक व्यक्ति एक वोट के सिद्धांत पर आधारित हो।" यही एएनसी का मिशन था, वह लक्ष्य जिसे मैंने जेल में बिताए कई अकेले वर्षों के दौरान हमेशा अपने सामने रखा था, वह लक्ष्य जिसके लिए मैं अपने जीवन के शेष वर्षों में काम करूंगा। यह वह सपना था जिसे मैंने चौवालीस वर्ष की आयु में जेल में प्रवेश करते समय संजोया था, लेकिन मैं अब युवा नहीं था, मैं इकहत्तर वर्ष का था, और मैं समय बर्बाद नहीं कर सकता था।

उस रात, मैं विनी के साथ ऑरलैंडो वेस्ट में 8115 नंबर के मकान में लौटा। तभी मुझे अपने दिल में यह एहसास हुआ कि मैं जेल से बाहर आ गया हूँ। मेरे लिए, 8115 मेरी दुनिया का केंद्र था, मेरे मानसिक भूगोल में X से चिह्नित जगह। आग के बाद मकान का मज़बूती से पुनर्निर्माण किया गया था। जब मैंने चार कमरों वाला मकान देखा, तो मैं यह देखकर हैरान रह गया कि यह मेरी यादों

से कितना छोटा और साधारण था। विक्टर वर्स्टर में मेरी कुटिया की तुलना में, 8115 नंबर का मकान पीछे नौकरों का क्वार्टर जैसा लग रहा था। लेकिन जिस घर में कोई व्यक्ति आज़ाद होता है, वह किसी आलीशान जेल की तुलना में भी महल जैसा होता है।
उस रात, घर आकर मैं जितना खुश था, उतना ही मुझे यह एहसास भी था कि जो मैं सबसे ज़्यादा चाहता था और जिसकी मुझे सबसे ज़्यादा चाह थी, वह मुझसे छीन ली जाएगी। मैं एक सामान्य और साधारण जीवन फिर से शुरू करना चाहता था, अपने युवावस्था के कुछ पुराने पलों को फिर से जीना चाहता था, सुबह अपने दफ्तर जाना और शाम को अपने परिवार के पास लौटना चाहता था, फार्मेसी से टूथपेस्ट खरीदना चाहता था, शाम को पुराने दोस्तों से मिलना चाहता था। जेल में रहते हुए इंसान को इन्हीं साधारण चीज़ों की सबसे ज़्यादा कमी खलती है और आज़ाद होने पर इन्हीं को करने का सपना देखता है। लेकिन मुझे जल्दी ही एहसास हो गया कि ऐसा मुमकिन नहीं होगा। उस रात, और अगले कई हफ़्तों और महीनों तक हर रात, घर सैकड़ों शुभचिंतकों से घिरा रहा। लोग गाते, नाचते और खुशी से चिल्लाते रहे, और उनकी खुशी संक्रामक थी। ये मेरे अपने लोग थे, और मुझे खुद को उनसे दूर रखने का कोई हक या इच्छा नहीं थी। लेकिन अपने लोगों के साथ समय बिताकर, मैं समझ गया कि मैं एक बार फिर खुद को अपने परिवार से दूर कर रहा हूँ।
उस रात हमें ज़्यादा नींद नहीं आई, क्योंकि सुबह तक गाना चलता रहा। फिर घर की रखवाली कर रहे एएनसी और यूडीएफ के सदस्यों ने भीड़ से चुप रहने और हमें आराम करने देने की गुहार लगाई। एएनसी में कई लोगों ने मुझे सलाह दी कि मैं कुछ ब्लॉक दूर, डाइपक्लोफ एक्सटेंशन में बने उस घर में चला जाऊं, जिसे विनी ने मेरे जेल में रहने के दौरान बनवाया था। सोवेटो के मानकों के हिसाब से वह एक शानदार जगह थी, लेकिन मेरे लिए उस घर का कोई महत्व या यादें नहीं थीं। इसके अलावा, अपने आकार और खर्चे के कारण वह घर किसी जननेता के लिए उपयुक्त नहीं लगता था। मैंने यथासंभव उस सलाह को नकार दिया। मैं न केवल अपने लोगों के बीच रहना चाहता था, बल्कि उनके जैसा बनना चाहता था।

102

मेरी पहली ज़िम्मेदारी एएनसी के नेतृत्व को रिपोर्ट करना थी, और 27 फरवरी को, जेल से रिहा हुए मुझे दो सप्ताह से कुछ अधिक समय हो गया था, मैं राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की बैठक के लिए लुसाका गया। दशकों बाद अपने पुराने साथियों से मिलना एक अद्भुत अनुभव था। कई अफ्रीकी राष्ट्राध्यक्ष भी उपस्थित थे, और मैंने जिम्बाब्वे के रॉबर्ट मुगाबे, जाम्बिया के केनेथ कौंडा, अंगोला के जोस एडुआर्डो डॉस सैंटोस, बोत्सवाना के क्वेट मसीरे, मोज़ाम्बिक के जोआकिम चिसानो और युगांडा के योवेरी मुसेवेनी से संक्षिप्त बातचीत की।
कार्यपालिका के सदस्य मेरी रिहाई से प्रसन्न तो थे, लेकिन साथ ही रिहा हुए व्यक्ति का मूल्यांकन करने के लिए भी उत्सुक थे। उनकी आँखों में प्रश्न स्पष्ट थे। क्या मंडेला वही व्यक्ति थे जो सत्ताईस साल पहले जेल गए थे, या यह कोई अलग मंडेला थे, एक सुधरे हुए मंडेला? क्या वे बच गए थे या टूट चुके थे? उन्होंने सरकार के साथ मेरी बातचीत की खबरें सुनी थीं और उनकी चिंता जायज़ थी। मैं न केवल जमीनी हालात से बेखबर था, बल्कि 1984 से जेल में अपने साथियों से भी संपर्क नहीं कर पा रहा था।
मैंने सरकार के साथ अपनी बातचीत का सार सावधानीपूर्वक और गंभीरता से समझाया। मैंने अपनी मांगों और अब तक हुई प्रगति का वर्णन किया। उन्होंने बोथा और डी क्लर्क को लिखे मेरे ज्ञापन देखे थे और जानते थे कि ये दस्तावेज़ एएनसी की नीति के अनुरूप थे। मुझे पता था कि पिछले कुछ वर्षों में रिहा किए गए कुछ लोग लुसाका गए थे और फुसफुसा रहे थे, "मदीबा नरम पड़ गए हैं। उन्हें अधिकारियों ने खरीद लिया है। वे सूट-बूट पहनते हैं, शराब पीते हैं और बढ़िया खाना खाते हैं।" मुझे इन फुसफुसाहटों की जानकारी थी और मैं उन्हें गलत साबित करना चाहता था। मैं जानता था कि उन्हें गलत साबित करने का सबसे अच्छा तरीका यही था कि मैंने जो कुछ भी किया था, उसके बारे में सीधे और ईमानदारी से बताऊं।
एनईसी के उस सत्र में मुझे संगठन का उपाध्यक्ष चुना गया, जबकि ओलिवर के स्वास्थ्य लाभ के दौरान संगठन के महासचिव अल्फ्रेड न्ज़ो को कार्यवाहक अध्यक्ष नियुक्त किया गया। हमारी बैठक के बाद एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में

मुझसे ज़ाम्बिया के राष्ट्रपति और कांग्रेस के लंबे समय से समर्थक रहे डॉ. कौंडा के सुझाव के बारे में पूछा गया कि मेरी रिहाई के बाद एएनसी को दक्षिण अफ्रीका के अंदर सशस्त्र अभियान रोक देने चाहिए। मैंने जवाब दिया कि हम श्री कौंडा की बुद्धिमत्ता और समर्थन का सम्मान करते हैं, लेकिन सशस्त्र संघर्ष को रोकना अभी जल्दबाजी होगी, क्योंकि हमने अभी तक वह लक्ष्य हासिल नहीं किया है जिसके लिए हमने हथियार उठाए थे; मैंने कहा कि श्री डी क्लर्क को उनके दक्षिणपंथी समर्थकों को शांत करने में मदद करना एएनसी का काम नहीं है।
मैंने अफ्रीका का दौरा शुरू किया, जिसमें कई देश शामिल थे। रिहाई के बाद पहले छह महीनों में मैंने घर से ज़्यादा समय विदेश में बिताया। मैं जहाँ भी गया, वहाँ बड़ी संख्या में उत्साही भीड़ थी, जिससे थकावट महसूस होने पर भी लोगों का उत्साह मुझे मिलता था। दार एस सलाम में मेरा स्वागत लगभग पाँच लाख लोगों की भीड़ ने किया।
मुझे अपनी यात्राओं का भरपूर आनंद आया। मैं नए और पुराने दर्शनीय स्थलों को देखना चाहता था, तरह-तरह के खानों का स्वाद चखना चाहता था और हर तरह के लोगों से बात करना चाहता था। मुझे बहुत जल्दी ही उस दुनिया के अनुकूल ढलना पड़ा जो मैंने छोड़ी थी उससे बिल्कुल अलग थी। यात्रा, संचार और जनसंचार माध्यमों में बदलाव के साथ, दुनिया की रफ्तार बहुत बढ़ गई थी; अब चीजें इतनी तेजी से घटित हो रही थीं कि कभी-कभी उनके साथ तालमेल बिठाना मुश्किल हो जाता था। विनी ने मुझे थोड़ा धीमा चलने के लिए कहा, लेकिन करने को बहुत कुछ था; संगठन यह सुनिश्चित करना चाहता था कि मेरी रिहाई से उत्पन्न उत्साह का हम पूरा लाभ उठाएं।
काहिरा में, मिस्र के राष्ट्रपति होस्नी मुबारक के साथ एक निजी बैठक के अगले दिन, मुझे एक स्थानीय हॉल में एक बड़ी सभा को संबोधित करना था। जब मैं वहाँ पहुँचा, तो भीड़ इमारत से बाहर निकलती हुई प्रतीत हो रही थी और सुरक्षा नाममात्र की थी। मैंने एक पुलिसकर्मी से कहा कि मुझे लगता है कि उसे अतिरिक्त सुरक्षा बल की आवश्यकता है, लेकिन उसने बस कंधे उचका दिए। विनी और मैं हॉल के पीछे एक कमरे में इंतज़ार करते रहे, और निर्धारित समय पर, एक पुलिसकर्मी ने मुझे अंदर जाने का इशारा किया। मैंने उससे कहा कि वह मेरे प्रतिनिधिमंडल के बाकी सदस्यों को पहले अंदर ले जाए क्योंकि मुझे डर था कि मेरे अंदर जाते ही अफरा-तफरी मच जाएगी और वे अलग-थलग पड़ जाएँगे।

लेकिन पुलिसकर्मी ने मुझे पहले जाने के लिए कहा, और वास्तव में जैसे ही मैं हॉल में पहुँचा, भीड़ आगे बढ़ गई और पुलिसकर्मियों के घेरे को तोड़ दिया। उनके उत्साह में, मुझे धक्का लगा और मैं थोड़ा हिल गया, और एक समय तो इस अफरा-तफरी में मेरा जूता कहीं खो गया। कुछ मिनट बाद जब स्थिति शांत होने लगी, तो मैंने पाया कि न तो मेरा जूता मिल रहा था और न ही मेरी पत्नी। आखिरकार, लगभग आधे घंटे बाद, विनी को मेरे साथ मंच पर लाया गया, वह इस बात से काफी नाराज़ थी कि उसे मंच से हटा दिया गया था। मैं भीड़ को संबोधित भी नहीं कर पाया, क्योंकि वे इतनी ज़ोर से "मंडेला! मंडेला!" चिल्ला रहे थे कि शोर के बीच मेरी आवाज़ सुनाई ही नहीं दे रही थी, और अंत में मैं बिना जूते के और अपनी पत्नी के साथ, जो असामान्य रूप से चुप थी, वहाँ से चला गया। काहिरा में रहते हुए मैंने एक प्रेस कॉन्फ्रेंस की, जिसमें मैंने कहा कि एएनसी "युद्धविराम पर विचार करने के लिए तैयार है।" यह सरकार के लिए एक संकेत था। एएनसी और सरकार दोनों ही ऐसा माहौल बनाने में लगे थे जिससे बातचीत सफल हो सके। एएनसी सरकार से देश में आपातकाल समाप्त करने, सभी राजनीतिक कैदियों को रिहा करने और सभी रंगभेद कानूनों को रद्द करने की मांग कर रही थी, जबकि सरकार पहले एएनसी को सशस्त्र संघर्ष स्थगित करने के लिए राजी करने पर तुली हुई थी। हालांकि हम अभी तक इस तरह के निलंबन की घोषणा करने के लिए तैयार नहीं थे, लेकिन हम श्री डी क्लर्क को उनकी सुधारवादी रणनीतियों को आगे बढ़ाने के लिए पर्याप्त प्रोत्साहन देना चाहते थे। हम जानते थे कि हम अंततः सशस्त्र संघर्ष स्थगित करेंगे, आंशिक रूप से अधिक गंभीर बातचीत को सुविधाजनक बनाने के लिए और आंशिक रूप से श्री डी क्लर्क को अपने निर्वाचन क्षेत्र, दक्षिण अफ्रीका के श्वेत मतदाताओं के पास जाकर यह कहने का अवसर देने के लिए, "देखिए, ये मेरी नीति के फल हैं।" अफ्रीका में अपने आखिरी पड़ाव के बाद, मैं ओलिवर से मिलने स्टॉकहोम गया। अपने पुराने दोस्त और कानूनी साझेदार से मिलना मेरे लिए सबसे बड़ी खुशी थी। ओलिवर की तबीयत ठीक नहीं थी, लेकिन जब हम मिले तो हम दोनों ऐसे लग रहे थे जैसे मैदान में दो नौजवान हों और एक-दूसरे के प्यार से ताकत पा रहे हों। हमने पुरानी बातें करना शुरू किया, लेकिन जब हम अकेले थे, तो उन्होंने सबसे पहले संगठन के नेतृत्व का मुद्दा उठाया। उन्होंने कहा, "नेल्सन, अब आपको एएनसी के अध्यक्ष का पदभार संभालना होगा। मैं तो बस आपके लिए यह ज़िम्मेदारी संभाले हुए था।" मैंने मना कर दिया और उनसे कहा कि उन्होंने

निर्वासन में संगठन का नेतृत्व मुझसे कहीं बेहतर किया था। इस तरह से पदभार हस्तांतरण न तो उचित था और न ही लोकतांत्रिक। मैंने कहा, "आपको संगठन द्वारा अध्यक्ष चुना गया है। आइए चुनाव का इंतज़ार करें; फिर संगठन फैसला करेगा।" ओलिवर ने विरोध किया, लेकिन मैं टस से मस नहीं हुआ। यह उनकी विनम्रता और निस्वार्थता का प्रमाण था कि वे मुझे अध्यक्ष नियुक्त करना चाहते थे, लेकिन यह एएनसी के सिद्धांतों के अनुरूप नहीं था।
अप्रैल 1990 में, मैं अपने सम्मान में आयोजित वेम्बली में एक संगीत कार्यक्रम में शामिल होने के लिए लंदन गया। कई अंतरराष्ट्रीय कलाकार, जिनमें से अधिकांश को मैं नहीं जानता था, प्रस्तुति दे रहे थे और कार्यक्रम का विश्वव्यापी प्रसारण होना था। मैंने इसका लाभ उठाते हुए विश्व की रंगभेद-विरोधी ताकतों को उनके द्वारा किए गए अथक प्रयासों के लिए धन्यवाद दिया, जिन्होंने प्रतिबंधों के लिए दबाव बनाने, मुझे और मेरे साथी राजनीतिक कैदियों की रिहाई के लिए और मेरे देश के उत्पीड़ित लोगों के प्रति वास्तविक समर्थन और एकजुटता दिखाने के लिए महत्वपूर्ण योगदान दिया था।

103

जब मैं जेल से रिहा हुआ, तो इंकाथा फ्रीडम पार्टी के प्रमुख और क्वाज़ुलू के मुख्यमंत्री चीफ मंगोसुथु बुथेलेज़ी दक्षिण अफ़्रीकी राजनीतिक मंच के प्रमुख व्यक्तियों में से एक थे। लेकिन एएनसी के भीतर वे एक अलोकप्रिय व्यक्ति थे। चीफ बुथेलेज़ी महान ज़ुलू राजा सेत्यवायो के वंशज थे, जिन्होंने 1879 में इसंधलवाना की लड़ाई में अंग्रेजों को हराया था। युवावस्था में उन्होंने फोर्ट हरे विश्वविद्यालय में शिक्षा प्राप्त की और फिर एएनसी यूथ लीग में शामिल हो गए। मैंने उन्हें आंदोलन के उभरते युवा नेताओं में से एक के रूप में देखा। वे एएनसी के मौन समर्थन से क्वाज़ुलू मातृभूमि के मुख्यमंत्री बने थे, और यहां तक कि ज़ुलू सांस्कृतिक संगठन के रूप में इंकाथा की स्थापना का भी संगठन ने विरोध नहीं किया था। लेकिन वर्षों बीतने के साथ, चीफ बुथेलेज़ी एएनसी से दूर होते चले गए। हालांकि उन्होंने रंगभेद का पुरजोर विरोध किया और सरकार की इच्छा के अनुसार क्वाज़ुलू को एक "स्वतंत्र" मातृभूमि बनने देने से इनकार कर दिया, फिर भी वे लोकतांत्रिक आंदोलन के लिए एक कांटा बने रहे। उन्होंने सशस्त्र संघर्ष का विरोध किया। उन्होंने 1976 के सोवेटो विद्रोह की आलोचना की। उन्होंने अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों के खिलाफ अभियान चलाया। उन्होंने दक्षिण अफ्रीका के एकात्मक राज्य के विचार को चुनौती दी। फिर भी, चीफ बुथेलेज़ी ने लगातार मेरी रिहाई की मांग की और जब तक मुझे और अन्य राजनीतिक कैदियों को रिहा नहीं किया जाता, तब तक उन्होंने सरकार के साथ बातचीत करने से इनकार कर दिया।
रिहाई के बाद मैंने सबसे पहले जिन लोगों को फ़ोन किया, उनमें से एक थे चीफ बुथेलेज़ी, जिन्हें मैंने उनके लंबे समय से चले आ रहे समर्थन के लिए धन्यवाद दिया। मेरी इच्छा थी कि मैं उनसे जल्द से जल्द मिलकर अपने मतभेदों को सुलझाने का प्रयास करूँ। लुसाका की अपनी पहली यात्रा के दौरान, मैंने ऐसी बैठक का प्रस्ताव रखा, लेकिन इसे अस्वीकार कर दिया गया। जब मैं विक्टर वर्स्टर में था, तब वाल्टर को ज़ुलू राजा, गुडविल ज़्वेलिथिनी ने क्वाज़ुलू की राजधानी उलुंडी में उनसे मिलने के लिए आमंत्रित किया था, और मैंने उनसे इसे स्वीकार करने का आग्रह किया। मुझे लगा कि यह देश के सबसे

सम्मानित और शक्तिशाली शाही परिवारों में से एक के मुखिया को प्रभावित करने का एक उत्कृष्ट अवसर है। राष्ट्रीय संसद (एनईसी) ने इस शर्त पर यात्रा को अस्थायी रूप से मंजूरी दे दी कि वाल्टर नोंगमा में राजा के महल में जाएँगे; ऐसा माना गया कि उलुंडी जाना मातृभूमि के अधिकार की मान्यता का संकेत देगा।
लुसाका से लौटने पर मैंने चीफ बुथेलेज़ी और राजा दोनों को फोन किया और समझाया कि वाल्टर राजा से मिलने उलुंडी नहीं बल्कि नोंगमा में आ रहे हैं। राजा ने कहा कि वे वाल्टर को राजधानी के अलावा कहीं और मिलने की अनुमति नहीं देंगे। उन्होंने कहा, “मैं राजा हूँ। मैंने उन्हें उलुंडी में मुझसे मिलने के लिए आमंत्रित किया है, और उन्हें यह कहने का कोई अधिकार नहीं है कि मैं आपसे कहीं और मिलूँ।” मैंने कहा, “महाराज, हमें अपने सदस्यों के कड़े विरोध का सामना करना पड़ रहा है जो श्री सिसुलु को क्वाज़ुलू जाने ही नहीं देना चाहते। हमने इस समझौते को मंज़ूर करवा लिया है, आप भी ज़रूर झुकेंगे।” लेकिन वे नहीं झुके और उन्होंने वाल्टर से मिलने से इनकार कर दिया।
इसके बाद संबंध बिगड़ गए, और मई में मैंने एएनसी को राजा और बुथेलेज़ी से मिलने की मेरी आवश्यकता के बारे में समझाया। राजा ने सहमति दे दी, लेकिन यात्रा से लगभग एक सप्ताह पहले मुझे उनका एक पत्र मिला जिसमें लिखा था कि मुझे अकेले आना होगा। यह आखिरी झटका साबित हुआ, और एनईसी इस मांग के आगे झुकने को तैयार नहीं थी। मैंने राजा से कहा कि मैं अपने सहयोगियों के बिना नहीं आ सकता; राजा ने इसे एक और अपमान समझा और यात्रा रद्द कर दी।
मेरा लक्ष्य राजा के साथ एक स्वतंत्र संबंध स्थापित करना था, जो चीफ बुथेलेज़ी के साथ मेरे संबंध से अलग हो। राजा ज़ुलुओं के सच्चे वंशानुगत नेता थे, जिनसे लोग प्रेम और सम्मान करते थे। क्वाज़ुलू में राजा के प्रति निष्ठा, इंकाथा के प्रति निष्ठा से कहीं अधिक व्यापक थी।
इसी बीच, नेटाल एक कत्लगाह बन गया। भारी हथियारों से लैस इंकाथा समर्थकों ने नेटाल मिडलैंड्स क्षेत्र और पीटरमैरिट्जबर्ग के आसपास के एएनसी गढ़ों पर एक तरह से युद्ध छेड़ दिया था। पूरे-पूरे गाँव जला दिए गए, दर्जनों लोग मारे गए, सैकड़ों घायल हुए और हजारों लोग शरणार्थी बन गए। अकेले मार्च 1990 में ही इस आपसी हिंसा में 230 लोगों की जान चली गई। नेटाल में, ज़ुलू ही ज़ुलू की हत्या कर रहे थे, क्योंकि इंकाथा के सदस्य और एएनसी समर्थक

ज़ुलू ही थे। फरवरी में, मेरी रिहाई के मात्र दो सप्ताह बाद, मैं डरबन गया और किंग्स पार्क में 100,000 से अधिक लोगों की भीड़ को संबोधित किया, जिनमें से लगभग सभी ज़ुलू थे। मैंने उनसे हथियार डालने, शांति से एक-दूसरे का हाथ थामने की विनती की: “अपनी बंदूकें, अपने चाकू और अपने पंगे लो और उन्हें समुद्र में फेंक दो! मौत की फैक्ट्रियों को बंद करो। इस युद्ध को अभी समाप्त करो!” लेकिन मेरी पुकार अनसुनी कर दी गई। लड़ाई और मौतें जारी रहीं।
मैं इतना चिंतित था कि चीफ बुथेलेज़ी से मिलने के लिए हर संभव प्रयास करने को तैयार था। मार्च में, हिंसा की एक भयावह घटना के बाद, मैंने स्वयं घोषणा की कि मैं पीटरमैरिट्जबर्ग के बाहर एक पहाड़ी गाँव में चीफ बुथेलेज़ी से मिलूंगा। व्यक्तिगत रूप से, चीफ बुथेलेज़ी के साथ मेरे संबंध घनिष्ठ और सम्मानजनक थे, और मैं इसका लाभ उठाना चाहता था। लेकिन मुझे पता चला कि नेटाल में एएनसी नेताओं को ऐसी मुलाकात बिल्कुल भी मंजूर नहीं थी। वे इसे खतरनाक मानते थे और उन्होंने मेरी मुलाकात पर रोक लगा दी। मैं पीटरमैरिट्जबर्ग गया, जहाँ मैंने एएनसी समर्थकों के जले हुए अवशेष देखे और उनके शोक संतप्त परिवारों को सांत्वना देने का प्रयास किया, लेकिन मुझे चीफ बुथेलेज़ी नहीं मिले।

104

मार्च में, अपनी-अपनी पार्टियों के भीतर काफी बातचीत के बाद, हमने श्री डी क्लर्क और सरकार के साथ अपनी पहली आमने-सामने की बैठक तय की। ये बैठकें "बातचीत पर बातचीत" के रूप में होनी थीं और अप्रैल की शुरुआत में शुरू होनी थीं। लेकिन 26 मार्च को, जोहान्सबर्ग से लगभग तीस मील दक्षिण में स्थित सेबोकेंग टाउनशिप में, पुलिस ने एएनसी प्रदर्शनकारियों की भीड़ पर बिना किसी चेतावनी के गोलियां चला दीं, जिसमें बारह लोग मारे गए और सैकड़ों घायल हो गए, जिनमें से अधिकांश भागते समय पीठ में गोली लगने से घायल हुए थे। पुलिस ने प्रदर्शनकारियों से निपटने में असली गोलियों का इस्तेमाल किया, जो असहनीय था। पुलिस ने दावा किया कि उनकी जान को खतरा था, लेकिन कई प्रदर्शनकारियों को पीठ में गोली लगी थी और उनके पास कोई हथियार नहीं थे। आप एक निहत्थे व्यक्ति से खतरे में नहीं हो सकते जो आपसे भाग रहा हो। हमारी न्यायसंगत मांगों के समर्थन में इकट्ठा होने और प्रदर्शन करने का अधिकार सरकार द्वारा मनमाने ढंग से दिया जाने वाला कोई एहसान नहीं था। इस तरह की कार्रवाई ने मुझे बेहद क्रोधित किया और मैंने प्रेस को बताया कि दक्षिण अफ्रीका में हर श्वेत पुलिसकर्मी हर अश्वेत व्यक्ति को सैन्य लक्ष्य मानता है। एनईसी के साथ परामर्श के बाद, मैंने हमारी वार्ता को स्थगित करने की घोषणा की और श्री डी क्लर्क को चेतावनी दी कि वह "एक तरफ बातचीत की बात नहीं कर सकते और दूसरी तरफ हमारे लोगों की हत्या नहीं कर सकते।" लेकिन आधिकारिक वार्ता स्थगित होने के बावजूद, नेतृत्व की सहमति से, मैंने वार्ता को गति देने के लिए केप टाउन में श्री डी क्लर्क से निजी तौर पर मुलाकात की। हमारी चर्चा मुख्य रूप से एक नई तारीख पर केंद्रित थी, और हम मई की शुरुआत पर सहमत हुए। मैंने सेबोकेंग में हुए भयावह व्यवहार और पुलिस द्वारा अश्वेतों और गोरों के साथ किए गए असमान व्यवहार का मुद्दा उठाया; पुलिस ने अश्वेत प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चलाईं, जबकि उन्होंने श्वेत दक्षिणपंथी प्रदर्शनकारियों पर कभी भी अपनी बंदूकें नहीं निकालीं। सरकार बातचीत शुरू करने में कोई जल्दबाजी नहीं दिखा रही थी; वे मेरी रिहाई के बाद उमड़े उत्साह के शांत होने का इंतजार कर रहे थे। वे मुझे असफल होने और यह साबित करने का समय देना चाहते थे कि उद्धारकर्ता के रूप में

सम्मानित पूर्व कैदी एक बेहद त्रुटिपूर्ण व्यक्ति था जो वर्तमान स्थिति से पूरी तरह से बेखबर था।
अपने प्रगतिशील कार्यों के बावजूद, श्री डी क्लर्क किसी भी तरह से महान मुक्तिदाता नहीं थे। वे एक क्रमिकवादी और सतर्क व्यावहारिक व्यक्ति थे। उन्होंने अपने किसी भी सुधार को स्वयं को सत्ता से बेदखल करने के इरादे से नहीं किया था। उन्होंने ये सुधार ठीक इसके विपरीत कारण से किए थे: एक नई व्यवस्था में अफ़्रीकानरों के लिए सत्ता सुनिश्चित करना। वे अभी श्वेत शासन के अंत के लिए बातचीत करने को तैयार नहीं थे।
उनका लक्ष्य समूह अधिकारों पर आधारित सत्ता-साझाकरण प्रणाली बनाना था, जिससे दक्षिण अफ्रीका में अल्पसंख्यकों की शक्ति का एक संशोधित रूप संरक्षित रहे। वे बहुमत शासन, या जिसे वे कभी-कभी "सरल बहुसंख्यकवाद" कहते थे, के घोर विरोधी थे, क्योंकि इससे श्वेत वर्चस्व एक झटके में समाप्त हो जाता। हमें शुरू से ही पता था कि सरकार वेस्टमिंस्टर की उस संसदीय प्रणाली का घोर विरोध करती थी जिसमें विजेता को सब कुछ मिल जाता था, और इसके बजाय श्वेत अल्पसंख्यकों के लिए अंतर्निहित संरचनात्मक गारंटियों के साथ आनुपातिक प्रतिनिधित्व प्रणाली की वकालत करती थी। यद्यपि वे अश्वेत बहुमत को मतदान करने और कानून बनाने की अनुमति देने के लिए तैयार थे, फिर भी वे अल्पसंख्यक वीटो शक्ति को बरकरार रखना चाहते थे। शुरू से ही मैं इस योजना से सहमत नहीं था। मैंने श्री डी क्लर्क को इसे छिपे हुए रंगभेद, यानी "हारने वाले को सब कुछ मिल जाता है" प्रणाली के रूप में वर्णित किया। हमारी ताकत को परास्त करने के लिए राष्ट्रवादियों की दीर्घकालिक रणनीति इंकथा फ्रीडम पार्टी के साथ एएनसी विरोधी गठबंधन बनाना और केप के रंगीन अफ़्रीकान्स भाषी मतदाताओं को एक नई राष्ट्रीय पार्टी की ओर आकर्षित करना था। मेरी रिहाई के क्षण से ही, उन्होंने बुथेलेज़ी और केप के रंगीन मतदाताओं दोनों को लुभाना शुरू कर दिया। सरकार ने रंगीन आबादी को यह सोचने पर मजबूर करने की कोशिश की कि एएनसी रंगीन विरोधी है। उन्होंने समूह अधिकारों और संघवाद के सिद्धांत का प्रचार करके, नए दक्षिण अफ्रीका में ज़ुलू सत्ता और पहचान को बनाए रखने की चीफ बुथेलेज़ी की इच्छा का समर्थन किया।

सरकार के साथ वार्ता का पहला दौर मई की शुरुआत में तीन दिनों तक चला। हमारे प्रतिनिधिमंडल में वाल्टर सिसुलु, जो स्लोवो, अल्फ्रेड न्ज़ो, थाबो म्बेकी, अहमद कथराडा, जो मोदिसे, रूथ मोम्पाटी, आर्ची गुमेडे, रेवरेंड बेयर्स नौडे, चेरिल कैरोलस और मैं शामिल थे। वार्ता का स्थान ग्रूट शूर था, जो केप डच शैली की हवेली है और दक्षिण अफ्रीका के पहले औपनिवेशिक गवर्नरों का निवास स्थान था, जिनमें सेसिल रोड्स भी शामिल थे। हमारे प्रतिनिधिमंडल के कुछ सदस्यों ने मज़ाक में कहा कि हमें दुश्मन के इलाके में घात लगाकर हमला करने के लिए ले जाया जा रहा है।
लेकिन उम्मीदों के विपरीत, बातचीत गंभीरता और सौहार्दपूर्ण माहौल में हुई। तीन शताब्दियों से एक-दूसरे से लड़ रहे ऐतिहासिक शत्रु मिले और उन्होंने हाथ मिलाया। कई लोगों ने खुलकर आश्चर्य व्यक्त किया कि ऐसी चर्चाएँ बहुत पहले क्यों नहीं हुईं। सरकार ने कम्युनिस्ट पार्टी के महासचिव जो स्लोवो और एमके के कमांडर जो मोदिसे को अस्थायी माफी दे दी थी, और इन दोनों को दशकों से उन्हें बदनाम करने वाले नेशनल पार्टी के नेताओं से हाथ मिलाते देखना असाधारण था। जैसा कि थाबो म्बेकी ने बाद में पत्रकारों से कहा, दोनों पक्षों को पता चल गया था कि दूसरा पक्ष सींगों वाला नहीं है।
स्वयं वार्ता का आयोजन ही हमारे देश के इतिहास में एक महत्वपूर्ण मील का पत्थर था; जैसा कि मैंने बताया, यह बैठक न केवल एएनसी की वर्षों से चली आ रही आकांक्षाओं का प्रतीक थी, बल्कि दक्षिण अफ्रीका में अश्वेत और श्वेत संबंधों में व्याप्त स्वामी-सेवक के रिश्ते का अंत भी थी। हम इस बैठक में याचना करने या याचिकाकर्ता बनकर नहीं, बल्कि साथी दक्षिण अफ्रीकी नागरिक बनकर आए थे, जो समान अधिकार के हकदार थे।
पहला दिन लगभग इतिहास की शिक्षा जैसा था। मैंने अपने साथियों को समझाया कि एएनसी ने 1912 में अपनी स्थापना से ही सत्ताधारी सरकार के साथ बातचीत करने का प्रयास किया था। श्री डी क्लर्क ने कहा कि अलग-अलग विकास प्रणाली को एक नेक विचार के रूप में परिकल्पित किया गया था, लेकिन व्यवहार में यह कारगर नहीं रही। उन्होंने इसके लिए खेद व्यक्त किया और आशा जताई कि बातचीत से इसकी भरपाई हो जाएगी। यह रंगभेद के लिए माफीनामा तो नहीं था, लेकिन यह किसी भी अन्य नेशनल पार्टी नेता के रुख से कहीं अधिक व्यापक था।

मुख्य मुद्दा राजनीतिक कैदियों और राजनीतिक निर्वासितों की परिभाषा पर था। सरकार ने संकीर्ण परिभाषा का समर्थन किया, ताकि मुआवज़े के पात्र होने वाले हमारे लोगों की संख्या सीमित रहे। हमने व्यापकतम परिभाषा का समर्थन किया और कहा कि राजनीतिक रूप से प्रेरित अपराध के लिए दोषी ठहराए गए किसी भी व्यक्ति को मुआवज़े का हकदार होना चाहिए। हम "राजनीतिक रूप से प्रेरित" अपराधों की किसी भी सर्वमान्य परिभाषा पर सहमत नहीं हो सके, और यह मुद्दा आने वाले काफी समय तक हमारे लिए परेशानी का सबब बना रहेगा।
तीन दिवसीय बैठक के अंत में, हम एक समझौते पर सहमत हुए जिसे बाद में 'ग्रूट शूर मिनट' के नाम से जाना गया। इसमें दोनों पक्षों ने शांतिपूर्ण वार्ता प्रक्रिया के लिए प्रतिबद्धता जताई और सरकार ने आपातकाल हटाने का वादा किया, जिसे सरकार ने हिंसाग्रस्त प्रांत नेटाल को छोड़कर बाकी सभी जगहों पर जल्द ही हटा दिया। हमने अपने रास्ते में मौजूद कई बाधाओं को दूर करने के लिए एक संयुक्त कार्य समूह गठित करने पर भी सहमति व्यक्त की।
जब संवैधानिक मुद्दों की बात आई, तो हमने सरकार से कहा कि हम एक निर्वाचित संविधान सभा की मांग कर रहे हैं जो नया संविधान तैयार करे; हमारा मानना था कि संविधान बनाने वाले पुरुष और महिलाएं स्वयं जनता की पसंद के होने चाहिए। लेकिन विधानसभा के चुनाव से पहले, एक अंतरिम सरकार का होना आवश्यक था जो नई सरकार के चुने जाने तक संक्रमण काल की देखरेख कर सके। सरकार वर्तमान की तरह खिलाड़ी और रेफरी दोनों की भूमिका नहीं निभा सकती थी। हमने अंतरिम सरकार के गठन और संविधान सभा के कामकाज के लिए मार्गदर्शक सिद्धांतों को निर्धारित करने हेतु एक बहुदलीय वार्ता सम्मेलन के गठन की वकालत की।

105

हालांकि मैं जेल से रिहा होने के तुरंत बाद कुनु की यात्रा करना चाहता था, लेकिन अप्रैल तक ऐसा संभव नहीं हो पाया। मैं जब चाहूँ तब निकल नहीं सकता था; सुरक्षा व्यवस्था करनी पड़ी, साथ ही स्थानीय संगठनों के लिए भाषण भी तैयार करने पड़े। अप्रैल तक, एएनसी और ट्रांसकेई के सैन्य नेता और एएनसी के वफादार जनरल बंटू होलोमिसा ने एक यात्रा का आयोजन किया। लेकिन मेरे मन और हृदय में सबसे पहले अपनी माँ की समाधि पर श्रद्धांजलि अर्पित करने की इच्छा थी।
मैं सबसे पहले कुनु गया और उस जगह पर पहुँचा जहाँ मेरी माँ को दफनाया गया था। उनकी कब्र सादी और बिना किसी सजावट के थी, बस कुछ पत्थरों और कुछ उलटी ईंटों से ढकी हुई थी, कुनु की दूसरी कब्रों से अलग नहीं। मुझे अपनी भावनाओं को शब्दों में व्यक्त करना मुश्किल लग रहा है: मुझे इस बात का अफसोस था कि उनकी मृत्यु के समय मैं उनके साथ नहीं था, इस बात का पछतावा था कि उनके जीवनकाल में मैं उनकी ठीक से देखभाल नहीं कर पाया, और इस बात की लालसा थी कि अगर मैंने अपना जीवन अलग तरह से जिया होता तो क्या होता।
इतने वर्षों बाद अपने गाँव को फिर से देखकर मैं बहुत प्रभावित हुआ कि कितना कुछ बदल गया था और कितना नहीं। जब मैं छोटा था, तब कुनु के लोग राजनीति में बिल्कुल भी रुचि नहीं रखते थे; उन्हें अफ़्रीकी अधिकारों के संघर्ष के बारे में कोई जानकारी नहीं थी। लोग जीवन को जैसा था वैसा ही स्वीकार करते थे और इसे बदलने का सपना भी नहीं देखते थे। लेकिन जब मैं लौटा तो मैंने कुनु के स्कूली बच्चों को ओलिवर टैम्बो और उमखोंटो वे सिज़वे के गीत गाते हुए सुना और मैं यह देखकर आश्चर्यचकित रह गया कि उस समय तक संघर्ष का ज्ञान अफ़्रीकी समाज के हर कोने में किस प्रकार फैल चुका था।
जो बात कायम रही, वह थी समुदाय की गर्मजोशी और सादगी, जिसने मुझे मेरे बचपन के दिनों की याद दिला दी। लेकिन जिस बात ने मुझे परेशान किया, वह यह थी कि गाँव वाले पहले से भी ज़्यादा गरीब लग रहे थे। ज़्यादातर लोग अब भी मिट्टी के फर्श वाली साधारण झोपड़ियों में रहते थे, जहाँ बिजली और पानी की सुविधा नहीं थी। जब मैं छोटा था, तब गाँव साफ-सुथरा था, पानी शुद्ध था, और दूर-दूर तक घास हरी-भरी और बेदाग थी। बाड़ों की सफाई होती थी, मिट्टी का संरक्षण

किया जाता था, और खेतों को करीने से बाँटा जाता था। लेकिन अब गाँव में सफाई नहीं होती थी, पानी प्रदूषित था, और आसपास का इलाका प्लास्टिक की थैलियों और रैपरों से भरा पड़ा था। जब मैं छोटा था, तब हमें प्लास्टिक के बारे में पता भी नहीं था, और हालाँकि इसने कुछ मायनों में जीवन को बेहतर बनाया है, लेकिन कुनु में इसकी मौजूदगी मुझे एक अभिशाप जैसी लगती थी। समुदाय का गौरव मानो गायब हो गया था।

उस महीने, मेरी एक और घर वापसी हुई: मैं रॉबेन द्वीप पर पच्चीस एमके राजनीतिक कैदियों को सरकार की माफी स्वीकार करने और द्वीप छोड़ने के लिए मनाने के उद्देश्य से लौटा। हालाँकि मैंने आठ साल पहले द्वीप छोड़ दिया था, लेकिन जेल की मेरी यादें अभी भी ताज़ा थीं और उनमें उदासी का कोई अंश नहीं था। इतने वर्षों तक दूसरों के आने-जाने के बाद, रॉबेन द्वीप पर एक आगंतुक होना एक अनोखा अनुभव था।
लेकिन उस दिन मुझे घूमने-फिरने का ज़्यादा मौका नहीं मिला, क्योंकि मेरी मुलाक़ात तुरंत उन लोगों से हुई जो सरकार द्वारा प्रस्तावित माफ़ी का विरोध कर रहे थे। उनका कहना था कि वे युद्ध के मैदान में जीत हासिल करने के बाद ही जाएंगे, बातचीत की मेज़ पर नहीं। वे इस समझौते के घोर विरोधी थे, जिसमें उन्हें माफ़ी मिलने से पहले अपने अपराधों का ब्यौरा देना था। उन्होंने एएनसी पर हरारे घोषणापत्र में राजनीतिक कैदियों और निर्वासितों को शामिल करते हुए बिना शर्त, व्यापक माफ़ी की मांग से पीछे हटने का आरोप लगाया। एक व्यक्ति ने कहा, “मदीबा, मैं पूरी ज़िंदगी सरकार से लड़ता रहा हूँ, और अब मुझे उनसे माफ़ी माँगनी पड़ रही है।”
मैं उनकी दलीलों से सहमत था, लेकिन वे अव्यावहारिक थे। हर सैनिक युद्ध के मैदान में अपने दुश्मन को हराना चाहता है, लेकिन इस मामले में ऐसी जीत मुमकिन नहीं थी। अब संघर्ष बातचीत की मेज़ पर था। मैंने तर्क दिया कि जेल में रहकर वे किसी उद्देश्य की पूर्ति नहीं कर रहे थे। वे जेल के अंदर रहने की बजाय बाहर रहकर ज़्यादा उपयोगी साबित हो सकते थे। अंततः, वे सरकार का प्रस्ताव स्वीकार करने के लिए राज़ी हो गए।

* * *

जून की शुरुआत में, मुझे यूरोप और उत्तरी अमेरिका के छह सप्ताह के दौरे पर जाना था। जाने से पहले, मेरी श्री डी क्लर्क से निजी मुलाकात हुई, जो प्रतिबंधों के मुद्दे पर चर्चा करना चाहते थे। दक्षिण अफ्रीका में उनके द्वारा किए गए बदलावों के आधार पर, उन्होंने मुझसे अंतरराष्ट्रीय प्रतिबंधों को जारी रखने की मांग को रोकने का अनुरोध किया। हालांकि हम श्री डी क्लर्क द्वारा किए गए कार्यों से अवगत थे, फिर भी हमारी राय में उन्हें और अधिक करने के लिए मजबूर करने का सबसे अच्छा तरीका प्रतिबंध ही थे। मुझे पता था कि यूरोपीय समुदाय और अन्य देश श्री डी क्लर्क के सुधारों के आधार पर प्रतिबंधों में ढील देने के इच्छुक थे। मैंने श्री डी क्लर्क को समझाया कि जब तक वे रंगभेद को पूरी तरह से समाप्त नहीं कर देते और एक अंतरिम सरकार नहीं बन जाती, तब तक हम अपने समर्थकों से प्रतिबंधों में ढील देने के लिए नहीं कह सकते। हालांकि वे मेरी प्रतिक्रिया से निराश थे, लेकिन उन्हें आश्चर्य नहीं हुआ।
यात्रा के पहले चरण में विनी और मैं पेरिस गए, जहाँ फ्रांस्वा मिटर्रैंड और उनकी आकर्षक पत्नी डैनियल, जो लंबे समय से एएनसी की समर्थक हैं, ने हमारा भव्य स्वागत किया। यूरोप की मुख्य भूमि की यह मेरी पहली यात्रा नहीं थी, लेकिन फिर भी मैं पुरानी दुनिया की खूबसूरती से मंत्रमुग्ध था। हालाँकि मैं रोशनी के शहर की सुंदरता का बखान करने में कोई कसर नहीं छोड़ना चाहता, लेकिन फ्रांस में मेरे प्रवास के दौरान घटी सबसे महत्वपूर्ण घटना यह थी कि सरकार ने आपातकाल को स्थगित करने की घोषणा की। मैं खुश था, लेकिन इस बात से भली-भांति अवगत था कि उन्होंने यह कदम मेरे प्रतिबंधों की मांग को कमजोर करने के लिए यूरोप में मेरे प्रवास के दौरान उठाया था।
स्विट्जरलैंड, इटली और नीदरलैंड में रुकने के बाद, मैं इंग्लैंड गया, जहाँ मैंने ओलिवर और एडिलेड के साथ दो दिन बिताए। मेरा अगला पड़ाव संयुक्त राज्य अमेरिका था, लेकिन दक्षिण अफ्रीका लौटते समय मुझे इंग्लैंड वापस आना था, और उसी दौरान मेरी श्रीमती थैचर से मुलाकात तय थी। शिष्टाचारवश, मैंने जाने से पहले उन्हें फोन किया, और श्रीमती थैचर ने मुझे एक सख्त लेकिन नेक इरादे वाली सलाह दी: उन्होंने कहा कि वह मेरी यात्राओं पर नज़र रख रही थीं और देख रही थीं कि मैं हर दिन कितने कार्यक्रमों में भाग लेता

हूँ। “श्रीमान मंडेला, इससे पहले कि हम किसी भी मुद्दे पर चर्चा करें,” उन्होंने कहा, “मैं आपको चेतावनी देना चाहती हूँ कि आपका कार्यक्रम बहुत व्यस्त है। आपको इसे आधा करना होगा। आपकी आधी उम्र का व्यक्ति भी आप पर पड़ रहे दबाव को पूरा करने में मुश्किल महसूस करेगा। अगर आप इसे जारी रखते हैं, तो आप अमेरिका से ज़िंदा नहीं लौटेंगे। यही मेरी आपको सलाह है।”

मैंने युवावस्था से ही न्यूयॉर्क शहर के बारे में पढ़ा था, और अंततः इसकी विशाल कांच और कंक्रीट की इमारतों के बीच से इसे देखना, जब लाखों-करोड़ों झंडे लहराते हुए नीचे आ रहे थे, एक अद्भुत अनुभव था। बताया गया कि लगभग दस लाख लोगों ने शहर से गुजरते हुए हमारे जुलूस को प्रत्यक्ष रूप से देखा, और रंगभेद विरोधी संघर्ष के प्रति उनका समर्थन और उत्साह देखकर मैं सचमुच अभिभूत हो गया। मैंने हमेशा पढ़ा था कि न्यूयॉर्क एक कठोर हृदय वाला शहर है, लेकिन शहर में अपने पहले पूरे दिन मैंने इसका बिल्कुल विपरीत अनुभव किया।
अगले दिन मैं हार्लेम गया, एक ऐसा इलाका जिसने 1950 के दशक से ही मेरे मन में एक किंवदंती का दर्जा हासिल कर लिया था, जब मैंने सोवेटो के नौजवानों को हार्लेम के फैशनेबल लोगों की नकल करते देखा था। मेरी पत्नी कहती थी कि हार्लेम अमेरिका का सोवेटो है। मैंने यांकी स्टेडियम में एक विशाल जनसमूह को संबोधित किया और उनसे कहा कि दक्षिण अफ़्रीकी और अमेरिकी अश्वेतों को एक अटूट बंधन जोड़ता है, क्योंकि हम सब अफ़्रीका की संतान हैं। मैंने कहा कि इन दोनों के बीच एक ऐसा आत्मीय संबंध है जो डब्ल्यू. ई. बी. डु बोइस, मार्कस गार्वे और मार्टिन लूथर किंग जूनियर जैसे महान अमेरिकियों से प्रेरित है। एक युवा के रूप में, मैं ब्राउन बॉम्बर, जो लुईस को अपना आदर्श मानता था, जिसने न केवल रिंग में अपने विरोधियों का सामना किया, बल्कि रिंग के बाहर भी नस्लवादियों से लड़ा। जेल में, मैंने नस्लवाद, भेदभाव और आर्थिक असमानता के खिलाफ अमेरिकी अश्वेतों के संघर्ष को देखा। हमारे लिए, हार्लेम प्रतिरोध की शक्ति और अश्वेत गौरव की सुंदरता का प्रतीक था। यह बात मुझे कल एक युवक से और भी अच्छे से समझ में आई, जिसने एक टी-शर्ट पहनी हुई थी जिस पर लिखा था, "जन्मजात रूप से काला, अपनी पसंद से गर्वित।" मैंने

कहा, हम प्रकृति से जुड़े हुए हैं, लेकिन हमने अपनी पसंद से एक-दूसरे पर गर्व किया है।
मेम्फिस और बोस्टन की यात्रा के बाद, मैं वाशिंगटन गया, जहाँ मैंने कांग्रेस के संयुक्त सत्र को संबोधित किया और राष्ट्रपति बुश के साथ एक निजी बैठक में भाग लिया। मैंने अमेरिकी कांग्रेस को उसके रंगभेद-विरोधी कानून के लिए धन्यवाद दिया और कहा कि नया दक्षिण अफ्रीका उन मूल्यों पर खरा उतरने की आशा रखता है जिनके आधार पर उन दोनों सदनों का निर्माण हुआ जिनके समक्ष मैंने भाषण दिया। मैंने कहा कि स्वतंत्रता सेनानियों के रूप में, हम जॉर्ज वाशिंगटन, अब्राहम लिंकन और थॉमस जेफरसन जैसे महान व्यक्तियों को जानकर "उनकी तरह कार्य करने के लिए प्रेरित हुए बिना नहीं रह सकते थे।" मैंने प्रतिबंधों पर भी कड़ा संदेश दिया, क्योंकि मुझे पता था कि बुश प्रशासन को लगता है कि अब उन्हें शिथिल करने का समय आ गया है। मैंने कांग्रेस से ऐसा न करने का आग्रह किया।
श्री बुश से मिलने से पहले ही मेरे मन में उनके प्रति सकारात्मक धारणा बन गई थी, क्योंकि जेल से रिहा होने के बाद बधाई देने वाले पहले विश्व नेता वही थे। उसी क्षण से राष्ट्रपति बुश ने मुझे उन चुनिंदा विश्व नेताओं की सूची में शामिल कर लिया, जिनसे वे महत्वपूर्ण मुद्दों पर चर्चा करते थे। व्यक्तिगत रूप से भी वे उतने ही मिलनसार और विचारशील थे, हालांकि सशस्त्र संघर्ष और प्रतिबंधों के मुद्दों पर हमारे विचार स्पष्ट रूप से भिन्न थे। वे ऐसे व्यक्ति थे जिनसे असहमति जताने के बाद भी हाथ मिलाया जा सकता था। संयुक्त राज्य अमेरिका से मैं कनाडा के लिए रवाना हुआ, जहाँ मेरी प्रधानमंत्री मुलरोनी से मुलाकात हुई और मैंने उनकी संसद को भी संबोधित किया। इसके बाद हमें आयरलैंड जाना था, और अटलांटिक महासागर पार करने से पहले, हमारा छोटा विमान आर्कटिक सर्कल के ऊपर स्थित गूज़ बे नामक एक दूरस्थ स्थान पर ईंधन भरने के लिए रुका। मुझे ठंडी हवा में टहलने का मन हुआ, और जब मैं रनवे पर टहल रहा था, तो मैंने हवाई अड्डे की बाड़ के पास कुछ लोगों को खड़े देखा। मैंने एक कनाडाई अधिकारी से पूछा कि वे कौन हैं। उन्होंने कहा, एस्किमो लोग।
अपने बहत्तर वर्षों के जीवन में मैं कभी किसी इनुइट से नहीं मिला था और न ही कभी कल्पना की थी कि मिलूंगा। मैं उस बाड़ की ओर बढ़ा और वहाँ मुझे लगभग एक दर्जन युवा मिले, जिनकी उम्र लगभग 18-19 वर्ष थी। वे हवाई अड्डे पर

इसलिए आए थे क्योंकि उन्होंने सुना था कि हमारा विमान वहाँ रुकने वाला है। मैंने बचपन में इनुइट लोगों के बारे में पढ़ा था (उन्हें "एस्किमो" नाम उपनिवेशवादियों ने दिया था), और नस्लवादी औपनिवेशिक ग्रंथों से मुझे यही धारणा मिली थी कि वे एक पिछड़ी संस्कृति के लोग हैं।
लेकिन इन प्रतिभाशाली युवाओं से बात करते हुए मुझे पता चला कि उन्होंने टेलीविजन पर मेरी रिहाई देखी थी और दक्षिण अफ्रीका की घटनाओं से वे अच्छी तरह वाकिफ थे। उनमें से एक ने कहा, "एएनसी जिंदाबाद!" इनुइट एक आदिवासी समुदाय है जिसे ऐतिहासिक रूप से श्वेत उपनिवेशवादियों द्वारा प्रताड़ित किया गया था; दक्षिण अफ्रीका के अश्वेत लोगों और इनुइट लोगों की दुर्दशा में समानताएं थीं। मुझे सबसे ज्यादा प्रभावित करने वाली बात यह थी कि जेल में बिताए मेरे दशकों के दौरान दुनिया कितनी छोटी हो गई थी; यह मेरे लिए आश्चर्यजनक था कि दुनिया के सबसे दूरदराज इलाके में रहने वाला एक किशोर इनुइट अफ्रीका के दक्षिणी छोर पर एक राजनीतिक कैदी की रिहाई देख सकता था। टेलीविजन ने दुनिया को छोटा कर दिया था, और इस प्रक्रिया में अज्ञानता को मिटाने और लोकतंत्र को बढ़ावा देने का एक बड़ा हथियार बन गया था।

डबलिन के बाद, मैं लंदन गया, जहाँ मेरी श्रीमती थैचर से तीन घंटे की मुलाकात हुई। युवा इनुइट लोगों से बात करते हुए ठंड से मुझे कंपकंपी होने लगी थी। जिस दिन मुझे श्रीमती थैचर से मिलना था, उस दिन सर्दी और बारिश हो रही थी, और जब हम निकल रहे थे, विनी ने मुझसे कहा कि मुझे एक रेनकोट ले लेना चाहिए। हम पहले से ही होटल की लॉबी में थे, और अगर मैं अपना कोट लेने वापस जाता तो हमें देर हो जाती। मैं समय का पाबंद हूँ, न केवल इसलिए कि मैं इसे मिलने वाले व्यक्ति के प्रति सम्मान का प्रतीक मानता हूँ, बल्कि अफ्रीकियों के बारे में पश्चिमी रूढ़िवादिता का खंडन करने के लिए भी, जो उन्हें बेहद देर से आने वाला मानते हैं। मैंने विनी से कहा कि हमारे पास समय नहीं है, और इसके बजाय मैं बारिश में ही खड़ा होकर कुछ बच्चों के लिए ऑटोग्राफ देने लगा। जब तक मैं श्रीमती थैचर के पास पहुँचा, मेरी तबीयत खराब हो गई थी, और बाद में पता चला कि मुझे निमोनिया का हल्का मामला था।

लेकिन इससे हमारी मुलाकात में कोई बाधा नहीं आई, सिवाय इसके कि उन्होंने मुझे एक शिक्षिका की तरह डांटा क्योंकि मैंने उनकी सलाह नहीं मानी और अपना कार्यक्रम छोटा नहीं किया। हालांकि श्रीमती थैचर कई मुद्दों पर, जैसे प्रतिबंधों के मामले में, एएनसी के विपरीत थीं, फिर भी वह हमेशा एक स्पष्टवादी और मददगार महिला थीं। हालांकि उस दिन हमारी मुलाकात में, मैं प्रतिबंधों के मुद्दे पर उनसे जरा भी बात मनवाने में कामयाब नहीं हो सका।

106

युगांडा, केन्या और मोज़ाम्बिक की संक्षिप्त यात्राओं के बाद जुलाई में जब मैं दक्षिण अफ्रीका लौटा, तो मैंने श्री डी क्लर्क से मुलाकात का अनुरोध किया। देश में हिंसा बढ़ती जा रही थी; 1990 में मरने वालों की संख्या पंद्रह सौ से अधिक हो चुकी थी, जो पिछले वर्ष हुई सभी राजनीतिक मौतों से कहीं अधिक थी। अपने सहयोगियों से परामर्श करने के बाद, मुझे लगा कि सामान्यीकरण की प्रक्रिया में तेजी लाना आवश्यक है। हमारा देश खून के बहाव से मर रहा था, और हमें तेजी से आगे बढ़ना था।
जून में श्री डी क्लर्क द्वारा आपातकाल हटाए जाने से वार्ता फिर से शुरू होने की उम्मीद जगी, लेकिन जुलाई में सरकारी सुरक्षा बलों ने एएनसी के लगभग चालीस सदस्यों को गिरफ्तार कर लिया, जिनमें मैक महाराज, प्रवीण गोर्धन, सिफिवे न्यांडा और बिली नायर शामिल थे। उनका दावा था कि ये सभी कम्युनिस्ट पार्टी द्वारा सरकार को उखाड़ फेंकने के लिए रची गई 'ऑपरेशन वूला' नामक साजिश का हिस्सा थे। डी क्लर्क ने मुझसे एक आपातकालीन बैठक बुलाई और मुझे उन दस्तावेजों को पढ़कर सुनाया, जिन्हें उन्होंने छापेमारी में जब्त किए जाने का दावा किया था। मैं यह सुनकर स्तब्ध रह गया क्योंकि मुझे इसके बारे में कुछ भी पता नहीं था।
बैठक के बाद मुझे स्पष्टीकरण चाहिए था, इसलिए मैंने जो स्लोवो को फोन किया। जो ने बताया कि श्री डी क्लर्क द्वारा पढ़े गए अंशों को संदर्भ से हटाकर प्रस्तुत किया गया था और वूला एक निष्क्रिय संगठन था। लेकिन सरकार इस खुलासे का इस्तेमाल एएनसी को एसएसीपी से अलग करने और जो स्लोवो को बातचीत से बाहर रखने के लिए करना चाहती थी। मैं श्री डी क्लर्क के पास वापस गया और उनसे कहा कि उन्हें उनकी अपनी पुलिस ने गुमराह किया है और हमारा एसएसीपी से अलग होने या जो स्लोवो को अपनी वार्ता टीम से हटाने का कोई इरादा नहीं है।
जुलाई के मध्य में, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की निर्धारित बैठक से कुछ समय पहले, जो स्लोवो निजी तौर पर मेरे पास एक प्रस्ताव लेकर आए। उन्होंने सुझाव दिया कि बातचीत की प्रक्रिया को आगे बढ़ाने के लिए अनुकूल माहौल बनाने हेतु हमें स्वेच्छा से सशस्त्र संघर्ष को स्थगित कर देना चाहिए।

उन्होंने कहा कि श्री डी क्लर्क को अपने समर्थकों को यह दिखाना होगा कि उनकी नीति से देश को लाभ हुआ है। मेरी पहली प्रतिक्रिया नकारात्मक थी; मुझे नहीं लगा कि यह सही समय है।
लेकिन जितना मैंने इस बारे में सोचा, उतना ही मुझे एहसास हुआ कि हमें पहल करनी होगी और यही सबसे अच्छा तरीका था। मैंने यह भी महसूस किया कि जो, जिनकी क्रांतिकारी छवि निर्विवाद थी, इस प्रस्ताव को रखने के लिए बिल्कुल सही व्यक्ति थे। उन पर सरकार के बहकावे में आने या नरम पड़ने का आरोप नहीं लगाया जा सकता था। अगले दिन मैंने जो से कहा कि अगर वह राष्ट्रीय समिति में यह विचार रखते हैं, तो मैं उनका समर्थन करूंगा।
अगले दिन जब जो ने राष्ट्रीय संसद (एनईसी) में यह विचार रखा, तो कुछ लोगों ने इसका कड़ा विरोध किया और दावा किया कि हम डी क्लर्क के समर्थकों को इनाम दे रहे हैं, अपने लोगों को नहीं। लेकिन मैंने प्रस्ताव का बचाव करते हुए कहा कि सशस्त्र संघर्ष का उद्देश्य हमेशा सरकार को बातचीत की मेज पर लाना रहा है, और अब हमने ऐसा कर दिखाया है। मैंने तर्क दिया कि निलंबन को कभी भी वापस लिया जा सकता है, लेकिन अपनी सद्भावना साबित करना आवश्यक था। कई घंटों की मशक्कत के बाद, हमारी बात मान ली गई।
यह एएनसी के भीतर एक विवादास्पद कदम था। हालांकि एमके सक्रिय नहीं थे, फिर भी सशस्त्र संघर्ष का प्रभाव कई लोगों के लिए बहुत मायने रखता था। भले ही इसे केवल एक अलंकारिक साधन के रूप में इस्तेमाल किया गया हो, सशस्त्र संघर्ष इस बात का संकेत था कि हम सक्रिय रूप से दुश्मन से लड़ रहे हैं। परिणामस्वरूप, ज़मीनी स्तर पर हासिल की गई उपलब्धियों की तुलना में इसकी लोकप्रियता कहीं अधिक थी।
6 अगस्त को प्रिटोरिया में, एएनसी और सरकार ने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए, जिसे प्रिटोरिया मिनट के नाम से जाना गया। इस समझौते में हमने सशस्त्र संघर्ष को स्थगित करने पर सहमति जताई। जैसा कि मैंने अपने समर्थकों से बार-बार कहा: हमने सशस्त्र कार्रवाई स्थगित की, हमने सशस्त्र संघर्ष समाप्त नहीं किया। समझौते में राजनीतिक कैदियों की रिहाई और कुछ प्रकार के मुआवजे देने की तारीखें भी निर्धारित की गईं। मुआवजे की प्रक्रिया मई 1991 तक पूरी होनी थी, और सरकार ने आंतरिक सुरक्षा अधिनियम की समीक्षा करने पर भी सहमति व्यक्त की।

* * *

शांति प्रक्रिया में बाधा डालने वाले सभी मुद्दों में से, देश में हिंसा का बढ़ना सबसे विनाशकारी और निराशाजनक था। हम सभी को उम्मीद थी कि बातचीत शुरू होने के साथ ही हिंसा कम हो जाएगी। लेकिन वास्तव में इसका ठीक उल्टा हुआ। पुलिस और सुरक्षा बल बहुत कम गिरफ्तारियां कर रहे थे। बस्तियों के लोग उन पर हिंसा को बढ़ावा देने और उसमें सहयोग करने का आरोप लगा रहे थे। मुझे यह बात और भी स्पष्ट होती जा रही थी कि सुरक्षा बलों की मिलीभगत थी। कई घटनाओं से मुझे यह संकेत मिला कि पुलिस हिंसा को शांत करने के बजाय उसे और भड़का रही थी।
अगले कुछ महीनों में, मैंने जोहान्सबर्ग के दक्षिण में हिंसाग्रस्त वाल ट्रायंगल के सभी कस्बों का दौरा किया, घायल लोगों और शोक संतप्त परिवारों को सांत्वना दी। बार-बार मुझे एक ही कहानी सुनने को मिली: पुलिस और रक्षा बल इलाके में अस्थिरता फैला रहे थे। मुझे बताया गया कि एक दिन पुलिस ने एक इलाके में हथियार जब्त किए, और फिर अगले दिन इंकाथा बलों ने उन्हीं चुराए गए हथियारों से हमारे लोगों पर हमला किया। हमने ऐसी कहानियां भी सुनीं कि पुलिस इंकाथा सदस्यों को उनकी बैठकों और हमलों में सुरक्षा प्रदान कर रही थी।
सितंबर में, मैंने एक भाषण दिया जिसमें मैंने कहा कि हिंसा के पीछे एक गुप्त शक्ति का हाथ है और मैंने यह भी संकेत दिया कि एक रहस्यमय "तीसरी शक्ति" मौजूद है, जिसमें सुरक्षा बलों के बागी लोग शामिल हैं जो वार्ता को बाधित करने का प्रयास कर रहे हैं। मैं यह नहीं बता सकता था कि तीसरी शक्ति के सदस्य कौन थे, क्योंकि मैं उन्हें स्वयं नहीं जानता था, लेकिन मुझे यकीन था कि वे मौजूद थे और एएनसी और मुक्ति संघर्ष को निशाना बनाने में वे बेहद प्रभावी थे।
दो विशिष्ट घटनाओं में व्यक्तिगत रूप से शामिल होने के बाद मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचा। जुलाई 1990 में, एएनसी को सूचना मिली कि इंकथा फ्रीडम पार्टी से संबंधित छात्रावास में रहने वाले लोग 22 जुलाई को वाल ट्रायंगल के सेबोकेंग टाउनशिप में एएनसी सदस्यों पर एक बड़ा हमला करने की योजना बना रहे हैं। हमने अपने वकीलों के माध्यम से कानून और व्यवस्था मंत्री, पुलिस आयुक्त और क्षेत्रीय आयुक्त को सूचित किया, उन्हें आसन्न

हमलों के बारे में चेतावनी दी और उनसे उचित कार्रवाई करने का आग्रह किया। हमने पुलिस से अनुरोध किया कि वे सशस्त्र इंकथा सदस्यों को इंकथा रैली में शामिल होने के लिए टाउनशिप में प्रवेश करने से रोकें।
22 जुलाई को, पुलिस की सुरक्षा में हथियारों से लैस इंकथा सदस्यों से भरी बसें दिनदहाड़े सेबोकेंग में घुस गईं। एक रैली आयोजित की गई, जिसके बाद हथियारबंद लोगों ने हिंसक रूप से हमला किया और लगभग तीस लोगों की बेरहमी से हत्या कर दी। मैंने अगले दिन उस इलाके का दौरा किया और ऐसे दृश्य देखे जो मैंने पहले कभी नहीं देखे थे और न ही दोबारा कभी देखना चाहूँगा। मुर्दाघर में उन लोगों के शव थे जिनकी बेरहमी से हत्या कर दी गई थी; एक महिला के दोनों स्तन कुल्हाड़ी से काट दिए गए थे। ये हत्यारे जो भी थे, वे जानवर थे।
मैंने अगले दिन श्री डी क्लर्क से मिलने का अनुरोध किया। जब मैं उनसे मिला, तो मैंने गुस्से में उनसे स्पष्टीकरण मांगा। मैंने उनसे कहा, “आपको पहले ही चेतावनी दी गई थी, फिर भी आपने कुछ नहीं किया। ऐसा क्यों? गिरफ्तारी क्यों नहीं हुई? पुलिस हाथ पर हाथ धरे क्यों बैठी रही?” मैंने उनसे कहा कि किसी भी अन्य देश में, जहां इतनी बड़ी त्रासदी होती है, जब तीस से अधिक लोग मारे जाते हैं, तो राष्ट्राध्यक्ष शोक संदेश जरूर जारी करते हैं, लेकिन उन्होंने एक शब्द भी नहीं कहा। मेरे शब्दों का उनके पास कोई जवाब नहीं था। मैंने डी क्लर्क से स्पष्टीकरण मांगा, लेकिन उन्होंने कभी नहीं दिया।

दूसरी घटना नवंबर में घटी, जब इंकाथा सदस्यों का एक समूह जोहान्सबर्ग के पूर्व में जर्मिस्टन शहर के बाहर स्थित ज़ोनकिज़िज़्वे (ज़ुलू भाषा में "वह स्थान जहाँ सभी राष्ट्रों का स्वागत है") नामक एक झुग्गी बस्ती में घुस गया और एएनसी के लोगों को वहाँ से खदेड़ दिया, जिसमें कई लोगों की हत्या कर दी गई। इसके बाद इंकाथा सदस्यों ने खाली पड़ी झोपड़ियों पर कब्ज़ा कर लिया और सारी संपत्ति ज़ब्त कर ली। इलाके के निवासियों ने बताया कि इंकाथा सदस्यों के साथ पुलिस भी थी। एक बार फिर, इस त्रासदी के बाद भी पुलिस और सरकार ने कोई कार्रवाई नहीं की। दक्षिण अफ्रीका में अश्वेतों का जीवन इतना सस्ता कभी नहीं हुआ था।

एक बार फिर, मेरी मुलाकात श्री डी क्लर्क और उनके कानून एवं व्यवस्था मंत्री एड्रियान व्लोक से हुई। मैंने एक बार फिर श्री डी क्लर्क से पूछा कि इन अपराधों के बाद पुलिस ने कोई कार्रवाई क्यों नहीं की। मैंने कहा कि हमलावरों को आसानी से पकड़ा जा सकता है क्योंकि वे अब उन लोगों की झोपड़ियों में रह रहे हैं जिन्हें उन्होंने मार डाला था। श्री डी क्लर्क ने श्री व्लोक से स्पष्टीकरण मांगा और फिर व्लोक ने बड़े ही असभ्य लहजे में मुझसे पूछा कि ये झोपड़ियां किसकी संपत्ति पर बनी हैं, जिसका मतलब यह था कि ये लोग अतिक्रमणकारी हैं और इसलिए उनके कोई अधिकार नहीं हैं। दरअसल, मैंने उन्हें बताया कि यह जमीन स्थानीय अधिकारियों द्वारा इन लोगों को उपलब्ध कराई गई थी। उनका रवैया उन कई अफ्रीकन लोगों जैसा था जो मानते हैं कि अश्वेत जनजातियां अनादिकाल से एक-दूसरे को मारती आ रही हैं। श्री डी क्लर्क ने एक बार फिर मुझसे कहा कि वे जांच करेंगे और जवाब देंगे, लेकिन उन्होंने कभी ऐसा नहीं किया।

इसी दौरान सरकार ने एक और कदम उठाया जिससे स्थिति और भी बिगड़ गई। उसने एक नियम लागू किया जिसके तहत ज़ुलुओं को नेटाल और अन्य जगहों पर राजनीतिक रैलियों और सभाओं में तथाकथित पारंपरिक हथियार ले जाने की अनुमति मिल गई। ये हथियार, जैसे भाले (अस्सेगाई) और लकड़ी के डंडे (भारी लकड़ी के सिरे वाले डंडे), वास्तव में वही हथियार हैं जिनसे इंकाथा सदस्यों ने एएनसी सदस्यों की हत्या की थी। इससे मुझे श्री डी क्लर्क के शांतिपूर्ण इरादों पर गहरा संदेह हुआ।
वार्ताओं का विरोध करने वालों को हिंसा से फायदा हुआ, जो सरकार और एएनसी के बीच समझौते की दिशा में बढ़ते ही भड़क उठती थी। इन ताकतों ने एएनसी और इंकाथा के बीच युद्ध छेड़ने की कोशिश की, और मेरा मानना है कि इंकाथा के कई सदस्यों ने भी इसमें मिलीभगत की। श्री डी क्लर्क समेत सरकार के कई लोगों ने जानबूझकर अनदेखी की या अपनी नाक के नीचे चल रही घटनाओं को नजरअंदाज किया। हमें इसमें कोई संदेह नहीं था कि पुलिस और सुरक्षा बलों के उच्च अधिकारियों ने थर्ड फोर्स की मदद की थी। बाद में अखबारों में आई रिपोर्टों

से ये संदेह पुष्ट हो गए, जिनमें खुलासा हुआ था कि दक्षिण अफ्रीकी पुलिस ने गुपचुप तरीके से इंकाथा को आर्थिक सहायता दी थी।
हिंसा के लगातार बढ़ते जाने के कारण, मुझे सशस्त्र संघर्ष को स्थगित करने के अपने निर्णय पर पुनर्विचार करना पड़ा। एएनसी के कई लोग बेचैन थे, और सितंबर में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में मैंने कहा कि जारी हिंसा के कारण एक बार फिर हथियार उठाना आवश्यक हो सकता है। स्थिति बेहद गंभीर लग रही थी, और सरकार के साथ जो भी समझौता हुआ था, वह व्यर्थ होता दिख रहा था।

107

दिसंबर 1990 में ओलिवर तीन दशकों के निर्वासन के बाद दक्षिण अफ्रीका लौट आए। उनका पास होना बहुत सुखद था। वे जोहान्सबर्ग में आयोजित एएनसी के एक परामर्श सम्मेलन में शामिल होने लौटे थे, जिसमें देश-विदेश के पैंतालीस विभिन्न क्षेत्रों से पंद्रह सौ से अधिक प्रतिनिधियों ने भाग लिया था। बैठक में मैंने ओलिवर को श्रद्धांजलि अर्पित करते हुए कहा कि उन्होंने एएनसी के सबसे कठिन समय में उसका नेतृत्व किया और कभी भी उसकी ऊर्जा को बुझने नहीं दिया। अब, उन्होंने हमें एक उज्ज्वल और आशापूर्ण भविष्य की दहलीज पर ला खड़ा किया है। मेरे सत्ताईस वर्षों के कारावास के दौरान, ओलिवर ही थे जिन्होंने एएनसी को बचाया और फिर उसे एक शक्तिशाली और प्रभावशाली अंतरराष्ट्रीय संगठन के रूप में स्थापित किया। उन्होंने तब कमान संभाली जब इसके अधिकांश नेता या तो जेल में थे या निर्वासन में। वे एक सिपाही, एक राजनयिक और एक राजनेता थे।
हालांकि मैंने सरकार द्वारा चलाए जा रहे सुनियोजित प्रति-क्रांतिकारी अभियानों की आलोचना की, लेकिन ओलिवर के भाषण ने हंगामा खड़ा कर दिया। उन्होंने एक विवादास्पद भाषण से बैठक की शुरुआत की, जिसमें उन्होंने हमारी प्रतिबंध नीति पर पुनर्विचार करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि अगर एएनसी प्रतिबंधों को कम करने की पहल नहीं करती है, तो उसे "अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर हाशिए पर धकेल दिया जाएगा"। यूरोपीय समुदाय पहले ही प्रतिबंधों को कम करना शुरू कर चुका था। पश्चिमी देश, विशेष रूप से यूनाइटेड किंगडम और संयुक्त राज्य अमेरिका, श्री डी क्लर्क को उनके सुधारों के लिए पुरस्कृत करना चाहते थे, यह मानते हुए कि इससे उन्हें और आगे बढ़ने का प्रोत्साहन मिलेगा। हमें लगा कि यह गलत रणनीति है, लेकिन हमें अंतर्राष्ट्रीय वास्तविकताओं को स्वीकार करना पड़ा।
हालांकि ओलिवर के भाषण पर राष्ट्रीय संसद (एनईसी) में चर्चा हुई और उसे मंजूरी मिल गई थी, फिर भी उनके प्रस्ताव का एएनसी के उग्रवादियों ने कड़ा विरोध किया और जोर देकर कहा कि प्रतिबंधों को अपरिवर्तित रखा जाना चाहिए।
सम्मेलन ने प्रतिबंध नीति को यथावत बनाए रखने का निर्णय लिया।

मुझ पर भी उन लोगों ने आरोप लगाए कि वार्ताकार जमीनी स्तर के लोगों से कटे हुए हैं और हमने अपने लोगों की बजाय नेशनल पार्टी के नेताओं के साथ ज्यादा समय बिताया। सम्मेलन में मेरी आलोचना इस बात के लिए भी की गई कि मैं "निजी कूटनीति" में लगा हुआ था और संगठन के आम कार्यकर्ताओं को जानकारी नहीं दे रहा था। एक जन संगठन के नेता के रूप में, जनता की बात सुनना जरूरी है, और मैं मानता हूँ कि बातचीत की प्रगति के बारे में पूरे संगठन को सूचित न करने में हमसे चूक हुई थी। लेकिन मैं सरकार के साथ हमारी बातचीत की संवेदनशीलता को भी जानता था; हमारे द्वारा किए गए किसी भी समझौते का कुछ हिस्सा उनकी गोपनीयता पर निर्भर था। हालाँकि मैंने आलोचना स्वीकार की, लेकिन मेरा मानना था कि हमारे पास उसी रास्ते पर आगे बढ़ने के अलावा कोई विकल्प नहीं था। मैं जानता था कि मुझे अधिक समावेशी होना होगा, अधिक लोगों को हमारी प्रगति के बारे में जानकारी देनी होगी, और मैंने इसी बात को ध्यान में रखते हुए आगे कदम बढ़ाया।

हर दिन, हर सप्ताहांत, अखबार हमारे समुदायों और कस्बों में होने वाली नई और खूनी हिंसा की खबरों से भरे रहते थे। यह स्पष्ट था कि हिंसा देश की सबसे बड़ी समस्या थी। नेटाल और जोहान्सबर्ग के आसपास के रीफ क्षेत्र के कई समुदायों में, अपराध, राजनीतिक प्रतिद्वंद्विता, पुलिस की बर्बरता और संदिग्ध हत्यारा गिरोहों के खतरनाक मिश्रण ने जीवन को क्रूर और असहनीय बना दिया था। जब तक हिंसा पर काबू नहीं पाया जाता, एक नई व्यवस्था की ओर प्रगति असमान और अनिश्चित बनी रहेगी।
हिंसा के दुष्चक्र को रोकने के प्रयास में, मैंने चीफ बुथेलेज़ी से संपर्क करके एक बैठक का आयोजन किया। हमारी मुलाकात जनवरी में डरबन के रॉयल होटल में हुई। चीफ बुथेलेज़ी ने पहले उपस्थित प्रतिनिधियों और मीडिया को संबोधित किया और इस प्रक्रिया में उन्होंने घावों को भरने के बजाय उन्हें फिर से हरा कर दिया। उन्होंने एएनसी द्वारा उन पर किए गए मौखिक हमलों का ब्यौरा दिया और एएनसी की वार्ता संबंधी मांगों की आलोचना की। जब मेरी बोलने की बारी आई, तो मैंने उनकी टिप्पणियों का जवाब न देते हुए, जेल से मेरी रिहाई सुनिश्चित करने के लिए वर्षों से किए गए उनके प्रयासों के लिए

उन्हें धन्यवाद दिया। मैंने हमारे लंबे संबंधों का उल्लेख किया और उन अनेक बातों पर प्रकाश डाला जो हमारे दोनों संगठनों को विभाजित करने के बजाय एकजुट करती हैं।
हमारी निजी बातचीत में प्रगति हुई और चीफ बुथेलेज़ी और मैंने एक समझौते पर हस्ताक्षर किए जिसमें हमारे दोनों संगठनों के आचरण को लेकर आचार संहिता शामिल थी। यह एक उचित समझौता था और मुझे लगता है कि अगर इसे लागू किया गया होता तो इससे खून-खराबा रोकने में वाकई मदद मिलती। लेकिन जहाँ तक मुझे पता है, इंकाथा ने समझौते को लागू करने का कोई प्रयास नहीं किया और हमारी तरफ से भी उल्लंघन हुए।
हमारे दोनों संगठनों के बीच हिंसा जारी रही। हर महीने सैकड़ों लोग मारे जा रहे थे। मार्च में, इंकथा के सदस्यों ने जोहान्सबर्ग के उत्तर में एलेक्जेंड्रा टाउनशिप में हमला किया, जिसमें तीन दिनों तक चली लड़ाई में पैंतालीस लोग मारे गए। फिर भी, किसी को गिरफ्तार नहीं किया गया।
हिंसा जारी रहने पर मैं चुपचाप नहीं बैठ सकता था, इसलिए मैंने चीफ बुथेलेज़ी से दोबारा मुलाकात की कोशिश की। अप्रैल में मैं डरबन गया और हमने फिर से कड़े बयान दिए और एक और समझौते पर हस्ताक्षर किए। लेकिन फिर से, स्याही सूखते ही खून से लथपथ हो गई। मुझे पहले से कहीं ज़्यादा यकीन हो गया था कि सरकार ही इस हिंसा के पीछे है और हिंसा बातचीत में बाधा डाल रही है। श्री डी क्लर्क की प्रतिक्रिया न देने से हमारे अपने संबंध खतरे में पड़ गए।
अप्रैल में, राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की दो दिवसीय बैठक में, मैंने श्री डी क्लर्क के बारे में अपनी शंकाओं पर चर्चा की। राष्ट्रीय कार्यकारी समिति का मानना था कि हिंसा के पीछे सरकार का हाथ था और हिंसा वार्ता के माहौल को बिगाड़ रही थी। सरकार को लिखे एक खुले पत्र में, हमने रक्षा मंत्री मैग्नस मालन और कानून एवं व्यवस्था मंत्री एड्रियान व्लोक को बर्खास्त करने; सार्वजनिक स्थानों पर पारंपरिक हथियारों को ले जाने पर प्रतिबंध लगाने; प्रवासी कामगारों के छात्रावासों को चरणबद्ध तरीके से बंद करने, जहाँ जोहान्सबर्ग के आसपास की बस्तियों में इंकाथा के कई सदस्य रहते थे; सरकार की गुप्त आतंकवाद विरोधी इकाइयों को भंग करने; और सुरक्षा बलों द्वारा दुर्व्यवहार की शिकायतों की जांच के लिए एक स्वतंत्र आयोग की नियुक्ति की मांग की।

हमने सरकार को मई तक हमारी मांगें पूरी करने का समय दिया। श्री डी क्लर्क ने जवाब में मई में हिंसा पर एक बहुदलीय सम्मेलन बुलाने का आह्वान किया, लेकिन मैंने कहा कि यह व्यर्थ है क्योंकि सरकार को ठीक-ठीक पता है कि हिंसा को समाप्त करने के लिए उसे क्या करना है। मई में, हमने सरकार के साथ बातचीत स्थगित करने की घोषणा की।

जुलाई 1991 में, एएनसी ने तीस वर्षों में दक्षिण अफ्रीका के भीतर अपना पहला वार्षिक सम्मेलन आयोजित किया। सम्मेलन में 2,244 मतदान प्रतिनिधियों ने भाग लिया, जिन्हें देश और विदेश में एएनसी की शाखाओं में लोकतांत्रिक रूप से चुना गया था। सम्मेलन में मुझे निर्विरोध एएनसी का अध्यक्ष चुना गया। सिरिल रामाफोसा महासचिव चुने गए, जो इस बात का प्रमाण था कि नेतृत्व की मशाल एक पुरानी पीढ़ी से एक युवा पीढ़ी को सौंपी जा रही थी। सिरिल, जिनसे मेरी मुलाकात जेल से रिहा होने के बाद ही हुई, एएनसी के उल्लेखनीय नेताओं की लंबी परंपरा के योग्य उत्तराधिकारी थे। वे संभवतः एएनसी के भीतर सबसे कुशल वार्ताकार थे, एक ऐसा कौशल जिसे उन्होंने राष्ट्रीय खान श्रमिक संघ के महासचिव के रूप में निखारा था।
अपने भाषण में मैंने मुझे मिले इस महान सम्मान के लिए आभार व्यक्त किया और बताया कि मेरे पूर्ववर्ती ओलिवर टैम्बो के पदचिन्हों पर चलना कितना कठिन होगा। यद्यपि उस समय हम सरकार से मतभेद में थे, फिर भी मैंने कहा कि वार्ता अपने आप में एक जीत थी। सरकार का वार्ता में शामिल होना ही इस बात का संकेत था कि उनमें रंगभेद को कायम रखने की शक्ति नहीं बची थी। मैंने दोहराया कि यह प्रक्रिया सुगम नहीं होगी, क्योंकि हम ऐसे राजनेताओं से निपट रहे हैं जो सत्ता से बाहर होने के लिए वार्ता नहीं करना चाहते। “यह बात स्पष्ट रूप से समझनी चाहिए कि संघर्ष अभी समाप्त नहीं हुआ है, और वार्ता स्वयं संघर्ष का एक रंगमंच है, जो किसी भी अन्य प्रकार के संघर्ष की तरह प्रगति और असफलताओं के अधीन है।”
लेकिन बातचीत को टाला नहीं जा सकता था। किसी भी कारण से रंगभेद की पीड़ा को लंबा खींचना हमारे हित में नहीं था। मैंने कहा कि जल्द से जल्द एक अंतरिम सरकार का गठन करना आवश्यक था।

सम्मेलन ने एएनसी के सामने मौजूद सबसे महत्वपूर्ण और चुनौतीपूर्ण कार्यों में से एक को रेखांकित किया: एक अवैध भूमिगत मुक्ति आंदोलन को एक वैध जन राजनीतिक दल में बदलना। तीस वर्षों तक, एएनसी दक्षिण अफ्रीका में गुप्त रूप से कार्य करती रही; वे आदतें और तकनीकें गहराई से समाई हुई थीं। हमें सबसे छोटी स्थानीय शाखा से लेकर राष्ट्रीय कार्यकारिणी तक, पूरे संगठन का पुनर्निर्माण करना था। और हमें यह सब असाधारण परिवर्तन के दौर में कुछ ही महीनों के भीतर करना था।
एएनसी और कम्युनिस्ट पार्टी के नेतृत्व का एक बड़ा हिस्सा निर्वासन में था। उनमें से अधिकांश जुलाई में सम्मेलन के लिए लौटे थे। वे वर्तमान दक्षिण अफ्रीका से अपरिचित थे; यह उनके साथ-साथ मेरे लिए भी एक नया देश था। हालांकि, यूनाइटेड डेमोक्रेटिक फ्रंट और सीओएसएटीयू के युवा नेताओं का एक असाधारण समूह देश में ही रुका हुआ था, जो राजनीतिक स्थिति को उस तरह से जानते थे जैसा हम नहीं जानते थे। ये संगठन 1980 के दशक के दौरान दक्षिण अफ्रीका के भीतर एएनसी के प्रतिनिधि के रूप में काम कर रहे थे। एएनसी को इन पुरुषों और महिलाओं को भी संगठन में शामिल करना पड़ा।
हमें न केवल रसद संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ा, बल्कि दार्शनिक समस्याओं का भी। जब आप किसी साझा शत्रु के विरुद्ध लड़ रहे हों तो आंदोलन को एकजुट रखना अपेक्षाकृत आसान होता है। लेकिन जब शत्रु वार्ता की मेज पर ही हो तो नीति बनाना बिलकुल अलग बात है। नई एएनसी में हमें न केवल कई अलग-अलग समूहों को, बल्कि कई अलग-अलग दृष्टिकोणों को भी एकीकृत करना पड़ा। हमें वार्ता के विचार के इर्द-गिर्द संगठन को एकजुट करना आवश्यक था। कानूनी गतिविधियों के पहले सत्रह महीनों में, एएनसी ने 700,000 सदस्य भर्ती किए थे। यह एक प्रभावशाली संख्या थी, लेकिन आत्मसंतुष्टि की कोई गुंजाइश नहीं थी। इन सदस्यों में से ग्रामीण क्षेत्रों से आने वालों की संख्या अनुपातहीन रूप से कम थी, क्योंकि एएनसी ऐतिहासिक रूप से इन्हीं क्षेत्रों में सबसे कमजोर रही थी। उसी समय, नेशनल पार्टी ने गैर-श्वेत लोगों के लिए अपने दरवाजे खोल दिए थे और असंतुष्ट अश्वेतों और भारतीयों को भर्ती करने में सक्रिय रूप से जुटी हुई थी।

मेरी जेल से रिहाई के बाद से ही राज्य ने मेरी पत्नी को बदनाम करने का अभियान जारी रखा था। डाइपक्लोफ स्थित घर में ठहरे चार युवकों के कथित अपहरण और उनमें से एक की मौत के बाद, विनी को पहले कानाफूसी के ज़रिए बदनाम किया गया और फिर उस पर अपहरण के चार और मारपीट का एक आरोप लगाया गया। उसके चरित्र पर लगातार लगाए जा रहे आरोपों के कारण विनी और मैं दोनों ही चाहते थे कि उसे अदालत में अपना पक्ष रखने और आरोपों से अपनी बेगुनाही साबित करने का मौका मिले।
मेरी पत्नी का औपचारिक मुकदमा फरवरी में जोहान्सबर्ग के रैंड सुप्रीम कोर्ट में शुरू हुआ। मैं पहले दिन सुनवाई में उपस्थित था, जैसा कि एएनसी के कई वरिष्ठ नेता भी थे, और मैं यथासंभव बार-बार सुनवाई में शामिल होता रहा। मैंने ऐसा अपनी पत्नी का समर्थन करने और उसकी निर्दोषता पर अपना विश्वास दिखाने के लिए किया। जॉर्ज बिज़ोस ने कुशलतापूर्वक विनी का बचाव किया और यह साबित करने का प्रयास किया कि विनी का अपहरण या मारपीट में कोई हाथ नहीं था।
साढ़े तीन महीने बाद, अदालत ने उसे अपहरण और हमले में सहायक होने का दोषी पाया। हालांकि, न्यायाधीश ने यह स्वीकार किया कि उसने स्वयं किसी भी हमले में भाग नहीं लिया था। उसे छह साल की जेल की सजा सुनाई गई, लेकिन अपील लंबित रहने तक उसे जमानत पर रिहा कर दिया गया। जहाँ तक मेरा सवाल है, फैसला चाहे जो भी हो, उसकी निर्दोषता पर कोई संदेह नहीं था।

108

20 दिसंबर 1991 को, डेढ़ साल से अधिक समय तक चली वार्ताओं के बाद, वास्तविक वार्ता शुरू हुई: CODESA — लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के लिए सम्मेलन — सरकार, एएनसी और अन्य दक्षिण अफ्रीकी दलों के बीच पहला औपचारिक वार्ता मंच था। हमारी पिछली सभी द्विपक्षीय चर्चाएँ इन वार्ताओं की नींव थीं, जो जोहान्सबर्ग के जान स्मट्स हवाई अड्डे के पास स्थित एक आधुनिक प्रदर्शनी केंद्र, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में हुईं। CODESA में दक्षिण अफ्रीकी राजनीति के विभिन्न पहलुओं को कवर करने वाले अठारह प्रतिनिधिमंडल, साथ ही संयुक्त राष्ट्र, राष्ट्रमंडल, यूरोपीय समुदाय और अफ्रीकी एकता संगठन के पर्यवेक्षक शामिल थे। दक्षिण अफ्रीका में एक ही स्थान पर एकत्रित हुए राजनीतिक समूहों का यह अब तक का सबसे व्यापक प्रतिनिधित्व था।
इस तरह की वार्ताओं का शुभारंभ एक ऐतिहासिक अवसर था, निस्संदेह 1909 के बाद से यह सबसे महत्वपूर्ण संवैधानिक सम्मेलन था, जब ब्रिटिश उपनिवेश केप और नेटाल तथा पूर्व बोअर गणराज्य ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री स्टेट ने एक संघ बनाने पर सहमति व्यक्त की थी। बेशक, वह सम्मेलन लोकतंत्र के लिए सम्मान की बात नहीं थी, बल्कि उसके साथ विश्वासघात था, क्योंकि उस दिन उपस्थित प्रतिनिधियों में से कोई भी अश्वेत नहीं था। 1991 में, उनमें से अधिकांश अश्वेत थे।
सिरिल रामाफोसा के नेतृत्व में हमारे योजना प्रतिनिधिमंडल में जो स्लोवो और वल्ली मूसा भी शामिल थे। यह प्रतिनिधिमंडल चुनाव, संविधान, संविधान सभा और अंतरिम सरकार जैसे मुद्दों पर सरकार के साथ साप्ताहिक चर्चा कर रहा था। गृह सरकारों सहित बीस अलग-अलग दलों के प्रतिनिधियों ने सम्मेलन के लिए बुनियादी नियमों पर पहले ही सहमति जता दी थी।
वार्ता के आरंभ में जो आशावाद था, वह कुछ बाधाओं से भी कम नहीं हुआ। पीएसी ने एएनसी और नेशनल पार्टी पर बहुजातीय सरकार बनाने के लिए मिलीभगत का आरोप लगाते हुए वार्ता का बहिष्कार करने का निर्णय लिया। यह घटना तब घटी जब एक महीने पहले ही एएनसी, पीएसी और अज़ानियन पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन के गठबंधन, पैट्रियटिक फ्रंट का गठन हुआ था, जिसमें साझा लक्ष्यों की घोषणा की गई थी। पीएसी लोकतांत्रिक चुनावों से भयभीत था क्योंकि वह जानता था कि ऐसे मतदान

से उसका कम जनसमर्थन उजागर हो जाएगा। चीफ बुथेलेज़ी ने भी इस आधार पर वार्ता का बहिष्कार किया कि उन्हें तीन प्रतिनिधिमंडल भेजने की अनुमति नहीं दी गई: इंकाथा, क्वाज़ुलू सरकार और राजा ज़्वेलिथिनी के लिए। हमने तर्क दिया कि राजा को राजनीति से ऊपर होना चाहिए, और यदि उन्हें शामिल किया जाता है तो दक्षिण अफ्रीका की प्रत्येक जनजाति को अपने सर्वोच्च प्रमुख को भेजने का अधिकार होना चाहिए।
वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में न केवल इतिहास का बल्कि आत्मनिर्भरता का भी अहसास था। जिम्बाब्वे और अंगोला जैसे अफ्रीकी देशों में नई व्यवस्थाओं से पहले हुई वार्ताओं के विपरीत, जिनमें बाहरी मध्यस्थों की आवश्यकता पड़ी थी, दक्षिण अफ्रीका में हम अपने मतभेदों को आपस में ही सुलझा रहे थे। श्री डी क्लर्क ने लोकतांत्रिक आधार पर एक अंतरिम, "सत्ता-साझाकरण" सरकार की आवश्यकता पर जोर दिया। वार्ता में नेशनल पार्टी के मुख्य प्रतिनिधि, डावी डी विलियर्स ने तो रंगभेद के लिए माफी भी मांगी।
अपने आरंभिक भाषण में मैंने कहा था कि CODESA के उदय के साथ ही दक्षिण अफ्रीका में प्रगति अब अपरिवर्तनीय हो गई है। मैंने कहा कि सरकारें अपना अधिकार और वैधता शासितों की सहमति से प्राप्त करती हैं, और हम ऐसी ही एक वैध सत्ता बनाने के लिए एकत्रित हुए हैं। मैंने कहा कि CODESA एक निर्वाचित विधानसभा की ओर मार्ग का आरंभ है जो एक नया संविधान लिखेगी, और मुझे कोई कारण नहीं दिखता कि ऐसी संविधान सभा के लिए चुनाव 1992 में क्यों नहीं हो सकते। मैंने सरकार से आग्रह किया कि वह राष्ट्रीय एकता की एक अंतरिम सरकार का गठन करे जो ऐसे चुनाव की देखरेख करे, राज्य मीडिया और सेना को नियंत्रित करे, और सामान्य रूप से एक नए, गैर-नस्लीय, लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका में परिवर्तन की निगरानी करे।
सम्मेलन के पहले दिन, नेशनल पार्टी और एएनसी सहित भाग लेने वाली अधिकांश पार्टियों ने एक संकल्प घोषणापत्र का समर्थन किया, जिसमें सभी पार्टियों ने एक अविभाजित दक्षिण अफ्रीका का समर्थन करने की प्रतिबद्धता जताई, जिसका सर्वोच्च कानून एक संविधान होगा और जिसकी रक्षा एक स्वतंत्र न्यायपालिका करेगी। देश की कानूनी व्यवस्था कानून के समक्ष समानता की गारंटी देगी, और नागरिक स्वतंत्रता की रक्षा के लिए एक अधिकार विधेयक तैयार किया जाएगा। संक्षेप में, एक साझा मतदाता सूची पर सार्वभौमिक वयस्क मताधिकार पर आधारित एक बहुदलीय लोकतंत्र होगा। जहाँ तक हमारा संबंध था, यह

एक नए दक्षिण अफ्रीका के लिए न्यूनतम स्वीकार्य संवैधानिक सीमा थी। इंकथा ने इस आधार पर हस्ताक्षर करने से इनकार कर दिया कि "अविभाजित" दक्षिण अफ्रीका वाक्यांश का अर्थ है कि संघीय प्रणाली स्वीकार्य नहीं है। सम्मेलन में पाँच कार्यकारी समूहों का गठन किया गया, जिनकी बैठकें 1992 की शुरुआत में CODESA के दूसरे दौर की तैयारी के लिए निर्धारित की गईं, जो मई 1992 में होने वाला था। ये समूह स्वतंत्र राजनीतिक वातावरण के निर्माण, होमलैंड्स के भविष्य, दक्षिण अफ्रीकी ब्रॉडकास्टिंग कॉर्पोरेशन के पुनर्गठन, संघवाद जैसे विभिन्न संवैधानिक सिद्धांतों की समीक्षा और एक अंतरिम सरकार के गठन एवं स्थापना जैसे मुद्दों पर विचार-विमर्श करेंगे। सभी दलों ने सहमति व्यक्त की कि निर्णय "पर्याप्त सर्वसम्मति" से लिए जाएंगे, जिसे कभी परिभाषित नहीं किया गया, लेकिन व्यवहार में इसका अर्थ सरकार, एएनसी और अन्य दलों के बहुमत के बीच समझौता था।
CODESA 1 का पहला दिन शांतिपूर्ण रहा, जब तक कि वह समाप्त नहीं हो गया। सम्मेलन से एक रात पहले, मैं श्री डी क्लर्क से रात आठ बजे के बाद तक फोन पर बातचीत कर रहा था। श्री डी क्लर्क ने मुझसे पूछा कि क्या मैं उन्हें अगले दिन अंतिम वक्ता बनने की अनुमति दूंगा। हालांकि समापन भाषण मेरा निर्धारित था, मैंने उनसे कहा कि मैं इस मामले को हमारी राष्ट्रीय कार्यकारी समिति के समक्ष उठाऊंगा। मैंने उसी शाम ऐसा किया, और उनकी आशंकाओं के बावजूद, मैंने उन्हें श्री डी क्लर्क को अंतिम भाषण देने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया। मुझे यह मुद्दा कोई महत्वपूर्ण नहीं लगा, और मैं श्री डी क्लर्क पर यह एहसान करने के लिए तैयार था।
सत्र के अंत में, सब कुछ ठीक लग रहा था; मैंने वार्ताओं के महत्व के बारे में बात की और मेरे बाद श्री डी क्लर्क ने बोलना शुरू किया। उन्होंने इस अवसर के ऐतिहासिक महत्व पर ज़ोर दिया और आपसी अविश्वास को दूर करने की आवश्यकता पर चर्चा की। लेकिन फिर श्री डी क्लर्क ने एक अजीब हरकत की। उन्होंने सरकार के साथ हुए समझौतों का पालन न करने के लिए एएनसी पर हमला करना शुरू कर दिया। वे हमसे ऐसे बात करने लगे जैसे कोई शिक्षक किसी शरारती बच्चे को डांट रहा हो। उन्होंने हथियारों के जखीरे का पता न बताने के लिए एएनसी की निंदा की और फिर सितंबर 1991 के राष्ट्रीय शांति समझौते का उल्लंघन करते हुए "उमखोंटो वे सिज़वे" नामक "निजी सेना" रखने के लिए हमें

फटकारा। उन्होंने उग्र भाषा में सवाल उठाया कि क्या एएनसी अपने द्वारा हस्ताक्षरित किसी भी समझौते का पालन करने के लिए पर्याप्त ईमानदार है। यह मेरे असहनीय था और अब मैं किसी भी कीमत पर श्री डी क्लर्क को अंतिम शब्द बोलने नहीं दूँगा। उनके बोलने के बाद बैठक समाप्त हो जानी चाहिए थी। लेकिन कमरा एकदम शांत हो गया था; सत्र समाप्त होने देने के बजाय, मैं मंच की ओर चल पड़ा। मैं उनकी बातों को अनसुना नहीं कर सकता था। मेरी आवाज़ में मेरा गुस्सा साफ झलक रहा था।

आज श्री डी क्लर्क के व्यवहार से मैं बेहद चिंतित हूँ। उन्होंने एएनसी पर हमला किया है और ऐसा करते हुए उन्होंने स्पष्टवादिता नहीं दिखाई है। यहाँ तक कि एक अवैध, बदनाम अल्पसंख्यक सरकार के मुखिया को भी, जैसा कि वे हैं, कुछ नैतिक मानकों का पालन करना होता है। केवल इसलिए कि वे ऐसी बदनाम सरकार के मुखिया हैं, उन्हें नैतिक मानकों का पालन न करने का कोई बहाना नहीं है…। यदि कोई व्यक्ति इस तरह के सम्मेलन में आकर इस तरह की राजनीति कर सकता है, तो बहुत कम लोग ऐसे व्यक्ति के साथ काम करना चाहेंगे।
सरकार के सदस्यों ने हमें उन्हें बोलने की अनुमति देने के लिए राजी कर लिया।
अंत में। वे यहाँ अंतिम बात कहना चाहते थे। अब स्पष्ट हो गया है कि उन्होंने ऐसा क्यों किया। उन्होंने अपने पद का दुरुपयोग किया, क्योंकि उन्हें उम्मीद थी कि मैं जवाब नहीं दूँगा। वे पूरी तरह गलत थे। मैं अब जवाब देता हूँ।

मैंने कहा कि श्री डी क्लर्क का हमसे इस तरह की भाषा में बात करना अस्वीकार्य है। मैंने दोहराया कि शांति वार्ता की पहल सरकार ने नहीं, बल्कि एएनसी ने की थी, और बार-बार अपने समझौतों का पालन करने में सरकार ही विफल रही है, न कि एएनसी। मैंने श्री डी क्लर्क को पहले भी कहा था कि एएनसी पर सार्वजनिक रूप से हमला करने का कोई फायदा नहीं है, फिर भी वे ऐसा करते रहे। मैंने बताया कि हमने शांति के प्रति अपनी प्रतिबद्धता दिखाने के लिए अपना सशस्त्र संघर्ष स्थगित कर दिया था, फिर भी सरकार युद्ध छेड़ने वालों के साथ मिलीभगत कर रही थी। हमने उनसे कहा कि हम अपने हथियार तभी सौंपेंगे जब हम उन हथियारों को इकट्ठा करने वाली सरकार का हिस्सा होंगे।

मैंने आगे कहा कि यह स्पष्ट था कि सरकार का दोहरा मकसद था। वे शांति स्थापित करने के लिए नहीं, बल्कि अपने छोटे-मोटे राजनीतिक लाभ के लिए वार्ता का इस्तेमाल कर रहे थे। वार्ता के दौरान भी, वे गुप्त रूप से उन संगठनों को धन मुहैया करा रहे थे जिन्होंने हमारे खिलाफ हिंसा की। मैंने इंकाथा को लाखों रैंड के भुगतान के हालिया खुलासों का जिक्र किया, जिनके बारे में श्री डी क्लर्क ने अनभिज्ञ होने का दावा किया था। मैंने कहा कि अगर उनके पद पर बैठा व्यक्ति "ऐसी बातों से अनजान है, तो वह सरकार का मुखिया बनने के योग्य नहीं है।"
मुझे पता था कि मैं कठोर था, लेकिन मैं बातचीत की पूरी नाव को डुबाना नहीं चाहता था, और मैंने अधिक सुलहपूर्ण लहजे में अपनी बात समाप्त की।

मैं उनसे अपने सारे पत्ते खुलकर सामने रखने का आग्रह करता हूँ। आइए हम खुलकर मिलकर काम करें। कोई गुप्त योजना न हो। उन्हें हमें यह कहकर बहकाने की कोशिश नहीं करनी चाहिए कि वे अंतिम वक्ता होंगे, क्योंकि वे इस विशेषाधिकार का दुरुपयोग करके हम पर हमला करना चाहते हैं, इस उम्मीद में कि हम कोई प्रतिक्रिया नहीं देंगे। उनकी तमाम गलतियों के बावजूद मैं उनके साथ काम करने को तैयार हूँ।

अगले दिन CODESA का अंतिम सत्र आयोजित हुआ, और श्री डी क्लर्क और मैंने यह साबित करने का भरसक प्रयास किया कि कोई अपूरणीय क्षति नहीं हुई है। सत्र की शुरुआत में, हम दोनों ने सार्वजनिक रूप से हाथ मिलाया और कहा कि हम साथ मिलकर काम करेंगे। लेकिन बहुत विश्वास टूट चुका था, और वार्ता अब अस्त-व्यस्त अवस्था में थी।

CODESA 1 के उद्घाटन के छह सप्ताह बाद, नेशनल पार्टी ने ट्रांसवाल के एक रूढ़िवादी विश्वविद्यालय शहर पोटचेफस्ट्रूम में एक महत्वपूर्ण उपचुनाव लड़ा, जो परंपरागत रूप से पार्टी का गढ़ रहा है। एक चौंकाने वाली हार में, नेशनलिस्ट पार्टी को दक्षिणपंथी कंजर्वेटिव पार्टी के उम्मीदवार ने हरा दिया। कंजर्वेटिव पार्टी ने एएनसी के साथ बातचीत की सरकार की नीति का कड़ा

विरोध किया और इसमें मुख्य रूप से अफ्रीकानर शामिल थे, जिन्हें लगता था कि श्री डी क्लर्क सरकार को सब कुछ लुटा रहे हैं। चुनाव परिणाम ने श्री डी क्लर्क की सुधार और बातचीत की नीति पर संदेह पैदा कर दिया। नेशनल पार्टी चिंतित हो गई; उनके अपने गढ़ में उनके अपने मतदाता उनकी नीतियों को नकार रहे थे।
श्री डी क्लर्क ने जोखिम उठाने का फैसला किया। उन्होंने घोषणा की कि पोटचेफस्ट्रूम में उपचुनाव के नतीजों के आधार पर वे 17 मार्च को राष्ट्रव्यापी जनमत संग्रह कराएंगे ताकि दक्षिण अफ्रीका के श्वेत नागरिक उनकी सुधार नीति और एएनसी के साथ बातचीत पर मतदान कर सकें। उन्होंने कहा कि यदि जनमत संग्रह में हार होती है, तो वे पद से इस्तीफा दे देंगे। जनमत संग्रह में अठारह वर्ष से अधिक आयु के सभी श्वेत मतदाताओं से एक सीधा और स्पष्ट प्रश्न पूछा गया: "क्या आप उस सुधार प्रक्रिया को जारी रखने का समर्थन करते हैं जिसे राष्ट्रपति ने 2 फरवरी 1990 को शुरू किया था और जिसका उद्देश्य बातचीत के माध्यम से एक नया संविधान बनाना है?"
एएनसी ने इस सिद्धांत पर जनमत संग्रह का विरोध किया कि यह एक ऐसा मतदान था जो सभी गैर-श्वेत लोगों को बाहर कर देता था। साथ ही, हम व्यावहारिक भी थे: हम निश्चित रूप से नहीं चाहते थे कि श्वेत मतदाता श्री डी क्लर्क के वार्ता प्रयासों को अस्वीकार कर दें। यद्यपि हम सैद्धांतिक रूप से इस चुनाव को नापसंद करते थे, फिर भी हमने श्वेत मतदाताओं से 'हां' में वोट देने का आग्रह किया। हमने ऐसे मतदान को वार्ता के समर्थन का संकेत माना, न कि डी क्लर्क के समर्थन का।
हमने श्री डी क्लर्क के चुनाव प्रचार को दिलचस्पी और कुछ चिंता के साथ देखा। उन्होंने और नेशनल पार्टी ने एक परिष्कृत, खर्चीला, अमेरिकी शैली का राजनीतिक अभियान चलाया, जिसमें अखबारों और टेलीविजन पर व्यापक विज्ञापन, बम्पर स्टिकर और रंगीन रैलियां शामिल थीं। हमने इसे उस अभियान का पूर्वाभ्यास माना जो श्री डी क्लर्क हमारे खिलाफ चलाएंगे।
अंततः, 69 प्रतिशत श्वेत मतदाताओं ने वार्ता का समर्थन किया, जिससे डी क्लर्क को एक बड़ी जीत मिली। उन्हें लगा जैसे उनका निर्णय सही साबित हुआ हो; मुझे लगता है कि इस जीत के अंतर ने उनके अहंकार को और भी बढ़ा दिया था। उनकी स्थिति मजबूत हो गई, और परिणामस्वरूप, राष्ट्रवादियों ने वार्ता में अपनी स्थिति और भी कठोर कर ली। यह एक खतरनाक रणनीति थी।

109

13 अप्रैल, 1992 को, जोहान्सबर्ग में एक प्रेस कॉन्फ्रेंस में, अपने दो सबसे पुराने दोस्तों और साथियों, वाल्टर और ओलिवर के साथ, मैंने अपनी पत्नी से अलग होने की घोषणा की। स्थिति इतनी विकट हो गई थी कि मुझे लगा कि एएनसी, परिवार और विनी सहित सभी संबंधित पक्षों के हित में यही बेहतर होगा कि हम अलग हो जाएं। हालांकि मैंने इस मामले पर एएनसी से चर्चा की थी, लेकिन यह अलगाव व्यक्तिगत कारणों से हुआ था।
मैंने निम्नलिखित कथन पढ़ा।

मेरे और मेरी पत्नी, कॉमरेड नोमज़ामो विनी मंडेला के बीच के रिश्ते को लेकर मीडिया में काफी अटकलें लगाई जा रही हैं। मैं इस बयान के माध्यम से स्थिति स्पष्ट करना चाहता हूं और आशा करता हूं कि इससे आगे की अटकलों पर विराम लगेगा।
कॉमरेड नोमज़ामो और मैंने एक नाजुक समय में शादी की।
हमारे देश में मुक्ति के संघर्ष के दौरान, एएनसी के प्रति हमारी साझा प्रतिबद्धता और रंगभेद को समाप्त करने के संघर्ष के दबावों के कारण, हम एक सामान्य पारिवारिक जीवन का आनंद नहीं ले सके। इन दबावों के बावजूद, एक-दूसरे के प्रति हमारा प्यार और वैवाहिक जीवन के प्रति हमारी निष्ठा बढ़ती और मजबूत होती गई...।
रॉबेन द्वीप पर मैंने जो दो दशक बिताए, उस दौरान वह एक
मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से वह एक अपरिहार्य सहारा और सांत्वना का स्तंभ थीं…। कॉमरेड नोमज़ामो ने अकेले ही हमारे बच्चों के पालन-पोषण का कठिन भार उठाया…। उन्होंने सरकार द्वारा उन पर किए गए अत्याचारों को अनुकरणीय धैर्य के साथ सहा और स्वतंत्रता संग्राम के प्रति अपनी प्रतिबद्धता से कभी विचलित नहीं हुईं। उनकी दृढ़ता ने मेरे व्यक्तिगत सम्मान, प्रेम और बढ़ते स्नेह को और भी मजबूत किया। इसने पूरी दुनिया की प्रशंसा भी बटोरी। उनके प्रति मेरा प्रेम आज भी अटूट है।
हालांकि, मतभेदों के कारण उत्पन्न तनावों को देखते हुए

पिछले कुछ महीनों में कई मुद्दों पर हमारे बीच हुई चर्चाओं के बाद, हम दोनों इस बात पर सहमत हुए हैं कि अलग होना हम दोनों के लिए सर्वोत्तम होगा। मेरा यह कदम मीडिया में उनके खिलाफ लगाए जा रहे मौजूदा आरोपों से प्रेरित नहीं है…। कॉमरेड नोमज़ामो को उनके जीवन के इन कठिन क्षणों में मेरा अटूट समर्थन प्राप्त है और आगे भी रहेगा।
मुझे व्यक्तिगत रूप से कभी उस जीवन पर पछतावा नहीं होगा जो मैंने और कॉमरेड नोमज़ामो ने जीने का प्रयास किया।
हम साथ मिलकर सब कुछ साझा करते हैं। हालाँकि, हमारे नियंत्रण से परे परिस्थितियों ने कुछ और ही तय कर दिया। मैं बिना किसी शिकायत के अपनी पत्नी से विदा लेता हूँ। मैं उसे उस सारे प्यार और स्नेह के साथ गले लगाता हूँ जो मैंने उससे जेल के अंदर और बाहर, उससे पहली मुलाकात के क्षण से ही संजोकर रखा है। देवियों और सज्जनों, मुझे आशा है कि आप मेरे दर्द को समझेंगे।
शायद पत्नी के पति और बच्चों के पिता के रूप में अपनी भूमिका न निभा पाने के दर्द के कारण मैं कुछ बातों को देख नहीं पाया। लेकिन जिस प्रकार मुझे पूरा विश्वास है कि मेरे जेल में रहने के दौरान मेरी पत्नी का जीवन मेरे जीवन से कहीं अधिक कठिन था, उसी प्रकार मेरी वापसी भी उसके लिए मुझसे कहीं अधिक कठिन थी। उसने एक ऐसे व्यक्ति से शादी की जिसने जल्द ही उसे छोड़ दिया; वह व्यक्ति एक मिथक बन गया; और फिर वह मिथक घर लौटा और अंततः एक आम इंसान ही साबित हुआ।
जैसा कि मैंने बाद में अपनी बेटी ज़िंदज़ी की शादी में कहा था, स्वतंत्रता सेनानियों का निजी जीवन अस्थिर होना ही उनकी नियति लगती है। जब जीवन ही संघर्ष हो, जैसा कि मेरा था, तो परिवार के लिए बहुत कम समय बचता है। यही बात मुझे हमेशा सबसे ज़्यादा अफ़सोस दिलाती है, और मेरे द्वारा लिए गए निर्णय का सबसे दर्दनाक पहलू भी।
मैंने शादी में कहा, “हमने अपने बच्चों को बिना हमारे मार्गदर्शन के बढ़ते देखा, और जब हम [जेल से] बाहर आए, तो मेरे बच्चों ने कहा, ‘हमने सोचा था कि हमारा एक पिता है और एक दिन वह वापस आएगा। लेकिन हमारी निराशा के लिए, हमारे पिता वापस तो आए लेकिन हमें अकेला छोड़ गए क्योंकि अब वह राष्ट्रपिता बन गए हैं।’” राष्ट्रपिता होना एक बड़ा सम्मान है, लेकिन

[illegible]

110

मई 1992 में, चार महीने के अंतराल के बाद, बहुदलीय सम्मेलन का दूसरा पूर्ण सत्र वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में आयोजित हुआ। CODESA 2 के नाम से जाने जाने वाले इस सम्मेलन की तैयारी एएनसी और सरकार दोनों के वार्ताकारों के बीच गुप्त बैठकों के साथ-साथ एएनसी और अन्य दलों के बीच हुई वार्ताओं के माध्यम से की गई थी। इन बैठकों का समापन CODESA 2 के उद्घाटन से एक दिन पहले मेरे और श्री डी क्लर्क के बीच हुए अंतिम सत्र में हुआ, जो CODESA 1 से पहले हम दोनों की पहली मुलाकात थी।
CODESA 2 के शुरू होने से कुछ ही दिन पहले, सरकार दो घोटालों की चपेट में आ गई। पहला घोटाला विकास सहायता विभाग में बड़े पैमाने पर भ्रष्टाचार और रिश्वतखोरी का खुलासा था, जो कि होमलैंड्स में अश्वेतों के जीवन स्तर को बेहतर बनाने के लिए जिम्मेदार था। दूसरा घोटाला 1985 में चार यूडीएफ कार्यकर्ताओं की हत्या में उच्च सरकारी सुरक्षा अधिकारियों की संलिप्तता से संबंधित था, जिनमें मैथ्यू गोनीवे सबसे प्रसिद्ध थे। इन खुलासों के साथ-साथ हाल ही में नेटाल में हुई हत्याओं में पुलिस की संलिप्तता के सबूत और एएनसी के खिलाफ सैन्य खुफिया विभाग द्वारा गुप्त अभियानों की आशंकाओं को भी बल मिला। इन दोनों घोटालों के एक साथ सामने आने से सरकार की विश्वसनीयता कम हो गई और हमारी स्थिति मजबूत हुई।
पिछले कुछ महीनों में सरकार ने कई प्रस्ताव रखे जो खारिज हो गए। इनमें से अधिकतर, जैसे कि बारी-बारी से राष्ट्रपति पद का विचार, सरकार की सत्ता को बनाए रखने के उद्देश्य से थे। लेकिन पिछले कुछ महीनों में हुई बातचीत के बाद, एएनसी और सरकार की टीमों ने एक अस्थायी समझौते पर सहमति जताई है, जिसमें पूर्ण लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के लिए दो चरणों वाली संक्रमणकालीन अवधि शामिल है। पहले चरण में, सभी दलों के लिए समान अवसर सुनिश्चित करने और एक अंतरिम संविधान बनाने के लिए, सीओडीईएसए प्रतिनिधिमंडलों से एक बहुदलीय "संक्रमणकालीन कार्यकारी परिषद" नियुक्त की जाएगी, जो एक अस्थायी सरकार के रूप में कार्य करेगी। दूसरे चरण में, संविधान सभा और विधायिका के लिए आम चुनाव होंगे, जिसमें 5 प्रतिशत या उससे अधिक वोट पाने वाले सभी राजनीतिक दल मंत्रिमंडल में शामिल होंगे।

विधानसभा के आधे सदस्य राष्ट्रीय आधार पर और आधे क्षेत्रीय आधार पर चुने जाएंगे, और विधानसभा को नया संविधान लिखने और कानून पारित करने का अधिकार होगा। एक स्वतंत्र आयोग चुनाव की देखरेख करेगा और यह सुनिश्चित करेगा कि चुनाव स्वतंत्र और निष्पक्ष हो।
फिर भी, कई ऐसे मुद्दे थे जिन पर एएनसी और सरकार के बीच सहमति नहीं बन पाई, जैसे कि संवैधानिक मुद्दों पर निर्णय लेने और मानवाधिकार विधेयक पर सहमति बनाने के लिए विधानसभा में आवश्यक मतदान प्रतिशत। CODESA 2 से कुछ ही दिन पहले, सरकार ने अल्पमत के वीटो को सुनिश्चित करने के लिए क्षेत्रीय प्रतिनिधियों से मिलकर एक दूसरे निकाय, सीनेट का प्रस्ताव रखा। उन्होंने यह भी प्रस्ताव रखा कि इन सबसे पहले, CODESA 2 एक अंतरिम संविधान पर सहमत हो जाए, जिसे तैयार करने में महीनों लग जाएंगे।
यह सारी सौदेबाजी पर्दे के पीछे चल रही थी और जब 15 मई, 1992 को CODESA 2 की बैठक शुरू हुई, तब तक समझौते की संभावनाएं धूमिल हो चुकी थीं। जिन मुद्दों पर हमारी असहमति थी, वे उन सभी बातों को खतरे में डाल रहे थे जिन पर हम सहमत हुए थे। श्री डी क्लर्क और मैं अधिकांश लंबित मुद्दों पर आम सहमति तक नहीं पहुंच पाए थे। सरकार अनिश्चित काल तक इंतजार करने को तैयार लग रही थी; उनका मानना था कि हम जितना अधिक इंतजार करेंगे, उतना ही अधिक समर्थन खोते जाएंगे।
पहले दिन के अंत में सम्मेलन गतिरोध में फंस गया। उस समय, वार्ता की अध्यक्षता कर रहे दोनों न्यायाधीशों ने श्री डी क्लर्क और मुझे उसी शाम मिलने और समझौता करने का प्रयास करने के लिए कहा। हम उस रात कॉफी पर मिले, और यद्यपि हम गतिरोध से बाहर निकलने का कोई रास्ता नहीं निकाल पाए, हम इस बात पर सहमत हुए कि वार्ता विफल नहीं होनी चाहिए। मैंने श्री डी क्लर्क से कहा, "पूरा दक्षिण अफ्रीका और दुनिया हम दोनों की ओर देख रही है। आइए शांति प्रक्रिया को बचाएं। आइए किसी तरह के समझौते पर पहुंचें। आइए कम से कम वार्ता के अगले दौर के लिए एक तारीख तय करें।" हमने तय किया कि हम दोनों अगले दिन रचनात्मक समझौते की भावना से बात करेंगे।
अगली दोपहर हमने CODESA 1 में तय किए गए क्रम के विपरीत क्रम में बात की: पहले श्री डी क्लर्क और अंत में मैं। अपने संबोधन में, श्री डी क्लर्क ने ज़ोर देकर कहा कि नेशनल पार्टी "अल्पसंख्यक वीटो" नहीं चाहती, बल्कि वे "नियंत्रण और संतुलन" की व्यवस्था चाहते हैं ताकि बहुमत "अपनी शक्ति का

दुरुपयोग" न कर सके। हालाँकि यह मुझे बहुमत शासन के विचार का सीधा विरोध लगा, लेकिन श्री डी क्लर्क के बाद जब मैंने बात की, तो मैंने केवल इतना कहा कि हमें रचनात्मक तरीके से काम करने और वार्ताओं के दौरान उत्पन्न तनावों को दूर करने की आवश्यकता है।
मामले को सकारात्मक रूप देने के हमारे प्रयासों के बावजूद, सम्मेलन दूसरे दिन गतिरोध में समाप्त हुआ। मेरी राय में, यह गतिरोध नेशनल पार्टी की बहुमत की इच्छा के आगे झुकने की निरंतर अनिच्छा के कारण उत्पन्न हुआ। वे इस बाधा को पार नहीं कर सके।
अंततः, CODESA 2 चार मूलभूत मुद्दों पर विफल हो गया: संविधान को मंजूरी देने के लिए विधानसभा में अस्वीकार्य रूप से उच्च प्रतिशत मतों पर सरकार का जोर (अनिवार्य रूप से एक अप्रत्यक्ष वीटो); स्थापित क्षेत्रीय शक्तियां जो भविष्य के संविधान पर बाध्यकारी होंगी; एक अलोकतांत्रिक और गैर-निर्वाचित सीनेट जिसके पास मुख्य सदन से पारित कानून पर वीटो शक्ति थी; और सम्मेलन द्वारा बातचीत के माध्यम से तैयार किए गए अंतरिम संविधान को स्थायी संविधान बनाने का दृढ़ संकल्प।
ये सभी कठिन मुद्दे थे, लेकिन असंभव नहीं थे, और मैं CODESA 2 में गतिरोध को वार्ता प्रक्रिया को बाधित नहीं करने देने के लिए दृढ़ संकल्पित था। सरकार और एएनसी ने समाधान की दिशा में काम करने के लिए द्विपक्षीय वार्ता जारी रखने पर सहमति व्यक्त की। लेकिन, फिर, अन्य मामलों ने हस्तक्षेप कर इसे असंभव बना दिया।

बातचीत ठप होने के बाद, एएनसी और उसके सहयोगियों ने "लगातार जन आंदोलन" की नीति पर सहमति जताई, जिससे सरकार को देश भर में हमारे समर्थन की व्यापकता का पता चले और यह प्रदर्शित हो कि दक्षिण अफ्रीका के लोग अपनी स्वतंत्रता के लिए हमेशा इंतजार करने को तैयार नहीं हैं। इस जन आंदोलन में हड़तालें, प्रदर्शन और बहिष्कार शामिल थे। जन आंदोलन शुरू करने के लिए 16 जून, 1992 की तारीख चुनी गई, जो 1976 के सोवेटो विद्रोह की वर्षगांठ थी, और इस अभियान का उद्देश्य 3 और 4 अगस्त को दो दिवसीय राष्ट्रीय हड़ताल के साथ समाप्त होना था।

लेकिन इससे पहले एक और घटना घटी जिसने एएनसी और सरकार के बीच दूरियां और बढ़ा दीं। 17 जून, 1992 की रात को, इंकाथा सदस्यों के भारी हथियारों से लैस एक दल ने चुपके से वाल के बोइपाटोंग कस्बे पर छापा मारा और छियालीस लोगों की हत्या कर दी। मृतकों में अधिकतर महिलाएं और बच्चे थे। उस सप्ताह एएनसी कार्यकर्ताओं की यह चौथी सामूहिक हत्या थी। देश भर के लोग इस हिंसा से भयभीत थे और उन्होंने सरकार पर मिलीभगत का आरोप लगाया। पुलिस ने अपराधियों को रोकने या उन्हें ढूंढने के लिए कुछ नहीं किया; कोई गिरफ्तारी नहीं हुई, कोई जांच शुरू नहीं हुई। श्री डी क्लर्क ने कुछ नहीं कहा। मुझे लगा कि यह आखिरी हद थी, और मेरा धैर्य टूट गया। सरकार बातचीत में बाधा डाल रही थी और साथ ही साथ हमारे लोगों के खिलाफ गुप्त युद्ध छेड़ रही थी। तो फिर हम उनसे बातचीत क्यों जारी रख रहे थे?
हत्याओं के चार दिन बाद, मैंने बीस हज़ार आक्रोशित एएनसी समर्थकों की भीड़ को संबोधित किया और उनसे कहा कि मैंने एएनसी महासचिव सिरिल रामाफोसा को सरकार के साथ सीधे संपर्क निलंबित करने का निर्देश दिया है। मैंने विकल्पों पर विचार करने के लिए राष्ट्रीय कार्यकारी समिति की एक आपातकालीन बैठक की भी घोषणा की। ऐसा लग रहा था मानो हम शार्पविले के काले दिनों में लौट आए हों। मैंने नेशनल पार्टी के व्यवहार की तुलना जर्मनी के नाजियों से की और डी क्लर्क को सार्वजनिक रूप से चेतावनी दी कि यदि उन्होंने प्रदर्शनों या अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता को प्रतिबंधित करने के लिए नए उपाय लागू करने का प्रयास किया, तो एएनसी मेरे नेतृत्व में एक राष्ट्रव्यापी विरोध अभियान शुरू करेगी।
रैली में मैंने ऐसे बैनर देखे जिन पर लिखा था, “मंडेला, हमें हथियार दो” और “बातों से नहीं, लड़ाई से जीत मिलेगी।” मैं इन भावनाओं को समझता था; लोग हताश थे। उन्हें बातचीत से कोई सकारात्मक परिणाम नहीं दिख रहा था। वे सोचने लगे थे कि रंगभेद को खत्म करने का एकमात्र रास्ता बंदूक ही है। बोइपाटोंग के बाद, राष्ट्रीय चुनाव आयोग में कुछ लोगों ने कहा, “हमने सशस्त्र संघर्ष क्यों छोड़ दिया? हमें बातचीत छोड़ देनी चाहिए; इससे हम कभी अपने लक्ष्य तक नहीं पहुंच पाएंगे।” शुरुआत में मुझे कट्टरपंथियों के इस समूह से सहानुभूति थी, लेकिन धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि प्रक्रिया के अलावा कोई विकल्प नहीं था। यही वह बात थी जिसकी मैं इतने सालों से वकालत कर रहा था, और मैं बातचीत से मुंह नहीं मोड़ सकता था। लेकिन अब हालात को शांत

जन आंदोलन की सफलता से प्रेरित होकर, एएनसी के एक समूह ने पूर्वी केप में स्थित सिस्केई होमलैंड की राजधानी बिशो पर चढ़ाई करने का फैसला किया। सिस्केई एक बंतुस्तान था जिसका नेतृत्व ब्रिगेडियर ओउपा गोज़ो कर रहे थे। सिस्केई का एएनसी के खिलाफ दमन का लंबा इतिहास रहा था और 1991 में ब्रिगेडियर गोज़ो ने एएनसी प्रायोजित आतंकवाद को रोकने के लिए सिस्केई में आपातकाल घोषित कर दिया था। 7 सितंबर, 1992 की सुबह, सत्तर हज़ार प्रदर्शनकारी बिशो के मुख्य स्टेडियम की ओर मार्च करने लगे। जब प्रदर्शनकारियों के एक समूह ने बाड़ में बने एक छेद से निकलकर शहर की ओर दूसरा रास्ता अपनाने की कोशिश की, तो कम प्रशिक्षित होमलैंड सैनिकों ने प्रदर्शनकारियों पर गोलियां चला दीं, जिसमें उनतीस लोग मारे गए और दो सौ से अधिक घायल हो गए। अब बिशो, बोइपाटोंग की तरह ही क्रूरता का पर्याय बन गया।

जैसे पुरानी कहावत है कि सबसे अंधेरा भोर से पहले होता है, बिशो की त्रासदी ने वार्ताओं में एक नया मोड़ ला दिया। मैंने श्री डी क्लर्क से मुलाकात की ताकि आम सहमति बन सके और बिशो जैसी त्रासदी दोबारा न हो। हमारे वार्ताकार नियमित रूप से मिलने लगे। दोनों पक्ष वार्ताओं को फिर से पटरी पर लाने के लिए पूरी ईमानदारी से प्रयास कर रहे थे, और 26 सितंबर को श्री डी क्लर्क और मैं एक आधिकारिक शिखर सम्मेलन के लिए मिले।
उस दिन, श्री डी क्लर्क और मैंने समझौता ज्ञापन पर हस्ताक्षर किए, जिसने आगे होने वाली सभी वार्ताओं की नींव रखी। इस समझौते के तहत पुलिस कार्रवाइयों की समीक्षा के लिए एक स्वतंत्र निकाय की स्थापना की गई, छात्रावासों की घेराबंदी के लिए एक व्यवस्था बनाई गई और रैलियों में "पारंपरिक हथियारों" के प्रदर्शन पर प्रतिबंध लगा दिया गया। लेकिन समझौता ज्ञापन का असली महत्व यह था कि इसने CODESA 2 के संवैधानिक गतिरोध को तोड़ दिया। सरकार अंततः एक निर्वाचित संवैधानिक सभा को स्वीकार करने के लिए सहमत हो गई, जो एक नया संविधान अपनाएगी और नई सरकार के लिए एक अंतरिम विधायिका के रूप में कार्य करेगी। अब केवल सभा के चुनाव की तिथि और उसके

निर्णय लेने के लिए आवश्यक बहुमत प्रतिशत पर बातचीत बाकी थी। अब हम उस बुनियादी ढांचे पर एकमत थे जो देश को लोकतांत्रिक भविष्य की ओर ले जाएगा। समझौते के कारण इंकाथा ने सरकार और एएनसी से संबंधित सभी वार्ताओं से हटने की घोषणा कर दी। इस समझौते से चीफ बुथेलेज़ी बेहद नाराज़ हुए और उन्होंने राष्ट्रीय परिषद से संबंध तोड़कर कुछ बदनाम होमलैंड नेताओं और श्वेत दक्षिणपंथी दलों के साथ गठबंधन कर लिया, जिनका एकमात्र उद्देश्य अफ्रीकानर होमलैंड हासिल करना था। चीफ बुथेलेज़ी ने समझौते को रद्द करने, कोडेसा को समाप्त करने और उमखोंटो वे सिज़वे को भंग करने की मांग की।
जिस प्रकार जो स्लोवो ने सशस्त्र संघर्ष को स्थगित करने की पहल की थी, उसी प्रकार उन्होंने एक और विवादास्पद प्रस्ताव, राष्ट्रीय एकता सरकार, को आगे बढ़ाने में भी अग्रणी भूमिका निभाई। अक्टूबर में, जो ने एक लेख प्रकाशित किया जिसमें उन्होंने लिखा कि सरकार के साथ बातचीत कोई युद्धविराम वार्ता नहीं है जिसमें हम पराजित शत्रु पर शर्तें थोप सकें। चुनाव के बाद भी, एएनसी को सरकार की बागडोर संभालने में शायद वर्षों लग जाएंगे। एएनसी सरकार को देश चलाने के लिए वर्तमान सिविल सेवा के अधिकांश कर्मचारियों की आवश्यकता होगी। जो ने एक "सनसेट क्लॉज़" का प्रस्ताव रखा जिसमें राष्ट्रीय एकता सरकार के लिए एक निश्चित अवधि के लिए नेशनल पार्टी के साथ सत्ता-साझाकरण, सुरक्षा अधिकारियों के लिए माफी और सिविल सेवकों के अनुबंधों का सम्मान शामिल था। "सत्ता-साझाकरण" एएनसी के भीतर एक विकृत शब्द था, जिसे सरकार द्वारा अल्पमत वीटो प्राप्त करने के प्रयास का एक सांकेतिक शब्द माना जाता था। लेकिन इस संदर्भ में इसका सीधा सा अर्थ था कि नेशनल पार्टी किसी भी लोकप्रिय रूप से चुनी गई सरकार का हिस्सा होगी, बशर्ते उसे पर्याप्त वोट मिलें।
काफी चर्चा के बाद, मैंने जो के प्रस्ताव का समर्थन किया और 18 नवंबर को राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने इसे मंजूरी दे दी। राष्ट्रीय कार्यकारी समिति ने सत्ता-साझाकरण का समर्थन करने पर सहमति जताई, बशर्ते अल्पसंख्यक दलों को वीटो का अधिकार न हो। दिसंबर में, हमने सरकार के साथ गुप्त द्विपक्षीय वार्ता का एक नया दौर शुरू किया। ये वार्ताएँ जंगल में स्थित एक गेम लॉज में पाँच दिनों तक चलीं। ये वार्ताएँ महत्वपूर्ण साबित हुईं, क्योंकि इन्होंने समझौता ज्ञापन में स्थापित नींव को और मजबूत किया। इस जंगल में हुई बैठक में हमने सैद्धांतिक रूप से पाँच वर्षीय राष्ट्रीय

एकता सरकार पर सहमति व्यक्त की, जिसमें आम चुनाव में 5 प्रतिशत से अधिक मतदान प्राप्त करने वाले सभी दलों को मंत्रिमंडल में आनुपातिक प्रतिनिधित्व मिलेगा। पाँच वर्षों के बाद, राष्ट्रीय एकता सरकार साधारण बहुमत वाली सरकार बन जाएगी। फरवरी में, एएनसी और सरकार ने पाँच वर्षीय राष्ट्रीय एकता सरकार, बहुदलीय मंत्रिमंडल और एक संक्रमणकालीन कार्यकारी परिषद के गठन पर सैद्धांतिक समझौते की घोषणा की। चुनाव 1993 के अंत तक होने थे।

111

मेरा हमेशा से यही मानना रहा है कि एक व्यक्ति का अपना घर उसके जन्मस्थान के पास ही होना चाहिए। जेल से रिहा होने के बाद, मैंने कुनु में अपने लिए एक देहाती घर बनाने की योजना बनाई। 1993 की शरद ऋतु तक घर बनकर तैयार हो गया था। यह विक्टर वर्स्टर में मेरे पुराने घर के लेआउट पर आधारित था। लोग अक्सर इस पर टिप्पणी करते थे, लेकिन इसका जवाब सीधा-सा था: विक्टर वर्स्टर का घर पहला विशाल और आरामदायक घर था जिसमें मैं रहा था, और मुझे वह बहुत पसंद था। मैं उसके आकार से परिचित था, इसलिए कुनु में मुझे रात में रसोई ढूंढने के लिए भटकना नहीं पड़ता।
अप्रैल में, मैं ट्रांसकेई में अपने घर पर एक छोटी छुट्टी पर था। 10 अप्रैल की सुबह, मैं ट्रांसकेई पुलिस रग्बी टीम के कुछ सदस्यों का अभिवादन करने के लिए बाहर गया ही था कि मेरी नौकरानी दौड़कर बाहर आई और मुझे एक ज़रूरी फोन कॉल के बारे में बताया। वह रो रही थी। मैंने उन युवकों से इजाज़त ली और एक सहकर्मी से पता चला कि एसएसीपी के महासचिव, एमके के पूर्व चीफ ऑफ स्टाफ और एएनसी के सबसे लोकप्रिय व्यक्तियों में से एक क्रिस हानी को जोहान्सबर्ग के बोक्सबर्ग में उनके घर के सामने से बहुत करीब से गोली मार दी गई थी। बोक्सबर्ग एक ऐसा इलाका है जहाँ ज़्यादातर श्वेत श्रमिक वर्ग रहता है और क्रिस इसे एकीकृत करने की कोशिश कर रहे थे।
क्रिस की मृत्यु मेरे लिए व्यक्तिगत रूप से और आंदोलन के लिए एक गहरा आघात है। वे एक सैनिक और देशभक्त थे, जिनके लिए कोई भी कार्य छोटा नहीं था। वे दक्षिण अफ्रीका के युवाओं के बीच एक महान नायक थे; एक ऐसे व्यक्ति जो उनकी भाषा समझते थे और जिनकी बात वे सुनते थे। यदि कोई व्यक्ति अशांत युवाओं को वार्ता के माध्यम से समाधान की ओर लामबंद कर सकता था, तो वह क्रिस ही थे। दक्षिण अफ्रीका ने अपने एक महान सपूत को खो दिया, एक ऐसा व्यक्ति जो देश को एक नए राष्ट्र में रूपांतरित करने में अमूल्य योगदान दे सकता था।
देश की स्थिति नाजुक थी। आशंका थी कि हानी की मृत्यु से नस्लीय युद्ध छिड़ सकता है, और युवा अपने नायक को शहीद मानकर उसके लिए अपनी जान तक कुर्बान करने को तैयार हो सकते हैं। सबसे पहले मैं हेलीकॉप्टर से क्रिस के बयासी वर्षीय पिता को श्रद्धांजलि देने के लिए सबलेले गया, जो ट्रांसकेई के

कोफिमवाबा जिले का एक छोटा, धूल भरा कस्बा है। यह जगह मेरे लिए जानी-पहचानी थी क्योंकि यह मातांज़ीमा परिवार का पैतृक क्षेत्र था। जब मैं इस गाँव में पहुँचा, जहाँ न तो पीने का पानी था और न ही बिजली, तो मैं यह देखकर चकित रह गया कि कैसे इस गरीब और छोटे से गाँव ने क्रिस हानी जैसे महान व्यक्ति को जन्म दिया, जिसने अपने जुनून और क्षमता से पूरे देश को झकझोर दिया। ग्रामीण गरीबों के प्रति उनकी चिंता सबलेले में उनके बचपन से ही थी, क्योंकि उनकी जड़ें वहाँ गहरी और सच्ची थीं, और उन्होंने उन्हें कभी नहीं खोया। क्रिस के पिता ने बेटे को खोने के दर्द को बड़े ही मार्मिक ढंग से व्यक्त किया, लेकिन इस बात से संतुष्ट भी थे कि वह संघर्ष में शहीद हुआ। जोहान्सबर्ग लौटने पर मुझे पता चला कि पुलिस ने उग्रवादी दक्षिणपंथी अफ़्रीकानर वीरस्टैन्ड्सबेवेगिंग (AWB) के एक सदस्य को गिरफ्तार कर लिया है। वह दक्षिण अफ्रीका में बसा एक पोलिश अप्रवासी था, जिसे एक साहसी अफ़्रीकानर महिला द्वारा हत्यारे की गाड़ी का नंबर पुलिस को फोन करने के बाद पकड़ा गया था। यह हत्या हताशा में की गई एक सनक थी, बातचीत की प्रक्रिया को पटरी से उतारने का प्रयास। मुझे उसी रात SABC पर राष्ट्र को संबोधित करने के लिए कहा गया। इस मामले में, राष्ट्र को शांत करने का प्रयास सरकार ने नहीं, बल्कि ANC ने किया।
मैंने कहा कि शांति और वार्ता की प्रक्रिया को रोका नहीं जा सकता। अपने पूरे अधिकार का प्रयोग करते हुए मैंने कहा, “मैं अपने सभी लोगों से शांत रहने और क्रिस हानी की स्मृति का सम्मान करते हुए शांति के लिए एक अनुशासित शक्ति बने रहने की अपील करता हूँ।”

आज रात मैं अपने दिल की गहराइयों से हर दक्षिण अफ़्रीकी नागरिक, चाहे वो काला हो या गोरा, से गुहार लगा रहा हूँ। एक श्वेत व्यक्ति, जो पूर्वाग्रह और नफ़रत से भरा था, हमारे देश में आया और उसने ऐसा घिनौना काम किया कि हमारा पूरा देश तबाही के कगार पर खड़ा है। एक अफ़्रीकी मूल की श्वेत महिला ने अपनी जान जोखिम में डाली ताकि हम इस हत्यारे को जान सकें और उसे न्याय के कटघरे में ला सकें…। अब समय आ गया है कि सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिक एकजुट होकर उन लोगों के खिलाफ़ खड़े हों जो किसी भी तरफ से उस चीज़ को नष्ट करना चाहते हैं जिसके लिए क्रिस हानी ने अपनी जान दी - हम सबकी आज़ादी।

क्रिस की हत्या श्वेत वर्चस्ववादियों द्वारा अपरिहार्य को रोकने का एक प्रयास था। वे शांतिपूर्ण तरीकों से बहुमत शासन की स्थापना के बजाय देश को गृहयुद्ध में धकेलना पसंद करते थे।
हमने एएनसी में अपने निर्वाचन क्षेत्र से निपटने के लिए एक रणनीति अपनाई। जवाबी हिंसा को रोकने के लिए, हमने पूरे देश में एक सप्ताह तक चलने वाली जन रैलियों और प्रदर्शनों की एक श्रृंखला आयोजित की। इससे लोगों को हिंसा का सहारा लिए बिना अपनी निराशा व्यक्त करने का एक साधन मिला। श्री डी क्लर्क और मैंने निजी तौर पर बात की और इस बात पर सहमति जताई कि हम हानी की हत्या को बातचीत को पटरी से उतरने नहीं देंगे।
कुछ ही दिनों में हमें पता चला कि कंजर्वेटिव पार्टी के एक सदस्य, क्लाइव डर्बी-लुईस को हत्या के सिलसिले में गिरफ्तार कर लिया गया है। इससे एक तीसरी ताकत की मौजूदगी की और पुष्टि हुई। क्रिस ने खुद ही एक वायुसेना अड्डे से हाल ही में हुई हथियारों की चोरी की आलोचना की थी; पुलिस की प्रारंभिक रिपोर्टों से पता चला कि जिस बंदूक से उनकी हत्या हुई थी, वह उसी भंडार से आई थी।

ठीक दो सप्ताह बाद, एक और महत्वपूर्ण घटना घटी। यह घटना क्रिस की मृत्यु की तरह पूरे देश को झकझोरने वाली नहीं थी, लेकिन इसने मुझे झकझोर दिया। ओलिवर लंबे समय से अस्वस्थ थे, लेकिन जिस स्ट्रोक ने उनकी जान ले ली, वह अचानक और बिना किसी चेतावनी के हुआ। उनकी पत्नी, एडिलेड ने मुझे सुबह-सुबह फोन किया और मैं तुरंत ओलिवर के पास पहुंचा। मुझे उन्हें ठीक से अलविदा कहने का मौका भी नहीं मिला, क्योंकि तब तक वे इस दुनिया से जा चुके थे।
प्लेटो के धातुओं के दृष्टांत में, दार्शनिक मनुष्यों को सोने, चांदी और सीसे के समूहों में वर्गीकृत करते हैं। ओलिवर शुद्ध सोना थे; उनकी बौद्धिक प्रतिभा में सोना था, उनके स्नेह और मानवता में सोना था, उनकी सहनशीलता और उदारता में सोना था, उनकी अटूट निष्ठा और आत्म-बलिदान में सोना था। जितना मैं उनका एक नेता के रूप में सम्मान करता था, उतना ही मैं उन्हें एक इंसान के रूप में प्यार करता था।

हालांकि जेल में बिताए सालों में हम एक-दूसरे से दूर रहे, ओलिवर हमेशा मेरे विचारों में बसा रहा। कई मायनों में, भले ही हम अलग थे, मैंने मन ही मन उससे जीवन भर संवाद बनाए रखा। शायद इसीलिए उसकी मृत्यु पर मुझे इतना गहरा दुख हुआ। जैसा कि मैंने अपने एक सहकर्मी से कहा, मुझे ऐसा लगा जैसे मैं दुनिया का सबसे अकेला इंसान हूँ। ऐसा लगा जैसे हम आखिरकार फिर से मिले ही थे कि उसे मुझसे छीन लिया गया हो। जब मैंने उसे ताबूत में देखा, तो ऐसा लगा जैसे मेरा ही एक हिस्सा मर गया हो।
हालांकि हम अभी सत्ता में नहीं थे, मैं ओलिवर को राजकीय सम्मान के साथ अंतिम संस्कार देना चाहता था, और एएनसी ने उन्हें यही दिया। सोवेटो के एक स्टेडियम में आयोजित एक विशाल जनसभा में, विदेशी सरकारों के सैकड़ों गणमान्य व्यक्ति उस व्यक्ति को श्रद्धांजलि देने के लिए एकत्रित हुए, जिन्होंने निर्वासन के वर्षों के दौरान एएनसी को जीवित रखा था। एमके सैनिकों ने उनके सम्मान में मार्च किया और उनकी समाधि पर इक्कीस तोपों की सलामी दी गई। ओलिवर ने कैदियों की रिहाई और निर्वासितों की वापसी देखी, लेकिन वे एक स्वतंत्र और लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका में अपना वोट डालने के लिए जीवित नहीं रहे। यही वह उपलब्धि थी जो अभी बाकी थी।

112

भले ही 3 जून, 1993 का दिन कुछ ही लोगों को याद हो, लेकिन यह दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में एक महत्वपूर्ण दिन था। उस दिन, वर्ल्ड ट्रेड सेंटर में महीनों की बातचीत के बाद, बहुदलीय मंच ने देश के पहले राष्ट्रीय, गैर-नस्लीय, एक व्यक्ति-एक वोट वाले चुनाव की तारीख तय करने के लिए मतदान किया: 27 अप्रैल, 1994। दक्षिण अफ्रीका के इतिहास में पहली बार, अश्वेत बहुसंख्यक अपने नेताओं को चुनने के लिए मतदान करने जा रहे थे। समझौते के अनुसार, मतदाता एक संविधान सभा के लिए चार सौ प्रतिनिधियों का चुनाव करेंगे, जो एक नया संविधान लिखेगी और संसद के रूप में कार्य करेगी। सभा के गठन के बाद, उसका पहला कार्य राष्ट्रपति का चुनाव करना होगा।
अप्रैल में वार्ता फिर से शुरू हुई। इस बार, इसमें इंकथा, पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस और कंजर्वेटिव पार्टी सहित छब्बीस पार्टियां शामिल थीं। हम महीनों से सरकार पर तारीख तय करने का दबाव डाल रहे थे, लेकिन वे टालमटोल कर रहे थे। लेकिन अब तारीख तय हो चुकी थी।
एक महीने बाद, जुलाई में, बहुदलीय मंच ने अंतरिम संविधान के पहले मसौदे पर सहमति व्यक्त की। इसमें द्विसदनीय संसद का प्रावधान था, जिसमें राष्ट्रीय और क्षेत्रीय दल सूचियों से आनुपातिक प्रतिनिधित्व द्वारा निर्वाचित चार सौ सदस्यीय राष्ट्रीय सभा और क्षेत्रीय विधानमंडलों द्वारा अप्रत्यक्ष रूप से निर्वाचित सीनेट शामिल थी। क्षेत्रीय विधानमंडलों के चुनाव राष्ट्रीय चुनावों के साथ ही होंगे, और क्षेत्रीय निकाय राष्ट्रीय संविधान के अनुरूप अपने स्वयं के संविधान बना सकते हैं।
चीफ बुथेलेज़ी चुनाव से पहले संविधान बनवाना चाहते थे और संविधान को अंतिम रूप दिए बिना चुनाव की तारीख तय किए जाने के विरोध में वे बैठक से बाहर चले गए। अगस्त में पेश किए गए अंतरिम संविधान के दूसरे मसौदे ने क्षेत्रों को अधिक शक्तियां दीं, लेकिन इससे न तो चीफ बुथेलेज़ी और न ही कंज़र्वेटिव पार्टी संतुष्ट हुई। कंज़र्वेटिव पार्टी ने इन प्रस्तावों को अफ्रीकानर हितों के लिए हानिकारक बताया। जनरल कॉन्स्टैंड विल्जोएन, जो दक्षिण अफ्रीकी रक्षा बल के पूर्व प्रमुख थे, के नेतृत्व में अफ्रीकानर वोल्क्सफ्रंट नामक एक समूह का गठन किया गया, जिसका उद्देश्य श्वेतों के

लिए एक वोल्क्सटाट (एक श्वेत मातृभूमि) की अवधारणा के इर्द-गिर्द रूढ़िवादी श्वेत संगठनों को एकजुट करना था।
18 नवंबर की आधी रात के ठीक बाद, बहुदलीय सम्मेलन के पूर्ण सत्र में एक अंतरिम संविधान को मंजूरी दे दी गई। सरकार और एएनसी ने सभी बाधाओं को पार कर लिया था। नए मंत्रिमंडल में 5 प्रतिशत से अधिक वोट पाने वाले सदस्य शामिल होंगे और सरकार द्वारा प्रस्तावित दो-तिहाई बहुमत के बजाय आम सहमति से निर्णय लेंगे; राष्ट्रीय चुनाव 1999 तक नहीं होंगे, ताकि राष्ट्रीय एकता सरकार पांच साल तक कार्य कर सके; और अंत में, सरकार ने राष्ट्रीय और प्रांतीय विधानसभाओं के लिए अलग-अलग मतपत्रों के बजाय चुनाव के लिए एक ही मतपत्र पर हमारी ज़िद मान ली। दो मतपत्रों से अधिकांश मतदाताओं में भ्रम की स्थिति पैदा हो जाती, जिनमें से अधिकतर अपने जीवन में पहली बार मतदान कर रहे होते। चुनाव से पहले की अवधि में, प्रत्येक पार्टी के सदस्यों वाली एक संक्रमणकालीन कार्यकारी परिषद चुनाव के लिए उपयुक्त माहौल सुनिश्चित करेगी। वास्तव में, 22 दिसंबर से 27 अप्रैल को होने वाले चुनाव तक, संक्रमणकालीन कार्यकारी परिषद ही सरकार होगी। व्यापक शक्तियों वाला एक स्वतंत्र चुनाव आयोग चुनाव के संचालन के लिए जिम्मेदार होगा। हम सचमुच एक नए युग की दहलीज पर थे।

मुझे व्यक्तिगत पुरस्कारों की कभी ज्यादा परवाह नहीं रही। कोई भी व्यक्ति पुरस्कार जीतने की उम्मीद में स्वतंत्रता सेनानी नहीं बनता, लेकिन जब मुझे यह सूचना मिली कि मैंने श्री डी क्लर्क के साथ संयुक्त रूप से 1993 का नोबेल शांति पुरस्कार जीता है, तो मैं अत्यंत भावुक हो गया। दक्षिण अफ्रीका के इतिहास से जुड़ाव के कारण नोबेल शांति पुरस्कार का मेरे लिए विशेष महत्व था।
द्वितीय विश्व युद्ध की समाप्ति के बाद नोबेल समिति द्वारा सम्मानित होने वाला मैं तीसरा दक्षिण अफ्रीकी था। चीफ अल्बर्ट लुथुली को 1960 में यह पुरस्कार दिया गया था। दूसरे आर्कबिशप डेसमंड टूटू थे, जिन्होंने रंगभेद के सबसे भयानक दिनों में निस्वार्थ भाव से नस्लवाद की बुराइयों से लड़ाई लड़ी थी।

यह पुरस्कार सभी दक्षिण अफ़्रीकी लोगों और विशेष रूप से संघर्ष में लड़ने वालों को श्रद्धांजलि थी; मैं उनकी ओर से यह पुरस्कार स्वीकार करता। लेकिन नोबेल पुरस्कार के बारे में मैंने कभी सोचा भी नहीं था। रॉबेन द्वीप पर सबसे कठिन वर्षों के दौरान भी, एमनेस्टी इंटरनेशनल ने सशस्त्र संघर्ष के कारण हमारे लिए अभियान नहीं चलाया, और उनका संगठन हिंसा का सहारा लेने वाले किसी भी व्यक्ति का प्रतिनिधित्व नहीं करता था। इसी कारण मैंने मान लिया था कि नोबेल समिति उमखोंटो वे सिज़वे की स्थापना करने वाले व्यक्ति को शांति पुरस्कार के लिए कभी विचार नहीं करेगी।
मुझे नॉर्वे और स्वीडन देशों के प्रति अपार सम्मान था। 1950 और 1960 के दशक में, जब हम एएनसी के लिए चंदा मांगने पश्चिमी सरकारों के पास गए, तो हमें सिरे से अस्वीकार कर दिया गया। लेकिन नॉर्वे और स्वीडन में हमारा खुले दिल से स्वागत किया गया और हमें सहायता, छात्रवृत्ति, कानूनी बचाव के लिए धन और राजनीतिक कैदियों के लिए मानवीय सहायता प्रदान की गई।
मैंने नॉर्वे में अपने भाषण का उपयोग न केवल नोबेल समिति को धन्यवाद देने और एक ऐसे दक्षिण अफ्रीका के भविष्य की परिकल्पना प्रस्तुत करने के लिए किया जो न्यायपूर्ण और समान हो, बल्कि अपने साथी पुरस्कार विजेता श्री एफ. डब्ल्यू. डी. क्लर्क को श्रद्धांजलि अर्पित करने के लिए भी किया।

उनमें यह स्वीकार करने का साहस था कि रंगभेद की व्यवस्था थोपकर हमारे देश और लोगों के साथ घोर अन्याय किया गया था। उनमें यह दूरदर्शिता थी कि वे यह समझें और स्वीकार करें कि दक्षिण अफ्रीका के सभी लोगों को वार्ता के माध्यम से और इस प्रक्रिया में समान भागीदार बनकर, मिलकर यह तय करना होगा कि वे अपने भविष्य का क्या स्वरूप चाहते हैं।

मुझसे अक्सर पूछा जाता था कि श्री डी क्लर्क की इतनी कड़ी आलोचना करने के बावजूद मैं उनके साथ संयुक्त रूप से यह पुरस्कार कैसे स्वीकार कर सकता हूँ। हालाँकि मैं अपनी आलोचनाओं को वापस नहीं लेना चाहता, लेकिन मैं यह कह सकता हूँ कि उन्होंने शांति प्रक्रिया में वास्तव में और अपरिहार्य योगदान दिया था। मैंने कभी भी श्री डी क्लर्क को कमजोर करने की कोशिश नहीं की, क्योंकि व्यावहारिक रूप से देखा जाए तो वे जितने कमजोर होते, वार्ता

प्रक्रिया उतनी ही कमजोर होती। शत्रु से शांति स्थापित करने के लिए उसके साथ मिलकर काम करना पड़ता है, और वह शत्रु ही आपका सहयोगी बन जाता है।

हालांकि राष्ट्रीय सभा के लिए आधिकारिक चुनाव प्रचार फरवरी 1994 तक शुरू नहीं होना था, लेकिन नए संविधान के पारित होने के बाद हमने गंभीरता से चुनाव प्रचार शुरू कर दिया। इससे हमें कोई बढ़त नहीं मिली; नेशनल पार्टी ने तो मुझे जेल से रिहा करने के दिन ही अपना चुनाव प्रचार शुरू कर दिया था।

हालांकि चुनावों में एएनसी को अच्छी बढ़त दिखाई दे रही थी, फिर भी हमने जीत को कभी निश्चित नहीं माना। मैंने सभी को अति आशावादी न होने की सलाह दी। हमने ऐसी दर्जनों पार्टियां पढ़ी थीं जिन्हें जीतने का प्रबल दावेदार माना जा रहा था, लेकिन वे दूसरे स्थान पर रहीं। हमारा सामना एक अनुभवी, सुसंगठित और पर्याप्त धन संपन्न प्रतिद्वंद्वी से था।
हमारा अभियान पोपो मोलेफे, टेरर लेकोटा और केत्सो गोर्धन के कुशल नेतृत्व में था, जो सभी अनुभवी यूडीएफ कार्यकर्ता थे और जन लामबंदी में माहिर थे। यह एक चुनौतीपूर्ण कार्य था। हमारा अनुमान था कि बीस मिलियन से अधिक लोग मतदान करने जाएंगे, जिनमें से अधिकांश पहली बार मतदान कर रहे होंगे। हमारे कई मतदाता निरक्षर थे और मतदान के विचार मात्र से ही भयभीत हो सकते थे। स्वतंत्र चुनाव आयोग के अनुसार, देश भर में दस हजार मतदान केंद्र होंगे। हमने मतदाता शिक्षा में सहायता के लिए एक लाख से अधिक लोगों को प्रशिक्षित करने का लक्ष्य रखा था।
हमारे चुनावी अभियान का पहला चरण जन मंचों के नाम से जाना जाता था। एएनसी के उम्मीदवार पूरे देश में यात्रा करते और कस्बों व गांवों में सभाएं आयोजित करते ताकि लोगों की आशाओं और आशंकाओं, विचारों और शिकायतों को सुन सकें। जन मंच, राष्ट्रपति पद की दौड़ में शामिल उम्मीदवार बिल क्लिंटन द्वारा अमेरिका में आयोजित की गई नगर सभाओं के समान थे। ये मंच जनता की संसद थे, ठीक वैसे ही जैसे मैंने बचपन में देखा था, जब वे ग्रेट प्लेस में सरदारों की सभाएं आयोजित करते थे।
मुझे जन मंचों में भाग लेने में बहुत आनंद आया। मैंने नवंबर में नेटाल से शुरुआत की और फिर पीडब्ल्यूवी क्षेत्र, उत्तरी ट्रांसवाल और ऑरेंज फ्री

स्टेट गया। मैंने एक दिन में तीन या चार मंचों में भाग लिया। लोगों ने भी इनका भरपूर आनंद लिया। उनके अपने देश में क्या किया जाना चाहिए, इस बारे में उनकी राय जानने के लिए पहले कभी कोई नहीं आया था।
मंचों से मिले सुझावों को शामिल करने के बाद, हमने देश भर में यात्रा करके लोगों तक अपना संदेश पहुँचाया। एएनसी के कुछ लोग इस अभियान को केवल एक मुक्ति चुनाव बनाना चाहते थे और लोगों से कहना चाहते थे: हमें वोट दें क्योंकि हमने आपको आज़ाद किया है। इसके बजाय, हमने उन्हें उस दक्षिण अफ्रीका की परिकल्पना प्रस्तुत करने का निर्णय लिया जिसे हम साकार करना चाहते थे। हम चाहते थे कि लोग एएनसी को केवल इसलिए वोट न दें क्योंकि हमने अस्सी वर्षों तक रंगभेद के खिलाफ लड़ाई लड़ी थी, बल्कि इसलिए भी कि हम उस तरह के दक्षिण अफ्रीका को साकार करने के लिए सबसे योग्य थे जिसमें वे रहना चाहते थे। मुझे लगा कि हमारा अभियान भविष्य के बारे में होना चाहिए, न कि अतीत के बारे में।
एएनसी ने पुनर्निर्माण और विकास कार्यक्रम के नाम से एक 150 पृष्ठों का दस्तावेज़ तैयार किया, जिसमें सार्वजनिक कार्यों के माध्यम से रोज़गार सृजन, बिजली और फ्लश शौचालयों से सुसज्जित दस लाख नए घर बनाने, सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों को प्राथमिक स्वास्थ्य सेवा और दस वर्षों की निःशुल्क शिक्षा प्रदान करने, भूमि दावा न्यायालय के माध्यम से भूमि का पुनर्वितरण करने और बुनियादी खाद्य पदार्थों पर मूल्य वर्धित कर (वैल्यू एडेड टैक्स) समाप्त करने की हमारी योजना का विवरण दिया गया था। हम निजी और सार्वजनिक दोनों क्षेत्रों में व्यापक सकारात्मक कार्रवाई उपायों के लिए भी प्रतिबद्ध थे। इस दस्तावेज़ को "सभी के लिए बेहतर जीवन" नामक एक सरल घोषणापत्र में रूपांतरित किया गया, जो बाद में एएनसी का चुनावी नारा बन गया।
जिस तरह हमने लोगों को बताया कि हम क्या कर सकते हैं, उसी तरह मुझे लगा कि हमें उन्हें यह भी बताना चाहिए कि हम क्या नहीं कर सकते। कई लोगों को लगा कि स्वतंत्र और लोकतांत्रिक चुनाव के बाद रातोंरात जीवन बदल जाएगा, लेकिन ऐसा बिल्कुल नहीं था। अक्सर मैं भीड़ से कहता था, "चुनाव के अगले दिन मर्सिडीज चलाने या अपने घर के पिछवाड़े में स्विमिंग पूल में तैरने की उम्मीद मत करो।" मैंने अपने समर्थकों से कहा, "जीवन में कोई बड़ा बदलाव नहीं आएगा, बस इतना होगा कि आपका आत्मविश्वास बढ़ेगा और आप अपने देश के

नागरिक बन जाएंगे। आपको धैर्य रखना होगा। परिणाम देखने के लिए आपको पांच साल तक इंतजार करना पड़ सकता है।" मैंने उन्हें चुनौती दी; मैंने उन्हें उपदेश नहीं दिया: "अगर आप बिना कपड़ों और खाने के गरीबी में जीना चाहते हैं," मैंने उनसे कहा, "तो जाओ और शराबखानों में शराब पियो। लेकिन अगर आप बेहतर जीवन चाहते हैं, तो आपको कड़ी मेहनत करनी होगी। हम आपके लिए सब कुछ नहीं कर सकते; आपको खुद करना होगा।"
मैंने श्वेत श्रोताओं से कहा कि हमें उनकी ज़रूरत है और हम नहीं चाहते कि वे देश छोड़कर जाएँ। वे भी हमारी ही तरह दक्षिण अफ़्रीकी थे और यह उनकी भी ज़मीन थी। मैंने रंगभेद की भयावहता के बारे में खुलकर बात की, लेकिन मैंने बार-बार यही कहा कि हमें अतीत को भुलाकर सभी के लिए एक बेहतर भविष्य बनाने पर ध्यान केंद्रित करना चाहिए।
प्रत्येक रैली का उद्देश्य लोगों को मतदान करना सिखाना भी था। मतपत्र एक लंबा, पतला कागज़ का टुकड़ा होता था, जिस पर बाईं ओर घटते क्रम में पार्टियों के नाम लिखे होते थे, और दाईं ओर पार्टी का प्रतीक चिन्ह और उसके नेता का चित्र होता था। मतदाताओं को अपनी पसंद की पार्टी के आगे बने बॉक्स में X का निशान लगाना होता था। मैं श्रोताओं से कहता था, “चुनाव के दिन, अपने मतपत्र को ध्यान से देखें और जब आपको किसी युवा और आकर्षक पुरुष का चेहरा दिखे, तो उस पर X का निशान लगा दें।”

113

स्वतंत्रता का मार्ग आसान नहीं था। यद्यपि नव वर्ष में अंतरिम कार्यकारी परिषद ने कार्य करना शुरू कर दिया था, फिर भी कुछ दलों ने इसमें भाग लेने से इनकार कर दिया। इंकाथा ने चुनाव में भाग लेने से इनकार कर दिया और प्रतिरोध की राजनीति में जुट गई। राजा ज़्वेलिथिनी ने, प्रमुख बुथेलेज़ी के समर्थन से, एक स्वायत्त और संप्रभु क्वाज़ुलू की मांग की और अपने प्रांत के सभी लोगों को मतदान करने से हतोत्साहित किया। श्वेत दक्षिणपंथियों ने चुनावों को विश्वासघात करार दिया और एक लोकराज्य (वोल्कस्टाट) की मांग की, लेकिन उन्होंने अभी तक यह तय नहीं किया था कि यह कहाँ स्थित होगा या कैसे कार्य करेगा। पूरे दक्षिण अफ्रीका में एक भी ऐसा मजिस्ट्रेट जिला नहीं था जहाँ श्वेत आबादी बहुमत में हो।
12 फरवरी, 1994, सभी दलों के पंजीकरण की अंतिम तिथि थी, और उस दिन इंकाथा, कंज़र्वेटिव पार्टी और अफ़्रीकानर वोल्क्सफ्रंट ने हस्ताक्षर नहीं किए। बोफ़ुथात्सवाना होमलैंड की सरकार ने भी भाग लेने से इनकार कर दिया और एकीकृत दक्षिण अफ़्रीका में पुनः विलय का विरोध किया। मुझे इस बात से चिंता हुई कि ये महत्वपूर्ण समूह भाग नहीं ले रहे थे। उन्हें साथ लाने के लिए, हमने कुछ महत्वपूर्ण समझौते प्रस्तावित किए: हम प्रांतीय और राष्ट्रीय विधानसभाओं के लिए दोहरे मतदान के उपयोग पर सहमत हुए; प्रांतों को अधिक शक्तियाँ प्रदान करने की गारंटी दी; नेटाल प्रांत का नाम बदलकर क्वाज़ुलु/नेटाल कर दिया गया; और यह पुष्टि की गई कि समान सांस्कृतिक और भाषाई विरासत साझा करने वाले समूहों के लिए संविधान में "आंतरिक" आत्मनिर्णय का सिद्धांत शामिल किया जाएगा।
मैंने 1 मार्च को डरबन में चीफ बुथेलेज़ी से मिलने का इंतज़ाम किया। इस मुलाकात से पहले एक रैली में मैंने कहा, "जो लोग हमारे देश को खून-खराबे में घसीटना चाहते हैं, मैं उनके सामने घुटने टेककर भीख मांगूंगा।" चीफ बुथेलेज़ी ने संवैधानिक मुद्दों पर हमारे मतभेदों को अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के ज़रिए सुलझाने के वादे के बदले में चुनाव के लिए अस्थायी रूप से पंजीकरण कराने पर सहमति जताई। मैंने सहर्ष इस पर अपनी सहमति दे दी।

अंतिम पंजीकरण की समय सीमा से पहले, जनरल विल्जोएन ने भी फ्रीडम फ्रंट नामक एक नई पार्टी के तहत पंजीकरण करा लिया।
बोफुथात्सवाना के राष्ट्रपति लुकास मंगोपे ने भले ही अपने क्षेत्र को चुनाव से दूर रखने का फैसला किया था, लेकिन घटनाक्रम ने जल्द ही स्थिति बदल दी। मैंने उनसे कई बार बात की और उनसे आग्रह किया कि वे अपने लोगों को फैसला करने दें, लेकिन उन्होंने मेरी बात नहीं मानी। जो लोग चुनाव में भाग लेना चाहते थे, उन्होंने बड़े पैमाने पर प्रदर्शन और हड़तालें शुरू कर दीं, जो जल्द ही बोफुथात्सवाना की सरकारी सेवाओं तक फैल गईं। रेडियो और टेलीविजन नेटवर्क बंद हो गए। माफिकेंग की सड़कों पर, बोफुथात्सवाना की पुलिस और हड़ताली श्रमिकों और छात्रों के बीच झड़पें हुईं। मंगोपे ने अपने श्वेत दक्षिणपंथी सहयोगियों से सैन्य सहायता मांगी। जल्द ही, उनकी अपनी सेना ने उनका साथ छोड़ दिया और मार्च की शुरुआत में एक तख्तापलट में उन्हें सत्ता से हटा दिया गया। कुछ हफ्तों बाद, सिस्केई के ब्रिगेडियर गोज़ो ने आत्मसमर्पण कर दिया और दक्षिण अफ्रीका से बोफुथात्सवाना का नियंत्रण अपने हाथ में लेने का अनुरोध किया।
नेटाल में हिंसा और बढ़ गई। इंकाथा समर्थकों ने नेटाल में हमारे चुनाव प्रचार प्रयासों में बाधा डाली। एएनसी के पोस्टर लगाने के बाद पंद्रह एएनसी चुनाव कार्यकर्ताओं को गोली मारकर और काटकर मार डाला गया। मार्च में, न्यायाधीश जोहान क्रिग्लर ने मुझे और श्री डी क्लर्क को बताया कि क्वाज़ुलू सरकार के असहयोग के कारण, प्रत्यक्ष राजनीतिक हस्तक्षेप के बिना वहां स्वतंत्र चुनाव नहीं हो सकते। नेटाल में अपनी ताकत दिखाने के लिए, एएनसी ने डरबन के केंद्र से होते हुए एक विशाल जुलूस निकाला। फिर इंकाथा ने जोहान्सबर्ग में भी ऐसा ही करने का प्रयास किया, जिसके भयावह परिणाम हुए।
28 मार्च को, हजारों इंकथा सदस्य भाले और लाठियाँ लहराते हुए जोहान्सबर्ग से होते हुए शहर के केंद्र में एक रैली के लिए निकले। उसी समय, इंकथा के एक सशस्त्र समूह ने एएनसी मुख्यालय, शेल हाउस में घुसने का प्रयास किया, लेकिन सशस्त्र गार्डों ने उन्हें खदेड़ दिया। शहर के केंद्र में अज्ञात बंदूकधारियों ने भी गोलियाँ चलाईं, जिनमें कुल मिलाकर तिरपन लोग मारे गए। यह एक भयावह दृश्य था जिससे ऐसा लग रहा था मानो दक्षिण अफ्रीका आंतरिक

युद्ध के कगार पर खड़ा हो। इंकथा चुनाव स्थगित करने का प्रयास कर रही थी, लेकिन न तो श्री डी क्लर्क और न ही मैं टस से मस हुए। वह दिन पवित्र था। मैंने अंतरराष्ट्रीय मध्यस्थता के लिए सहमति दे दी थी, और 13 अप्रैल को पूर्व ब्रिटिश विदेश सचिव लॉर्ड कैरिंगटन और पूर्व अमेरिकी विदेश मंत्री हेनरी किसिंजर के नेतृत्व में एक प्रतिनिधिमंडल पहुंचा। लेकिन जब इंकाथा को बताया गया कि चुनाव की तारीख मध्यस्थता के अधीन नहीं है, तो उन्होंने मध्यस्थों से मिलने से इनकार कर दिया, जो बिना किसी से बात किए चले गए। अब चीफ बुथेलेज़ी को पता चल गया था कि चुनाव हर हाल में होगा। 19 अप्रैल को, चुनाव से ठीक एक सप्ताह पहले, चीफ बुथेलेज़ी ने ज़ुलू राजशाही के लिए संवैधानिक भूमिका के प्रस्ताव को स्वीकार कर लिया और चुनाव में भाग लेने के लिए सहमत हो गए।

मतदान से दस दिन पहले, श्री डी क्लर्क और मैंने टेलीविजन पर अपनी एकमात्र बहस की। फोर्ट हरे में मैं एक अच्छा वाद-विवादकर्ता था, और संगठन में अपने शुरुआती वर्षों में मैंने मंच पर कई जोशीली बहसों में भाग लिया था। रॉबेन द्वीप पर, चूना पत्थर तराशते हुए हमने अपने वाद-विवाद कौशल को निखारा था। मैं आत्मविश्वास से भरा था, लेकिन उससे एक दिन पहले, हमने एक नकली बहस की जिसमें पत्रकार एलिसटर स्पार्क्स ने श्री डी क्लर्क की भूमिका बखूबी निभाई। मेरे अभियान सलाहकारों के अनुसार, उन्होंने कुछ ज़्यादा ही बखूबी निभाई, क्योंकि उन्होंने मुझे बहुत धीरे बोलने और पर्याप्त आक्रामक न होने के लिए फटकार लगाई।
लेकिन जब असल बहस का समय आया, तो मैंने नेशनल पार्टी पर कड़ा प्रहार किया। मैंने नेशनल पार्टी पर केप द्वीप समूह में अश्वेतों और अफ्रीकियों के बीच नस्लीय नफरत भड़काने का आरोप लगाया। आरोप था कि पार्टी ने एक भड़काऊ कॉमिक बुक बांटी थी जिसमें लिखा था, "एक अश्वेत को मारो, एक किसान को मारो।" मैंने कहा, “इस देश में नई नेशनल पार्टी जितनी विभाजनकारी कोई और संस्था नहीं है।” जब श्री डी क्लर्क ने एएनसी की आवास और सामाजिक कार्यक्रमों पर अरबों डॉलर खर्च करने की योजना की आलोचना की, तो मैंने उन्हें फटकार लगाते

हुए कहा कि वे इस बात से चिंतित हैं कि हमें अपने इतने सारे संसाधन अश्वेतों पर खर्च करने पड़ेंगे।
लेकिन जैसे-जैसे बहस समाप्त होने वाली थी, मुझे लगा कि मैंने उस व्यक्ति के प्रति कुछ ज़्यादा ही कठोर रुख अपना लिया है जो राष्ट्रीय एकता की सरकार में मेरा सहयोगी बनने वाला था। अंत में, मैंने कहा, “श्री डी क्लर्क और मेरे बीच हुई बातचीत से एक महत्वपूर्ण तथ्य को नज़रअंदाज़ नहीं किया जाना चाहिए। मेरा मानना है कि हम पूरी दुनिया के लिए एक शानदार उदाहरण हैं, उन लोगों के लिए जो विभिन्न नस्लीय समूहों से आते हैं, लेकिन अपने देश के प्रति एक समान निष्ठा और प्रेम रखते हैं…। श्री डी क्लर्क की आलोचना के बावजूद,” मैंने कहा, और फिर उनकी ओर देखते हुए कहा, “महोदय, आप उन लोगों में से एक हैं जिन पर मुझे भरोसा है। हम इस देश की समस्या का मिलकर सामना करेंगे।” यह कहते हुए मैंने उनका हाथ थाम लिया और कहा, “आगे बढ़ने के लिए आपका हाथ थामने में मुझे गर्व है।” श्री डी क्लर्क आश्चर्यचकित तो हुए, लेकिन प्रसन्न भी हुए।

114

मैंने 27 अप्रैल को मतदान किया, जो मतदान के चार दिनों में से दूसरा दिन था। मैंने नेटाल में मतदान करना चुना ताकि उस विभाजित प्रांत के लोगों को यह दिखाया जा सके कि मतदान केंद्रों पर जाने में कोई खतरा नहीं है। मैंने डरबन के ठीक उत्तर में स्थित हरे-भरे और पहाड़ी कस्बे इनांडा के ओहलांगे हाई स्कूल में मतदान किया, क्योंकि वहीं एएनसी के पहले अध्यक्ष जॉन डूबे को दफनाया गया था। इस अफ्रीकी देशभक्त ने 1912 में संगठन की स्थापना में मदद की थी, और उनकी समाधि के पास अपना वोट डालना इतिहास का एक पूर्ण चक्र था, क्योंकि उन्होंने बयासी साल पहले जो मिशन शुरू किया था, वह पूरा होने वाला था।
जब मैं नीचे स्थित छोटे से विद्यालय से ऊपर एक ऊँची जगह पर उनकी कब्र के पास खड़ा था, तो मैं वर्तमान के बारे में नहीं, बल्कि अतीत के बारे में सोच रहा था। जब मैं मतदान केंद्र की ओर चल रहा था, तो मेरा मन उन नायकों के बारे में सोच रहा था जिन्होंने मेरे लिए उस दिन अपनी जान गंवाई थी, उन पुरुषों और महिलाओं के बारे में जिन्होंने उस उद्देश्य के लिए सर्वोच्च बलिदान दिया था जो अब अंततः सफल हो रहा था। मैंने ओलिवर टैम्बो, क्रिस हानी, चीफ लुथुली और ब्रैम फिशर के बारे में सोचा। मैंने अपने महान अफ्रीकी नायकों के बारे में सोचा, जिन्होंने बलिदान दिया ताकि लाखों दक्षिण अफ्रीकी उस दिन मतदान कर सकें; मैंने जोशिया गुमेडे, जी. एम. नाइकर, डॉ. अब्दुल्ला अब्दुर्रहमान, लिलियन न्गोयी, हेलेन जोसेफ, यूसुफ दादू, मूसा कोटाने के बारे में सोचा। मैं 27 अप्रैल को उस मतदान केंद्र में अकेला नहीं गया था; मैं उन सभी के साथ अपना वोट डाल रहा था।
मतदान केंद्र में प्रवेश करने से पहले ही, एक बेपरवाह पत्रकार ने मुझसे पूछा, “श्रीमान मंडेला, आप किसे वोट दे रहे हैं?” मैं हँस पड़ा। मैंने कहा, “आप जानते हैं, मैं सुबह से इस चुनाव को लेकर बहुत परेशान हूँ।” मैंने एएनसी अक्षरों के आगे वाले बॉक्स में एक निशान लगाया और फिर अपने मुड़े हुए मतपत्र को एक साधारण लकड़ी के बक्से में डाल दिया; मैंने अपने जीवन का पहला वोट डाल दिया था।

उस दिन मतदान केंद्रों पर गए दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के दृश्य मेरी स्मृति में बसे हुए हैं। कस्बों और शहरों की कच्ची सड़कों और गलियों में धैर्यपूर्वक लोगों की लंबी-लंबी कतारें; वे बूढ़ी औरतें जिन्होंने अपना पहला वोट डालने के लिए आधी सदी तक इंतज़ार किया था, कह रही थीं कि उन्हें अपने जीवन में पहली बार इंसान होने का एहसास हुआ; श्वेत पुरुष और महिलाएं कह रहे थे कि उन्हें अंततः एक स्वतंत्र देश में रहने पर गर्व है। मतदान के उन दिनों में राष्ट्र का वातावरण उत्साहपूर्ण था। हिंसा और बम विस्फोट थम गए थे, और ऐसा लग रहा था मानो हमारा राष्ट्र पुनर्जन्म ले चुका हो। मतदान की व्यवस्था में आई कठिनाइयों, गुम हुए मतपत्रों, अवैध मतदान केंद्रों और कुछ स्थानों पर धोखाधड़ी की अफवाहों के बावजूद भी लोकतंत्र और न्याय की इस ज़बरदस्त जीत पर कोई असर नहीं पड़ा।
नतीजों की गिनती में कई दिन लग गए। हमें राष्ट्रीय स्तर पर 62.6 प्रतिशत वोट मिले, जो कि दो-तिहाई बहुमत से थोड़ा कम था। अगर हम अन्य पार्टियों के समर्थन के बिना अंतिम संविधान पारित करना चाहते, तो हमें दो-तिहाई बहुमत की आवश्यकता होती। इस प्रतिशत के आधार पर हम राष्ट्रीय सभा की 400 सीटों में से 252 सीटों के लिए योग्य हो गए। एएनसी ने उत्तरी और पूर्वी ट्रांसवाल, उत्तर-पश्चिम, पूर्वी केप और फ्री स्टेट में पूर्णतः वर्चस्व स्थापित किया। पश्चिमी केप में हमें 33 प्रतिशत वोट मिले, जिसे नेशनल पार्टी ने जीता, जिसने अश्वेत मतदाताओं के बीच बेहद अच्छा प्रदर्शन किया। क्वाज़ुलु/नताल में हमें 32 प्रतिशत वोट मिले, जिसे इंकाथा ने जीता। नताल में हिंसा और धमकियों के डर से हमारे कई मतदाता घर पर ही रहे। मतदान में धोखाधड़ी और धांधली के आरोप भी लगे। लेकिन अंत में, इससे कोई फर्क नहीं पड़ा। हमने क्वाज़ुलु में इंकाथा की ताकत को कम आंका था, और उन्होंने चुनाव के दिन इसे साबित कर दिया।
एएनसी के कुछ लोग इस बात से निराश थे कि हमें दो-तिहाई बहुमत नहीं मिला, लेकिन मैं उनमें से नहीं था। वास्तव में, मुझे राहत मिली थी; अगर हमें दो- तिहाई बहुमत मिल जाता और हम दूसरों के सुझावों से मुक्त होकर संविधान लिख पाते, तो लोग कहते कि हमने एएनसी का संविधान बनाया है, न कि दक्षिण अफ्रीका का संविधान। मैं एक सच्ची राष्ट्रीय एकता वाली सरकार चाहता था।

2 मई की शाम को, श्री डी क्लर्क ने एक विनम्र हार स्वीकारोक्ति भाषण दिया। तीन शताब्दियों से अधिक के शासन के बाद, श्वेत अल्पसंख्यक हार मानकर सत्ता अश्वेत बहुसंख्यक को सौंप रहे थे। उस शाम, एएनसी ने जोहान्सबर्ग के कार्लटन होटल के बैंक्वेट हॉल में विजय समारोह की योजना बनाई थी। मैं ज़ुकाम से बुरी तरह पीड़ित था और मेरे डॉक्टरों ने मुझे घर पर रहने का आदेश दिया था। लेकिन ऐसी कोई बात नहीं थी जो मुझे उस पार्टी से दूर रख सके। मैं लगभग नौ बजे मंच पर गया और मेरे सामने खुश, मुस्कुराते और जयकार करते चेहरों की भीड़ थी।
मैंने भीड़ को समझाया कि सर्दी के कारण मेरी आवाज बैठ गई है और मेरे डॉक्टर ने मुझे कार्यक्रम में न आने की सलाह दी है। मैंने उनसे कहा, "मुझे उम्मीद है कि आप उन्हें यह नहीं बताएंगे कि मैंने उनके निर्देशों का उल्लंघन किया है।" मैंने श्री डी क्लर्क को उनके शानदार प्रदर्शन के लिए बधाई दी। मैंने एएनसी और लोकतांत्रिक आंदोलन के उन सभी लोगों को धन्यवाद दिया जिन्होंने इतने लंबे समय तक इतनी मेहनत की थी। उस रात मंच पर महान स्वतंत्रता सेनानी मार्टिन लूथर किंग जूनियर की पत्नी श्रीमती कोरेटा स्कॉट किंग मौजूद थीं, और मैंने उनके पति के अमर शब्दों का जिक्र करते हुए उनकी ओर देखा।

यह हमारे देश के जीवन के सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में से एक है। मैं यहाँ आपके समक्ष अत्यंत गौरव और आनंद से परिपूर्ण होकर खड़ा हूँ—इस देश के साधारण, विनम्र लोगों पर गर्व। आपने इस देश को अपना बनाने के लिए ऐसा शांत, धैर्यपूर्ण दृढ़ संकल्प दिखाया है, और अब वह खुशी है जिसे हम खुलेआम घोषित कर सकते हैं—आखिरकार आज़ाद! आखिरकार आज़ाद! मैं आपके साहस से अभिभूत होकर, आप सभी के लिए प्रेम से भरे हृदय के साथ आपके समक्ष खड़ा हूँ। हमारे इतिहास के इस मोड़ पर एएनसी का नेतृत्व करना मेरे लिए सर्वोच्च सम्मान की बात है। मैं आपका सेवक हूँ…। यहाँ व्यक्ति मायने नहीं रखते, बल्कि सामूहिक प्रयास मायने रखता है…। यह पुराने घावों को भरने और एक नए दक्षिण अफ्रीका का निर्माण करने का समय है।

जैसे ही चुनाव परिणाम घोषित हुए और यह स्पष्ट हो गया कि एएनसी सरकार बनाएगी, मैंने अपना मिशन सुलह का प्रचार करना, देश के घावों को भरना और

विश्वास व भरोसा जगाना बना लिया। मैं जानता था कि बहुत से लोग, विशेषकर अल्पसंख्यक, श्वेत, अश्वेत और भारतीय, भविष्य को लेकर चिंतित होंगे और मैं चाहता था कि वे सुरक्षित महसूस करें। मैंने लोगों को बार-बार याद दिलाया कि मुक्ति संघर्ष किसी एक समूह या रंग के विरुद्ध लड़ाई नहीं थी, बल्कि दमनकारी व्यवस्था के विरुद्ध लड़ाई थी। हर अवसर पर मैंने कहा कि सभी दक्षिण अफ़्रीकी नागरिकों को अब एकजुट होना चाहिए, हाथ मिलाना चाहिए और कहना चाहिए कि हम एक देश हैं, एक राष्ट्र हैं, एक लोग हैं, और साथ मिलकर भविष्य की ओर बढ़ रहे हैं।

115

10 मई की सुबह सुहावनी और साफ थी। पिछले कुछ दिनों से, उद्घाटन समारोह से पहले श्रद्धांजलि अर्पित करने आ रहे गणमान्य व्यक्तियों और विश्व नेताओं ने मुझे सुखद रूप से घेर लिया था। यह उद्घाटन समारोह दक्षिण अफ्रीका की धरती पर अंतरराष्ट्रीय नेताओं का अब तक का सबसे बड़ा जमावड़ा होगा।
यह समारोह प्रिटोरिया में यूनियन बिल्डिंग्स द्वारा निर्मित खूबसूरत बलुआ पत्थर के एम्फीथिएटर में आयोजित किया गया। दशकों तक यह श्वेत वर्चस्व का केंद्र रहा था, और अब यह दक्षिण अफ्रीका की पहली लोकतांत्रिक, गैर-नस्लीय सरकार की स्थापना के लिए विभिन्न रंगों और राष्ट्रों के इंद्रधनुषी जमावड़े का स्थल था।
उस खूबसूरत शरद ऋतु के दिन, मेरी बेटी ज़ेनानी मेरे साथ थी। मंच पर, सबसे पहले श्री डी क्लर्क ने द्वितीय उप-राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। फिर थाबो म्बेकी ने प्रथम उप-राष्ट्रपति के रूप में शपथ ली। जब मेरी बारी आई, तो मैंने संविधान का पालन करने और उसे कायम रखने तथा गणतंत्र और उसके लोगों के कल्याण के लिए स्वयं को समर्पित करने की शपथ ली। उपस्थित अतिथियों और दुनिया भर के दर्शकों से मैंने कहा:

आज हम सब यहाँ अपनी उपस्थिति से नवजात स्वतंत्रता को गौरव और आशा प्रदान कर रहे हैं। एक असाधारण मानवीय आपदा के लंबे दौर से गुज़रने के बाद, एक ऐसे समाज का जन्म होगा जिस पर समस्त मानवता को गर्व होगा।
…हम, जो कुछ समय पहले तक भगोड़े थे, आज हमें यह दुर्लभ अवसर प्राप्त हुआ है।
विश्व के विभिन्न देशों की मेजबानी करना हमारे लिए सौभाग्य की बात है। हम अपने सभी सम्मानित अंतरराष्ट्रीय अतिथियों का आभार व्यक्त करते हैं कि वे हमारे देश की जनता के साथ न्याय, शांति और मानवीय गरिमा की इस साझा विजय का हिस्सा बनने आए हैं।
अंततः हमने अपनी राजनीतिक मुक्ति प्राप्त कर ली है। हम प्रतिज्ञा करते हैं।

हमें स्वयं को अपने सभी लोगों को गरीबी, अभाव, पीड़ा, लिंगभेद और अन्य भेदभाव के निरंतर बंधन से मुक्त करने के लिए प्रतिबद्ध होना चाहिए। कभी नहीं, कभी नहीं, और फिर कभी नहीं होगा कि यह सुंदर भूमि फिर से
एक दूसरे के उत्पीड़न का अनुभव करना... मानव जाति की इस गौरवशाली उपलब्धि पर कभी सूर्य अस्त नहीं होगा।
स्वतंत्रता की जय हो। ईश्वर अफ्रीका को आशीर्वाद दे!
कुछ क्षण बाद, हम सभी ने विस्मय से अपनी निगाहें ऊपर उठाईं जब दक्षिण अफ़्रीकी जेट विमानों, हेलीकॉप्टरों और सैन्य वाहकों का एक शानदार समूह यूनियन बिल्डिंग्स के ऊपर एकदम सटीक प्रारूप में गर्जना करते हुए गुजरा। यह न केवल सटीक निशाने और सैन्य शक्ति का प्रदर्शन था, बल्कि लोकतंत्र के प्रति, स्वतंत्र और निष्पक्ष रूप से चुनी गई नई सरकार के प्रति सेना की निष्ठा का भी प्रमाण था। कुछ ही क्षण पहले, दक्षिण अफ़्रीकी रक्षा बल और पुलिस के सर्वोच्च जनरलों ने, जिनके सीने पुराने दिनों के रिबन और पदकों से सजे थे, मुझे सलाम किया और अपनी निष्ठा की शपथ ली। मैं इस तथ्य से भलीभांति अवगत था कि कुछ ही वर्ष पूर्व वे मुझे सलाम नहीं करते बल्कि गिरफ्तार कर लेते। अंत में, इम्पाला जेट विमानों के एक समूह ने नए दक्षिण अफ़्रीकी ध्वज के काले, लाल, हरे, नीले, सफेद और सुनहरे रंगों का धुआं छोड़ दिया।
मेरे लिए वह दिन हमारे दोनों राष्ट्रगानों के बजने और गोरों को "न्कोसी सिकेलेल' इअफ़्रीका" तथा अश्वेतों को गणतंत्र के पुराने राष्ट्रगान "डाई स्टेम" गाते देखने के प्रतीक के रूप में था। हालाँकि उस दिन दोनों समूहों को उस राष्ट्रगान के बोल नहीं पता थे, जिसे वे कभी तुच्छ समझते थे, लेकिन जल्द ही उन्हें उसके बोल कंठस्थ हो जाएँगे।

उद्घाटन के दिन, मैं इतिहास की अनुभूति से अभिभूत था। बीसवीं शताब्दी के प्रथम दशक में, भीषण एंग्लो-बोअर युद्ध के कुछ वर्षों बाद और मेरे जन्म से पहले, दक्षिण अफ्रीका के श्वेत चमड़ी वाले लोगों ने अपने मतभेदों को सुलझाया और अपनी ही भूमि के काले चमड़ी वाले लोगों के विरुद्ध नस्लीय वर्चस्व की एक व्यवस्था स्थापित की। उनके द्वारा निर्मित संरचना ने विश्व

मुझे कभी उम्मीद नहीं छोड़ी कि यह महान परिवर्तन होगा। न केवल उन महान नायकों के कारण जिनका मैंने पहले उल्लेख किया है, बल्कि मेरे देश के आम पुरुषों और महिलाओं के साहस के कारण भी। मैं हमेशा से जानता था कि हर इंसान के दिल में गहराई तक दया और उदारता होती है। कोई भी व्यक्ति किसी दूसरे से उसकी त्वचा के रंग, उसकी पृष्ठभूमि या उसके धर्म के कारण नफरत करते हुए पैदा नहीं होता। लोगों को नफरत करना सीखना पड़ता है, और अगर वे नफरत करना सीख सकते हैं, तो उन्हें प्यार करना भी सिखाया जा सकता है, क्योंकि प्यार नफरत से कहीं अधिक स्वाभाविक रूप से इंसान के दिल में बसता है। जेल के सबसे कठिन समय में भी, जब मेरे साथी और मैं अपनी सीमा तक पहुँच चुके थे, तब भी मुझे किसी गार्ड में मानवता की एक झलक दिखाई देती थी, शायद सिर्फ एक पल के लिए, लेकिन वह मुझे आश्वस्त करने और आगे बढ़ने के लिए काफी था। मनुष्य की अच्छाई एक ऐसी लौ है जिसे छिपाया जा सकता है लेकिन कभी बुझाया नहीं जा सकता।
हमने पूरी तरह से सचेत होकर संघर्ष में कदम रखा, इस भ्रम में नहीं कि यह मार्ग आसान होगा। युवावस्था में जब मैं अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस में शामिल हुआ, तो मैंने देखा कि मेरे साथियों ने अपने विश्वासों के लिए कितनी बड़ी कीमत चुकाई। मैंने अपने संघर्ष के प्रति अपनी प्रतिबद्धता पर कभी पछतावा नहीं किया और मैं व्यक्तिगत रूप से प्रभावित होने वाली कठिनाइयों का सामना करने के लिए हमेशा तैयार रहा। लेकिन मेरे परिवार ने एक भयानक कीमत चुकाई, शायद मेरी प्रतिबद्धता के लिए यह कीमत बहुत अधिक थी।
जीवन में प्रत्येक व्यक्ति के दो दायित्व होते हैं - एक अपने परिवार, माता- पिता, पत्नी और बच्चों के प्रति; और दूसरा अपने लोगों, समुदाय और देश के प्रति। एक सभ्य और मानवीय समाज में, प्रत्येक व्यक्ति अपनी रुचि और क्षमता के अनुसार इन दायित्वों को पूरा कर सकता है। लेकिन दक्षिण अफ्रीका जैसे देश में, मेरे जैसे अश्वेत व्यक्ति के लिए इन दोनों दायित्वों को पूरा करना लगभग असंभव था। दक्षिण अफ्रीका में, एक अश्वेत व्यक्ति जो एक इंसान के रूप में जीने का प्रयास करता था, उसे दंडित और अलग-थलग कर दिया जाता था। दक्षिण अफ्रीका में, जो व्यक्ति अपने लोगों के प्रति अपने कर्तव्य को निभाने का प्रयास करता था, उसे अनिवार्य रूप से उसके परिवार और घर से अलग कर दिया जाता था और उसे एकांत जीवन जीने के लिए मजबूर किया जाता था, एक ऐसा अंधकारमय जीवन जो गोपनीयता और विद्रोह से भरा होता था। मैंने शुरू में

अपने लोगों को अपने परिवार से ऊपर नहीं रखा, लेकिन अपने लोगों की सेवा करने के प्रयास में, मैंने पाया कि मुझे एक पुत्र, एक भाई, एक पिता और एक पति के रूप में अपने दायित्वों को पूरा करने से रोका जा रहा था।
इस तरह, अपने लोगों के प्रति, उन लाखों दक्षिण अफ़्रीकी लोगों के प्रति, जिन्हें मैं कभी जान या मिल नहीं पाऊँगा, मेरी प्रतिबद्धता उन लोगों की कीमत पर थी जिन्हें मैं सबसे अच्छी तरह जानता था और सबसे ज़्यादा प्यार करता था। यह उतना ही सरल और फिर भी उतना ही समझ से परे था जितना कि वह क्षण जब एक नन्हा बच्चा अपने पिता से पूछता है, "आप हमारे साथ क्यों नहीं हो सकते?" और पिता को ये भयानक शब्द कहने पड़ते हैं: "तुम्हारे जैसे और भी बच्चे हैं, उनमें से बहुत सारे..." और फिर आवाज़ धीमी हो जाती है।

मैं आज़ादी की भूख के साथ पैदा नहीं हुआ था। मैं जन्म से ही आज़ाद था—हर तरह से आज़ाद, जैसा मैं जान सकता था। अपनी माँ की झोपड़ी के पास खेतों में दौड़ने के लिए आज़ाद, अपने गाँव से बहने वाली साफ़ नदी में तैरने के लिए आज़ाद, तारों के नीचे मक्का भूनने के लिए आज़ाद और धीरे-धीरे चलने वाले बैलों की चौड़ी पीठ पर सवारी करने के लिए आज़ाद। जब तक मैं अपने पिता की आज्ञा मानता था और अपने कबीले के रीति-रिवाजों का पालन करता था, तब तक मुझे न तो मनुष्य के कानूनों से कोई परेशानी थी और न ही ईश्वर के कानूनों से। जब मुझे यह एहसास होने लगा कि मेरे बचपन की आज़ादी एक भ्रम थी, जब एक युवा के रूप में मुझे पता चला कि मेरी आज़ादी मुझसे छीन ली गई है, तभी मेरे मन में इसके लिए तीव्र लालसा जाग उठी। शुरुआत में, एक छात्र के रूप में, मैं केवल अपने लिए आज़ादी चाहता था, क्षणिक आज़ादी, रात में बाहर रहने की आज़ादी, मनचाही किताबें पढ़ने की आज़ादी और जहाँ चाहे वहाँ जाने की आज़ादी। बाद में, जोहान्सबर्ग में एक युवा के रूप में, मैं अपनी क्षमता को साकार करने, अपनी आजीविका कमाने, शादी करने और परिवार बसाने की बुनियादी और सम्मानजनक आज़ादी के लिए तरसने लगा—एक वैध जीवन जीने में बाधा न बनने की आज़ादी।
लेकिन फिर धीरे-धीरे मुझे एहसास हुआ कि न केवल मैं स्वतंत्र नहीं था, बल्कि मेरे भाई-बहन भी स्वतंत्र नहीं थे। मैंने देखा कि केवल मेरी ही स्वतंत्रता सीमित नहीं थी, बल्कि मेरे जैसे दिखने वाले हर व्यक्ति की स्वतंत्रता भी

सीमित थी। तभी मैं अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस में शामिल हुआ, और तभी मेरी अपनी स्वतंत्रता की भूख मेरे लोगों की स्वतंत्रता की भूख में बदल गई। मेरे लोगों को गरिमा और आत्मसम्मान के साथ जीवन जीने की स्वतंत्रता की इसी इच्छा ने मेरे जीवन को प्रेरित किया, एक भयभीत युवक को साहसी बना दिया, एक कानून का पालन करने वाले वकील को अपराधी बना दिया, एक परिवार से प्यार करने वाले पति को बेघर बना दिया, और एक जीवन से प्यार करने वाले व्यक्ति को साधु जैसा जीवन जीने के लिए विवश कर दिया। मैं किसी और से अधिक गुणी या आत्म-त्यागी नहीं हूँ, लेकिन मैंने पाया कि जब मुझे पता था कि मेरे लोग स्वतंत्र नहीं हैं, तो मैं अपनी सीमित स्वतंत्रता का भी आनंद नहीं ले सकता था। स्वतंत्रता अविभाज्य है; मेरे लोगों में से किसी एक पर जो जंजीर थी, वही जंजीर उन सभी पर थी, और मेरे सभी लोगों पर जो जंजीर थी, वही जंजीर मुझ पर थी।
उन्हीं लंबे और एकाकी वर्षों के दौरान, अपने लोगों की स्वतंत्रता की मेरी भूख सभी लोगों, श्वेत और अश्वेत, की स्वतंत्रता की भूख में बदल गई। मैं यह भली-भांति जानता था कि उत्पीड़क को भी उतनी ही स्वतंत्रता मिलनी चाहिए जितनी उत्पीड़ित को। जो व्यक्ति दूसरे की स्वतंत्रता छीनता है, वह घृणा का कैदी होता है, वह पूर्वाग्रह और संकीर्ण मानसिकता की सलाखों में जकड़ा होता है। मैं वास्तव में स्वतंत्र नहीं हूँ यदि मैं किसी और की स्वतंत्रता छीन रहा हूँ, ठीक उसी प्रकार जैसे मैं स्वतंत्र नहीं हूँ जब मेरी स्वतंत्रता मुझसे छीन ली जाती है। उत्पीड़ित और उत्पीड़क, दोनों की मानवता छीन ली जाती है।
जब मैं जेल से बाहर निकला, तो मेरा यही लक्ष्य था - उत्पीड़ितों और उत्पीड़कों दोनों को मुक्त करना। कुछ लोग कहते हैं कि यह लक्ष्य अब पूरा हो चुका है। लेकिन मैं जानता हूँ कि ऐसा नहीं है। सच्चाई यह है कि हम अभी तक पूरी तरह से स्वतंत्र नहीं हुए हैं; हमने केवल स्वतंत्र होने की स्वतंत्रता, उत्पीड़ित न होने का अधिकार प्राप्त किया है। हमने अपनी यात्रा का अंतिम पड़ाव नहीं, बल्कि एक लंबे और उससे भी कठिन मार्ग का पहला कदम रखा है। क्योंकि स्वतंत्र होना केवल अपनी बेड़ियों को तोड़ना नहीं है, बल्कि दूसरों की स्वतंत्रता का सम्मान करते हुए और उसे बढ़ाते हुए जीना है। स्वतंत्रता के प्रति हमारी निष्ठा की असली परीक्षा तो अभी शुरू हुई है।

मैंने आज़ादी की लंबी राह तय कर ली है। मैंने डगमगाने से बचने की पूरी कोशिश की है; रास्ते में मुझसे कई गलतियाँ भी हुई हैं। लेकिन मैंने यह राज़ जान लिया है कि एक बड़ी पहाड़ी चढ़ने के बाद, पता चलता है कि अभी और भी कई पहाड़ चढ़ने बाकी हैं। मैंने यहाँ कुछ पल आराम करने के लिए, अपने चारों ओर फैले भव्य नज़ारे को निहारने के लिए, और अब तक तय की गई दूरी पर नज़र डालने के लिए रुके हैं। लेकिन मैं बस कुछ पल ही आराम कर सकता हूँ, क्योंकि आज़ादी के साथ ज़िम्मेदारियाँ भी आती हैं, और मैं यहाँ ज़्यादा देर नहीं रुक सकता, क्योंकि मेरी लंबी यात्रा अभी खत्म नहीं हुई है।

अनुक्रमणिका

अब्दुरहमान, अब्दुल्ला,
सोथो,
थेम्बू। थेम्बुलैंड/थेम्बू देखें।
लोग
एडम्स, फरीद,
अदीस अबाबा,
अफ्रीकन माइन वर्कर्स यूनियन (एएमडब्ल्यूयू), अफ्रीकन नेशनल कांग्रेस (एएनसी),
कार्रवाई,
समिति,
वार्षिक सम्मेलन,
सशस्त्र विरोध प्रदर्शन, हिंसा नीति, गिरफ्तारी और कारावास
सदस्यों का,
जमानत का मुद्दा,
प्रतिबंध, शाखाएँ,
सविनय अवज्ञा गतिविधियाँ,
जनता की कांग्रेस,
विदेश मिशन, सरकार
दक्षिण अफ्रीका और,
अंतर्राष्ट्रीय गतिविधियाँ, नेतृत्व, सदस्यता,
लामबंदी/
राष्ट्रीय जन आंदोलन
कार्यकारी समिति,
दक्षिण अफ्रीका सरकार के साथ बातचीत, एनएम उप-राष्ट्रपति के रूप में, एनएम अध्यक्ष के रूप में,

एनएम की प्रारंभिक गतिविधियाँ, अहिंसा नीति,
कैद सदस्यों की रिहाई,
एनएम की रिहाई और,
निष्कासन योजनाएँ और
रॉबेन द्वीप पर गतिविधियाँ,
आतंक
ख़िलाफ़,
मतदान अभियान, श्वेत प्रभाव
पर, एएनसी भी देखें और;
साम्यवाद/कम्युनिस्ट पार्टी; स्वतंत्रता चार्टर; एमके; महिला लीग; युवा
संघ
अफ्रीकन पीपुल्स पार्टी (एपीओ), अफ्रीकानर विद्रोह,
अफ्रीकानर पीपुल्स फ्रंट,
अफ्रीकानर प्रतिरोध आंदोलन (एडब्ल्यूबी), अलेक्जेंडर, नेविल,
एलेक्जेंड्रा टाउनशिप,
अल्जीरिया,
अखिल अफ्रीकी सम्मेलन,
ऑल-इन कॉन्फ्रेंस,
या बाका,
बोम्यना
गकालेका,
अमामफेंगु,
म्पेमवु,
मपोडोमिस,
मपोंडोस,
न्गुत्याना,
अंतराष्ट्रिय क्षमा,

अंगोला,
एएनसी विरोधी गठबंधन,
रंगभेद,
शिक्षा और, भव्य,
विधान,
नियमों के विरुद्ध संघर्ष करना, राजद्रोह का मुकदमा और उपचार कैदियों,
अप्रैल, जिमी,
एरोनसोहन, विलियम,
एशियाई भूमि स्वामित्व अधिनियम, हत्याएं,
एस्टोर, डेविड,
अटलांटिक चार्टर,
ऑकैम्प, ब्रिगेडियर,
ऑकैम्प, कर्नल,
औत्शुमाओ,
जॉब, इस्माइल,
अज़ानियन पीपुल्स ऑर्गनाइजेशन,

बियर्ड, फ्रांसेस
बैडेनहॉर्स्ट, पीट,
बाम, फिकिले,
प्रतिबंध/प्रतिबंध आदेश, के विरुद्ध एएनसी, एनएम के खिलाफ,
विनी मंडेला के विरुद्ध,
बंटू क्षेत्र,
बंटू प्राधिकरण/बंटू प्राधिकरण अधिनियम, बंटू शिक्षा अधिनियम,
बंटू स्वशासन अधिनियम,
बंटुस्तान प्रणाली,

बर्नार्ड, नील,
बर्नार्ड (प्रधानमंत्री के सचिव), बासनर, एच.एम., विधि फर्म,
बासनर, हाइमी एम.,
बासोथो लोग,
बेचुआनालैंड पीपुल्स पार्टी, बेफिकडू, वोंडोनी,
बेहंडी, इसहाक,
बेकर, न्यायमूर्ति,
बेन बेला, अहमद,
बेन्सन, मैरी,
बर्नस्टीन, लियोनेल (रस्टी), बेरंगे, वर्नोन,
बेथेल, निकोलस,
बेलेवेल्ड, पीट,
Bhoola, Ahmed,
Bhoolia, Ramlal,
बिशो नरसंहार,
बिज़ोस, जॉर्ज,
ब्लैक कॉन्शियसनेस मूवमेंट (बीसीएम), ब्लैक पेरेंट्स एसोसिएशन,
अश्वेत लोगों का सम्मेलन,
ब्लैक सैश समूह,
Blayi, Banabakhe,
ब्लोमफोंटेन सम्मेलन,
बोएसक, एलन,
बोइपाटोंग नरसंहार,
बोक्सबर्ग,
बोकवे, रोज़बेरी,
पोप, डेविड,
बोफुथात्सवाना,

बॉश, अभियोजक,
बोशिएलो, ध्वज,
Botha, Pik,
बोथा, पी. डब्ल्यू.,
एएनसी पर हमला,
एएनसी के साथ बातचीत,
बोत्सवाना,
बोरगुइबा, हबीब,
ब्रांड, वारंट अधिकारी,
ब्रेगमैन, नैट,
ब्रेझनेव, लियोनिद,
ब्रिटेन,
भाईचारा संगठन,
ब्रूटस, डेनिस,
फूल (विधानमंडल),
राज्य सुरक्षा ब्यूरो (बीओएसएस), बुश, जॉर्ज,
बुथेलेज़ी, मंगोसुथु,

कैचालिया, मौलवी,
Cachalia, Yusuf,
गिरफ्तारी और मुकदमा
Calata, James,
अन्याय के विरुद्ध विद्रोह का अभियान कानून,
केप टाउन,
कार्लसन, जोएल,
कार्नेसन, फ्रेड,
कैरोलस, चेरिल,
कैरिंगटन, लॉर्ड,
सेत्यवायो, राजा,

खान मंडल,
चास्कलसन, आर्थर,
चिबा, लालू,
चिसानो, जोआकिम,
ईसाई धर्म
चर्चिल, विंस्टन,
सीआईए,
खतना समारोह,
नागरिकता का मुद्दा,
सविनय अवज्ञा अभियान,
क्लार्कबरी बोर्डिंग इंस्टीट्यूट, क्लिंटन, बिल,
CODESA (एक लोकतांत्रिक सम्मेलन के लिए, दक्षिण अफ्रीका), देखें
CODESA भी
कोडेसा
कोएत्सी, कोबी,
एएनसी के साथ बातचीत,
रंगभेद अधिनियम,
रंगीन लोगों की कांग्रेस,
Coloreds
यह भी देखें
दक्षिण अफ़्रीकी रंगीन लोगों का संगठन
साम्यवाद/कम्युनिस्ट पार्टी (एसएसीपी) एएनसी और,
प्रतिबंध के विरुद्ध,
खनिकों की हड़ताल और, एमके
और, एनएम और यूथ लीग
विरोध करना,
धर्म और, दक्षिण अफ़्रीकी

विरोध करना,
भूमिगत गतिविधियाँ, श्वेत लोग शामिल,
यह भी देखें: साम्यवाद दमन अधिनियम
कोंको, विल्सन,
कांग्रेस गठबंधन,
डेमोक्रेट्स कांग्रेस (सीओडी),
दक्षिण अफ्रीकी ट्रेड यूनियनों की कांग्रेस, (कोसाटू),
जनता की कांग्रेस,
रूढ़िवादी समुदाय,
संविधान। स्वतंत्रता चार्टर देखें। लोकतांत्रिक दक्षिण अफ्रीका के लिए सम्मेलन। CODESA देखें
कुक, ए. जे.,
कूपर, साथ्स,
कॉर्बेट, माइकल,
आपराधिक कानून संशोधन अधिनियम,
क्राउन माइंस,

दादू, जोसेफ, गिरफ्तारी
और मुकदमा,
डालिगिली,
डालिंड्येबो, जोंगिलिज़वे, डालिंड्येबो, जोंगिनटाबा, डैलिंड्येबो, न्यायमूर्ति, डालिंड्येबो, नोमाफू,
डालिंड्येबो, नेको,
सुप्रभात, शनिवार!
वह दोषी था। देखिए मातांज़िमा, के. डी. डेनियल्स, एडी,
डैश, सैमुअल,

डेविडॉफ, हाइमी,
डेविस, डॉन,
विरोध दिवस
स्वयंसेवकों का दिवस,
अवज्ञा अभियान,
सदस्यों की गिरफ्तारी,
डी क्लर्क, एफ.डब्ल्यू.,
एएनसी वार्ता,
रंगभेद और,
पूरी तरह से श्वेत लोगों के लिए आह्वान जनमत संग्रह, 1994 का चुनाव
और, नोबेल
शांति पुरस्कार, दक्षिण अफ्रीका में हिंसा और,
प्रजातंत्र,
विकास सहायता विभाग,
डर्बी-लुईस, क्लाइव,
डी विलियर्स, डावी,
कानून, क्रिस्टियान,
डी वेट, क्वार्टस,
डियालो, अब्दौले,
दिनाथ, मूसा,
डॉक्टर, माइक,
डिंगाने दिवस,
डलामिनी, पिता,
डॉक्टरों का समझौता,
डोनाल्डसन ऑरलैंडो सामुदायिक केंद्र, डोस सैंटोस, जोस एडुआर्डो,
डगलस-होम, एलेक्स,
डूबे, जॉन,
डु बोइस, डब्ल्यू. ई. बी.,

डंकन, पैट्रिक,
डच सुधार चर्च,

शिक्षा, अफ्रीकी,
जोहान्सबर्ग। जोहान्सबर्ग देखें मिस्र,
चुनाव,
आपातकाल, की स्थिति। राज्य देखें आपातकालीन/आपातकालीन विनियम
प्रवासी थेम्बुलैंड,
इथियोपिया,
इथियोपियाई दंगा बटालियन,
यूरोपीय समुदाय,
विश्वविद्यालय शिक्षा अधिनियम का विस्तार,

फासीवाद,
फ़ैज़ी, हेनरी,
फेरिस, हेनरी,
फेस्टाइल (क्राउन माइंस का बॉस),
सबसे पहले, रूथ,
प्रथम ट्रांसवाल और ऑरेंज मुक्त राज्य जनसभा सभी के लिए मतदान हेतु
फिशर, ब्रैम,
फिशर, मौली,
एफएलएन (अल्जीरियाई प्रतिरोध),
फोर्ट ब्यूफोर्ट,
फोर्ट हरे (यूनिवर्सिटी कॉलेज), फौरी, वार्डर,
फ्रैंक्स, मौरिस,
फ्रेजर, मैल्कम,
स्वतंत्रता चार्टर,

राजद्रोह का मुकदमा
और,
स्वतंत्रता दिवस की हड़ताल, फ्रीडम फ्रंट,
मंडेला को रिहा करने का अभियान, गेट्सवे, जॉन,

गेट्सकेल, ह्यूग,
Gandhi, Mahatma,
Gandhi, Manilal,
गिरोह, अपराधी,
गार्वे, मार्कस,
सामान्य विधि संशोधन अधिनियम, गेरिक, कप्तान,
जर्मनी,
घाना,
बस्ती अधिनियम,
गोल्डबर्ग, डेनिस,
आर्थर गोल्डरिच
गोल्डरिच, हेज़ल,
गोल्डरिच, निकोलस,
गोनीवे, मैथ्यू,
गोर्धन, केत्सो,
गक्वाबी, जो,
अलविदा, ओउपो,
ग्रेगरी, जेम्स,
ग्रिमंड, जो,
समूह क्षेत्र अधिनियम,
समूह अधिकारों का मुद्दा, गुरिल्ला युद्ध,
गिनी

गुमेडे, आर्ची,
गुमेडे, जोशिया,
बात मत करो, हैरी।
ग्वेंटशे, एल्कोट,

हैलो, प्रोफेसर,
हैले सेलासी,
हानी, क्रिस,
हैनसन, हेरोल्ड,
हरारे घोषणापत्र,
हार्मेल, माइकल,
हार्मेल, रे,
हैरिस, सी.,
हील्डटाउन,
हीली, डेनिस,
हेलबर्ग, सार्जेंट,
हेलमैन और मिशेल लॉ फर्म,
हेप्पल, एलेक्स,
हेप्पल, बॉब,
हर्ट्ज़ोग, जे. बी.,
उच्च निकाय। अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस देखें; रोबेन द्वीप की गतिविधियों का इतिहास, अफ्रीकी हॉजसन, जैक,
हैलो लोग,
मातृभूमि से जुड़े मुद्दे,
हडलस्टन, ट्रेवर,
ह्यूजेस, पिता,
हाइनिंग, श्रीमान (अमेरिकी वकील),

आईएमएफकेन,
अनैतिकता अधिनियम,

भारतीय समुदाय,
अफ्रीकियों के साथ साझेदारी,
मतदान करें। दक्षिण अफ़्रीकी भारतीय भी देखें। कांग्रेस; ट्रांसवाल भारतीय
कांग्रेस; ट्रान्सवाल भारतीय युवा कांग्रेस औद्योगिक और वाणिज्यिक श्रमिक संघ (आईसीयू), इंकाथा फ्रीडम पार्टी,
आंतरिक सुरक्षा अधिनियम,
अंतर्राष्ट्रीय रेड क्रॉस,

जाबावु, डी. डी. टी.,
जेकब्स, कर्नल
जस्सात, अब्दुलहाई,
जवाहरलाल नेहरू मानवाधिकार पुरस्कार, जेनोवा की गवाहिंयां,
जेलिमन, श्रीमान,
यहूदियों,
जोफ़े, जोएल,
जोहान्सबर्ग: एनएम का पलायन और
न्यू मैक्सिको में रोजगार भूमिगत गतिविधियाँ,
विरोध प्रदर्शनों में,
जोहान्सबर्ग फोर्ट जेल,
जोन्स, रेवरेंड,
जोंगिनटाबा, प्रमुख,
जोसेफ, हेलेन,
जॉय, ज़्वेलिभांगिले,

कडाली, क्लेमेंट्स,
कैंटर, जिमी,
हैलो, साइमन,

कथराडा, अहमद (कैथी),
एमके और, रॉबेन में
द्वीप पर स्थित जेल,
में
पोल्समूर जेल, वार्ता
सरकार के साथ,
जेल से रिहाई,
Kaunda, Kenneth,
कीट्सिंग, मछली,
केलरमैन, मेजर,
केम्प, जनरल,
केनेडी, न्यायमूर्ति,
केंट्रिज, सिडनी,
केर, अलेक्जेंडर,
ठीक है, कोलाने,
राजकुमार, फिलिप,
शो, बफ़ेलो,
किंग, कोरेटा स्कॉट,
किंग, मार्टिन लूथर जूनियर, किसिंजर, हेनरी,
क्लेन्हांस भाइयों,
कुक, मिस,
कोदेश, वोल्फी,
कोटाने, मूसा,
क्रूगर, जिमी,
क्रूगर, सार्जेंट,
जी हां, एंड्रयू।
क्वाज़ुलू,

स्वतंत्र राज्यों का लागोस सम्मेलन, भूमि अधिनियम,

राष्ट्रों का संघटन,
बीम, गति,
दुकान, फ्रैंक,
दक्षिण अफ़्रीकी कानूनी व्यवस्था भेदभावपूर्ण कानून
के खिलाफ विरोध प्रदर्शन, लीब्रैंड्ट, रोबे,
लेकोटा, पैट्रिक “आतंक,”
लेम्बेडे, एंटोन,
Letele, Arthur,
लेटलाका, त्सेपो,
लेवसन, फ्रेडा,
लेवी, लियोन,
लिबरल पार्टी,
लाइबेरिया,
लिलीज़लीफ फार्म, रिवोनिया, छोटा रिवोनिया ट्रायल,
लोलन, स्टेनली,
लूव, माइक,
लुडोर्फ, न्याय,
लूथरन मिशन,
लुथुली, अल्बर्ट,
निष्कासन-विरोधी अभियान,
और, अध्यक्ष के रूप में
एएनसी,
जनता की कांग्रेस
और, गिरफ्तारी और मुकदमा,
एनएम के राजद्रोह के मुकदमे में, सशस्त्र हिंसा नीति और,
नोबेल शांति पुरस्कार,
एनएम भूमिगत और,

□□□□□, □□□□,
□□□□□□, □□.,
□□□□□□, □□□□□□□ □□□□,
□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□, □□□□,
□□□□□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□, □□□,
□□□□□□□, □□□□□□□,
Maharaj, Mac,
□□□□□□□□, □□□,
□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□ □□□□ □□ □□□□□□,
□□□□,
□□□, □□□□□□□□□,
Makgatho, Sefako Mapogo,
□□□□□□,
□□□□□, □□□□□,
□□□□□□□, □□□□□□□□,
□□□□, □□□□□□
□□□□, □□□□□□,
□□□□□□, □□□□□,
□□□□□□, □□□□□□□□□
□□□□□□, □□□□□ (□□ □□□□),
□□□□□□ □□ □□□□,
□□□□ □□ □□□□□ □□ □□□□□,
□□□□□□, □□□□,
□□□□□□, □□□□,
□□□□□□, □□□□□ □□□□□□□□□□,
□□□□□□, □□□□□□□□ (□□□□ □□ □□□□ □□□□),

मंडेला, मकाज़िवे (एनएम का दूसरा
बेटी),
मंडेला, मकागाथो लेवानिका,
मंडेला, शॉर्ट्स,
मंडेला, वंचित,
मंडेला, नेल्सन रोलीहलाहला: पारिवारिक इतिहास, बचपन और शिक्षा
जोहान्सबर्ग में प्रारंभिक जीवन; कानून शिक्षा और अभ्यास,
एएनसी
संबंध और राजनीति,
एवलिन से विवाह,
मासे परिवार का जीवन और
बच्चों का जन्म,
गिरफ्तारी और मुकदमा (1952),
के विरुद्ध प्रतिबंध,
घर वापसी; राजद्रोह
मुकदमा (1956),
मिलता है और
विनी मैडिकिजेला से शादी करता है। गिरफ्तारी और कारावास
आपातकाल की स्थिति में,
भूमिगत हो जाता है,
एमके के संस्थापक और प्रमुख। अंतर्राष्ट्रीय अभियान,
सैन्य प्रशिक्षण; गिरफ्तारी
और कारावास (1962),
रिवोनिया ट्रायल (1962),
रॉबेन में जेल की सजा शुरू होती है द्वीप; संस्मरण लिखते हैं पोल्समूर जेल में स्थानांतरण,

सशस्त्र प्रतिरोध/
हिंसा नीति, इनकार करती है सशर्त रिहाई; बातचीत
सरकार के साथ,
स्वास्थ्य; विक्टर को स्थानांतरण
वर्स्टर जेल,
बोथा के साथ बैठकें; बैठकें
डी क्लर्क के साथ;
मुक्त करना
जेल से, जेल के बाद
गतिविधियाँ; यूरोपीय और अमेरिकी दौरा; अलगाव विनी; नोबेल शांति पुरस्कार
मंडेला, नोटांकु,
मंडेला, विनी (नी नोमज़ामो,
विनिफ्रेड मैडिकिज़ेला),; मिलती है और
एनएम से शादी; राजनीति
बच्चों का जन्म,
एनएम की जेलों में मुलाक़ातें,
एनएम के मुकदमे में; प्रतिबंध ख़िलाफ़,
गिरफ्तारी और कारावास;
एनएम के साथ विवाह का क्षरण, आंतरिक निर्वासन,
एनएम का
जेल से रिहाई और,
मंडेला, ज़ेनानी,
मंडेला, ज़िंदज़िस्वा,
मंडेला और टैम्बो लॉ फर्म, मंडेला-योजना (एम-प्लान),
मैंगोप, लुकास,
मैनुअल, ट्रेवर,

□□ □□□, □□□□□□□□
□□□ □□□□-□□□□,
□□□□□□□□□, □□□□□□□□,
□□□□□□□, □□□□,
□□□□□□□, □□□□,
□□□□, □□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□□, □□. □□.,
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□,
□□□□□□□□□□□□,
□□□, □□□,
□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□,
□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□□, □□□,
□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□, □□□□,
□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□□ (□□□□□□□ □□□□□□□ □□ □□□□),
□□□□□□□□, □□□□□□□□,
□□□□□□□□ □□□□□□□□□□/□□□□□□ □□□□□□□□□,
□□ □□□□□□□□□□□□□ □□□□□□□ (□□□□□□□),
□□□□□□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□□□□, □□. (□□□□□□□□□) □□. (□□□□□□□□□□□□),
□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□,
□□□□□□□□□, □□,
□□□□□□□□□, □□□□. □□.,
□□□□□□□□□□ □□□□□□□,
□□□□□□□□□□, □□□□,

म्बेकेला, जॉर्ज,
म्बेकेनी, कॉन्स्टेंस,
इसे रखो, लहसुन।
म्बेकी, गोवन,
म्बेकी, थाबो,
म्बोबो, विक्टर,
म्दा, ए. पी. (पीटर),
एमडीए, रोज़,
मडिंगी, प्रमुख,
घास के मैदान,
और, फातिमा,
मोर, इस्माइल,
मेलिगकिली, प्रमुख,
कृपया मना कर दें।
दक्षिण अफ्रीका का मेथोडिस्ट चर्च, मेथोडिस्ट धर्म/चर्च,
मफेंगु लोग,
मगुडलवा, मसुनगुली,
एमजीक्साजी, राजकुमार,
म्हलाबा, रेमंड,
सरकार के साथ बातचीत और,
जेल से रिहाई,
मिशेल, रॉडनी,
मिनी, हैप्पी,
प्रेमी, कर्नल,
फ़्रांस्वा मिटरैंड
शहर, दिलीज़ा,
म्केंटेन, लिंकन,
एमके (उमखोंटो वे सिज़वे– राष्ट्र का भाला; एएनसी
और,

सशस्त्र प्रतिरोध/हिंसा नीति, गिरफ्तारी और सदस्यों को कारावास की सजा देना, स्थापना;
के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन,
के विरुद्ध कानून बनाना,
म्कवेई, विल्टन,
मलांगेनी, एंड्रयू,
बोलो, मैक्स।
मोडिसे, जो,
मोफोकेन्ग, मैकीड,
बेचारा छोटा लड़का, एडविन, मोइलवा, अब्राम,
मोकितिमी, एस.एस.,
मोकोने, एलियाह,
कानून, पैट्रिक,
मोलेफे, सृजन,
लेवी, जो,
मोलेट, आरोन,
मोलेट, जेड. बी.,
मोलेट, ज़ाचरिया,
मोलिफ़, पीटर,
मोलसन, जेरेमिया,
चुड़ैल, जेरी,
मोलोत्सी, जोहान्स (कप्तान, एडोनिस), मोलोत्सी, पीटर,
मोमपाती, रूथ,
मूडली, स्ट्रिनी,
मूला, मोसी,
मूसा, घाटियाँ,
मोरक्को,
मोरोका, जे. एस.,

□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□,
Motala, Dr. Chota,
□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□, □□. □□.,
□□□□□□□, □□□□□□□□□,
□□□□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□□□□□,
□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□,
□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□ □□□□,
□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□,
□□□□□□□□□□, □□□□,
□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□, □□□□,
□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□, □□□□□□□□□□□,
□□□□, □□□□□□□□,
□□□□□□□□□, □□□□□□□,
□□□□□□□□, □□.
□□□□□□□□,
□□□□□□□□□□, □□□□□□□□□□□,

□□□□□, □□.□□. (□□□□□□),
□□□□□□, □□. □□.,
□□□□□□, □□.□□.,

नैर, बिली,
नामीबिया,
नासिर, गमाल अब्देल,
नेटाल,
नेटल इंडियन कांग्रेस (एनआईसी), राष्ट्रीय कार्रवाई समिति, राष्ट्रीय कार्रवाई परिषद, राष्ट्रवाद: अफ्रीकी,
अफ़्रीकानर,
राष्ट्रवादी विचारधारा वाला गुट, राष्ट्रीय पार्टी,
रंगभेद नीति शिक्षा,
नीति, चुनावों में
एएनसी के साथ बातचीत,
पीएसी और, राजद्रोह का मुकदमा और, राष्ट्रीय शांति समझौता, राष्ट्रीय सुरक्षा प्रबंधन प्रणाली, राष्ट्रीय स्वयंसेवक बोर्ड,
मूल निवासी प्रशासन अधिनियम, मूलनिवासी मामलों का विभाग,
मूल निवासी प्रतिनिधि परिषद,
नौडे, बेयर्स,
मुझे खेद है, लॉक।
नेल, कानून,
नया जमाना,
खबर मीडिया,
मैं एक देश का राजा था,
क्षमा, सेल्बी,
अरे, फ्रेडी,
हैलो, ग्रीनवुड,
न्गोयी, लिलियन,

अलविदा, जॉर्डन।
ये मेरे पिता सोलोमन हैं। न्गुबेंगकुका, राजा,
न्गुनी लोग,
न्ग्वेवेला, जॉनसन,
न्हलापो, एनोक,
निकोलस, जी.,
नाइजीरिया,
नब्बे दिन की हिरासत कानून, न्जोंग्वे, जेम्स,
नकाबिनडे, एलेन,
एनकैम्पेनी, जे.,
नकोबी, थॉमस टाइटस,
नकोमो, जोशुआ,
नकोमो, विलियम,
न्क्रुमाह, क्वामे,
नो-इंग्लैंड (एनएम की पालक माँ),
नोकवे, डुमा,
राजद्रोह का मुकदमा और,
गैर-यूरोपीय एकता आंदोलन,
अहिंसा। अफ्रीकी राष्ट्रीय कांग्रेस देखें: अहिंसा नीति;
शांतिवाद; निष्क्रिय प्रतिरोध
समर्थन करो, फैनी,
नथाइट, पीटर,
नटलाबथी, गर्ट्रूड,
एरिक, जुड़े रहिए।
हैलो, सिडनी,
न्येरेरे, जूलियस,
न्ज़ो, अल्फ्रेड,

ओबासांजो, ओलुसेगुन,
ओ'डॉउड, टोनी,
उमर, दुल्लाह,
ऑपरेशन मायिबुये,
ऑपरेशन वूला,
ऑरेंज फ्री स्टेट,
अफ्रीकी एकता संगठन,
सोवेटो का ऑरलैंडो क्षेत्र,

शांतिवाद,
फहद, अमीना,
पूर्वी अफ्रीका के लिए अखिल अफ्रीकी स्वतंत्रता आंदोलन मध्य और दक्षिणी अफ्रीका
(पीएएफएएमईसीएसए),
पैन अफ्रीकनिस्ट कांग्रेस (पीएसी),
एएनसी और,;
साम्यवाद-विरोधी नीति;
प्रतिबंध के विरुद्ध; स्थापना
और प्रभाव;
सदस्यों का कारावास;
रॉबेन द्वीप पर गतिविधियाँ, पांज़ा, न्याय,
निष्क्रिय प्रतिरोध,
पास प्रणाली,
पटेल, कासिम,
पटेल, जुबैदा,
पथर, मसला,
पैटन, एलन,
देशभक्ति मोर्चा,
पीक, जॉर्ज,
जन मंच,

चीनी जनवादी गणराज्य,
किसान, रैंडल,
पीटरसन, हेक्टर,
पिलिसो (क्राउन माइंस में प्रबंधक), पिल्ले, श्रीमती थायनागी,
पिरो, ओसवाल्ड,
पीना, गॉडफ्रे,
पोग्रंड, बेंजामिन,
पोकेला, जॉन,
पुलिस की बर्बरता,
पोलक, वाल्टर,
पोल्समूर जेल,
पोंडोलैंड/पोंडो लोग,
जनसंख्या पंजीकरण अधिनियम, पोर्ट एलिजाबेथ,
प्रिटोरिया,
आर्थिक प्रतिबंधों के विरुद्ध, एनएम की कैद में,
रिवोना ट्रायल,
प्रिटोरिया मिनट,
प्रेटोरियस, लेफ्टिनेंट, प्रिंस, लेफ्टिनेंट,
प्रिंसलू, कर्नल,
कार्य योजना,
प्रगतिशील संघीय पार्टी, मिश्रित विवाह निषेध अधिनियम बंटू स्वशासन का संवर्धन कार्य,
संपत्ति अधिकार,
सार्वजनिक सुरक्षा अधिनियम,

अर्ध-स्वतंत्र मातृभूमियाँ,
कुनु (गांव),

राबोरोको, पीटर,
नस्लवादी नीतियां,
Radebe, Gaur,
रेडियो प्रसारण। समाचार मीडिया देखें; दक्षिण अफ्रीकी प्रसारण निगम
शन
रामैला (जासूस),
रामाफोसा, सिरिल,
रामोहानो, सी.एस.,
करदाता संघ,
पुनर्निर्माण एवं विकास कार्यक्रम, समझौते का रिकॉर्ड,
रीव्स, एम्ब्रोस,
धर्म,
निष्कासन योजनाएँ। देखें सोफियाटाउन को भी हटाया जा रहा है मूलनिवासी प्रतिनिधित्व अधिनियम, पृथक सुविधाओं के आरक्षण अधिनियम Resha, Robert,
रोड्स, सेसिल,
रोडेशिया,
दंगे,
रिवोनिया ट्रायल,
रॉबेन द्वीप कारागार,
एएनसी गतिविधि में,
कैदियों का वर्गीकरण,
कैदियों के बीच संचार,
आपराधिक गिरोह,

दैनिक दिनचर्या,
भूख हड़ताल,
कैदियों का एकांतवास,
डाक और आगंतुक नियम,
शारीरिक श्रम समाप्त होता है। समाचार प्रसारण,
एनएम का पहला कार्यकाल,
एनएम का दूसरा कार्यकाल शुरू होता है, अध्ययन के विशेषाधिकार,
रोलीहलाहला (एनएम का जनजातीय नाम), रोमन कैथोलिक धर्म,
रूजवेल्ट, फ्रैंकलिन डेलानो, रोसेनबर्ग, नॉर्मन,
रम्पफ, एफ. एल.

सब्त। देखें डालिंड्येबो, सब्त तोड़फोड़, आरोप,
तोड़फोड़ अधिनियम,
साकवे, सी. के.,
प्रतिबंध, अंतर्राष्ट्रीय, सैंडिले, राजा,
शेफ़लर, आंद्रे,
स्कूल बहिष्कार,
स्कॉट, माइकल,
सेक्गापेन, नॉर्मन,
सेखुखुने, गॉडफ्रे,
सेखुखुने, मोरोमात्शो,
सेखुखुनेलैंड,
अरे, तुम पिक्सली हो।
सेनेगल,
सेन्घोर, लियोपोल्ड,

श्रीमान सेन (लाल रंग के प्रतिनिधि)
पार करना)
अलग विकास नीति,
मतदाताओं के पृथक प्रतिनिधित्व का विधेयक/कार्य,
सितंबर, रेगी,
सेवेंथ-डे एडवेंटिज्म,
सेक्सवाले, टोक्यो,
शाका,
शार्पविले नरसंहार,
शुल्त्ज़, जॉर्ज,
सिबांडे, गर्ट,
सिडेलस्की, लाजर,
सिंह, देबी,
सिंह, जे. एन.,
सिसुलु, अल्बर्टिना,
सिसुलु, मैक्स,
सिसुलु, वाल्टर,
एनएम और,
राजनीति,
एएनसी और,
गिरफ्तारी और मुकदमा,
प्रतिबंध के विरुद्ध,
जनता की कांग्रेस और,
एमके और,
कैद होना,
परीक्षण,
सरकार के साथ बातचीत,
जेल से रिहाई,
सीता, नाना,
सिवुंडला, स्मॉली,

□□□□, □□,
□□□□ □□,
□□□□ □□,
□□□□□, □□□□,
□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□, □□□,
Sobhuza, King,
□□□□, □□□□□□,
□□□ □□□□,
□□□□□□□□□□ □□ □□□□□,
□□□□ □□□,
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□,
(□□□□□□□)
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□ □□□□□ (□□□□□□□□□),
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ (SACTU),
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□,
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□ □□□□□□□□ (□□□□□□□),
□□□□□ □□
□□□□□ □□□□□□,
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□□□,
□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□ □□□,
□□□□□□-□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□ □□□□□□□□□□□□
(SWAPO),
□□□□□□ □□□,
□□□□□□ (□□□□□□-□□□□□□□ □□□□□□□),
□□□□□ □□□□□□□,
□□□□□□□□□, □□□□□□,
□□□□□□□□, □□□□□,
□□□□□□, □□□□□□□ □□□□□□□□□□
□□□□□□□ □□□□□ □□□□□
□□□□□□□/□□□□□□□□□ □□□□□,

राजद्रोह के मुकदमे पर प्रभाव, उठाया गया,
स्टीवेन्सन, एडलाई,
स्टीन, कर्नल/जनरल,
स्ट्रॉस, जे. जी. एन.,
हड़तालें,
चुनाव (1958),
स्वतंत्रता दिवस,
रॉबेन द्वीप पर धीमी गति से चलें। रोबेन द्वीप पर भुखमरी
खनिकों,
राजद्रोह के मुकदमे के बाद,
दूर रहो,
छात्र ईसाई संघ,
साम्यवाद दमन अधिनियम,
एनएम और,
सुज़ैन, हेलेन,
स्वानपोल, लेफ्टिनेंट,
स्वार्ट, वारंट अधिकारी,
स्वाजीलैंड,

तादेसे, कर्नल,
टैम्बो, एडिलेड,
टैम्बो, ओलिवर,
एएनसी गतिविधियाँ,
एनएम के साथ मित्रता/साझेदारी, निष्कासन-विरोधी अभियान और,
जनता की कांग्रेस और,
गिरफ्तारी और मुकदमा,
1958 के चुनाव में हुई हड़ताल के दौरान, एएनसी के लिए अंतरराष्ट्रीय गतिविधियां,

एमके और,
सरकार के साथ बातचीत,
दक्षिण अफ्रीका लौटना,
मौत,
तंजानिका,
तांत्ज़, एन. बी.,
तंजानिया,
टाटाने, रेक्स,
टेफू, स्टीफन,
टेका, वाल्टर,
टेरब्लैंच, लेफ्टिनेंट,
टेरब्लैंच एंड ब्रिगिश लॉ फर्म, आतंकवाद,
आतंकवाद अधिनियम,
थैचर, मार्गरेट,
थीम, सेलोप,
थेम्बुलैंड/थेम्बु लोग,
थेरॉन, कप्तान,
थेरॉन, एम.ई.,
थुम्बुमुज़ी, राजकुमार,
थुम्बुमुज़ी, ज़ाज़िवे (एनएम का भव्य, बेटी)
टिघी, सारेल,
ट्लोम, डैन,
आशा और आशा, अंडिम्बा,
टॉमलिंसन सामाजिक आयोग-
बंटू समुदाय का आर्थिक विकास क्षेत्र,
ट्रांस्केई,
ट्रांसवाल कार्यकारी समिति, ट्रांसवाल इंडियन कांग्रेस (टीआईसी),

ट्रांसवाल इंडियन यूथ कांग्रेस, ट्रांसवाल लॉ सोसायटी,
यात्रा दस्तावेज़। पास प्रणाली भी देखें। राजद्रोह का मुकदमा,
राजद्रोह मुकदमे की रक्षा निधि, ट्रेंगोव, अधिवक्ता,
जनजातीय एकजुटता,
ट्रूटर, वारंट अधिकारी,
त्शाबलाला, साइमन,
हैलो, स्टीव,
टबमैन, विलियम,
चलो, जेक!
टूटू, डेसमंड,
त्यामज़ाशे, विक्टर,
टायेसी, बैरेट,
Tyhalarha,

Umkhonto we Sizwe. See MK
संघ। यह भी देखें: दक्षिणी कांग्रेस अफ्रीकी ट्रेड यूनियनें; हड़तालें संयुक्त लोकतांत्रिक मोर्चा (यूडीएफ), संयुक्त यहूदी सुधारवादी मंडली, संयुक्त राष्ट्र स्वतंत्रता पार्टी (यूएनआईपी),
संयुक्त राष्ट्र। प्रतिबंध भी देखें। अंतरराष्ट्रीय
संयुक्त पार्टी,
संयुक्त राज्य अमेरिका,
एकता आंदोलन,
दक्षिण अफ्रीका विश्वविद्यालय (यूएनआईएसए), विटवाटरसैंड विश्वविद्यालय,

शहरी क्षेत्र अधिनियम,

वबाज़ा, गमालियल,
पृथ्वी के, कर्नल,
वैन डेर मेरवे, फैनी,
वैन हीर्डन, मजिस्ट्रेट,
वैन नीकेर्क, अभियोजक,
वैन रेन्सबर्ग, वार्डर,
वैन रीबीक, जान,
वैन सिटरट, फ्रिट्ज,
वर्साय शांति सम्मेलन (1918), वेरवोर्ड, हेनड्रिक एफ.,; 1961 प्रहार और,; हत्या
सिनाशन,
विक्टर वर्स्टर जेल,
विल्जोएन, कॉन्स्टैंड,
विल्जोएन, गेरिट,
फ्लैक्स, एड्रियन,
वोर्स्टर, बी. जे.,
वोर्स्टर, जॉन,
वोर्स्टर, सार्जेंट,
सभी के लिए वोट,
मतदान अधिकार,

वाशिंगटन, बुकर टी.,
प्रिय महोदय,
वेलिंगटन, आर्थर,
वेल्श, रेक्स,
वेस्लेयन चर्च,
वेसेल, एफ.सी.,
वेसेल्स, कर्नल,

पश्चिमी क्षेत्र की टाउनशिप,
पश्चिमी मूल निवासी टाउनशिप,
गोरे लोग,
विलेमसे, डब्ल्यू. एच.,
विलियम्स, सेसिल,
विटकिन, सिडेलस्की और ईडेलमैन लॉ फर्म, विटवाटरसैंड नेटिव लेबर एसोसिएशन (डब्ल्यूएनएलए), वोल्पे, हेरोल्ड,
महिला लीग,
युवा और छात्रों का विश्व महोत्सव
शांति और मित्रता

रुको, दीदी,
खोमा परिवार,
ज़ोसा लोग,
ज़ुमा, ए. बी.,

येफू, श्रीमान (इथियोपिया के विदेश मंत्री), येंगवा, मसाबाला,
युवा लीग,
कार्यक्रम
कार्रवाई का,
Yutar, Percy,

ज़ाम्बिया,
जीरस्ट,
ज़िलिंडलोवु, प्रमुख,
जिम्बाब्वे,
जिम्बाब्वे अफ्रीकी पीपुल्स यूनियन (ज़ैपू),
ज़ुलूलैंड/ज़ुलू लोग,

ज़्वेलिथिनी , गुडविल ,